

॥ श्री गोवर्धननाथो विजयते ॥

पुष्टिमार्गीय कीर्तन संग्रह

खण्ड - ३ (तृतीय)

बसन्त तथा धमार के पद

(बसन्त, धमार, डोल, होरी, रसीया)



अखण्ड भूमण्डलाचार्य वर्य जगद्गुरु श्रीमन्महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी

-:: प्रकाशक ::-

वैष्णव मित्र मंडल सार्वजनिक न्यास, इन्दौर

अनुक्रमणिका

बसंत बहार के पद

पीपबदि अमावस्या से महासुदि ४ तक

✧ राग बिलासल

१. आज की बानिक पर हो लाल हों .. १
(बसंत पंचमी के दिन मंगला में)

✧ राग मालकौंस

२. लहेकन लागि बसंत बहार १
३. घल बन देख सवायी १
४. लहेकन लागीरी बसंत बहार १
५. फूल्योरी राधन बनता में १
६. बोलत स्याम मनोहर बैठे २
७. आज कोमल अंगतें २
८. बालापन गयो अब आयो जोषन .. २
९. ललित बालापन गयोरी २
१०. राधन बन फूल्योरी २
११. राधन बन छावो २
१२. नईरी ऋतुको आगम भयो ३
१३. ससक लसक छी अपने ३
१४. मदन मतवारो । नागर ३
१५. मदन मत कीनोरी ३
१६. बसंत आगम सुंदर नंद नंदन ३
१७. कान्ह तिहारे राज ३
१८. मोहो को कहु प्राणपिया ४
१९. मदन मत मतवारो ही कीनो ४
२०. सुघर बना संग जागी ४
२१. बसंत ऋतु आई फूलन फूले ४
२२. बिघाता अबलन को सुख दीजै ४

✧ राग गौरी

२३. वेनु माई बाजे श्री बंसीदट ४
(महासुदि ४ के दिन संघ्या आरती) ४

✧ राग मालकौंस

२४. लहेगा हयौ छबि बेति ५
२५. सारी हरी सी घुन कें पेहरी चोली ... ५
२६. शिशिर ऋतुको आगम ५

✧ राग मालकौंस

२७. आवन कही गये ५
२८. भोरे भोरे कान तुमेरो ५
२९. आदी आयी हो आगम ऋतु ६

✧ राग ललित

३०. आज अति शोभित मदनगोपाल .. ६

✧ राग मालकौंस

३१. सुन्दर बदन देखो आज ६
३२. सुन्दर नंदनदन जो पार्क ६
३३. प्रीतम को कहु दोष ६

✧ राग ईमन

३४. आलीरी कर गुंगार ७
(महासुदि ४ शयन दर्शन)

✧ राग बिहाग

३५. सुमि री तु यहाँ भई हे नदीती ७

✧ राग बसंत

३६. सुघर बना संग जागी ७

श्री दामोदरदासजी की बघाई (पोठयाने)

✧ राग सारंग

१. आज बघायो मंगल वार ७
(श्री दामोदरदासजी की बघाई
महासुदि ४)
२. प्रगटे भक्त शिरोमणी राय ७

राग माला—शयन दर्शन

(पांच राग की राग माला)

✧ राग ईमन

१. ईमन मेरो कहु कोहेकी ८

श्री गुसाईंजी तथा श्री जयदेवजी की अष्टपदी

✧ राग बसंत

१. हरिदिह प्रजयुक्ती शतसंगे ८
२. ललित लवंग लता परिसीलन ८

✧ राग बसंत

३. स्मर समरो धित विरधित ९
४. विरधित बाहु बधन रधन ९
५. अवलोक्य सखी मंजुल कुंजे १०
६. बिलसती हरिदिह सरस होलका १०

बसंत पंचमी के पद

✧ राग बसंत

१. आई ऋतु—बसंत की गोपिन
(सखी) ११
आई बसंतऋतु अनुपमूल ११
(अधिरासन होयै जय)
२. आज सुभगदिन बसंत पंचमी ... ११
४. प्रथम समाज आज वृंदावन १२
५. आज मदन महोत्सव राधा १२
६. श्रीपंचमी परम मंगलदिन १२
७. प्रथम बसंतपंचमी पूजन १२
८. परम पुनीत बसंतपंचमी १३
९. बनठन आई सकल कुजललन १३
१०. बसंत पंचमी मदन प्रगट भयो ... १३
११. आयो ऋतुराज साजि पंचमी ... १३
१२. आई हं हम नंद के द्वारे १४
१३. यह देखि पंचमी ऋतु बसंत १४
१४. आई आज बसंत पंचमी खेलन ... १४
१५. आज घलीरी वृंदावन दिहरत ... १४
१६. मनमोहन संग ललना १५
१७. आयो बसंत वधायो राजकी नार ... १५
१८. कुचमडु बाजो वनमोर १५
१९. जोयनमोर सोमावली १५
२०. आज बसंत सबे मिलि सजनी .. १५
२१. गावल बसंत घली पनेवीर १६
२२. गावल घली बसंत वधावन १६
२३. केसरी छीट कछिर बंदनरज १७
२४. स्याम सुभगतन सोमित छीटे ... १७
२५. छिरकत छीट छबीली राधे १७
२६. सब अंग छीट लागी नीको बन्धो १७
२७. लाल रंग भीने बागे खेलत १७

❖ राग बसंत

२८. अरुण अवीर जिन ठासोहो १८
 २९. अबजिन मोहिभरो नंदनंद १८
 ३०. छीट छमीली तन सुख सारी १८
 ३१. घटकीली घोसी पहरे बीचबीच १८
 (घोहा की घोली घरे जब)
 ३२. लालगुपाल गुलाब हमारी १८
 ३३. ऋतु वसंत के आगम आली १८
 ३४. नीकी आतु बसंत पंचमी १९
 ३५. राधा गिरिधर बिहरति १९
 ३६. आज पंचमी शुभदिन नीको १९
 ३७. आयो री आयो सब मिसी १९
 ३८. फिर बसन्त ऋतु आई १९

बसंत जगाये के पद

महासुद ६ से फाल्गुन सुद १५

❖ राग बसंत

१. जागि हो लाल, गुपाल २०
 २. प्रात समे गिरिधरनलाल की २०

❖ राग बिभास

३. खिलावन आयेगी ब्रजनारी २०
 ४. जगि कहुी जनुनी सी मोहन ... २०
 (होरी दांडा के दिन खास)
 ५. जगो कृष्ण खेलो रंग होरी २१
 ६. भारे भये मेरे लाल होरी २१

बसंत कलेज के पद

महासुद ६ से फाल्गुन सुद १५

❖ राग बसंत

१. करी कलेज कहति जसोदा २१
 २. करी कलेज मदन गोपाल २२
 ३. करी कलेज बलराम कृष्ण तुम .. २२

❖ राग बिभास

१. करि हो कलेज बलराम कृष्ण ... २२
 २. जगोपाल बसंत बधावन २२

बसंत-मंगला के पद

महासुद ६ से महासुद १५ तक

❖ राग बसंत

१. श्री गिरिधरलाल की भागिक २३
 २. खेलत बसंत निस पिय संग २३

❖ राग बसंत

३. सांची कहां मनमोहन मोसो २३
 ४. देखियत लाल लाल दूध डोरे २३
 ५. आज कछु देखियत ओरही २३
 ६. तेरे गैल उनीदे तीन प्रहर जागे .. २४
 ७. सहज प्रीति गोपाले भावे २४
 ८. ऋतुवसंत स्वाम घर आयो २४
 ९. एक बोल बोली नंद नंदन २४
 १०. केसरिसो भीज्यो वागो २५
 ११. श्रीगोवर्धन की सिखर चारु २५
 १२. ऐसे रीझे भीझे आए री लाल २५
 १३. खेलति सरस बसंत स्वाम २५
 १४. सखी ब्रज कूले विविध बसंत २५

बसंत पालने के पद

महासुद ६ से फाल्गुन सुद १५ तक

❖ राग बसंत

१. जसोदा नहीं बरजे अपनोबाल ... २५
 २. अति हुंदर गणि जटित पालनो .. २६
 ३. देख सखिरी पलन झूलत २६
 ४. ललित त्रिभंगी लाडिलो ललना .. २७
 ५. जसोदा नहीं बरजे अपनो कान्ह २७
 ६. रतन खचित को पालनो २७
 ७. बरजो जसोदाजी काना २८

राजभोग खेल के पद

महासुद ६ से महासुद १४

❖ राग बसंत

१. राजा अनंग मंत्री गुपाल २८
 २. खेलत गुपाल नव सखिन संग .. २८
 ३. देखो वृंदावन श्रीकमल नेन २९
 ४. खेलत बसंत गिरिधरन घंघ २९
 ५. देखो वृंदावन को जसकिशान ... २९
 ६. श्री वृंदावन खेलत गुपाल ३०
 ७. देखो वृंदावन को भूमि भातु ३०
 ८. देखो राधा माधो सरसजोर ३१
 ९. खेलत वसंत बलभद्र देव ३१
 १०. वृंदावन बिहरति बसंत ३२
 ११. नवल बसंत बीच वृंदावन ३२
 १२. कालिंदी के तीर मनोहर ३३
 १३. गोवर्धन की शिखर में ठाडो ३३
 १४. वृंदावन रहे सीधाय बिहरत ३३

बसंत राजभोग खेल के पद
(शेहरा के पद)

१. ओर राग सब भये भारती ३३
 २. गोपीजन वल्लभ जयमुकुंद ३३
 ३. देखो रसिकलाल वागो ३४
 ४. वंदो पद पंकज नंदलाल ३४
 ५. खेलत वसंत श्रीनंदलाल ३५
 ६. खेलत वसंत गिरिधरनलाल ३५
 ७. खेलें कछु जयनुताट नंदकुमार .. ३६
 ८. हरिजुके आवन की बसिहारी ३६

❖ संख्या आरती

१. फूल के सिंगार की सारी ३६
 (खेल में फूल के शृंगार होये जब)
 २. विविध बसंत बनारै ३६
 (केसरी वस्त्र धरे जब)
 ३. यलरी नवल निकुंज ३७
 (पितलाल वस्त्र धरे जब)

❖ राग हिंडोल

१. नंदनंदन नवल नागर कितोर ... ३७

टिपारे के पद

❖ राग हिंडोल

१. नृत्यत गावति बजावति ३७
 २. सब मिल गावत राग हिंडोल ३७

श्रीगुसाईजी भट्टे खेल के पद

❖ राग बसंत

१. खेलत बसंत वरविह्वलेश ३८
 २. वंदो पद पंकज विह्वलेश ३८
 ३. खेलत बसंत वर विह्वलेश ३८
 ४. खेलत बसंत वल्लभ कुमार ३८
 ५. आज बसंत बधायो है ३९
 ६. केसरी उपरना ओई ३९
 ७. खेलत बसंत विह्वलेशराय ४०
 ८. राग रंग रंगी रसको रास ४०
 ९. श्री वल्लभ प्रभु कलन्दा सगार
 (मंगला) ४१
 १०. श्री वल्लभ कुलधर्मदल जन रंजन ४१

❖ राग बसंत

११. श्री वल्लभ दिन सब जग फीकी . ४१
१२. श्री वल्लभ करुणा करके मोहे
(आश्रय) ४१
१३. कोऊ रसिक नहीं था रसको ४१

❖ राग सारंग

१४. खेलत वल्लभ फाग ४२
१५. लाल खेलत फाग ४२
१६. खेलै प्रभु बैठे महाराज ४२

❖ राग गोरी

१७. श्री वल्लभकुल मंडन प्रगटे ४२
१८. प्रथम सीस घटल घर वंदो
श्री विठ्ठलनाथ ४३

❖ राग कल्याण

१९. वल्लभलाल रसाल के
(श्री गोकुलेश) ४३

बसंत के पद

महासुद ६ से महासुद १४ तक

❖ राग बसंत

१. रिंगन कहत कान्हू आँगन में ४३
२. देखत वन ब्रजनाथ आज अलि . ४४
३. मोहन पवन विलोकत अलिघन ४५
४. लालन संग खेलन फाग घली ... ४५
५. जुवतिन संग खेलत फाग हरी .. ४५
६. फुली हुमवेली भाँति भाँति ४६
७. गिरिधरलाल रस भर खेलत ४६
८. खेलत मवन गोपाल वसंत ४६
९. खेलत वसंत गिरिधरनलाल ४६
१०. मदन गुपाल लाल सब सुख ४६
११. विहरतवन सरस वसंत रयाम ... ४७
१२. खेलत वन सरस वसंत लाल ... ४७
१३. जुवति वृंदसंग रयाम मनोहर ... ४७
१४. वृंदावन फुल्यो नव हुलास ४८
१५. मधु ऋतु वृंदावन आनंदभोर .. ४८
१६. खेलत गिरिधर रमणगे रंग ४८
१७. सजिसेन पलानो मदनराय ४८
१८. रतन जटित पिचकाई करलिवै .. ४९

❖ राग बसंत

१९. प्यारे हो कान्हू जे तुम ४९
२०. रहो रहो विहारीजू मेरी आँखिन ४९
२१. खेलत पिय प्यारी सोधें भरि भरि ४९
२२. बलि देखन जेधें नंदलाल ५०
२३. फागुसंग बडि भागि ग्यालनि ... ५०
२४. कलौ विपिन देखिये गुपाल ५०
२५. मुख मुसकिनि मनबसी ५०
२६. बनसपति फुली वसंत मास ५१
२७. पिय प्यारी खेलें यमुनातीर ५१
२८. प्यारी राधा कुंज कुसुम संकलै .. ५१
२९. रितु पलटी मोपे रह्यो न जाय ... ५१
३०. ननकुंज कुंज कूजत बिहंग
(रास की भावना) ५२
३१. बनफुलै हुम कोकिलत बोली ५२
३२. खेलत बसंत आयो मोहन ५२
३३. एतो झक झोरति सोधें ५२
३४. खेल खेलरी कान्हू ५३
३५. ऋतु बसंत कुसुमित नवबकुल ५३
३६. मोझो मन आज सखीरी ५३
३७. आज सारंगे पोष गलिन में ५३
३८. कमी की हों खेलत मोहिलों ५४
३९. एसे रीझो भीजे आवेरी ५४
४०. खेलत वसंत गोकुल के नायक .. ५४
४१. उकत वंदन नव अबीर बहु ५४
४२. नंद नंदन वृंदावन नृप नंदिनी .. ५५
४३. देखरी देख ऋतुराज आगमन .. ५५
४४. ऋतु वसंत वृंदावन विहरत ५५
४५. ऋतु वसंत तरु लसंत ५६
४६. लाल ललित ललितललिक ५६
४७. ऋतु वसंत वृंदावन फुलैहुम ५६
४८. खेलै खेल कान्हू रियन ५७
४९. वाहो आईरी तरफि अवधीजु ५७
५०. अबके वसंत न्यारोई खेलें ५७
५१. वसंत ऋतु आई अंग अंग ५७
५२. कुसुमित वन देखन घली ५७
५३. ऋतु वसंत मुकलित वन ५७
५४. आयो आयोरी यह ऋतु वसंत .. ५७
५५. आज मदनमोहन बने ५८
५६. घलोरी वृंदावन वसंत आयो ५८
५७. नवल वसंत नवल वृंदावन ५८

❖ राग बसंत

५८. नवल वसंत नवल ५८
५९. नव वसंत आगम नवनागरी ५९
६०. नव वसंत आगमनी की लगल ५९
६१. पिय देखो वन छवि निहारि ५९
६२. आयो आयो पिय यह ऋतु वसंत ५९
६३. देखी प्यारी कुंज विहारी ५९
६४. तेरी नवल तरुनता नववसंत ... ६०
६५. फुलै फुलैरी घली देखन जेधे ६०
६६. कुसुमित कुंज विविध वृंदावन ६०
६७. देखिरी देखि ऋतुराज आगम ६१
६८. खेलत है हरि आनंद होरी ६१
६९. दोऊ नवललाल खेलति वसंत . ६१
७०. नंद नंदन वृंदावन नंदनी ६१
७१. बन फुलै हुम कोकिलत ६२
७२. ब्रिंदावन खेलति हरि जुवति ६२
७३. ब्रिंदा विपिन नवल वसंत ६२
७४. खेलति वसंत आए मोहन ६२
७५. खेलति जुगल किसोर किसोरी ... ६३
७६. हो हो हरि खेलति बसंत ६३
७७. सरस वसंत सखा मिल खेलै ६३
७८. घन बन हुम फुलै सुमुख ६३
७९. आज गिरिराज सब साजि साजें ६३
८०. इतहि कुंवर कान्हू कमल नैन ६४
८१. उमैगी वृंदावन देखों ६४
८२. नवल वसंत उनाए मेघ मोरकि ६४
८३. बलि बलि खेलनि घली कमल ६४
८४. वृंदावन विहरति ब्रज जुवती ६४
८५. देखो नवल बनें नवराग ६४
८६. किडति वृंदावन वंद ६५
८७. मोझो मन आजु सखी ६५
८८. अद्भुत सोभा वृंदावन की देखो . ६५
८९. खेलति वसंत श्रीवृंदावन में ६६
९०. गुरुजन में ठाडै दोऊ प्रीतम ६६
९१. घति देखनि जैए नंदलाल ६६
९२. फुल्यो बन ऋतु राज आजु ६७
९३. फुलति झुमि आई वसंत ६७
९४. भौमिनी घंघेरी कली ६७
९५. हो हो हरि खेलत वसंत ६७
९६. फिर वसंत ऋतु आई सजनी ६७
९७. कोकिल बोली बान-बन फुलै ६८
९८. खेलत वसंत ब्रजराज ६८

❖ राग बसंत

१९. खेलनि आई हम मोहन तुम संग ६८
 १००. खेलति नंद महरि को ६८
 १०१. धतुर नारि नामर महान ६९
 १०२. जनुपति जल झीकटा जुवति ६९
 १०३. दोऊ नवललाल खेलति बसंत ... ७०
 (रास की भावना)
 १०४. दिशिध बसन्त बनाए फली ७०
 १०५. वृंदावन झीकति नंद नंदन ७०
 १०६. बनि बनि खेलति बलि कमल ... ७०
 १०७. बन उपवन अतुराज देखि ७१
 १०८. बन्दी छबीली स्वाम सखि ७१
 १०९. रंग रंगीली नंदकी लाल ७१
 ११०. हो हो होरी ! हलधर आवै ७१

धमार के पद भंगलादर्शन होरी - खयाल के पद

❖ राग - काकी

१. पीतांबर काजर कहाँ लम्यो ७१
 २. मेरो नवराज बिहारी ७२
 ३. राधावर खेलत होरी ७२
 ४. साँवरे छि रंग में बोरी ७२
 ५. ब्रज में हरि होरी मचाई ७३
 ६. नेह लम्यो मेरो स्वाम सुंदर तौ ७३
 ७. मोहि सब विधि रंगन रंगी ७३

भंगला के पद राग-भैरव

❖ राग भैरव

१. भोरभये नंदलाल संग लिये ७४
 २. रात फाग खेलि प्रात आए लाल ... ७४
 ३. प्रात समै नंदलाल खेलति हो हो ७४
 ४. पिछवारे में छान ऊडावे होरी को ७४
 ५. पीतम प्यारी के संग ७५
 ६. लालन संग राभी हो ७५
 ७. अपने पिछा संग खेली होरी ७५
 ८. ए सुनि राजनी फागुन में ७५
 ९. खेलत नंदनंदन सपन कुंज ७५
 १०. प्रात काल नंदलाल कुंजन ७६
 ११. वृंदावन बलीकट के तट ७६
 १२. होरी के दिनन में तू जो नंदेली ... ७६

❖ राग बिभास

१३. हों तो होरी नंदलालसो ७६
 १४. धौंकिपरी गोरी होरी में ७६
 १५. आज तो छविलो लाल ७६
 १६. अनोखे होरी खेलन लाये ७७
 १७. होरी खेलति है ब्रज मंद ७७
 १८. होरी के मधपाते आए ७७
 १९. मोहन प्रात हि खेलति होरी ७७
 २०. स्वाम संग खेलै री होरी ७७
 २१. मदन मोहन कुंजर वृषभानु ७८

धमार के पद - भंगला

❖ राग - रामकली

१. हो हो होरी खेलै नंदकी ७८
 २. चलो सखी मिलि देखन जैयें ७८
 ३. हो हो होरी खेलौंगी ७८
 ४. कान्हू सौं कीन कहै ७९
 ५. रंग हो रंग हो ७९
 ६. हों हरि संग होरी खेलौंगी ७९
 ७. स्वाम संग खेलैरी होरी ७९
 ८. अहो हरि होरी में जब जो गवै ... ७९

❖ राग मालकौंस

१. खेलन आई धमार ७९

❖ राग देवगंधार

१०. आज भाई मोहन खेलत होरी ... ८०
 ११. मदनगुपाल लालसों रसभरि ... ८०
 १२. रजिजात कुंजन में गिरिधर ... ८०
 १३. होरी खेलि आए कहाँ सौं ८१
 १४. हो हो होरी खेलति गिरिधारी ... ८१

❖ राग खट

१५. बरसानें तैं वृषभानु पुत की ८१
 १६. कनक पुरी होरी रमी ८२
 १७. हरि संग होरी खेलनि आई ८२
 १८. आज भोर ही नंदपीरि ८३

❖ राग ललित

१९. तुम कोण के वस खेलै हो ८३
 २०. होरी खेलै लाल लंगरवा ८३
 २१. खेलति फाग बने गुपाल अति ८३
 २२. होरी खेलीए वित भाई ८४
 २३. मोहन खेलत आवै फाग ८४

पंचम राग

❖ राग पंचम

१. देखो देखो ब्रज की वीथनि ८४
 २. हो हो होरी खेलन जैये ८४

❖ राग सुघराई

१. दाऊ की सौं मोहि अहोहरि ८५
 २. फगुवा के गिति छलबल ८५
 ३. होरी खेलति मंदगुलारो ८५

धमार पांडे के पद

❖ राग बिलावल

१. नंदगाव को पांडे ब्रज ८५

❖ राग काकी

२. भाई बरसानेते नंदगाम ८६
 ३. भाई समध्यानेतें ब्राह्मन आयो ... ८८
 ४. प्रोहित वृषभानु को हों आयो ... ८८

होरी डांडा के पद - महासुदि १५

❖ राग सोरठ बिलावल

१. होरी खेलिये सुंदरलाल (अखंड की धमार) ८९

❖ राग बिलावल

२. आनंदराय खेलै फाग ९०
 ३. घोष गुपति सुत गाईये ९०
 ४. मंदो मुनसाई नंदके ९१
 ५. श्रीलक्ष्मण कुल गाईये ९२
 ६. अरि आज कमल मुख देख्यो ... ९२

❖ राग सोरठ

७. मनमोहन खेलत कागरी ९३

❖ राग गौरी

८. अतु वसंत सुख खेलिये ९३
 ९. गोपन के आनंद ब्रज फाग ९४

❖ राग बिहाग

१०. रंगन रंग हो होरी खेलै लाडिलो . १५

गाथी की धमार

❖ राग बिलावल

१. रस सरस बनी बरसानेजु ९४

❖ राग बिलावल

२. सुंदर स्वाम सुजान सितोमणि ... १८
३. मोहन वृषभानके आण्डू १९

❖ राग घनाश्री

४. छेलछबिली समधिनि हों १९
५. रहसि घर समधिनि आई १०१

❖ राग काफी

६. तुम आयोरी तुम आयो १०१

❖ राग सारंग

७. भेरि बाजे भरुवा नौचै १०२
(होरी के दिन)

❖ राग नट

८. गारी हरि देत दिवावत १०२

❖ राग बिहाग

९. नवरंगीलाल बिहारी हो १०२

❖ राग सारंग

१०. मोहन होहो होहो होरी १०३

❖ राग मरी

११. तु जिन बोलेरी देन देवा १०३

❖ राग बिलावल

१२. नंदगाम को पांडे ब्रज १०३

❖ राग काफी

१३. माई बरसाने ते नंदगाम १०४
१४. माई सगंधाननैं ब्राह्मन आयो १०६

❖ राग धमार

१५. प्रोहित वृषभानु की हो १०६

फागण सुद १५-होली उत्सव

❖ राग गोरी

१. राय दिन तुम ब्रज में रहो हरि . १०७
२. कौटा दोक राय के लाल १०८

❖ राग घनाश्री

३. होरी के रंगीले लाल १०९

❖ राग सारंग

४. भेरि बाजे भरुवा नौचै १०९

❖ राग बिहागरी

५. रंगन रंग हो हो होरी १०९

धमार के पद

❖ राग बिलावल

१. नंदसुन्दन ब्रजभावते ११०
२. गोपीहो नंदरायघर १११
३. बरसाने की गोपी ११२
४. परिवार प्रथम कुंवर ११३
५. नंदगाम की गोपी बरसाने छति ११३
६. फगुवा मोगन आई ११४
७. ग्वालिनी फगुवा मांगनि आई . ११५

❖ राग बिलावल

८. परिवार प्रान समान राधा जु ११५
९. नंदराय लला ब्रजराय लला ... ११६
१०. फगु खेलन ब्रजसुंदरी ११७
११. हो हो बोलत डोलत ११८
१२. बंदति नाहिनें ग्वालिनी ११८
१३. काजर वारी गोरी ग्वारि ११९
१४. होरी खेले मोहना रंगभीने ११९
१५. आगमसुनि भ्रतुसज को ११९
१६. ब्रजनारी ब्रजराज गोपगृह १२१
१७. नागरी निपुन छबीली
(घोकडो) १२१
१८. हरि रंग होरी खेलनि आई ... १२४
१९. छति छलि री सखी १२४
२०. फगुन मास ब्रज सुंदरि १२५
२१. तुम बेगि क्यों न आदो १२५
२२. मेरी आंखि न भरीं गुलाल १२६
२३. होरी खेलति है ब्रज नंद लडैतां १२६
२४. आली री भरति मोहन जित ... १२६
२५. संधि की है उठति झक्कोरें १२६
२६. जिन डारो जिन डारो जु १२६
२७. होरी खेलत सांवरो १२७
२८. होरी खेले गिरिधरलाल १२७
२९. होरी खेले मोहना १२७
३०. अरी ते रंग राख्यो १२७

❖ राग टोडी

३१. दोऊ खेलत ब्रज में होरी हो ... १२७

धमार फेंटा के पद

❖ राग सारंग

१. खेलें होरी मनमोहनां १२८

❖ राग काफी

२. मेरे लाल छबीले मन हथी १२८

❖ राग बिलावल

३. मोहे और काऊ न सुहाई १२८

धमार दुमाला के पद

❖ राग काफी

१. एरी सखी खेलति गिरिधरलाल १२९

धमार कुल्हे के पद

❖ राग काफी

१. होरी खेले मोहना १२९

चुनरी के पद

❖ राग काफी

१. चुनरी मेरी भीजे हो लाल १२९
(गुलाल की घोली)
२. स्वाम रंगीली चुनरी १२९

धमार सौहारा के पद

❖ राग बिभास

१. मदन-मोहन कुंवर वृषभानु ... १३०

❖ राग टोडी

२. माईरी नौके दुल्हे १३०

❖ राग घनाश्री

३. हो मेरी आली भानुसुता के तीर १३१

❖ राग सारंग

४. नंदकिशोर किशोरी की जोरी .. १३१
५. नंदमहर को कुंवर कहैया १३१
६. दुल्हे श्री ब्रजराज दुलारी १३२

धमार मुगत के पद

❖ राग सारंग

१. माघो चांघर खेल ही १३२
२. अहो श्रीगुपाल ग्वालिनी १३३

❖ राग काफी

३. कान्हर मोहे घर जान दौहो १३३

❖ राग नट

४. बहोरी डक बाजन लागे हेली १३३

❖ राग गीत मरुहार

५. गुलाब की फूँधर में मुकुट १३४
६. छेल छबीला मोहना (री) १३४

❖ राग गोरी

७. नवल कनहाई हो प्यारे
(दान की भावना) १३४
८. मदनमोहन गहवर बन खेलत
(दान की भावना) १३५
९. रत्नमरी श्याम मसाई रास १३६

धमार टीपासा के पद

❖ राग बसंत

१. वृन्दावन बिहरति बरत १३६

❖ राग सारंग

२. हेली गोवरधनधारि लाल १३६
३. होरी खेलति नंद को लाल १३७

❖ राग माल

४. आज बनठन ब्रज खेलन १३७

धमार के पद राग टाडी

❖ राग टोडी

१. हो हो होरी खेलें नंदकी नवरेणी १३८
२. तुम छके खेलते १३८
३. कांकीन मारि संगर १३८
४. मेरे मन लगे ब्रजपालसों १३९
५. नीको बन्दों गोकुल गाय १३९
६. हाँ हो हरी बले पाग खेलन ... १४०
७. देखो ब्रज की दीधिति दीधिति १४०
८. मन मेरी इच्छा पूजी १४१

धमार के पद-राग आसावरी

❖ राग आसावरी

१. धनि धनि नंद जसोमति १४१
२. या गोकुल के मोहते १४१
३. बरसानेमें सजि बली १४२
४. रूप अनुपम मोहनी रंग राखे ... १४३
५. धनि धनि शुभ घड़ी धनि आज १४३

❖ राग आसावरी

६. धुनि सुनि श्याम सुंदर खेलें ... १४४
७. भयो मदन परबड १४४
८. जमुना तट क्रीडति नंद नंदन १४५
९. बरसाने की नवल नारि मिलि ... १४६
१०. जमुना तट खेलत गोपी हो ... १४६

❖ राग धनाश्री

११. जमुना तट धूल नयी है री १४६

❖ राग आसावरी

१२. डक बाजन लागे हेली १४७
१३. बरसाने में वृषभानु पुरा १४७
१४. बरसाने में कुँवरि राधिका १४८

धमार के पद-राग सोहनी

❖ राग सोहनी

१. सावरो री आज खेलें होरी १४८
२. हो होरी के खिलार १४८

धमार के पद-राग हिंडोल

❖ राग हिंडोल

१. नंद नंदन नवल नागर १४८

धमार के पद-राग सिंधुडो

❖ राग सिंधुडो

१. हुन सब आई गोपी लपट रही १४९
२. अरे कारे प्यारे रतनारों भाँरा ... १४९
३. अरे कुमलाने आनन मोहना .. १४९

धमार के पद-राग धनाश्री

❖ राग धनाश्री

१. हरिसंग खेलन जाय अरी १४९
२. राधा कुँवरि रसिक मनसों हो ... १५०
३. गोरे अंग गुफति गोकुल १५१
४. मनमोहन की वार गोरी १५२
५. छाँडि देहु यह बानि त्वारे
(दान की भावना) १५२
६. नके मोहोंडो मोहन दे १५२
७. होरी खेलि कहाँते आवे १५२
८. माई मेरो मन मोह्यो १५३
९. खेलत मदन गुपाल १५३
१०. खेलो होरी फाग सबे मिति ... १५४

❖ राग धनाश्री

११. खेलें होरी फाग धलो १५४
१२. रिझवत रसिक किसोर को १५५
१३. ब्रजनाथक गोपकुमार सब १५५
१४. रसिक सिरामनि खेलें होरी १५६
१५. होहो होरी होहो होरी १५६
१६. रंगिलेरी छबीले मैना १५७
१७. होरी के खिलार भागतें १५७
१८. खेलत फाग सखा संग लीने ... १५७
१९. नवल कुँवर मिति खेलें फाग ... १५७
२०. पिय प्यारी खेलें फाग वागे ... १५९
२१. बाढ्यो अति आनंद खेलत १५९
२२. अपने पिय संग खेलो १६०
२३. खेलति सखा फाग गिरिधर १६०
२४. होरी खेलें सावरो मनमोहन ... १६०
२५. खेलोंगी चाँदरी माई अजुने ... १६१
२६. मेरी अखियन जिन डारी १६२
२७. हो हो होरी बोलि ही १६२
२८. एक दिन ब्रजनारि १६३
२९. सखी री रसिया नंदकुमार
(दान की भावना) १६६
३०. डक सबे घनस्याम के १६६
३१. खेलनि आई हम मोहन १६६
३२. खेलें नगर अजोय्या
(रागमंजरी के होरी खेलें) १६७
३३. मिलि दिदी है सखी १६७
३४. ब्रज में होरी खेलति सावरो १६७
३५. सलीमें श्री गोरे गत सुंदर १६८
३६. श्री राधा नवलकिसोर १६८
३७. आंखीन में जिन डारो डारो ... १६८
३८. कनकपुत्री होरी रमी मोहन ... १६९
३९. खेलत फाग कुँवर नंदनंदन ... १६९
४०. नंद कुमार लाडिले १७०
४१. मिली दिदी है सखी को मेघ ... १७०
४२. रंगमरी डारचो रे अबीर १७०
४३. होरी खेलत ब्रज-खोरनि में ... १७०
४४. हो हो होरी खेलें लाल १७१
४५. हाँ बलि जाऊँ लाडिलि १७१
४६. हो हो होरी राधा खेलति १७२
४७. गोपकुंवर तिर संग होरी १७२

❖ राग घनाश्री

४८. झूत माथी उत राखिका १७३
४९. कान्ह कुंवर खेलनि घले १७३
५०. फगुवा देहो लला १७४

धमार के पद-राग जेतश्री

❖ राग जेतश्री

१. खेलत फाग संग मिलि दोऊ ... १७७
२. खेलत बलि मनमोहना १७७
३. रसिक फाग खेलै मदनगारी ... १७८
४. नंदकुंवर खेलत राधासंग १७८
५. ऋतु बरसत के आग माहो १७९
६. फागु खेलै राधा गोरी १७९

धमार के पद

शिवरात्री के दिन

❖ राग ललित

१. भोर ही आयो मेरे द्वार १८०

❖ राग काफ़ी

२. वाघंबर ओढ़ें सांवरो १८०
३. मोहन सुनि हें आये हो १८१

❖ राग सारंग

४. होरी खेलै में भेख धरिके १८१
५. होरी खेलै सांवरो मनमोहन ... १८१

धमार के पद-राग काफ़ी

❖ राग काफ़ी

१. एरी सखी निकसे मोहनलाल . १८२
२. एरी सखी निकसी वृषभान १८२
३. खेलति स्वाम शुजान सखा ... १८३
(गोकुल राजकुमार की डब)
४. श्री गोकुल राजकुमार लाल रंग १८४
५. श्री वृषभान कुंवर महारंग १८४
६. तुर्गमी मोहन मन हर्षो १८५
७. त्रिभंगी मोहन मन हर्षो १८५
८. मनमोहन ललना मन हर्षो हो १८७
९. सलोनी स्वाम मन हर्षो १८८
१०. मोहन की मुसली मन हर्षो १८९
११. गोकुल की जीवनि मन हर्षो ... १८९

❖ राग काफ़ी

१२. श्री राधा नागरि मन हर्षो हो ... १९०
१३. मोहन के खेलत रंग रह्यो १९०
१४. खेलत मोहन रंग रह्यो १९१
१५. खेलत जाके रंग रह्यो १९२
१६. या ब्रज में होरी रंग बढ्यो १९३
१७. तुम बल्लो सखे मिलि जाय १९४
१८. निकसत कुंवर खेलत घले १९४
१९. मिल खेले फाग वनमें १९५
२०. अरी तेरे नैन सलोने १९५
२१. वालिम तोहों खेलंगी १९६
२२. गुजरी मदमाती डोले १९६
२३. हो हो हो हो होरी खेलें लाल ... १९६
२४. आयो फागुन भास कहें सब ... १९७
२५. रंग हों हों होरियाँ १९७
२६. हो हो होरी बोले १९७
२७. बोलें सब हो हो होरी १९८
२८. मेरे अंग संग लाव्यो सांवरो ... १९८
२९. ओरन सों खेलै धमार १९९
३०. न नदीया होरी खेलन दे १९९
३१. बाई दिन घारी आई हैं कृजनारी १९९
३२. श्री वल्लभ मेरे मन बसे हो ... १९९
३३. घलोरी होरी खेलै नंद के १९९
३४. एसें होरी खेलै सांवरो २००
३५. खेलत गोकुल ब्यालिन ही २००
३६. सुंवावन चंद लाल रंग भरे हो ... २०१
३७. बन्यो खेलत फागसुंदर नंदको २०२
३८. होरी खेलै स्वाम संग नवल ... २०२
३९. मिलत दोऊ गति लिये हो २०२
४०. आज हरि ब्रज युवतिन पकरे ... २०३
४१. मेरो प्यारो रंग रंगीलो २०४
४२. मेरो प्यारो रंगन भीनों २०४
४३. रस होरी खेलै सांवरो २०४
४४. तुमें ब्रजराज दुहाई २०४
४५. माई नये खिलर आज में देखे . २०४
४६. माई नंद के नंदन मोहि २०४
४७. लालन खेलत हें हो होरी २०५
४८. होरी खेलै नवल लाल २०५
४९. नंद घामते बन ठन कें घले ... २०५
५०. अरी वह नंदमहर को छोहरा ... २०६

❖ राग काफ़ी

५१. गोपकुमार लिये संग २०६
५२. विलोको नागरी राधा प्यारी हो २०७
५३. रंग भीनी जोरी होरी खेलें हो ... २०८
५४. मोहन परयोरी मेरे मोहन २०८
५५. श्री सुंवावन बंद खेलें २०९
५६. बरसाने की सीम खेलत रंग ... २०९
५७. होरी खेलै लाल, डफ बाजे २१०
५८. अहो वृषभानु सुता नंदलाल ... २११
५९. अहो मेरी बीरी बीर गई है २११
६०. ए रंगीला रंग ऊपरि के कित २१२
६१. कान्ह कुंवर खेलनि घले २१२
६२. गिरिधरलाल लडाइये हो २१३

❖ राग टोड़ी

६३. ग्याल हंसे मुख हंरिके २१३

❖ राग काफ़ी

६४. जमुना के तट खेलति हरि २१४
६५. जमुना के तट ठाड़ी सांवरो ... २१४
६६. तेरे नैननि में हें जु ठगोरी २१५
६७. नंद के नंदन के आली २१५
६८. नंद नंदन वृषभानु-किसोरी ... २१५
६९. नव रंगी दुलहे गाइये हो सखी . २१६
७०. नंद के लाल नवल नागर २१६
७१. न भरी रैन भरी रे लंगरवा २१७
७२. नवरोषी केसर हन बोई हो २१७
७३. पकड़े मजजन गिरिधारी २१७
७४. बरजो न माने आज री २१८
७५. ब्रजवासी सबै आनंद भरे २१८
७६. बन्यो खेलत फाग सुंदर २१९
७७. बैसर को मोली जग मोझो २१९
७८. बरसाने की नागरि २२०
७९. मन हरि लोन्की नंद-कुटोना ... २२२
८०. मोहन मूरति माई २२२
८१. महामोहन झोटा सांक्री हो ... २२२
८२. मन हर्षो री बिहारी की देखि .. २२२
८३. मोहि होरी खेलन को चाव री .. २२२
८४. मोहन ! गये आजु ? २२३
८५. या खेलौ रंग फागु री २२३
८६. राधा माथी संग-खेली २२३
८७. राधा-मोहन रंग भरे हें २२३
८८. रंग गुलाल के नेमा राते २२४

❖ राग काकी

८९. रंग भीनी होरी हो खेलौगी	२२४
९०. लालन ! प्रगट भए गुन आजु ..	२२४
९१. सांवरासु में खेलौ न होरी	२२५
९२. सांवरे की मैं रंग सों भरीमी	२२५
९३. होरि खेलति ब्रज कुंजम	२२५
९४. हो मेरी आली सी हों मेरी आली ..	२२६
९५. हम तुमसों बिनती करें	२२६
९६. होरी लाल खेलें	२२६
९७. हो हो होरी कहि कहि	२२६
९८. ए दोऊ खेलति होरी हो	२२६
९९. आजु रस खेलति फागु	२२७
१००. मनमोहन रिझवार सी	२२७
१०१. या हीं तै पिय तेरो नाम	२२७
१०२. रंगीली होरी खेलें रंग	२२७
१०३. रसिक फागु खेलें	२२९
१०४. फागुन मास सुहायो	२२९
१०५. खेलन दे मोए होरी रसिया ..	२२९

धमार के पद—राग सारंग

❖ राग सारंग

१. स्याम छबीले मन हव्यो	२२९
२. ललना तुम मेरे मन अति	२३०
३. तें मोहन को मन हव्यो और ..	२३०
४. सुरंगी होरी खेलें सांवरो	२३१
५. अहो पिय लाल लखेंती को ...	२३२
६. मोहन खेलत होरी	२३३
७. व्यासिनि सोंधे भीनी	२३४
८. एसो खेल होरी को	२३५
९. हों ताल तें प्यारी पित	२३६
१०. माई होरी खेलें मोहना	२३७
११. कान्ह रस भीनी व्यासिनी	२३७
१२. हों क्यों जाऊंरी दधि वेचन ...	२३७
१३. होंस नायक छिलवार होरी की ..	२३७
१४. छांडो छांडो हमारी याद	२३७
१५. होरी खेलें नंदलाल	२३८
१६. अहो पिय मोसो हीं खेलौ	२३८
१७. हा हा अब के मोसों खेलियें ...	२३८
१८. लाल तुम बरसनायें क्यों न आयो	२३९

❖ राग सारंग

१९. कांकी कान्ह मोहि मारे	२३९
२०. स्यामा नकईसर अति बनी ...	२३९
२१. चलीरि सिंध पोरि घासप्यो	२४०
२२. तु कयकी खिलवारि होरी	२४०
२३. सुन चली सकल ब्रजनाम	२४१
२४. खेलें बाघर नरनारि माई	२४२
२५. कुंवर दोऊ राजत नवल किशोर ..	२४२
२६. कलतारी देदे नाचेही, बोलें सब ..	२४३
२७. खेलत व्यासि गोपाल लालसो ..	२४४
२८. कलरी होरी खेलें श्रीगिरिवरधर ..	२४४
२९. माई मेरो मन मोह्यो सांवरे	२४५
३०. उत सांवरो बहु रंगन रंगीलो ...	२४५
३१. खेलें पिय राधा गोरी	२४६
३२. अहो खेलत होरी प्यारी लाल ..	२४६
३३. हो हो होरी खेलन जये	२४७
३४. राजत हें वृषभान किशोरी	२४७
३५. घंग मृदंग बांसुरी बाजत	२४७
३६. लारी दे गरी गावही	२४७
३७. नयनन में जिन छाओ गुलाब ...	२४८
३८. दिवे महावर गोरे पायन	२४८
३९. सखी मंदनंदन वृषभान	२४८
४०. चली सखी बाग तमारें	२४८
४१. सुंदरी हो हो होरी रंग भरी ...	२४९
४२. अहो पिय अबकें होरी अनत ...	२४९
४३. आज हरि खेलन फाग बनी ...	२५०
४४. अहो रस मोहन गोरे लाल	२५०
४५. अहो खेलति बसंत पिय प्यारी ..	२५३
४६. केसरि की खौर किए	२५३
४७. खेलत बल मनमोहना	२५३
४८. चली सुख देखिये हो अहो ...	२५३
४९. जानि ऋतुराज सब सुख	२५४
५०. तें प्यारी पित हर सिंदी	२५५
५१. प्यारी नवल किंजुज महल	२५५
५२. बनी रूप, रंग शधे, तारें	२५६
५३. मोहन नागर हो लाल	२५७
५४. या हिं तें पिय तेरो नाम धव्यो ...	२५७
५५. रंगीली होरी खेलें रंग सी	२५७
५६. ललनों नव किशोर नागर हरि ...	२५९
५७. सुंदरी हो हो होरी रंग भरी	२६०

❖ राग सारंग

५८. श्याम दुर्गना कौन को जाके ..	२६०
५९. सुंदर, सुभग, तरुनि—तनया ..	२६०
६०. हो प्यारी होरी खेलें रस भरे ...	२६१
६१. होरी खेलत जमुना के तट ...	२६२
६२. होरी खेलन जये अरी जहाँ ...	२६४
६३. हों हरि संग होरी खेलौगी	२६४
६४. होरी खेलति मदन गुपाला	२६४
६५. हो हो होरी हो हो होरी	२६४
६६. होरी खेलत नंद नंदन	२६५
६७. हो प्यारी होरी खेलें	२६५
६८. खेलति आई नंद दरबार	२६६
६९. खेलति कुंवर रसिक गिरिवरधर ..	२६७
७०. खेलति नंद महरि की छोट ..	२६७
७१. होरी खेलति मोहन	२६८
७२. आजु माई खेलति फागु हरी ...	२६८
७३. राधा माधव खेलें होरी	२६८

❖ राग गौड सारंग

१. माई नये फिलार आजु	२६९
----------------------------	-----

धमार के पद—राग नट

❖ राग नट

१. खेलत गिरिधरनलाल	२६९
२. मुबत्तीयुध संग फाग	२६९
३. होरी कोहे अवसर जिन कोऊ ..	२७०
४. होरी हो हरि खेलति	२७०
५. खेलत स्याम व्यासिनि संग ...	२७०
६. प्रगट्यो ऋतुराज, लाज छाँड़ी ..	२७१
७. प्रपुलित रुधिर तरुनि तनया ..	२७१
८. खेलत गिरिवर पिय	२७२

धमार के पद—राग पूर्वी

❖ राग पूर्वी

१. नंदलाल वृषभान कुंवर	२७२
------------------------------	-----

धमार के पद—राग मारु

❖ राग मारु

१. एसें नंदको नंद बोले	२७३
२. खेलें नंद को नंदन होरी	२७४
३. और अभीर फुलेल अरु राजा ...	२७५
४. सू—सुता के तीर होली खेलें ...	२७५

घमार के पद—राग मालव**❖ राग मालव**

१. हो हो होरी बोले २७६
२. खेलत होरी साँवरो डोटा २७६
३. हो हो हो होरी बोले नंदकुंवर .. २७६

❖ राग मालवी

४. रसिक फागु खेलै नवल नागरि २७७

घमार के पद—राग सोरठ

१. मेरे बोले बोल न बोलेरी २७७
२. हों किहि मिस पनघट जाऊंरी २७७
३. मेरे नंदनंदन पाछे पच्यो हेली .. २७८
४. हों कैसे यमुना जल जाऊंरी .. २७८
५. मेरी पित लिखी कितघोर २७८
६. ललनाँ लाल तुम संगे खेलौंगी २७९

घमार के पद—राग गौड़ मल्हार**❖ राग गौड़ मल्हार**

१. अब मुख—मुख माँझोगी गहि .. २७९
२. कन्हार खेलिये हो बाइयो २७९
३. मोहन मो मोहन छाँडीये २८०
४. एक खालिनी आवे रंग भरी २८०
५. ए गरजत धाय धाय रंग बूंदन .. २८१

घमार के पद — राग गोरी**❖ राग गोरी**

१. परिवा प्रथम कुंवर कों देखन
(फागुन सुद १) २८१
२. परिवा प्रथमाहि होरी खेलन
(फागुन सुद १) २८२
३. अरी चल नवल किशोरी गोरी .. २८२
४. ए चल जाए जहाँ हरि २८४
५. मारग छाँड अब देहु २८५
६. कमल नयन के बौतुक २८६
७. गोकुल सकल खालिनी २८६
८. हो हो हो होरी बोले २८७
९. हो हो हो हो होरी २८७
१०. माईरी रंगीली मोहना कुंवर ... २८८
११. खेलत मंदकिशोर वज में २८८

❖ राग गोरी

१२. मुपत्ती अघर घरे नंद नंदन २८९
१३. ललना खेलत फागु बन्दो २९०
१४. हो हो होरी वेणु मध्य गाये २९०
१५. खेलत मदन मोहन पिघ होरी .. २९०
१६. सब ब्रज कुल के २९१
१७. मनमोहना रत्न मत्त पियारे २९२
१८. श्री गोकुलराय कुमार २९२
१९. खेलत हँ हरि हो हो होरी २९३
२०. खालिन जोवन गर्व गहेली २९४
२१. गोरी गोरी गुजरिया गोरी सी २९६
२२. छेल छाँडीलो डोटा रसभर्या २९६
२३. खेलत फाग गोवर्धन धारी २९६
२४. गोकुल राय सुहावनो २९७
२५. खेलत फाग कहत हो होरी २९७
२६. खेलत फाग कुंवर गिरिधारी २९७
२७. हो हो होरी रंग बढावे २९८
२८. राधा मोहन खेलत होरी २९८
२९. होरी खेलन कों बलें २९८
३०. नवसंग गिरिधर खेलत होरी २९९
३१. यह गुजरि जोवन मदमाती २९९
३२. गोरी गोरी गुजरिया ३००
३३. निकलगाम के गवेंडे ॥ एकत्र .. ३००
३४. मारग छाँड अब देहु कमल ३०२
३५. होरी अब हो हो हो होरी ३०३
३६. हरि रंग खेलत सब फाग ३०३
३७. मोहन जान न देहों ३०३
३८. होरी खेले गोरी गिरिधर संग ३०४
३९. राधा बनी रंग भरी रंग होरी ३०५
४०. राधा रसिक कुंज विहारी ३०५
४१. हो हो हो होरी बोले ३०५
४२. मानो ब्रजले करिणी बली ३०६
४३. भोद गारी दई, होरी खेली ३०६
४४. खेल फागु बन्दो ललना ३०७
४५. धर धर ते चुनि खालि ३०७
४६. धरित दई हरि की धतुराई ३०७
४७. चली सकल मिलि खेलिये ३०८
४८. जमुना लट नंद नंदन, बिहरत ३०८
४९. देखत श्री मुँदावन मोहन ३०८
५०. प्रथम यथा मति श्री प्रणमु ३०९

❖ राग गोरी

५१. बोलि मदन गुपाल जु ३१०
५२. सकल सखी मिलि आबहु ३११
५३. होरी खेलति डोलति ३१२
५४. होरी खेलनि को बले ३१२

घमार के पद—राग गोरी**❖ राग गोरी**

५५. आओ मिल ब्रजकी नारी ३१३
५६. प्रथम ही होरी खेल ही ३१३
५७. बोलत मदन गोपाल लाल ३१३
५८. उगत जुवतीजन कान्ह ३१४
५९. लाडी हो ब्रज—खोरी डोटा ३१५

घमार के पद—राग श्री हठी**❖ राग श्री हठी**

१. ब्रज जुवती नागरि राधा पे ३१५
२. आजु सखी तेरे अवधि, हरि ... ३१५
३. स्वाम, संग खेलन धरि स्वाया ३१६
४. हरि—संग खेलन फागु बली री ३१६
५. खेलति फागु किरति ३१६

घमार पंधजी लाल के पद**❖ राग गोरी**

१. नागर नंदा दा मैनु है दै ३१७

❖ राग काकी

२. ए रंगीला रंग डारि के ३१७

❖ राग बिहान

३. होरी दे ख्याल बिच ३१७
४. होरी खेलत कुंवर कन्हाई ३१७

घमार के पद—राग हमीर**❖ राग हमीर**

१. होरी खेलति है नंदलाल ३१८
२. खेलन आवे हरि नंदगामते रंग ३१८

घमार के पद—राग कल्याण**❖ राग कल्याण**

१. नवल कुंवर ब्रजराय के ३१८
२. श्री गोवर्धनराय लाला ३१९

❖ राग कल्याण

३. दशरत्न लडेंतो गाइये ३११
४. खेलत गिरिधर फाग ३११
५. गिरिधर जमुना तट कुंजम में ... ३२०
६. होरी खेलत मदन गोपाल ३२१
७. अरुणा गुलाल छिन्नकत ३२१
८. हरि संग हो हो हो होरी ३२१
९. खेलत होरी लाल संग लिये ... ३२२
१०. होरी खेलत कुंज विहारी ३२२
११. खेलत मनमोहन होरी ३२२
१२. मोहन यह व्यापरी पकर ३२२
१३. लिये सकल सौंज होरी की ... ३२२
१४. कर हो हो होले रे खेलत ३२३
१५. खेलोंगी पिय संग होरी खेलोंगी ३२३
१६. माई होरी खेलै कान्ह कुंजम में ३२३
१७. हो होरी के खिसार ३२३
१८. खेलत फाग लाल रंग भीने ... ३२३
१९. सब ब्रज के सिरताज ३२४
२०. अरि माई हो होरी हो होरी ... ३२५
२१. लाल तुम खेलो होरी ३२५
२२. खेलत नवल वल्लभ पिय होरी ३२५

❖ राग नायकी

२३. तुम बिन खेल न रुये ३२६

❖ राग कल्याण

२४. आयो मिलि ब्रज की नारी ३२६
२५. ऐसे ना होरी खेलिए हो ३२६
२६. खेलति हरि ग्याल-संग फागु ... ३२६
२७. जमुना तैं हों बहुत रिझायी ... ३२६
२८. नंद कुंवर रंग गहर-गारुडीली .. ३२७

घमार के पद-राग भूपाली

❖ राग भूपाली

१. होरी खेलै सी नंद को नंदन ... ३२७

घमार के पद - राग ईमन

❖ राग ईमन

१. एरी घली सखी तहाँ जेये ३२७
२. छिमि जिनि जेयो हो ३२७
३. लाल रस माते हो खेलति ३२८

❖ राग ईमन

४. हम-तुम मिल दोऊ खेलै होरी ३२८
५. माई सी होरी खेलनि ३२८

घमार के पद - राग रायसों

❖ राग रायसों

१. सकल कुंवर गोकुल के ३२८
२. मिलि जु अंडा रस खेलही ३२६
३. खेलन को स्यामाजू ३३०
४. निकसे खेलन होरी ३३०
५. ऊँची सी गोकुल गौन जई ३३१
६. होरी को मुख अद्भुत ३३१

घमार के पद-राग जेजेवंती

❖ राग जेजेवंती

१. माई आज तो मोहन संग ३३१
२. होरी खेलन आई आज ३३२
३. फाग अनुराग भरे ३३२
४. होरी खेलै नंदको नंदन ३३२
५. फाग अनुराग भरे खेलति ३३३

घमार के पद - राग दरबारी कान्हरो

❖ राग दरबारी कान्हरो

१. हाँ हाँ ब्रज नागरि आँखे जिन . ३३३

❖ राग कान्हरो

२. खेलत फाग राग रंग ३३३
३. अरी होरी खेलन जेये ३३३
४. हो हो होरी ब्रज मंडल मोहन . ३३४
५. मैं जब जानूँगी तुमपर ३३४
६. आज ब्रजवधु ब्रजनाथ ३३४

❖ राग कान्हरो

७. रंग भर खेलत है हरि होरी ३३४
८. भौसों होरी खेलन आयो ३३४
९. होरी खेलत साल ललना ३३५
१०. खेलत फाग नंद नंदन ३३५

घमार के पद - राग नायकी

❖ राग नायकी

१. ब्रज में खेलैरी घमार ३३६
२. नारी गारी दे गई वे माई ३३६
३. होरी रंग भर गावे ३३६

❖ राग ईमन

४. लाल गुलाल की मार ३३६
५. आलीसी भरत मोहन जित तित ३३७
६. खेलै खेलै मोहन कुंज गली ... ३३७
७. खेलैरी घमार मोहन प्यारी ३३७
८. लाल गुलाल की धूम मची ३३७
९. सुनी उफ दोरी आई बाल ३३७
१०. होरी खेलिये जो जुबली बूंद में ३३८
११. होरी कान्ह पियारी रगमगे ३३९

घमार के पद-राग अठानो

❖ राग अठानो

१. नावत घमार आई ब्रजकी ३३९
२. अजें रावलकी ग्यार नार ३३९
३. नंदलाल खेलै फाग सब ३३९
४. गावें घमार तान तरंग ३४०
५. खेलत है ब्रज में हरी ३४०
६. एनेना नैननि सौं खेलै होरी ... ३४०
७. खेलै खेलै मोहन कुंज गली ... ३४०
८. नवरंग पिय नवरंग प्यारी ३४०
९. हों आज होरी खेलोंगी ३४१
१०. हरि संग घली खेलिए होरी ... ३४१
११. होरी खेलति रंग रङ्गो ३४१

घमार के पद-राग केदारी

❖ राग केदारी

१. ब्रज में होरी खेलै नंद नंदन ... ३४२
२. खेलत मोहन राधा होरी ३४२
३. रस को रसीली लाल ३४३
४. रुबि के खेलति मोहन राधा ... ३४३
५. रसिक गोवर्धन धरन खेलत ... ३४३
६. होरी या बगर में माघ रही ३४४

घमार के पद-राग बिहान

❖ राग बिहान

१. रंगन रंग हो हो होरी खेलें ३४४
२. एक दिसवर प्रजबाला ३४५
३. लाग्यो रे लाग्यो ३४६
४. भली भई ब्रज होरी आई ३४६
५. बरसाने की ब्याहिनी ओर ३४६
६. जब हरी हो हो होरी गावे ३४७

❖ राग बिहाग

७. स्वामाधु होरी खेलन आई ३४८
८. हो हो हो कही खेलत ३४९
९. खेलत रंगीली राधे ३४९
१०. रसिक दोऊ खेलन लागे ३४९
११. यमुना जल सजनी हो ३५०
१२. होरी आई रे यन्हाई ३५०
१३. आज गहवर बन होरी मानी ... ३५०
१४. झुकी गुलाल किनि डारी अलक ३५०
१५. नवलबधु रंग भीमी ३५१
१६. नवरंग भीमो प्याल नव राधा .. ३५१
१७. होरी खेले ब्रज बरसाने की ३५१
१८. होरी खेलत रंगभीने पिय ३५१
१९. होरी खेलत कुंभर कन्हाई ३५२
२०. कान्हकुंवर खेलें होरी जमुना .. ३५२
२१. खेलति गुपाल लाल कागु ३५२
२२. खेलति गुपाल माई ३५३
२३. खेलन दे मोहे होरी हो रसीया , ३५३
२४. मदनमोहन कुंवर दूधभानु ३५४

वसंत धमार - मान के पद

❖ राग बसंत

१. खेलि खेलि हो लउंती राधे ३५४
२. खेलि खेलि हो लउंती श्री राधे ३५४
३. पलिन बन निरखी राज समाज . ३५४
४. पलिन बन बहति मंद सुगंध ३५५
५. रतिपति दे दुःख करि रतिपति ३५५
६. राधे देखि बन के वैन ३५५
७. फिरि पछिलाइगी हो राधा ३५५
८. अतु बसंत प्रफुलित बन बकुल ३५५
९. कहा आईरी तरकि ३५६
१०. मान राजी भजी कंत ३५६
११. ऐसो पत्र लिखि पठयो नृप ३५६
१२. पलिन राधे तोहि स्वाम बुसायें .. ३५६
१३. देखि वसंत समे ३५६
१४. बेगि छलो बन कुंवर सयानी .. ३५७
१५. मानिनी मान सुडावन ३५७
१६. आई अतु सहंदिश कुले ३५७
१७. पलिन निधरक बन देखि सखि . ३५७

वसंत धमार मान के पद

❖ राग कान्हरी

१. ए प्यारी मान न कीजे पिय ३५८
२. मानत नाही नबल नबेली ३५८
३. मान न कीजीये पीय सों ३५८
४. रंगमहल रंग फाग ३५८

❖ राग अठानो

१. मान न कीजी पिय सों ३५९

❖ राग बिहाग

१. लाल करत मनुहार री प्यारी .. ३५९
२. प्यारी तेरो मानगव ३५९
३. होरी खेलेंही बनेगी रुसैं ३५९
४. या अतु को तुख मान सखी री ३५९
५. राधे यह दिन कैसे निबहेगो ३६०
६. लाडिली मान न कीजे ३६०
७. पिय संग खेलति अधिक श्रम . ३६०
८. प्यारी मान घरे मन भाये ३६०
९. नित उठ मान मनावे हो ३६०
१०. यह दिन होरी को सो पूजिन . ३६०
११. होरी के खेल में गुमान कैसेतो ... ३६०
१२. होरी के दिनन में पिया ३६१

बसंत धमार पीढये के पद

❖ राग बसंत

१. खेलति खेलति पीढी श्यामा .. ३६१
२. खेलि कागु मुसिकात घले ३६१
३. खेलि बसंत जाप वारयो ३६१
४. प्यारी पिय खेलति बर बसंत . ३६१
५. बसंत बनाय पलिन ब्रजसुंदरि .. ३६२
६. अतु बसंत दिलसति ३६२
७. खेलि काग अनुराग भरे ३६२

❖ राग काफी

१. होरी खेलति ब्रजकुंजन मडियां ३६२
२. ब्रज में होरि रंग सुहायो ३६२

❖ राग बिहाग

१. खेलत बसंत संग ले ३६२
२. रंगमहल पीढे पीयप्याये ३६३
३. निकुंज में पीढे रसिक ३६३

❖ राग बिहाग

४. पीढि प्यारी पिय के संग ३६३
५. लालन पीढीये जु बाल ३६३
६. खेले बसंत पियासंग ३६३
७. नौद भरे गैना दूर-दूर जात ... ३६३
८. छले हो भावले रस ऐन ३६४
९. खेलि काग निकुंजन दोऊ ३६४
१०. निस के ऊनीदे नेना ३६४
११. पीढे पिय प्यारी रंगभरे ३६४

बसंत धमार आश्रय के पद

❖ राग बसंत

१. श्रीवस्तभप्रभु करुणसागर ३६४

आशिष के पद

❖ राग बसंत

१. खेलि काग अनुराग मुदित ३६४

❖ राग सारंग

२. खेत फाग घर आयो लाडिलो . ३६५

डोल के पद

❖ राग नट

१. खेल फाग फूल बैठे ३६५

डोल के पद - राग हमीर

❖ राग हमीर

१. डोल झुलत है गिरिचरन ३६५
२. डोल मंदन को झुलत हलचर वीर ३६५

डोल - राग कल्याण

१. डोल झुलत है ललना ३६५
२. डोलत झुलत है प्यारो लाल .. ३६६
३. डोल झुकत है हंसि मुसकवात ३६६
४. झुलत डोल नवल किशोर ३६६
५. झुलत नंद नंदन डोल ३६६
६. डोल झुलत नंद नंदन

❖ राग केदारो

७. झुलत डोल नवल किशोरी ३६७
- (यह पद ४ थे भोग आरती के बाद गाये)

वसंत बहार के पद (पौषवदि अमावस्या से महासुदि ४ तक)

१ ॥ राग बिलावल ॥ वसंत पंचमी के दिन मंगला में बिलावल ॥
चोताल ॥ आज की बानिक पर हो लाल हों बलि बलि गई बिगलित कच
सुवन पाग ढरकि रहि वाम भाग अंग अंग अलसही ॥१॥ अरुन नैन झपक
जात कछु जँभात वार वार पीक कपोल छही ॥ धनि सुहाग भाग जाकों
'सूर' के प्रभु सँग सब निस बितई ॥२॥

२ ॥ राग मालकौंस ॥ लहेकन लागी बसंतबहार सखि त्यों त्यों
बनवारी लाग्यो बहेकन ॥ फूले पलास नखनाहार कैसे तेसें कानन लाग्यो
महेकन ॥१॥ कोकिल मोर शुक सार सहंस खंजन मीन भ्रमर अखियाँ
देख अति ललकन ॥ नंददास प्रभु प्यारी अगवानी गिरिधर पियकों देखत
भयो श्रमकन ॥२॥

३ ॥ राग मालकौंस ॥ चल बन देख सयानी यमुना तट ठाडो छेल
गुमानी ॥ फूले कदंब नाहर पलास द्रुम त्रिविध पवन सुखसानी ॥१॥ बहुरंग
कुसुम पराग बहक रह्यो अलि लपटे गुंजत मृदुबानी ॥ कीर कपोत कोकिला
ध्वनि सुन ऋतु वसंत लहेकानी ॥२॥ सुन सखी वचन मिल उठी पिय सों
नवनिकुंज की रानी ॥ बीनन चले दोऊ कुसुम कलियन ब्रज कुंजन ऋतुमानी
॥३॥

४ ॥ राग मालकौंस ॥ लहेकन लागीरी बसंत बहार मानो बनवारी
लाग्यो बहकन ॥ ना जानो जब कहा करेंगे लागे हे पलास द्रुम डहकन
॥१॥ मदनभर केकीहूक काढत बरणवरण द्रुम पुष्पलागे महेकन ॥ आनंद
धन तुम कित हो बिरम रहे इत कोकिला लागे कुहुकन ॥२॥

५ ॥ राग मालकौंस ॥ फूल्योरी सघन बनता में कोकिला करत
गान ॥ चलरी बेग वृषभान नंदिनी छाड कठिन मनमान ॥१॥ नव ऋतुराज
आयो नेरे मिल कीजे मधुपान ॥ सूरदास मदनमोहन प्रियको गाइये रिझाइये
सुनाइये मीठी मधुरी तान ॥२॥

६ ॥ राग मालकौंस ॥ बोलत स्याम मनोहर बैठे कदंब खंड ओर
कदंबकी छैयां ॥ कुसुमित द्रुम अलि गुंजत सखी कोकिला कल कूजत तहियां
॥१॥ सुनत दूतिका के बचन माधुरी भयो हे हुलास जाके मन महियां ॥
कुमनदास ब्रज कुंवरि मिलन चली रसिक कुवर गिरिधरन पैयां ॥२॥

७ ॥ राग मालकौंस ॥ आज कोमल अंगतें ब्रज सुंदरी रसिक गोपाल
लाले भाई ॥ सकल शृंगार सज मृगनयनी अब सर जान आप चलि आई
॥१॥ लहेंगा लाल झूमक की सारी कसुंभी पीत वरुणी पिय अतिहि
रंगाई ॥ कुमनदास प्रभु गोवरधनधर अपुनी जान हैस कंठ लगाई ॥२॥

८ ॥ राग मालकौंस ॥ बालापन गयो अब आयो जोबन रोम रोम
प्रफुल्लित तन ॥ मदन नृपति की फोज आवत सखि भयो हुलास युवतिन
मन ॥१॥ ठोर ठोर फूले द्रुम कानन कोकिल लागे कुलाहल करन ॥ कामीजन
उर दाह करन कों सेना सज आये लरन ॥२॥ भरो चलो प्यारी अपने
प्रीतमको धरो आयुध आभरण ॥ समर संग्राम जीतेगे सूर प्रभु चाहत तिहारी
शरण ॥३॥

९ ॥ राग मालकौंस ॥ ललित बालापन गयोरी अब आयो जोबन
कामिनीके मन फूलें ॥ पिय संग हास बिलास रंगन खेलेंगे यमुना कूलें
॥१॥ यह अवसर नीकों सुन सजनी ओर अवसर नाही समतूलें ॥ प्रीत
करो सखि स्याम सुंदरसों सूर रसिक समूलें ॥२॥

१० ॥ राग मालकौंस ॥ सघन वन फूल्योरी कुसुमन फूली सब
वनराई ॥ फूली ब्रज युवतीजन फूले सुंदर वर रति आई ॥१॥ जानपंचमी
मिलाप करन वृषभान सुता बन आई ॥ रसिक प्रीतम पिय अति रसमाते
डोलत कुंजन माई ॥२॥

११ ॥ राग भैरव ॥ सघन वन छायो प्रफुल्लित द्रुमवेलि भयो हुलास
ब्रजजन मन ॥ ठोरठोर कोकिल कल कूजत करत गुंजार मधुपगन ॥१॥
भयो प्रकट आज ऋतुराज वासकियो सुनियत वृंदावन ॥ रसिक प्रीतम पियसों

रसबिलसों आन अपों सखि तन मन धन ॥२॥

१२ (॥१॥ राग मालकौंस (॥२॥) नईरी कतुको आगम भयो सजनी जबतें
बिदा भयो हेमंत । विरहनि के भागिनतें सजनी आवत चल्यो हे बसन्त ॥१॥
तन सीहाय वीर्य चले भर भाव चल्यो ताहीको कंत ॥ चत्रभुज प्रभु पिय
तारी बजावत या जाडेको आयो अन्त ॥२॥

१३ (॥१॥ राग मालकौंस (॥२॥) ससक ससक रही अपने भवन में चार मासको
कीयो बिहार । नंद सुवन ब्रजराज सांवरो मोह्यो परम चतुर ब्रजनार ॥१॥
कब आवेंगे मेरे घरमें बिधनासों मांगु अचरा पसार । कुंभनदास प्रभु
गोवर्धनधर जाडो चल्यो दोउ कर झार ॥२॥

१४ (॥१॥ राग मालकौंस (॥२॥) मदन मतवारो । नागर नवल प्रेम रस बस
व्हे कीनो नंद दुलारो ॥१॥ गये हो तुम भवन पराये हमसों नित करत
तुम टारो । सोय रही गृह भवन अकेली सीत दहत तनवारो ॥२॥ आज
कियो कर जोर मीलन हित पायो हे प्रीतम प्यारो । परमानंद प्रभु या जाडेको
दीजिये देस निकारो ॥३॥

१५ (॥१॥ राग मालकौंस (॥२॥) मदन मत कीनोरी मतवारो । आवत नींद
निशंक करन सब भर जोबन अति भरो ॥१॥ तेसिय सीत परत सखी हम
पर कांपत हे तन सारो । सोवा सेज देवकके साजसैं अलसत अंग उधारो
॥२॥ कब आवें मेरे गृह वह प्रीतम प्रान हमारो । परमानंदप्रभु या जाडेको
कीजे मुंह अब कारो ॥३॥

१६ (॥१॥ राग मालकौंस (॥२॥) बसंत आगम सुंदर नंद नंदन जो पाउं ।
कुंवर कपट बनाय जतनसों नीके गिरधरलाल लडाउं ॥१॥ अति प्रफुल्लित
मन हरखत आनंद अपने पियसों उरन मिलाउं । परमानंदप्रभु या जाडे को
देस निकास कराउं ॥२॥

१७ (॥१॥ राग मालकौंस (॥२॥) कानह तिहारे राज बसंत हो सब मुख चेन
दिखाई देत नहीं कर वा छिन ॥ नंद समीप मंगल मित अंत न होत जु

जान वीतत वरज निसदिन ॥१॥ भूर भाग्य निज जन घर ब्रजवासी कहावत
नारीन धन्य ॥ परमानंद या सुखके कारन सदा बसंत रहत वृंदावन ॥२॥

१८ (१६) राग मालकोंस (१६) मोह्यो कहूं प्रानप्रिया मेरो प्यारो ॥ हों तलपतहूं
उन बिन सजनी आयो न नंदकुमारो ॥१॥ सिथिल कियों तन सारो सखीरी
मग जावत भयो भवन उजारो ॥ रहे अनत जाय कहूं आजहू सोतन के
रस सारो ॥२॥ हमको जोग बिधाता दीयो उनकों भोग दियो सारो ॥
सूरदासप्रभु या जाडे को दीजे देसनिकारो ॥३॥

१९ (१६) राग मालकोंस (१६) मदन मत मतवारो ही कीनो ॥ मधुव्रत होय
गिरिधरन जबही जब वदन कमल रस भीनो ॥१॥ जाके कारन सुनरी सजनी
जब आरज पथ छीनो ॥ मया करी सोई तुमने कीनी ज्यों कुंदनमें मीनो
॥२॥ वेसी प्रीत हती मेरे उनसों प्रान प्रकटकर दीनो ॥ बेर बेर हमने रस
जान्यो उन सोतन रस बीन्यो ॥३॥ कहा बिरहिनी सीत लग्यो अति सो
मन जात न दीनो ॥ द्वारकेश प्रभु या जाडेको देसनिकारो दीनो ॥४॥

२० (१६) राग मालकोंस (१६) सुघर बना संग जागी मनमोहनसों
अनुरागी ॥ उरसों उर लपटाय प्रीतमसों अधर सुधा पीवन लागी ॥१॥
आलिंगन रसक्रीड़ा पियके प्रेमरस पागी ॥ हेमंत मनाय लाई कुंभनप्रभुसों
अब आई ऋतु बसंत सुहागी ॥२॥

२१ (१६) राग मालकोंस (१६) बसंत ऋतु आई फूलन फूले सब मिल आवोरी
बधाई ॥ काम नृपति रतिपति आवत हे चहुंदिस कामिनी भोंह सों चोंप
चढ़ाई ॥१॥ भँवर गुंजारत कोकिल गावत लेत सप्त स्वर तान गाई ॥
हरिबल्लभप्रभु को बसंत ऋतु लायो भरि भरि आंकोरी मन भाई ॥२॥

२२ (१६) राग मालकोंस (१६) बिधाता अबलन कों सुख दीजें ॥ बेरी भयो
मनोज अङ्ग-अङ्ग सीत लगे तन छीजें ॥१॥ केधों प्रीतम पर घर जे हे
ए दुःख तुम सुनि लीजें ॥ 'सूरदास' प्रभु या जाडे कों अब ही बिंदा करि
दीजें ॥२॥

२३ (१६) राग गौरी (१६) बेनु माई बाजे श्री बंसीबट ॥ सदा बसन्त रहित

वृन्दावन पुलिन पवित्र सुभग जमुना तट ॥१॥ क्रीट मुकुट मक्राकृत कुंडल
मुखारविन्द भँवर मानो लट ॥ दसनन कुंद कली छबि राजति भ्राजति कनक
समाज पीत पट ॥२॥ सुर मुनि ध्यान धरति नहिं पावत, करति बिनोद
सँग बालक भट ॥ दास अनन्य भजन रस कारन 'हित हरिबंस' प्रगट
लीला नट ॥३॥

२४ ॥ राग मालकौंस ॥ लहेंगा हर्यौ छबि देति । चुरी हरी तेरे
बांह विराजति सोहत बंगरी सेत ॥१॥ हरी अंगीयां उर राज रही हैं तातें
भयो स्याम सँग हेत 'चतुरभुज' प्रभु तें मन हर्यौ प्यारी तातें बट संकेत
॥२॥

२५ ॥ राग मालकौंस ॥ सारी हरी री चून कैं पहेरी चोली हरी सब
सोंधे भरी ॥ चूरी हरी अरु पोहोंची हरी री हाथन में मेंहदी गेहरी ॥१॥
पोत हरी मुख जोत खरी खरी जोबन जोत जडाव जरी ॥ नव कुंज हरी
ब्रज भोमि हरी देखि सखी मेरी सुथरी ॥२॥

२६ ॥ राग मालकौंस ॥ शिशिर ऋतुको आगम भयो प्यारी बिदा
भयो हेमन्त ॥ विरहिनके भागिनतें आली आवत चल्यो वसन्त ॥१॥ जाहि
दूतिके भवन बसे हो भाँवरि लीने कन्त ॥ कुंभनदास प्रभु या जाडेको आय
गयो है अन्त ॥२॥

२७ ॥ राग मालकौंस ॥ आवन कही गये अजहु न आये पिय सब
निस विति मोहे गीन गीन तारे ॥ दिपक ज्योती मलिन भई है किन दूतीयन
वीरमाये प्यारे ॥१॥ नभचर बोले बगर सब खोले फूले कमल मधुप
गुंजारे ॥ धोंधी के प्रभु तुम बहु नायक आये निपट वसंत सवारे ॥२॥

२८ ॥ राग मालकौंस ॥ भोरे भोरे कान तुमेरो कछो भान आथमे
गो भान में आप चली आऊंगी ॥ तुमतो चतुर नर छांड दे हमारो कर
तुमको तो नाही डर में लाजन मर जाऊंगी ॥१॥ तुमको तो चाहिए भोग
भोगको नाही संजोग देखेंगे नगर लोक अब न आऊंगी ॥ रसिक के स्वामी
श्याम धरंगी तुम्हारो ध्यान अब आयो वसंत में तुमको रिझाऊंगी ॥२॥

२९ ॥ राग मालकौंस ॥ आयी आयी हो आगम ऋतु शिशिर की
हेमंत बिदा भई जानी नवल पिय किनकर ॥ कर शृंगार पिय दरस करन
वहे मोद भरी मदभरी रस भरी गति गयंद स्थूल चरन ॥१॥ अंग अंग
फूली वसंत मानो नख शिख सजी पटभूषण भरण ॥ माधो प्रभु दंपति सुख
निरखत हसन दसन लागे फूल जरन ॥२॥

३० ॥ राग ललित ॥ किरिट धरे जब आज अति शोभित
मदनगोपाल ॥ किरिट मुगट छबी अधिक बिराजत उर वैजयंती माल ॥१॥
ठाढे सिंघ के द्वार राधे संग बेनु बजाय रसाल ॥ कमल लिये कर परमानंद
प्रभु बलि बलि गई ब्रजबाल ॥२॥

३१ ॥ राग मालकौंस ॥ सुंदर वदन देखो आज ॥ किरिट मुकुट
सोहावनो मन भामतो श्री ब्रजरज ॥१॥ लियो मन उत्कर्ष मुरली रही
अधर पर गाज पलक ओट न चाह चित लखी महा मनोहर साज ॥२॥
गोपीजन तन प्राण वारति रख्यो मनमथ लाज ॥ सुर सुत यह नंदकी श्री
वल्लभकुल की सीर ताज ॥३॥

३२ ॥ राग मालकौंस ॥ सुंदर नंदनंदन जो पाऊं ॥ अंग संग लाज
मदन मनोहर या जाडे को देश निकारो दिवाऊं ॥१॥ मृगमद अगर कपुर
कुंमकुंम मिले अरगजा देर चढावु ॥ विविध सुगंध सुमन बसंत सखी सघन
निकुंज में शयन बिछावु ॥२॥ राग रागिनी ऊरुप सुस्वरूप सरस मधुरे
गाऊं ॥ कृष्णदास प्रभु गोवर्धनधर रसिक शिरोमणि सुविधि रिझाऊं ॥३॥

३३ ॥ राग मालकौंस ॥ प्रीतमको कछु दोष नहिरि यह तो शीत
वेरी हमारो ॥ प्रीतमको मग जोवन कारण राखन नहि देत बदन उधारो
॥१॥ शीतल पवन अकेली जानके पठवत आलस करन संघारो ॥ व्रतको
तजी आक्रत निद्रासों मिलि ठगत रे ठगारो ॥२॥ कहुंगी जनाय जाय आज
मिले मोहे प्रीतम प्यारो ॥ चत्रभुज प्रभु नेह टोली जाड़ेकी कीजे मुंह कारो
॥३॥

३४ ॐ राग ईमन ॐ आलीरी कर शृंगार सायंकाल चली ब्रज बाल
पिय दरशवे कों मत्त द्विरद गेन ॥ मानों शिशुमार चक्र उदय होत गगन
मध्य ध्रुव नक्षत्र की परिक्रमा देन ॥१॥ मानों बसंत ऋतु आई अंग-अंग
छबि छाई दंपति समाज मोवे कही न परत बेन ॥ 'मुरारीदास' प्रभु प्यारी
चित्र विचित्र गति सेवक निरखि पिया छबि अद्भुत ऐसी को कर रची
मेन ॥२॥

३५ ॐ राग बिहाग ॐ सुनि री तू क्यों भई हे नचीती करि कै मान
मनमोहन सौं अबार ॥ यह समयो हसन कों नांही ब्रज पर धायो मनमथ
संभार ॥१॥ सुक पिक चात्रक हंस मोर मृग मधुकर मधूरी करति रार ॥
आयो बसंत कंत भज भामिनि लायो रतिपति पंचसर लार ॥२॥ वे जब
तिय आई लगेगे तब ही भजेगी भवन बिसार ॥ 'दास' तबे जाड़ो उठि
भाज्यो अब आवेंगी बसंत बहार ॥३॥

३६ ॐ राग बसंत ॐ सुघर बना संग जागी मोहन सौं अनुरागी ॥
उर सौं उर लपटाई नैन सौं नैन अधर-अधर सों बड़भागी ॥१॥ आलिंगन
चूँबन रस क्रीड़त पीय के प्रेम रस पागी ॥ हेमंत मनाई लई 'कुंभनदास'
प्रभु सो अब आई ऋतु बसंत सुहागी ॥२॥

श्री दामोदरदासजी की बधाई (पोढवाने)

१ ॐ राग सारंग ॐ आज बधायो मंगल चार ॥ माघमास शुक्ल
चोथ हे हस्त नक्षत्र रविवार ॥१॥ प्रेमसुधा सागर रस प्रगट्यो आनंद
बाढ्यो अपार ॥ दास रसिकजन जाय बलिहारी सरवस दियो बार ॥२॥

२ ॐ राग सारंग ॐ प्रगटे भक्त शिरोमणी राय ॥ माघमास शुक्ल
चोथ अधिक लोक निधि आई ॥१॥ दैवी जीवके भाग्य उदय भये जिन
यह दर्शन पाई ॥ करि करुणा प्रभु भूतल आये पुष्टिपथ प्रगटाई ॥२॥ महा
महोत्सव होत पुर घर घर फूले अंग न समाई ॥ रसिकदास चित एही
चहत हे चरनकमल मन लाई ॥३॥

रागमाला - शयन दर्शन (पांच राग की रागमाला)

१ **राग-ईमन** ईमन मान मेरो कह्यो काहेकी प्यारे प्यारी तु ॥
प्रथमही भरी गुन गाईए यही ते सुघराई होतु ॥१॥ मालकोंस की तान
ले ले राखत रूप बिहाग ॥ द्वारकेस प्रभु बसंत खिलावत याही ते बढत
सुहाग ॥२॥

श्रीगुसांईजी तथा श्रीजयदेवजी की अष्टपदी

१ **राग बसंत** हरिरिह व्रंजयुवती शतसंगे । विलसति करिणी
गण वृत वारण वर इव रति पति मान भंगे ॥ध्रु०॥ विभ्रम संभ्रम लोल
विलोचन सूचित संचित भावं ॥ कापि दृगंचल कुवलय निकरे रंचतितं
कलरावं ॥१॥ स्मित रुचि रुचि रतरानन कमल मुदीक्ष्य हरे रतिकंदं ॥
चुंबति कापि नितंबवती करतल धृत चिबुकममंदं ॥२॥ उद्भट भावविभावित
चापल मोहन निधुवन शाली रमयति कामपिपीन घनस्तन बिलुलित नव
वनमाली ॥३॥ निज परिरंभ कृतेनुद्धतम भिवीक्ष्य हरिं सविलासं ॥
कामपिकापि बलाद करोदशेकुतु केन सहासं ॥४॥ कामपिनीवी बंध विमोकस
संभ्रम लज्जित नयनां ॥ रमयति संप्रति सुमुखि बलादपि करतल धृत निज
वसनां ॥५॥ पिय परिरंभ विपुल पुलकावलि द्विगुणित सुभग शरीरा ॥
उद्गायति सखि कापि समं हरिणा रति रणधीरा ॥६॥ विभ्रम संभ्रम गलदं
चलमलयांचित मंगमुदारं ॥ पश्यति सस्मित मति विस्मित मनसा सुदृशः
सविकारं ॥७॥ चलति कयापि समंस कर ग्रह मल सत रंस विलासं ॥
राधे तव पूरय तु मनोरथ मुदित मिदं हरिरासं ॥८॥

२ **राग बसंत** ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय
समीरे ॥ मधुकरनिकर करंबित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे ॥१॥ विहरति
हरिरिह सरसवसंते ॥ नृत्यति युवति जने न समं सखि विरहि जनस्य दुरंते
॥ध्रु०॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधूजनजनित विलापे ॥ अलिकुल संकुल
कुसुम समूह निराकुल बकुल कलापे ॥२॥ मृगमद सौरभरभस वशं वदनवदल
मालत माले ॥ युवजन हृदय विदारण मनसिजनखरुचि किंशुक जाले ॥३॥

मदन महीपति कनक दंड रुचि केसर कुसुम विकासे ॥ मिलित शिलीमुख
पाटपिटल कृत स्मरतूण विलासे ॥४॥ विगलित लज्जित जगदव लोकन
तरुण करुण कृतहासे ॥ विरहि निकृंतन कुंत मुखकृति केतकिदंतुरिताशे
॥५॥ माधविका परिमल ललिते वनमालिक याति सुगंधौ ॥ मुनिमनसामपि
मोहन कारिणि तरुणा कारण बंधौ ॥६॥ स्फुरदति मुक्तलता परिरंभण
मुकुलित पुलकितचूते ॥ वृंदावन विपिने परिसर परिगत यमुनाजल अति
पूते ॥७॥ श्रीजयदेव भणितमिदमुदयति हरिचरण स्मृतिसारं ॥ सरस वसंत
समय वनवर्णनमनुगत मदन विकारं ॥८॥

३ (१५) राग बसंत (१५) स्मर समरो चित विरचित वेशा ॥ गलित कुसुमदल
विलुलित केशा ॥१॥ कापिचपला मधुरिपुणा ॥ विलसति युवति रधिक गुणा
॥१०॥ हरि परिरंभण वलित विकारा ॥ कुच कलशो परितरलित हारा ॥२॥
विचलदलक ललिताननचंद्रा ॥ तदधर पानरभसकृत तंद्रा ॥३॥ चंचल कुंडल
ललित कपोला ॥ मुखरित रशनजघन गति लोला ॥४॥ दयित विलोकिता
लज्जिता हसिता ॥ बहुविध कूजिता रति रसरसिता ॥५॥ विपुलपुलक पृथु
वेषथुभंगा ॥ श्वसित निमीलित विकसेद नंगा ॥६॥ श्रमजल कणभर सुभग
शरीरा ॥ परिपतितोर सिर तिरणधीरा ॥७॥ श्रीजयदेव भणित हरि रमितं
कलि कलुषं जनयतु परिशमितं ॥८॥

४ (१५) राग बसंत (१५) विरचित चाटु वचन रचनं चरण रचित
प्रणिपातं ॥ संप्रति मंजुल बंजुल सीमनि केलि शयन मनुयातं ॥१॥ मुग्धेमधु
मथनमनु गतमनुसर राधिके ॥१०॥ घनजघन स्तन भार भरेदर मंथर चरण
विहारं ॥ मुखरित मणि मंजीर मुपैहिविधेहिमराल विकारं ॥२॥ शृणुरमणीय
तरंतरुणी जनमोहन मधुरिपुरावं ॥ कुसुम शरासन शासन बंदिनिषिक निकरे
भजभावं ॥३॥ अनिल तरल किसलयनि करेणकरेण लतानि कुरंबं ॥ प्रेरण
मिवकर भोरु करोति गतिं प्रतिमुंच विलंबं ॥४॥ स्फुरित मनंगत रंग वशादिव
सूचित हरि परिरंभं ॥ पृच्छ मनोहर हार विमल जल धारम मुकुचकुंभं ॥५॥
अधिगत मखिल सखी भिरिदंतवव पुरपिरतिरण सज्जं ॥ चंडिरसित रशनार
वडिंडिममभि सरसरसम लज्जं ॥६॥ स्मर शर सुभग नखेनकरेण सखी



मवलंब्य सलिलं ॥ चलवलय क्वणितैरव बोधय हरि मपि निजगति शीलं
॥७॥ श्रीजयदेव भणित मधुरी कृत हारमुदासित वामं ॥ हरि विनिहित मनसा
मधितिष्ठतु कंठ तटीमभिरामं ॥८॥



५ (॥१॥ राग बसंत (॥३॥) अवलोकय सखि मंजुल कुंजे ॥ रमयति गोकुल
रमणी रिह गोकुल पति रलि कोकिल पुंजे ॥६०॥ माधविका लतिकारति
कारिणि रागिणि रुचिर बसंते ॥ त्रिविध पवन कृत विरह विधूजन मदन
नृपति सामंते ॥१॥ किंशुक कुसुम समीकृत दयिताधर रसपान विनोदे ॥
मधुप समाहृत बकुल मुकुल मधुविकसित सरसामोदे ॥२॥ नवनव मंजु रसाल
मंजरी बोधित युवजनमदने ॥ दयिता रदन समद्युति मुकुलित कुंद चिरस्मित
वदने ॥३॥ युवतीजन मानस गतिमान महागज मदमृगराजे ॥ कोकिल कुल
कूजित विरहानलता पित पथिक समाजे ॥४॥ वितत पराग कुसुम संबंधि
सदागति वासित गहने ॥ कुसुमित किंशुक कै तव विस्तृत विरहिद हनवन
दहने ॥५॥ पल्लव कुसुम समेत विपिन विस्मारित युवजन गेहे ॥ मदन
दहन दीप न विद्रावित विरहि दीन जनदेहे ॥६॥ जगति समान शीततदितर
विरचित निज रुचिराकारे ॥ वनिताजन संयोग सेविजन जनिता नंद सुभारे
॥७॥ इतिहितकारि वचन मतिमानिनिमान यगोकुलवासे ॥ कुरुरतिमतिशय
करुणारस वतिबितरमतिं हरिंदासे ॥८॥



६ (॥१॥ राग बसंत (॥३॥) बिलसति हरिरिह सरस होलका समये रमणी
संगे ॥ गूढ भाव समुदय संवर्धित हृदय समुदित नंगे ॥१॥ संजोजयति दशा
दशमादौ हृदि भावयति विलासं ॥ निस्त्रय वचन शतेन विरचति युवतिजन
परिहासं ॥२॥ स्पृशति कपोलौ पाणियुगेन करोति कुमकुमालेपं ॥ निज रमण
लघुताकरणे विदधाति समय संक्षेपं ॥३॥ ताल मृदंग बिबिध वादित्र
सुघोषानंदित घोषं ॥ सपदि वशीकुरुते निज गोकुलमखिलं रसपोषं ॥४॥
सरस वेणुनादेन हृदयमति तुनते निर्मलभावं ॥ मुरलिक्यानुकरोति कदापि
मधुरतर कोकिलरावं ॥५॥ नृत्यति मनसिज रतिभर भावेन मधुर वदखिल
समक्षं ॥ सदसि ददाति महारसमपि हरिपदयुगल भावलक्षं ॥६॥ उड्डापयति
सरस कुंकुम रेणुयुत रागं ॥ सित सौरभयुत रेणु मिश्रणावेदि रूप विभागं

॥७॥ चंदननीरसेक सरसाकृत युवति युवजन देहं ॥ निज सुकुमार तनोरनुरूपं कुरुते विस्मृत गेहं ॥८॥ अति रभसेन कदाचिदुपर्यपि पतति युवति शत यूथे ॥ दस विध रति पथि मदन मनोरथ समुचित रुचिर वरूथे ॥९॥ श्री बल्लभ पद युग कृपयेव हृदा पश्यति 'हरिदासे' ॥ तव पूरयतु चिंतितं सकलं सखि सामयिक विलासे ॥१०॥

बसंत पंचमी के पद

१  राग बसंत  ॥ साखी ॥ आई ऋतु-बसंत की गोपीन किये सिंगार ॥ कुमकुम बरनी राधिका सो निरखति नंदकुमार ॥१॥ आई ऋतु-बसंत की मौरे सब बनराई ॥ एकु न फूलै केतकी औ फूली बनजाई ॥२॥ श्री गिरिराजधरनधीर लाडिलौ ललन-बर गाइए ॥ श्री नवनीत प्रिय लाडिलौ ललन-बर गाइए श्री मदन मोहन पिय लाडिलौ ललन-बर गाइए ॥३॥ कुंज कुंज क्रीड़ा करें, राजत रूप-नरेस ॥ रसिक, रसीलौ, रसभर्यौ, राजत श्रीमथुरेस ॥४॥ श्रीगिरिराजधरनधीर लाडिलौ ललन बर गाइए ॥

२  राग बसंत  आई बसंतऋतु अनुपनूत कंतमोरे ॥ बोलत वन कोकिला मानों कुहुकुहु रस ढोरे ॥१॥ फूली वन राई जाई कुंद कुसम घोरे ॥ मदरस के माते मधुप फिरत दोरेदोरे ॥२॥ हम तुम मिलि खेलैलाल कुंज भवन चौरे ॥ गोविंद प्रभु नंदसुवन खेलें इकठौरे ॥३॥

३  राग बसंत  आज सुभगदिन बसंतपंचमी जसुमति करति बधाई ॥ विविध सुगंध उवटिकें लालकों ताते नीर न्हावाई ॥१॥ बांधीपाग बनाय सेतरंग आभूषन पहराई ॥ तनक सीसपर मोर चंद्रिका दिसदाहिनी ढरकाई ॥२॥ ग्रहग्रहतें ब्रजसुंदरि सबमिलि नंदपोरिपे आई ॥ अंबमोरके पुष्पमंजुरी कनिककलश बनाई ॥३॥ चोवाचंदन अगरकुंकुमा केसरि रंग मिलाई ॥ प्रमुदित छिरकत प्रान पियाकों अबीर गुलाल उड़ाई ॥४॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ गावत गीत सुहाई ॥ तन मन धन नोछावरि कीनों आनंद उर न समाई ॥५॥ श्रीगिरिवरधर तुम चिरजीवो भक्तन के सुखदाई ॥ श्रीवल्लभ पदरज प्रतापतें हरीदास बलिजाई ॥६॥



४ ॥ राग बसंत ॥ प्रथम समाज आज वृंदावन विंहरतलाल
 विहारी ॥ पांचे नवल बसंत वृंदावन उमगि चलीं ब्रजनारी ॥१॥ मंगलकलश
 लिये ब्रजसुंदरि मधि वृषभान दुलारी ॥ फलदलजुर नवनूतमंजुरी कनिक
 कलश सोभारी ॥२॥ गावतगीत बजावत वाजे मेनसेन अनुहारी ॥ दरसपरस
 मनमोद बढावत राजतछबि भरभारी ॥३॥ उडत गुलाल अबीर कुंकुमा
 भरिकेसरि पिचकारी ॥ छिरकत फिरत छबीले गातन रूप अनूप अपारी ॥४॥
 विविध विलास हास रस भीने इत प्रीतम उतप्यारी ॥ हित हरिवंस
 निरखि मुख सोभा अखियां टरत न टारी ॥५॥



५ ॥ राग बसंत ॥ आज मदन महोत्सव राधा ॥ मदन गोपाल बसंत
 खेलतहें नागर रूप अगाधा ॥१॥ निधिबुधवार पंचमी मंगल ऋतुकुसमाकर
 आई ॥ जगतबिमोहन मकरध्वजकी जहांतहां फिरीदुहाई ॥२॥ मनमथ
 राजसिंघासन बैठे तिलकपिता महदीनों ॥ छत्रचंवर तूणीर संखधुनि बिकट
 चाप करलीनों ॥३॥ चलोसखी तहां देखनजैये हरि उपजावत प्रीति ॥
 परमानंददास को ठाकुर जानतहें सबरीति ॥४॥



६ ॥ राग बसंत ॥ श्रीपंचमी परम मंगलदिन मदन महोच्छव
 आज ॥ बसंत बनाय चली ब्रजसुंदरि ले पूजाको साज ॥१॥ कनिक कलश
 जलपूर पढत रतिकाम मंत्र रसमूल ॥ तापरधरी रसाल मंजुरी आवृत
 पीतदुकूल ॥२॥ चोवाचंदन अगरकुंकुमा नव केसरि घनसार ॥ धूपदीप
 नानानिरांजन विविध भांति उपहार ॥३॥ बाजतताल मृदंग मुरलिका वीनापटह
 उपंग ॥ गावत राग बसंत मधुरसुर उपजत तान तरंग ॥४॥ छिरकतअति
 अनुरागमुदित गोपीजन मदनगुपाल ॥ मानोंसुभग कनिक दलीमधि सोभित
 तरुन तमाल ॥५॥ यह विधि चली रति राज वधावन सकलघोष
 आनंद ॥ हरि जीवन प्रभु गोवर्धनधर जयजय गोकुलचंद ॥६॥



७ ॥ राग बसंत ॥ प्रथम वसंतपंचमी पूजन कनकलश कामिनी
 ऊरफूले ॥ आयो मदन महिष सैनले अंबडार पे कोयल झूले ॥ ठोरठोर
 द्रुमवेलीफूली कालिंदी के कूले ॥ चत्रभुज प्रभु गिरीधर संग बिहरत

स्यामास्याम समतूले ॥२॥

८  राग बसंत  परम पुनीत बसंतपंचमी मुरत शुभ दिन साजेहो ॥ गोपीगवाल मुदित मनमांहि खेलत बनवृजराजे हो ॥१॥ ब्रह्मादिक सनकादिक नारद सुरविमान चढआये हो ॥ अष्टसिद्धी नवनिधिह ठाडी लेकर कुसुम बधाये हो ॥२॥ फूल्यो वृंदावन फूल्यो गोवर्धन फूल्यो जमुना तीर ॥ रामदासप्रभु गिरीधर फूले नखशिख शोभा स्याम शरीर ॥३॥

९  राग बसंत  बनठन आई सकल वृजललना खेलनकोजु बसंत ॥ श्रीपंचमी परम महोत्सव परम मनोहर गोकुलकंत ॥१॥ शुभदिन सुभग सरोज प्रफुल्लित गुंजत भंवर सुवास ॥ खेल मच्यो नंद आगन अद्भुत ब्रजजन नंदकुमर सुखरास ॥२॥ केसर की चमची मनि वोकमें केसकुसुम सुरंग ॥ अबीर गुलाल उडावति गावत प्रगट्यो अंगअनंग ॥३॥ नीजकरसोंकरदेत पियनकोशोभा कहा कहि आवे ॥ सुरदास प्रभु सब सुख क्रिडत ब्रजजन अंगलगावे ॥४॥

१०  राग बसंत  बसंत पंचमी मदन प्रगटभयो सब तन मन आनंद ॥ ठोर ठोर फूले पलास द्रुम औरमोर मकरंद ॥१॥ विविध भांत फूल्यो वृंदावन कुसुम समूह सुगंध ॥ कोकिल मधुप करत गुंजारव गावत गीत प्रबंध ॥२॥ सारस हंस सरोवर के तट बोलत सरस अमंद ॥ नानापहुप परागन के भरी आवत पवन सुगंध ॥३॥ वैनु बजाय करीमन मोहित गोपीनको नंदनंद ॥ मिलघाई वृषभानु सुतापै परीप्रेमके फंद ॥४॥ गोवर्धनगिरि कुंज सदनमें करत विहार सुछंद ॥ दास निरखि बलिबलि शोभापै स्यामा गोकुलचंद ॥५॥

११  राग बसंत  आयो ऋतुराज साजि पंचमी बसंत आज मोरे द्रुम अति अनूप अंबरहे फूली ॥ वेली लपटी तमाल सेतपीत कुसमलाल उडवत सब स्याम भाम भमरहे झूली ॥१॥ रजनी अति भई स्वच्छ सरिता सब विमलपच्छ उडगन पति अति अकास बरखत रस मूली ॥ जती सती सिद्धसाध जिततित उठि भगे समाधि विमन जडित पसीभये मुनिमनगति

भूली ॥२॥ जुवति जूथकरत केलि स्याम सुखद सिंधुझेलि लाज लीक दई
पेलि परसिपगन मूली ॥ बाजत आवज उपंग बांसुरी मृदंग चंग यह सुख
सब छीतनिरखि इच्छा अनुकूली ॥३॥

१२ (११) राग वसंत (११) आई हैं हम नंदके द्वारे ॥ खेलन फाग वसंत
पंचमी सुख समाज विचारे ॥१॥ कोऊ ले अगर कुंकुमा केसरि काहूके
मुखपर डारे ॥ कोऊ अबीर गुलाल उडावें आनंद तनन संभारे ॥२॥ मोहनकों
गोपी निरखत सब नीकेवदन निहारे ॥ चितवनिमें सबही बसकीनी नागर
नंददुलारे ॥३॥ ताल मृदंग मुरली डफबाजे झांझनकी झनकारें ॥ सूरदास
प्रभु रीझि मगनभये गोपवधू तनवारे ॥४॥

१३ (११) राग वसंत (११) यह देखि पंचमी ऋतुवसंत ॥ जहां द्रुमअरु
वेली सबफलतं ॥१॥ तहां पठई ललिता करिविचार ॥ नवकुंजनमें
करिहोंविहार ॥२॥ लेआई सब सिंगारसाज ॥ हरिदोरिमिले मानों मदनराज
॥३॥ नवकेसरि चौवा अंगराग ॥ खेलत गुपाल बढ्यो अनुराग ॥४॥
कुलकोकिल कलरव सुखसमाज ॥ अलिगुंजन पुंजनकुंजगाज ॥५॥ रतिकुंभ
लईठाडी निहारी ॥ मधिराजत सरस सबवेरवारि ॥६॥ सखी ताल मृदंग
बजायगाय ॥ तहां द्वारिकेश बलिहारी जाय ॥७॥

१४ (११) राग वसंत (११) आई आज वसंत पंचमी खेलन चलोगोपाल ॥
संगसखा लेहो मनमोहन हमलेहें व्रजवाल ॥१॥ चौवाचंदन ओर अरगजा
केसरि माटभराई ॥ अबीर गुलाल की झोरी भरिभरि लेहोहाथ पिचकाई
॥२॥ छिरकत हंसत चलत वृंदावन करत कुलाहल देतहें गारी ॥ ग्वालन
संग लिये नंदनंदन सखियन संग श्रीराधा प्यारी ॥३॥ एकनाचत एकधाय
मिलावत एक मृदंग एकताल बजावत ॥ यह सुखदेखि सुरलोक आनंदित
स्यामदास बलिहारी जावत ॥४॥

१५ (११) राग वसंत (११) आज चलोरी वृंदावन बिहरत वसंत पंचमी पंचम
गावत ॥ साजिले हुगडुवा भरि चंदन हरखि आनंद मृदंग बजावत ॥१॥
कुसमित द्रुमवेली आछी छबि कूजत कोकिल कीरमानों हम हि बुलावत ॥

कल्याण के प्रभु गिरिधरके परस्पर ये अखियां अतिही सुख पावत ॥२॥

१६ (१६) राग बसंत (१६) मनमोहन संग ललना विहरत बसंत सरस
 ऋतुआई ॥ लेलेछरी कुंवरि राधिका कमलनेन पैंधाई ॥१॥ द्वादसवन रतनारे
 देखियत चहुंदिस केसू फूले ॥ मोरेअंव ओर द्रुमवेली मधुकर परिमल भूले
 ॥२॥ सिसिर ऋतुमें अति गयो सीत सब रविउत्तर दिस आयो ॥ प्रेम उमगि
 कोकिला बोली विरहनि विरहज गायो ॥३॥ ताल मृदंग बांसुरी बीना डफ
 गावत मधुरी वानी ॥ देत परस्पर गारि मुदित ग्हे तरुनीबालसयानी ॥४॥
 सुरपुर नरपुर नागलोक जलथलक्रीडा रस पावे ॥ प्रथमवसंत पंचमी लीला
 सूरदास गुनगावे ॥५॥

१७ (१७) राग बसंत (१७) आवो वसंत वधावो व्रजकी नारि ॥ सखी सिंधपोरि
 ठाडे मुरारि ॥६०॥ नौतन सारी कसूंभी पहिरिकें नवसत अभरनसजियें ॥
 नवनवसुख मोहन संग विलसत नवल कान्ह पियभजियें ॥१॥ राधा चंद्रभगा
 चंद्रावलि ललिता भाम सुसीले ॥ संजावली कनिकघट शिरपर अंबमोर जब
 लीले ॥२॥ चोवा चंदन अगरकुंकुमा उडत गुलाल अबीरे ॥ खेलत फाग
 भाग बड गोपी छिरकत स्याम शरीरे ॥३॥ बीनावेन झांझ डफ बाजे मृदंग
 उपंगन ताल ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधरनागर रसिक कुंवर गोपाल ॥४॥

१८ (१८) राग बसंत (१८) कुचगडु बाजो वनमोर कंचुकीवसन ढांपिले
 राख्योवसंत ॥ गुनमंदिर अरुरूपबगीचा तामें बैठीहे मुखलसंत ॥१॥
 कोटिकाम लावन्य विहारीजू जाहिदेखेंते दुखनसंत ॥ ऐसे रसिक हरीदास
 के स्वामी ताहि भरन आई प्रभु हसंत ॥२॥

१९ (१९) राग बसंत (१९) जोवनमोर रोमावली सुफल फली कंचुकीवसंत
 ढांपिलेचली वसंत पूजन ॥ वरनवरन कुसुम प्रफुल्लित अंबमोर ठौरठौर
 लागेरी कोकिला कूजन ॥१॥ विविध सुगंध संभारि अरगजा गावत ऋतुराज
 राग सहित व्रजवधूवन ॥ सूरदास मदनमोहन प्यारी ओर पियसहित चाहत
 कुसल सदां दोऊजन ॥२॥

२० (२०) राग बसंत (२०) आजवसंत सबे मिलि सजनी पूजो मोहनमति ॥

हरद दूब दधि अक्षत लेकें गावो सौभगगीत ॥१॥ चोवाचंदन अगरकुंकुमा
पोहोपसेत अरुपति ॥ घरघरते वानिक वनिआए आप आपुनी रीति ॥२॥
मोहन कोमुख निरखिकें करिहों ब्रजकीजीत ॥ खेलत हंसत परमसुख उपज्यो
गयोहे घोस निसबीति ॥३॥ खेल परस्पर बढ्यो अति रंगसों रीझे मोहन
मीत ॥ कृष्ण जीवन प्रभु सुख सागरमें छांडो नहीं पसीत ॥४॥

२१ ॥ राग बसंत ॥ गावत वसंत चलीवनेवीर वागे ॥ बल्लभ रीझायवे
कों मिली अनुरागे ॥१॥ एकतो पहरावे वागो एकसोंधोलावे ॥ एकतो वंदन
छिरेके एक अबीर उडावे ॥२॥ एकतो पान खवावे एक दरपन दिखावे ॥
एकतो पंखाकरे एक चमर दुरावे ॥३॥ आरती करिकेंसब किये मनभाये ॥
वृंदावन चंद बहुभांति रिझाये ॥४॥

२२ ॥ राग बसंत ॥ गावत चली वसंत वधावन नंदराय दरबार ॥
वानिक वनिठनि चोखमोखसों ब्रजजन सब इकसार ॥१॥ अंगिया लाल
लसत तनसारी झूमक नवउरहार ॥ वेनीग्रथित रुरत नितंबपर कहाकहूं
वडेडवार ॥२॥ म्रगमद आड वडेरी अखियां आंजीअंजनपूरि ॥ प्रफुलित
वदन हंसत दुलरावत माहेन जीवनमूरि ॥३॥ पगजेहरि के हरि कटि किंकिनि
रह्यो विधिकि सुनिमार ॥ घोषघोष प्रति गलिन गलिन प्रति विछुवनके झनकार
॥४॥ कंचन कुंभसीस परलीने मदन सिंधुतें भरिकें ॥ ढांपेपीत वसन जतनन
रचिमोर मंजुरी धरिकें ॥५॥ अबीर गुलाल अरगजा सोंधो विधिनजात
विस्तारी ॥ मेनसेन जोनारदेनकों कमलनकमल निधारी ॥६॥ पोहोंची जाय
सिंघ पोरीजव विपुल जुवति समुदाई ॥ निजमंदिरतें निकसिसोदा सनमुख
आगेंआई ॥७॥ भईभीर भीतरे भवनन में जहां ब्रजराज किसोर ॥ भरत
भावते प्रान पियाकों घेरिफेरि चहुंओर ॥८॥ ब्रजरानी जब मुरिमुसिक्यानी
पकरन भई जवकरकी ॥ लेसंग सखी लखी कछुबतियां मिसही मिस
उतसरकी ॥९॥ कुमकुम रंगसों भरि पिचकारी छिरेकें जे सुकुमारी ॥ वरजत
छीटें जात द्रगनमें धनि वे पोछनहारी ॥१०॥ चंदन वंदन चोवा मथिकें नीलकंज
लपटावे ॥ अलक सिथल ओर पाग सिथल अति पुनि वे बांधि बंधावे ॥१॥
भरत निसंक भरे अकवारी भुजनबीच भुजमेले ॥ उनमद ग्वाल वदत नहीं

काहू झेलखेल रसरेलें ॥१२॥ कियो रगमगो ललित त्रिभंगी भयो ग्वालिनी
मनभायो ॥ टकझकमें झुकि एकही विरियां लालन कंठ लगायो ॥१३॥
ताल मृदंग लीयें श्रीदामा पोहोंचे आय सहाई ॥ हलधर सुवल तोक मधुमंगल
अपनी भीर बुलाई ॥१४॥ खेल मच्यो मनिखचित चौक में कविपे कहा
कहि जावे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल छबि देखेंही बनिआवे ॥१५॥

२३ ॥ राग बसंत ॥ केसरी छींट रुचिर बंदनरज स्याम सुभग तन
सोहें ॥ बिचबिच चोवा लपटानों उपमाकों कहि कोहें ॥१॥ यह सुख नव
वसंत के ओसर राधानागरि जोहें ॥ चत्रभुजप्रभु गिरिधरन लालछबि कोटिक
मन्मथ मोहें ॥२॥

२४ ॥ राग बसंत ॥ स्याम सुभगतन सोभित छींटें नीकीलागी चंदन
की ॥ मंडित सुरंग अवीर कुंकुमा ओर सुदेस रजवंदन की ॥१॥ कुम्हनदास
मदन तनमन बलिहारकीयो नंदनंदन की ॥ गिरिधरलाल रची विधिमानो
युवतिजन मनफंदनकी ॥२॥

२५ ॥ राग बसंत ॥ छिरकत छींटछबीली राधे चंदन भरिभरि बोरीरे ॥
अवीर गुलाल बिविधरंग सोंधो लोचन परिगईरोरी ॥१॥ सर्व सब सकियो
रसिक कुमारी प्रेमफंद हिंडोरी ॥ सूर प्रभु गिरिधरनलाल कों देरही प्रेम
अकोरी ॥२॥

२६ ॥ राग बसंत ॥ सब अंग छीटि लागी नीको बन्यों बान ॥ गोरा
अगर अगरजा छिरकत खेलत गोपीकान्ह ॥१॥ हाथन भरें कनिक पिचकाई
भरिभरि दंतसुजान ॥ सुरनर मुनिजन कौतिकभूले जयजय जदुकुल भान
॥२॥ ताल पखावज वेनुबांसुरी राग रागिनी तान ॥ विमलानंद दासवलिवंदित
नहीं उपमाकों आन ॥३॥

२७ ॥ राग बसंत ॥ लाल रंग भीने वागे खेलत हेंरीलालन लाहको
सिरपेच बांधे ॥ केसरि आड अगर चंदन की पिचकाई भरिभरि सांधें ॥१॥
एक गावत एक तालदेत एक रवाव बजाबत कांधे ॥ सुघरराय को प्रभु
रसबस करिलीनों धाधिलंग धूंधे धांधें ॥२॥

२८ (११) राग बसंत (११) अरुन अबीर जिन डारोहो ललना दूखत आंखि हमारी ॥ काल्हि गुलाल परचो आंखिनमें अजहू नभई पियसारी ॥१॥ सब सखियन मिलि मतोमत्योहे अबकीबेर देहू गारी ॥ हाहा खात तेरे पैयां परतिहू अबहोंचेरी तिहारी ॥२॥ हिलिमिलि खेलो हो पिय हमसों मानों सीख हमारी ॥ धोंधीके प्रभु तुम बहुनायक निसदिन रहत हंकारी ॥३॥

२९ (११) राग बसंत (११) अबजिन मोहिभरो नंदनंद हों व्याकुल भईभारी ॥ कहत ही कहत कछो नहीं मानत देखे नये खिलारी ॥१॥ काल्हि गुलाल परचो आंखिनमें अजहून भई पियसारी ॥ परमानंद नंद के आंगन खेलत ब्रजकीनारी ॥२॥

३० (११) राग बसंत (११) छोट छबीली तन सुख सारी प्यारी पहरे सोहे नवल लाल रस रूप छबीलो निरखत मनमथ मोहे ॥१॥ केलिकला रस कुंज भवन में क्रीडत अतिसुख होहे ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी उपमा कों कहियेकोहे ॥२॥

३१ (११) राग बसंत (११) चटकीली चोली पहरें बीचबीच चोवा लपटानो ॥ परम प्रिय लागत प्यारी कों अपने प्रीतम को बानो ॥१॥ देखत सोभा अंगअंगकी मनसिज मनहिल जानो ॥ सुघरराय प्रभु प्यारी की छवि निरखत मोह्यो गोवर्धनरानो ॥२॥

३२ (११) राग बसंत (११) लालगुपाल गुलाल हमारी आंखिन में जिन डारोजू ॥ बदन चंद्रमा नैन चकोरी इन अंतरजिन पारोजू ॥१॥ गाओ राग वसंत परस्पर अटपटे खेल निवारोजू ॥ कुंकुम रंगसों भरि पिचकारी तकिनेनन जिनमारोजू ॥२॥ वंकविलोचन दुःख के मोचन भरिकें दृष्टि निहारोजू ॥ नागरी नायक सब सुखदायक कृष्णदास कोंतारोजू ॥३॥

३३ (११) राग बसंत (११) ऋतुवसंत के आगम आली प्रचुरमदन को जोर ॥ कैसें धरें कुलवधू धीरज खेलत नंदकिशोर ॥१॥ तेसीये गिरि गोवर्धन पर नूत मंजुरी मोरी ॥ सुनसुन चलीं लालगिरिधरपे बनबन नवल किशोरी

॥२॥ जायमिली अनुराग भरी रस फाग श्यामसों खेली ॥ व्रजपति श्यामत मालहिं लपटी मानों कंचनबेली ॥३॥

३४ (१५) राग बसंत (१५) नीकी आजु बसंत पंचमी खेलति कुंजविहारी ॥ संग सखी रंग भीनी लीनी श्रीव्रषभानु दुलारी ॥१॥ बूका बंदन केसर चंदन छिरकति पियकों प्यारी ॥ अरस परस दोऊ भरति भरावति रंग बढ़ायों अति भारी ॥२॥ बाजत ताल मृदंग मुरज ढफ बिच बिच बेनु उचारी ॥ कुंज कुंज में केलि करी मिलि ललितादिक बलिहारी ॥३॥

३५ (१५) राग बसंत (१५) राधा गिरिधर बिहरति कुंजन आँई हो बसंत पंचमी ॥ बन बन द्रुम प्रति कोकिला कूजत मीठे वचन अमी ॥१॥ गावत तान तरंग अगनित गति मृदंग सों राग जमी ॥ इहि समै हिलमिल 'गोबिंद' प्रभु सों सब ही भौंति रमी ॥२॥

३६ (१५) राग बसंत (१५) आज पंचमी शुभदिन नीको काम जनम दिन आयो ॥ रुक्मनि कौंखि चंद्रमा प्रगट्यौ सब जादौं मन भायों ॥१॥ बाजत ताल पखावज आवज उड़ति अबीर गुलाल ॥ फूले दान देति जादौं पति मागन भए निहाल ॥२॥ हरखि देवता कुसमन बरखति फूलि सब बन राई ॥ परमानंद, मोद अति बाढ्यौ जग सबके सुखदाई ॥३॥

३७ (१५) राग बसंत (१५) आवो री आवो सब मिली गावो री बसंत राग बधावो री कलश ले सब भाम ॥ मौर बांधि दुल्हे राज बैद्यौ घर सिंघासन प्रफुलित भये तब रूप लाल सुन्दर स्याम ॥१॥ छिरक्यो री नवल लाल चोवा मृगमद गुलाल सोंधो ले परसो री मुदित भयो काम ॥ बजाओ री अनेक बाजे सुर मंडल बीना नाद मदन मोहन वृन्दावन वृज धाम ॥२॥

३८ (१५) राग बसंत (१५) फिर बसन्त ऋतु आई सजनी ब्रिंदावन सुखदाई ॥ चली जैह तैह बंसीबट श्री नंदकुमार कन्हवाई ॥१॥ कोकिल कीर मराल मंडली रंग-भोमि मन भाई ॥ ठोर-ठोर बेली द्रुम फूले अबीर गुलाल सोंधवाई ॥२॥ कहा बरनों कुंजन की सोभा कान्ह कुंवर मिलि खेलें ॥ करत बिहार चले जमुना तट अंस-अंस भुज मेलें ॥३॥ नीलांबर पीतांबर सोहे चंदन

बंदन अति घोरी ॥ कही न जात दुहुन की सोभा स्यामा स्याम की जोरी ॥४॥ मंद सुगंध चल्थों मलयानिल सीत पवन सुखरासी ॥ 'मान दास' बलि यह गिरिधर प्रभु बिंदा बीपिन बिलासी ॥५॥

बसंत जगायवे के पद महासुद ६ से फाल्गुन सुद १५

१ (१५) राग बसंत (१५) जागि हो लाल, गुपाल, गिरिवरधरन, सरस ऋतुराज बसंत आयौ ॥ फूले दुमवेली, फल, फूल, बौरे, अंब, मधुप, कोकिला कीर सैन लायौ ॥१॥ जावौ खेलन, सबै ग्वाल टेरत द्वार, खाऊ भोजन मधु, घृत, मिलायौ ॥ सखी-जूथन लीयैं आई है राधिका मच्यौ गहगडराग रंग छाया ॥२॥ सुनति मृदु-बचन, उठे चौंक नंदलाल, कर लीयैं पिचकाई सुबल बुलायौ ॥ निरखि मुख, हरखि हियैं, वारि तन मन प्रान, सूर येहि मिसहि गिरिधर जगायौ ॥३॥

२ (१५) राग बसंत (१५) प्रात समैं गिरिधरनलाल कौ करति प्रबोध जसोदा मैया ॥ जागी लाल, चिरैया बोलीं, सुंदर मेरे कुँवर कन्हैया ॥१॥ हलधर संग लैहौ मनमोहन, खेलन जाउ ब्रिन्दाबन धाम ॥ ऋतु बसंत प्रफुलित अति देखियत सुंदर हे कालिंदी ठाम ॥२॥ जननि-बचन सुनति मनमोहन, आनंद उर न समाई ॥ 'कृष्णदास' प्रभु बेगि उठे जब, जननि-जसोदा कंठ लगाई ॥३॥

३ (१५) राग बिभास (१५) खिलावन आवेंगी ब्रजनारी ॥ जागो लाल चिरैयां बोलीं कहे जसुमति महतारी ॥१॥ ओट्यो दूधपान करि मोहन बेगि करो स्नान गुपाल ॥ करिशृंगार नवल बानिक बनि फेटन भरो गुलाल ॥ बलदाऊले संग सखा सबखेलो अपनेद्वार ॥ कुंकुम चंदनचोवा छिरको घसि मृगभद घनसार ॥३॥ लेकनहेर सुनोमेरेमोहन गावत आवेंगारी ॥ ब्रजपति तबही चौंकि उठिबैठे कितमेरी पिचकारी ॥३॥

४ (१५) राग बिभास (१५) जागि कछौ जनुनी सौं मोहन ॥ आजु कहा मोहे बेनि जगायों सों कारज सब कहिए सोहन ॥ तब जसुमति कछों आजु पूरन दिन पून्यों सुख की रासी ॥ डांडो रोपन नंद जाईंगे सँग लीए ब्रज

वासी ॥२॥ ऊत वृषभानु इतेई तैं नंदराई होड परेगी भारी ॥ इत प्यारो उत प्यारी कों दल को जीते को हारी ॥३॥ ताते बिच मोहन बलदाऊ सों कही लीजे ॥ और गोप लेऊ रखवारी गोपी सब बस कीजे ॥४॥ यह सुनि रबकि उठै गिरिवरधर तब मैया पय पान पिवावै ॥ देखो आज खेलि होरी कों माखन मोहि खवावै ॥५॥ तब जसुमती गुपाल लाल कों ऊबट नहवायो प्रीत ॥ करि सिंगार परम रूचिकारी ब्रजवासीन के मीत ॥६॥ यह सब बात जानि ब्रज वनिता चली सींगारि सिंगारी ॥ मन हरखित सोभित सुंदरि कोटी काम बलिहारी ॥७॥ सब मिलि इक ठौर व्है आई जसुमति ग्रह कें द्वार ॥ भीतर जाई लाल मुख निरखति हरखें लोचन चार ॥८॥ सेन समै सब भेद कह्यौ तब मुसिकाई मोहन मन हर लियो ॥ 'रसिक' प्रीतम जानति अंतर गति मन भायों सब कियों ॥९॥

५ (॥१॥ राग बिभास (॥१॥) जागो कृष्ण खेलो रंग होरी ॥ अबीर गुलाल लियो भरि झोरी ॥ ब्रज नव वधू खेलन कों निकसी घोषराई जु की पौरी ॥१॥ कछु खाओ और सुगंध फैंट भरि करो रगमगो राम तुम जोरी ॥ संग सखा खेलन कों जैहो 'दास' निरखि बोलत मुख होरी ॥२॥

६ (॥१॥ राग बिभास (॥१॥) भारे भये मेरे लाल होरी खेलो गोप बाल उठो गुपाल लाल दुहो धोरी जैया ॥ उस्नोदक अभ्यंग स्नान करि हो कलेऊ कान्ह सजो बिबिधि बान कहति मैया ॥१॥ केसर के कलस भरौ पिचकारी कर धरो अबीर गुलाल लेहू रे संग बल भैया ॥ इंडुरी पिंडुरी वारु आरति मंगल वारु राई लोन उतारु वार डारु 'सूर' बल जैया ॥२॥

बसंत कलेऊ के पद (माघसुद ६ से फाल्गुन सुद १५)

१ (॥१॥ राग बसंत (॥१॥) करौ कलेऊ कहति जसौदा, सुंदर मेरे गिरिधरलाल ॥ दूध, दही, पकवान, मिठाई, माखन, मिसिरी, परम-रसाल ॥१॥ पाछैं खेलनि जाऊ लड़ैते, संग लेहु सब ब्रज के बाल ॥ चोवा, चंदन, अगर, कुंमकुमा, फैंटन भरौ अबीर गुलाल ॥२॥ कीयौ कलेऊ मन कौ भायौ, हलधर संग सकल मिलि ग्वाल ॥ कीयौ बिचार फागुन खेलनिकौ,

‘परमानंद’ प्रभु नैन-बिसाल ॥३॥

२ (१११) राग बसंत (१११) करौ कलेऊ मदन गोपाल ॥ मधु, मेवा, पकवान, मिठाई, भरि-भरि राखे कंचनथाल ॥१॥ माँखन, मिसिरी, सद्य-जम्यौ-दधि, औंद्यो दूध, अरु सरस मलाई ॥ आप हु खाऔ ग्वालन सँग लैकें, पाछें खेलौ सघन-बन जाई ॥२॥ करत कलेऊ रामकृष्ण दोऊ, औरहु संग लये सब ग्वाल ॥ करहि बात फागु-खेलनि की, ‘कृष्णदास’ मनमोहन लाल ॥३॥

३ (१११) राग बसंत (१११) करौ कलेऊ बलराम कृष्ण तुम मिल ब्रजकी नारी सिमिट सब आई ॥ चोबा चंदन अगर कुंमकुमा साज कामकी सब सज लाई ॥१॥ कछु खायो कछु धरनी गीरायो उमंग आनंद उर आनंद उर न समाय ॥ सूर स्याम होरी रस पागे उठे अचवन करि बीरा खाय ॥२॥

४ (१११) राग बिभास (१११) करि हो कलेऊ बलराम कृष्ण तुम मिल ब्रज की नारि सिमिट सब आई ॥ चोवा चंदन अगर कुंमकुमा साज फाग कों सब लाई ॥१॥ कछु खायो कछु धरनि गिरायो उमंगे आनंद उर न समाई ॥ ‘सूर स्याम’ होरी रस पागे उठे अचवन करि बीरा खाई ॥२॥

५ (१११) राग बिभास (१११) जागोलाल बसंत बधावन आवेगी ब्रजनार ॥ उठ हो लाल तुम करहो कलेऊ खेलनको होत अवार ॥१॥ माखन मिश्री दधि मलाई भर भर राखे कंचन थार ॥ इतनी सुनत तुरत उठै बैठे जसोमती बदन निहार ॥२॥ दोऊ भैया करत कलेऊ पाछे भैया करत सिंगार ॥ फगुवा में मेवा धर राखे ओर धरे मोतियन के हार ॥३॥ इतने में ब्रजबाल सबे मिल आई नंदजुके द्वार ॥ करत कुलाहल सुनत ही आतुर आए नंदकुमार ॥४॥ केसर अगर स्यामापर डारत हँसत दे दे करतार ॥ मिसही मिस अंक भरत स्यामको फगुवा दे दे नंदकुमार ॥५॥ फगुवा दिये आनंद मन मानत यह होरी को बड़ो त्योहार ॥ देत असीस सबें ब्रजवनिता हरिदास बलिहार ॥६॥

बसंत- मंगला के पद (महासुद ६ से महासुद १५ तक)

१ **ह्रस्व** राग बसंत **ह्रस्व** श्रीगिरिधरलाल की बानिक ऊपर आज सखी तृन दूटेरी ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा पिचकाइन रंगछूटेरी ॥१॥ लालके नैन रगमगे देखियत अंगअनंगन लूटेरी ॥ कृष्णदास धनि धन्य राधिका अधर सुधारस घूटेरी ॥२॥



२ **ह्रस्व** राग बसंत **ह्रस्व** खेलत बसंत निस पिय संग जागी ॥ सखी वृंद गोकुल की सीमा गिरिधर पिय पदरज अनुरागी ॥१॥ नवल निकुंज में गुंजत मधुप पिक विविध सुगंध छींट तन लागी ॥ कृष्णदास स्वामिनी जुवति जूथ चुडामनि रिझवत प्रान पति राधा बडभागी ॥२॥



३ **ह्रस्व** राग बसंत **ह्रस्व** सांची कहो मनमोहन मोसो तो खेलों तुम संग होरी ॥ आजु कि रैन कहाँ रहे मोहन कहाँ करी बरजोरी ॥१॥ मुख पर पीक पीठिपर कंकन हियें हार विन डोरी ॥ जियमें ओर ऊपर कछु औरे चाल चलत कछु ओरी ॥२॥ मोहि बतावत मोहन नागर कहा मोहि जानत भोरी ॥ भोर भये आये हों मोहन बात कहत कछु जोरी ॥३॥ सूरदास प्रभु एसी न कीजे आय मिलो कहा चोरी ॥ मनमानें त्यों कत नंदसुत अब आई हे होरी ॥४॥



४ **ह्रस्व** राग बसंत **ह्रस्व** देखियत लाल लाल दृग डोरे ॥ काके संग खेले बसंत करि निहोरे ॥१॥ सजलताई प्रगट मानों कुंकम रस बोरे ॥ अरुनताई भई गुलाल बंदन सित छोरे ॥२॥ अंजन छबि लागत मानों चोवा छबि चोरे ॥ वरुनी मानों नूतन पल्लव अधर भये सिधोरे ॥३॥ कबहू रस मत्त नाचत दोऊ कटाक्षन कोरे ॥ गान सुरति भई मानों विविध तान तोरे ॥४॥ देखियत अति सिथिल ताई मांझु झकझोरे ॥ काहेकुं कहत कछु जाने मन मोरे ॥५॥ सनमुख वहे कबहू मुख फेरिजात लजोरे ॥ रसिक प्रीतम मेरे तुम आए काके भोरे ॥६॥



५ **ह्रस्व** राग बसंत **ह्रस्व** आज कछू देखियत ओरही बानिक प्यारी तिलक आधे मोती मरगजीमंग ॥ रसिक कुंवर संग अखारे जागी सजनी अधर

सुखे निस बजावत उपंग ॥१॥ नवनिकुंज रंग मंडपमें नृत्यभूमि साजि सेज
सुरंग ॥ तापर बिबिध कलकूजित सखीसुनत श्रवण वन थकित कुरंग ॥२॥
कृष्णदास प्रभु नटवरनागर रचत नयन रति पतिव्रतभंग ॥ मोहनलाल
गोवर्धनधारी तोहि मिलन चलि नृत्यक अनंग ॥३॥

६  राग बसंत  तेरे नैन उनीदे तीन प्रहर जागे काहे कों सोवत
अब पाछली निसा ॥ कछू अलसात बीच श्रम लागत श्रमितन जाय अधिक
रिसा ॥१॥ गिरिधर पियके वदन सुधारस पान करत नहीं जानत तृसा ॥
एतेकहत होयजिन प्रगटित रतिरसरिपु रवि इंद्रविसा ॥२॥ तुवमुखजोति
निरखत उडपति मगन होत निरखि जलद खिसा ॥ कृष्णदास बलिबलि
वैभवकी नवनिकुंजग्रह मिलत निसा ॥३॥

७  राग बसंत  सहज प्रीति गोपाले भावे । मुख देखें सुखहोय
सखीरी प्रीतम नैनसों नैन मिलावे ॥१॥ सहज प्रीति कमल ओर भावें सहज
प्रीति कुमोदनी ओर चंदे ॥ सहज प्रीति कोकिला बसंते सहज प्रीती राधा
नंदनदे ॥२॥ सहज प्रीति चात्रक ओर स्वांते सहज प्रीति धरनी जल धारे ॥
मन क्रम वचन दास परमानंद सहज प्रीति कृष्णअवतारे ॥३॥

८  राग बसंत  ऋतुबसंत स्याम घर आयो तन मन धन सब
वारों ॥ लेगुलाल ऊपरअंगन छिरकों पलकनिसो मगझारों ॥१॥ चोवाचंदन
ओर अरगजा सब सखीयन पै डारों ॥ उडति गुलाल लालभयेबादर भरि
पिचकारी मारों ॥२॥ खेलोंगी मेंचतुर पियासों आय बसंत संवारों ॥ सूरदास
अनहि तनके मुख सबभूषण भरिडारों ॥३॥

९  राग बसंत  एक बोल बोलो नंदनंदन तोखेलों तुम संग ॥
परसो जिन काहूकों प्यारे आन अंगनाअंग ॥१॥ बरजतिहों वीरी काहूकी
जसुमति सुत जिनलेहु ॥ परिरंभन आलिंगन चुंबन नैन सेन जिनदेहु ॥२॥
मेरे खेल बीच कोऊ भामिनी आयलाल कों भरिहे ॥ प्राननाथहों कहे देतिहों
मोपे सहीन परिहे ॥३॥ प्रभु मोहि भरो भरोहों प्रभु कों खेलो कुंज विहारी ॥
अग्रस्वामीसों कहत स्वामिनी रंग उपजेगो भारी ॥४॥

१० (॥१॥) राग बसंत (॥३॥) केसरियों भीज्योवागो भरचोहे गुलाल ॥ कहूँकहूँ कृष्णागर सोहेतन मोहे मन अतिही सुंदरवर बने नंदलाल ॥१॥ सरस फुलेल अरगजा भीने कच ढरकि रही जो पाग अर्धभाल ॥ जगतराय के प्रभु मुखहितें बोलछवि उरसि बनी सोहे सुमन माल ॥२॥

११ (॥१॥) राग बसंत (॥३॥) श्रीगोवर्धन की सिखर चारुपर फूली नवमाधुरी जाई ॥ मुकलित फलदल सघन मंजुरी सुमन सुसोभा बहोतभाई ॥१॥ कुसमित कुंज पुंज दुमवेली निर्झर झरत अनेक ठाई ॥ छीतस्वामि ब्रजजुवति जूथमें विहरत हैं गोकुलके राई ॥२॥

१२ (॥१॥) राग बसंत (॥३॥) ऐसे रीझे भीझे आए री लाल गावत हे धमारि ॥ होंजु गई री भोर ब्रिंदाबन भरि लिए अकवारि ॥१॥ सुधरी अलक बदनपर बिधुरी निज करसों अली आप सकोरी ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी मिली हे विरह हिरदैरी ॥२॥

१३ (॥१॥) राग बसंत (॥३॥) खेलति सरस बसंत स्याम बृषभानु कें आँए देखैं री ॥ चलों सिरावन नैन सखी री जनम सुफल करि लेखैं री ॥१॥ सौंधे भीने केस सौंवरो मदन मनोहर भेखैं री ॥ कृपावंत रस नैन चूहचूहे कछुक उठत मुख रेखैं री ॥२॥ ब्रज बनिता बनि बनि आँई सब स्यामसुंदर मुख पेखैं री ॥ कहि भगवान हित राम राई प्यारी राधाकौ भाग बिसेखैं री ॥३॥

१४ (॥१॥) राग बसंत (॥३॥) सखी ब्रज फूले विविध बसंत ॥ फूले मोर, कमुद, सरसी अरु, फूले अलि, जल जंत ॥१॥ फूले द्रूम बेली फूले द्विज गावत गुनवंत ॥ 'ब्रजाधीस' जन फूले लखि अति सुख फूले मिलि हरि कंत ॥२॥

बसंत पालने के पद (महासुद ६ से फाल्गुन सुद १५ तक)

१ (॥१॥) राग बसंत (॥३॥) जसोदा नहीं वरजे अपनोबाल ॥ अपनो बाल रसिया गोपाल ॥ध्रु०॥ स्नान करन गई जमुनातीर ॥ करकंकन अभरन

धरेचीर ॥ मेरी जल प्रवाह तन गई दीठि ॥ पाछेतें कान्ह मेरी मलत पीठि ॥१॥ यह अन्न न खाय मुख पीवे नखीर ॥ यह केतीक बार गयो जमुनातीर ॥ होवा रेंरी ज्वालिन तेरो ग्यान ॥ यह पलना झूले मेरो वारो कान्ह ॥२॥ वृंदावन देखेमे तरुन कान्ह ॥ घर आये कैसें भये अयान ॥ उठि चलीरी ज्वालि जिय उपजी लाज ॥ सुरदास ये प्रभुके काज ॥३॥



२ ॥ राग बसंत ॥ अति सुंदर मणि जटित पालनो झूलत लाल विहारी ॥ खेलत फाग सखा संगलीनो नाचत दे करतारी ॥१॥ घर घरतें आई बनबनके पहरें नौतनसारी ॥ तनक गुलाल अबीर नलेले छिरकत राधा प्यारी ॥२॥ गावत गारी आनंद में प्रमुदित फूलीं अंगसुकुमारी ॥ चोवाचंदन अगरकुमकुमा देत शीसतें ढारी ॥३॥ लपटरहे तन वसन रंगमें लागतहे सुखकारी ॥ देख विवशमये मोहन पीय भरलीनी अंकवारी ॥४॥ मिसहीमिस ढिंगआय पालनो झुलवत वृजकीनारी ॥ अबीर गुलाल लगाय कपोलन हंसत देदे करतारी ॥५॥ तनमन मिली प्राण पीयासों नौतन शोभा बाढी ॥ शिथिल वसन मुकुलित कच कबरी प्रेमसिंधुतें काढी ॥६॥ यह सुख रितु वसंत लीलामें बालकेलि सुखकारी ॥ सरबस देत वारप्यारे पै जनगोविंद बलिहारी ॥७॥

३ ॥ राग बसंत ॥ देख सखिरी पलना झूलत सुंदरश्याम सलौना ॥ चकई भौरा फिरकनी लहेंदु खेलत विविध खिलौनां ॥१॥ हाथनलई कनक पिचकाई छिरकत नंदललौना ॥ अबीर गुलाल उडावत सबहिन नागर नंदनंदौना ॥२॥ मालतिलक गोरोचन अतिछबि चितवनमें कछुटौना ॥ रूप अनूप अलक घुंघरारी मृगमद आड डिटौना ॥३॥ देखतरूप ठगोरीसी लागत अंग अनंग लजौना ॥ घरमें देखे पलना झूलत बाहिर तरुन तरौना ॥४॥ घटरस व्यंजन स्वाद सलोनी इनबिन सबही अलौना ॥ रङ्गो न परे गृहछिन मेरी आली कुंजन केलि करौना ॥५॥ गिरिधरलाल की लीला अद्भुत मुनिजन ध्यान धरत धरमौना ॥ अतुलप्रताप अभय पददायक सो जसुमति को ये छोना ॥६॥ लोकलाज कुलकानि तज्यो में अब होनी होय सो हौना ॥ दासनके प्रभु गोवर्धनधर सब सुख फलन फलौना ॥७॥



४ **ह्रीं** राग बसंत **ह्रीं** ललित त्रिभंगी लाडिलो ललना ॥ वृंदावन गहवर
निकुंजमें युवतिन भुज झूलत हैं पलना ॥१॥ भामिन सुरत सुधा सुख सागर
चितवनि चारु विरह दुःखदलना ॥ जमुनातट अशोक वीथिनमें कामिनी कंध
बाहुधर चलना ॥२॥ नूपुरकुणित चरण अंबुजपर अशोक वीथिन में
कामिनीकंध बाहुधर चलना ॥२॥ नूपुरकुणित चरण अंबुजपर मुखिरित
किंकिनी सोभित बलना ॥ कृष्णदास प्रभु नखसिखमोहन गिरिधरलाल
प्रेमरस खिलना ॥३॥



५ **ह्रीं** राग बसंत **ह्रीं** जसोदा नहीबरजे अपनो कान्ह ॥ अपनो कान्ह
सुंदर सुजान ॥१॥ नीर भरन गई यमुना घाट ॥ नही जानदेत धर रोके
बाट ॥२॥ कबेंझगर कहेलावोदान ॥ झपटचीर करे खेंचतान ॥३॥ पयपीवत
घुटरुवन चलत लाल ॥ यह यमुनातट गयो कोनेचाल ॥४॥ तेरीबात सुनत
मोहिहौंसीआत ॥ यह पलना झूलत कछु नही खात ॥५॥ गौचारत निरखे
तरुन स्याम ॥ सबेछलतफिरत करे ऐसे काम ॥६॥ सकुचाय ग्वालरही
मुख विहार ॥ सूरस्यामकी लीला अपार ॥७॥

६ **ह्रीं** राग बसंत **ह्रीं** रतन खचितको पालनो सुंदर झूलत नंदकेलाला ॥
नवसत साज सिंगार सुंदरी झुलवत हैं गोपाला ॥१॥ कोऊ गावत कोऊ
झांझ बजावत ढफ लेकोऊ बजावे ॥ धिधिकट धिधिकट मृदंग करत है
गतिमेंगति ऊपजावे ॥२॥ चोवाचंदन छिरकि छिरकि कें लाल रगमगो
कीनो ॥ अबीर गुलाल उडाय खिलावत पिचकाई भरिलीनो ॥३॥ लाल
लाल बदरा छाये नभमें देखतही बनिआवे ॥ चुचुकारत मुख मांडत सब
मिलि मनहीमन मुसक्यावे ॥४॥ निरखि निरखि मुख कमल मनोहर प्रेमविवश
भई गोपी॥ मगन भई तनकी सुधिभूलीं कुलमरजादालोपी ॥५॥ केशर कलश
शीश पैढोरत हो हो कहि बोलें ॥ ग्वाल बाल उनमत्तव्हेनाचें गारी गावत
डोलें ॥६॥ प्रफुल्लितमन यह फागु खेलमें चहुंदिश आनंद छायो ॥ कुंभनदास
लाल गिरिधर को यह विधि लाड लड्यायो ॥७॥

७  राग बसंत  बरजो जसोदाजी काना ॥ मैं जमुनाजल भरन जातही मारग निकस्यो आना ॥ बरजतही मोरी गागरि फोरी लेअबीर मुख साना ॥ सखी सब देतहैं ताना ॥१॥ मेरो लाल पलनामें झूले बालक है नादाना ॥ ये क्या जाने रस की बतीयां क्या जाने खेल जहाना ॥ कहां तुम भूली भाना ॥२॥ तुम सांची तुमरो सुत सांचों हमही करते बहाना ॥ सूरदास ब्रजवास न त्यागें ब्रजतज अनत न जाना ॥ करों अपना मन माना ॥३॥

राजभोग खेल के पद (महासुद ६ से महासुद १४)

१  राग बसंत  राजा अनंग मंत्रीगुपाल ॥ कियो मुजरा करि छावाय भाल ॥ध्रु०॥ प्रथम पठाई नीतिजाय ॥ पुनि सिंघासन बेठे आय ॥ कर जोरे रहे सीसनाई ॥ विनती करि मांगत राजा राई ॥१॥ फूले चहुंदिस तरवरअनेक ॥ बोलत कपोत सुकहंसभेक ॥ अति आमोद भरि छांडेनटेका ॥ तहां लेतरास अलिकरि विवेक ॥२॥ तब कियो तिलक रति राजआनि ॥ तबलावत भेटजियडरहिमानि ॥ मनोहरित बिछोना रखोठान ॥ तरवर दलांकित ताल जानि ॥३॥ नायकमन भायो कामराज ॥ छांडीसबनते दुहूँलाज ॥ अपनेअपने मिलि समाज ॥ डोलत रससागर चढि जहाज ॥४॥ अति चतुरराज मंत्री ही देख ॥ तब दियो राज अपनो विसेख ॥ तब अपना गोपालदास लेख ॥ छांडो कबहूजिन पलनिमेख ॥५॥

२  राग बसंत  खेलत गुपाल नव सखिन संग ॥ नवनव अंबर रंगरंग ॥ध्रु०॥ मुरलीवेन डफनये चंग ॥ मधिनईकुहूक बाजे उपंग ॥ सुर समूह नई नई तरंग ॥ जहां नईनई गति उपजत मृदंग ॥१॥ मृगमद लपटे चंदन सुगंध ॥ केसरि कुंकुम मलय मकरंद ॥ हुलसि जुवतिवर वृंदवृंद ॥ लीने लपेटि आनंदकंद ॥२॥ उड़ी परस्पर अरुन रूंदि ॥ दुरत भरत मुखनेनमूदि ॥ घूंघट में मुखलसतमंद ॥ मानों अरुन जलधि में दुरेचंद ॥३॥ सखी एक तब कियोवंद ॥ चतुर बोलि सिखयोसुछंद ॥ पियनाम टेरि कह्यो नंदनंद ॥ रह्यो रह्यो भरोजू नागर नंद ॥४॥ हाथ झारि हरिकों दिखाय ॥

चोली में सोंधो दुराय ॥ त्रियन अंक हसिकें बताय ॥ गहेत वही सब परीहें
 धाय ॥५॥ कोऊ निखरत लोचन अघाय ॥ कोऊ आनद्वग आंजतसिराय ॥
 कोऊ मुखपकरि रोरी फिराय ॥ कोऊ कहत भले हो स्यामराय ॥६॥ विवसप्रेम
 वश स्यामलाल ॥ मन भायो सब करत बाल ॥ भरत अंक भरिभरि गुपाल ॥
 सूरदास तहां कामपाल ॥७॥

३ (११) राग बसंत (११) देखो वृंदावन श्रीकमल नेन ॥ आयो आयो मदनगुन
 गुदरदेन ॥ध्रु०॥ द्रुमनवदल सुवन अनेकरंग ॥ प्रति ललितलता संकुलित
 संग ॥ करधरे धनुष कटि कसिनिषंग ॥ मानों बने सुभट साजे कवच अंग
 ॥१॥ कोकिल कुंजरहय हंसमोर ॥ रथसैल शिला पदचर चकोर ॥ वरध्वज
 पताक तरुतारकेर ॥ निर्झर निसान बाजे भमर भेर ॥२॥ जहां नेम सुमति
 अतिमलयवात ॥ मानों जेतवसन बाने उडात ॥ रुचिराजत विपिन
 विलोलपात ॥ धपि धाय धरत अतितुरतगात ॥३॥ सूरदास इम वदत
 बाल ॥ आयो कामकृपन शिव क्रोध काल ॥ फिरि चितयो चपल लोचन
 विसाल ॥ यह अपनों करि थापिये गुपाल ॥४॥

४ (११) राग बसंत (११) खेलत वसंत गिरिधरन चंद ॥ आनंदकंद वर
 मनके फंद ॥ध्रु०॥ सोहत संग सुंदरवेनवीन ॥ वृषभान कुंवरि अतिसयप्रवीन ॥
 दोऊ छविके सिंधु तहां रहतलीन ॥ ललितादि सखीनके नेनमीन ॥१॥ बनी
 मंजुकुंज जमनाकेकूल ॥ भीने नव केसरि दूकूल ॥ रंगभरत हसत दोऊ
 सुखकेमूल ॥ जिने देखि मिटे सब तनकी सूल ॥२॥ धिधिकिट धिधिकिट
 बाजतमृदंग ॥ डिडि डमक डिमक डफ मिलेहे संग ॥ ठठ ठनन ठनन
 करेतालरंग ॥ गग गनन गनन बाजेउपंग ॥३॥ गावतअलाप तननननन ॥
 निंदित कोकिल सम ननननन ॥ रंगभरत वलहिकरि झिनि ननननन ॥
 तबभरेरीनेन इननननननन ॥४॥ रंग भरत परस्पर करतहास ॥ नहीं बरनि
 जात रसना विलास ॥ सब बंधीहें जुगल हित प्रेमपास ॥ बलिहारि गयो
 जहां कृष्णदास ॥५॥

५ (११) राग बसंत (११) देखो वृंदावन को जसवितान ॥ छायो सब पर
 वरतनपुरान ॥ध्रु०॥ जाकों वरनि वेद रहे मोनधारि ॥ करें ध्यान मान अभिमान

टार ॥ ताकों गहत सकल मिलि ब्रजकी नारि ॥ मुख मांडिदेत होरी की
गारि ॥१॥ जाकों रिझवतहें सब नाचिगाय ॥ करें वेद युक्ति नाना उपाय ॥
ताके आंजतलोचन दृगनमाय ॥ छांडेनचाय हाहा खवाय ॥२॥ जाके भजत
नामतजि कामकेत ॥ भव सागर को वर जानिसेत ॥ दुःख नास करत सुख
कोनिकेत ॥ ताकों हैसिहैंसिहैंसि ग्वालिन गुलचादेत ॥३॥ जाकेवस करें
सनिसव प्रमान ॥ डरें लोकपाल सब देतमान ॥ सो तो राधावस करे
मुरलीगान ॥ सूरदास प्रभु कंतकान्ह ॥४॥

६ ॥ ~~१६~~ राग बसंत ~~१६~~ श्रीवृंदावन खेलत गुपाल ॥ बनि बनि आई ब्रजकी
बाल ॥१॥ नवल सुंदरी नवतमाल ॥ फूले नवल कमल मधि नव रसाल
॥२॥ अपनेकर सुंदर रचितमाल ॥ अवलंबित नागर नंदलाल ॥३॥
नवगोपवधू राजतहेंसंग ॥ गजमोतिन सुंदर लसत मंग ॥४॥ नवकेसरि मेद
अरगजा घोरि ॥ छिरकत नागरिकों नवकिसोर ॥५॥ तहां गोपीग्वाल सुंदर
सुदेस ॥ राजतमाला विविध केस ॥६॥ नंदनंदन को भुवविलास ॥ सदां
रहो मन सूरदास ॥७॥

७ ॥ ~~१७~~ राग बसंत ~~१७~~ देखो वृंदावनको भूमि भागु ॥ जहां राधामाधव
खेलत फागु ॥१॥ जाको शेषसहस्र मुखलहे न अंत गुनगावे नारदसे
अनंत ॥ जाको अगम निगम कहें तेज पुंज ॥ सोतो होहो करत फिरत
कुंजकुंज ॥२॥ जाके कोटिक ब्रह्मा कोटि इन्द्र ॥ जाके कोटिक रवि
कोटिचंद्र ॥ जाको ध्यानधरत मुनिरहेहारि ॥ ताकोंसकल गोपी मिल देत
गारि ॥ सोहे मोरमुकुट सिरतिलकभाल ॥ ऐसैं ललित लोल लोचन
बिशाल ॥ जाकि चितवनि मुसकिनि हंसचाल ॥ लखि मोहि रहीं सब ब्रज
की बाल ॥३॥ जहां बाजेबाजत तूरिताल ॥ सुरमंडल महुबरिधुनि रसाल ॥
बीना उपंग मुरली मृदंग ॥ बाजेंरायगिडगिडी ओरचंग ॥४॥ जहां करत
कुतुहल गोपीग्वाल ॥ तहां उडति अबीर कुंकुम गुलाल ॥ ऐसे छांडत छिरकत
फिरें गुपाल ॥ तातें हरहर हरि हंसिभये खुशाल ॥५॥ जाकों बेद कहतिहैं
नेतिनेति ॥ जासों हंसिहंसि ग्वालिनी फगुवा लेत ॥ अद्भुत लीला
अपरंपार ॥ जाको सुरनर मुनिकरें जैजैकार ॥ राधाजीवन ऊरको हार ॥

ऐसे मुरलीदास प्रभु करें बिहार ॥६॥

८ (॥१॥ राग बसंत ॥१॥ देखो राधा माधो सरसजोर खेलत बसंत पिय सरसजोर ॥ खेलत बसंत पिय नवकिशोर ॥१०॥ इत हलधर संग समस्त बाल ॥ मधि नायक सोहे नंदलाल ॥ उत जुवती जूथ अद्भुत रूप ॥ मधि नायक सोहें स्यामा अनूप ॥१॥ बहोरि निकसि चले जमुनातीर ॥ मानों रति नायक जात धीर ॥ देखत रति नायक बने जाय ॥ संग ऋतु वसंत ले परतपाय ॥२॥ बाजत ताल मृदंग तूर ॥ पुनि भेरि निसान रवाब भूर ॥ डफ सहनाई झांझ ढोल ॥ हैंसत परस्पर करत बोल ॥३॥ चोवा चंदन मथिक पूर ॥ साख अगर अगरजा बहोत चूर ॥ जाई जुही चंपक रायवेलि ॥ रसिक सखन में करत केलि ॥४॥ ब्रज वाढ्यो कोतिक अनंत ॥ सुंदरि सब मिलि कियो मंत ॥ तुम नंदनंदन को पकरि लेहु ॥ सखी संकरषन को माखेहु ॥५॥ तब नवलवधु कीनों उपाई ॥ चहुँदिशतें सब चली धाई ॥ श्री राधा पकरि स्याम कों लाई ॥ सखी संकरषन जिन भाजिपाई ॥६॥ अहो संकरषन जू सुनोवात ॥ नंदलाल छांडि तुम कहां जात ॥ देगारी बोहो विधि अनेक ॥ तब हलधर पकरे सखी एक ॥७॥ अंजन हरधर नेनदीन ॥ कुंकुममुख मंजनजु कीन ॥ हरधवजू फगुवा आनिदेहु ॥ जुम कमलनेन कों छुडाईलेहु ॥८॥ जो मांग्योसों फगुवा दीन ॥ नवललाल संग केलि कोन हसत खेलत चले अपने धाम ॥ ब्रज जुवती भई पूरन काम ॥९॥ नंदरानी ठाडी पोरिद्धार ॥ नोछावरि करि देतवार ॥ वृषभान सुता संग रसिकराय ॥ जन मानिकचंद बलिहारी जाय ॥१०॥

९ (॥१॥ राग बसंत ॥१॥ खेलतवसंत बलभद्रदेव ॥ लीलाअनंत कोऊलहेनभेव ॥१०॥ सनिकादिआदि सुखरचेग्वार ॥ प्रगटकरन ब्रजरजविहार ॥ सुखनिधि गिरिधर धरन धीर ॥ लियोवांठि वांठि ओलिन अबीर ॥१॥ मधुमंगल ओरसुबल सीदाम ॥ सखासिरोमनि करत काम ॥ मधुमंगल आदि सकल ग्वाल ॥ बने सबके शिरोमनि नंदलाल ॥२॥ रचिपचि बहु अंबर बनाय ॥ वागेबहु केसरि रंगाय ॥ रहीपाग लसि सिरसुरंग ॥ कुंवर रसिक मनि श्रीत्रिभग ॥३॥ सुनत चपल सब उठीहेंबाल ॥ भरि भाजन लीने गुलाल ॥

हुलसि उठी तजि लोकलाज ॥ लईबोलि सब सखीसमाज ॥४॥ काहूकी
 कोऊन वदत कान ॥ भरति हितूनकों जानजान ब्रजराज कुंवर वर
 निकटआय ॥ नैननि सिराय निरखे अघाय ॥५॥ चतुर सखी एक
 हासकीन ॥ दुरिमुरि बचायद्रग गांठदीन ॥ पाछेते तारी बजाय ॥ व्याहगीत
 सब उठीं गाय ॥६॥ तब बोले स्यामघन अपने मेल ॥ खिंच्यो चीर तब
 लख्यो खेल ॥ लगीलाज चितवें न ओर ॥ सखा कहें आवों गांठ तोर
 ॥७॥ सुनत बाल तब चलीहैं धाय ॥ बलभद्रवीरकों गह्योजाय ॥ कटिपटुका
 पटपीत लीन ॥ भली भांत रंगसमरदीन ॥८॥ परम पुरुष कोऊ लहेनपार ॥
 ब्रजवासिन हित सहतगार ॥ सूरस्याम हंसि कहत बैन ॥ भरति-नैनसुख-
 बहुत दैन ॥९॥

१० (१०१) राग बसंत (१०१) वृन्दावन बिहरति बसंत चलि देखों नंद दुलारो ॥
 नटवर भेष सज्यों रंग भीनों सोभित सीस टीपारो ॥१॥ सँग सखा सोभित
 रँग भीनें रँगन रगमगे ग्वाल ॥ सुनति चली उठि धाई लाडिली सँग लीए
 ब्रज बाल ॥२॥ साजि सिंगार बनी अति सुंदर इक बेष इक सार ॥ कोकिल
 कैसें कंठ हि गावति मंगल गीत सुद्वार ॥३॥ बाजति ताल मृदंग झांझ
 ढफ लागति परम सोहाये ॥ जूथ परस्पर टोल दोऊन कै सबहिन कै मन
 भाये ॥४॥ चोवा चंदन अगर कुंमकुमा छिरकति अरु छिरकावें ॥ लाल
 गुलाल अबीर घुंघरि में तन अभिलाष बढ़ावें ॥५॥ भली भई आयों बसंत
 नर नारीन अति सुख पायों ॥ आनंद भयो गयो दुःख अब पसु पंछीन
 मन सरसायौ ॥६॥ गोपीजन फूले समात नहीं ब्रज सुख कहति न आवें ॥
 'नंददास' ब्रज बास बसै अरु जो देखै सौं गावें ॥७॥

११ (१०१) राग बसंत (१०१) नवल बसंत बीच वृन्दावन मोहन रास रचायों ॥
 सुर बिमान चढि देखन आए निरखि निरखि सुख पायों ॥१॥ नाँचति
 लाल पग नूपुर बाजैं मुरली सब्द सुहायों ॥ ताल मृदंग, झांझ, ढफ बाजति
 सब इक तार मिलायों ॥२॥ साँवल, स्याम, गौर हैं प्यारी मिलि रससिंधु
 बढ़ायों ॥ गोपी ग्वाल परसपर नाँचति अदभुत रंग जमायों ॥३॥ कहा कहौं
 लीला राधा बरकी किनहुं अंत न पायों ॥ या लीला पै बार बारनैं 'रामदास'

जस गायो ॥४॥

१२ (११) राग बसंत (११) कालिंदी के तीर मनोहर, क्रीडत हैं दोऊ भैया ॥ मल्लकाछ कटि सीस टिपारो देखत अति सचु पैया ॥१॥ वृन्दावन रमनीय भूमि अति कूजत मोर पपैया ॥ राग रागनी तान सरस सुर कोकिलनाद सुहैया ॥२॥ संग राधिक ललितादि अष्ट सखी कुंकुम कलस भरेया ॥ छिरकत स्यामस्याम कुंजनमें रुचिर गुलाल उडैया ॥३॥ बरखत कुसुम कुसुम देवमुनि नारद आनन्द अति हरखैया ॥ कृष्णदास प्रभु यह सुख बिलसत निरखत लेत बलैया ॥४॥

१३ (११) राग बसंत (११) गोवर्धनकी शिखरपें ठाडो नृत्यत कुंवर कन्हैया ॥ काछनि बनी हे ललित मनोहर टीपारो सुरंग धरेया ॥१॥ चलो सखी देखनकों जइये, राधा नवल दुलैया ॥ राग बसंत आलाप गावत मधुरे मृदंग बजैया ॥२॥ नाचत मोर कोकिला कूजत रुचिर गुलाल उडैया ॥ मच्यो खेल अद्भुत अपार सखी ब्रजाधीस बल जैया ॥३॥

१४ (११) राग बसंत (११) वृन्दावन रहे सीधाय बिहरत रो स्यामास्याम मल्लकाछ फेंट बांधी खेलत बसंत । जटित टीपारो ससि नृतत अनेक रंग उपजावत सप्तमान कोकिला हंसत । बाजत मृदंग ताल सहनाइ ढोल ढमक गावत हिंडोल राग भये मदनमोहन गिरिवरधर राधा भूले गुलाल बरखावत गगन सघन भयो सूर छिपंत ॥

बसंत राजभोग खेल के पद (शेहरा के पद)

१ (११) राग बसंत (११) ओर राग सब भये बाराती दूल्हे राग बसंत ॥ मदन महोच्छव आज सखिरी बिदा भयो हेमंत ॥१॥ मधुरे सुर कोकिल कल कूजत बोलति मोर हँसत ॥ गावति नारि पंचम सुर ऊँचे जैसें पिक गुनवंत ॥२॥ हाथन लई कनक पिचकाई मोहन चाल चलंति ॥ 'कुंभनदास' स्यामा प्यारी कों मिल्यो हे भौमतो कंत ॥३॥

२ (११) राग बसंत (११) गोपीजन वल्लभ जयमुकुंद ॥ मुख मुरलीनाद आनंदकंद ॥१॥ जयरास रसिक खनी सुवेस ॥ सिखिन शिखंड विराजे

केस ॥ गुजान वनधातु विचित्र देह ॥ दरसन मनहरन बढ़ावेनेह ॥१॥ जयसुंदर
मंदिर धरन धीर ॥ वृंदावन बिहरत गोपवीर ॥ वनिता सतजूथहें पर्मधाम ॥
लावन्यकलेवर कोटि काम ॥२॥ जयजय वैजंतीवनी माल ॥ जयकमल अरुन
लोचन विसाल ॥ कुंडल मंडित भुजदंड मूल ॥ निरंतर कालिंदी कूल
॥३॥ जयजय पुलकित खग मृगमराल ॥ सुरनर मुनिध्यानी ध्यानटाल ॥
सारसपिक मूर्छित सुतान ॥ थकित भए सुरमुनि विमान ॥४॥ जयजयश्रीकृष्ण
कलानिधान ॥ करुनामय जदुकुल जलजभान ॥ भगवंत अनंत चरित्रतोर ॥
कहें माधो दास मनमगन मोर ॥५॥

३ (४४) राग बसंत (४४) देखो रसिकलाल वागो रसाल ॥ खेलत वसंत
पिय रसिक बाल ॥१॥ ध्रु०॥ घोषघोष की सुघर नारि ॥ रूप रंग सब एक
सारि ॥ गावत जुरि मिलि मीठी गारि ॥ हसत कुंकुमा सीसडारि ॥१॥
नववसंत अभरन अमोल ॥ सारीमें झलमल झकोल ॥ द्रग अंजन भरि मुख
तंबोल ॥ हुलसत विलसत भई लोल ॥२॥ एक कृष्णागर लेरही हाथ ॥
लेपति उरसि भुज प्रिया साथ ॥ सोंधे में बोरे गिरिधरन नाथ ॥ चोवा
वह चल्थो कच पाग माथ ॥३॥ एक कंज पराग लगावे गाल ॥ एक गूँथि
कुसम पहरावे माल ॥ गहि रही कटितट जटित लाल ॥ मानों निकरिनील
तरुकरमृनाल ॥४॥ उडतहे वंदन ओर अबीर ॥ अरुन पीत भयो स्यामचीर ॥
सुवल वगर में बहोत भीर ॥ वरषत पिचकारिन रंगधीर ॥५॥ कौस्तभ
मनि कोंधत भीजगात ॥ वंदन भीतर सगबंगात ॥ पानखात मुसिकात जात ॥
किलकि किलकि सखी करत बात ॥६॥ वाजत ताल मृदंग चंग ॥ सारंगी
सुरवीन संग ॥ भरत भरावत नेन रंग ॥ निरखत बनि आवे मोह भ्रंग ॥७॥
सिंध पोरी ओर ब्रज अवास ॥ चंदन वादर कियो निवास ॥ फेलि रह्यो
सौरमा सुवास ॥ रसमें रसमय पिय विलास ॥८॥ एक श्रवननि कहत चोख ॥
स्यामलाल अंगअंगपोख ॥ हसत श्रीदामा सखातोक ॥ फागुन की हमें
कछून धोख ॥९॥ रति नायक छवि अति अनूप ॥ नवपल्लव अभिनव ब्रज
स्वरूप ॥ श्रीभट परमानंदजूष ॥ आनंदित श्रीनंदराय भूप ॥१०॥

४ (४४) राग बसंत (४४) वंदो पदपंकज नंदलाल ॥ जे भवतारन पूरन कृपाल

॥ध्रु०॥ चित चिंतत होत बुधि विसाल ॥ कृपाकरन ओर दीनपाल ॥ सदां
वसो मेरे हृदय माय ॥ कुंबर माधुरी चितहि धाय ॥१॥ तिमर हरन
सुखकरानंद ॥ मुनिवंदन आनंदकंद ॥ स्याम मुकटमनि कमलनेन ॥ छबि
समूहपर लजितमेन ॥२॥ गोकुलपति गुन नांदिनपार ॥ श्रीनंद सुवन सुमिरों
उदार ॥ निगमागम सब ओघसार ॥ सोई वृंदावन प्रगट्यो विहार ॥३॥
ऋतुवसंत पहलो समाज ॥ तहांतमुदित जुवतिजन सजजुसाज ॥ मुदित चले
जहां सूरस्याम ॥ वसंत वधावन नंदधाम ॥४॥

५ (॥१॥) राग वसंत (॥१॥) खेलत वसंत श्रीनंदलाल ॥ भरे रंग सब ग्वालवाल
॥ध्रु०॥ जूथजूथ सब नवलवाल ॥ सजिसमाज उडवत गुलाल ॥ गावत पंचम
सरस राग ॥ रूपसील भरी सब सुहाग ॥१॥ नवकेशरि भाजन भराय ॥
चंदनसों मृगमद मिलाय ॥ बहुगुलाल छिरकें फुलेल ॥ कुंबर कुंबरि रंग
वढीकेलि ॥२॥ लालहिं ललना भरें धाय ॥ मुखरोरी मांडें बनाय ॥ भलेंजुकहें
तारी बजाय ॥ भले त्रियन वस परेहो आय ॥३॥ अंगअंग रंग सब सुहाय ॥
पियलोचन निरखें अधाय ॥ विलसत सुख बडभाग वाम ॥ सुखी भये तहां
सूरस्याम ॥४॥

६ (॥१॥) राग वसंत (॥१॥) खेलत वसंत गिरिधरनलाल ॥ मनमोहन सोहन
दृगविशाल ॥ध्रु०॥ संगसोहत सुंदर अनंग ग्वाल ॥ भीने रंगकेसरि करत
ख्याल ॥ उडत अबीर पचरंगुलाल ॥ वाजत मृदंग डफ झांजताल ॥१॥
आई बनिबनि मिलि ब्रजकीवाम ॥ श्रीराधा ललितादिक सुनाम ॥ गावत
पंचम वंधीप्रेमदाम ॥ सोभा पावत भयो नंदधाम ॥२॥ रंग भरत भरावत
करत रंग ॥ रंग भरे बसन राजतसुअंग ॥ लुब्धे सुगंध भये मत्तमंग ॥
मृदुबोलत डोलत संगसंग ॥३॥ भरिलयो अबीर मुठीसुहेत ॥ दोऊ तज्यो
चाहत पुनिराखिलेत ॥ दृगमंदन चमकनि ह्वै सुचेत ॥ बाढत छबि सोगुनी
सुखनिकेत ॥४॥ लेवरन वरन वररंग अमोल ॥ छिरकत हितुव पिय
हितकलोल ॥ फविरहीवूंद सोहतदुकूल ॥ मानों फूलि रहे बहुबरन फूल ॥५॥
भरे नवल वाम गिरिधरहि धाय ॥ रहे विविध भेद अंगअंग छाया ॥ जहां
निरखत सोभा कहीन आय ॥ तहां स्याम रंग जान्यों न जाय ॥६॥ भई

मोहित सुर वनिता विमान ॥ मोहे गंधर्व सुनि मधुर गान ॥ रंग भर्यो पिय अति सुजान ॥ यह राखि हियें कृष्णदास ध्यान ॥७॥

७ (११) राग बसंत (११) खेलें फागु जमुनातट नंदकुमार ॥ द्रुममोरे विपिन अठार भार ॥१॥ हलधर गिरिधर ज्वाल संग ॥ मिलि भरत परस्पर करत रंग ॥ बाजे मृदंग उपंग चंग ॥ राजे सुंदर विचित्र अंग ॥१॥ तालमुरज उपंग ढोल ॥ बहुवंदन उडत गुलाल रोल ॥ वास लुब्ध आये मधुपटोल ॥ तेऊ अरुन भये अलिबर निचोल ॥२॥ बहुरि मधुष गये अपने ठाय ॥ भरतारन भमरी नहीं पत्यांय ॥ तुम राते भये पति कोन भाय ॥ कोऊ कपट रूप मति बैठो आय ॥३॥ खट पद कहें तुम भूलीवाल ॥ जहां धरागिरि अंबर भयो गुलाल ॥ तहां ऋतु वसंत विहरत गुपाल ॥ जाडा कृष्णा को प्रभु मोहनलाल ॥४॥



८ (११) राग बसंत (११) हरिजूके आवन की बलिहारी ॥ वासरगति देखतिहें ठाडी प्रेम मुदित ब्रजनारी ॥१॥ ऋतु वसंत कुसमितवन देखियत मधुपवृंद जसगावें ॥ जेमुनियाय रहत वृंदावन स्याम मनोहर भावें ॥२॥ नीको भेष वन्यों मनमोहन राजमणि उरहार ॥ मोरपक्ष सिरमुकट विराजत नंदकुमार उदार ॥३॥ घोष प्रवेस कियोहे संग मिलि गौरज मंडित देह ॥ परमानंद स्वामी हित कारन जसुमति नंदसनेह ॥४॥



संध्या आरती

१ (११) राग बसंत (११) फूल के सिंगार फूलन की सारी पैहरे तन ॥ फूलन की कंचुकी फूलन की ओढनी, अंग अंग फूले ललना कै मन ॥१॥ फूलन के नवकेसरि फूलन की माला फूलन के आभरन केस गूँथे फूलन घन ॥ फूलन के हाव भाव फूलन के चोज चाउ बिबिधि बरन फूल्यों ब्रिंदावन ॥२॥ श्रीगिरिधारि पिय के फूल नाहीं कोऊ समतूल गाबति बसंत राग मिलि जुवति जन ॥ 'कृष्णदास' बलिहारी छिनु छिनु रखवारी अखिल लोक जुवति राधिका प्रान पतिन ॥३॥



२ (११) राग बसंत (११) विविध बसंत बनाएँ चलीं सब देखन कुँवर कन्हवाई ॥



गिरिघटीयां द्रुमलता सुगंध अलि ठाडे सजि सुखदाई ॥१॥ बागों केसरी चोवा सोहै सुरंग गुलाल उडाई ॥ ब्रजबालक गावति कोलाहल धुनि 'ब्रजाधीस' मन भाई ॥२॥

३  राग बसंत  चलरी नवल निकुंज मंदिर मैं बन बसंत बैठे पिय प्यारी ॥ बागो पीत रंग बन्यों भूषन लाल रंग छबि न्यारी ॥१॥ सारी सुरंग, सोहै छबि नीकी कैचुकी पीत प्रीति अति भारी ॥ करि दरसन सुख केलि 'सरस रंग' कुसल बिचित्र रंजीत सुखकारी ॥२॥

४  राग हिंडोल  नंदनंदन नवल नागर किसोर बर खेलति बसंत बन्यों रंग अति भारी ॥ राग हिंडोल गावति नवल नागरी अति हिं रस भीज रही है दति तारी ॥१॥ लाल गुलाल रङ्गो गगनलों घुमडि कै केसरि कुंमकुमा भरि हो पिचकारी ॥ ताल किन्नर मुरज बीन ढफ बाज हीं बिच मोहन मुरली सप्त सुर धारी ॥२॥ सुभग जमुना तीर ठौर ब्रिंदा बिपुन बाल सुक कोकिला कीर किलकारी ॥ गह द्रुम डार ठाढे नैद लाल जहाँ राधिका सब सखि मधि सुकुमारी ॥३॥ बढ्यों दुहूँ दिस खेलि अधिक सोहावनी हँसति मुसिकाय यों ब्रज नारी ॥ मदन मोहन गिरिधर वर पीय जु देव मुनि करति कुसुम बरखा री ॥४॥

टिपारे के पद

१  राग हिंडोल  नृत्यत गावति बजावति मधुर मृदंग सप्तस्वरन मिलि राग हिंडोल ॥ पंचम स्वर लेअलापत उघटतहै सप्ततान मान थेईताथेईता थेईथेई कहति बोल ॥१॥ कनकवरन टिपारोसिर कमलवदन काछिनी कटि छिरकत राधा करत कलोल ॥ कृष्णदास नटवत गिरिधरपिय सुरबनिता बारत अमोल ॥३॥

२  राग हिंडोल  सब मिल गावत राग हिंडोल बाजे बजावत घन सुं बरसे मिलि बधावन चली बसन्त ॥ बरन-बरन आभरन पहेरे नीतन हाथ लिये गडुवा चलत चाल गजगंत ॥१॥ एकजु नाचत देती सुधंग लाग दाट उरप तिरप दूर जाई सो मिलि पोहोप मंजरी भर केसर कुमकुमा अबीर

छिरकती ॥ चिरजीयो 'तानसेन' के प्रभु राजा राम देत मुक्ताहल नग कचन
बरखत खतपति ॥

श्रीगुसांईजी भद्रे खेल के पद

१ ॥ राग बसंत ॥ खेलत बसंत वरविट्टलेश ॥ आनंदकंद गोकुल
सुदेस ॥ धृ० ॥ श्रीगिरिधर गोविंद संग ॥ श्रीबालकृष्ण लज्जित अनंग ॥
श्री गोकुलनाथ अनाथ नाथ ॥ रघुनाथ नवल जदुनाथ साथ ॥ १ ॥ श्रीघनस्याम
अभिराम धाम ॥ कल्यानराय परिपूरनकाम ॥ मुरलीधर आदि समस्त
बाल ॥ सेवक विचित्र सेवा रसाल ॥ २ ॥ तहां बाजत ताल मृदंग चंग ॥
जहां उडत गुलाल अबीर रंग ॥ श्रीगिरिवरधारी जहां खेलत आई ॥ तहां
लघुगुपाल बलिहारी जाई ॥ ३ ॥

२ ॥ राग बसंत ॥ वंदो पद पंकज विट्टलेश ॥ श्रीवल्लभ कुल दीपक
सुवेस ॥ १ ॥ जिनकी महिमा जे कहें उदार ॥ अतिजस प्रकट कियो संसार
॥ २ ॥ अनुसरन नीचजेतजि विकार ॥ तिनें भव निधि तरत न लगतवार
॥ ३ ॥ करिसारअरथ श्री भागवत प्रमान ॥ किये खंडन पाखंड आन ॥ ४ ॥
बांधि मर्यादा समवेद मान ॥ जन दीन उद्धरन सुख निरवान ॥ तिहिबंस
परम आनंद देन ॥ श्री पुरुषोत्तम सब सुखके एन ॥ ५ ॥

३ ॥ राग बसंत ॥ खेलत बसंत वर विट्टलेश ॥ मिलि रसिकराय
गोवर्धनश ॥ धृ० ॥ मृगमद कपूर केसरि सुरंग ॥ अति सोंधो सान्यों
कुसुमरंग ॥ दोऊ भरि पिचकाई अति उमंग ॥ तकिभरत परस्पर सुभग
अंग ॥ १ ॥ भरिनव अवीर नौतन गुलाल ॥ अरगजा लगावत अललित गाल ॥
दोऊ हसतलसत आनंद ख्याल ॥ पहराबत सवन सुगंध माल ॥ २ ॥ चमेली
फुलेल सरायवेलि ॥ मच्यो खेल अजर रंग रेलि ॥ सब गोकुल ॥ सौरभ
रह्यो फेलि ॥ मधुमत्त मधुप रस रह्यो झेलि ॥ ३ ॥ तहां बाजत चंग मृदंगताल ॥
सुर मिलत मुरली गावे गुपाल ॥ ब्रजजन रीझे जिय अति रसाल ॥ सुखदेत
सबन गिरिधरनलाल ॥ ४ ॥

४ ॥ राग बसंत ॥ खेलत बसंत वल्लभ कुमार ॥ सोभा समुद्र बाढ्यो

अपार ॥१॥ श्रीगिरिधर गिरिधरन साथ ॥ रंगभरत कनिक पिचकाई हाथ ॥२॥ श्रीगोविंद बालकृष्णजू संग ॥ छिरकत डारत बहुभांति रंग ॥३॥ रस खेलत खेलत गोकुलके नाथ ॥ केसरि रंग सोहत पागमाथ ॥४॥ श्रीरघुपति जदुपति अतिसुदेस ॥ घनस्थाय सुभग सुंदर सुवेस ॥५॥ श्रीकल्याण राई लीला रसाल ॥ मुरलीधर दामोदर कृपाल ॥६॥ श्रीगोपीनाथ बालक विनोद ॥ सेवकजन निरखत मन प्रमोद ॥७॥ श्रीगोकुल परम सुदेश धाम ॥ मिलि गावत गीत विचित्र वाम ॥८॥ बाजत मृदंग मुख चंगरंग ॥ वीना कठताल पिनाक उपंग ॥९॥ केसरि चोवा मृगमद फुलेल ॥ ब्रजभामिनि छिरकत रेलपेल ॥१०॥ झोरी भरिभरि उडवत गुलाल ॥ मुख बोलत होहोहोरी ग्वाल ॥११॥ यह सुख सोभा मोपे कही न जाय ॥ जनदास निरखि बलिहारी जाय ॥१२॥

५ (ह्रस्व) राग वसंत (ह्रस्व) आज वसंत बधायोहे श्रीवल्लभ राजदुवार ॥ श्री विठ्ठलनाथ कीयो हे रचिरुचि नव वसंत को सिंगार ॥१॥ वल्लभीसृष्टि समाज संग सब बोलत जय जयकार ॥ पुष्टि भावसों पूजत हैं मिलि बाढ्यो हे रंग अपार ॥ प्रेम भक्ति को दान करन श्रीवल्लभ परम उदार ॥ कृपादृष्टि अवलोकि दासकों देत हैं पान उगार ॥३॥ श्रीवल्लभराजकुमार लाल ब्रजराज कुँवव अनुहार ॥ एसो अद्भुत रूप अनुपम रसिक जात बलिहार ॥४॥



६ (ह्रस्व) राग वसंत (ह्रस्व) केसरी उपरना ओढें केसर की धौती ॥ केसर को तिलक सोहे श्रीविठ्ठल छवि जौती ॥१॥ खट मुद्रा सोभित माला उर आभूषन भूषित सब अंग ॥ नख सिख निरखति श्रीवल्लभ सुत लजित भयों अनंग ॥२॥ आयों ऋतुराज परम रमनीक अति सुखकारी फागुन मास ॥ अति सुखदाइक कृष्ण सप्तमी ब्रजपति पूरी आस ॥३॥ आजु बडो दिन महा महोच्छव करत श्रीविठ्ठलनाथ ॥ गिरधर आदि प्रभृति सप्त सुत निजजन कीए सनाथ ॥४॥ कीए सुगंध फूलेल उबटनो कीए जु केसरि स्नान ॥ कीए सिंगार मनोहर सब अँग पीत बसन परिधान ॥५॥ नख सिख विविधि भाँति आभूषन सोभित गिरिधर लाल ॥ कुलह केसरी सीस विराजीति मृगमद तिलक सुभाल ॥६॥ खट रस विंजन विविधि भाँति के कीए पकवान रसाल ॥



आदर सौं जिमावति भावति गोकुल के प्रतिपाल ॥७॥ दे बीरा छिरकति
चोवा चंदन कुँमकुम अबीर गुलाल ॥ ज्यों गुलाब कुसुम अति सोभित,
सोभित सुंदर भाल ॥८॥ गावति गुन गंधर्व गलित मन बाजति सरस मृदंग ॥
ताल रबाब झांझि ढफ महुवरि राजत सरस सुधंग ॥९॥ अति आदर सौं
करि न्योछावर आनंद उर न समाई ॥ आरति वारत श्रीमुख उपर 'गोविंद'
बलि बलि जाई ॥१०॥



७ (ह्रस्व) राग बसंत (ह्रस्व) खेलत बसंत विद्वलेशराय ॥ निजसेवक सुख देखत
हे आय ॥ श्रीगिरधर राजा बुलाय ॥ श्रीगोविंदराय पिचकारी लाय ॥१॥
श्रीबालकृष्ण छबि कही न जाय ॥ श्री गोकुलनाथ लीला दिखाय ॥
रघुनाथलाल अरगजा लाय ॥ यदुनाथ लाल चोवा मगाय ॥२॥ घनश्याम
लाल फेंटन भराय ॥ सब बालक खेलत एकदाय ॥ तहां सूरदास नाचत
हैं आय ॥ परमानंद घोरि गुलाल लाय ॥३॥ चन्नभुज केसर माट भराय ॥
छीतस्वामी बूका फेंकी जाय ॥ नंददास निरख छबि कहत आय ॥ गावे
कुमनदास बीना बजाय ॥४॥ सब गोविंद बालक छिरके आय ॥ कोऊ नाचत
देहदसा भुलाय ॥ सब बालक हो हो बोले आय ॥ उडे अबीर गुलाल घुघर
कहाय ॥५॥ पिचकारी इत उत छोड़े जाय ॥ फेंकत फूल फूले न अघाय ॥
कोऊ गावत सुर अति सोहाय ॥ बाजे ताल मृदंग उपंग भाय ॥६॥ बिच
मोहो चंग मुरली बजाय ॥ कोऊ डफ ले महुवर सों मिलाय ॥ एक नाचत
पग नूपुर बजाय ॥ बाढ्यो सुख समुद्र कछु कही न जाय ॥ सब बालक
रंगनि अंग चुचाय ॥ गोकुल घरघर सुखही छाय ॥ सोभा कहा कहे कबि
बनाय ॥ यह सुख सब सेवक दिखाय ॥८॥ सुर कुसुमनि बरसें आय ॥
सब गावत मीठी गारी भाय ॥ तब अपने मनोरथ करत आय ॥ तहां कृष्णदास
बलिहारी जाय ॥९॥



८ (ह्रस्व) राग बसंत (ह्रस्व) राग रंग रंगी रसको रास रंग रंगी ॥ श्री लक्ष्मणभट
थे लाल रस की मुरलिका रंघ रंघ घर-घर मधुरामृत पूरित प्रिया प्रसंग
सावेष्टित सुन्दर सुतडित घनतरंगी ॥१॥ स्वर बर रस समुद्र प्रगट संपुट
कुंज संगी । पद्मनाभ प्रभु रसाल दान देत लेत गोपी नेह द्रव्य सौंदर्य जुरी



भरी रही प्रेम पेंठ तीन्यो लोक त्रिभंगी ॥२॥

९  राग बसंत  श्री वल्लभ प्रभु करुना सागर जगत उजागर
गाइए ॥ निरख-निरख मंगल मुख की छबि बल बल बल जाइए ॥१॥
जिनकी कृपा अनुग्रहते श्री गिरिधरलाल लड़ाइए ॥ अनायास सब सुख
को बहिये जीवन को फल पाइए ॥२॥ चरन परस तनरूप दरश सब ही
दुःख दूर बहाइए ॥ श्री बल्लभ गुण गाइए यातें रसिक कहाइए ॥३॥

१०  राग बसंत  श्री वल्लभ कुलमंडल जन रंजन सुखकारी ॥
श्री विठ्ठलनाथ पधार्या पोते गिरि गोवर्धनधारी ॥१॥ एकरूप बहुरूप धरीने
लीला बहु विस्तारी ॥ नित्य नित्य लीला नौतन भासे हरिदास बलिहारी
॥२॥

११  राग बसंत  श्री वल्लभ बिन सब जुग फीकौ ॥ श्री विठ्ठल
पुरुषोत्तम सुमिरौं काज सब सुधरे या जीय कौ ॥१॥ श्री गिरिधर गोविंद
श्री बालकृष्ण गोकुलनाथ रसिक बरनी कौ ॥ श्री रघुपति जदुपति घन
साँबल 'सरस रंग' भजन कर याही कौ ॥२॥

१२  राग बसंत  श्री वल्लभ करुणा करके मोहे कीजे निज दासन
को दास ॥ पूरण काम है नाम तिहारो इतनी मो मन पूर हो आस ॥१॥
तिहारी कृपा कटाक्ष तें दुर्लभ पाइये सुलभ करो ब्रजवास ॥ तिहारे सेवक
जन संगत बिनु निसदिन मो मन रहत उदास ॥२॥ श्री वृन्दावन गिरि गोवर्धन
श्री यमुना तट करूँ निवास ॥ श्री हरि वदन चंद सु विमल यशगान करत
सुर सदा अकास ॥३॥ कृपा निधान कृपा कर दीजे जो सब लोक मिटे
उपहास ॥ दीजे दिव्य देह गोविंद को इन दृग निरखों अनुदिन रास ॥४॥

१३  राग बसंत  कोऊ रसिक नहीं या रस को ॥ वागधीस
वचनामृत गहवर पराकाष्ठा प्रेम प्रसंगित, ब्रज पुर वधू स्वरूप निष्ठा सुनि
सुनि काहुन कसको ॥१॥ वृन्दावन आनन्द उदधिको पार नहीं कहूँ जसको ॥
श्री लक्ष्मण सुत चरणकमल पराग मधु पूरित पद्मनाभ अली ताको हे चसको
॥२॥

१४ (॥१॥ राग सारंग (॥१॥) खेलत वल्लभ फाग ललना होरी रंग रख्यो ॥१॥ ललना श्रीगोकुल गाम सुहावनों श्रीयमुनाजीके तीर ॥ ललना सीतल मंद सुगंध बहे तहां हितचित समीर ॥१॥ बजावत ताल पखावज सारंगी मुखचंग ॥ गावें गीत सुहावने उपजत तान तरंग ॥२॥ उडत अबीर गुलाल तहां मानो ऋतु वरस्योमेह ॥ केसर घस नवकुंकुमा छिरकत नौतन नेह ॥३॥ ओर कहां लग वरनिये उपजत अतिआनंद ॥ खेलेहीं वल्लभ वल्लभी भाखे वृंदावनचंद ॥४॥

१५ (॥१॥ राग सारंग (॥१॥) लाल खेलत फाग प्रगट करत अनुराग केसर अबीर अरगजा श्रीअंग सुंदरि भरत सुहाग ॥१॥ हीरा खचित पिचकाई चलावे छिरकत महा बडभाग ॥ वल्लभदास प्रभु गोकुलेश मिल उपज्यो प्रेमपराग ॥२॥

१६ (॥१॥ राग सारंग (॥१॥) खेले प्रभु बैठे महाराज केसर अरगजा भीने ॥ ठाडे यूथ रसिक भक्तनके फाग खिलाये आज ॥१॥ देतअसीस सकल ब्रजसुंदरि मिल चिरजीयो सिरताज ॥ वल्लभदास प्रभु गोकुलेश्वर राजेंसंग समाज ॥२॥

१७ (॥१॥ राग गौरी (॥१॥) श्री वल्लभकुल मंडन प्रगटे श्रीविठ्ठलनाथ ॥ जेजन चरणन सेवत तिनके जन्म अकाथ ॥१॥ भक्ति भागवतसेवा निशदिन करत आनंद ॥ मोहन लीला सागर नागर आनंदकंद ॥२॥ सदा समीप विराजें श्रीगिरिधरगोविंद ॥ मानिनी मोद बढ़ावें निजजन के रविचंद ॥३॥ श्रीबालकृष्ण मनरंजन खंजन अंबुज नयन ॥ मानिनी मान छूडावे बंक कटाक्षनसेन श्री वल्लभ जग वल्लभ करुणानिधि रघुनाथ ॥ ओर कहां लगि बरनों जगवंदन यदुनाथ ॥५॥ श्रीघनस्याम लाल बल अविचलकेलिक लाल ॥ कुंचित केश कमल मुख जानों मधुपन केटोल ॥६॥ जो यह चरित्र वखाने श्रवण सुने मन लाय ॥ तिनके भक्ति जु बाढे आनंद घोस विहाय ॥७॥ श्रवण सुनत सुख उपजत गावत परम हुलास ॥ चरण कमलरज पावन बलहारी कृष्णदास ॥८॥

१८ (१५) राग गौरी (१५) प्रथम सीस चरन धर बंदो श्री विठ्ठलनाथ ॥
 दशधा भक्ति ओर चार पदारथ जाके हाथ ॥१॥ भूतल द्विज वपु धारयो
 त्रिभुवन पति जगदीश ॥ उपमा कों कोऊ नहीं जय जय गोकुलके ईश ॥२॥
 कलिके जीव उधारे निजजन किये सनाथ ॥ भवसागरते बूडत राखे अपने
 हाथ ॥३॥ नामदेय सिरपरस कमलकर टारेपाप ॥ सेवारीति बताई सेवक
 न्है के आप ॥४॥ शय्या भूषण वसन सिंगार रचे हैं बनाय ॥ नंदनंदन
 अपने मुख भोजन करतहैं आय ॥५॥ मायावाद निवारे थापे पूरण ब्रह्म ॥
 मारग पुष्टि प्रकासे ओर राखे सब कर्म ॥६॥ श्रीगिरिधर गुण सागर महिमा
 कही न जाय ॥ श्रीगोविंद करुणानिधि क्रीडत अपने भाय ॥७॥ श्रीबालकृष्ण
 अतिसुंदर शोभाको नहिपार ॥ जगबंदन गोकुल पति निजजनके उरहार ॥८॥
 श्रीपति श्रीरघुनाथजू देत अभय वरदान ॥ महाराज यदुनाथजू करत मधुर
 स्वरगान ॥९॥ श्रीघनस्याम सदा सुखदायक करो प्रणाम ॥ सबमिल खेलत
 हरखत ब्रजजन मन अभिराम ॥१०॥ श्रीवृंदावन अतिशोभित यमुनापुलिन
 तरंग ॥ हैसत परस्पर कुंकुम केसर छिरकत अंग ॥११॥ श्रीगिरिधर संग
 खेलत उरआनंद न समाय ॥ बाजत ताल पखावज युवतीजन मंगल गाय
 ॥१२॥ सुर कुसुमन वर्षाकरें बोलत जय जयकार ॥ माणिकचंद प्रभु यह
 विधि गोकुल करो विहार ॥१३॥

१९ (१५) राग सारंग (१५) वल्लभलाल रसाल के खेलत रंग रझो ॥ एक
 छिरकत एक रही झुक एकन अरगजा कर लझो ॥१॥ सब मिल अबीर
 उडावें जो परस्पर नयनन नेह नयो ॥ पिचकाई भर भर जु चलावत वल्लभदास
 प्रभु रस ठयो ॥२॥

बसंत के पद (महासुद ६ से महासुद १४ तक)

१ (१५) राग बसंत (१५) रिंगन करत कान्ह आंगन में करलीयें नवनीत ॥
 सोभित नील जलद तन सुंदर पहरे झंगुलीपीत ॥१॥ रुनझुन रुनझुन नूपुर
 बाजत त्यों पग ठुमकि धरे ॥ कटिकिंकिनी कलरव मनोहर सुनि किलकार
 करें ॥२॥ दुलरीकंठ कनिक दुई कानन दीयो कपोल दिठोना भालविशाल

तिलक गौरोचन अलकाबलि अलिछोना ॥३॥ लटकन लट किरधो भुवऊपर
कुलह सुरंग बनी ॥ सिंध पोरितें उझकि उझकि छबि निरखतहें सजनी
॥४॥ नंदनंदन उनतन चितवत प्रेम मगन मन आई ॥ कंचनथार साजि
घरघरवतें बोहो विधि भोजन लाई ॥५॥ मनिमंदिर मूढापे सुंदरि आछेवसन
बिछावें ॥ बालकृष्ण कों जो रुचि उपजे अपने हाथ जिमावें ॥६॥ जलअचवाई
वदन पोंछत ओर वीरी देत सुधारी ॥ हियें लगाय वदन चुंबनकरि सर्वस
डारत वारी ॥७॥ नेनन अंजनदे लालनकें मृगमद खोरकरें ॥ सुरंग गुलाल
लगाय कपोलन चिबुक अबीर भरें ॥८॥ चोवाचंदन छिरकि अबीर गुलालन
फेंट भराई ॥ तनक तनकसी मोहनकों भरिदेत कनिक पिचकाई ॥९॥ आपु
समांझ परस्पर छिरकत लालन पे छिरकावें ॥ न्हेंनीन्हेंनी मुठी भराई रंगनसों
सेनन नेनभरावें ॥१०॥ निरखि निरखि फूलति नंदरानी तनमन मोदभरी ॥
नित्यप्रति तुम मेरे घर आवो मानो सुफलधरी ॥११॥ देतअसीस सकल
व्रजवनिता जसुमति भागि तिहारो ॥ कोटि बरस चिरजीयो यह व्रजजीवन
प्रानहमारो ॥१२॥

२ (॥३॥ राग वसंत (॥३॥ देखत वन व्रजनाथ आज अति उपजतहे अनुराग ॥
मानों मदन वसंत मिले दोऊ खेलत डोलत फाग ॥१॥ द्रुमगन मध्य पलाश
मंजुरी उठत अगिन की न्यांई ॥ अपने अपने मेल मनोहर होरी हरखि लगाई
॥२॥ केकी कीरकपोत ओर खग करत कुलाहल भारी ॥ जनपद लज्जा
तजी परस्पर देत दिवावत गारी ॥३॥ झीली झांझ निर्झर निसान डफभेरि
भमरगुंजार ॥ मानो मदन मंडली रची पुरवीथनि विपिन विहार ॥४॥ नवदल
सुमन अनेक वरन वर विटपन भेखधरे ॥ जनोराजत ऋतुराज सभामें हैंसि
बहुंरंगन भरे ॥५॥ कुंजकुंज कोकिल कलकूजत बानी विमलवढी ॥ जानों
कुलवधू निलज भईहें गावत अटनचढी ॥६॥ कुसमितलता जहां देखत अलि
तहींतहीं चलिजात ॥ मानों विटप सवन अवलोकत परसत गनिकागात ॥७॥
लीने पुष्प पराग पवनकर फिरतचहुंदिशधाये ॥ तिहिं ओसर संयोगिनि
विरहनि छांडत कर भर भाये ॥८॥ और कहालों कहां कृपानिधि वृंदाविपिन
समाज ॥ सुरदास प्रभु सब सुख क्रीडत कृष्ण तुमारेराज ॥९॥

३ (३१) राग बसंत (३१) मोहन वदन विलोकत अलियन उपजतहे अनुराग ॥
 तरनि तप्त तलफत चकरो शशि पीवत पीयूष पराग ॥१॥ लोचननलिन
 नयेराजत रति पूरेमधुकर भाग ॥ नानों अलिआनंद मिले मकरंद पिवत रस
 फाग ॥२॥ भमरीभाग भृकुटी पर चंदन वंदन बिंदु बिभाग ॥ तातकि सोम
 संक्यो घनघनमें निरखि तज्यो वैराग ॥३॥ कुंचितकेश मयुर चंद्रिका मंडित
 कुसुम सुपाग ॥ मानों मदन धनुष सरलीने बरखतहे वन बाग ॥४॥
 अधराबिंबते अरुन मनोहर मोहन मुरली राग ॥ मानो सुधा पयोध घोरबर
 ब्रजपर बरखनलाग ॥५॥ कुंडल मकर कपोलन झलकत श्रमसी करके
 दाग ॥ मानों मीन कमलवर लोचन सोभित सरदत डाग ॥६॥ नासातिल
 प्रसून पदवीतर चिबुक चारु चित खाग ॥ दारचों दशन मंद मुसिकावनि
 मोहत सुरनर नाग ॥७॥ श्रीगोपाल रस रूप भरेये सूर सनेह सुहाग ॥
 नानों सोभा सिंधु बढ्यो अति इन अखियन के भाग ॥८॥

४ (३१) राग बसंत (३१) लालनसंग खेलन फागचली ॥ चोवा चंदन अगर
 कुंकुमा छिरकत घोषगली ॥१॥ ऋतुवसंत आगम नवनागरि जोवन भार
 भरी ॥ देखन चली लाल गिरिधरकों नंदजूके द्वारखरी ॥२॥ रातीपीरी चोली
 पहरें नौतन झूमक सारी ॥ मुखहिं तंबोल नेन में काजर देत भामती गारी
 ॥३॥ बाजत ताल मृदंग बांसुरी गावत गीत सुहाये ॥ नवल गुपाल नवल
 ब्रजवनिता निकसि चोहटे आये ॥४॥ देखो आई कृष्णजूकी लीला विहरत
 गोकुल माहीं ॥ कहतन बने दास परमानंद यह सुख अनतजु नाहीं ॥५॥

५ (३१) राग बसंत (३१) जुवतिन संग खेलत फागहरी ॥ बालकवृंद करत
 कोलाहल सुनतन कानपरी ॥ बाजत ताल मृदंग बांसुरी किन्नरसुर
 कोमलरी ॥ तिनहूं मिले रसिक नंदन मुरली अधरधरी ॥२॥ कुंकुम बारि
 अरगजा विविध सुगंध मिलाय करी ॥ पिचकाईन परस्पर छिरकत अति
 आमोद भरी ॥३॥ टूटतहार चीर फाटत गिरी जहां तहां ढरनढरी ॥ काहू
 नहीं संभार क्रीडारस सब तन सुधि बिसरी ॥४॥ अतिआनंद मगन नहीं
 जानत वीतत जाम घरी ॥ कुमनदास प्रभु गोवर्धनधर सर्वस दे निवरी ॥५॥

६ **ह्रस्व** राग वसंत **ह्रस्व** फुली द्रुमवेली भांतिभांति ॥ नववसंत सोभा कहीन जात ॥ अंगअंग सुख विलसत सघन कुंज ॥ छिनछिन उपजत आनंदपुंज ॥१॥ देखि रंगरंगे हरखेनेन ॥ श्रवनन पोषत पिक मधुपवेन ॥ सुख दायक नासाअति अमोद ॥ रसना बहुस्वादन बहुविनोद ॥२॥ कुसुमन कुसुमाकर सुहाय ॥ त्रिविध समीर हृदो सिराय ॥ दास चन्नभुज प्रभु गुपाल ॥ वनविहरत गिरिधरन लाल ॥३॥



७ **ह्रस्व** राग वसंत **ह्रस्व** गिरिधरलाल रस भर खेलत विमल वसंत राधिका संग ॥ उडत गुलाल अबीर अरगजा छिरकत भरत परस्पर रंग ॥१॥ बाजत ताल मृदंग अधोटी वीना मुरली तानत रंग ॥ कुंभनदास प्रभु यह विधि क्रीडत यमुना पुलीन लजावत अनंग ॥१॥



८ **ह्रस्व** राग वसंत **ह्रस्व** खेलत मदन गोपाल वसंत ॥ नागर नवल रसिक चूडामनि सब विधि सुघर राधिका कंत ॥१॥ नेन नेन प्रति चारु विलोकन वदन वदन प्रति सुंदर हास ॥ अंगअंग प्रति प्रीति निरंतर रति आगम निसजाई विलास ॥२॥ बाजत ताल मृदंग अधोटी डफवांसुरी कुलाहलकेलि ॥ परमानंद स्वामीके संगमिलि ॥ नाचत बागत रंगरेलि ॥३॥



९ **ह्रस्व** राग वसंत **ह्रस्व** खेलत वसंत गिरिधरनलाल ॥ जहां लाग्यो अबीर गुलाल भाल ॥१॥ केसरि छिरकत नवलवाल ॥ लपटावत चोवा अतिरसाल ॥२॥ रही पागढरकि अर्धभाल ॥ देखत मनमथ अतिभयो विहाल ॥३॥ चंदन लाग्यो दुहुंगाल ॥ तब मुरलीधर रिझवत गोपाल ॥४॥ श्रीगोवर्धनधर रसिकराय ॥ चन्नभुजदास बलिहारी जाय ॥५॥

१० **ह्रस्व** राग वसंत **ह्रस्व** मदन गुपाल लाल सब सुख निधि खेलत वसंत निकुंजदेश ॥ जुवतीजन सोभित समूह तहां पहरें भूषन नानावेष ॥१॥ मुकलित द्रुम नवमंजुरी साखा कोकिल कल कूजत बिशेष ॥ फूली नवमालती मनोहर मधुष गुंजारत तामधेस ॥२॥ बाजतताल मृदंग झांझडफ आवज वीना किन्नरेस ॥ निरतत गुनी अनेक गुनभरे आवत जीयव्हेव्हे आवेस ॥३॥ कुंकुम रंगसों भरि पिचकाई तक तनेन ओर सीसकेस ॥ रंगरंग सोभा अंगअंग

प्रति निरखि विरह भाज्यो विदेस ॥४॥ जानत नहीं जाम घरी वीतत अति
आनंद हृदं प्रवेस ॥ दास चत्रभुज प्रभु सब सुखनिधि गिरिवरधर जुवतीन
रेस ॥५॥

११  राग बसंत  विहरतवन सरस बसंत स्याम ॥ जुवतीजूथ गावं
लीला अभिराम ॥६०॥ मुकलित नूतन सघन तमाल ॥ जाईजुही चंपक
गुलाल ॥ पारजातही मंदारमाल ॥ लपटात मत्त मधुकरन जाल ॥१॥ कुटज
कदंब सुदेश ताल ॥ देखिवन रीझे मोहनलाल ॥ अतिकोमल नौतन प्रवाल ॥
कोकिल कल कूजत अतिरसाल ॥२॥ ललित लवंग लता सुवास ॥ केतुकी
तरुणी मानों करतहास ॥ इह विधि लालन करें बिलास ॥ वारनें जायजन
गोविंददास ॥३॥

१२  राग बसंत  खेलतवन सरस बसंतलाल ॥ कोकिल कल
कूजत अतिरसाल ॥ जमुनातट फूले नवतमाल ॥ केतुकी कुंद नौतन प्रवाल ॥
नवसत सजि आई ब्रजकी बाल ॥ साजेभूषन वसन तिलक भाल ॥२॥
चोवा चंदन बंदन ओर गुलाल ॥ छिरकत प्यारी तकितकि गुपाल ॥ आलिंगन
चुंबनदेत गाल ॥ पहरावत उर फूलनकी माल ॥३॥ यह विधि क्रीडत ब्रजन
नृपकुमार ॥ सुमन वृष्टि करें सुर अपार ॥ श्रीगिरिवरधर मनहरतमार ॥
कुमनदास बलिबलि विहार ॥३॥

१३  राग बसंत  जुवति वृंदसंग स्याम मनोहर खेलत बसंत
ओरहीभांति ॥ अरुनहरित मुकलित दुमपल्लव मधुपहलावत अंकुरपांति ॥१॥
तरणि तनया तट पुलिनरम्यमें जहतहं बने कोकिल किलकांति ॥
पूरनकलारोहिनी बल्लभ उदित मदन कुसुमा करिराति ॥२॥ बाजत ताल
मृदंग अधोटी वीना वेनु मुरली सुरभांति ॥ उरप तिरपगति अभिनव ललना
पगनूपुर सिंचित किलकांति ॥३॥ विविध मुगंध अरगजा छिरकत पिय वनिता
वनिता पियगात ॥ विविध विहार विविधपट भूषन किरन लजावत उडगनकांति
॥४॥ मोहनलाल गोवर्धन धरको रूपनेन पीवतन अघात ॥ कृष्णदास प्रभु
वानिक निरखत व्योमयान ललना ललचात ॥५॥

१४ (१४) राग बसंत (१४) वृंदावन फूल्यो नवहुलास ॥ गोवर्धनगिरी के आसपास ॥ध्रु०॥ चलि सलज कदली पुंजझोप ॥ तरुतरुल तरुनता अरुनकोप ॥ जुबतीजन विहरत मदनचोंप ॥ तनमन धन जोवन हरिहिसोंपि ॥१॥ सितअसित कुसम मंडपनछांह ॥ कलकमोद मंदार तांह ॥ खेलत वसंत गिरिधरन जांह ॥ वृषभान सुताके कंठ वांह ॥२॥ भयो अनंग अंगविन सिवके ताप ॥ सोईफिरअवथिर रहीथाप ॥ भई मगन मिटचो अब सब संताप ॥ श्रीवल्लसुत पदरज प्रताप ॥३॥

१५ (१५) राग बसंत (१५) मधु ऋतु वृंदावन आनंदथोर ॥ राजत नागरी नबकिसोर ॥ जूथिका जुथरूप मंजुरी रसाल ॥ विथकित अलिमधु लाल गुलाल ॥१॥ चंपकबकुल कुल विधि सरोज ॥ केतुकी मेदनी मुदित मनोज ॥२॥ रोचक रुचिर बहे त्रिविध समीर पुलकित निरतत आनंदीत कीर ॥३॥ पावन पुलिन घनमंजुल निकुंज ॥ किसलयसेन रचित सुख पुंज ॥४॥ मंजीर मुरजडफ मुरली मृदंग ॥ बाजत मधुर बीना मुखचंग ॥५॥ मृगमद मलयज कुंकुम अबीर ॥ चंदन अगर सोंर चितचौर ॥६॥ गावत सुंदर हरि सरस धमारि ॥ पुलकित खगमृग बहतन वारि ॥७॥ हित हरिवंस हंसहंसनी समाज ॥ एसेंही करो मिलि जुगजुग राज ॥८॥

१६ (१६) राग बसंत (१६) खेलत गिरिधर रगमगे रंग ॥ गोप सखा बनिक निआएहें हरिहलधर के संग ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझडफ मुरली मुरज उपंग अपनी अपनी फेंटन भरिभरि लिये गुलाल सुरंग ॥२॥ पिचकाई नीकेंकरि छिरकत गावत तान तरंग ॥ उतआई ब्रज वनिता वनिवनि मुक्ता फल भरिमंग ॥३॥ अचराउ रसि फेंट कंचुकी कसि राजत उरज उतंग ॥ चोवाचंदन बंदन ले मिलि भरत भामते अंग ॥४॥ किसोर किसोरी दोऊ मिलि विहरत इतरति उतही अनंग ॥ परमानंद दोऊ मिलि विलसत केलिकलाजुनि संग ॥५॥

१७ (१७) राग बसंत (१७) सजिसेन पलानो मदनराय ॥ अबलय पर कोप्योहै रिसान ॥१॥ कुंजरद्वम मदगज पलास ॥ भयभीत भयो नेकअति उदास

॥२॥ मोर महावत चढेहैं धाय ॥ ललित लाल पाखर बनाय ॥३॥ अंबसुभट
पहरे सनाय ॥ बट बेरीया अंजानदाय ॥४॥ त्रिविध पवन चंचल तुरंग ॥
उडिरजपरत झुकि अतिउत्संग ॥५॥ कदलीदल बेरख फरहरात ॥ सहचरीयां
चालक धरपिपात ॥६॥ कमलनैन कोकिला अतिअनूप ॥ तूपकदार शुक
कपट रूप ॥७॥ बाजे गाजे निर्झर निशान ॥ भ्रमर भेरि मिलि करत गान
॥८॥ ऋषिकेशके प्रभु विनुगोपाल ॥ कैसें बिहाय यह कठिन काल ॥९॥

१८ ॥ राग वसंत ॥ रतन जटित पिचकाई करलियें भरत लालकों
भावे ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा विविध बूंदवरखावे ॥१॥ कबहुंक कटिपट
बांधि निसंक व्हे ले नवलासी धावे ॥ मानों शरद चंद्रमा प्रगट्यो ब्रजमंडल
तिमरन सावे ॥२॥ उडत गुलाल परस्पर आंधी रह्यो गगन सवछाई ॥ चत्रभुज
प्रभु गिरिधरनलाल छबि मोपे वरनी नजाई ॥३॥

१९ ॥ राग वसंत ॥ प्यारे हो कान्हर जो तुम आंखिन भरोजू ॥
एसें बदि खेलो खेल अबके वसंत मोसों सोहें जु करोजू ॥१॥ हों कहे
देत बात भूलि जिनजाओ ओरके खिलायवे कों हारजिनहरोजू ॥ कल्यानके
प्रभु गिरिधर निधरक काहू धायजिन धरोजू ॥२॥

२० ॥ राग वसंत ॥ रह्यो रह्यो विहारीजू मेरी आंखिन में बूकाजिन
मेलो अंतर व्हे मुख अबलोकनकों ॥ अरभामती तिहारी मिल्यो चाहे मिसकरि
पैयां लागों पलपलकों ॥१॥ गावत खेलत जो सुख उपजत सोनकोटिवल
हेजुवतिनकों ॥ हरिदास के स्वामी को हँसत खेलत मुख कहा पाइयतहे
यह सुख मनकों ॥२॥

२१ ॥ राग वसंत ॥ खेलत पिय प्यारी सोंधें भरिभरि लीयें कनिक
पिचकारी ॥ छलकर छिरकति भरति परस्पर देतदिवात गारी ॥१॥ छीनलई
मुरली प्रीतम की रंग बढावत भारी ॥ चोवा चंदन बूकाबंदन कुंवरपैदारी
॥२॥ केसरि आदि जवाद कुमकुमा भीजि रही रंग सारी ॥ देत नही डहकावति
सुंदरि हंसति करति किलकारी ॥३॥ फगुवा देहु लेहु पियमुरली के कहो
कुंमरि हाहारी ॥ बरनों कहा कहति नहि आवे बढ्यो सुख सिंधु अपारी

॥४॥ इतमोहन हलधर होऊ भैया उतललिता राधारी ॥ हित हरिवंश लेहु
किन मुरली तुम जीते हम हमारी ॥५॥

२२ (११) राग बसंत (११) चलि देखन जैयें नंदलाल ॥ध्रु०॥ बनिठनि आई
सब ब्रज की बाल ॥ ऋतु बसंत गावहु रसाल ॥१॥ चली राधे कुंवरि
सहचरिन संग ॥ लीयें ढफआवज किन्नरी मृदंग ॥ बिच महुवर मधुर बाजे
ऊपंग ॥ ले मिली स्यामसों रागरंग ॥२॥ रंगरंगी मदन पचरंग अबीर ॥
आये करति कुलाहल यमुनातीर ॥ ठाढे मधुसूदन गोपीनीर ॥ नवकेसरि
के रंगरंगे चीर ॥३॥ जिहिं कुंज मधुप गुननिवास ॥ बोले अंबडार कोकिल
प्रकास ॥ जहाँ स्यामसुंदर करें बिलास ॥ श्रीजगन्नाथ भजि माधोदास ॥४॥

२३ (११) राग बसंत (११) फागुसंग बडि भागि ग्वालनि हरिसंग खेलति
होरी ॥ कुमकुम केसरि अगर अरगजा माट भरे रंग रोरी ॥१॥ आगे
कृष्ण पाछे रहे भामिनि करपिच काईलीने ॥ बृंदावन में मोहन पकरे मनभायो
सोकीने ॥२॥ अरसपरस सब मिलि खेलति स्याम अकेले आये ॥ अंक
भरे आलिंगन चुंबन नानाभांत बनाये ॥३॥ पकरि ग्वाल परस्पर दुहुंदिस
सुरसुता तटभेटे ॥ अबीर गुलाल अरगजा लेकें श्यामा श्याम लपेटे ॥४॥
जाने को अंग लगे मोहन भेदनपावे कोहे ॥ जुगल जोरि खेलो गोकुल
में नित बृंदावन जोहे ॥५॥

२४ (११) राग बसंत (११) चलो बिपिन देखियें गुपाल संग सोहत नवब्रज
की बाल ॥ध्रु०॥ लपटति ललितलता अतिराजत तरुतरुवर ज्योतमाल ॥
जाही जुही कदंब केतुकी चंपक बकुल गुलाल ॥१॥ कोमल कुल केलिकीजे
पिय तरनि तनयातीर ॥ सीतल मंदसुगंध मलयानिल बहत है त्रिविध समीर
॥२॥ प्रफुलित बकुल विविध कुसुमावलि हों गूंथों पीयमाल ॥ आसकरन
प्रभु मोहन नागरि सुंदरि नैन बिशाल ॥३॥

२५ (११) राग बसंत (११) मुख मुसकिनि मनबसी नबलबर चितवन चित
हरिलीनो ॥ कुंजन केलि रहसि रस बरखति ओर अरगजा मीनो ॥१॥
अबीर अगरसतबरन बिराजति राग बसंते कीनो ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा

कुंज बिहारी देखो मैनमन हीनो ॥२॥

२६ (११) राग बसंत (११) बनसपति फूली बसंत मास ॥ रसिक जनन मनभयो हुलास ॥ध्रु०॥ श्रीगोकुल फूल्यो अति रसाल ॥ बाजे चंग मृदंग उपंग ताल ॥ सोहे सुंदर तिलक बनायो भाल ॥ गोपी छिरकति केसरि भरि गुलाल ॥१॥ ब्रजजन फूले अंग अंग ॥ फागु खेलति हलधर कृष्णसंग ॥ फूले गोपीग्वाल मिलि युवतीजूथ ॥ मानोप्रगट भयोहै कामदूत ॥२॥ बृंदावन फूल्यो कुंजकुंज ॥ जमुना जल फूले करतिगुंज फूल कमल कली लीये भंवर बास ॥ फूले खग बोलति आसपास ॥३॥ गोवर्धन फूल्यो ठोरठोर ॥ फूले पांडर केशू अंबमोर ऐसी शोभा बिलसे बायोंमास ॥ फूलेजन गांवें माधोदास ॥४॥

२७ (११) राग बसंत (११) पिय प्यारी खेलें यमुनातीर ॥ भरि केसरि कुमकुम नवअवीर ॥ध्रु०॥ घसि मृगमद चंदन अरुगुलाल ॥ रंगभीने अरगजा अति रसाल ॥ जहां कुलकुल केकी नवमराल ॥ बनबिहरति दोऊ रसिक लाल ॥१॥ बृंदादिक मोहन लई जोरि ॥ बाजे ताल मृदंग रबाब घोर ॥ हैंसिकें गेंदुक दई चलाय ॥ मुखपट देराधे गई बचाये ॥२॥ ललिता मोहन पटगह्यो धाय पीतांबर मुरलीलई छिनाय ॥ होंतो सपथ करें छांडो नतोय ॥ श्यामाजु आज्ञा दई मोय ॥३॥ निज सहचरीं आई बनिबसीठ ॥ सुनरी ललिता तुम सुनीढीठ ॥ हठ छांडि जानि देऊ नवकिशोर ॥ सुनि रीझि सूर तून दीयो तोर ॥४॥

२८ (११) राग बसंत (११) प्यारी राधा कुंज कुसुमसंकैलें ॥ गुहिगुहि कुसुम मनोहर माला पीतम केऊरमेलें ॥१॥ पिय केबेन नैन अनियारे मैन हि रीझरिझे लें ॥ गौर उरज स्थल श्याम उर स्थल मनो जुगल गढि घेरें ॥२॥ नंदनंदनसों अति रस बाढ्यो मदनमोहन सों खेलें ॥ कहि कल्याण गिरिधरकी प्यारी रसही में रसझेलें ॥२॥

२९ (११) राग बसंत (११) रितु पलटी मोपे रह्यो नजाय ॥ मधुकर माधो सों कहीयो जाय ॥ध्रु०॥ बहुवास सुबास फूली है बेलि ॥ अरु बने कोकिला

करति केलि ॥ मधुप तापतन सह्यो नजाय ॥ पिय प्रान गये कहा करिहो
आय ॥१॥ प्रिय प्रान रहत हैं अवधि आस ॥ पिय तुमबिन गोपी अति
उदास ॥ सूरदास इमबदतिबाल ॥ पिय तुम बिन गोकुल कोनहाल ॥२॥

३० (११) राग बसंत (११) नवकुंज कुंज कूजत बिहंग ॥ मानों बाजे बाजत
नृपअनंग ॥ द्रुम फूल रहे सब फलनि संग ॥ मधि अति सुवास अरु विविध
रंग ॥१॥ जहं बाजति झालरि ताल संग ॥ अधवट आवज बीनाउपंग ॥
अरु-श्रीमंडल महुवरि मृदंग ॥ कहि लाग डाट लेमोरि अंग ॥२॥ ध्रुम
धिधिकटि ताद्रिमताधिलांग दोऊ गानलेत नृत्यत सुधंग ॥ बूका गुलाल
डारति उत्तंग ॥ बलिद्वारकेश छबि युग त्रिभंग ॥३॥

३१ (११) राग बसंत (११) बनफूले-द्रुम कोकिला बोली मधुप झंकार
नलागे ॥ सुनभयो सोर रोर बंदीजन मदन महीपति जागे ॥१॥ तिनहदीने
अंकुर पल्लवजे द्रुम पहले लागे ॥ मानों रति पति रीझ जाचकन बरन बरन
दीयेबागे ॥२॥ नये पात नई लता पहोप नये नये रस पागे ॥ नवल केलि
बिलसति गिरिधर संग सूररंग अनुरागे ॥३॥

३२ (११) राग बसंत (११) खेलत बसंत आये मोहन अपने रंग ॥ करत
ताल कुनित बलिअबलि युवती मंडल संग ॥१॥ मुरज मंजरी चंग महुवरि
बैन विषान मृदंग ॥ झालरी जंत्र उपंग धुनि उपजत तान तरंग ॥२॥ उडति
अबीर गुलाल कुमकुमा केसरि छिरके अंग ॥ गलित कुसुम सिरपाग लटपटी
नाचत ललित त्रिभंग ॥३॥ कोऊ किन्नरि सरस गति मिलवत कोऊ चंग ॥
जन त्रिलोक प्रभु बिपिन बिहारी चितवत उदित अनंग ॥४॥

३३ (११) राग बसंत (११) एतो झक झोरति सोंधें बोरतिहैं गोरी सुखकारी ॥
हाहा बिहारी बलाये लेहों तुम खेलोक्योंन सम्हारी ॥१॥ केसरि कनक
मोरी भरिभरि लेलेदेति पिय परढारी ॥ सकल कोमल गात रसिकतुम
देखोजियन बिचारी ॥२॥ सखीबृंद मनमोहनगहि घेरे भरलीने अंकवारी ॥
प्यारी बहोत अरगजाजीभी देख रिषीकेश बलिहारी ॥३॥

३४ (११) राग बसंत (११) खेल खेलरी कान्हर त्रियन फुलवारी में छिरकि छिरकि रंग भरतयोंसुखकरे ॥ अतिउत्तम चंदनबंदन लीने ओर अरगजा करिकें ऐसे अनुराग छिरकि छिरकि तरुनी बिहरें ॥१॥ एक कर पहुप माल गलेमेलति दूजे मोर धरावति कोऊ धूप अगरले सुबास करें हरिदास के स्वामी स्याम कुंजबिहारी तीन लोक जाके बस सो राधाके मुखपै अबीडरपकैं धरें ॥२॥

३५ (११) राग बसंत (११) ऋतु बसंत कुसुमित नवबकुल मालती ॥ कुरबक मल्लिका गुंजत बहुअलिपांति ॥१॥ कूजत कलकल हंसके की मिथुन कीरा ॥ बहत पवन मलय विमल सुरभि जमुना तीरा ॥२॥ गावति कलगीत युवती बोलत होहोरी ॥ केसरि मृगमद कपूर छिरकति नवगोरी ॥३॥ मनि नूपुर कटि किंकिनी कंकनधुनि झोहे ॥ हरि जीवन प्रभु गिरिवरधर त्रिभूवन मन मोहे ॥४॥

३६ (११) राग बसंत (११) मोह्योमन आज सखीरी मोहन बलबीर ॥ मधुर मधुर मुरली स्वर गावति सकल यमुना तीर ॥१॥ कनक कपिस अति शोभित कटित वरचीर ॥ मानिक द्यूति ओढनी सांवल शरीर ॥२॥ सिखि शिखंड शिर सिंधु मुदित भेषअहीर ॥ मुकुलित नववृंदावन कूजति पिककीर ॥३॥ कृष्णदास प्रभु के हित त्रिगुनबहे समीर ॥ गिरिवरधर जुवतिन संग बिहरति रतिरनधीर ॥४॥

३७ (११) राग बसंत (११) आज सांवरो घोष गलिनमें खेलति मोहन होरी ॥ संग सखी लीयें राधिका बनीहै अनूपम जोरी ॥१॥ बाजति ताल मृदंग छंदसों बिच मुरली धुनि थोरी ॥ अरस परस छिरकति छिरकावति मोहन राधा गोरी ॥२॥ अबीर गुलाल उडति बुकारंग भरिभरि धरी कमोरी ॥ केसरि रंगसों भरि पिचकारी मारतिहैं मुखरोरी ॥३॥ छलबल सांकरिआंख अंजावत लोकलाज सब तोरी ॥ लुटति सुख कीसीवां सब मिलि परमानंद करति निहोरी ॥४॥

३८ (॥१॥ राग वसंत (॥३॥) कबकी हों खेलत मोहीसों अरतहों सबन छांडि मेरी आंखिन भरतहो ॥ रहो हो रहो हो हरि होंहूं ओर त्रिय नेंकुनटरतहो ॥१॥ नेनमीं डि फिरि फिरि मुसिकात जात होंहूं जानत तेसी मोहीसों करतहो ॥ कल्यानके प्रभु गिरिधरपति विवस नैन डरतहो ॥२॥

३९ (॥१॥ राग वसंत (॥३॥) ऐसे रीझे भीजे आयेरीलाल गावतहैं धमारि ॥ होंजु गईरी भोर वृंदावन भरलीनी अंकवारि ॥१॥ सुधरी अलक बदनपर बिथुरी निजकरसों अली आपस कोरि ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी मिली है बिरह हिर दोरि ॥२॥

४० (॥१॥ राग वसंत (॥३॥) खेलत वसंत गोकुलके नायक जुवती जनके मंडलवीच ॥ सुरंग गुलाल उडाय अरगजा कुंकुमकी जहांकीच ॥१॥ हाथन लिये कनिक पिचकाई छिरकत आपुस मांझ ॥ तेसोई सुरंग रंग केसरि को मानों फूली सांझ ॥२॥ श्रीमंडल आवज डफ बीना झांझ झालरी ताल ॥ पटह मृदंग अधोटी महुवरि बाजत वेनुरसाल ॥३॥ रविकल कुल कोकिल अतिकूजत चहूं ओर द्रुमफूले ॥ तेसोही सुभग तीर कालिंदी देखत सुरनर भूले ॥४॥ यह विधि सब मिलि होरी खेलें मनमें अति आनंद ॥ गोवर्धनधर रूप पर जन बलिवलि गोकुलचंद ॥५॥

४१ (॥१॥ राग वसंत (॥३॥) उडत वंदन नवअबीर बहु कुमकुमा खेलत वसंत वन लाल गिरिवरधरन ॥ मंडित सुअंग सोभा स्याम सोभित ललन मानो मनमथ बान साजि आये लरन ॥१॥ तरणि तनया तीर रमनीक वनद्रुम लता कुसुम मुकलित सुनाना वरन ॥ मधुर सुर मधुप गुंजार करें पिक शब्द रस लुब्ध लागे दशों दिश कुलाहल करन ॥२॥ आई वनिवनि सकल घोखकी सुंदरी पहिरि तन कनिक नवचीरपट आभरन ॥ मधुर सुर गीत गावें सुधर नागरी चारु निरत मुदित कुनित नूपुर चरन ॥३॥ बदन पंकज अधर बिंब शोभित चारु झलकत कपोल अति चपल कुंडल करन ॥ दास कुमननिनाथ हरिदास वर्यधर नंदनंदन कुंवर युवतिजन मनहरन ॥४॥

४२ ॥ राग बसंत ॥ नंदनंदन वृषभान नृप नंदिनी सरस ऋतुराज
विहरत वसंते ॥ इत सखा संग शोभित श्रीगिरिवरधरन उतजुवति जनमध्य
राधा लसंते ॥१॥ सूरजा तट सुभग परम रवनी यवन सुखद मारुत मलय
मृदुबहंते ॥ प्रफुल्लित मल्लिका मालती माधवी कुहु कुहु शब्द कोकिल
हंसते ॥२॥ विविध सुर तीन गावत सुघर नागरी ताल कंठ ताल बाजत
मृदंगे ॥ वेनवीना अमृत कुंडली किन्नरी झांझ बहु भांति चंग उपंगे ॥३॥
चंदनसु वंदन अबीर नव अरगजा मेदगोरा साख बहु घसंते ॥ छिरकत
परस्पर सुदंपति रसभरे करत बहुकेलि मुसकनि हसंते ॥४॥ देखि सोभा
सुभग मोहे सिव विविध तहां थकित अमरेश लजित अनंगे ॥ गोविंद प्रभु
पिय हरिदास वर्यधर घोषपति युवतिजन मानभंगे ॥५॥

४३ ॥ राग बसंत ॥ देखरी देख ऋतुराज आगम सखी सकल बनफूल
आनंद छायो ॥ ताल कदली धुजा उमगि अति फरहरे संग सब आपुनी
फोज लायो ॥१॥ कोकिला कीर कलगान आगें करे भृंग भेरी लीयें संग
धायो ॥ घुरत निशान घनघोर मोरन कीयो करत पिक शब्द गजअति
सुहायो ॥ उडत बंदन बहु कुमकुमा केसरि तियनके कुचन तकि तमकरायो
॥३॥ पंचले बान चहुंओर छाये प्रथम चांपले आपु हाथन चलायो ॥ दौर
कर शोर धपधाय लरति अतिघेरि चहुंओर गढमान ढायो ॥४॥ परी खलबली
सब नारियुर मदन की मिलन मनस्याम अंचल फिरायो ॥ जिति सब सुभट
कृष्णदास बृंदा विपिन आय गिरिधरन कों शीसनायो ॥५॥

४४ ॥ राग बसंत ॥ ऋतु वसंत वृंदावन विहरत व्रजराज काज साजे द्रुम
नवपल्लव प्रफुल्लित पोहो पन सुवास ॥ कलापी कपोत कीर कोकिल कमनीय
कंठ कूजत श्रवणन सुनत होत हे हो हिय हुलास ॥१॥ तेसोई त्रिविधि पवन बहृत
तेसोई सीतल सुगंध मंदरंग उपजत हे हो अति उजास ॥ प्रभु कल्याण गिरिधर
उत जुवति जूथ मध्य राधा केसरि छिरकत अबीर गुलाल उडावत आवत हे हो
करें रंग रास ॥२॥

४५ (४५) राग बसंत (४५) ऋतु वसंत तरु लसंत मनहसंत कामिनी भामिनी
सब अंगअंग रमत फागरी ॥ चर्चरी अति विकट ताल गावत संगीत रसाल
उरप तिरप लास्य तांडव लेत लागरी ॥१॥ बंदनबूका गुलाल छिरकत तक
नेन भाल लाल गाल मृगज लेप अधरदागरी ॥ गिरिवरधर रसिकराय मेचक
मुदरी लगाय कंचुकी पर छापदीनी चकित नागरी ॥२॥ बाजत रसना मंजीर
कूजत पिक मोर कीर पवन भीर जमुनातीर महल वागरी ॥ विष्णु दास
प्रभु प्यारी भेटत हंसि देत तारी काम कला निपट निपुन प्रेम आगरी ॥३॥

४६ (४६) राग बसंत (४६) लाल ललित ललितादिक संगलियें विहरतरी
वरवसंत ऋतुकला सुजान ॥ फूलन की करगें दुकलियें पटक तपट उरजछियें
हंसत लसत हिलिमिलि सब सकल गुन निधान ॥१॥ खेलत अति रसजो
रह्यो रसना नहीं जात कह्यो निरखि परखि थकित भये सघन गगन जान ॥
छीत स्वामी गिरिवरधर श्रीविठ्ठल पद पद्मरेनु वरप्रताप महिमातें कियो कीरति
गान ॥२॥

४७ (४७) राग बसंत (४७) ऋतु वसंत वृंदावन फूलेदुम भांति-भांति सोभा
कछुकही नजाति बोलतपिक मोर कीर ॥ खेलत गिरिधरन धीर संग ग्वाल
वृंदभीर विहरत मिलि जमुनातीर बाढी तनमदनपीर ॥१॥ आई ब्रज नवलनारि
संग राधिका कुमारि कीने नवसत सिंगार साजे नववसन चीर ॥ वदन
कमलनेन भाल छिरकत केसरि गुलाल बूकाचोवा रसाल सोंधो मृगमद अबीर
॥२॥ बाजत वीनामृदंग बांसुरी उपंग चंग मदन भेरि महु वरि डफ झांझ
झालरी मंजीर ॥ निरखत लीला अपार भूली सुधिबुधि संभार बलिहारी
कृष्णदास देखत ब्रज चंदधीर ॥३॥

४८ (४८) राग बसंत (४८) खेलेखेल कान्हर त्रियन फुलवारी में छिरकि
छिरकि रंग भरतयो सुखकरे ॥ अति उत्तम चंदन बंदन लावे और अरगजा
करिकें ऐसे अनुराग छिरका छिरक तरुणी बिरह हरे ॥१॥ एक करपो होप
माल गरेमेलत दूजेमोर धरावत कोऊ धूप अगरले सुवा सकरे ॥ हरीदास
के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी तीन लोकजाके वससो राधाके मुखपर अबीर

डपकें धरे ॥२॥

४९ (॥१॥ राग बसंत (॥३॥) कहां आईरी तरकि अबहीजु खेलत ही प्रीतम संग एक कर अबीर दूजेकर फेंटाकर ॥ जब उनभुजन जोरि मुसिव्याय वदन मोर्यों तें जान्यों ओरन तन चित एसो यह न होय जिनभरे इन नेनन यही डर ॥१॥ जबहीतू उठचली तबही लालन उझकि रहे बूझन लागे ओरनसों में कछु न कछो झुकिगई कोन बात पर ॥ उठिचलि हिलमिल तोही सोरंगरस और नसूं और सब लागत चूनी समान तुव मधिनायक संग सोहे लाल गोपाल गिरिधर ॥२॥

५० (॥१॥ राग बसंत (॥३॥) अबकें वसंत न्यारोई खेलें मेरीसों न मिलि खेलें नारी तेरीसों ॥ दुचितहोत कछुन सुख पर्ययतु काहसों न मिलि मेरीसों ॥१॥ देखेंजी जोरंग ऊपजेगो परस्पर राग रंग नीकें करि फेरीसों ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी रंगही में रंग उपजे केरीसों ॥२॥

५१ (॥१॥ राग बसंत (॥३॥) वसंत ऋतुआई अंगअंग सरसाई खेलति रसिक गिरधरपिय भाई ॥ बनबन फूलि रही बनराई मंद पवन लगत सुखदाई ॥१॥ बिहरति लाडिली लाल मनोहर महुवर मृदंग धुनि गतीयन भाई ॥ यह ऋतुराज केलि रस रह्यो ब्रजपे सरस रंग अद्भुत छबि छाई ॥२॥

५२ (॥१॥ राग बसंत (॥३॥) कुसमित वन देखन चलोआज ॥ तहां प्रगटभयो रति रंगराज ॥ अति गुंजत कोकिल कलसमेत ॥ जुवतीजन मन आनंददेत ॥१॥ राधिका सहित राजत निकुंज तहां मदन मोहन सुंदरता पुंज ॥ दंपति रतिरस गावें हुलास ॥ यह सदां वसोमन सूरदास ॥२॥

५३ (॥१॥ राग बसंत (॥३॥) ऋतु वसंत मुकलित वन सजनी सुवन जूथिका फूलीरी ॥ गुनन गुनन गुंजत दुहुंदिश मधुप मंडली झूली ॥१॥ गोवर्धन तट कोकिला कूजत वचननिकर रस मूली ॥ खेलत निरखि छेल नंदनंदन भई उडपति गति लूली ॥२॥ ऋतु कुसमाकर राका रजनी विरहनि नितप्रति कूली ॥ कृष्णदास हरिदास वर्यधर केलिकला अनु कूली ॥३॥

५४ (॥१॥ राग बसंत (॥३॥) आयो आयोरी यह ऋतु वसंत ॥ मधुकरन मन

मधुवन वसंत ॥ देदेतारी त्रियमन हसंत ॥ मलय मृगज केसरि घसंत ॥१॥
 खेल मच्च्यो ब्रजपुर के मांझ ॥ कोऊ गिनतन भोर मध्यान सांझ ॥ गिरिधरपिय
 जल जंत्र हाथ ॥ वल्लब वल्लवी भोर साथ ॥ गावत गुन मधु माधो गाय ॥
 निरखि मुरझि परचो रतिकोनाथ ॥३॥ नितउठि द्योस विनोदवात ॥ पशुपंछी
 फूलेनमात ॥ प्रतिबिंबत रवि शशि पातपात ॥ विष्णुदास बलि जातजात
 ॥४॥

५५ (१५) राग बसंत (१५) आज मदनमोहन बने उपमाकों कोहे ॥ रति
 पति राजा पाय बांध्यो हू न सोहे ॥१॥ कोटि सुधानिधि सीतल जोहे ॥
 देखत बदन त्रैताप नसोहे ॥२॥ ऐसी कोन नागरी जो निमिष बिछोहे ॥
 प्रभु रघुनाथदास ब्रजजन मोहे ॥३॥

५६ (१५) राग बसंत (१५) चलोरी वृंदावन वसंत आयो ॥ फूलि रहे फूलनके
 झोंरा मरुत मकरंद उडायो ॥१॥ मधुकर कीर कोकिला ओर खग कोलाहल
 उपजायो ॥ नाचत स्याम नचावत स्यामा राधाजू राग जमायो ॥२॥
 चोवाचंदन बूकाबंदन लालगुलाल उडायो ॥ व्यास स्वामिनी की छवि निरखत
 रोमरोम सुख पायो ॥३॥

५७ (१५) राग बसंत (१५) नवल वसंत नवल वृंदावन नवलही फूले फूल ॥
 नवलही कान्ह नवलवनी गोपी निरतत एकहीतूल ॥१॥ नवल गुलाल उडे
 रंग बूका नवल वसंत अमूल नवलही छींट बनी केसरि की भेटत मनमथसूल
 ॥२॥ नवलही ताल पखावज बाजत नवल पवनके झूल ॥ नवलही बाजे
 बाजत श्रीभट कालिंदी के कूल ॥३॥

५८ (१५) राग बसंत (१५) नवल वसंत नवल वृंदावन खेलत नवल गोवर्धन
 धारी ॥ हलधर नवल नवल ब्रज बालिक नवल नवल बनी गोकुल नारी
 ॥१॥ नवल जमुनातट नवल विमलजल नौतन मंद सुगंध समीर ॥ नवल
 कुसम नवपल्लव साखा कूजत नवल मधुप पिककीर ॥२॥ नव मृगमद
 नवअरगजा वंदन नौतन अगर सुनवल अबीर ॥ नवचंदन नवहरद कुंकुमा
 छिरकत नवल परस्परनीर ॥३॥ नवलवेनु महुवरिबाजे अनूपम भूषन

नौतनचीर ॥ नवलरूप कृष्णदास प्रभु को नौतन जस गावत मुनिधीर ॥४॥

५९ ॥ राग वसंत ॥ नववसंत आगम नवनागरी नवनागर गिरिधर संग खेलत ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा ताकि ताकि पियसन मुख मेलत ॥१॥ पोहोपांजुलि जब भरत मनोहर वदन ढांपि अंचल गति पेलत ॥ चन्नभुज प्रभु रस रास रसिक को रीझि रीझि सुख सागर झेलत ॥२॥

६० ॥ राग वसंत ॥ नववसंत आगमनी को लागत नवल फूल पल्लव बनये ॥ नाना वरन सकल वृंदावन जहां तहां द्रुम प्रफुलित भये ॥१॥ प्रगटयो रति पति वसंत सुखद ऋतु हेमकाल कलहजु गये ॥ गुंजत मधुप कीर पिक कूजत ठोरठोर आनंदठये ॥२॥ जमुनातट रमनीक परमरुचि कुंज बितान ललित छये ॥ तहां साज नटवर नंदनंदन बैठि रहे नेरें जु लये ॥३॥ जानि सुसमय चन्नभुज प्रभु पिय आतुर संदेस तोकों जुदये ॥ वेगि चलिहि मिलि गिरिधर पिय संग सबसुखकरि विलसो जु नये ॥४॥

६१ ॥ राग वसंत ॥ पिय देखो वनछवि निहारि ॥ बारवार यह कहित नारि ॥ ध्रु ॥ नवपल्लव बहु सुवन रंग ॥ द्रुमवेली तन भयो अनंग ॥ भभरा भभरी भ्रमत संग ॥ जमुना करत नाना तरंग ॥१॥ त्रिविधि पवन महा हरखदेन ॥ सदां बहत तहां रहतचेन ॥ सूर प्रभु करि तुरतगेन ॥ चलो नारि मन सुखद मेन ॥२॥

६२ ॥ राग वसंत ॥ आयो आयो पिय यह ऋतु वसंत ॥ दंपति मनसुख विरहिन अंत ॥ फाग खिलावो संगकंत ॥ हाहाकरि तृन गहतदंत ॥१॥ तुरत गये हरिलई मनाय ॥ हरखि मिले हरि कंठलाय ॥ दुःख डारचो तुरतहि भुलाय ॥ सोसुक दोउनके उरनमाय ॥२॥ ऋतु वसंत आगमन जानि ॥ नारिन राख्यो मात बानि ॥ सुरदास प्रभु मिले आनि ॥ रस राख्यो रतिरंग ठानि ॥३॥

६३ ॥ राग वसंत ॥ देखो प्यारी कुंज बिहारी मूरतिवंत वसंत ॥ मोरी तरुन तरुलता तनमें मनसिज रस वरसंत ॥१॥ चलि चूरन कुंतल अलिमाला मुरली कोकिल नाद ॥ देखत गोपीजन वनराई मदन मुदित

उनमाद ॥२॥ अरुन अधर नवपल्लव सोभा विहसन कुसम विकास ॥ फूले विमल कमलसे लोचन सुचित मन उल्लास ॥३॥ सहज सुवास स्वास मलयानिल लागत परम सुहाये ॥ श्रीराधा माधवी गदाधर प्रभु परसत सुखपाये ॥४॥

६४ (११) राग बसंत (११) तेरी नवल तरुनता नवबसंत ॥ नवनव विलास उपजत अनंत ॥१॥ नवअरुन अधर पल्लव रसाल ॥ फूले विमल कमल लोचन विशाल ॥ चलि भृकुटी भृंग भृंगनकी पांति ॥ मृदु हसन दसन कुसमनकी भांति ॥१॥ भई प्रगट अल्प रोमावलि मोर ॥ स्वास सौरभ मलय पवन झकोर ॥ चल फलउरोज सुंदर सुठान ॥ बोले मधुरमधुर कोकिला गान ॥२॥ दुरि देखत ब्रज कुंवरराय ॥ बाढ्यो मनमथ मन चोगनों चाय ॥ तोहि मिलि विलस्यो चाहतहें स्याम ॥ जाहि देखत लज्जित कोटिकाम ॥३॥ तब चली चरन मंथर विहार ॥ बाजे रुनन झुनन नूपुर झंकार ॥ सुनि पुलकित गोकुल पति कुमार ॥ मिलि भयो गदाधर सुख अपार ॥४॥

६५ (११) राग बसंत (११) फूले फूलेरी चलिदेखनजैये नवबसंत द्रुमवेली ॥ नवरंग मदन गोपाल मनोहर नवराधिका नवकेली ॥१॥ ऋतु वसंत कुसमाकर सजनी मत्त मधुप धुनि सुनि हेली ॥ कानन मुदित जुवती मंडलमें खरजादिक ताननमेली ॥२॥ विविध विहार विविध पटभूषन विविध भांति खेला खेली ॥ सुनि कृष्णदास सुरति रस सागर गिरिधर पिय विहरत जु पेली ॥३॥

६६ (११) राग बसंत (११) कुसुमित कुंज विविध वृंदावन चलिये नंदके लाला ॥ पाडर जाईजुही केतुकी चंपक बकुल गुलाला ॥१॥ अंब दाख दार्यों नारंग फल जांबू परम रसाला ॥ ओर बहोत फूले द्रुम देखियत कहत मुदित ब्रजबाला ॥२॥ कोकिलकीर चकोर मोर खग जमुनातट निकट मराला ॥ त्रिगुन समीर बहत अलिगुंजत नीकीठोर गुपाला ॥३॥ सुनि मृदु वचन चले गिरिबरधर कटितटि किंकिनि जाला ॥ नानाकेलि करत सखियन संग चंचल नेन विसाला ॥४॥ तहां वीनत कुसम राधिका भामिनि ग्रथित मनोहर माला ॥ कृष्णदास प्रभु के उर मेलत भेटत स्यामत माला ॥५॥

६७ (॥१॥ राग बसंत (॥१॥) देखिरी देखि ऋतुराज आगम सखी सकल बन
फूल आनंद छायो ॥ ताल कदली धुजा उमगि अति फरहरे संग सब आपुनी
फौज लायो ॥१॥ कोकिला कीर गुनगान आंगे करें भ्रम भेरी लीए संग
आयो ॥ घुरत निसान घनघोर मोरन कीयो करत पिक सब्द गज अति
सुहायो ॥२॥ फिरत तहां हंस पदचर चकोरन बहु सैल रथ चमक चढि
धमक धायो ॥ उडत वारन बहु कुंमकुमा केसरि तियनके कुचन तकि
तमकरायो ॥३॥ पंच ले बान चहुँ ओर छाए प्रथम चांपले आपु हाथन
चलायो ॥ दोर कर सोर धप धाय लरति अति घेरि चहुँ ओर गढमान
ढायो ॥४॥ परी खलबली सब नारि उर मदनकी मिलन मन स्याम अंचल
फिरायो ॥ जीति सब सुभट 'कृष्णदास' बिंदा विपिन आय गिरिधरन कौं
सीस नायो ॥५॥

६८ (॥१॥ राग बसंत (॥१॥) खेलत हैं हरि आनंद होरी ॥ करतल ताल बजावत
गावत रामकृष्ण की जोरी ॥१॥ ऋतु कुसुमाकर कामदेव पिय माखन दूध
दही की चोरी ॥ जाके भवन कछु नहि पावत ताके चले उठि भाजन फोरी
॥२॥ देखत गोपी सुंदर लीला घूंघट और हैंसि मुख मोरी ॥ 'परमानंद'
स्वामी बहु रंगी सब यों सुख देखि कर पौरी ॥३॥

६९ (॥१॥ राग बसंत (॥१॥) दोऊ नवललाल खेलति बसंत ॥ आनंदकंद
गिरिधरन चंद ॥१॥ नवल कुंज द्रुम नवल मोर ॥ नवल कुसुम सम मधुप
सोर ॥२॥ नवल लीलांबर नवल पीतपट नवल नवल अधर मुख बीरी दंत ॥
नवरस केसरि नवल अरगजा नवल गुलाल अबीर उडंत ॥३॥ नवल गुपाल
नवल ब्रज जुवती नवल परस्पर सुख अनंत ॥ 'चत्रभुजदास' दरस दृगलोभी
नवल रूप गिरिधरनचंद ॥४॥

७० (॥१॥ राग बसंत (॥१॥) नंद नंदन वृषभानु नंदनी संग सरस ऋतुराज
बिहरति बसंते ॥ इत सखा संग सोभित श्रीगिरिवरधरन उत जुबति जन
मधि राधा लसंते ॥१॥ सूरजा तट सुभग परम रमनीय बन सुखद मारुत
मलय मृदुल बहंते ॥ प्रफुलित मल्लिका मालती माधवी कुहुँ कुहुँ सब्द कोकिल

हसंते ॥२॥ विविध सुर ग्राम तीन ग्राम गावत सुघर नागरी ताल कठताल
बाजति मृदंगे ॥ बैनु बीना अमृत कुंडली किन्नरी झांझि बहु भांति चंग उपंगे
॥३॥ चंदन सु बंदन अबीर नव अरगजा मेद गोरा साख बहु घसंते ॥
छिरकति परसपरि सु दंपति रस भरे करति बहु केलि मुसकनि हसंते ॥४॥
देखि सोभा सुभग मोहे सिव बिधि तहाँ थकित अमरेस लजित अनंगे ॥
'गोविंद' प्रभु हरिदास बर्य धरि घोष पति जुबति जन मान भंगे ॥६॥

७१ (११) राग बसंत (११) बन फूले द्रुम कोकिला बोली मधूप झंकारन
लागे ॥ सुन भयों सौर रोर बंदीजन मदन महीपति जागे ॥१॥ तिनहु दिनें
अंकुर पल्लव जे द्रुम पैलें लागे ॥ मानौ रति पति रिझ जाचकन बरन बरन
दिये बागे ॥२॥ नए पात नई लता पोहुप नए नए रस पागे ॥ नवल केलि
विलसति मोहन सँग 'सूर' रंग नए अनुरागे ॥३॥

७२ (११) राग बसंत (११) बिंदावन खेलति हरि जुबति जूथ संग लियै
हो हो हो हो होरी सुहाई ॥ बुंदुभी, मृदंग, चंग, आवज, बीना, उपंग, ताल,
झांझ, मदन भेरि, मुरली, मुखचंग, ढोल महूबरि गोमुख, सहनाई ॥१॥
म्रगमद चोवा गुलाल केसू केसर रसाल, छिरकति किलकारि देति, गावति
गारी सुहाई ॥ निरखति सोभा अपार भूले सुधि बुधि सँभार सिव विरंचि
सनकादिक बरखति गुन 'कृष्ण दास' बसंत कतु सुहाई ॥२॥

७३ (११) राग बसंत (११) बिंदा बिपिन नवल बसंत खेलति तरुन नवल
बलबीर ॥ ब्रज बधू संग मुदित नाचति तरनि तनया तीर ॥१॥ अरुन तरु
मुकलित मनोहर विविध द्रुम गंभीर ॥ मधुप बिहंग करत कुलाहल, मलय
बहै समीर ॥२॥ अगर कुँमकुम बहुत सौरभ, लसत भुषन चीर ॥ 'कृष्ण
दास' बिलास सुखनिधि गिरिधरन गुन गंभीर ॥३॥

७४ (११) राग बसंत (११) खेलति बसंत आए मोहन अपने रंग ॥ करतल
ताल कुनित बल अबलि जुबति मंडलि संग ॥१॥ मुरज, मंजरी, चंग, महूबरि,
बैन, विषान, म्रदंग ॥ झालरी, जंन, उपंग, यंत्र, धुनि उपजत तान तरंग
॥२॥ उडति अबीर गुलाल कुँमकुमा केसरि छिरके अंग ॥ गलित कुसुम

सिर पांगु लट पटी नाँचति ललित त्रिभंग ॥३॥ कोउ किन्नरि सरस गति मिलवत कोउचंग ॥ 'जन त्रिलोक' प्रभु बिपिन बिहारी चितवत उदित अनंग ॥४॥

७५ (११) राग बसंत (११) खेलति जुगल किसोर किसोरी ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा अबीर गुलाल लिये भरि झोरी ॥१॥ ताल म्रदंग झांझि ढफ बाजति मुरलीकी थोरी ॥ राग बसंत दोहुं मिलि गावत यह सांवल यह गौरी ॥ रिझवत मोहन रँग परसपर सब निरखति मुख मोरी ॥ दास 'गोविंद' कलिंद सुता तट बिहरति अद्भुत जोरी ॥३॥

७६ (११) राग बसंत (११) हो हो हरि खेलति बसंत ॥ मुकिलित बन कोकिल कल कुजति प्रमुदित मन राधिका कैत ॥१॥ विविधि सुगंध छींट नीकी सोभित सुरति केलि लीला लसंत 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधरि नागर ब्रज भामिनि हिलमिल हैंसंत ॥२॥

७७ (११) राग बसंत (११) सरस बसंत सखा मिल खेले अद्भुत गति नंद नंदनकी ॥ केसरि म्रगमद और अरगजा बनी कीच सुभ वंदनकी ॥१॥ निरतति मुदित मंडलि कै मधि कोटि मेंन दुःख खंडनकी ॥ 'सूर' स्याम छबि कहाँलों बरनौ नंद लीला जग वंदनकी ॥२॥

७८ (११) राग बसंत (११) घन बन द्रुम फूले सुमुख निहारे ॥ अंकुर मधि मदमत्त झुमति सखी मिथुन मधुप कुल डारहि डारे ॥१॥ कुहुकुहु पिक बोले मदन सिंधु कलोलै बऊ बिहँग गावति अति सारे ॥ जुवती जूथ प्रति बिंबति पिय उर मनिगन खचित बिमल बर हारे ॥२॥ गिरिधरि नवरँग सुनि सखी तुव सँग चाहति बसंत विहारे ॥ 'कृष्णदास' प्रभु माधव मन हरि जीति लैहुं रति मंत्र विचारे ॥३॥

७९ (११) राग बसंत (११) आज गिरिराज सब साजि साजें ॥ नवल नव रूप धरि दरस काजें ॥१॥ नवल नंदलाल सकल ब्रज बाल लीनै सँग खेलि रस फागु सुख सरस लीनौ ॥ नवल हरिदास छबि निरखि अति हरखि मन करखि 'कल्याण' रस रँग भीनौ ॥२॥

८० (१०१) राग बसंत (११३) इतहि कुँवर कान्ह कमल नैन, उतहि जुवती
जहँ सकल ब्रजबासी ॥ खेलति वर बसंत बांनिक सौं, बरनों कहा छबि
प्रगट भई मनों काम कलासी ॥१॥ भरि भरि गोद अबीर उडावति निविड
तिमिर में यों राजति ठौर ठौर ससी प्रभा कलासी ॥ 'कल्याण' के प्रभु
गिरिधरन रसिक वर तरु तमाल सँग लपटानि हैं कनक लतासी ॥२॥

८१ (१०१) राग बसंत (११३) उमैंगी वृंदावन देखों नवल-वधु आवै ॥ आज
सखी ब्रजराज की बसंत लै बधावै ॥१॥ चारु चंदन चरचित अरचित तिलक
दे सिर नावै ॥ देखति सुख लागति नीकों बूंद बूंद गावै ॥२॥ कुंज भवन
ठाढे हरि सुनि सुनि सचु पावै ॥ 'छीत स्वामि' गिरिधरन श्रीविठ्ठल ब्रजजन
मन भावै ॥३॥

८२ (१०१) राग बसंत (११३) नवल बसंत उनए मेघ मोरकि कुहकनी ॥ पिक
बानी सरस बनी कुहु कुहु कुहोकनी ॥१॥ दंपति मधुपन की पाँति अंकुर
महकनी ॥ 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर मदन जिति कोकिला टहुकनी ॥२॥

८३ (१०१) राग बसंत (११३) बनि बनि खेलनि चली कमल कली विकास
लस ब्रजनारी ॥ अपने अपने गेह तैं निकसी एक ठौर भई सकल फूलि
मनों वारी फूलवारी ॥१॥ तरु तमाल लाल ढिग ठाढ़े राजत चहुं दिस तैं
कनक बेलि गोपी भरति भाजति मनों पवन डुलाए आगे पाछें होत जोबन
बारि ॥ 'सूरदास' मदनमोहन अँग संग बसंत सोभित अनंग अद्भुत बारि
सँवारि ॥२॥

८४ (१०१) राग बसंत (११३) वृंदावन बिहरति ब्रज जुवती जुथ संग फागु
ब्रजपति ब्रजराज कुँवर परम मुदित ऋतु बसंत ॥ चोवा मृगमद अबीर,
छिरकति भरि कुसुम नीर, उडवति बंदन गुलाल निरखि निरखि मुख हसंत
॥१॥ फूलै बन उपवन लखि वृक्ष बेलि पुहुष पुंज गावति पिक, मोर, कीर
उपजति अति सुख लसंत ॥ करति केलि ऋतु बिलास "छीत स्वामी"
गिरिवरधरि श्रीविठ्ठलेस पद प्रताप सुमरति दुःख नसंत ॥२॥

८५ (१०१) राग बसंत (११३) देखीं नवल बनें नवरंग ॥ नवल गिरिधरलाल

सुंदर नवल भामिनि संग ॥१॥ नवल बसंत नवल वृंदावन नवल है प्रथम प्रसंग ॥ नवल विटप तमाल कै बीच नवल सुरत तरंग ॥२॥ नवल केसु फूलै प्रफुलित नवल स्यामा अंग ॥ नवल ताल परखावज बांसुरी नवल बाजति चंग ॥३॥ नवल मुक्ताहार उर पै निरखि लजति अनंग ॥ 'सूर' नवल गुपाल हि निरखति भई मनसा पंग ॥४॥

८६ (१५) राग बसंत (१५) क्रिडति वृंदावन चंद ब्रज जुवतिन संगे ॥ भाव पूरि भरित नैन सुचित भुव भंगे ॥१॥ इक रूप सुधा सिंधु नैन खची पीवे ॥ इक अंग रस भरि भुजा लाई रही ग्रीवे ॥२॥ इक लेति तैंबोल अधर छुवावैं ॥ इक अँक भरति इक आप अँक आवैं ॥३॥ इक बेन सुर समान उघटि तान गावैं ॥ इक कुचन मँडलमें चरन कमल जावैं ॥४॥ चुंबति इक वदनकमल चिबुक गहे बाला ॥ इक उरज कुँमकुमतैं चरचत बन माला ॥५॥ इक नीवी मोचन भए सचिकित भए नैना ॥ इक नैन देति पैलैं इक कहति बेना ॥६॥ इक चलित पवन ललित अँचरन सह्यारे इक ॥ सिथल बसन केस लाज तजि निहारै ॥७॥ स्याम दुम रसाल बाला कोकिल श्रम कुंजे ॥ 'रसिक' मनोरथ राधे राधे सम पूजे ॥८॥

८७ (१५) राग बसंत (१५) मोह्यौ मन आजु सरखी मोहन बलवीर ॥ मधुरमुरली सुर गावति सकल जमुना तीर ॥१॥ कनक कपिस अति सौभित कटि तट वर चीर ॥ मानिकि हूति ओढनी साँवल सरीर ॥२॥ सखि सिखंड सिर सिंधु मुदित भेष अभीर ॥ मुकलित नव वृंदावन कूजति पिक कीर ॥३॥ 'कृष्णदास' प्रभु कै हित त्रिगुन बहै समीर ॥ गिरिवरधर जुवतीन सँग बिहरति रति रनधीर ॥४॥

८८ (१५) राग बसंत (१५) अद्भुत सोभा वृंदावनकी देखो नंद कुमार ॥ कंत वसंत आवत जानि बन बेलीन कीये हैं सिंगार ॥१॥ पल्लव बरन बरन तन पहरे बरन बरन फल फूल ॥ ऐतो अधिक सुहाए लागति मन अभरन समतूल ॥२॥ बालक बिहँग अनंग रंग भरि बाजति मनौ बधाई ॥ मंगल गीत गाइवेकी जानो कोकिल बधु बुलाई ॥३॥ बहति मलय मरुत परिचारक सबकै मन संतोषे ॥ द्विज भोजन सों होति अलीनकै मधु मकरंद

परोसे ॥४॥ सुनि सखी बचन 'गदाधर' प्रभुके चलौ पीतमपै जइए ॥ नव
निकुंज महल मंडप में हिलिमिलि पंचम गैए ॥५॥

८९ (११) राग बसंत (११) खेलति बसंत श्रीवृंदावन में मोहन के सँग प्यारी ॥
गौर स्याम सोभा सुख सागर प्रीति बढी अति भारी ॥१॥ चोवा चंदन
बूका वंदन अबीर गुलाल उडावति न्यारी ॥ कंचन कलस लियें जुबती,
कर मारति भरि पिचकारी ॥२॥ ताल मृदंग झांझ ढफ बाजति बीना धुनि
रस सारी ॥ खेलति फागु भाग भरि गोपी रसिकराइ गिरिधारी ॥३॥ स्याम
सुभग तन नील सरोवर कमल फूली सब ब्रजकी नारी ॥ 'कृष्णदास' प्रभु
या छबि उपर त्रिभुवन कौं सुख बलिहारी ॥४॥

९० (११) राग बसंत (११) गुरुजनमें ठाडै दौऊ प्रीतम सेनन खेलति होरी ॥
नैनन वेनन कछौ जू परसपर परम रसिकनी जोरी ॥१॥ पिचकाई दृग छुटति
कटाच्छन ढेरें अरुन रँग रोरी ॥ छिरकति रस सौं छेल छबीलौ कुंवरि
छबीली गोरी ॥२॥ लसति दसन तँबोल रस भीनै हँसि निरखति पिय ओरी ॥
मनौ सुरंग गुलाल उडावति सुंदर नवल किसोरी ॥३॥ छुटी अलक वदन
छबि लागति बरनि सके कवि कोरी ॥ मनौ कनक कुपी चोवा की, कुंवरि
सीस पै ढोरी ॥४॥ कठिन उरोज गाढी जू कैचुकी अरु अँचल ओट अगोरी ॥
सँकैत कुँजन जानि रसिक पिय नैन निमेष न मोरी ॥५॥ ललितादिक सखी
पिय प्यारी अरुगिरिधारीकी चोरी ॥ 'गोकुल बिहारी' कौ मुख निरखति
प्रेम समुद्र झकौरी ॥६॥

९१ (११) राग बसंत (११) चलि देखनि जैए नंदलाल ॥ध्रु०॥ बनि ठनि
आई सब ब्रजकी बाल ॥ आज ऋतु बसंत गावहु रसाल ॥१॥ चली राधे
कुँवरि सहचरिन संग ॥ लीए ढफ आवज किन्नरी मृदंग ॥ बिच महुवरि
मधुर बाजै उपंग ॥ ले मिली स्यामा जू कौं राग रँग ॥२॥ रँग रंगी भूमि
भवन पच रँग अबीर ॥ आए करति कुलाहल जमुना तीर ॥ ठाडै मधूसूदन
रसन गोपी नीर ॥ नव केसरि के रँग रंगे है चीर ॥३॥ जिह कुंज मधुप
गुनी बास ॥ बोलै अंब डार कोकिल प्रकास ॥ जहँ स्याम सुंदर करैं बिलास ॥
श्रीजगन्नाथ भजि 'माघोदास' ॥४॥

९२ ॥ १ ॥ राग बसंत ॥ १ ॥ फूल्यों बन ऋतु राज आजु चलि देखिए ब्रजराज ॥ १ ॥ निरखति सोभा कही न आवै मनोँ उनयो अनुराग ॥ उत राधिका सखी सब सँग ले खेलनि निकसी फाग ॥ १ ॥ बहु सुगंध बहु अबीर कुँमकुमा लिए है सखन समाज ॥ झांझ मृदंग झालरि ढफ बीना किन्नरि महुवरि साज ॥ २ ॥ जुरै टोल जहँ दौऊ जाय केँ भयो परम हुलास ॥ खेलति प्यारी परम रस उपजति बहु विधि करति बिलास ॥ ३ ॥ सिव विरंचि नारद सब गावैं लीला अमृत सार ॥ श्रीविठ्ठलनाथ प्रताप सिंधु को किन हू न पायौ पार ॥ ४ ॥

९३ ॥ १ ॥ राग बसंत ॥ १ ॥ फूलि झूमि आई बसंत ऋतु ॥ जमुना तट नव कान्हर बिहरति नंद कुमार घोख जुवतिन बितु ॥ १ ॥ गिरिधरि नागर तोहि बुलावति वऊ बिधान सखी कहा कहूँ हितु ॥ 'कृष्णदास' प्रभु कौतिक सागर तुम उपरि चलि धरैं चपल चितु ॥ २ ॥

९४ ॥ १ ॥ राग बसंत ॥ १ ॥ भाँमिनी चंपेकी कली ॥ वदन पराग मधुर रस लंपट नव रँग लाल अली ॥ १ ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा करि जू सिंगार चली ॥ खेलति सरस बसंत परसपर रविकी कांति मली ॥ २ ॥ ताल मृदंग झांझ ढफ बीना बीच बीच मुरली ॥ 'कृष्णदास' प्रभु नव रँग गिरिधर हिलि मिलि रँग रली ॥ ३ ॥

९५ ॥ १ ॥ राग बसंत ॥ १ ॥ हो हो हरि खेलत बसंत मुकलित बन कोकिल कल कूजत प्रमुदित मन राधिका कंत ॥ १ ॥ विविधि सुगंध छींटनी सोहंत ॥ सुरति केलि लीलाधर लसंत ॥ 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर ब्रज भामिनी हिलीमिली हसंत ॥ २ ॥

९६ ॥ १ ॥ राग बसंत ॥ १ ॥ फिर बसंत ऋतु आई सजनी वृंदावन सुखदाई ॥ चली जहँ तहँ बंसीवट श्री नंदकुमार कन्हवाई ॥ १ ॥ कोकिल कीर मराल मंडली रंग भोमि मन भाई ॥ ठोर ठोर बेली द्रुम फूले अबीर गुलाल सोंधाई ॥ २ ॥ कहा बरनों कुंजन की सोभा कान्ह कुंवर मिलि खेलें ॥ करत बिहार चले जमुना तट अंस अंस भुज मेलें ॥ ३ ॥ नीलांबर पीतांबर सोहे चंदन

बंदन अति घोरी ॥ कही न जात दुहुन की सोभा स्यामा स्याम की जोरी ॥४॥ मंद सुगंध चलयों मलया निल सीत पवन सुख रासी ॥ 'मान दास' बलि यह गिरिधर प्रभु ब्रिंदा बीपिन बिलासी ॥५॥

९७ (११) राग बसंत (११) कोकिल बोली बन-बन फूले, मधुप गुंजारन लागे ॥ सुनि भौ भोर, रोर बन्दनिको, मदन-महीपति जागे ॥१॥ ते दूने अंकुर द्रुम-पल्लव, जे पहिले दव दागे ॥ मानहु रतिपति रीझि जाचकनि, बरन-बरन दिय बागे ॥२॥ नवल प्रीति, नव लता, पुहुप नव, नवल नयन रस-पागे ॥ नवल नेह, नव नागरि हरषित, सूर, सुरंग अनुरागे ॥३॥

९८ (११) राग बसंत (११) खेलत बसंत ब्रजराज आज प्यारी राधाजु के संग ॥ उत जुवती इत ग्वालबाल संग करत रति केल भुव अभंग ॥१॥ गावत चाचर बाजत डफ ढोलक बीना ताल उपंग ॥ झांझ मुरज भेरी सहनाई महुवर मुरली मृदंग ॥२॥ गुलाल अबीर ले भरि-भरि झोरी घोरी केसर रंग ॥ हो हो हो हो बोले डोलत सोंधे भीने अंग ॥३॥ छिरकत फिरत सबे मिल मच्यो अरगजा पंक ॥ उत नवलासीन मारी गारी होरी को देत नीसंक ॥४॥ धाई लई भुज भरी सांवरो मानो चंदन लपटे भुजंग ॥ पीय सारंग रस सलिल मिल गई बाढी प्रेम तरंग ॥५॥ खेलत बाम बडभागिन पियसंग अति अनुराग उमंग ॥ विष्णुदास श्री गुपालजु को कौतुक निरखी लजत कोटी अनंग ॥६॥

९९ (११) राग बसंत (११) खेलनि आँई हम मोहन तुम सँग ॥ बेगि मैंगाओ जु अबीर अरगजा और केसरि कौ रँग ॥१॥ धाई गहि बैयाँ गिरिधर की चोवा चंदन लपटावति अंग ॥ 'हरि वल्लभ' प्रभु दिजै फगुवा जानति तुम्हारे ढंग ॥२॥

१०० (११) राग बसंत (११) खेलति नंद महारि को ढोटा ठाड़ी सिंह दुवारि होरी ॥ बालक सँग बुलाई घोष के कीन्हें बिबिधि सिंगारि होरी ॥१॥ सूथन लाल बागौ सेत पगिया केसर रँग बोर होरी ॥ फैंटनि पटका तार जरकसी, सीस चंद्रिका-मोर होरी ॥२॥ केसर रंग निचोई भरे घट मृगमद

अतर फुलेल ॥ करन कनक-पिचकाई छिरकति कीच मचीं सब गैल होरी ॥३॥ दुंदुभि ढोल भेरि सहनाई बाजति मधुर मृदंग होरी ॥ झाँझ ताल महुवरि किन्नरी ढफ सुर मधुरे मुख चैंग होरी ॥४॥ धुनि सुनि कैं घर-घर तैं निकसी ब्रजनारी सिंगार बनाई होरी ॥ तिन मधि कुँवरि राधिका राजति पिय-चित लेति चुराई होरी ॥५॥ प्रमुदित मन खेलन कौ आवति गावति सरस धमार होरी ॥ सैननि सैन मिलाई लाल सों देति भाँवती गारी होरी ॥६॥ छूटन अब न पाओगे मोहन बलदाऊ लेऊ बुलाय होरी ॥ फगुवा के मिस धाई गहे हरि मुरली लई छिनाई होरी ॥७॥ चंद्रावलि चोवा चंदन लै छिरकति मदन गुपाल होरी ॥ करत मनोरथ मन के भाए बिबिधि भाँति के ख्याल होरी ॥८॥ तब हलधर सखन लै धाई घेरीं सब ब्रजबाल होरीं ॥ केसर कलस नवाई सीस तैं डारति सुरंग गुलाल होरी ॥९॥ तब नंदरानी बहु बिधि भूषण मेवा दयौ मंगाई होरी ॥ चिरजीयौ ब्रजराज लाड़िले कहैं असीस सुनाई होरी ॥१०॥ दोउ हाथ मुख परसि स्याम कौ, पुनि-पुनि लेति बलाई होरी ॥ रस बस मगन भई ब्रज सुंदरि, चली संकेत बताई होरी ॥११॥ या बिधि राज करों दंपति नित-प्रति रास बिलास होरी ॥ श्री विट्ठल पदरज प्रताप तैं गावत यह जसु 'दास' होरी ॥१२॥

१०१ ॥ राग बसंत ॥ चतुर नारि नागर नायक सों खेलनि आई हो ! होरी ॥ अंग-अंग भूषन अति राजत दियें ललाट बेंदी रोरी ॥१॥ सौंधें भीनी सारी सौहै नील कंचुकी कसी डोरी ॥ उड़त गुलाल अरगजा छिरकत केसर की छूटी कमोरी ॥२॥ ताल-मृदंग उपंग-बांसुरी द्वार निसान घन घोरी ॥ नवल बसंत होत 'परमानंद' नवल-नवल पिया जोरी ॥३॥

१०२ ॥ राग बसंत ॥ जटुपति जल क्रीड़त जुवति-संग, सागर सकुचित तजियत तरंग ॥ षोडस सहस्र सत अष्ट नारि, तिनमें अति सोभित श्री मुरारि ॥ उडुगन समेत ससि सिंधु-बारि, मनु पुनि आयौ चित हित बिचारि ॥ मृगमद, मलयज, केसरि कपूर, कुमकुमा, कलित कृत अगरू चूर ॥ छूटत काटाच्छ सर भ्रुकुटि पूर, मनु धनुष निपुन संग्राम सूर ॥ चंचल मलयानिल चलत सीर, अरू जलद-बृंद छित भित समीर ॥ बर बदन निकट कच

चुवत नीर, मकरंद निमित मधुकर अधीर ॥ तहँ नारदादि मुनि करत गान,
जग पूरत हरि जस सुचि बितान ॥ सुर सुमन सुधन बरषत विमान, जै
जै सूरज प्रभु सुख निधान ॥

१०३ ॥ राग बसंत ॥ दोऊ नवललाल खेलति बसंत ॥ आनंदकंद
गिरिधरनचंद ॥ ध्रुव ॥ नवल कुंज द्रुम नवल मोर ॥ नवल कुसुम सम मधुप
सोर ॥ १ ॥ नव लीलांबर नवल पीतपट नवल अधर मुख बीरी दंत ॥ नवरस
केसरि नवल अरगजा नवल गुलाल अबीर उड़ंत ॥ २ ॥ नवल गुपाल नवल
ब्रज जुवती नवल परस्पर सुख अनन्त ॥ 'चत्रभुजदास' दरस दृगलोभी
नवल रूप गिरिधरनचंद ॥ ३ ॥

१०४ ॥ राग बसंत ॥ विविध बसंत बनाएँ चलौं सब देखन कुँवर
कन्हाई ॥ गिरिघटियां द्रुमलता सुगंध अलि ठाढे सजि सुखदाई ॥ १ ॥ बागों
केसरी चोवा सोहै सुरंग गुलाल उडाई ॥ ब्रजबालक गावति कोलाहल धुनि
'ब्रजाधीस' मनभाई ॥ २ ॥

१०५ ॥ राग बसंत ॥ वृंदावन क्रीडति नंद नंदन संग व्रषभान दुलारी ॥
प्रफुलित कुसुम कुंज द्रुम बेली कोकिल कूजति मधुप गुँजारी ॥ १ ॥ चोवा
चन्दन अगर कुँमकुमा मृगमद केसरि सुगंध संवारी ॥ अति आनंद परसपर
छिरकति हाथन लै कनक पिचकारी ॥ २ ॥ बाजति ताल मृदंग झांझ ढफ
वीन रबाब मुरली धुनि प्यारी ॥ अबीर गुलाल उडावति गावति नाँचति
हंसति दै दै कर तारी ॥ ३ ॥ चिरजीयों सकल सुखदाइक लाल गोवरधनधारी ॥
श्रीबल्लभ पदरज प्रताप तैं 'हरिदास' बलिहारी ॥ ४ ॥

१०६ ॥ राग बसंत ॥ बनि बनि खेलनि चलि कमल कली विकास
लस ब्रजनारी ॥ अपने अपने ग्रेह तैं निकसी एक ठौर भई सकल फूलि
मनों बारी फुलवारी ॥ १ ॥ तरु तमाल लाल ढिंग ठाढे राजत चहुँ दिस तैं
कनक बेलि गोपी भरति भाजति मनों पवन डुलाए आगै पाछें होत जोबन
बारि ॥ 'सूरदास' मदनमोहन अँग संग बसंत सोभित अनंग अद्भुत वारि
सँवारि ॥ २ ॥

१०७ (१०७) राग बसंत (१०७) बन उपवन ऋतुराज देखि मनमोहन खेलति बसंत आई ॥ केसरि सुरंग गुलाल परसपर मुख अंग लपटावति सुखदाई ॥१॥ त्रिविध समीर पराग उडावति कोकिल गावति मृदु सरसाई ॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु बलि मन मोह्यौं बाजति ताल मृदंग सुघराई ॥२॥

१०८ (१०८) राग बसंत (१०८) बन्यौ छबीलौ स्याम सखि चली बंसीबट बसंत सुखदाई ॥ करि सिंगार आई नंदनंदन जल छोरति पिचकाई ॥१॥ कोऊ कुसम माल ले आई सुरंग गुलाल कपोल लगाई ॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु मृदु बीन बजावति गावति कोकिल सुसरसाई ॥२॥

१०९ (१०९) राग बसंत (१०९) रंग रंगीलो नंदकों लाल रंगीली प्यारी ब्रजकी बीथनि में खेलति फागु ॥ रंग रंगीले संग सखागन रंगीली नव बधु तैसोंई जम्प्यौं रंगीलो बसंत रागु ॥१॥ रंग रंगकी ओझट छिरकति हरखि हरखि बरखि अनुराग ॥ 'नंददास' प्रभु कहाँलौ बरनू बेदहु आपुन मुख कहयौ यह माननि बडभाग ॥२॥

११० (११०) राग बसंत (११०) हो हो होरी ! हलधर आवे ॥ ऐसी प्रीति स्यामसुंदर सों हरि-लीला अपने मुख गावै ॥ पियें बारूनी मत्त संकरषन नैन रसमसे कच कछु ढीले ॥ मौंह चढ़ी सिर पाग लटपटी बचन गंभीर अधर-पुट गीले ॥ नील बसन-छबि उगत चरन-गति सुभ्र सरीर रोहिनी नंदन ॥ 'परमानंद' राम जुवती प्रिय कुंडल एक चढ़ाए चंदन ॥

धमार के पद मंगलादर्शन होरी - खयाल के पद

१ (१०७) राग काफी (१०७) पीतांबर काजर कहाँ लग्यो हो ॥ ललना कोन के पोंछे हैं नयन ॥ध्रु०॥ कोन के ग्रेहनेहे रस पागे वे गोरी कछु ओर ॥ देहु बताय कान राखति हों ऐसे भये चितचोर ॥१॥ अधरन अंजन लिलाट महावर राजत पीक कपोल ॥ घूमि रहे रजनी जागेसे दुरतन काम कलोल ॥२॥ नखनिसान राजत छतियन पर निरखो नयन निहार ॥ झूमरहीं अलकें अलबेली पागके पेच संवार ॥३॥ हम डरपें जसुदाजूके त्रासन नागर नंदकिशोर ॥ पायपरें फगुवा प्रभुदेहो मुरली देहु अकोर ॥४॥ धन्य-धन्य

गोकुलकी गोपी जिन हरि लीने हराय ॥ नंददास प्रभु किये कनोडे छांडेनाच
नचाय ॥५॥

२ (१३१) राग काफी (१३२) मेरो नवरंग बिहारी ॥ बलबल जाऊं तिहारी ॥१॥
बाजे बहु भांत बजावें ॥ गाना रसरंग बढ़ावें ॥२॥ गावें गुण गीत रसाला ॥
भावे मोहि नंदको लाला ॥३॥ लिये संग राधा गोरी ॥ बोलें सब हो हो
होरी ॥४॥ सोंधे सों भीनों वागो ॥ सारीरति रेनको जाग्यो ॥५॥ शोभा
कहा बेन बखानें ॥ माधुरी के नयन ही जानें ॥६॥

३ (१३१) राग काफी (१३२) राधावर खेलत होरी ॥ नंद गाम के ग्वाल इते
उत बरसाने की गोरी ॥ डफ करताल बजावत गावत केशर कुंकुम घोरी ॥
परस्पर रंग मेंवोरी ॥१॥ गावत गारी गवार मानों नव नागरी नवजोव न
जोरी ॥ नंदलाल बडो रसिया है हमते करत बराजोरी ॥ फागुन में कोन
की चोरी ॥२॥ दशोदिश में गुलाल घुमड रह्यो काहू लखन पर्योरी ॥
औचक आय धाय चंद्रावलि ललितादिक सब दोरी ॥ गह्यो कुंवर वर जोरी
॥३॥ मोर मुकुट वन माल मुरलिका पीतांबर लियो छोरी ॥ भामिन वेष
बनाय कहतहें नंदराय की छोरी ॥ बनि छबि काम कमोरी ॥४॥ देदे तारी
नचावत ग्वालिन अपनी अपनी ओरी ॥ वादिन की सुध भूले ललारे यमुनातट
चीरहचोरी ॥ आज सखी दावपघोरी ॥५॥ कृष्ण रंगफगुवाजोमा मतों देकर
बहुत निहोरी ॥ हैआधीन वृषभान सुताके विनती करेकर जोरी ॥ देउ अपनो
कर छोरी ॥६॥

४ (१३१) राग काफी (१३२) सांवरे मोहि रंग में बोरी ॥ बैयां पकर मेरी सिर
की गगरीया छीनकें सिरतें ढोरी ॥ रंगमें लालन रसबस कीनो डारी गुलाल
की झोरी ॥ गावन लाग्यो मुखते होरी ॥१॥ आय अचानक मिल्योरी डगरमें
तब निरख्यो नंदकोरी ॥ भर भुजले मोहि पकरकें जीवन ने वरजोरी ॥ माला
मुतियन की तोरी ॥२॥ मर्यादा मेरी कछुना राखी कही एक बात ठगोरी ॥
तब इनकों में आंख दिखाई मत जानो मोहि भोरी ॥ जानू तेरे चितकी चोरी
॥३॥ मेरो जोर प्रभु कछुन चलत है कंचुकी की कसतोरी ॥ सूरदास प्रभु
तिहारे मिलन कूं रसियाने रंग में बोरी ॥ गई में नंदकी पौरी ॥४॥

५ (॥१॥ राग काफी (॥१॥) ब्रज में हरि होरी मचाई ॥ टेक ॥ इतते आई सुघर राधिका उतते कुंवर कन्हवाई ॥ हिलमिल फाग परस्पर खेलें शोभा वरणी न जाई ॥ नंदघर बजत बधाई ॥१॥ बाजत ताल मृदंग बांसुरी बीना डफ सहनाई ॥ उडत अबीर गुलाल कुंकुमा रह्यो सकल ब्रजछाई ॥ मानो मधवा झरलाई ॥२॥ लेलेरंग कनक पिचकारी सन्मुख सबै चलाई ॥ छिरकत रंग अंग सब भीजे झुकझुक चाचर गाई ॥ परस्पर लोग लुगाई ॥३॥ राधा ने सेनदई सखियन कों झुंडझुंड घिरआई ॥ लपट झपट गई स्याम सुंदर सों परवश पकर लेआई ॥ लालजी कों नाच नचाई ॥४॥ छीन लई मुरली पीतांबर सिरते चुनरी उढाई ॥ वेनी भाल नयन विच काजर नकवेसर पहराई ॥ मानो नई नार बनाई ॥५॥ मुसकतहो मुख मोडमोड के कहांगई चतुराई ॥ कहां गये तेरे तात नंदजी कहां जसोदामाई ॥ तुम्हें अब लेय छुड़ाई ॥६॥ फगुवा दिये विनजानन पावो कोटिक करो उपाई ॥ लेहूं काढक सरसब दिन की तुम चितचोर चवाई ॥ बहुत दधि माखन खाई ॥७॥ रास विलास करत वृंदावन जहां तहां यदुराई ॥ राधा स्याम युगल जोरी पर सुरदास बलजाई ॥ प्रीति उररहा समाई ॥८॥

६ (॥१॥ राग काफी (॥१॥) नेह लग्यो मेरो स्याम सुंदरसों ॥ टेक ॥ आयो वसंत सबी बन फूले खेतन फूलीहै सरसों ॥ में पीरी पियाके विरह से निकसत प्राण अधरसों ॥ कहो जाय बंसीधर सों ॥१॥ फागुन में बहोरी खेलत हें अपनेअपने बरसों ॥ पियके वियोग जोगन नै निकरी धूर उडावत करसों ॥ चली मथुरा की डगर सों ॥२॥ ऊधो जाय द्वारका में कहियो इतनी अरज मेरी हरि सों ॥ बिरह व्यथा से जियरा डरतहें जबतें गये हरि घरसों ॥ दरस देखन कोहों तरसों ॥३॥ सूरदास मेरी इतनी अरज है कृपासिंधु गिरिधरसों ॥ गहेरी नदीयां नाव पुरानी अबके ऊबारो सागरसों ॥ अरज मेरी राधाबरसों ॥४॥

७ (॥१॥ राग काफी (॥१॥) माहि सब विधि रंगन रंगी निपट निडर हैं के ॥ तकि मारी पिचकारी मो तन उर में आँन लगी ॥१॥ नयौ फागु खेलि नवीनों नब रँग पीत पगी ॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु सों हिलमिल के सब

निस रेन जगी ॥२॥

मंगला के पद राग - भैरव

१ (॥१॥) राग भैरव (॥१॥) भोर भयें नंदलाल संग लीयें ग्वालवाल फेंटन भरि लियें गुलाल बोलत मुख होरी ॥ केसरि भरि कलस साथ पिचकाई लियें हाथ छिरकतहें सोंधो बहु डारत ब्रजखोरी ॥१॥ युवतिनके यूथ मांह धसि काढत पकरि बांह मनमें कछु सकुच नांहि लीने भरि झोरी ॥ बाजें डफ मृदंगताल कूजत मुरली रसाल झुंडन मिलि गावत विच महुवरि धुनिथोरी ॥२॥ यहविधि हरि करत केलि वरन्यों नहीं जात खेल अनुरागे पागे सब आए नंद पोरी ॥ निरख मुसकानी आरती वारती नंदरानी छवि पर वारि डारों हरिजीवन तृणतोरी ॥३॥

२ (॥१॥) राग भैरव (॥१॥) रात फाग खेलि प्रात आए लाल प्यारे ॥ अंग अंग मरगजे बागे सुंदर रंग सौंधे सुवास मंद मंद आवे अति उनीदे सिथिल - नैन तारे ॥१॥ अलक भ्रकुटि भाल गाल, चिबुक भूषन अति रसाल, रसमसे रंजित गुलाल भौमति रस भारे ॥ डगमगाई चलति पाई मुख जैभाई मुसिकाई मद सुरत चिह्न चरचित तानन सुनि प्यारे सौंचें बोल प्रीतम-प्यारे मन सलोल बालम बदन बोल अपुने बिसतारे ॥ गोकुल प्रभु भले जु भले वेऊ भली, भ्रकुटि जिन भुराए आए हमारे सो यह करन उन सौं जारि बिजारे ॥३॥

३ (॥१॥) राग भैरव (॥१॥) प्रात समै नंदलाल खेलति हो हो होरी ॥ सीस पाग जु कर हि भरे रंग बोरी ॥१॥ सब नारि जुरि कै आई नंद जु की पौरी ॥ हाथन पिचकाई लीये अबीर भरि झोटी ॥२॥ राधा जु खेलति खेलति साँकरी की पौरी ॥ सूरदास मदन मोहन भली बनी जोरी ॥३॥

४ (॥१॥) राग भैरव (॥१॥) पिछवारे तैं छान ऊडावै होरी कौं खिलवारि ॥ सास बुरी मेरी नैनंद हठीली कंथ सुनै देइ गारि ॥१॥ गारी गावें ढफ हि बजावें धुम मचावें द्वारि ॥ 'द्वारिकेस' प्रभु की छबि निरखति बार-बार बलिहारि ॥२॥

५ (१११) राग भैरव (१११) पीतम प्यारी के सँग होरी गरे-लाग पिय खेलें ॥
चोवा चंदन अरु अरगजा अबीर गुलाल उडावें केसरि रँग पिचकारी भरि
भरि पीया पिय पै मेलें ॥१॥ ताल पखावज बीन बाँसुरी ढफ मुख चँग
बजावें तारी दै दै गारी गावै करति परसपर केलें ॥ हाथ जोरी करि नाँचें
मगन मन माँही मोहै ॥ सुर नर 'ब्रजपति' की छवि निरखि अति छबिली
छेलै ॥२॥

६ (१११) राग भैरव (१११) लालन सँग राची हो खेलति फागु प्रवीनी ॥ रँग
भीनी आभूषन दुति तन झलकति सारी झीनीं ॥१॥ बीना मृदंग मधुर धुनि
गावति दृगन नचावत नेह नवीनी ॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु बिबिधि गुलालन घुमडिन
मन की फीनीं ॥२॥

७ (१११) राग भैरव (१११) अपने पिया सँग खेलौं होरी ॥ घर घर तें बानक
बनि आईं, साँवरी, सलौनी, सुँदरि भोरी ॥१॥ बाजत ताल, मृदंग मुरज,
ढफ, बिच मुरली धुनि थोरी ॥ चोवा चंदन औरु अरगजा, अबीर लिए
भरि झोरी ॥२॥ मैं अपुनो मन भायो पायो बंधी प्रेम रस डोरी ॥ 'सूर
स्याम' प्रभु रस भरे खेलति मदन मोहन राधा जु गोरी ॥३॥

८ (१११) राग भैरव (१११) ए सुनि सजनी फागुन में ह्यौं कबहूँ न रहति जानति
जु गोकुल नगर होरी ऐसी ॥ औरन की नारि अपुनी कर मानति ऐसै लंगर
ढीठ गुरुजन लोक लाज जानति कैसी ॥१॥ मुँह आई गारि गावति है देखति
सब काहु लगति अनेसी ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु की रीति अटपटी
कहति न बनि आवें निरखति हीं जैसी ॥२॥

९ (१११) राग भैरव (१११) खेलत नंदनंदन सघन कुंज होरी ॥ध्रु०॥ मोहन
छवि बरनू कहा कोटि काम मोरी ॥ श्री राधाजूकी वदन जोति चंद हु तें
गोरी ॥१॥ उलट पुलट ताल लेत मान तान तोरी ॥ उरप जित गति गावे
वृषभानकी किसोरी ॥२॥ बाजत मृदंग ताल झांझ नादसों री ॥ ता थेई
ता थेई थेई कोकिला गति थोरी ॥३॥ ललितादिक हरखि निरखि संग
लागे दोरी ॥ 'किसोदास' गावे अब नये नेह चाह जोरी ॥४॥

१० (१०१) राग भैरव (१०१) प्रात काल नंदलाल कुंजन मधि डोलै ॥ सांवरे तन अलक मानों अलि बोर कमल नैन देखत दमकि मधुरे बैन हो हो होरी बोलै ॥१॥ बाजत बीना मुदंग अधवट आवज उपंग संख बंसी अमृत कुंडली झांझ झनक डोलै ॥ हैंसि हैंसि डारति बूका बंदन रसिकराई नंद नंदन करति है प्रेम फंदन कंचुकि बंद खोलै ॥२॥ छांड़ि लोक बेद भ्रम करनि बिबिध नेम केंधो मंजन करति सूर सुता रसमसे सुख सों ले 'कहि भगवान हित रामरई प्रभु कौं ऐसौ खेलि अपने ठाकुर और नंद कौ बस करत बिनु मोले ॥३॥

११ (१०१) राग भैरव (१०१) वृंदावन बंसीबट के तट ब्रजभूषण खेलत हे होरी ॥ अगर अबीर गुलाल उडावत नंदलाल वृषभान किशोरी ॥१॥ अपनेअपुने गृहते निकसी आली सास ननद की चोरी ॥ ओर सखी सब छांड़ि स्याम मेरो कर मरोड पहांची गहितोरी ॥ सूरदास प्रभू सब सुखदायक कंचन अरु पारस की जोरी ॥३॥

१२ (१०१) राग भैरव (१०१) होरी के दिनन में तू जो नवेली मति निकसे बाहिर घर तेरी ॥ तू जो नई दुलही नवजोवन रहे घर बेठि मान सिख मेरी ॥१॥ डगर बगर और बाट घाट कान्हकर तनित चरचा तेरी ॥ जादिन तो हिलखे घनआनंद तादिन होय कौन गति तेरी ॥२॥

१३ (१०१) राग बिभास (१०१) होतों होरी नंदलालसों खेलोंगी ॥ भरुं भराऊं गति उपजाऊं जग उपहास संकेलोंगी ॥ नाचूं उधरि बजाऊं गाऊं पतिव्रत पायनोपे लोंगी ॥ कृष्णजीवन लछीराम के प्रभुसों रीझि मालगूलरी मे लोंगी ॥२॥

१४ (१०१) राग बिभास (१०१) चोंकिपरी गोरीहोरी में स्याम अचानक बांह गहीरी ॥ समर छूडाय रिसाइ चढीभु अनखअधर कछु वात कही ॥१॥ चित्तेचित्ते हैंसिकेंवसिकें कसिकें भुजमें रस रास लही ॥ हित हरिवंस बाल जाल छबि ख्याल रसालहि देखि रही ॥२॥

१५ (१०१) राग बिभास (१०१) आज तो छबीलो लाल प्रातही खेलन चलयो

सखा संग लाय लीयें प्रेम गारी गायकें ॥ खेलत खेलत ब्रषभान जु की पौरी आये हो हो-होरी बोले प्यारो मनभायकें ॥१॥ छबीली रच्यो उपाय स्याम कों लीने बुलाय मैया की दृष्टि बचाय लीने उरलायकें ॥ अरसपरस दोऊ महारस भीने सहचरी सुख पावें रसिक मुख गाइकें ॥२॥

१६ (१६) राग बिभास (१६) अनोखे होरी खेलन लागे ॥ मिसही मिस रंग भरत सांवरो कछु सोवत कछु जागे ॥१॥ लाल गुलाल लियें कर ललना नंदनंदन अनुरोगे ॥ कृष्णजीवन लछीराम के प्रभु बनेहें मरगजे वागे ॥२॥

१७ (१७) राग बिभास (१७) होरी खेलति हैं ब्रज नंद-लड़ैतौ-लाल ॥ चोवा चंदन औरु अरगजा कंठ सोहै मौंतिन की माल ॥१॥ कोऊ गुलाल केसर भरि लिए कोऊ कंचन-थाल ॥ एकु नाँचत एकु मृदंग बजावति, गावति गीत-रसाल ॥२॥ छिपत फिरत हैं कुंजन महियाँ, हो हो करत बिहाल ॥ 'चतुरभुज' प्रभु पिय गरें लगाई लई, रीझि दई उर माल ॥३॥

१८ (१८) राग बिभास (१८) होरी के मदमाते आए ॥ नवल लाल मेरे मन भाए ॥१॥ नैन तंबोल कहाँ रंग राचे ॥ खेलि बिनोद लाल के साँचे ॥२॥ होरी के मिसि सब बनी आई ॥ चोवा चोली कहाँ रेंगाई ॥३॥ जावक रंग रगमगी पगीयाँ ॥ धूमति नैन रैन जब जगियाँ ॥४॥ नेह नयो कित लाल छिपावति ॥ चिह्न सकल अँग प्रगट जनावति ॥५॥ गोपी जन मन मोद बढ़ावति ॥ 'नंददास' प्रभु काहे लजावति ॥६॥

१९ (१९) राग बिभास (१९) मोहन प्रात हि खेलति होरी ॥ चोवा, चंदन, कुंमकुमा, केसरि, अबीर, लिएं भरि झोरी ॥१॥ कंचन की पिचकाई भरि भरि छिरकीं सकल किसोरी ॥ मुख माँडति गारी दै भाँडति, गहि राखति बर जोरी ॥२॥ बाजत ताल मृदंग अधौटी बिच मुरली धुनि थोरी ॥ 'छीत स्वामि' गिरिधर सँग क्रिड़ति यह बिधि सब मिलि गोरी ॥३॥

२० (२०) राग बिभास (२०) स्याम संग खेले री होरी ॥ पिचकाई दृग सैन इत उत रंग पीतम कों चित चोरी ॥१॥ उड़ति गुलाल अनुरागनि बादर छयो री ॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु गावति बहु धुनि कमल मुखी ब्रज खोरी ॥२॥

२१ (१५१) राग बिभास (१५१) मदन मोहन कुंवर वृषभानु नैदिनी सुभग नव कुंज में खेलति होरी ॥ गोप कुमार सँग एकु दाई बने उत सकल ब्रज-बधू एकु जोरी ॥१॥ बाजति बीना, मृदंग झांझ, ढफ, किन्नरी, चैत, झूमकि गान करति गोरी ॥ उड़ति बदन नव अबीर बहु अरगजा अरु बिबिधि रँगन गुलाल झोरी ॥२॥ तब ही सब सखी जन मतौ करि धाँई गिरिधर गही नील पीत पट सौं गाँठि जोरी ॥ एक सखी स्याम कैं सीस बैनी गुही, एक दृग आँजि मुख माँड़ि रोरी ॥३॥ तब ही ललिता दौरी झटकि कैं मुरली गहि सब हीं नंदलाल सौं करि ठठोरी ॥ एक नव कुँमकुमा कनक गागरि भरि आँनि कै दौऊन के सीस दोरी ॥४॥ तब सबन अपुनो फगुवा माँगि लीनों, दई मुरली अरु गाँठि छोरी ॥ 'दास गुपाल' बलि जाई यह छबि निरखि रहो हरि चरन मन वृद्ध मोरी ॥५॥

धमार के पद-मंगला

१ (१५१) राग रामकली (१५१) हो हो होरी खेले नंदकी कर अंबुजभरे मकरंदको ॥ तनसुख पाग बनी कसुंभी सिरधरे मोर के चंदको ॥१॥ एक ओर प्रगट्यो तरुनीमधि अंकुरपरमानंदको ॥ एक ओर ब्रजजन चकोरमधि उदय भयो मानों चंदको ॥२॥ लेले सुरंग अबीर दुहुंकर खेलभयो मनफंदको ॥ तिहि ओसर प्यारी मुख निरखत मान गयो अरविंदको ॥३॥ चोवाचंदन ओर अरगजा मृगमद कुंकुम गंधको ॥ भांति-भांति बाजे बाजत सुनि छूटि गयो मन बंधको ॥४॥ यह सुख निरखि बरखा वरखावत सुमनन मिलि सुर वृंदको ॥ तिहि ओसर रघुवीर निरखि मुख हुलस्यो मन आनंदको ॥५॥

२ (१५१) राग रामकली (१५१) चलो सखी मिलि देखन जैयें नंदकेलाल मचाई होरी ॥ अबीर गुलाल कुंकुमा केसरि पिचकारिन भरि भरि ले दौरी ॥१॥ एक जु पियकी चोरा चोरी हमें लखे नहीं कोरी ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभुकों भरि हें राधा गोरी ॥२॥

३ (१५१) राग रामकली (१५१) हो हो होरी खेलोंगी ॥ अबीर गुलाल कुंकुमा

केसरि पिय पर मे लोंगी ॥१॥ लोकलाज कुल को निसखारी पायन पेलोंगी ॥
कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभुसों भली बुरी सिर झेलोंगी ॥२॥

४ (॥३॥ राग रामकली (॥३॥) कान्ह सों कौन कहे कहा आली री भोर हि
नाम लै गावत डोलै ॥ काम की डौंड़ी बसंत लीए दूजे होरी निसंक व्है
लाज कों खोलै ॥१॥ कैसें रहे ब्रज में कन्हैया जोई मुख सोई बक करि
बोलै ॥ भरि पिचकारी मुख पै मारी 'सूरदास' के प्रभु कैसे समझाऊ मन
आई तोलै ॥२॥

५ (॥३॥ राग रामकली (॥३॥) रँग हो रँग हो पिया पै डारोंगी ॥ स्याम सुंदर
अविलोकि वदन छबि, तन मन धन सब बारोंगी ॥१॥ अतर गुलाब अरगजा
सब मिलि भरि भरि डारोंगी ॥ 'सूर' के प्रभु साँवरे कारन हैंसि हैंसि धुंघट
टारोंगी ॥२॥

६ (॥३॥ राग रामकली (॥३॥) हों हरि सँग होरी खेलोंगी ॥ चोवा चंदन
अबीर अरगजा पिचकाईन रंग मेलोंगी ॥१॥ लोक लाज कुल कानि सबै
तजि पतिवृत पाँइन पेलोंगी ॥ 'सूरदास' स्वामी की बाँह द्वै पकरि कै झेलोंगी
॥२॥

७ (॥३॥ राग रामकली (॥३॥) स्याम सँग खेलेरी होरी ॥ पिचकाई दृग सैन
इत उत रँग प्रीतम को चित चोरी ॥१॥ उड़ति गुलाल अनुरागनि बादर
छयो री ॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु गावति बहु धुनि कमल मुखी ब्रज खोरी ॥२॥

८ (॥३॥ राग ललित (॥३॥) अहो हरि होरी में जबजो गये तुम भाजि ॥
गारी देहूँभरुं भराऊं मुख मांडोंगी आज ॥१॥ हो अपनों मनभायो करिहों
सुनि ब्रज राजकुमार ॥ जगन्नाथ कविराय के प्रभुमाई सकल घोख सिरताज
॥२॥

९ (॥३॥ राग मालकौस (॥३॥) खेलन आई धमार नवल तरुनी
गोपकुमारी ॥ सहचरी में चोप चटकीली देत रसीली गारी ॥१॥ कोऊ
बनी नंद कोऊ बलदाऊ बहुत ढीठ बरसाने वारी ॥ जसुमति सों गठजोरी

कीन्ही कृष्णदास हितकारी ॥२॥

१० ॥ राग देवगंधार ॥ आज माई मोहन खेलत होरी ॥ नौतनवेष काछि ठाडे भये संग राधिका गोरी ॥१॥ अपने भामते आई देखन कों जुरिजुरि नवल किसोरी ॥ चोवाचंदन ओर कुंकुमा मुखमांडत ले रोरी ॥२॥ छूटी लाज तब तनन संभारत अति विचित्र बनी जोरी ॥ मच्यो खेल रंग भयो भारी या उपमा कों कोरी ॥३॥ देत-असीस सकल ब्रज वनिता अंगअंग सब भोरी ॥ परमानंद प्रभु प्यारी की छबि पर गिरिधर देत अकोरी ॥४॥

११ ॥ राग देवगंधार ॥ मदनगुपाल लालसों रसभरि खेलत गोकुल नारी ॥ ऊंचेसुर गावत मन भावत लोकवेद डरडारी ॥१॥ चोवा मेद जवादसाख गोरा मृगमद घनसारी ॥ मथिमांडत मुख मुरलीधरको हंसतदेत करतारी ॥२॥ कनिक कचोल कुसम वारि घसि घोरि कुंकुमा रंग ॥ रतनजटित पिचकाई भरिभरि छिरकत प्रीतम अंग ॥३॥ अति सौरभ बूकावंदन रज डारत सुभग अबीर ॥ सुरंग गुलाल उडावत लालन मुख पोंछति अंचलचीर ॥४॥ मोहनलाल नवल नागरके मंडित करत कपोल ॥ उरश्रीफल कुंकुमसों चरचित क्रीडत मदन कलोल ॥५॥ तूनतोरत सहचरी ब्रजपति कीं अद्भुत सोभा देखि ॥ कोटिमेन रतिमति भुलत हैं हाव भाव उर लेखि ॥६॥

१२ ॥ राग देवगंधार ॥ रविजातट कुंजन में गिरिधर खेलत फाग सुरंग ॥ गोपबाल गोकुलके सबही लये जोरि सबसंग ॥१॥ श्रीवृषभान सुतासों प्रमुदित चले करनहितजंग ॥ सोभा अद्भुत बनी सबन की निरखि लज्यो अनंग ॥२॥ नवसतसाज सिंगार राधिका सनमुख आई दौरि ॥ प्रेम सहित नेनन अवलोकत साथ सखी सब जोरि ॥३॥ पिचकाई भरि लई कनिक की केसरि रससों घोरी ॥ छिरकत चोंप परस्पर बाढी हंसत मृदुल मुख मोरि ॥४॥ चोवामेद फुलेल अरगजा लीयो सुभग बनाय ॥ भरिभरि वेला सब छिरकतहें उर आनंद न समाय ॥५॥ सरस सुगंध उड्यो अतिबूका दिनमनि लख्यो नजाय ॥ चहूं ओर रस सागर उमड्यो श्रुतिपथ गयो बहाय ॥६॥ बचन बिवेक ना बोलत तिहिछिन सुधि भूली सबचेत ॥ सोर करत सबही धावतहें हो हो शब्द समेत ॥७॥ राधा लाल गुलाल मुठीभरि डारत

अति सुखहेत ॥ बाहिर उर अनुराग दुहुन को प्रगट दिखाई देत ॥८॥ पटह झांझ झालरि डफ आवज वीना सुरकल मंद ॥ ताल पखावज मुरली महुवरि बाजत मुरज सुछंद ॥९॥ गारी ब्रज ललना मिली गावत मनमें अति आनंद ॥ फगुवा मनभायो सब मांगत पकरे आनंद कंद ॥१०॥ उलटि सखन तन चितये मोहन बाढ्यो रंग अपार ॥ भयो मूढमन शेष कहन को राधाकृष्ण विहार ॥११॥ सिव समाधि भूल्यो विध मनमें पछि तायो बहुवार ॥ जो माग्यो फगुवा सो हसिकें दीनो नंदकुमार ॥१२॥ कुसमित विपिन सुबल बहु विधिसों दरस करन कोआयो ॥ ऋतु वसंत केकी शुक पिक मिलि मधुपन बोल सुनायो ॥१३॥ थके देव किन्नर सुर वनिता अति मनमें सुख पायो ॥ गोकुलचंद सरूप सुखदको गुन संभ्रमसो गायो ॥१४॥

१३ (१३) राग देवगंधार (१३) होरी खेलि आए कहाँ सौं तुम रसिक साँवरे रँग भीने ॥ फेंट गुलाल अबीर की झोरी कंचन पिचकाई कर लीने ॥१॥ पलकन पीक अधरन पै अंजन सिथिल गात मरगजा बागे कीने ॥ 'सूरदास' प्रभु काहे कौ छिपाव हि साँची कहि अब हैंसि दीने ॥२॥

१४ (१४) राग देवगंधार (१४) हो हो होरी खेलति गिरिधारी ॥ इत सब बालक उत ब्रज जुबती सँग वृषभानु दुलारी ॥१॥ आईं जुरि सब नंद पौरि पै भीर भई अति भारी ॥ बाजति ताल मृदंग झांझ डफ गावति दै कर तारी ॥२॥ चोवा चंदन औरु अरगजा केसरि रंग संभारी ॥ रतन खचित पिचकाई कर लै छिरकति हैं पिय प्यारी ॥३॥ सुरैंग गुलाल अबीर उड़ावति हो हो सबद उचारी ॥ बरन बरन भये वसन सबन के भीजि रही रँग सारी ॥४॥ सब सखियन मिलि मोहन पकरे कर जु गहे सुकुमारी ॥ नैन आँजि छीनि लई मुरली, देति भाँवती गारी ॥५॥ फगुवा देहु हमारो लालन, मोहन मदन मुरारि ॥ मेवा बसन अभूषन दीने, देति असीस ब्रजनारी ॥६॥ निरखि बिनोद हरखति सुर पति, जिय पुहुप वृष्टि करि भारी ॥ 'श्री विठ्ठल गिरिधरन' लाल की तन मन धन बलिहारी ॥७॥

१५ (१५) राग खट (१५) बरसानें तैं वृषभानु पुरा की होरी खेलनि निकसी हो ॥ बरन बरन बन ठन आभूषन कनक बेल सी बिगसी हों ॥१॥ जोबन

रूप मदन मनमथ कौं उर मोहन मदमाती हो ॥ ऐंडत चले चाल गरबीली
 मंद मंद मुसिकाती हो ॥२॥ झोरी भरि अबीर कुँमकुमा करन कनक पिचकाई
 हो ॥ आवति चंग उपंग बजावति गावति हरि कौं गारी हो ॥३॥ ठाड़े
 जहाँ सरखा संग लीनें चतुर खिलारि कन्हाई हो ॥ सीस नवाइ दूर भई
 ठाड़ी हैंसि हैंसि निकट बुलाई हो ॥४॥ उमड़े हैं गोपी ग्वाल परसपर भारी
 खेलि मचायो हो ॥ उड़ति गुलाल अबीर अरगजा अति ही अंबर छायो
 हो ॥५॥ गोपीन मतो बनाई धाई कैं मनमोहन गहि लीनें हो ॥ आँखि आँजि
 मुख माँडि महावर हो करि तजि दीनें हो ॥६॥ अपुने दाव स्याम हु पाए
 तब गहि लीने राधे हो ॥ जेतेक दाव चाव चित उपजे सकल मनोरथ साधे
 हो ॥७॥ बेनी गुही बनाइ उलटि कैं कछुक संधानी कीनीं हो ॥ दुहुं और
 दिठौना दै कैं तब छाँडि रंग भीनीं हो ॥८॥ तारी दै दै ग्वाल हैंसति है
 गोपिन मन मुसिकानी हो ॥ मन में मुदित भई बाहिर तैं राधा कछु कुमलानी
 हो ॥९॥ नंद नंदन वृषभानु लली की सोभा कहा बखानैं हो ॥ 'ब्यासदास'
 प्रभु रीझि भिंजि सौं वारति तन मन प्रानैं हो ॥१०॥

१६ (॥१॥ राग खट ॥१॥) कनक पुरी होरी रची मोहन ब्रज बाला ॥ मथुरा
 काढ्यों जाए सुंदर राधिका मोहन ब्रज बाला ॥१॥ काहे की तुम ग्वालिनी ॥
 मोहन ॥ का दधि बेचन जाई ॥ सुंदर ॥२॥ गोकुल की हम ग्वालिनी ॥
 मोहन ॥ मथुर दधि बेचन जाई ॥ सुंदर ॥३॥ काहे के तुम दानैया ॥ मोहन ॥
 काहे कों जु मुरार ॥ सुंदर ॥४॥ गोकुल के हम दानैया ॥ मोहन ॥ श्री
 मथुराजी को मुरार ॥ सुंदर ॥५॥ लौंग सुपारी दानैया ॥ मोहन ॥ दधि
 कों दानी होय ॥ सुंदर ॥६॥ जाई पुकरो कंस पे ॥ मोहन ॥ पकर मंगाउ
 तोय सुंदर ॥७॥ कंस कों मार न सके ॥ मोहन ॥ करो मथुरा कों राज
 ॥८॥ सुंदर ॥ नैन हमारे झूंड में ॥ मोहन ॥ चोखी चोर मजीठ ॥ सुंदर
 ॥९॥ श्रीविठ्ठल पद पदम कैं ॥ मोहन ॥ पावन रैनु परताप ॥ सुंदर ॥१०॥
 'छीतस्वामि' गिरिधर मिलै ॥ मोहन मेंट्यों तन को ताप ॥ सुंदर ॥११॥

१७ (॥१॥ राग खट ॥१॥) हरि सँग होरी खेलनि आँई ॥ चंद्रभगा, चंद्रावलि
 भांमा, राधा परम सुहाई ॥१॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा सुरंग गुलाल

उड़ाई ॥ रतनजटित पिचकाईन भरि भरि छिरकति कुँवर कन्हवाई ॥२॥ ताल
मृदंग, पटह ढफ बाजै, घोष नगारे धाई ॥ श्री मंडल सहनवाई सुंदर बिच
बिच बैनु बजाई ॥३॥ अरस परस खेलति पिय प्यारी, उपमा बरनि न
जाई ॥ 'सूरदास' बलि जाई बदन की निरखि निरखि मुसिकाई ॥४॥

१८ (१११) राग खट (१११) आजु भोर ही नंदपौरि ब्रजनारिन धूम मचाई ॥
पकरि पानि गहि मारि पौरीया जसुमति पकरि नचाई ॥१॥ हरि भागे हलधर
हू भागे नंद महर हूहरे ॥ तबही मोहन निकसि द्वार व्हे सखा-नामले टेरे
॥२॥ द्वारपुकार सुनत नहीं कोऊ तब हरि चढे अटारी ॥ आओरे आओ
सखा सब संगके घर घेरयो ब्रजनारी ॥३॥ सुनत टेरे संगी सब दोरे जब
अपने अपने धाम अर्जुन तोक कृष्ण मधु मंगल सुबल सुबाहु श्रीदाम ॥४॥
ग्वालिनिदौरि पौरि जब रोकी आनन पाये नेरे ॥ चंद्रावलि ललितादि आदिदे
स्याम मनोहर घेरे ॥५॥ कित जेहो वसपरे हमारे भजि नसको नंदलाल ॥
फगुवामें मुरली हमलेहें पीतांबर वनमाल ॥६॥ केसरि डारी सीसतें मुखपर
रोरी मांडत राधे ॥ विष्णुदास प्रभु भुजग हि गाढे मनवांछित फल साधे
॥७॥

१९ (१११) राग ललित (१११) तुम कोन के वस खेले हो रंगीले हो हो होरियां ॥
अंजन अधरन पीक महावीर नेन रंगे रंग रोरियां ॥३॥ बारंबार जृभात परस्पर
निकसि आई सब चोरियां ॥ नंददास प्रभु उहांई वसो किन जहां बसेवे
गोरियां ॥४॥

२० (१११) राग ललित (१११) होरी खेलै लाल लंगरवा अब तोए जानि न
दैहो ॥ गहि बैयाँ इहि कुंज-भवन में, भुगरि-भुगरि रस लैहों ॥१॥ करों
न संक अंक भरि भेटों कंकन पीठ बने हों ॥ व्हे जु रहों उर मांझि लाल
के अबीर गुलाल उड़े हो ॥२॥ पीतम सौं अनुराग मिलि नोंतन नेह बढ़े
हों ॥ 'दास गुपाल' प्रभु प्यारे सौं इहि बिधि फागु खेलै हों ॥३॥

२१ (१११) राग ललित (१११) खेलति फाग बने गुपाल अति रंग भीने ॥
मुरली धरे हो हो कहि बोले कोटि मदन छबि छीने ॥१॥ हाथन बनी कनक

पिचकाई ग्वाल बाल सँग लीने ॥ तकि तकि छिरकति फिरति गोपिन कों
गोकुल सदन अरुन कीने ॥२॥ रंग रंगीली ब्रज की ललनाँ निरखति स्याम
ही मन दीने ॥ 'राम राई' प्रभु सोभा सागर हित भगवान नैन मीने ॥३॥

२२ (१५) राग ललित (१५) होरी खेलीए चित चाई ॥ बाजत ताल मृदंग
झांझ ढफ रसीली धँवारन गाई ॥ केसर आदि अरगजा सौँधो अबीर गुलाल
उडाई ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' कें पीय की लीजे रीझि बलाई ॥१॥

२३ (१५) राग ललित (१५) मोहन खेलत आये फाग ॥ प्रात समे उठि
लटकि आये ढरकि टेढी पाग ॥१॥ अंजन अधर गुलाल भाल पर अद्भुत
भेख सुहात ॥ केसर छींट कहुं कहुं उर पर अरगजा भींजे गात ॥२॥ बोलत
मुखतें होरी होरा सुरत समागम रात ॥ रसिकराय रैन सब जागे समर
सुमर मुसिकात ॥३॥

पंचम राग

१ (१५) राग पंचम (१५) देखोदेखो ब्रजकी वीथनि वीथनि खेलत हें हरि
होरी ॥ गीत विचित्र कोलाहल कीतिक संग सखा लख कोरी ॥१॥ आई
झूमि झूमि झुंडन जुरि अगनित गोकुलगोरी ॥ तिनमें जुवती कदंबसिरोमनि
राधा नवलकिशोरी ॥२॥ छिरकत ग्वालबाल अवलनपर बूकावंदनरोरी ॥
अरुन अकास देखि संध्याभ्रम मुनिमनसा भइबौरी ॥३॥ रपटत चरन कीच
अरगजा की केसरि कुंकुमघोरी ॥ कहीनजाय गदाधरपे कछु बुधिवल मति
भई थोरी ॥४॥

२ (१५) राग पंचम (१५) हो हो होरी खेलन जैये ॥ आजभलो दिनहे मेरी प्यारी
नितही सुहाग बढैये ॥१॥ सोवत जाय जगाई सुंदरी करि उबटनों सीस न्हवैये
॥ सादा चूरी खुभी नकवेसरि राधा कुंवरि बनैये ॥२॥ चोवा चंदन ओर
अरगजा अबीरगुलाल उडैये ॥ नव मटुकी भरि केसरि घोरी प्रथम कुंज
छिरकैये ॥३॥ धावत सब इततें ब्रजनारी कमलन मारमचैये ॥ ताल मृदंग
ढोलडफ महुवरि झांझन झमक मिलैये ॥४॥ इतराधा उतमोहन प्यारो मुरली
शब्द सुनैये ॥ कूज ओट ललिता हरीदासी राग दामोदर जैये ॥५॥

राग सुघराई

१ (१०१) राग सुघराई (१०१) दाऊ की सों मोहि अहोहरि तुमहीन छांडोंगी ॥ होरी सो दिन पाइ धाइ जाइ हों मुख मांडोंगी ॥१॥ अब केसें छूटि हे मोपे विहसिर हसि गारिनभाडोंगी ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभु कों रंगले डारोंगी ॥२॥



२ (१०१) राग सुघराई (१०१) फगुवा के मिसि छलबल लालको रंगन रगमगोकीजे ॥ यह औसर होरी को गोरी सुखलेसुख किनदिजे ॥१॥ करत सेंट को संकोच सकुचजिय इनसकुचन कहीधोंकहाकीजे ॥ धरकोछांडि धायगिरीधर पियको निधरक व्है रसपीजे ॥२॥

३ (१०१) राग सुघराई (१०१) होरी खेलति नंददुलारो मोहन पिचकाईन रंग बरखत ॥ सुगंध अबीर अरगजा कुँमकुमा छिरकति नव पिय सरसत ॥१॥ मृगमद अगर घोरि ग्वालिनी लै ललिता कपोलन परसत ॥ सुठ सोभा मुख भरचो लाल को धनि 'व्रजजन' सुख दरसत ॥२॥

धमार पांडे के पद

१ (१०१) राग बिलावल (१०१) नंदगाम को पांडे ब्रज बरसाने आयो ॥ अतिउदार वृषभान जानि सनमान करायो ॥१॥ पांडे जूके पायनकों हसिहसि सीस नवायो ॥ पाय धुवाय न्हावाय प्रथम भोजन करवायो ॥२॥ धाय आई ब्रजनारी जिन यह सूधो पायो ॥ भानभवन भईभीर फाग को खेल मचायो ॥३॥ सीसी सरस फूलेल अंगअंगन झलकायो ॥ हनूमानकी प्रतिमा मानों तेल चढायो ॥४॥ काजर सों मुख मांडि बदन बिंदाजु बनायो ॥ कारे कलस श्रवत मानों चपरा चिपकायो ॥५॥ गजगामिनि गोंछनसों तुकमैया लपटायो ॥ देहधरें मानों फागुन खेलन ब्रज में आयों ॥६॥ कहुं चंदन कहुं वंदन कहुं चोवाल पटायो ॥ ऋतु वसंत जानों केसूकोद्रुम नवफूलन छायो ॥७॥ काहू गूलरी माला काहू झंगला पहरायो ॥ मानोगज घंटान बीच गजगाह बनायो ॥८॥

रंग रह्यो चहोंटियन अंगरातो व्हेआयो ॥ गुंजनको गहनो मानो प्रोहितपहरायो ॥९॥ माथेतें मोहनीनें छाछ को माट ढरायो ॥ मानो काचे दूधसों गिरिगोवर्धन न्हायो ॥१०॥ चोर भोर भई खोर मानो गंगा जल ढायो ॥ महादेवकी जटा चूरि चरनोदिक आयो ॥११॥ लगतदंत सोदंत गिडिगिडी अंग लगायो ॥ मानोहो सुघर संगीत ताल कठतार बजायो ॥१२॥ श्रीराधा राधाकहि अपनोंबोल सुनायो ॥ अरीभान की कुंवरि सरनिहों तेरी आयो ॥१३॥ सुनिकें प्रेम वचन गरो राधा भरि आयो ॥ बावाजूको दगला ले प्रोहित पहरायो ॥१४॥ कीरतिजू पांयलागि तातो पय प्यायो ॥ तोलों खेलत होरी ब्रजमें दूल्हे आयो ॥१५॥ सांचे स्वांग न सजिकें सबे समूह सुहायो ॥ तपा व्यास को पूत धुत सूकदेव बनायो ॥१६॥ सनकादिक चारयोंनिस ज्यों सन्यास सुहायो ॥ घूमत आयो इंद्र स्वांग उन्मत्त नचायो ॥१७॥ ब्रजकी बीधनि बीच कीचमें लोट पुटायो ॥ चारि वदनको स्वांग चतुर चतुरानन लायो ॥१८॥ पंचानन पांचों मुखसों संगीत बजायो ॥ हरिको व्हे जु बाबरो नारद नाचत आयो ॥१९॥ देखि नंदकेलाल जंत्रधरि गाल बजायो ॥ महादेव पटतारदेत यह पट प्रभु भायो ॥२०॥ हो हो हो होरी हरि हांसीन हैंसायो ॥ माया निपुन भई सो नारद हल हुलरायो ॥२१॥ कामकनी भयो सबन को चित्त चुरायो ॥ ललिता जोरी गांठि लालको व्याह रचायो ॥२२॥ गठजोरो वृषभान कुंवरिसों जाय जुरायो ॥ नवल अंबके मोरको मोरी मोर बनायो ॥२३॥ पीत पिछोरी तानि छबीलो मंडप छायो ॥ फागुन की गारीनको साखा चार पढायो ॥२४॥ होरीकी अग्यारी करि दूल्हे परनायो ॥ होरी को पकवान सो भरिभरि झोरिन खायो ॥२५॥ फूलि फाग की फाग फल्यो जिन यह जस गायो ॥ जन हरीया घनस्याम बास बरसानें पायो ॥२६॥

२  राग काफी  माई बरसानेते नंदगाम प्रोहित वृषभान को आयो ॥ नंदभवन को वैभव अद्भुत निरख परम सुख पायो ॥१॥ पायध्वायकें जल अचवायो धिरआई ब्रजनारी ॥ पा लागन कहि फूलफूल गावत होरीकी गारी ॥२॥ एकन चोवा आनसान ब्राह्मनके मुख पटायो ॥ एककपोलन मारतै

मींडत करत आप मन भायो ॥३॥ एकघर धसी घोर अरगजा पाछेते
 गहिनायो ॥ एकतो पकर फेंट झकझोरत इकलो करकें पायो ॥४॥ एक
 चोंहोंटियालेत चोरचित एक जु तारी बजावे ॥ एकतो पकरपोतिया झटकत
 हंसिहंसि वाख चढावे ॥५॥ एक अचानक बहे पाछेते आंखिन में दियोहे
 गुलाला ॥ मींडत दृग यों कहत लुगइन मेरो परचोचाला ॥६॥ एक नवासी
 खाटी छाछिते माथेते गहिनाई ॥ इत यह एक उतेवे अनगिण ब्राह्मकी न
 बस्याई ॥७॥ गिडगिडात मारचोजाडेको चितवत भोहितान ॥ हा हा होंहारचो
 तुम जीती छांडि देहु जिजमान ॥८॥ एक कहे याहि पकर टकि याके श्रवननकों
 सुखदीजे ॥ एक कहे हाहानी केव्हे घरी एक गहि लीजे ॥९॥ कहत परस्पर
 एब्रजनारी ॥ सब मिल यह बिचारी ॥ इतनी सुतन अथांइति चलि आयेकुंज
 बिहारी ॥१०॥ जोदेखे तो पांडेकों यहीं घेर रहीं ब्रजबाला ॥ मुखपटुका
 दे निरखनिरख मुसिकाने नंदके लाला ॥११॥ भली मानसहो भलो आदर
 कियो भलो भोजन करवायो ॥ सुनोंहो कुंवरजू सगरी लुगाइन होंतो नाच
 नचायो ॥१२॥ एकन गुलगुलाय गुलचायो एकन कोहुंनी दीनी ॥ जानतहों
 अपने जीयमें जेसीपोहों नाई कीनी ॥१३॥ किचकिचाय मेरे लियो चोहोंटिया
 पीठ बहे गई राती ॥ इनन वरजी इनतेहों डरपत धुकर पुकर करे छाती
 ॥१४॥ तब ललिता गद गद गद कायो स्यामस्याम कहिटेरचो ॥ पांडे जूकी
 ललित पीठपर लाल कमल कर फेरचो ॥१५॥ एकन मोकों नयन सेनदे
 एकन अंजन कीनों ॥ एकन मनहर लियो चितें आंखिन में बूकादीनों ॥१६॥
 कछो स्याम अजह्वूवकसो तिहारे बहुत सुखपेहें ॥ जोचाहो सोई तुमकों
 मनभायो फगुबा देहें ॥१७॥ तुमतो अति उदार हो ढोटा तुमसे तुमही दानी॥
 जान जाउ जियमे जगजीवन चीरहरण सुधिआनी ॥१८॥ जोसासुरेकी
 दयाकीजेतो हा हा खाय छूडावो ॥ तो हम छांडें पांडेकों पांडे नाचे तुम
 गावो ॥१९॥ काहे न पांडे गुनप्रगटो हरिसेन दई दृगमोरी ॥ मगन भयो
 तब नाचन लाग्यो बोलत हो हो होरी ॥२०॥ बांधत रोटी पेटफुलायो यों
 टेढी पाग बनाई ॥ अधिकवार बहनें टानरोतन अद्भुत पाग मचाई ॥२१॥
 जानबूझ अनबोली व्हेकें दुरदेखत नंदरानी ॥ निरखनिरख नयनन कीतुहल
 मनहीं मन मुसिक्यानी ॥२२॥ इंद्रादिक ब्रह्मादिक शंकर ये सब रहे लुभ्याई ॥

हम न भये ब्रज ब्राह्मन निरखनिरख मनमे पिछाई ॥२३॥ भई विमान भीर
ब्रज ऊपर पहोपन वृष्टि करावें ॥ निरखनिरख यह सुखन नयनन सुरबनिता
मंगलगावें ॥२४॥ धन्य ब्राह्मन धन्य धन्य नंद सुत धन्य ये ब्रजकी नारी ॥
धन्य धन्य ब्रजके ब्रजवासी धन्य स्याम बलहारी ॥२५॥

३ (११) राग काफी (११) माई समध्यानेतें ब्राह्मन आयो भर होरी के बीच
भरूवा ॥ घेर लियो घर मांझ लुगांइन मूंड लगाई कीच ॥१॥ काहूलई
खसकाय परदनी काहूकियो कजरारो ॥ पिसीपिठी गोंछन लपटाई ब्राह्मनको
कहाचारो ॥२॥ काहूगुदी झगुला पहेरायो काहू गूलरी माला ॥ तारीदेदे
महीगन गावें हैंसिहैंसि ब्रजकी बाला ॥३॥ जसुमति लियो बचाय बापरो
निरमल नीरन्हवायो ॥ नयेवसन पहेराय गुदीते झगुला आनि छिड़ायो ॥४॥
तब ब्राह्मन निधरक व्हे बेठयो पहिरि ऊजरेकपरा ॥ एक ग्वालनि ने आनि
उलेड्यो सरीकीचको खपरा ॥५॥ देख विमल गढ्यो चतुरंगने भलेंभलें
करिगावें ॥ अति खिलवार मोधुवा पांडे खेलेंहीं सुखपावें ॥६॥ पेजबांधिजो
सुरपति नाचे तो ऐसी फागन माचे ॥ पेट फुलाय वदन टेढोकर विफरचो
ब्राह्मन नाचे ॥७॥ गहने जोई माई दे पांडे हमतो फगुवा चाहें ॥ एकन
कान पकर गुलचायो काहू ऐंठी बाहें ॥८॥ जानि सासुरे को यह ब्राह्मन
मोहन कछु बन कहहीं ॥ कृष्णजीवन लछीराम के प्रभुहरि सकुच सकुच
जिय रहहीं ॥९॥

४ (११) राग काफी (११) प्रोहित वृषभानु को हो आयौ नंदराई दरबार ॥१०॥
सिंध पौरि खेलें ब्रजबाला छिरकति कुंमकुम नीर ॥ ब्रज की बीथिनि खेल
मच्यौ हो भई परसपर भीर ॥१॥ घरि लयौ बाह्मन चहुँ दिस तैं लीने बसन
उतारि ॥ नैन आँज कें दयौ दिठौना बेंनी गुही संबारि ॥२॥ तन सुख चीर,
लाह कौ लहिंगा, अँगिया बनी कटाब ॥ कंठ पोति, कर पौहोंची सोहे,
बाजू बंद जड़ाव ॥३॥ तिया-भेष अदभुत जु बन्यौ है कहति सबैं ब्रज-
नारि ॥ दै पटतार नचावें पांडे, गावति हैं मिलि गारि ॥४॥ उत तैं आवति
हैं नंद-नंदन, गोप सखा सँग जोरि ॥ प्रोहित की गति देखि साँवरो हँसति,
मुदित मुख-मोरि ॥५॥ तब मोहन जुवतिन मधि आए पांडे दियौ छुड़ाई ॥

फगुवा बहुत मैगाई सबन कौं देति है हरखि बुलाई ॥६॥ देति असीस चलीं
 ब्रज-बनिता, चिर जियौ ब्रजराई ॥ जाके राज सदां इहि बिधि सों, खेलति
 है हम आई ॥७॥ तिहिं औसर पांडे कौं दीने, नौतन बसन मैगाई चलयों
 बहुरि वृषभान पुरा कौ फूल्यों अंग न माई ॥८॥ ब्रह्मादिक, सनकादिक,
 नारद, रहे बिमानन छाई ॥ यह छबि निरखि बारि तन, मन, धन, 'विष्णुदास'
 बलि जाई ॥९॥

होरी डांडा के पद - महासुदि १५

१ ~~(१५)~~ राग सोरठ बिलावल ~~(१५)~~ होरी खेलिये सुंदरलाल ॥ चंचल नेन
 विसाल ॥ तुम ब्रजजन के प्रतिपाल ॥ तुम लीला नट गोपाल ॥ गहि ठोडी
 जसुमति कहे तुम संग लेहु ब्रजबाल ॥१॥ विविध सुंगंध नउवटनों सब
 अंग बेठि उवटाऊं ॥ चंदन अंग लगायकें फिरिताते नीरन्हवाऊं ॥२॥ अंग
 अंगोंछों प्रीतिसों घसि मृगमद तिलक बनाऊं ॥ अंजन नेन न आंजिकें
 अरुमसिविंदुका भुलाऊं ॥३॥ अलकावलि अति सोहनी मोतिन लर सरस
 गुथाऊं ॥ मधि लटकन लटकायकें हों देखत अति सुख पाऊं ॥४॥ पगिया
 पेच वनायकें खिरकिन की सीस धराऊं ॥ मोर चंद्रिका तनकसी हों
 दिसदाहिनी ढराऊं ॥५॥ झीनी झंगुली अति वनीसोतो स्याम अंग पहराऊं ॥
 अति सुगंध पहोपन बस्यो वरफुलेल चुपराऊं ॥६॥ सूथन गाढे अंगकी
 लाल चरन पहराऊं ॥ फेंटाकटि तट बांधिकें ओर सुरंग गुलाल भराऊं
 ॥७॥ आभूषन बहु भांतिके पहराऊं तिहिंतिहिं ठाऊं ॥ फूलनकी माला गरेधरि
 देखत नेन सिराऊं ॥८॥ घरघरते सब गोपके लरिकनकों पठे बुलाऊं ॥
 केसरि के मटुका भरो पियकारी हाथ धराऊं ॥९॥ सिंघद्वार ठाढे रहो तुमें
 संग देहु बलदाऊं ॥ आगे व्हेमेरे लाडिले ललना सबहिन को छिरकाऊं
 ॥१०॥ वड्डे गोप बुलायकें रखवारे संग रखवाऊं ॥ मनमानें तहाँ खेलिये
 सब ब्रजजन संग नचाऊं ॥११॥ विविध भांति ब्रजराज सों कहि बाजे
 बजवाऊं ॥ फगुवा देवे झुं अबे बहुभूषन वसन मंगवाऊं ॥१२॥ सब ब्रज
 युवतिन को अब घरघरतें पठे बुलाऊं ॥ मेरे लालके चावसों फगुवाके गीत
 गवाऊं ॥१३॥ रगमगे बाजे देखिकें अपने द्रगन सिराऊं ॥ मुक्ताफल थारीभरों

होंले आरती उतराऊं ॥१४॥ आंकों भरिले गोदमें घर भीतर ले जाऊं ॥
 ब्रजयुवतिन में बैठिकें नेंक फूली अंगन माऊं ॥१५॥ माय मनोरथ यों करे
 जाको हे जसुमति नाऊं ॥ दीये यह फल रसिक कों हों श्रीवल्लभ गुनगाऊं
 ॥१६॥

२ ॥ राग बिलावल ॥ आनंदराय खेले फाग सोहो हो होरी आई ॥
 लाल गिरीधरके काज अपने ग्रह न्योति बुलाई ॥१॥ कोया कों आदर देहे
 कोयाकों बैठन देहे ॥ जसुमति आदर देहे फूलदेवे ठन कहेहे ॥२॥ कासों
 राची आनितो काके संग खेलिहें ॥ गिरधर सौराची आनि तो दाऊ संग
 खेलिहें ॥३॥ डांडो रोपन चले नंदओर गिरिवर धारी ॥ वाजे बहोत वजावत
 ताल पखवाज थारी ॥४॥ नदी जमुनाके तीर जायरोपीहे होरी ॥ कुंवर धरी
 बनाय सबनता बपाछें जोरी ॥५॥ पूजा करि पाय लागि ओर परिक्रमा दीनी ॥
 विप्रन वेद पढाय बैठिस बही विधि कीनी ॥६॥ खेलतहें नंदलाल कमल
 हाथ गहिलीने ॥ सुंदरि लईहें बुलाय रहसि उनके करदीने ॥७॥ अबीर
 गुलाल उडावत ब्रजरानीके लाला ॥ सुंदर मुख झलकत पहरें उर फूलन
 माला ॥८॥ केसरि सोंधे भीजी पहरें झूमक सारी ॥ गिरिधर पिय संग
 खेलें घोष सकल ब्रजनारी ॥९॥ होरी धरि घर आए नंदराय ब्रजवासी ॥
 गोप ग्वाल सब भीने ओर लालन सुखरासी ॥१०॥ रानीजू देखि सिहाय
 करत नोछावरि भारी ॥ धन्य जन्म करि मान्यो वारति नौतन सारी ॥११॥
 चंद्रावलि राधाजू भीजि रही रसहीयें ॥ एकोपल नहीं छांडत डोलत लालन
 लीयें ॥१२॥ यह जो बडो त्योहार तोनि तनित तुमही आवो ॥ सकल घोषके
 राय नंद गिरिधारी कहावो ॥१३॥ चिरजीओ ब्रजराज देखि ढोटन सुख
 पावो ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर कों हसिहसि फाग खिलावो ॥१४॥

३ ॥ राग बिलावल ॥ घोष नृपति सुत गाइयें जाके बसियें गाम ॥
 लालवलि झूमिकाहो ॥ वहीरि सुहागिनि गाइये जाको श्रीराधा नाम ॥ लाल
 ॥१॥ चलीहें सकल ब्रजसुंदरी नवसत साजि सिंगार ॥ गावत खेलत तहां
 गई जहां घोषराय दरबार ॥२॥ जाय नेन भरि देखिये सुंदर नंदकुमार ॥
 नीलपीतपट मंडिता उर गजमोतिन हार ॥३॥ सखा संग अति रस भरे



पहरे विविध रंगचीर ॥ गीत विचित्र कोलाहला ओर ब्रजवासिन भीर ॥४॥
 डिमडिम दुंदुभी झालरी रंजमुरज डफताल ॥ मदन भेरि राय गिडगिडी
 विचविच वेन रसाल ॥५॥ अति रसभरी ब्रजसुंदरी देत परस्पर गारि ॥
 अंचलपट मुखदे हंसी मोहन वदन निहारि ॥६॥ पहलो झूमक ताही को
 जाको श्रीमोहन पूत देखि परोसिर मोहनी युवती जनमन धूत ॥७॥ दूसरो
 झूमक ताही को जाकी श्रीराधा नारि ॥ पिय प्र्यारी रोके गये मनमें चौंकि
 बिचारि ॥८॥ जुवति कदंब सिरोमनी श्रीराधा वरस कुमारि ॥ उतब्रज सिसुगन
 नायका वलि ओर गिरिवरधारि ॥९॥ एकन कर बुका लिये एक गुलाल
 अबीर ॥ प्रमदा गन पर वरखही कूकेंदेत अहीर ॥१०॥ रतन खचित
 पिचकाइयां नवकुंकुम जल सोंधोरि वरखही कूकेंदेत अहीर ॥१०॥
 रतनखचित पिचकाइयां नवकुंकुम जल सोंधोरि ॥ पियसन सुखन्हे छिरकहीं
 तकितकि नवल किसोरि ॥११॥ स्याम सुभगतन सोहही नवकेसरि के विंदु ॥
 ज्यों जलधर में देखिये मानो उदित बहुइंदु ॥१२॥ युवतियूथ मिलि धाइयो
 पकरेवलि मोहन जाय ॥ नवकेसरि मुख मांडिकें छांडे आंखि अंजाय ॥१३॥
 यह विधि होरी खेलहीं ग्याति बंधु संग लाय ॥ पूरण शशि निस डहडही
 पून्यो होरी लगाय ॥१४॥ परिवा सकल घोखजन भानुसुता चले न्हान ॥
 अरगजा अंग चढाइयों विमल वसन परिधान ॥१५॥ दुतिया बंदन बांधियो
 सिंघासन युवराज ॥ छत्रचंवर गोविंद गहे श्रीवल्लभकुल सिरताज ॥१६॥
 ४ (४१) राग बिलावल (४१) वंदों मुनसाई नंदके जुवती झंडा केसें लेहोजू ॥
 ये सब सुंदरि घोखकी क्यों परिरंभन देहो ॥१॥ फागुन मास देत फगुवा
 अति क्रीडा रस खेलो ॥ तनकी गति ओरें भई बोली ठोली मेलो ॥२॥
 काहेकों अकुलात हो हम मन को भायो करिहें ॥ हों भैया बलदेवको पृथक
 पृथक करि धरि हें ॥३॥ पांच सखी मिलि एक व्हे बीच झंडा ले रोप्यो ॥
 फरहर रति पति ऊपरे बहोत नगन जट ओप्यो ॥४॥ सुनों पिया सांची
 कहूं जो तुम्हारे जिय भावे ॥ अपने छलबल प्रेमके जीतेसो कहा पावे ॥५॥
 हम समेत सब ताहीको यामें कहा कछू लालो ॥ अब जीतो तो जानिहें
 पानधरें प्रतिपालो ॥६॥ पटह निसान मृदंगसो दुहुदिस दुंदुभी बाजें ॥ इत



जुवती वर जोर में उत स्याम सखन संग भ्राजें ॥७॥ गावें चेत सुहावनें
 बिचबिच मीठी गारी ॥ चंग उपंग मधुरमुरली राग मिल्यो करतारी ॥८॥
 केसरि कुंकुम घोरिकें नवकिसोर परधाई ॥ नायक धेरी नायका चोली बसन
 रंगाई ॥९॥ काहूसों मिलवत सखनदे काहूसों मिलवत बोली ॥ काहूकों
 परिरंभनदे काहूकी झटकत चोली ॥१०॥ स्वकि रंगीली राधिका पीतांबर
 गहि झटक्यो ॥ हो हो हो कहि सुंदरी गहि करसों कर पटक्यो ॥११॥
 उतवर सुंदर लाडिलो इत वृषभान किसोरी इत पिचकाई उत पिचका पियसन
 मुख लेदोरी ॥१२॥ सुरंग लाल अबीरसों व्योम रसातल छायो ॥ रसमें
 नायक नायका करत आप मन भायो ॥१३॥ गुलाल जंगाली छबि राजहीं
 दंपति प्रेम प्रसंसा ॥ उपमाकों कोऊ नहीं क्रीडत हंसीहंसा ॥१४॥ झंडा
 लीयो ओर रसकीयो प्रान पिया रस देख्यो ॥ गिरधर क्रीडा नित नई सगुनदास
 रस लेख्यो ॥१५॥

५ (॥१॥ राग बिलावल (॥१॥) श्रीलक्ष्मन कुल गाइये श्रीवल्लभ सुबन सुजान ॥
 लाल मनमोहना हो ॥ गुन निधि गोपीनाथजू निर्गुन तेज निधान ॥१॥
 पुरुषोत्तम आनंदमें श्रीविठ्ठल ब्रजके भूप ॥ कोटि मदन विधुवारनें मुख सोभा
 सुखरूप ॥२॥ भूतल द्विज वपु धारिकें श्रुतिपथ कियो प्रचंड ॥ मारग पुष्टि
 प्रकासिकें मायामत कियो खंड ॥३॥ श्रीगिरिधर गुन आगरे ॥ पूरन
 परमानंद ॥ राज सिरोमनि लाडिले करुनामय गोविंद ॥४॥ श्रीबालकृष्ण
 मुख चंद्रमा पंकज नेन विसाल ॥ श्रीवल्लभ गोकुलनाथजू प्रिय नवनीत
 दयाल ॥५॥ श्रीपति श्रीरघुनाथजू जगजीवन अभिराम ॥ रूप रासि जदुनाथजू
 कमला पूरन काम ॥६॥ नवकिसोर घनस्यामजू अंगअंग सुखदाय ॥ बालक
 सब ब्रह्मजानिकें वेदविमल जसगाय ॥७॥ बिंद्राविपिन सुहावनों ब्रजलीला
 सुखसार ॥ मानिकचंद्र प्रभु सर्वदा श्रीगोकुल करत विहार ॥८॥

६ (॥१॥ राग बिलावल (॥१॥) अरि आज कमल मुख देख्यों री जब तैं घर
 अंगना न सोहाई ॥ हौं जमुना जल भरन गई री बिसरी भरन जल माई
 ॥१॥ होरी डांडो रोपत देख्यों मूरति रही उर छाई ॥ तब तैं खान पौन
 सुधि बिसरी मिलिवे कौं अकुलाई ॥२॥ मेरे जान कछू परी ठगोरी मुरली

तान सुनाई ॥ 'सूर स्याम' सोई हितू हमारी जो कोऊ मोहि मिलाई ॥३॥

७  राग सोरठ  मनमोहन खेलत फागरी हों क्यों कर निकसों ॥ मेरे संग की सबे गई मोहि प्रगट भयो अनुराग ॥१॥ एकरेन सपनों भयोरी नंदनंदन मिले आय ॥ में सकुचन घूँघट कढ्यो उन भेटी भुज लपटाय ॥२॥ अपनों रस मोंकों दियोरी मेरो लीयो घूँट ॥ वैरिन पलकें उघरतें मेरी गई आस सब छूट ॥३॥ फिरमें बहुतेरो कियोरी नेंकन लागी आँख ॥ पलक मूँदिपर चोलियो में जाम एक किलों राख ॥४॥ तादिन द्वारें बहे गयोरी होरी डांडो रोप ॥ सास ननद देखन गई मोहि घर रखवारी सोंप ॥५॥ सास उसासन त्रासहीरी ननद खरी अनखाय ॥ देवर डगधर वोगिने मेरो बोलत ना हरि स्याय ॥६॥ तिखने चढ ठाढी रहोरी लेवो करों कनहेर ॥ रात दिवस हो हो रहे बिचवा मुरलीकी टेर ॥७॥ एसी मन में आवहीरी छांड लाज कुलकान ॥ जाय मिलों ब्रजईश सों रतिनायक रसकी खान ॥८॥

८  राग गौरी  ऋतु वसंत सुख खेलियें हो आयो फागुन मास ॥ होरी डांडो रोपियो सब ब्रजजन मन उल्लास ॥ गोकुलके राजा ॥१॥ रजनी मुख ब्रज आईयो गोधन खरिक मझार ॥ सखा नाम सब बोलकें घरघर ते देत बगार ॥२॥ बडेगोप वृषभान के आये सब मिल पोरि ॥ श्रवन सुनत प्यारी राधिका चढि चित्र सारी दोरि ॥३॥ ऊझकि झरोखा झांकियो दोउन मन आनंद ॥ एसी छबि तब लागियो मानो निकस्यो घटातेचंद ॥४॥ वासर खेल मचाईयो नेरे आयो फाग ॥ झूमक चेतव गावही मनमोहन गोरी राग ॥५॥ नरनारी एकत्र भये घोषराय दरबार ॥ चहुँदिसते सब दौरियो भूषण वसन सिंगार ॥६॥ अगणित वाजे बाजहीं रंजमुरज निसान ॥ डफ दुंदुभी ओर झालरी कछुवन सुनियत कान ॥७॥ पिचकाई कर कनक की अरगजा कुंकुमघोर ॥ प्राणपिया कों छिरकही तकतक नवलकिशोर ॥८॥ बहुरि सखा सबदोरियो आगेदे बलबीर ॥ युवतीजन परवरखहीं नवल गुलाल अबीर ॥९॥ ललिता विसाखा मतो मत्यो लीनों सुबल बुलाय ॥ चेरी तेरे बापकी नेंक मोहन कों पकराय ॥१०॥ तबें सुबल कौतुक रच्यो सुनों सखा एक

बात ॥ इने भीतर जानवेहु बोलत जसोदा मात ॥११॥ हरेहरे सब रेंगि
चली नेरें निकसी आय ॥ सेन सबेदे दोरियो पकरे बलमोहन जाय ॥१२॥
प्यारी को अंचल लियो और पियको पटपीत ॥ सकतहीं गठजोरो कियो
भले बने दोउमीत ॥१३॥ फगुवा में मुरलीलई ओर कंठ को हारा ॥ श्रीराधाकों
पहराईयो हसत देवे करतार ॥१४॥ मेवा मोल मंगाईयो फगुवा दियो निवेर ॥
मनभायो कर छांडियो हसत वदन तनहेर ॥१५॥ यह विधि होरी खेलही
ब्रजवासिन संग लगाय ॥ युगल कुंवर के रूपें जन गोविंद बलबल जाय
॥१६॥

९ (होरी राग गौरी) गोपन के आनंद ब्रज फाग रमानो ॥ध्रु०॥ फागुन
अतिबड भागन ऋतु वसंत के आगम ॥ पून्यों और गुरुवार मघा ऋतु शिशिर
समागम ॥ गर्ग आपले ज्वेडें होरी डांडो रोप्यो आय ॥ कुशल बखाने देश
की विप्रकख्यो समझाय ॥१॥ वासरगत रजनी जब आई घरघर बालक सिमिट
मदन की फिरी दुहाई ॥ गारी देत निसंक बहे ओर आरज पंथ छुडाय ॥
मुखकर सबे लजावही उर आनंद न समाय ॥२॥ स्याम सुबल सों मतो
मत्यो दावजो पाऊं ॥ बड़े भोर वरसाने होरी खेलन जाऊं ॥ भली बात
सबहीन कही रवि के उदय प्रमाण ॥ कनक कलश केसर भरे भई चलन
की ठान ॥३॥ बलमोहन मिल सखन सहित बनबाजे साजे ॥ रंज मुरज
सहनाई झांझ झालर डफ बाजे ॥ आनंद भेरि मृदंग मिल गावत गोप धमार ॥
नंदीश्वरतें उतरत देखें सुख सागर की वार ॥४॥ नाचन स्वांग बनाय योग
मुद्रा बलिलीयें ॥ तांडव नृत्य कराय मत्त बारुणीसी पीयें ॥ जाय सिमिट
इकठोरे भये वृष भान की पोर श्रवण सुनत प्यारी राधिका गई अटापेदोर
॥५॥ उझक झरोखा झांकत कोटिक चंद लजाहीं ॥ रसिक कुंवर जहाँ
आय निरख परसत पर छांहीं नयना सों नयना मिले कोऊन पावे पार ॥
श्री स्यामाजू रीझकें डारचो पियपें हार ॥६॥ मृगमद साखजवाद कुंकुमा
अति घुसघोरी ॥ हरि पिचकाइन छिरकत बोलत हो हो होरी ॥ उडत गुलाल
अबीर में वासर गयो छिपाय ॥ राधा ललिता सेन दे बल पकराये जाय
॥७॥ चन्द्रभगा मुख मांडत ललिता लोचन आंजत ॥ इंद्रा वृंदा प्रेम कलश

भर सिरतें ढारत ॥ पटुकालियो उतार कें मानो आवत गजराज ॥ स्याम
 सखन सों कहत हैं भलेबने दाऊ आज ॥८॥ मेवा बहुत मंगाय दीन व्हे
 फगुबा दीनों ॥ पटुका लियो उतार मनोरथ सबको कीनो ॥ कीरतिजू आनंद
 भर चितेस्याम की ओर ॥ कछुमन में वांछित भई कर अंचल की छोर
 ॥९॥ जिनके मन हर लिये संग लागी फिरें भामिनि ॥ खेलत नांहुनकोऊ
 राधाजू की कामिनि ॥ मुरली मधुर बजाइयो मनमोहन मधुरीतान ॥ रही
 चित्र कीसी लिखी अब कोन कहे घर जान ॥१०॥ रातघोस के खेल महीना
 जात न जान्यो ॥ नरनारी बड़ छोट सुफल जीवन कर मान्यो ॥ सांझ
 परी दिन आंधयो होरी पोहोंचेग्वाल ॥ तहां रोक ठाडे भये मध्य नायक
 नन्दलाल ॥११॥ घर घरते सब सिमिट हितू देखन कों आई ॥ रेसम पाट
 पुआय माल गूलरी बनाई ॥ आनंदगारी गावहीं अपने अपने अगबार ॥
 होरी कोई जान न पावें रोके सिंध दुवार ॥१२॥ एकन के कर बांस एकलीने
 सिर झारें ॥ होरी पूजन चले ध्यान सिद्धन के टारें ॥ नवल कुंवर पोरिन
 रुपे करजेरिन की ओट ॥ कपट मार छबि चारु दे दीनी काम करोट ॥१३॥
 घरी महूरत सोध नंद सबहितू बुलाये ॥ अक्षत पानी दूब सहित होरी पें
 आये ॥ नर नारीयों भेट हीं सब दिन आनंद जाय ॥ वेद ऋचा विप्रन पढी
 घृत आहुती कराय ॥१४॥ कुटुंब सहित सिरनाय सबन परिक्रमा दीनी ॥
 कुशलमान जियजान धूरिकी वंदन कीनी ॥ बायस ओर भली भई भैया
 कहत सयाने लोग ॥ बलमोहन होरीमगारियो अजर अमर संयोग ॥१५॥
 ब्रजवासिन की चरणरेणु ब्रह्मा शिव यांची ॥ अष्ट सिद्धि नवनिधि द्वार घर
 घर प्रंतिनाची ॥ ब्रज रानो ब्रज जन सहित गये भीतरी घोर ॥ रानी जसुमति
 कियो आरतो जुगल कुंवर परदोर ॥१६॥ गज मोतिन को हार डोरीकर
 कंकण दीने ॥ गोपी ग्वाल बुलाय दान विप्रन कों कीने ॥ देत असीस घर
 कों चले आनंद सिंधु बढाय ॥ रसिक कुंवर नंदलाल पें जनदयाल बल
 जाय ॥१७॥

१० ॥ राग बिहाग ॥ रंगनरंग हो हो होरी खेलें लाडिलो ब्रजराजको ॥

सांवरेगात कमलदल लोचन नायक प्रेम समाजको ॥१॥ प्रथमहीं ऋतु वसंत
 बिलसे हुलसे होरी डांडो रोप्यो ॥ मानो फाग प्राणजीवन धन आनंदित
 सब ब्रज ओप्यो ॥२॥ मृगमद मलय कपूर अगरकेसर ब्रजपति बहुघोर धरे ॥
 सरस सुगंध संवार संग दीये रंगन कंचन कलश भरे ॥३॥ प्रेमभरी खिलवारन
 के हित सुखके साज सिंगार कियें ॥ भाग्य अपार जसोदा मैया बारबार
 जलवार पियें ॥४॥ भईहे रंगीली भीरद्वारन प्रीतम दरशन कारन ॥ अब
 बन ठन निकसे मंदिरतें कोटि मदन कीये वारन ॥५॥ फेंट भराय लई जननीपें
 आज्ञालई ब्रजईशतें ॥ नंदराय तब रत्न पेंचरचि बांध्यो गिरिधर शीशतें
 ॥६॥ तापर मोर चंद्रिका सोहे ग्रीव ढरन लहकात हैं ॥ मदनजीत को बानो
 मानो रूपध्वजा फहरातहें ॥७॥ तेसेई सखा संग रंग भीने हरख परस्पर
 मन मोहे ॥ वरणवरण युवतिन के कमल मानों अंबरदिन मणि संगसोहे
 ॥८॥ आनंद भर बाजे बाजत हैं नाचत मधु मंगल रंगकिये ॥ हरिकी हसन
 दशनन की किरण नयनन की ढरन मन मोहि लिये ॥९॥ कोऊ द्वारे कोऊ
 चढ अटा कोऊ खिरकिन वदन सुहाये ॥ गोकुलचंद्रमा देखनकों मानो चंद्र
 विमानन चढचढ आये ॥१०॥ अबीर गुलाल उडाय चले देखत जेसैं सब
 कोऊ हरखे ॥ छिरकत फिरत छेल नवरंगी कहा कहिये रस नव धन वरखे
 ॥११॥ राधा दृष्टि परत नहीं मोहन निरख नयन मन घूमेंहों ॥ सन्मुख न्हय
 पिय कल्प तरुवर महाभाग्य रस फल झूमेहो ॥१२॥ प्रमदा गण मणि स्यामा
 रसिक शिरोमणि सों रवेलन आई ॥ दुहुंदिश शोभा उमग रंग मच्यो मान
 वेणु ध्वनि लाई ॥१३॥ नयनन बेन न खेलत वधू गेंदुक नवलासिन
 मारमची ॥ कमल नयन कर ले पिचकाई मृग नयनन सेनन भूँहनची ॥१४॥
 छिरकी छेल छबीली भांतन मनहरणी जोबन बारी ॥ सब अंग छींट बनी
 पिय वसनन फुलीं छबि फुलवारीं ॥१५॥ पहोप पराग उडाय दाव रचि अछन
 अछन नेरे आई ॥ दौर दामिनीं घनघेरचो पिय बात बनीं सब मन भाई
 ॥१६॥ कोऊ मुख मांडत दे गलबइयां कोऊ पोंछत आछी छबिसों ॥ अलकन
 भोहन मूल रंगरह्यो शोभा कहियन जाय कविसों ॥१७॥ कोऊ रचिरुचि
 पान खवावत पुलकित अधरन परस किये ॥ कोऊ भुज गहि डहकाय फगुवा



मागत पिय नयनन चेन दिये ॥१८॥ राधा नागरि स्याम सुंदरपर प्रीत उमग
केसर ढोरी ॥ महामनोहर ताको राजा अभिषेक किये कहें हो हो होरी
॥१९॥ सरस्वती सहित महामुनि मोहे यह शोभा दंपति हेरे ॥ कहि भगवान्
हित रामराय प्रभु हस चितवन वसी मन मेरे ॥२०॥



गारी की धमार

१ ॥ राग बिलावल ॥ रस सरस बसो बरसानोंजू ॥ राजत रवनी
करबानों ॥ मनिमय मंदिर तहां सोहे ॥ रविशशि उपमाकों कोहे ॥१॥ वृषभान
गोप तहां राजें ॥ ताकी कीरति जगमें गाजें ॥ नितपरम कुलाहल भारी ॥
गावत गारी ब्रजनारी ॥२॥ जब दिन होरी को आयो ॥ न्योंतो नंदगाम
पठायो ॥ सुनिकें मनमोहन धाये ॥ सब सखा संग ले आये ॥३॥ जब
जसुमति न्योति बुलाई ॥ समधिन समध्यानं आई ॥ कीरति आदर कर
लीनी ॥ मनुहार बहोत विधि कीनी ॥४॥ अतिकृपा अनुग्रह कीने ॥ हमतो
अपने करिलीने ॥ गुनगनेन परें कछू गाथा ॥ कीनों ब्रज सकल सनाथा
॥५॥ तुमतो सबकी सुखरासी ॥ ये सुफल किये ब्रजवासी ॥ आवो निज
भवन बिराजो ॥ बरसानों सकल निवाजो ॥६॥ तुमतो सबकी सुखदाई ॥
मुखकीजे कोन बडाई ॥ तुमतो यह निजव्रत लीनों ॥ जिनजो जाच्यो सोदीनों
॥७॥ यह जस तुमारो जगजानें ॥ मुखपर कहि कोन बखानें ॥ तब करगहि
ढिंग बेठारी ॥ गावत मंगल ब्रजनारी ॥८॥ तुमसों पूछें एक बाता ॥ तुम
सांची कहो सब गाता ॥ जबगर्ग तिहारे आये ॥ वोहो नाम कृष्णके गाये
॥९॥ मुनि वासुदेव करिलेखे ॥ वसुदेव कहां तुम देखे ॥ यह सुनिसुनि
बात तिहारी ॥ अचरज उपजे जीयभारी ॥१०॥ ओरोसंका जीय आवे ॥
ये भेद कोऊ नहीं पावे ॥ पति साधु परम तुम पायो ॥ यह पूत कहां ते
जायो ॥११॥ याके गुन रूप निघारे ॥ यह मिलेन कुलहि तिहारे ॥ कछू
कछो हमारो कीजे ॥ वसिकें सबकों सुखदीजे ॥१२॥ रहियें कछू दिवस
हमारे ॥ हम तोहें सकल तिहारे ॥ यह दोऊ एक करि जानों ॥ नंदगाम
सोई बरसानों ॥१३॥ जानत ज्यों नंद तिहारे ॥ तेसेई वृषभान हमारे ॥
ये दोऊ परम सनेही ॥ ये एक प्रान द्वे देही ॥१४॥ सुनिसुनि जसुमति

मुसिकानी ॥ बोली मधुरी एकवानी बसियें कछू दिवस तिहारे कीरति चलि बसो हमारे ॥१५॥ तब हंसी सकल ब्रजनारी ॥ जसुमति की ओर निहारी ॥ ब्रजभयो कुलाहल भारी ॥ नांचत दे दे करतारी ॥१६॥ यह रस बरसे बरसाने ॥ विन कुंवरि कृपा को जाने ॥ कीरति जसुमति जसगायो ॥ ब्रजवास माधुरी पायो ॥१७॥



२ (१५) राग बिलावल (१५) सुंदर स्याम सुजान सिरोमनि देहुं कहाकहि गारीजू ॥ बड़े लोगके औगुन बरनत सकुच होत जिय भारी ॥१॥ कोकरि सके पिता को निर्णय जाति पांति को जानें ॥ जिनके जिय जेसी बनि आवे तेसी भांति बखानें ॥२॥ माया कुटिल नटी तन चितयो कोन बडाईपाई ॥ उन चंचल सब जगत विगोयो जहां तहा भई हंसाई ॥३॥ तुम पुनि प्रगट होई वारेंतें कोन भलाई कीनी ॥ मुक्तिवधू उत्तमजन लायक ले अधमनकों दीनी ॥४॥ वसि दस मास गर्भ माताके उनआसा करिजाये ॥ सोघर छांडि जीभ के लालच व्हे गये पूत पराये ॥५॥ वारेंहीतें गोकुल गोपिन के सूने ग्रह तुम डांटे ॥ हे निसंक तहां पेठि रंकलों दधिके भाजन चाटे ॥६॥ आपु कहाय बड़ेके डोटा भातकृपन लों मांग्यो ॥ मान भंगपर दूजें जाचत नेक संकोचन लाग्यो ॥७॥ लरिकाईतें गोपिन के तुम सूने भवन ढंढोरे ॥ जमुना न्हात गोप कन्यनके निपट निलज पटचोरे ॥८॥ बेनुबजाय विलास कियो वन बोली पराई नारी ॥ वेबातें मुनिराज सभामे व्हे निसंक बिस्तारी ॥९॥ सब कोऊ कहत नंद बाबा को घर भरयो रतन अमोले ॥ गरे गुंजा सिरमोर पखौवा गायन के संग डोले ॥१०॥ राज सभा को बैठन हारो कोन त्रियन संग नाचे ॥ अग्रज सहित राज मारग में कुबिजा देखत राचे ॥११॥ अपनी सहोदरा आपुही छलकरि अर्जुन संग भजाई ॥ भोजन करि दासी सुत के घर जादों जाती लजाई ॥१२॥ लेले भजे राजन की कन्या यह धोंकोन भलाई ॥ सत्य भामाजु गोटमें व्याही उलटी चाल चलाई ॥१३॥ बहिन पिताकी सास कहाई नेकहु लाज न आई ॥ एते पर दीनी जु विधाता अखिल लोक ठकुराई ॥ मोहन बसीकरन चटचेटक जंत्रमंत्र सब जानें ॥ तातें भलेभले करिजाने भलेभले जगमानें ॥१५॥ वरनों कहा यथा मति मेरी वेदहू पार न पावे ॥ दास गदाधर प्रभु की महिमा गावत हीं उरआवे ॥१६॥



३  राग बिलावल  मोहन वृषभान के आएजू ॥ तहां अतिरस
 न्योंति जिमाए ॥१॥ वृषभानपुराकी गारी ॥ श्रीराधाकृष्ण पियारी ॥२॥
 चढि दूल्हे व्याहन आये ॥ सिंघासन दे वेठाये ॥३॥ नानाविधि भई हे रसोई ॥
 तहां जैवत अति सुख होई ॥४॥ तहां मिली युवती बड़ भागी ॥ गावें कृष्ण
 चरित्र अनुरागी ॥५॥ तहां बोली एक ब्रजनारी ॥ आवो देहिं कृष्णकों गारी
 ॥६॥ इने गारि कहा कहि दीजे ॥ गुन ओगुन सरस लहीजे ॥७॥ द्वेवासवे
 कोउ जाने ॥ जिनेवेद पुरान बखाने ॥८॥ वसुदेवके सुत जु कहाये ॥ तुम
 नंद गोपकें आये ॥९॥ तेरी मैया आनआनजाती ॥ बेहिलि मिली बैठें पाती
 ॥१०॥ तेरी फूफी पंच भरतारी ॥ जाको जस पावन कारी ॥११॥ पतिपांडु
 सबे जग जाने ॥ सुत आन आनके आनें ॥१२॥ तेरी द्रुपद सुतासी भाभी ॥
 वह पंच पुरुष मिलि लाभी ॥१३॥ जाकी जगवदत बडाई ॥ सोतो भक्त
 सिरोमनि गाई ॥१४॥ तेरी बहनि सुभद्रा कुमारी ॥ सोतो अर्जुन संग सिधारी
 ॥१५॥ श्रीकृष्ण तेरी महतारी ॥ वह पहरें तनसुख सारी ॥१६॥ रानी रातो
 लहंगा सोहे ॥ तेरी चितवनिमे जगमोहे ॥१७॥ तुम कहीयत हो ब्रह्मचारी ॥
 जाके सोल सहस्र ब्रजनारी ॥१८॥ तुम कहीयतहो दधिदानी ॥ जिनकूवि
 जासों रतिमानि ॥१९॥ श्रीकृष्णजू तेरो बलबीरा ॥ जिनकरण्यो कालिंदीनारा
 ॥२०॥ अहो तुम वनवन धेनुचराई ॥ भये घोख सकल सुखदाई ॥२१॥
 वृंदावन वेनु बजायो ॥ ब्रजसुंदरि रास खिलायो ॥२२॥ सूने भवन पराये
 आये ॥ चोरी करि माखन खाये ॥२३॥ गारीं गावें हरिजूकी सारी ॥
 वेहैंसिहैंसि देहें तारी ॥२४॥ गारी गावें हरिजूकी सासू ॥ वे ढरत प्रेमके
 आंसू ॥२५॥ गावो गावो सबेमिलि गारी ॥ तुम सुनहुं लालबिहारी ॥२६॥
 तुम करिकरि अपनों भायो अपनों जस जगत सुनायो ॥२७॥ वें हैंसिहैंसि
 गावे गोरी ॥ पटओट हंसी मुखमोरी ॥२८॥ छांडे दुरचोधनसे राजा ॥
 तेरे कुलहिन आवेलाजा ॥२९॥ ललिता यह मंगल गायो ॥ सुनि सूरस्याम
 सचुपायो ॥३०॥

४  राग धनाश्री  छेल छबिली समधिन हो यह छबि कोन की
 छलि लाई ॥ साच कहो हमसों समधिन तुम कोहे राम दुहाई ॥१॥ समधिन



सों समधोरो कीजे कीरति मनयों आई ॥ नंद गामतें महारि जसोदा समधिन
 न्यांति बुलाई ॥२॥ गिरिधारी जूकी महतारी सबही बिधि सुखदाई ॥ ब्रजनारी
 गारी गावत सारी बहु पहराई ॥३॥ चंदवदन तेरो चित्तचोरे नयन धने
 नटरारे ॥ भारे पलकन में अति सोहे तेरे चंचल तारे ॥४॥ कज्जल रेख
 सहित सोहे लोचन मोचन जुललोहे ॥ हाछा नें कहेरि मोतन तोहि मेरे गरे
 की सोहे ॥५॥ भोंह धनुष नासा चंपकली बेसरिकी छवि न्यारी ॥ मुख
 देखें चकचोंधि रहत तेरी बेंदीकी बलिहारी ॥६॥ अर्धचंद तेरो बेंदा बन्यो
 बेनी बरनी न जाई ॥ मानो इंदुपे त्रिया फनिगकी अमृत अचवन आई ॥७॥
 मानो मदनकी चपल चामठी कनिक खंभ लटकाई ॥ मानों निसा पतिके
 सुखलूटी होत प्रात उठिधाई ॥८॥ दारघोंदसन हसनिकोकाकी अधरनकी
 अरुनाई ॥ ठोढी गाढ गढ्यो मनमेरो तेरो संगन छोड्यो जाई ॥९॥ ललित
 कपोल अमोल गोल गोरे गोरे चितचोंरें ॥ निरखि निरखि मुख छवि मृगनेनी
 रीझि रीझि तृनतोरें ॥१०॥ कानन करन फूलफवे कंठ मोतिन सरीसोहें ॥
 कोन कोन उपमादीजे जु समधिन पटतर कोहे ॥११॥ अति उत्तंग कुंचन
 पर कंचुकी खयनवनी अतिगाढी ॥ कंचन कुंभन पर मनमथने मानोंसांचे
 ढारी ॥१२॥ बांये कर पल्लवन मुद्रिका खयेनबरा अतिगोल ॥ श्रवन सिरात
 सुनत समधिन तेरे मीठे मीठे बोल ॥१३॥ कर कंकन चुरोगजदंती गजरन
 फोंदा सोहे ॥ दुरिमुरिकें घूंघट जब काढे चितेचिते मनमोहे ॥१४॥ कटिलंहगा
 पचरंगी तन सोहे झूमक सारी ॥ कदली खंभ जे हरिराय की पायबनी
 अतिभारी ॥१५॥ पायल ओर बिछीयाजु छबीले नखनमहाबरिदीनों ॥ अटकि
 रहे उरमें अनबट समधिन सर्व सुहरिलीनों ॥१६॥ गति गयंद कटि किंकिनी
 बाजेमकर मधुर मनमीना ॥ धुनिसुनि थकित रहे मुनिमन नगर भयो आधीना
 ॥१७॥ सोंधे में सगवगी सदां सोहत समधिन सकुमारी ॥ मोहि रहे मकरंद
 बासरस भमर करें गुंजारी ॥१८॥ पानखात अलसात सखिनमें हंसत
 सहजहांसीरी ॥ जगमगात जोवनमदाती ओढें पावरी पीरी ॥१९॥ चंद्रभगा
 चंद्रावलि ललिता हसत देवे करतारी ॥ कोकिल केसे कंठ सबे गावति समधिन
 कों गारी ॥२०॥ कोमल कपोलनमें समधिनजू दसन चिन्ह किनदीने ॥ पलकन
 पीक कीलीक ललित लोचन रसमसे कहां कीने ॥२१॥ हृदेनखरेख कंचुकी



दरकी अंग अंग अलसाई मरगजी माल सिथल कटि पटलों पलपल लेत
 जूभाई ॥२२॥ रस निधान रसरस रसिली रसिकन रसिक पिथारी ॥ रसिक
 सबे रसबस करिलीने महामोहनी डारी ॥२३॥ सुनि सबही के ललित बचन
 समधिन जू तब हैंसि दीनो ॥ हावभाव द्रगकरि कटाक्ष सबहिनको मन हरिलीनो
 ॥२४॥ भोहकमान तमकि तरुनी द्रग बानता कही डारे ॥ जिनके लागे ते
 रसपागे द्रगते टरे न टारे ॥२५॥ समधिनजू तुम्हारो रूपरंग रस मोपे कढो
 न जाई ॥ धन्य धन्य बिधिना बिचित्र जिन तोसीत्रिया बनाई ॥२६॥ देत
 असीस स्यामघन अलि श्रवनन विनती सुनि लीजे ॥ परमउदार सदां
 समधिनजू हमही दरसन दीजे ॥२७॥



५  राग धनाश्री  रहसि घर समधिन आई ॥ ए सब सजनन
 के मनभाई ॥ध्रु०॥ समधिनसों समधोरो कीजे कीरति यह मन आई ॥ नंद
 गामते महारि जसोदा समधिन न्योति बुलाई ॥१॥ समधिन आई सब मन
 भाई निस समधी संग खेली ॥ खोलि हुलास आय ढिंग बेठी मोहोरन
 कीसी थेली ॥२॥ अति सुरंग सारी समधिनकी लहेंगा अतिही सुढार ॥
 फाटि रही सगरी समधिन की चोली जोबनभार ॥३॥ समधिनकों हाथी
 को भावे आछो नीको पूरो ॥ रंग रंगीलो ओर चटकीलो हाथ भरे को
 चूरो ॥४॥ समधिन तो दीयोई चाहे खोलि डवाकी गांठि ॥ अपने समधिनके
 नेगिनकों हीरा पत्रा बांठि ॥५॥ समधिन कीहे गली सांकरी समधि आवन
 जोग ॥ आधो बाहिर आधो भीतर बहोत बराती लोग ॥६॥ समधिनके
 मेल्यो ही चाहे गलफूलन को हार ॥ काढन कहे समधिन समधीसों
 डोलाकेजुकहार ॥७॥ यह लीला सुरनर मुनि गाई देखत रहे लुभ्याय ॥
 चिरजीवो दुलहे ओर दुलहिन सूरदास बलिजाय ॥८॥

६  राग काफ़ी  तुम आवोरी तुम आवो ॥ मोहनजू कों गारी सुनावो
 ॥१॥ हरिकारो री हरिकारो ॥ यह द्वे बापन विचबारो ॥२॥ हरिनट बारी
 हरिनटवा ॥ राधाजूके आगें लटुवा ॥३॥ हरि मधुकररी हरि मधुकर ॥
 रसचाखत डोलत घरघर ॥४॥ हरिखंजन री हरी खंजन ॥ राधाजु के मनको
 रंजन ॥५॥ हरिरंजन री हरिरंजन ॥ ललिता ले आई अंजन ॥६॥ हरिनागर

री हरिनागर ॥ जाकोबाबा नंद उजागर ॥७॥ हम जानेरी हमजाने ॥ राधा मोहन गहि आने ॥८॥ मुख मांडोरी मुखमांडो हरिहाहा खाय ॥ तोछांडो ॥९॥ हम भरिहेरी हम भरिहें ॥ काहूते नेक न डरिहें ॥१०॥ हरि होरीहो हरि होरी ॥ स्यामाजु केसरि ढोरी ॥११॥ हरिभावेरी हरिभावे ॥ राधा मनमोद बढ़ावे ॥१२॥ रंगभीनो री रंगभीनो ॥ राधा मोहन बसकीनो ॥१३॥ हरिप्यारो री हरि प्यारो ॥ राधा नयनन को तारो ॥१४॥ हम लेहेरी हमलेहें ॥ फगुवाले गारी न देहें ॥१५॥ यह जस परमानंद गावे ॥ कछु रहसि बधाई पावे ॥१६॥

७  राग सारंग  भेरि बाजै भरुवा नाँचै आगें गधैया दौरै जू ॥ ता पाछे सब गोप के लरिका हो हो होरी बोले जू ॥१॥ कमर हलावैं बाँह मरोरे अधरन कौं रस लेवे जू ॥ नैन नचावैं बगल बजावै मुख पै गुलचा देवेजू ॥२॥ भरुवाजी को मूँड़ मूँड़ायौ निलज निपट अंग खोलै जू ॥ 'रामदास' प्रभु या होरी में ढोल ढोल की बोले जू ॥३॥

८  राग नट  गारी हरि देत दिवावत ॥ ब्रजमें फिरत गोपिकन भावत ॥१॥ दूधदही कोमातो डोले ॥ काहेन होहो होरी बोले ॥२॥ बगलन में पिचकाई वागे ॥ बांधत फेंट संभारत पागें ॥३॥ रुक गये वगरनर हे पेडे ॥ नव केसरके माट उलेडे ॥४॥ छाजनतें छूटें पिचकारी ॥ रंगगये बाखर भवन अटारी ॥५॥ चोवा चंदन कीच मचाई ॥ मानों ब्रजमें वर्षा ऋतु आई ॥६॥ मोहन घेर भरैं ब्रजनारी ॥ अबीर गुलाल रंगी रंग सारी ॥७॥ गोपी ज्वाल सबें रंग राचें ॥ वे सब सिंघ पोरिपेनाचें ॥८॥ न्हान चले यमुनाके तीरा ॥ कृष्ण ओर हलधर दोऊ बीरा ॥९॥ प्रभु मुकुंद माधो सुख दायक ॥ युगल किशोर देखबे लायक ॥१०॥

९  राग बिलावल  नवरंगीलाल विहारीहो ॥ तेरें द्वे बाप द्वेमहतारी ॥१॥ नवरंगीले नवल विहारी ॥ हम देहि कहा कहि गारी ॥२॥ द्वेबाप सबे जगजाने ॥ सोतो बेद पुरान बखानें ॥ वसुदेव देवकी जाये ॥ सोतो नंदमहरकें आये ॥३॥ हम बरसानेकी नारी ॥ तुह्येदेहें हंसिहंसि गारी ॥ तेरी भूआ कुंतीरानी ॥ सोतो सूरज देखि लुभ्यानी ॥४॥ तेरी बहनि

सुभद्राक्वारी ॥ सोतो अर्जुन संग सिधारी ॥ द्रुपद सुतासी तेरी भाभी ॥
 सोतो पांचपुरुष मिलि लाभी ॥४॥ हमजाने जू हमजाने ॥ तुम उषल हाथ
 बंधाने ॥ हम जानी बात पहचानी ॥ तुम कबते भये दधिदानी ॥५॥ तेरी
 मायानें सब जग ढूढयो ॥ कोई छोड्योन वारो वूढयो ॥ जनकृष्णा गारी
 गावे ॥ तब हाथ थारकों लावे ॥६॥

१० (१०१) राग सारंग (१०२) मोहन होहो होहो होरी ॥ काल्ह हमारे आंगन
 गारी देआयो सो कोरी ॥१॥ अब क्योंदूर बैठे जसोदा ढिंग निकसो कुंज
 बिहारी ॥ उमगउमग आईं गोकुल की वे सब वाई दिन बारी ॥२॥ तबही
 लला ललकार निकारे रूप सुधाकी प्यासी ॥ लपट गई घनस्याम लालसों
 चमक चमक चपलासी ॥३॥ काजर दे भजिभार भरुवाकें हंसहंस
 ब्रजकीनारी ॥ कहें रसखान एक गारीपर सो आदर बलिहारी ॥४॥

११ (१०३) राग मरी (१०४) तु जिन बोलेरी देन देवा हि गारी ॥ वह हेलबार
 जिंभार जगत को हमहें सुलक्षण नागरनारी ॥१॥ वाके जिये आवे सोई
 गावे हम कहा करें लाज की मारी ॥ होरी में कहो कोन विगोयो कृष्ण
 जीवन लछीराम झंझारी ॥२॥

१२ (१०५) राग बिलावल (१०६) नंदगाम को पांडे ब्रज वरसाने आयो ॥ अति
 उदार वृषभान जानि सनमान करायो ॥१॥ पांडेजू के पायन कों हंसिहंसि
 सीस नवायो ॥ पायधुवाय न्हवाय प्रथम भोजन करवायो ॥२॥ धाय आई
 ब्रजनारी जिन यह सूधोपाया ॥ भानभवन भई भीर फागको खेल मचायो
 ॥३॥ सीसी सरस फूलेल अंगअंगन झलकायो ॥ हनूमान की प्रतिमा मानों
 तेल चढायो ॥४॥ काजरसों मुखमांडि बदन बिंदाजु बनायो ॥ कारे कलस
 श्रवत मानों चपरा चिपकायो ॥५॥ गज गामिनि गोंछनसों तुकमैया
 लपटायो ॥ देहधरें मानों फागुन खेलन ब्रज में आयों ॥६॥ कहुंचंदन कहुंवंदन
 कहुंचोवा लपटायो ॥ ऋतुवसंत जानों केसूकोद्रुम नवफूलन छायो ॥७॥
 काहू गूलरी माला काहू झंगला पहरायो ॥ मानोगज घंटानवीच गजगाह
 बनायो ॥८॥ रंग रह्यो चहोंटियन अंगरातो व्हे आयो ॥ गुंजन को गहनो
 मानो प्रोहित पहरायो ॥९॥ माथेतें मोहनीनैं छाछको माट ढरायो ॥ मानो

काचे दूध सों गिरि गोवर्धन न्हायो ॥१०॥ चोरभोर भई खोर मानो गंगाजल
 ढायो ॥ महादेव की जटा चूरिचरनोदिक आयो ॥११॥ लगत दंत सोंदंत
 गिडिगिडी अंग लगायो मानोहो सुघर संगीत ताल कठतार बजायो ॥१२॥
 श्रीराधा राधा कहि अपनों बोल सुनायो ॥ अरी भानकी कुंवर सरनिहों
 तेरी आयो ॥१३॥ सुनिकें प्रेमवचन गरो राधाभरि आयो ॥ बाबाजू को
 दगलाले प्रोहित पहरायो ॥१४॥ कीरतिजू पांय लागि तातोपय प्यायो ॥
 तोलों खेलत होरी ब्रज में दूल्हे आयो ॥१५॥ साचे स्वांगन सजिकें सबे
 समूह सुहायो ॥ तपा व्यास कोपूत धुत सुकदेव बनायो ॥१६॥ सनकादिक
 चारघों निस ज्यों सन्यास सुहायो ॥ घूमत आयो इंद्र स्वांग उन्मत्त नचायो
 ॥१७॥ ब्रज की बीथनि बीच कीच में लोट पुटायो ॥ चारिबदन को स्वांग
 चतुर चतुरानन लायो ॥१८॥ पंचानन पांचों मुखसों संगीत बजायो ॥
 हरिकोव्हे जुवावरो नारद नाचत आयो ॥१९॥ देखि नंद के लाल जंत्र धरिगाल
 बजायो ॥ महादेव पटतारदेत यह पट प्रभु भायो ॥२०॥ हो हो हो होरी
 हरि हांसीनहँसायो ॥ माया निपुन भई सोनार दहलहुलरायो ॥२१॥
 कामकाम नीभयो सवन को चित्त चुरायो ॥ ललिता जोरी गांठि लाल को
 व्याह रचायो ॥२२॥ गठजोरो वृषभान कुंवरि सों जाय जुरायो ॥ नवलअंब
 के मोर को मोरी मोर बनायो ॥२३॥ पीत पिछोरी तानि छबीलो मंडप
 छायो ॥ फागुन की गारीन को साखा चार पढायो ॥२४॥ होरी की अग्यारी
 करि दूल्हे परनायो ॥ होरी को पकवान सौ भरिभरि झोरिन खायो ॥२५॥
 फूलि फाग की फाग फल्योजिन यह जसगायो ॥ जन हरीया घनस्याम
 वास बरसाने पायो ॥२६॥

१३ (॥ राग काफी ॥) माई बरसाने ते नंदगाम प्रोहित वृषभान को
 आयो ॥ नंदभवन को वैभव अद्भुत निरख परम सुख पायो ॥१॥ पायध्वाय
 कें जल अचवायो धिर आई ब्रजनारी ॥ पालागन कहि फूलफूल गावत
 होरी की गारी ॥२॥ एकन चोवा आनसान ब्राह्मनके मुख लपटायो ॥ एक
 कपोलन मारत मींडत करत आपमन भायो ॥३॥ एकघर धसी घोर अरगजा
 पाछेते गहिनायो ॥ एकतो पकर फेंट झकझोरत इकलोकर कें पायो ॥४॥
 एक चोंहोंटियालेत चोरचित एकजु तारी बजावे ॥ एकतो पकर पोतिया

झटकत हंसिहंसिवाख चढावे ॥५॥ एक अचानक व्हे पाछेते आंखिन में
 दियो हे गुलाला ॥ मींदतदृग यों कहत लुगइन मेरोपारचोचाला ॥६॥
 एकनवासी खाटी छाछिते माथेते गहिनाई ॥ इत यह एक उतेवे अनगिण
 ब्राह्मन कीनबस्याई ॥७॥ गिडगिडात मारचो जाडे को चितवत भ्रोहेतान ॥
 हाहाहों हारचो तुम जीती छांडिदेहु जिजमान ॥८॥ एक कहेयाहि पकरटकियाके
 श्रवनन कों सुखदीजे ॥ एक कहेहा हानीके व्हे घरी एक गहिलीजे ॥९॥
 कहत परस्पर ए व्रजनारी ॥ सबमिल यह बिचारी ॥ इतनी सुतन अथाई
 तेचलि आये कुंजबिहारी ॥१०॥ जोदेखेतो पांडेकों यहीं घेर रहीं व्रजबाला ॥
 मुख पटुकादे निरख निरख मुसिकाने नंदकेलाला ॥११॥ भलीमानसहो भलो
 आदरकियो ॥ भलोभोजन करवायो ॥ सुनों हो कुंवरजू सगरी लुगाईन होंतो
 नाचचायो ॥१२॥ एकनगुल गुलाय गुलचायो एकन कोहुंनीदीनी ॥ जानत
 हों अपने जीय में जेसी पोहों नाई कीनी ॥१३॥ किचकिचाय मेरे लियो
 चोहोंटिया पीठ व्हे गई राती ॥ इननवरजी इनते हों डरपत धुकरपुकर करे
 छाती ॥१४॥ तब ललिता गदगदगद कायो स्याम स्याम कहितेरचो ॥ पांडेजू
 की ललित पीठ पर लालकमल कर फेरचो ॥१५॥ एकन मोकों नयनसेनदे
 एकन अंजन कीनों ॥ एक नमन हरिलियोचितें आंखिन में बूकादीनों ॥१६॥
 कह्यो स्याम अजहूवकसो तिहारे बहुत सुख पेहें ॥ जो चाहोसोई तुमकों
 मनभायो फगुबा देहें ॥१७॥ तुम तो अति उदार हो ढोटा तुम से तुम ही
 दानी ॥ जानजाउ जियमे जगजीवन चीरहरण सुधि आनी ॥१८॥ जोसासुरे
 की दया की जेतो हाहा खाय छूडावो ॥ तो हमछांडें पांडे कों पांडेनाचे
 तुमगावो ॥१९॥ काहेन पांडेगुन प्रगटो हरिसेन दर्ई दृग मोरी ॥ मगन भयो
 तब नाचन लाग्यो बोलत हो हो होरी ॥२०॥ बांधत रोटी पेट फुलायो
 यों टेढी पाग बनाई ॥ अधिकवार बह्म नेंटानरोतन अद्भुत फाग मचाई ॥२१॥
 जान बूझ अनबोली व्हे कें दुरदेखत नंदरानी ॥ निरख निरख नयनन कौतूहल
 मनहीं मन मुसिक्यानी ॥२२॥ इंद्रादिक ब्रह्मादिक शंकर ये सब रहे लुभ्याई
 हम न भये व्रज ब्राह्मन निरख निरख मनमे पछिताई ॥२३॥ भई विमान
 भीर व्रज ऊपर पहोपन वृष्टि करावें ॥ निरख निरख यह सुख नयनन सुरबनिता
 मंगलगावें ॥२४॥ धन्य ब्राह्मन धन्य धन्य नंदसुत धन्य ये व्रज की नारी ॥

धन्य धन्य ब्रज के ब्रजवासी धन्य स्याम बलहारी ॥२५॥

१४ (३६) राग काफी (३६) माई समध्यानतें ब्राह्मन आयो भरहोरी के बीच भरुवा ॥ घेरलियो घरमांझ लुगाईन मूंडलगाई कीच ॥१॥ काहू लई खसकाय परदनी काहू कियो कजरारो ॥ पिसी पिठी गोंछन लपटाई ब्राह्मन को कहा चारो ॥२॥ काहू गुदीझगुला पहेरायो काहू गूलरी माला ॥ तारी देवे महीगन गावें हैंसि हैंसि ब्रजकी बाला ॥३॥ जसुमति लियो बचाय बापरो निरमल नीर न्हावायो ॥ नये वसन पहेराय गुदीते झगुला आनि छिडायो ॥४॥ तब ब्राह्मन निधरक व्हे बेठ्यो पहिर ऊजरे कपरा ॥ एक ज्वालिनि ने आनि उलेड्यो सरीकीचको खपरा ॥५॥ देख विमल गह्वो चतुरंग ने भलें भले करि गावें ॥ अति खिलवार मोधुवापांडे खेलेंहीं सुख पावें ॥६॥ पेजबांधि जो सुरपति नाचे तो ऐसी फागन माचे ॥ पेट फुलाय वदन टेढोकर विफरयो ब्राह्मन नाचे ॥७॥ गहेन जोई माई देपांडे हमतो फगुवा चाहें ॥ एकनकान पकर गुलचायो काहू अंठी बाहें ॥८॥ जानि सासुरेको यह ब्राह्मन मोहन कछु बन कहहीं ॥ कृष्ण जीवन लछी राम के प्रभु हरि सकुच सकुच जिय रहहीं ॥९॥

१५ (३६) राग धमार (३६) प्रोहित वृषभानु कौ हो आयी नंदराई दरबार ॥ध्रु०॥ सिंघ पौरि खेलें ब्रज-बाला छिरकति कुंमकुम नीर ॥ ब्रज की बीथिनि खेल मच्यौ हो भई परसपर भीर ॥१॥ घेरि लयी ब्राह्मन चहुँदिस तैं लीने बसन उतारि ॥ नैन औंजि कैं दयौ दिठौंना बेंनी गुही सेंबारि ॥२॥ तन सुख चीर, लाह कौ लहिंगा, अँगिया बनी कटाब ॥ कंठ पोति, कर पौहौंची सोहै, बाजूबंद जड़ाब ॥३॥ तिया-भेष अदभुत जु बन्यौ है कहति सबैं ब्रज-नारि ॥ दै पट तार नचावैं पांडे, गावति हैं मिलि गारि ॥४॥ उत तैं आवति हैं नंद-नंदन, गोप सखा संग जोरि ॥ प्रोहित की गति देखि साँवरो हँसति, मुदित मुख-मोरि ॥५॥ तब मोहन जुवतिन मधि आए पांडे दियौ छुड़ाई ॥ फगुवा बहुत मैगाई सबन कौं देति है हरखि बुलाई ॥६॥ देति असीस चलीं ब्रज-बनिता, चिर जियौ ब्रजराई ॥ जाके राज सदाँ इहि बिधि सौं, खेलति है हम आई ॥७॥ तिहिं औसर पांडे कौं दीने, नौतन बसन मैगाई ॥ चल्न्यौं

बहुरि बृषभानु-पुरा कौं फूल्यो अंग न माई ॥८॥ ब्रह्मादिक, सनकादिक,
नारद, रहे बिमानन छाई ॥ यह छबि निरखि बारि तन, मन, धन, 'विष्णुदास'
बलि जाई ॥९॥

फागण सुद १५ होली उत्सव

१ (ह्रीं) राग गोरी (कछु) सबदिन तुम ब्रजमें रहो हरि होरीहे ॥
कबहुन मथुरा जाओ ॥ परब करो घर आपने ॥ कुशल केलि निबाहो ॥१॥
परवा पिय चलिये नहीं ॥ सब सुखको फलफाग ॥ प्रकट करो अब आपनो
अंतरको अनुराग ॥२॥ मानो द्वेज दिन सोधके भूपति कीयो काम ॥ शशि
रेखा सिर तिलकदे सब कोऊ करे प्रणाम ॥३॥ कनक सिंहासन बैठके युवतिन
के उर आन ॥ अलक चमर अंचल ध्वजा घुंघट आत पतान ॥४॥ फागुन
मदन महीपति इहि विध करहे राज ॥ पंद्रह तिथि भरवरण हूं सादर क्रिया
समाज ॥५॥ तीज तिहूं पुर प्रगटियो अपनी आन नरेश ॥ सुन मगमग
डफ दुंदुभी सोई करिये सवेदेश ॥६॥ चोथ चहुंदिशन चालिये यह अपनी
इकरीति ॥ मेरे गुण कहे निर्लज्ज न्है छांड सकुच कुलनीति ॥७॥ पांचें
परमित परहरो चलहु सकल इकचाल ॥ नारी पुरुष एकत्र करो ॥ वचन
प्रीतिपाल ॥८॥ छटिछे रागछे रागिणी ताल तान बंधान ॥ चदुलचरित्र
रतिनाथके सिखबो अति अभिधान ॥९॥ सातें सुन सब सजचले राजाकी
रुचि जान करत क्रिया तैसीसबे आयुष मांथे मान ॥१०॥ आटे डर उनमानके
सबन मतो मत्यो एक ॥ नृपजु कहे सोई कीजिये क्यों राखिये विवेक ॥११॥
नवमी नवसत साजके कर सुगंध उपहार ॥ मानो चले मिल मेरके मनसिज
भवन जुहार ॥१२॥ दसेंदसो दिश शोधके बोले राजाराय जगजींत्यो बल
आपने ज्ञान वैराग्य छुडाय ॥१३॥ सुन आई एकादशी ॥ बोले सबसिर
नाय ॥ ढोल भेरि डफ बांसुरी ॥ पटह निसान बजाय ॥१४॥ देखभले भट्ट
आपने ॥ द्वादशी घोस विचार ॥ काज करो रुच आपने ॥ न्है निशंक
नरनार ॥१५॥ रथरावक पावक सजे ॥ खरन भये असवार ॥ धूर धातु
घट रंगभरे ॥ करण यंत्र हथियार ॥१६॥ जहां तहां सानेचली ॥ मुक्त कच्छ
शिरकेश ॥ आप आप सूझे नहीं ॥ राजारंक आवेश ॥१७॥ जहां सुनत

तप संयमी ॥ धर्मधीर आचार ॥ छिरकें जाय निशंक न्है ॥ तोरें पकर
 किवार ॥१८॥ जे कबहू देखी नहीं ॥ कबहू सुनी नहीं कान ॥ तिनकुल
 वधू नारीनके ॥ लागे पुरुष पराण ॥१९॥ धायधरे बलकुल वधु ॥ पर
 पुरुष नहीं पहिचान ॥ मातपिता पति बंधुकी ॥ छूट गई सब कान ॥२०॥
 भस्मभरें अंजन करें ॥ छिरकत चंदन वार मर्यादा राखें नहीं ॥ कटिपटलेहिं
 उतार ॥२१॥ तेरस चौदस मासमें ॥ जग जीत्यो डरडार ॥ शठ पंडित
 वेश्या वधू ॥ सबे भये एक सार ॥२२॥ पून्यो प्रकट प्रतापते दुरो मिले
 पालाग ॥ जहां तहां होरी लगी ॥ मानोमवासिन आग ॥२३॥ सब नाचें
 गावें सबें सबहि उडावें छार ॥ साधु असाधु न पेखही बोले बचन विकार
 ॥२४॥ अतिअनीत मतिदेखकें परिवा प्रकटी आन ॥ विमल वसन ज्यों
 स्यामको मर्यादा की कान ॥२५॥ आवतही बिनती करी उठजोरे हंस हाथ ॥
 वरण धर्म सब राखिये कृपा करहु रतिनाथ ॥२६॥ आज्ञा दई रतिनाथने
 नृप समुझो मनमांह ॥ जायधर्म अपुने चलो बसो हमारी यांह ॥२७॥ सूर
 कहां लग वरणिये मनसिजके गुणग्राम ॥ सुनो स्याम यह मांसमें कियोजु
 कारण काम ॥२८॥ कान्ह कृपा कर घररह वरजेमथुराजात ॥ सरस रसिक
 मणि राधिका कही कृष्ण सोबात ॥२९॥

२ (है) राग गोरी (है) ढोटा दोऊ रायके लाल खेलत डोलत फागहो ॥
 लालेजो देखे सो मोहियो ओर प्रतिछिन नव अनुरागहो ॥१॥ सखा संग
 सबबोलकें घरघरते दे तब गारी ॥ सुनत कुंवर कोलाहला निकसी घोषकुमारी
 ॥२॥ भूषण वसन जो साजियो उरगज मोतिन हार ॥ झूमक चेतव गावही
 घोषराय दरबार ॥३॥ बाजे बहुत बजावहीं डफ दुंदुभी कंठताल ॥ बलमोहन
 मध्य नायका चहुंदिश नाचत ग्वाल ॥४॥ पिचकाई कर कनककी अरगजा
 कुंकुमघोर ॥ बलराम कृष्ण को छिरकहीं हसवचली मुखमोर ॥५॥ कोलाहल
 सुन आइयो वल्लभ कुलके राज ॥ सिंघद्वारपें बैठियो बडरे गोप समाज ॥६॥
 ब्रजरानी तहां आइयो जहां बैठे नंद उपनंद ॥ सोधे ठोडी लीपियो आंजत आंख
 सुछंद ॥७॥ यह विध होरी खेलही अरगजा पंक सुगंध ॥ विधसों होरी
 लगाइयो पून्यो पूरनचंद ॥८॥ परिवा वसन जो साजियो न्हाय धोय आनंद ॥

गोविंद बल वंदन करे जय जय गोकुलकेचंद ॥९॥

३ (१५) राग धनाश्री (१५) होरी के रंगीले लाल गिरिधर रंग मचायो ॥
केसरि सुरंग गुलाल अरगजा मदन वसंत जमायो ॥१॥ तालमृदंग झांझ
डफ वीना होरी राग बनायो ॥ सुनि निकसी ग्रहग्रहते सुंदरि हावभाव फलपायो
॥२॥ आवत भावत गारिनगावत रसभरि लाल खिलायो ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर
युवतिन सों होरी त्योहार मनायो ॥३॥

४ (१५) राग सारंग (१५) भेरि बाजै भरुवा नाँचे आगे गधैया दौरे जू ॥
ता पाछे सब गोप के लरिका हो हो होरी बोले जू ॥१॥ कमर हलावैं बाँह
मरोरे अधरन कौं रस लेवे जू ॥ नैन नचावैं बगल बजावै मुख पै गुलचा
देवेजू ॥२॥ भरुवाजी को मूँड़ मुँड़ायो निलज निपट अंग खोलै जू ॥ 'रामदास'
प्रभु या होरी में ढोल ढोल की बोले जू ॥३॥

५ (१५) राग बिहागरो (१५) रंगन रंग हो हो होरी खेलें लाडिलो ब्रजराजको ॥
सांवरे गात कमल दल लोचन नायक प्रेम समाजको ॥१॥ प्रथमहीं ऋतु
वसंत बिलसे हुलसे होरी डांडो रोप्यो ॥ मानो फाग प्राण जीवन धन आनंदित
सब ब्रज ओप्यो ॥२॥ मृगमद मलय कपूर अगर केसर ब्रजपति बहुघोर
धरे ॥ सरस सुगंध संवार संग दीये रंगन कंचन कलश भरे ॥३॥ प्रेमभरी
खिलवारनके हित सुखके साज सिंगार कियें ॥ भाग्य अपार जसोदा मैया
वारवार जलवार पियें ॥४॥ भई हे रंगीली भीरद्वारन प्रीतम दरशन कारन ॥
अबबनठन निकसे मंदिरते कोटि मदन कीये वारन ॥५॥ फेंट भराय लई
जननीपें आज्ञा लई ब्रजईशते ॥ नंदराय तब रत्न पंचरचि बांध्यो गिरिधर
शीशते ॥६॥ तापरमोर चंद्रका सोहे ग्रीवढरन लहकात हैं ॥ मदनजीत को
बानो मानो रूप ध्वजा फहरातहें ॥७॥ तेसेई सखा संगरंग भीने हरख परस्पर
मनमोहे ॥ वरण वरण युवतिन के कमल मानों अंबर दिन मणि संग सोहे
॥८॥ आनंदभर बाजे बाजत हैं नाचत मधुमंगल रंगकिये ॥ हरिकी हसन
दशननकी किरण नयननकी ढरनमनमोहि लिये ॥९॥ कोऊ द्वारे कोऊ चढ
अटा कोऊ खिरकिन वदन सुहाये ॥ गोकुल चंद्रमा देखन कों मानो चंद्र
विमानन चढचढ आये ॥१०॥ अबीर गुलाल उडाय चले देखत जेसें सब

कोऊ हरखे ॥ छिरकत फिरत छेल नवरंगी कहा कहिये रस नवघन बरखे ॥११॥ राधा दृष्टि परत नहीं मोहन निरख नयन मन धूमेंहों ॥ सन्मुख व्हेय पिय कल्प तरुवर महाभाग्य रसफल झूमेहो ॥१२॥ प्रमदा गण मणि स्यामा रसिक शिरोमणि सों खेलन आई ॥ दुहुँदिश शोभा उमग रंग मच्यो मानवेणु ध्वनि लाई ॥१३॥ नयनन बेनन खेलत बधू गेंदुक नवलासिन मारमची ॥ कमल नयन करले पिचकाई मृगनयन सेनन भ्रूहनची ॥१४॥ छिरकी छेल छबीली भांतन मनहरणी जोबन बारी ॥ सब अंग छींट बनी पिय वसनन फुलीं छबि फुलवारीं ॥१५॥ पहोप पराग उडाय दाव रचि अछन अछन नेरे आई ॥ दौर दामिनीं घनघेरचो पिय बात बनीं सब मनभाई ॥१६॥ कोऊ मुख मांडत देगलबईयां कोऊ पोंछत आछी छबिसों ॥ अलकन भोहन मूल रंग रह्यो शोभा कहियन जाय कविसों ॥१७॥ कोऊ रचि रुचि पान खवावत पुलकित अधरन परस किये ॥ कोऊ भुज गहि डहकाय फगुवा मागत पिय नयन चैन दिये ॥१८॥ राधा नागरि स्याम सुंदरपर प्रीत उमग केसर ढोरी ॥ महामनोहर ताको राजा अभिषेक किये कहें हो हो होरी ॥१९॥ सरस्वती सहित महामुनि मोहे यह शोभा दंपति हेरे ॥ कहि भगवान् हित रामराय प्रभु हैंस चितवन वसीमन मेरे ॥२०॥

धमार के पद

१ (११) राग - बिलावल (११) नंदसुवन व्रजभावते फाग संग मिलि खेलोजू ॥ आज हमें तुमें जानवी जो जुवती दल पेलोजू ॥१॥ रसिक सिरोमनि सांवरे श्रवन सुनत उठिधाए ॥ बलिसमेत सब टेरिकें घरघरते सखा बुलाये ॥२॥ बाजे बहु विधि बाजहीं ताल मृदंग उपंगा ॥ डिम डिमि दुंदुभी झालरी आवज कर मुख चंगा ॥३॥ उतते नवसत साजिकें निकसी सकल व्रजनारी ॥ झुंडन आई झुमिकें कलगावत मीठी गारी ॥४॥ केसरि कुंकुम घोरिकें भाजन भरि भरि लाई ॥ छूटी सनमुख स्यामके करन कनिक पिचकाई ॥५॥ उतहिं समाज गोपालसों भरेमहारस खेलें ॥ चोवा मृगमद सानिकें युवती यूथ पर मेलें ॥६॥ सोभित बालिक वृंद में हरि हलधर की जोरी ॥ उतहि चतुर चंद्रावली सबगुन निधि राधा गोरी ॥७॥ सोहवदे ललिता कहे कोऊपगनपि

छोडे डारे ॥ इतनायक उतनायका कोजीते कोहारे ॥८॥ टिके परस्पर देखिकें खेल मच्यो अति भारी ॥ इतउत ओटनमानही चौंकिपरे नरनारी ॥९॥ युवतियूथ दल पेलिकें छेकिसुबल गहिलीनो ॥ कंठ उपरना मेलिकें खेंचि आप बसकीनो ॥१०॥ सुनो सुबल साचीकहूं तो भलें छूटन पाओ ॥ छलबल वानिक वानिकें नेंक हलधरकां पकराओ ॥११॥ बहोरी सिमिटि ब्रजसुंदरी संकरषण गहिघेरे ॥ फेंट गही चंद्रावली तब उलटि सखन तनहेरे ॥१२॥ सोंधों नावें सीसते ॥ एक काजर लेकें आई ॥ मोहन हंसि मुरियों कझो देखो दाऊ जू आंखि अंजाई ॥१३॥ फिर प्यारी नागरि राधिका तके स्याम जहां ठाडे ॥ ओर सखिन की ओट बहे गहे ओचका गाढे ॥१४॥ देखसखी चहुंओरतेन दौरि आय लपटानी ॥ अंगअंग बहुरंग सोरंगे करत बात मनमानी ॥१५॥ केसरिसों पटवोरिकें श्रीमुख मांड्यो रोरी ॥ तारी हाथ बजायके बोलत हो हो होरी ॥१६॥ मगनभई ब्रज सुंदरी नवरस भीज्योहीयो ॥ इत अगज उत स्यामपे दुहुंदिस फगुवा लीयो ॥१७॥ परसि परम सुख उपज्यो भयो त्रियन मन भायो ॥ सादर चारु चकोर ज्यों मानो विधु प्रीतम पायो ॥१८॥ नागरि अति अनुराग सों मुदित वदन तनहेरें ॥ सर्व सवारें वारनें एक अंचल हरिपर फेरें ॥१९॥ चत्रभुज प्रभु संग खेलहीं यह विधि घोषकुमारी ॥ सब ब्रजछायो प्रेमसों सुखसागर गिरिधारी ॥२०॥

२ (॥१॥ राग बिलावल ॥१॥) गोपीहो नंदराय घर मांगन फगुवा आई ॥ प्रमुदित करहिं कुलाहल गावत गारि सुहाई ॥१॥ अबला एक अगमनी आगे दईहे पठाई ॥ जसुमति अति आदरसों भीतर भवन बुलाई ॥२॥ तिनमें मुख्य राधिका लागत परम सुहाई ॥ खेलो हंसो निसंक संकमानों जिनकाई ॥३॥ बहुमोली मनिमाला सबन देहुं पहराई ॥ मनिमाला ले कहाकरें मोहन देहु दिखाई ॥४॥ बिनु देखेंसुंदर मुख नाहिन परतहाई ॥ मात पिता पति सुतग्रह लागतरी बिषमाई ॥५॥ सुनिकें प्रेम बचन दामोदर दई दिखाई ॥ घरमेतें घनश्याम भुजा भरि भामिनि लाई ॥६॥ नवसिख सुंदरसींवा रूपलावन्य अधिकाई ॥ रही ब्रजबधू निहारि रंकमानो निधिपाई ॥७॥ अरगजा चंदन वंदन चहुंदिसते लेधाई ॥ भरति भांवते लाले करन कनिक पिचकाई

॥८॥ दरस परस पिय अतिसय सुंदरि सब लपटाई ॥ कुचभुज वीच किचमची
 अतिश्रम की झपटाई ॥९॥ मंडित करहिं कपोल एक ले काजर आई ॥
 आलिंगन चुंबन रस नहीं सुरझत सुरझाई ॥१०॥ अंचल सों पटजोरें रीझि
 सकुच सिरनाई ॥ दंपति सौभग संपति कोऊ पीवत न अघाई ॥११॥ यह
 लीला अति ललित सोतो नंदरानी भाई ॥ हरषित उदित मुदित सबहिन
 की करत बडाई ॥१२॥ पटदुकूल आभूषन चोली दिव्य मगाई ॥ जसुमति
 अति प्रफुलित मन सुंदरि सब पहराई ॥१३॥ यह मेरे आंगन ग्रह आवोरी
 नितमाई ॥ नेन श्रवन सुखभयो लालजूकी कीरति गाई ॥१४॥ निकसी
 देत असीस जियो तेरो मोहनराई ॥ यह ब्रज माधोदास रहो नितनंद दुहाई
 ॥१५॥

३ (११) राग बिलावल (११) बरसाने की गोपी मांगन फगुवा आई ॥ कीयो
 हे जुहार नंदजूकों भीतर भवन बुलाई ॥१॥ एक नाचत एक गावत एक
 बजावत तारी ॥ काहे मोहन राय दुरि रहे मैया यदि वावत गारी ॥२॥
 आदर देत ब्रजरानी अबनिज भागि हमारे ॥ प्रीतम सजनकुलवधू पायेदरस
 तुझारे ॥३॥ सुने कुंवरि मेरी राधे अबही जिन मुख मांडो ॥ जेवत स्याम
 सखन संग जिन पिचकाई छांडो ॥४॥ केसरि बहोत अरगजा कित मोहन
 परडारो ॥ सीतलगे कोमल तन तुमही चित्त विचारो ॥५॥ अंचल ऊपर
 देरही दोऊ मैया व्रनतोरी ॥ बरजत भर कुंकुमा निर्भय नवल किसोरी ॥६॥
 कहत रोहिनी जसोदा ओली ओडति आगें ॥ जायभरो ब्रजराजे मोहन दीजे
 मांगें ॥७॥ मोहन मांगे पैयें तो दिन दसहमहिं देहो ॥ गोपकुंवर के पलटें
 जो चाहो सो लेहो ॥८॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा सुनत अचानक आये ॥
 कंचन माट भरे दधि लें गोपिन सिरनाये ॥९॥ ग्वाल गुपाल सखा सब
 हँसत करत किलकारी ॥ दूध लीयो भीतरते छिरकीं सब ब्रजनारी ॥१०॥
 जो सुख सोभा बाढी कहत कहा कहि आवे ॥ ललिता कुंवरि कुंवर को
 अंचल गहि गहि लावे ॥११॥ भये निरंतर अंतर तजि वल्लभ ब्रजबाला ॥
 गिरि गिरि परत गलिनमें हारतोरि मनिमाला ॥१२॥ प्रभु मुकुंद ब्रजवासी
 अटक कोनकी माने ॥ कहत मैया माधोजन चलो भरो वृषभाने ॥१३॥

इतनो मांग्यो पांऊं देहु वृंदावन वासा ॥ कुंवर कुंवरि तहां विहरत चरन कमलकी आसा ॥१४॥

४ (॥१॥ राग बिलावल (॥२॥) परिवार प्रथम कुंवर अति विहरत गोपिन संगी ॥ तालमुरज बहुबाजे ओर आनक मुख चंगा ॥१॥ ढोल भेरि ढोलक छबिवेन मृदंग उपंगा ॥ रुंज मुरज ओर दुंदुभी झालरि तरुलतरंगा ॥२॥ विविध पखावज आवज झांझबीना डफजोरी ॥ विचविच गोमुख सुनीयत विच मुरली की घोरी ॥३॥ ग्वाल परस्पर राजें मनिमय जेरी हाथा ॥ वूका कनिक पिचकाई भरि भरि छिरकत गाथा ॥४॥ चलो सखी देखन जैयें विहरत सिंघदुवारा ॥ सुनिमन हरखि सकल त्रिय लागीं करन सिंगारा ॥५॥ नील वसन तनसारी लहेंगा लालसुरंगा ॥ कंचुकी ललित कुचनपर मानो लजित अनंगा ॥६॥ सोंधे सीस सरस करिवेनी सुमन संभारी ॥ मानो कनिक खंभलगि झूमत पन्नगनारी ॥७॥ सीसफूलर चितिलक भृकुटी बिच बंदन रोप्यो ॥ मानों सरासन साजि वानमनमथ कोप्यो ॥८॥ बंदन मांगन मधि अति राजत कच सुढारे ॥ मानों शेष सीसपर ठाडो अक्षत डारें ॥९॥ नैनकुरंग श्रगनजुग चारुचक्र बिराजे ॥ मानहुं शशिवनि पर देखियत रविरथ साजे ॥१०॥ नखसिखतें जुवति बनि गई सब सिंघ दुवारा ॥ हमारो फगुवा देहु मोहन नंदकुमारा ॥११॥ काहे मोहनराय भाजो काहे ओले लेहो ॥ कुमुद बंधु जो निकसत नेंकु दिखाईदेहो ॥१२॥ फगुवा को मिसझूंठो हरि दरसन की आसा ॥ देखन कों जीय तरसत लोचन मरत पियासा ॥१३॥ सुनिमन हरषि जसोमति उनकों आसन दीनो ॥ कुंकुम जलसो घोरि सबन मुख मंजन कीनो ॥१४॥ वरन वरन पटदीये गोदन भरी जु मिठाई ॥ यह विधि नंद घरनी ब्रज की तरुनी पहराई ॥१५॥ गान करत मनहरत मुदित मनदेत असीसा ॥ तुम्हारो कुंवर जसोमति जीवो कोटि वरीसा ॥१६॥ जिन देखे नैन सिरात अघातन पीवत प्यासा ॥ तिनकी चरन कमल रज पावे माधो दासा ॥१७॥

५ (॥१॥ राग बिलावल (॥२॥) नंदगाम की गोपी बरसानें चलि आई ॥ माँगति फगुवा कुंवरि पे कीरति जू लेति बुलाई ॥१॥ इक गौरी इक साँवरी देति

वृषभानु जु कों गारी ॥ झील सरस सुर गावति हैंसि हैंसि दे तब गारी ॥२॥ नाँचति करति कुलाहल तन की दिसा बिसारी ॥ भीजि रही उर अंतर विकल भई अति भारी ॥३॥ लीए गुलाल अरगजा करन कनक पिचकारी ॥ तन तनसुख पहिरे अति रँगरँग रंजित सारी ॥४॥ स्यामा जु निकसो बाहिर हम तुम खेलैं होरी ॥ कमलन मार मचाई गई वृषभानु की पौरी ॥५॥ सुनि मनमोहन धाए जहँ जुबती समुदाई ॥ देखि नंद कैं लाले स्यामा जू बुधि उपाई ॥६॥ हाटक घट केसरि भरि ले मोहन सिर नावैं ॥ भए निरंतर अंतर रीझि रीझि सुख पावैं ॥७॥ सरबसु बारै बारैं तन मन धन बिसरावैं ॥ चोवा आदि साख गोरा मृगमद बरसावैं ॥८॥ चंदन बंदन बूकाल श्रीमुख लपटावैं ॥ मोहन बदन निहारी कैं अपुनैं दृगन सिरावैं ॥९॥ इक सखी उठि दोरी कीरति जु गही लीनैं ॥ हम तुम खेलै फागु आजु अपुनैं कर लीनैं ॥१०॥ एक सखी लै धाँई कैं कुँमकुम घट भरि लीनैं ॥ कीरति जु पै डारति रँग रँग में अति भीने ॥११॥ फगुवा दीयै हिं बनै सुनहु कीरति माई ॥ पट दुकूल आभूषन देति सबन मन भाई ॥१२॥ यह बरसानैं को सुख कहति कहा बनि आवै ॥ निरखि निरखि सुर गन सबै लै पुहुपन बरखावैं ॥१३॥ ब्रज जुवति प्रफुलित मन निकसि देति असीसा ॥ कीरति जु तुमारी सुता जीवहु कोटी बरीसा ॥१४॥ इहि बिधि होरी खेलि ही ब्रज बासीन सुख पायौ ॥ फागु बडो त्यौहार हैं सबहिन मिलि कैं मनायों ॥१५॥ जुगल किसोर भाव तैं बनी हैं अनुपम जोरी ॥ 'गोबिंद' अपुनों तन मन धन बलि बलि कीनों री ॥१६॥



६ (११) राग बिलावल (११) फगुवा माँगन आई घोष सबै ब्रजनारी ॥ चंद्रावलि ब्रज मंडल मधि राधिका प्यारी ॥१॥ देहु राई जु फगुवा कुँवरि सब माँगन आई ॥ जसुमति गहने देहु हमें वृषभानु पठाई ॥२॥ गिरिधर तुह्यारी जु मैया आजु वृषभानु बुलाई ॥ आनंदराई बिछौना कीने सब मिलि गारी गाई ॥३॥ यह सुनि आनंद राई हैंसे औरु हैंसि हैंसि फूले ॥ फगुवा दैन कों आछे आछे सँचोना खोले ॥४॥ बहु मोलिक अभूषन सारी बहुत मँगाई ॥ जसुमति अति प्रमुदित मन ब्रज-तरुनी पहिराई ॥५॥ चिर जीवौ ब्रजराज कुँवर बलि जु

गिरिधारी ॥ रानी जसुमति चिर व्है रहो, नित अबिचल भारी ॥६॥ ऐसैई फगुवा दै दै हिं सबन ऐसैं पहिरावों ॥ चंद्रावलि राधा जु कौं ऐसैई लाड़ लड़ावों ॥७॥ रतन जटित सिंघासन अपुनो कुँवर बेठायो ॥ 'श्रीविठ्ठल गिरिधर' कों हँसि हँसि फागु खेलायो ॥८॥

७ (॥६॥ राग बिलावल (॥६॥) ग्वालिनी फगुवा माँगनि आई ॥ आजु चली नँद जू की पौरी अद्भुत खेलि मचाई ॥१॥ सुरँग गुलाल अबीर उड़ावति, करन कनक पिचकाई ॥ झाँझ झालरी रबाब किन्नरी बाजे बहुत मँगाई ॥२॥ भरे अरगजा केसू, केसर सौंधो बहुत सुहाई ॥ ताल, मृदंग, उपंग, चँग, रँग, भेरि दमाम बजाई ॥३॥ या विधि तैं नंद जू के द्वारे बहु विधि खेल मचाई ॥ देखि जसोमति मन अति प्रफुलित अंग-अंग सुख पाई ॥४॥ सब मिलि आई धाई महिर पै मोहन देंओ बताई ॥ सुनि बलबीर आई ठाढ़े भए चंद्रावलि पकराई ॥५॥ तब नंद लाल धाई जुवतीन पै चहुँ दिसि तैं जुरि आई ॥ मोहन पकरि स्यामा बस कीनों होरी बोलि सुनाई ॥६॥ यह संकरषन देखि हँसे मन, मोहन पकरचों जाई ॥ एकनु घेरि लेति मुख चुंबन, एकनु, काजर ल्याई ॥७॥ या बिधि होरी खेलति हैं जु भेट परसपर माई ॥ नंद-नंदन वृषभानु किसोरी गोपी मन हुलसाई ॥८॥ अब हीं फगुवा देहु लाल जू तौई छूटन पाई ॥ तब हीं मान लियौ नंद लाला कियौ सबन मन भाई ॥९॥ एकु हि नैन आँजि बृजनाथ हि एकनु पान खवाई ॥ एकु हि बाम भाग होई ठाड़ी मुरली लेत छिड़ाई ॥१०॥ एकु हि केसर घोर सुरंगी सौंधों सिस नाई ॥ एकुई अंगिया झटकति पटकति तारी दै दै नँचाई ॥११॥ तब हि नारी को भेख बनायौ सेंदुर मांगि सुहाई ॥ सारी सुरँग रंगी बहु रँग तैं पुहुप माल पहिनाई ॥१२॥ श्री राधा नंद लाल भई नव सखि एकु लई बुलाई ॥ उन बलबीर की भेख कियों है श्री स्यामा मुरली बजाई ॥१३॥ यह मुख लखि सुर नर मुनि मोहे, कोटि अनंग लजाई ॥ जोरी अद्भुत लीला-सागर, 'सूरदास' बलि जाई ॥१४॥

८ (॥६॥ राग बिलावल (॥६॥) परिवा प्रान समान राधा जू जोरी बनी री ॥ दूज दमन अति लाल अधर प्रवाल सनी री ॥१॥ तीज तुलनी है गुपाल

परम सिंगार धरे री ॥ चौथ चमर जू धाई और फूल गुल भरे री ॥२॥
 पाँचे पंचक बैन नैन कौं रंग रचे री ॥ छठे छले बनमाल राधा सेज सचे
 री ॥३॥ सातैं सुंदर स्याम नटवर भेख धरें री ॥ आठौं अंग लगावो बाकी
 सामल देह री ॥४॥ नौमी नवल किसोर न आयो चंद धरे री ॥ दसमी
 दसो अवतार घर-घर बाजि रहे री ॥५॥ एकादसी मोतिन हार लटकन
 लटकि रहे री ॥ द्वादसी तिलक लिलाट हीरा लाल बने री ॥६॥ तेरस
 तरुनी गुवाल अंगो अंग चीर दए री ॥ चौदस लीऐ लीर सब नंद भवन
 गए री ॥७॥ पून्यों होरी लाल खेले तन-मन स्याम लए री ॥ नंद जू दे
 बहु दान जसुदा चीर दए री ॥८॥ मन में अति आनंद सबन तन साज
 सजे री ॥ जन 'परमानंददास' हरि के चरन भजे री ॥९॥

९.  राग बिलावल  नंदराय लला ब्रजराय लला तुम राधा रस
 बस किनेहो ॥ नंदराय लला ब्रजराय लला गुन प्रेम रूप रस भीनेहो ॥१॥
 यह सुरति समागम नीकी ॥ हों कहत तिहारे जीकी ॥२॥ यह कोक कला
 सबजाने ॥ ताते तुमरे मनमाने ॥३॥ यह प्रति छिन नौतनलागे ॥ भयो
 मदन विकल फिरिजागे ॥४॥ यह गौर वरन तन सोहे ॥ मुरलीधरको मनमोहे
 ॥५॥ नखसिख परमसुदेसा ॥ यह मदन मनोहर वेसा ॥६॥ यह भागि
 सुहागकी पूरी ॥ घनस्याम सुजीवनमूरी ॥७॥ यह खेलत पियसंग होरी ॥
 बरसंग लियें सतगोरी ॥८॥ मिलि बंसीवट तर आई ॥ सबसोंज फागकीलाई
 ॥९॥ तब पुलिन तिरोछी धाई ॥ करलियें कनिक पिचकाई ॥१०॥ गिरिधरन
 कल्प तरुतीरा ॥ संगगोप कुंवर बलवीरा ॥११॥ डफताल वांसुरी बाजे ॥
 कोऊ खेलत हँसत न लाजे ॥१२॥ नवसतसजि आई गोरी ॥ पति मातपिता
 की चोरी ॥१३॥ कलगावत मीठी गारी ॥ रस खेल मच्यो अतिभारी ॥१४॥
 तहां ऊडत गुलाल अबीरा ॥ चोवा चंदन अरगजा नीरा ॥१५॥ तहां भरत
 भरावत नारी ॥ रंगरंजित भीनी सारी ॥१६॥ एक हो होरी बोलें ॥ लटकत
 पियकेसंगडोलें ॥१७॥ एकनाचत गावतधावें ॥ पकरन पियकों नहीं पावें
 ॥१८॥ चंद्रावलि पीय संग दौरी ॥ राधा पकरे भरि कोरी ॥१९॥ श्रम छूटि
 गई उरगाती ॥ सुंदरमोहन रंग राती ॥२०॥ तब सुगह गहे गोपाला ॥
 छीनी मुरली ओर माला ॥२१॥ नैना आंजि मांडि मुखरोरी ॥ हँसि तारी

देतकिसोरी ॥२२॥ एक कुचक पोल कर परसे ॥ सब सुख पिय प्यारी
बिलसे ॥२३॥ एक अंचल सों पटजोरे ॥ ललितादि सखी व्रनतोरें ॥२४॥
मनको मान्यों हम करिहें ॥ नहीं लोक वेदतें डरहें ॥२५॥ तुम इन नेनन
के तारे ॥ धनजीवन प्रान हमारे ॥२६॥ सब सखा छुड़ावन आए ॥ मिलि
सुबल श्रीदामा धाये ॥२७॥ फगुवाले मोहन मेले ॥ मिलि फाग भली विधि
खेले ॥२८॥ वृखभान कुमारी जीती ॥ यह प्रगट प्रेम रस रीती ॥२९॥
विधुरी मनि मोतिन माला ॥ फिरि मुदित मदन गोपाला ॥३०॥ कंचुकी
कसि टूटी लर छूटी ॥ मानो मदन सुरति पथलूटी ॥३१॥ अंगअंग अनंगन
मोहे ॥ ललिता प्रियके संग सोहे ॥३२॥ ब्रजगोपिनको धनजीयो ॥ राधाबस
मोहन कीयो ॥३३॥ यह लीला त्रिभुवन भावे ॥ जनमाधो जुगजुग गावे
॥३४॥

१० (१०) राग बिलावल (१०) फाग खेलन ब्रजसुंदरी नंदराय घर आई ॥
जसुमति अति आदर देत रोहिनी लेत बुलाई ॥१॥ गावत गीत सुहावने
हैंसिहैंसि देतवगारी ॥ दुरियेन होरी खेलिये नंदकुंवर गिरिधारी ॥२॥ सुनि
मृदुवचन त्रियनके निकसेहें मोहन लाला ॥ मनहुं कनिक कमल ढिंग आवत
मधुप रसाला ॥३॥ ताल मृदंग उपंग चंग वीना डफ राजे ॥ दुंदुभी डिमडिम
झालरी बिचबिच मुरली बाजे ॥४॥ कनिक कलस केसरि भरे संग लियें
सतगोरी ॥ चोवा मृगमद गोरा चंदन वंदन रोरी ॥ अरगजा भरिभरि पिचकाई
फेंटन सुरंग गुलाला ॥ छिरकत भरत परस्पर हो हो बोलत ग्वाला ॥६॥
मोहन गोपिन छिरकत केसू केसरि नीरा ॥ इतत्तें तकि तकि दृगन भरत
मुठी अबीरा ॥७॥ घिरि आई ब्रजनारी नंदलाल गहिलीने ॥ एक अधर रस
पीवही एक आलिंगन दीने ॥८॥ प्यारी काजर देतहे ललिता गहे कर दोऊ ॥
चंद्रावलि मुख मांडत हैंसत सखी सब कोऊ ॥९॥ हरद कपोल लगावत
उढवत पीत पिछोरी ॥ हैंसत देदे करतारी बोलत हो हो होरी ॥१०॥ यह
विधि पिय संग खेलहीं आनंद उर न समाई ॥ देखत देव थकित भये पोहोपन
वृष्टि कराई ॥११॥ न्हान चले जमुना सब सोभा अति बनि आई ॥ राधा
गिरिधर देखिकें सूरदास बलिजाई ॥१२॥

११ ॥ राग बिलावल ॥ हो हो बोलत डोलत मोहन खेलत होरी ॥
 सुरधुनि सुनि ब्रजसुंदरि ग्रहग्रहतें सब दोरी ॥१॥ नागरि गुन आगर रस
 सागर वेस किसोरी ॥ तिनमें सरस सुहागिनि राजत राधा गोरी ॥२॥
 उतबलिमोहन गोहन गोपकुंवर लखकोरी ॥ सबही तनतन रूपवेष भूषन
 सतनोरी ॥३॥ ताल मृदंग उपंग चंग सबही डफ होरी ॥ डिमडिम दुंदुभी
 मदनभेरि नाहिन धुनि थोरी ॥४॥ चंदन वंदन बूका भरिभरि लीने झोरी ॥
 भरत भरावत गावत मुख लपटावत रोरी ॥५॥ मृगमद मलयकपूर कुंडीसत
 केसर घोरी ॥ अरगजा सोंधे सींचि सुगंध करी ब्रजखोरी ॥६॥ लाज गई
 सबभाजि सोगा वे गारिन भोरी ॥ इत राधा ललितादिक उतबलि मोहन
 जोरी ॥७॥ भामा चंद्रभगा भाभा चंद्रभगा बलिजु पकरे भरी कोरी ॥ पकरि
 पेंज सों आयकरी झकझोरा झकझोरी ॥८॥ कुच कपोल कर परसत रज
 आरज की चोरी ॥ गहे गिरिधर श्रीराधाजु भुजबल बांह मरोरी ॥९॥ छीनी
 मुरलि माला ओर कटि पीत पिछोरी ॥ गोपिन गोपहराय गहेबलि मोहन
 तोरी ॥१०॥ बंस लिये गोपी हाथ भरे रंग भाजन फोरी ॥ मारपरीमुरी
 आय टिके ब्रजराज की पौरी ॥११॥ बलिको बल जो विगोवे कोऊ वरज्यो
 न रह्योरी ॥ स्वांग सबेजु बनावें न पावें जान गहोरी ॥१२॥ नैन आंजि
 मुख मांडि स्याम सिर गूंथी मोरी ॥ हो हो हो हो व्हे रही उढवत पीत
 पिछोरी ॥१३॥ मोहन कों पहरावत अपने भूषण छोरी ॥ वागो आप बनाय
 पाग बांधी तजि डोरी ॥१४॥ भूलि रह्यो सब गोकुल लोचन लगी हे ठगोरी ॥
 पलटे तन तन सुख अंग सब दीसत नोरी ॥१५॥ रह्यो रस खेलत फाग
 जुगल वर केलि करोरी ॥ संतत माधो को मन मदनगुपाल हरोरी ॥१६॥

१२ ॥ राग बिलावल ॥ वदति नाहिनें ग्वालिनी जोवनके गारें ॥ या
 ब्रजमें अंडीफिरे मनमथ उपचारें ॥१॥ पहरें रातोपोमचा लहेंगा हरी किनारें ॥
 अतिरसते निकरीफिरे अचराढिंग डारे ॥२॥ नकवेसरि गजरावने चोकी
 खगवारे ॥ अंगिया खमकिखयेंवनी कुचसूं भरवारें ॥३॥ फफुदी डोरी केझवा
 सोहें फोंद फुंदारें ॥ सोने की वांकी वेदुली सोहे ललित लिलारें ॥४॥ दीरघ
 लोचन छबिछटा कजरा अनियारे ॥ जगन्नाथ कविरायके प्रभु मोही कान्हर

कारे ॥५॥

१३ ॥ राग बिलावल ॥ काजरवारी गोरी ग्वारि ॥ या सांवलिया की लगवारि ॥ निसदिन रहैत प्रेमरंगभीनी ॥ हरि रसिया सों यारी कीनी ॥१॥ मदनगुपाल जानि रिझवार ॥ नानाविधिके करत सिंगार ॥ मिलनकाज रहे अंग अंगोछें ॥ सरस सुंगधन तेल तिलोछें ॥२॥ अंजन नाहि भटवेदीये ॥ स्यामरंग ननन में पीये ॥ गावतहू जसुमति ग्रह आवे ॥ कृष्ण चरित्र बह गाय सुनावे ॥३॥ सुंदरस्याम सुनेढिगआय ॥ चितवत ही चित हरि लेजाय ॥ कोऊ कहे काहू की न माने ॥ अपने मनकी गायबखाने ॥४॥ रामरायप्रभु योंसमुझावे ॥ कहि भगवान् कोऊनीके गावे ॥५॥ लखिइनस्याम कहेनिरधार ॥ यह लगवारिन यह लगवार ॥६॥

१४ ॥ राग बिलावल ॥ होरी खेले मोहना रंगभीने लाल ॥ रसिक मुकुट मनि राधिका अंगअंग ब्रजबाल ॥१॥ कपूर कुंकुमा घोरिकें सुगंध संभारी ॥ कीयो अरगजा रंगको विच मृगमद डारी ॥२॥ रतन खचित करमें लई कंचन पिचकारी ॥ छिरकत कुंवर किसोरकों चंद्रावलि नारी ॥३॥ भरत गुपाले भामिनी झकझोरा झकझोरी ॥ कोऊ करते मुरली लई कोऊ पीत पिछोरी ॥४॥ ललिता ललित वचन कहे फगुवा देहु प्यारे ॥ के राधे के पाय परो नैनन के तारे ॥५॥ फगुवामें मुरली लई रसबस पिय प्यारी ॥ नवल जुगलके रूप पर विचित्र बलिहारी ॥६॥

१५ ॥ राग बिलावल ॥ आगमसुनि कतुराजको फूली सब ब्रजनारीजू ॥ वरनवरन सिंगारि कियें चंदन चरचित सारी ॥१॥ नवनवलासी फूलकीफूल लिये भरि झोरी ॥ अरगजा चंदन वंदन अरु घसि लीनी रोरी ॥२॥ मंगल साज सबे सजे तब निकट कुंवरि के आई ॥ प्रथमहि घोस वसंतहे मन हरखित देत बधाई ॥३॥ गावें गारि सुहावनी अति प्रमुदित नवल किसोरी ॥ संग ब्रज कुसल समाज सों फिरि आई फागुन होरी ॥४॥ ताल मृदंग बजावहीं रंज मुरज सहनाई ॥ डफ दुंदुभी अरु झालरी जनु बाजत मदन दुहाई ॥५॥ सुनि सुघोख कोलाहला जिय सबहिन को सरसानों ॥ गिरधरके अनुराग सों भीजि रझो बरसानों ॥६॥ यह विधि साज समाजले मिलि चली रायजू

की पौरी ॥ श्रीराधाजू के लेनकों उठि नंदरानी दौरी ॥७॥ प्रथमही केसरि
 नीरले अंग चीर सबनके दोरे ॥ केसरि अरगजा घोरि कें सिर भरिभरि
 गडूवा ढोरे ॥८॥ सोंधो सुरंग गुलालले बहु साखि जवाद मिलायो ॥ आनि
 अचानक लाडिली हंसि महरि वदन लपटायो ॥९॥ छिरक्यो सब मिलि
 धायकें छलबल सों उठि दौरी ॥ जानि कुंवरि वृषभानकी तब महरिलई
 भरि कौरी ॥१०॥ चुंबत चांपति प्रेमसों पुनिपुनि कंठ लगावे ॥ जो कछु
 आनंदजीयको मुख कहत कछ्यो नहीं आवे ॥११॥ मनिय नाना भांति के
 भूषन वसन मंगाये ॥ तब हम इनकों लेंइगी कहो गिरिधर कहां दुराये ॥१२॥
 कछु एक ओचकचाहिकें तब महरि बदन मुसिक्यानी ॥ नागरि सब गुन
 आगरी बात हिये की जानी ॥१३॥ तब युवतीजन धाई कें चढी जाय
 चित्रसारी ॥ सकुचत वदन दुरावहीं हैंसिगहे जाय गिरिधारी ॥१४॥ घेरिलिये
 चहुंओरतें अब छूटो कहां पलाये ॥ क्यों युवतिन के वसपरे तुम कहीयत
 अधिक बलाये ॥१५॥ काहू बातें भेदकी कहि कानन में उठि दौरी ॥ काहू
 अचानक आनिकें लाल लिये भरि कौरी ॥१६॥ काहू नाना भांतिसों रंगचित्र
 कपोलनकीयो ॥ काहूमरुबट मांडिकें मथिबेंदा रोरी दीयो ॥१७॥ काहू नीकी
 भांतिसों अंजननै बनाये ॥ सहज ही चपल कुरंगसैं ढरिकाननलो आये
 ॥१८॥ काहू गहिबेनीगुही रचि मोतिन मांग सुढारी ॥ तनसुख की सोंधेसनी
 सुठि सारी सरस संभारी ॥१९॥ चंपकलता चली धायकें तब चिबुक दिठोना
 दीनों ॥ मोहि रही सब मोहनी व्रजरूप मोहनी कीनों ॥२०॥ नाना वरन
 अबीरले मनमोहन वदन लगायो ॥ पूरनचंद मानोधनमें नवइंद्र धनकसो छायो
 ॥२१॥ केसरि ढोरी सीसतें बहिचले खार पनारे ॥ अरगजा ओर गुलालसों
 भरे घरनके द्वारे ॥२२॥ सनमुख मुखहि नीहारते सुखनिरखत कोऊन
 अघानी ॥ गारी देत सुहावनी अतिरस सों लपटानी ॥२३॥ आगें व्हे मोहन
 लिये हैंसत हैंसत सब आई ॥ घूंघट सों मुख ढांकिकें पगन महरिके लगाई
 ॥२४॥ यह कन्या काहू रायकी सो आप समर्पन कीनी ॥ रूप बेसगुन
 स्याम के यह बिधाता दीनी ॥२५॥ हरखत मन आनंदसों तुम बांटो आज
 बधाई ॥ विधिते रूप उजागरी हम कोन वधूले आई ॥२६॥ विहसि वधू
 को नामले तब महरि गोद बेठारी ॥ प्रमुदित अति आनंदसों विधितन गोद

पसारी ॥२७॥ घूंघट ओट उतारिकें तब युवती मुरि मुसिक्यानी ॥ हैंसी परस्पर नागरी तब देखेत महरि लजानी ॥२८॥ हो हो होरी बोलही नाचें देकरतारी ॥ प्रमुदित करहिं कुलाहल गावें मीठी गारी ॥२९॥ यह ब्रज होरी खेलको सब सुखते सुख न्यारो ॥ यह समाज नित माधुरीके टरत न हियते टारयो ॥३०॥

१६ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रजनारी ब्रजराज गोपग्रह मोहन देखन आई ॥ सोडस साजि सिंगार सोरह बरसकी एकदाई ॥१॥ दिव्य बसन भूषन तन गावें गारि सुहाई ॥ श्रवन सुनत आनंद मनमोहन दर्ई हे दिखाई ॥२॥ रगमगो बदन विलोकिकें नैन रहे अरुझाई ॥ सुंदर स्याम सरूप रूप अति छबि बरनी नहीं जाई ॥३॥ केसरि साखि जवाद कनिक कुंडी जो भराई ॥ रतन खचित पिचकाईन छिरकत कुंवर कन्हाई ॥४॥ खेल मच्यो ब्रजवीच अरगजाकी चमचाई ॥ ताल मृदंग ढोल डफ मुरली शब्द सुहाई ॥५॥ हो हो कहि बोलत आनंद उर न समाई ॥ तिनमें मुख्य श्रीराधाजू सेनन देत सिखाई ॥६॥ सिमिटि सकल ब्रज सुंदरि मोहन पकरे धाई ॥ पीतांबर वनमाला मुरली लई हे छिनाई ॥७॥ हंसिहंसि हरि पे मांगत फगुवा देहु कन्हाई ॥ लीला ललित मनोहर माधो जनमन भाई ॥८॥

१७ ॥ राग बिलावल ॥ नागरि निपुन छबीली ॥ मनमोहनके रंगरंगीली ॥ जब होरी को ओसर आयो ॥ सब सखियन मिलि मंगलगायो ॥ छंद ॥ गायो जु मंगल बेठि सखीयन आय श्रीवृषभानके ॥ तहां आय बेठी पास अलियन राधिका मिस गानके ॥ गावें जो होरी नवकिसोरी प्रेमसों गदगद करें ॥ निज सखीके कानमें कहिबात हियकी खुलि हरे ॥ मतोमति सब एक व्हे मन रूप गुनकी आगरी ॥ कीरतिजूसों करन बिनती उठी नवलजु नागरी ॥१॥ अतिप्रफुलित मनआई ॥ महरि निरखि मन अति सचुपाई ॥ जसुमति ग्रहकी बिनती कीनी ॥ दिन खेलनकी आज्ञा दीनी ॥ टेक ॥ दीनी जु आज्ञा महरि करिति फाग खेलो जायकें ॥ खेलको सबसाज लेकें रंग सों नंदरायकें ॥ उबटि कुंवरि सिंगार रुचिसों खेलकी अति चाडिली ॥ बोलि श्रीवृषभान सों कहि संग दीनी लाडिली ॥ तब चली

यूथन जोरि विहसत संग ले चंद्रावली ॥ निकट नंददुवार देखत सुबन अति
 प्रफुलितअली ॥२॥ एक सखा लखि आगें आयो ॥ बेगि दोरि मोहन पे
 धायो ॥ मोयदेखि गाई उनगारी ॥ बेहें बरसाने कीनारी ॥ टेक ॥ नारी
 जु बरसाने कीहेवे मुख्य जिनमें राधिका ॥ सकल कला गुननकी निधि
 मनोरथकी साधिका ॥ आईजु सब मिलि सिंघद्वारें हुलसि तन मन गावहीं ॥
 ब्रजराज ओर बलिराम गिरिधर नामलेले मल्हावहीं ॥ सुनि कुलाहल
 चहूँदिसते सीस धरिकेकीपखा ॥ नंदद्वारें खेलको सब साजसजि लाये सखा
 ॥३॥ व्हे मगन मन मोहन धाये ॥ छलसों दोरि सखिन में आये ॥ बिहंसि
 कछो तुम सब भलें आई ॥ उद्यम बिन हम घर निधि पाई ॥ टेक ॥ पाईजु
 घर निधि बिना उद्यम भागि के पूरे सबे ॥ आनिराजा मदनकीहे तजो आरज
 पथ अबे ॥ तब सुबल बोल्यो सुनों मेरी बात मनकी एकहे ॥ इत स्याम
 स्यामा उते नाय दुहुन की यह टेकहे ॥ सुनि हंसी सब ब्रजसुंदरी निरखि
 मोहन प्रेमहे ॥ एक नख सिख मुर्गाटोदे खेलनकों मनमगन हे ॥४॥ अति
 छबि छाकि रही यह गोरी ॥ पहलें रूपी खेलनकों होरी ॥ तब नियरें मधुमंगल
 आयो ॥ कछु हरुवे एक वचन सुनायो ॥ टेक ॥ सुनाय वचन उतावलो
 मुरिजाई डफ हि बजावही ॥ तब कोपि गोपी धाई सनमुख बंसमार मचावही ॥
 ले अबीर उडाय सनमुख दिसाकीनीधूंधरी ॥ तब आई ओचक नंदनंदन
 बाल भेटी भुजभरी ॥ देहिं पोहोपट सबे उनमद मदनके फंदाफबी ॥ किहुक
 छलबल छूटि भागी ग्वालछाकी अति छबी ॥५॥ सुंदरि सबे भई एक ठौरी ॥
 सबन गुलाल लये भरि झोरी ॥ जब हरिके सनमुख व्हे आई ॥ इतते छूटी
 कनिक पिचकाई ॥ टेक ॥ पिचकाईछूटी रंगरंगन अरगजा कुंकुम सोंसनी ॥
 इत कुसुम रंग पलासके भरितकि त्रियन कुच बिचतनी ॥ उतते उडायो
 गगन छायो रंगसों करि सरबरी ॥ बलिराम भुज आकर्षिलीनों मगन मन
 सब सुंदरी ॥६॥ चंद्रावलि छलकरि ले आई ॥ आज हम परम पदारथ
 पाई ॥ संकरषण यह नाम धरायो ॥ उलटो जमुना नीर चलायो ॥ टेक ॥
 चलाय जमुना नीर उलटो तेभुजा अब लागहें ॥ अब पानी मुख में मेलि
 हा हा खाउ हैंसि हैंसि यो कहें ॥ आजि द्रग मुख मांडि मृगमद नीलपटले

भायसों ॥ जाय कहो जुहार सबकों रोहिनी नंदरायसों ॥ तुमपे न
 फगुवालेंहिअबकें बिहसिवोलीं सबअली ॥ पोंहोंचाय दीने पेंडपांचक चमकि
 चली चन्द्रावली ॥७॥ ग्वालसबे बलि सनमुख आये ॥ भुजबल भेटि परम
 सुख पाये ॥ फगुवा में नीलांबर दीनों ॥ बलिको बल अबलन हरिलीनों ॥
 टेक ॥ लीनो जु हरि अबला नवल बलिरामकों अचरज भयो ॥ गहि चिबुक
 मोचो सोचमन श्रीदामधीरज धरि कछो ॥ पहराय निज पटपीत द्रगमुख
 पोंछि मदनगुपालको ॥ आय अपने खेत ठाडे संग ले सब ग्वालकों ॥
 बिहंसिवोली कुंवरि राधे सोच निज जियमत करो ॥ पोंहोंचाय देहें भवन
 अपने सखिनके पांयन परो ॥८॥ तब ललिता एक मतो उपायो ॥ आपुसमे
 एक सखा बनायो ॥ एक चतुर दूजे मंत्र सिखायो ॥ छलसों मोहन पास
 पठायो ॥ टेक ॥ पठायो मोहन पास एक दिस जोरि कर ठाडो भयो ॥
 अब ताहि बूझत नंदसुत तेरे नैन अंजन किन दयो ॥ आय निकस्यो सहज
 अपने गामते यह गेलही ॥ उन पकरि काजर आंजि छांड्यो अति छबीली
 छेलही ॥ जो भरो ओचक जाइ रंगसों राधिका इकलीअबे ॥ फिरिवाऊ
 छलसों छूटिजेहें आयहे ललिता तबे ॥९॥ मोहन चले सुनत ही बतियां ॥
 प्रेम उमगि सीतल भई छतियां ॥ नवल सखा ले संगही धाये ॥ श्रीवृषभान
 कुंवरि तकि आये ॥ टेक ॥ आये जु तकि वृषभान नंदनी देखि द्रग सीतल
 भये ॥ दूरिहीतेरवकि राधे दौरि भुज भरि गहिलये ॥ घेरि लीने चहूं दिसतें
 काहू परिरंभन दियो ॥ कोटि मनमथ मान हरलावन्य मुख चुंबन कियो ॥
 भेद छल करि जाय लाई कित सखा छबि सोहना ॥ अधिक चतुर अजान
 के संग उठि चले मनमोहना ॥१०॥ प्यारी एक बात सुनि मेरी ॥ मोहि
 अब सोंह ववाकीतेरी ॥ यह निश्चें जियमें जोजाने ॥ रजनी मुखएहें
 बरसाने ॥ टेक ॥ बरसाने आय समाज सों हम रेनिहोरी खेलिहें ॥ बोल
 लीजे खेल कीजे अधिक बारन बेलिहें ॥ कछो सब मिलि बात नीकी सकल
 निस उजियारी हे ॥ अब चलो जसुमति भवनमें ले संग गिरिधर प्यारी
 हे ॥ गावेजु गारी लाजतजकें रंगसो रगमगरली ॥ नंदजूके भवनमें सब
 सुंदरी गावत चली ॥११॥ श्रीवृषभान दुलारी प्यारी ॥ संग लिये वे

गिरिवरधारी ॥ चहुंओर तरुनी अतिराजें ॥ मत्तगयंद निरखि गति लाजें ॥ टेक ॥ लाजें जुगति बर देख मतगज जबहि पोरी पग धरचो ॥ लषि महरि जसुमति रोहिनी सनमुख बेठि आदर करचो ॥ भीर भारी भवन में अति रंग सों गहगड मच्यो ॥ चंद्रावलि ब्रजसुंदरी भुजजोरि मिलि मंडल रच्यो ॥ विमल व्योम विमान छाये देवधुनि सुनि गानकी ॥ दे गोद गिरिधर जसुमतिकें कुंवरि श्रीवृषभानकी ॥१२॥ यह छबि वरनी न जाई ॥ जसुमति उर आनंद न समाई ॥ नंदराय सब साज पठायो ॥ फगुवा दीयो जाहि जो भायो ॥ टेक ॥ भायोजु जाहि सो दीयो ताही लीयो अति मन मुदित व्हे ॥ आनंद भरि प्रति रोमलखिद्रग रही पूरन प्रेमव्हे ॥ आरती उतारें भरि निहारें दुहुंनके मुख चंदजू ॥ धनि धन्य जसुमति कुखि धनिये नंद आनंद कंदजू ॥ मुसिक्याय बोली बचन राधे वीनती चितधारवी ॥ आज रजनी खेल व्हेहे जाय बरनी न यह छबी ॥१३॥ बडो पर्व होरी को जान्यों ॥ अपने सुतको नोंतो मान्यों ॥ संग सकलदे गोपकुमारा ॥ दीजे पठे भान दरबारा ॥ टेक ॥ दरबार श्रीवृषभानके ज्यों आज होरी रंग हे ॥ अब होय आज्ञा जांयनिजग्रह राधिका विनती कहे ॥ सुखवारि निधि वींचीनमें मनमीन जसुमति को भयो ॥ सब ग्वाल हलधर संग पहलें स्याम में तुम संग दयो ॥ ले चलीं ग्रह ब्रज इसकों रसभरी जोवनगरवहे ॥ सब मनोरथ पूरन भये ब्रज मांझ होरी परवहे ॥१४॥

१८ (१४) राग बिलावल (१४) हरि सँग होरी खेलनि आई ॥ चंद्रभगा, चंद्रावलि भामा, राधा परम सुहाई ॥१॥ चोवा चंदन अगर कुंमकुमा सुरंग गुलाल उड़ाई ॥ रतन-जटित पिचकाईन भरि भरि छिरकति कुंवर-कन्हाई ॥२॥ ताल, मृदंग, पटह ढफ बाजै, घोष नगारे घाई ॥ श्री मंडल सहनाई सुंदर बिच बिच बैनु बजाई ॥३॥ अरस परस खेलति पिय प्यारी, उपमा बरनि न जाई ॥ 'सूरदास' बलि जाई बदन की निरखि निरखि मुसिकाई ॥४॥

१९ (१४) राग बिलावल (१४) चलि चलि री सखी ब्रिंदावन जैए मोहन खेलति होरी ॥ बालक जूथ सखा सब सँग लीनैं हरि हलधर की जोरी ॥१॥ चोवा चंदन बुका बंदन केसरि भरि हैं कमोरी ॥ गारी गावति, भरति

भरावति सींचति ब्रज की खोरी ॥२॥ सुनि सब ब्रज देखनि कों उमड़्यों
 भवन रख्यों नहि कोरी ॥ बाजति ताल, मृदंग, झांझ, ढफ, मधुर मुरली
 धुनि थोरी ॥३॥ सुर बिमान कौतूहल भूलें, मुनि मनसा भई बोरी ॥
 'आसकरन' प्रभु मोहन के सँग, बिलसति राधा - गोरी ॥४॥

२० (११) राग बिलावल (११) फागुन मास ब्रज सुंदरि जसुमति घर आई ॥
 गावति गारी सुहावनी, सब के मन-भाई ॥१॥ आव हु जसुमति भोर हीं
 आतुर हम धाई ॥ आज कछुक वृषभानु जू तुहीं बोलि पठाई ॥२॥ औरु
 कछु तुम सों कछो संदेस तिहारौ ॥ पियारी कन्या हमारी राधिका बरु
 पूत तिहारौ ॥३॥ मन, क्रम, बचन किए कहीं मोहि सौंह तिहारी ॥ तुम
 मोहि लागौ सदाँ एहो कीरति सों प्यारी ॥४॥ जो कछु तुम सों कहति
 हों हित की करि जाँनों ॥ बरसानों नंदगाँउ कों एकैं करि माँनों ॥५॥ भर
 होरी के दिवस में बरसानें रहिए ॥ समझत हो तुम सबैं तुम सों कहा कहिए
 ॥६॥ फिरि नंदरानी बिहँसि कै बोली मृदु-बानी ॥ जो कछु हम सों कहति
 हो हम तों सब जानी ॥७॥ एकु सँदेसो जाई कै कीरति सों कहियो ॥
 नंदरानीं ढिंग आइ कै कोऊ दिन रहियो ॥८॥ हँसी सकल ब्रज नागरी
 नाँचै दै तारी ॥ समझि-समझि मो सों कछु कहै ठाड़े गिरिधारी ॥९॥ केसर-
 कलस भराई कै सब कों छिरकाए ॥ मृगमद, अरगजा घोरि कै मुख सों
 लपटाए ॥१०॥ मन भायौ फगुवा दयौ तनसुख की सारी ॥ अंक माल
 सब कै हिए दीनीं जू दुलारी ॥११॥ खेलि मच्च्यों अति प्रेम कों आनंद
 भयौ भारी ॥ फागु कियौ जु सुहाबनों हरि सों ब्रजनारी ॥१२॥ जोबन
 उर में अति बढ्यौ का पै कहि आवैं ॥ दिन दिन यह सुख 'माधुरी' निरखैं
 अरु गावैं ॥१३॥

२१ (११) राग बिलावल (११) तुम बेगि क्यों न आवों ॥ हो होरी खेलै
 रसभरि ॥ साँजि समै सब गाय गोप लै, बदन-कमल दरसावों ॥१॥ मधुरी
 बैनु बजाई गाई कै जुबती-जननि बुलावों ॥ दुंदुभि ढफ औ मृदंग सुनाई
 कै सवनन सुख उपजावों ॥२॥ चोवा अबीर गुलाल अरगजा, स्याम-अंग
 छिरकावौ ॥ 'सूरदास' प्रभु रसिक सिरोमनि, रँगमँगें नैन दिखावों ॥३॥

२२ ॥ राग बिलावल ॥ मेरी आँखि न भरौ गुलाल लाल हो हों
तुम सौं बिनती करौं ॥ मोपै सख्यो न जाई गुलाल लाल यह निपट कपट
कों ख्याल लाल हो ॥१॥ हम अपुने मन की कहै तुम सौ तुम सुनहु गुपाल
लाल हो ॥ रँग जू ठान्यौं अटपटो हम भई हैं रँगीली बाल लाल हो ॥२॥
चोव चंदन अरगजा हो केसरि बहुत गुलाल लाल हो ॥ गागरि दोरी ओचका
हम भई है हाल बिहाल लाल हो ॥३॥ मोहन मूरति साँवरो हो रसियो
नँद कों लाल लाल हो ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु कों हम देखति
भई हों निहाल लाल हो ॥४॥

२३ ॥ राग बिलावल ॥ होरी खेलति हैं ब्रज नँद लडैतौं लाल ॥
चोवा चंदन अरु अरगजा कंठ सौहें मोतिन माल ॥१॥ कोऊ गुलाल केसरि
भरि लीये कोऊ कंचन थाल ॥ एकु नाँचति एकु मृदंग बजावति गावति
गीत रसाल ॥२॥ छिपति फिरति हैं कुंजन महियाँ हा हा करति भई बिहाल ॥
'चतुरभुज' प्रभु पीय गरे लगाई लै रीझि दै उर माल ॥३॥

२४ ॥ राग बिलावल ॥ आली री भरति मोहन जित तित मोकों
गौहँन लाग्यौं डोलै ॥ माँडति बदन अबीर मुँठी लै औचक आय अन बोलै
॥१॥ हों दृष्टि बचाई चलति हट सौं पट गहि धुंधट खोलै ॥ गिरिधर उर
धरि सब रस लीनों बस कीनीं बिनु मोलें ॥२॥

२५ ॥ राग बिलावल ॥ सौंधे की हैं उठति झकौरें, मोहन रंग-भरे ॥
चोवा, चंदन, अगरु कुंकुमा, सौहें माट भरे ॥१॥ रतन जटित पिचकारी
कर गहि, बालक वृंद खरे ॥ भरि पिचकारी रससौं डारी, सो मन प्रान
हरे ॥२॥ सब सखियनि मिलि मारग रोक्क्यौ, अरु मोहन पकरे ॥ अंजन
आँजि दियौ आँखियन में, हा हा करि उबरे ॥३॥ फगुवा बहुत मैगाई साँवरे,
कर लै अरज करे ॥ धनि धनि सूर, भाग ताके, प्रभु जाकें सँग बिहरे ॥४॥

२६ ॥ राग बिलावल ॥ जिन डारो जिन डारो जू आँखियन में अबीरा ॥
रतनजटित पिचकाई कर लिये भर-भर केसर नीरा ॥१॥ ललिता प्रीतमको
मुख माँड्यो चरच्यो स्याम सरीरा ॥ सूर प्रभु रसवस कर लीनो इन हलधरको

वीरा ॥२॥

२७ (॥१॥) राग बिलावल (॥१॥) होरी खेलत सांवरो ग्वालबाल संग कीने जू ॥ मृगमद चोवा केसरसों पिचकाई भर लीने जू ॥१॥ छिरकत भरत आनंदसों प्यारी अति रस भीने जू ॥ तन मन धन सब बारहीं चत्रभुज प्रभु बस कीने जू ॥२॥

२८ (॥१॥) राग बिलावल (॥१॥) होरी खेले गिरिधरलाल ॥ संग बनी वृषभान नंदिनी गावत गारी ग्वाल ॥१॥ बाजत बीन रबाब किन्नरी जंत्र पखावज ताल ॥ चोवा चंदन अगर अरगजा उडत अबीर गुलाल ॥२॥ फगुवा मन भायो हम लैहें यों जू कहति ब्रजबाल ॥ विचित्र बिहारी प्यारे तबही दीनो पीतांबर वनमाल ॥३॥

२९ (॥१॥) राग बिलावल (॥१॥) होरी खेले मोहना सुन्दर गिरिधारी ॥ नख सिख सुभग सिंगार सजै सोंधे सुखकारी ॥१॥ सीस कुल्हे छबि अति बनी सोहे ललित लिलारी ॥ केसरको वागा बन्यो सोहे अति जू भारी ॥२॥ लाल गुलाल उडावहीं रंग रङ्गो सरसाई ॥ यह सुख सोभा निरखिके सूरदास बलि जाई ॥३॥

३० (॥१॥) राग बिलावल (॥१॥) अरी ते रंग राख्यो खेलत हरि संग होरी ॥ छबिसों गई लपटाय छबीली पिय मुख चन्द चकोरी ॥१॥ हँसिके छिरक्यो छेल छबीलो भर-भर कनक कमोरी ॥ रंग अनंग नगन रंग बाढ्यो हँसत ओट मुख मोरी ॥२॥ धन तेरो भाग सुहाग लाडीली धन वृषभान किसोरी ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभु प्यारे चिरजीयो यह जोरी ॥३॥

३१ (॥१॥) राग टोड़ी (॥१॥) दोऊ खेलत ब्रज में होरी हो ॥ नंदलाल नवल किसोरी हो ॥१॥ एक चंग मृदंग बजावे हो ॥ एक तान तरंग बढावे हो ॥२॥ एक मुरली मधुर बजावे हो ॥ एक हो हो हो करि गावे हो ॥३॥ एक ललिता लोचन आँजे हो ॥ एक मुरली ले कर भाजे हो ॥४॥ एक अबीर गुलाल उडावे हो ॥ एक फगुवा ले पहरावे हो ॥५॥ जन रामदास पिय प्यारी हो ॥ तोहि नेक न करिहे न्यारी हो ॥६॥

धमार फेंटा के पद

१ (॥१॥ राग सारंग ॥१॥ खेलें होरी मनमोहनाँ ॥ फेंटा सीस केसरी सुभग छूटी अलक मुख सौहनाँ ॥१॥ डारति रंग मन हरति फिरन लाग्यों रस बस है तिय गोहनां ॥ नागरि कमल कमल प्रति लटकति जहँ कुँवर ब्रज जोहनाँ ॥२॥

२ (॥१॥ राग काफी ॥१॥ मेरे लाल छबीले मन हयौं हो ॥ हो सखी री मोहे और कछु न सुहाय ॥ध्रु०॥ आज सखी में देख्यो ढोटा एक साँवर गात ॥ नैद पौरी आगे है निकस्यौ चलयौ खरकि को जात ॥१॥ पियरी-सी पाग पुरिये बागे पहरे लाल इजार ॥ फेंटा सरस कुसुम को सोहै मानहु कोटिक मार ॥२॥ कुंडल लोल कपोल की झाँई मुक्ता दुलरी ग्रीव ॥ ऊपर दीपत हार गुंजा की सुंदर है ताकी सीव ॥३॥ बाजूबंद अँगुरिन मुंदरी सोभा बरनि न जाय ॥ छुद्र घंटिका राजत कटि तट नूपुर बाजत पाँय ॥४॥ देखत रूप ठगोरी लागत चरन चलयौं नहीं जाय ॥ पूछत नाम कहा है तेरो हँसि मेरे ढिग आय ॥५॥ उर की माला मोहि पहिराई अधर सुधा रस प्याय ॥ यह सुख तीन लोक में नाही 'स्यामदास' बलि जाय ॥६॥

३ (॥१॥ राग बिलावल ॥१॥ मोहे और कछु न सुहाई सखी मेरो कुँवर छबीलें मन हरचौ हो ॥ध्रु०॥ आजु सखी में देख्यो ठाड़ो एक साँवरौ-गात ॥ नैद-पौरि आगे यौ निकसे, चलयौ खिरक कौं जात ॥१॥ पीरी-पाग, चौपरीया बागौ, पहिरै लालइजार ॥ फेंटा सोहै कसुंभी रंग कौ मानों कोटिक मार ॥२॥ कुंडल लोल कपोलन झाँई, मुक्ता दुलरी ग्रीव ॥ ऊपर धावत हार गुंज कौ, सुंदरता की सीव ॥३॥ बाजुबंद अँगुरीया मुदरी सोभा कही न जाई ॥ छुद्रघंटिका राजत कटि तट, नूपुर बाजत पाँई ॥४॥ खेलत रूप ठगोरी सी ल्याई चरन चलयौ नहि जात ॥ बूझति नहि नाम कहा तेरो हँसि मेरे ढिग आत ॥५॥ उर की माला मोकौं पहिरावत अधर मधुर-रस प्याई ॥ यह सुख सखी कहति नहि आवै 'स्यामदास' बलि जाई॥६॥

धमार छुमाला के पद

१ (१११) राग काफी (१११) एरी सखी खेलति गिरिधर लाल ॥ ग्वाल बाल सब सँग लाये ॥ एरी सखी फैटन अबीर गुलाल सखा अंस पै भुज दये ॥ रँग फागुन मास सुहावनों ॥१॥ एरी सखी सोहै दुमालो सीस, पीत बसन तन छबि दये ॥ एरी सखी चोवा चंदन नीर केसर सुरँग रँगन कीये ॥ रँग फागुन मास सुहावनों ॥२॥ एरी सखी खेलति साँवरो लाल ॥ रँग भलो गहगड़ रख्यो ॥ रँग फागुन मास सुहावनो ॥ एरी सखी 'ब्रजाधीस' बलि जाइ ॥ तहुँ जात न सुख मोपै कछ्यो ॥ रँग फागुन मास सुहावनो ॥३॥

धमार कुल्हे के पद

१ (१११) राग काफी (१११) होरी खेलै मोहना सुंदर गिरधारी ॥ नख सिख सुभग सिंगार सजै सौंधे सुखकारी ॥१॥ सीस कुल्हे छबि अति बनी सोहै ललित लला री ॥ केसर को बागो बन्यौं सोहै अति भारी ॥२॥ लाल गुलाल उड़ाव हीं रँग रख्यो सरसा री ॥ यह सुख सोभा निरखि के 'सूरदास' बलिहारी ॥३॥



चुनरी के पद



१ (१११) राग काफी (१११) चुनरी मेरी भीजे हो लाल । भरि पिचकारी डारि गयो हैं करति लंगर मोसौं ख्याल ॥१॥ चुनरी और मंगाउ पीया तुम मोर पपैया लगाई ॥ आधी रात पै बोलन लागै सेज पै रख्यो न जाई ॥२॥ चुनरी और मंगाउ पीया तुम सुन्हेरी तार लगाई ॥ अँगिया भुजन पै एसी बिराजति यह छबि बरनी न जाई ॥३॥ गँरे तन नीलांबर सोहै ओढ़ै चुनरी लाल ॥ बेगि मिलो प्रभु वेसि साँवरो 'स्यामदास' बलि जाई ॥४॥

२ (१११) राग सारंग (१११) स्याम रंगीली चुनरी रंगरंगी हे रंगीले बिहारी हो ॥ अति सुरंग पचरंग बनीतन पहरे श्रीराधा प्यारी हो ॥१॥ चंपक तन कंचुकी खुली स्याम सुदेश सुहार ॥ मांडन पिय पटपीतकी ता ऊपर मोतिनहार ॥२॥ सीसफूल सिरसोहही मोतिन मांग संवारी ॥ विविध कुसुम बेनीगुही चंपक

बकुल निवारी ॥३॥ श्रवनन झलमल झूलहीं सिर सटकारे केस ॥ खुटिला खुभी जरायकी मृगमद आड सुदेश ॥४॥ नकवेसर अति जगमगे दूर करे रवि जोती ॥ कंठसरी ओर मुक्तसरी बीच जंगाली पोती ॥५॥ चोकी हेमजराय की रत्नखचित निरमोल ॥ नोगरी अरुकर पहेंचियां खयेनवरा अतिगोल ॥६॥ कटि किंकिणी रुनझुन करें पगनूपुर झनकार ॥ चलत हंसगति मोहियो शोभा कहतन पार ॥७॥ यह विध बनि ब्रज सुंदरी चली रसिक पियपासा ॥ कुंज महल मोहन मिले पूजीमन अभिलाषा ॥८॥ ब्रजवृंदावन भूपती पिय प्यारी की जोरी ॥ गोविंद बल बल बल जाय नवल किशोर किशोरी ॥९॥

धमार शेहरा के पद

१  राग बिभास  मदन-मोहन कुंवर वृषभानु-नैदिनी सुभग नव कुंज में खेलति होरी ॥ गोप कुमार सँग एकु दाई बने उत सकल ब्रज-बधू एकु जोरी ॥१॥ बाजति बीना, मृदंग झांझ, ढफ, किन्नरी, चैत, झूमकि गान करति गोरी ॥ उड़ति बंदन नव अबीर बहु अरगजा अरु बिबिधि रंगन गुलाल झोरी ॥२॥ तब ही सब सखी जन मतौ करि धाँई गिरिधर गही नील, पीत पट सौं गाँठि जोरी ॥ एकु सखी स्याम कैं सीस बेंनी गुही, एकु दृग आँजि मुख माँड़ि रोरी ॥३॥ तब हि ललिता दौरी झटक कैं मुरली गहि सब हिं नैद-लाल सौं करि ठठोरी ॥ एकु नव कुँमकुमा कनक गागरि भरि आँनि कैं दोऊन के सीस ढोरी ॥४॥ तब सबन अपुनो फगुवा माँगि लीनों, दई मुरली अरु गाँठि छोरी ॥ 'दास गुपाल' बलि जाई यह छबि निरखि रहो हरि चरन मन दृढ़ मोरी ॥५॥

२  राग टोड़ी  माइरी नीकें लागै दुलहे दुलहनि खेलति फागु ॥ जाकों नाम राधिका गोरी ताकों नित सुहाग ॥१॥ बाजें ताल मृदंग झांझ ढफ गावें रागिनि राग ॥ अद्भुत तान जम्हों सुर टोड़ी उरप तिरप गति लाग ॥२॥ अगर जवाद कुँमकुमा चोवा छिरकै चंद्रावलि ललिता ॥ बहुत सुगंध कहाँलौं बरनों उमँगि चली रस सलिता ॥३॥ मुक्ता हार उरज कुच अंतर घन दामिनी की छबि छलिता ॥ रस भरि 'गोविंद' प्रभु सँग खेलति मदन नृपति की सेना दलिता ॥४॥

३ ॥ राग धनाश्री ॥ हो मेरी आली भानुसुता के तीर अबीर उडावहीं ॥ मिलि गोपी गोपकुमार मधुर स्वर गावहीं ॥१॥ बाजत मधुर मृदंग वेनु सुहावनी ॥ आवज सरस उपंग चंग मनभावनी ॥२॥ नाचत गोपीग्वाल ताल बजावहीं ॥ मधुर भाभती गारी सबे मिलि गावहीं ॥३॥ भाल सुभग मध्य विशाल गुलाल विराजहीं ॥ चिंबुक चारु अबीर अधिक छबि छाजहीं ॥४॥ कृष्णागरकोपंक बदन लपटावहीं ॥ सुरंग गुलाल उडाय गगन सब छावहीं ॥५॥ केसर भर पिचकारी परस्पर मारहीं ॥ केसू कुसुम निचोय सीसपर ढारहीं ॥६॥ पियके सीस सेहरो सब मिलि बांधही ॥ चपल नयन की चोट मेंसर सांधही ॥७॥ प्यारीकों ऊबट न्हावय वसन पहरावहीं ॥ मधुर व्याह के गीत सबे मिलि गावहीं ॥८॥ करत व्याह को खेल सकल मिल भामिनी ॥ विविध सुगंध उडाय कियो दिन यामिनी ॥९॥ दूल्हे दुलहनि जोट बनी मन भामनी ॥ राजत मंडल मांझ परम सुहावनी ॥१०॥ यह विधि नित ब्रज मांझ परम सुख वरखही ॥ ब्रजयुवतिन मुखनिरख अधिक मन हरखही ॥११॥

४ ॥ राग सारंग ॥ नंदकिशोर किशोरी की जोरी हो हो हो कहि खेलत होरी ॥ ग्वाल बजावत डफ मृदंग मोहन मुरली ध्वनि थोरी ॥१॥ इत ब्रजनारी गारीदेत परस्पर रंगबढ्यो दुहुंओरी ॥ गिरिधरदौर आय बदन लगावत चंदन बंदन रोरी ॥२॥ वचन बांध के छलकर लाई गांठ स्याम सों जोरी ॥ तेल चढावत गीत व्याहके सबे सयानी भोरी ॥३॥ मोरमुकुट को मोर बनायो दर्द है चंद्रिका की मोरी ॥ दूल्हे पर्वतसेन को प्रभु दुलहनि राधा गोरी ॥४॥

५ ॥ राग सारंग ॥ नंदमहर को कुंवर कन्हैया होरी खेलन जाने हो ॥ रसमें विरसकरे अरवीलो लघुदीरघन पहेंचाने हो ॥१॥ अंगुरी गहत गहेकर पोंहोंचो भुज मूलन लग आवे ॥ देख विराने श्रीफलऊपर लालची मन ललचावे ॥२॥ आंज्यो चाहे ओर के नयना अपने नयन दुरावे ॥ पकरयो चाहे सुधा निधि हाथन अधर सुधा क्यों पावे ॥३॥ तेतफुलेल उलेडे सिरतें

ग्रंथदुकूलनजोरी ॥ बहुत गुलाल डार आंखन में हस लंगर झकझोरी ॥४॥
कमल पत्रकार चेकपोलन मरुवट मुखहि बनावे ॥ दुलहनी सीकर पठवत
उततें दूल्हे आप कहावे ॥५॥ जो हम रूठ जाय घर बैठें तो सखी हम
हि मनावे ॥ सकत सनेह करे युवतिनसों सेनन अरथ जनावे ॥६॥ राजा
मित्र सुन्यों नहीं देख्यों भयो ऊपखानों सांचो ॥ मुरारीदास प्रभु सोंजिन
बोलो कोटिक नांचकिन नांचो ॥७॥

६ (॥१॥ राग सारंग (॥१॥) दुल्हे श्री ब्रजराज दुलारो दुलहनि भानु किसोरी ॥
सीस सेहरो सोभित नीकों भली बनी यह जोरी ॥१॥ राजति रंग भरे दोऊ
रस रस में आई जुरी ब्रज नारी ॥ गावति मंगल गीत बधाए हैंसि हैंसि
देति परस्पर तारी ॥२॥ बूका बंदन चोवा चंदन गुलाल अबीर उड़ावे ॥
मृगमद केसर लै लै छिरकति सबहीन के मन भावे ॥३॥ आरति वार करति
न्योछावर ब्रजनारी सुख पायो ॥ जुगल रूप मन माँही बसो 'रघुनाथदास'
मन भायो ॥४॥

धमार मुगट के पद

१ (॥१॥ राग सारंग (॥१॥) माधो चांचर खेलही खेलतरी यमुना के तीर
॥१॥ बीचबीच गोपी बनी विचविचरी वे बने हैं मुरारि ॥ मरकत मणि
कंचनमणी मालारी जानों गुही संवारि ॥१॥ कुंकुम वरनी गोपिका केसोरी
घनस्याम शरीर ॥ नीलपीतपट मंडिता नाचतरी वे प्रेमगंभीर ॥२॥ करतल
ताल बजावहीं गावेंरी वे गीत रसाल ॥ मदनमोहन मन हरचो लीला सागर
गिरिधरलाल ॥३॥ किंकिणी नूपुर बाजही शब्दवरी कोलाहल केलि ॥
क्वणित वेणु मधिनायका लटकत लाल भुजागलमेलि ॥४॥ एकजु पान
खवावही एकजु मांगे देहु उगार ॥ एकजु मुख चुंबन करे एकजो वीने दूटोहार
॥५॥ चंदभूल कौतुक रझो हरणारीवे मोहेनाद ॥ थाक्यो रथ केसे चले
ब्रजयुवतिनरी वह लाये वाद ॥६॥ चढ़ विमान सब देवता बरखनरीवे लागे
फूल ॥ जय जय जय यदुनंदना रास रच्यो रतिनायक भूल ॥७॥ जो प्रसाद
उनकों भयो हरि पररंभण बाहु पसारि ॥ परमानंद प्रभु श्रीपती पुण्यपुंज
कृत गोकुल नारि ॥८॥

२ (११) राग सारंग (११) अहो श्रीगुपाल ग्वालिनी को झूमका हो ॥ सुघर
 सुर गावै चतुर ब्रज नार ॥ अहो पिय चात्रक ज्यों किलकार ॥ फाग रस
 झूमका हो ॥ सीस मुकुट काछनी काछे पट औढै कनक अनुहारी ॥ करनकार
 के किरन वैजंती मुरली मधुर उचारी ॥ उघटत राग रागिनी अद्भुत नट
 ज्यों दै कर तारी ॥ त्रिविध पवन जमुना तट उपवन ठाड़े लाल बिहारी
 ॥१॥ तरुनी अरुनी अनार मानों दसन देह दुति गोरी ॥ केस सुदेस कुटिल
 अलकाबली भौंह धनुष ज्यों भोरी ॥ कमल गहे कमला लाजति रति रंभा
 रति की थोरी ॥ झुनकति कटि किंकिनि कटि तर नव दामिनी सी ढिंग
 होरी ॥२॥ पहिरे सारी सब सुकुमारी केसर बरन सुरंग ॥ लहंगा लाल
 नील अंगीया लसे सिंदुर पुरित मंग ॥ केहरी लंक मयंक मुखी सुठ कठिन
 उरोज उतंग ॥ चाल चले कल हंस विमोहे मद तजि मत्त मतंग ॥३॥ नैना
 चपल मीन खंजन के चित चौगुने चोभे ॥ भाल दीये बंदन की बिंदुरी बीरी
 वदन मधि सोभे ॥ चिबुक की चमक छबक ग्रीवा की मंद हँसन मन लोभे ॥
 बेनी सिथिल डोलति नितंब पै मानों पन्नग छबि सोभे ॥४॥ नासा नथ जड़ाव
 मोती झलकै पोत सुकंठ बधाई ॥ माला चंपकली त्रिवली चौकी चंदहार
 सुखदाई ॥ कर कंकन बाजुबंद पहोंची पग जेहरि सुहाई ॥ रूप अनुप निहारी
 विवस भयै नंद किसोर कन्हवाई ॥५॥ कुँमकुम जल पिचकारी भरि भरि
 अबीर गुलाल उड़ावै ॥ सोंधो घोरि अरगजा पीतम परसि गात लपटावै ॥
 गुंजति अलि प्रफुलित बेलि द्रुम कुंज भुवन सचु पावै ॥ श्री विट्ठल गिरिधरन
 कृपानिधि नित ही नाँच नँचावें ॥६॥

३ (११) राग काफी (११) कान्हर मोहे घर जान देहो ॥ हो लाल तेरी अंग
 की लेहु बलाई ॥१॥ बहुत दिनन कौ गोकुल बसिबो कब हु न दीनो
 दान ॥ कहा जू भयो जो नद भये नाहिन घाटि बृखभान ॥१॥ मातपिता
 की खरी री दुलारी श्री राधा मेरो नाम ॥ छांड दे कान्हर जान दे मो घर
 सुनि पायेगो वृषभान ॥२॥ पान खाय पिचकारी मारत मंद-मंद मुसिकाइ ॥
 'दास' बिराजत के प्रभु प्यारे इह ब्रज बसिबो न जाई ॥३॥

४ (११) राग नट (११) बहोरि डफ बाजन लागे हेली ॥१॥ खेलत मोहन

साँवरो हो किहिमिस देखन जाय ॥ सास ननद वैरिन भई अबकीजे कोन
 उपाय ॥१॥ ओजत गागर ढारीये यमुना जलके काज ॥ यह मिस बाहिर
 निकसकें हम जाय मिलें तजि लाज ॥२॥ आओ बछरा मेलियें वनकों देहिं
 विडार ॥ वेदेहें हम ही पठे हम रहेंगी घरीद्विचार ॥३॥ हा हारी हो जातहों
 मोपें नाहिन परत रख्यो ॥ तूतो सोचतहीं रही तें मान्यों न मेरो कछ्यो ॥४॥
 राग रंग गहगड मच्यो नंदराय दरबार ॥ गाय खेल हैंस लीजिये फाग
 बडो त्योहार ॥५॥ तिनमें मोहन अतिबने नाचत सबे ग्वाल ॥ बाजे बहुविध
 बाजही रंज मुरज डफ ताल ॥६॥ मुरली मुकुट बिराजही कटिपट बांधे
 पीत ॥ नृत्यत आवत ताजके प्रभु गावत होरी गीत ॥७॥

५ (॥१॥ राग गौड मल्हार (॥१॥ गुलाल की धूँधर में मुकुट झलक तेसी
 भूषण बसन की ॥ सोंधो अरगजा अबीर की अँधियारी अरसपरस भरन
 में किलकनी दसन की ॥१॥ ब्रजभामिनी तामें दामिनी सी कोंधत छूटी
 द्युति दशन की ॥ बरन-बरन रंग की बलि-बलि बल्लभ छबीली त्रियन
 पर बरखा होत कुँवर की ॥२॥

६ (॥१॥ राग गौड मल्हार (॥१॥ छैल छबीला मोहना, (री) घूँघर बारे केस ॥
 मोर-मुकुट, कुंडल लसै, (री) कीन्हें नटवर-भेष ॥ राखे भौंह मरोरिकै,
 (री) सुँदर नैन बिसाल ॥ निरखि हैंसनि मुसुकानिकी, (री) अतिहि भई
 बेहाल ॥ कीर-लजावन नासिका, (री) अधर बिंबतें लाल ॥ दसन चमक
 दामिनि हूँ तैं, (री) स्याम हृदय बन-माल ॥ चिबुक चित्तकौ हरन है, (री)
 राजत ललित कपोल ॥ मारग गहि ठाढ़ी रहै, (री) बोलत मीठे बोल ॥
 चंदन खौरि बिराजई, (री) स्यामल भुजा सुचारु ॥ ग्वाल-सखा सब संग
 लिये, (री) करत गुलालनि मारु ॥ इक भाजत, इक भरत है, (री) कुसुम
 बरन रंग घोरि ॥ सौंधें कीच मची भली, (री) खेलत ब्रज की खोरि ॥
 सुनत चलीं सब धाईकें, (री) देखन नंद कुमार ॥ फागु साँझ-सी हैं रही,
 (री) उड़त गुलाल अपार ॥ मिलीं तरुनि तहँ जाईकें, (री) जहँ बिहरत
 गोपाल ॥ सूर, स्याम-सुख देखिकै, (री) बिसरचौ तनु तिहिं काल ॥८॥
 ७ (॥१॥ राग गौरी (॥१॥ नवल कन्हाई हो प्यारे ॥ एसो झगरो निवार ॥

दान काहे को हो लागे ॥ चले जाहु अपने हो मग ॥ध्रु०॥ आवत जात
 सदा रहीं कबहू सुन्यों नहीं कान ॥ अब कछु नईये चलाइये दूध दहीकोदान
 ॥१॥ सदा सदा हम दान लियो सुनहौ नवल कुमारि ॥ ओर गले व्हे तुम
 गई दान हमारो मारि ॥२॥ ठालेदूले फिरतहो चलो हमें घरकाम ॥ इनकी
 कछुन चलाइये ख्याली सुंदर स्याम ॥३॥ स्याम सखन सोयों कह्यो घेरो
 सबनकों जाय ॥ ढीठ बहुत ये ग्वालिनी मटुकी लेहु छिनाय ॥४॥ गोचारन
 मिस विपिनमें लूटतहो परनारि ॥ कहेंगी जाय ब्रजरायसों ऐसो झगरो निवारि
 ॥५॥ मधु मंगल कह्यो कृष्णसों दान लेहु कछु छाड ॥ इनसों दिनदिन कामहे
 मति बलेहु कछु आड ॥६॥ सांची कहत के हसत हो हमकों होत अवार ॥
 सब सखियन सेनावेनीकर गहने देहो मोती हार ॥७॥ मदनमोहन पिय
 हरखियो लीयो हस्त करहार ॥ अपने कंठले पहरियो गजमोतिन अतिचार
 ॥८॥ सब सखियन मिल मतोमत्यो कीजे कहा उपाय ॥ राधा गहने दीजिये
 ओर नहीं कछुदाय ॥९॥ ललिता विसाखा भाजियो राधा तजी हे अकेली ॥
 गोविंद प्रभु नवकुंज में पियप्यारी की केलि ॥१०॥

८ (१३५) राग गौरी (१३५) मदनमोहन गहवर वन खेलत सरस धमार ॥ सेंदुर
 भर बहु मंगे आई सकल ब्रजनार ॥१॥ फूली लता चहुँदिश वरणवरण बहु
 भांत ॥ भहो हुलास सब जंतही कोकिल कुलकलकांत ॥२॥ गुंजत मधुप
 सुहाये श्रवण सुनत सुखहोय ॥ वैभव निरखन यो रंग उठधाये सबकोय
 ॥३॥ बाजत ताल पखावज आवज डफ मुख चंग ॥ वेणु मधुर ध्वनि सुनियत
 स्याम सुंदर ता संग ॥४॥ नृत्यत नानाबानी गानी सुघर सुदेश ॥ बोलत
 हो हो होरी भयो अधिक आवेश ॥५॥ चोवा अगर अरगजा केसर मिलीहे
 सुरंग ॥ छिरकत भर पिचकाई शोभित छींट अनंग ॥६॥ तब सखी पांच
 सात मिल मोहन पकरे जाय ॥ सोंधो छींट नयनन में मुरली लई छिनाय
 ॥७॥ एक सखी कर मेलत फिरत मंडली जोर ॥ तिनहीं मध्य ब्रजपति
 गति लेत चिते चितचोर ॥८॥ परसत करउर चोली बोली ठोली डारी ॥
 मंदमंद मुसिक्याय कें देत परस्पर गारि ॥९॥ रहत चीर द्रुमद्रुम प्रति दूटत
 मोतिनहार ॥ मगनभयो मनसबको तनकी तजी संभार ॥१०॥ अंचल फेरत

हरिपर सर्वस्व डारत वार ॥ प्रेममगन रस बस भई सबे मनोहर नार ॥११॥
चर्तुभुज प्रभु गिरिधर संग बाढ्यो रंग अपार ॥ देवबधू अति लालच चाहत
घोष बिहार ॥१२॥

९ (ह्रस्व) राग गौरी (ह्रस्व) रसभरी श्याम मचाई रास मंडल में होरी ॥ गोपी
बहुत एक मोहनपें जहां तहां लखिये जोरी ॥१॥ एकपकरदृग कों आंजतहे
एकन मुख लपटावत रोरी ॥ एक करते पिचकाई लेतहें एकनकी कंचुकी
टकटोरी ॥२॥ केसर रंग गुलाल भरेपट करत हें झकझोरा झकझोरी ॥
कृष्णजीवन लछीराम हरि नांचत नवलकिशोर अरुनवल किशोरी ॥३॥

धमार टीपारा के पद

१ (ह्रस्व) राग बसंत (ह्रस्व) वृन्दावन बिहरति बसंत चलि देखों नंद दुलारो ॥
नटवर भेष सज्यों रंग भीनों सोभित सीस टिपारो ॥१॥ सैंग सखा सोभित
रंग भीनें रंगन रगमगे ज्वाल ॥ सुनति चली उठि धाई लाडिली संग लीए
ब्रजबाल ॥२॥ साजि सिंगार बनी अति सुंदर इक बेष इक सार ॥ कोकिल
कैसें कंठ हि गावति मंगल गीत सुद्धार ॥३॥ बाजति ताल मृदंग झांझ
ढफ लागति परम सोहाये ॥ जूथ परस्पर टोल दोऊन के सबहिन के मन
भाये ॥४॥ चोवा चंदन अगर कुंमकुमा छिरकति अरु छिरकाबें ॥ लाल
गुलाल अबीर धुंधरि में तन अभिलाष बढ़ावें ॥५॥ भली भई आयो बसंत
नर नारिन अति सुख पायो ॥ आनंद भयो गयो दुःख अब पसु पंछीन
मन सरसायो ॥६॥ गोपीजन फूले समात नहीं ब्रज सुख कहति न आवे ॥
'नंददास' ब्रज बास बसै अरु जो देखैं सों गावे ॥७॥

२ (ह्रस्व) राग सारंग (ह्रस्व) हेली गोवरधनधरि लाल हेली नटवर खेलति
रंग भरचौ ॥ हेली बन ठन साज समाज सों मग निकसति दृष्टि परचो हेली
॥१॥ हेली सबन चित विह्वल भयो जनु मन आकर्ष लयो री हेली ॥ हेली
अँग अँग अति सौहनौ स्याम लढि रन छयो री हेली ॥२॥ हेली लाल
काछनी कटि तट वाके ललित टिपारो सीस हेली ॥ हेली वाके पटतर कहा
दीजे न्याव गोकुल को ईस हेली ॥३॥ हेली कौतिक लखि मन थकि रह्यौ

जाके सँग सखा दस बीस हेली ॥ हेली इन अँखियन के भाग ते प्यारी जीवहु कोटि बरीस हेली ॥४॥ हेली बंक चिते मुसिकाई मो पै डारचौ अबीरन आई हेली ॥ हेली निरतति नाना भाँति सौं तहँ ग्रीवा हार लटकाई हेली ॥५॥ हेली श्रगतत-श्रगतत थेई-थेई बोले सबदन चटक लगाई हेली ॥ हेली मौन गहे कछू कर चले माँनों मन-ही-मन डहकाई हेली ॥६॥ हेली हों जु नैकु ठाड़ी रही फिरि चितए मृदु मुसिकाई हेली ॥ हा हा करि मोसौं कछ्छी तजि घुंघट मुख हि दिखाई हेली ॥७॥ हेली हों लाजन सकुचित रही पचिहारे समुझाई हेली ॥ हेली कहनों होई सो कही लीजे हरि छिन इत-उत नहिं जाई हेली ॥८॥ हेली होरी के दिन जानि कै तहँ नर नारिन के ठाट हेली ॥ हेली साम दाम बिधि भेद सौं मेरो पाथर तर को हाथ हेली ॥९॥ हेली जब तैं प्यारे रुस गये तब तैं कछू न सुहाय हेली ॥ हेली कठिन-कठिन दिन भरति हूँ रजनी कलप सम जाति हेली ॥१०॥ हेली पूरे पून्यन पाइवों सहज भई पहिचान हेली ॥ हेली 'कृष्णदास' प्रभु सौं मिली बर पायौ जदुकुल भान हेली ॥११॥

३ (१३६) राग सारंग (१३७) होरी खेलति नंद को लाल ॥ चोवा चंदन औरु अरगजा भरि-भरि लीनैं थाल ॥१॥ सीस टिपारो लाल के उर बैजयंती माल ॥ नाँचति गावति सब मन भाये खेलति फागु गुपाल ॥२॥ बाजति ताल मृदंग झाँझ ढफ गावति गीत रसाल ॥ 'गोबिंद' प्रभु कौ श्रीमुख निरखति बलि-बलि गई ब्रज बाल ॥३॥

४ (१३६) राग मारू (१३७) आज बन ठन ब्रज खेलन फाग निकस्यो नंद दुलारो ॥ फन्यो हे ललित भाल लालकें जटित लाल टिपारो ॥१॥ बडरे बंक विशाल नयन छबि भरे इतराई ॥ बन्यो हे मंजुल मोरचंद चलत देखत छाँई ॥२॥ उतबनी ब्रज नवकिशोरी गोरी रूपही भोरी ॥ बोरी प्रेम रंग में मानो एकही डारकी तोरी ॥३॥ ब्रजकी बालले गुलाल मोहनलाल छाये ॥ मानो नील घनके ऊपर अरुण अंबर आये ॥४॥ ताही धूंधर मदमत्त भ्रमर भ्रमत एसें ॥ बनीहे छबि विशाल प्रेम जाल गोलक जेसें ॥५॥ बन्यो हैं जलजंत्र खेल छूटि रंग की धारें ॥ जानों धनुर्धर सरनलरत धारसो धार मारें ॥६॥ और

कहां लगि कहिये खेल परम रस की मूली ॥ गावत शुक शारद नारद
शिव समाधि भूली ॥७॥ जहीं जहीं हरि चरित्र अमृत सिंधु सो रति मानी ॥
नंददास ताकों मुक्ति लोनकोसो पानी ॥८॥


धमार के पद (राग टोड़ी)



१ **॥** राग टोड़ी **॥** हो हो होरी खेले नंदको नवरंगी लाला ॥ अबीर
भरिभरि झोरीहाथन पिचका रंगन बोरी तेसीये रंगीली ब्रजकी बाला ॥१॥
भूरति धरें अनंग गावत तान तरंग ताल मृदंग मिलि बजावे बीनाबेनु रसाला ॥
नंददास प्रभु प्यारीके खेलत रंग रङ्गो छबि बाढी छूटीहे अलक टूटीहे माला ॥२॥

२ **॥** राग टोड़ी **॥** तुम छके छेलसे डोलो ॥ मनमोहन तुम रात्यामात्याजी
चाहे सोई बोलो ॥१॥ अनतजाय तुम धूम मचावो, हमरे बगर तुम कबहु
न आवो, रहे कहां ब्रजमोहन प्यारे गढगढ बतीयां छोलो ॥२॥ जानी
मोहनरीत तिहारी कपटगांठ नहीं खोलो ॥ आनंदघन होरीके ओसरको करि
राखोंओलो ॥३॥

३ **॥** राग टोड़ी **॥** कांकरीन मारि लंगर लागेगीरे ॥ जायकहोंगी कहा
घर उत्तर मांगेगीरे ॥१॥ देखतननंद रिस्याय विना कहें जानेंगी ॥ जो कोऊ
केसेऊ आनि कहे सोई मानेंगी ॥२॥ क्यों तुम अति अकुलात फाग जब
आवेगी ॥ कीजोहु जो उपजे मन में सोई भावेगी ॥३॥ खेलन कों ऊमझो
सब गोकुल गामरो ॥ राजतमनो चकोर यूथ शशि सामरो ॥४॥ जायजुरे
वृषभान गोपकी पौरी ॥ जो जहीं सो तहींते सब देखन दोरी ॥५॥ चंग मृदंग
उपंग बांसुरी बाजे ॥ बीना वेनु रवाव किन्नरी गाजे ॥६॥ जो इतते नंदलाल
ज्वाल संगलीने ॥ त्यों उतराधा नारि यूथ संगकीने ॥७॥ खेल मच्यो दुहुंओर
बढ्यो रंग नीको ॥ क्रीडत सुंदर स्याम भावतो जीको ॥८॥ ले पिचकाईन
हाथ चले ब्रजराई ॥ त्योंकरवंसनले तरुनी सबधाई ॥९॥ केलिकला सुखदेखि
थकी सुरनारी ॥ फूलनकी बरखा जु करी अतिभारी ॥१०॥ लाज गई तनते
उमगी ब्रजनारी ॥ देत परस्पर प्रेम सुहाई गारी ॥११॥ न्हान चले जमुना

ब्रजजन संग लाई ॥ देखि तहां रघुवीर वारनें जाई ॥१२॥

४  राग टोडी  मेरे नन लगे ब्रजपालसों ॥ बोलत वचन रसालसों ॥१॥ मोरचंद्रका सोहे सीस ॥ संग सखा सोहें दसवीस ॥१॥ मृगमद तिलक बनाये भाल ॥ गति मोहे गजराज मराल ॥२॥ भोंह नचावें गावें गीत ॥ सोहें अंबर ओढे पीत ॥३॥ कानन कुंडल दुलरीकंठ ॥ मधुरमधुर बाजे परिमंठ ॥४॥ अरुन कमलदल नेन विसाल ॥ उर सोहें वैजंतीमाल ॥५॥ रतनजटित पोहोंची अतिवनी ॥ निरखि थकी सरदशशिवदनी ॥६॥ नासा को मुक्ता अति चारु ॥ सब ऊपर गुंजा को हार ॥७॥ कटि किंकिनी मोहे रतिमेन ॥ गोपिन रिझवत देदे सेन ॥८॥ रुनुझुनु नूपुर बाजें पाय ॥ जनु पंकज अलिकुल किलकाय ॥९॥ भूषन विविध सजे सब अंग ॥ देखि भयो रवि को रथपंग ॥१०॥ वनवन फिरें चरावें धेनु ॥ जमुना के कुल वजावें धेनु ॥११॥ हाथ लकुटिया नाचें सुदेस ॥ गौरज मंडित सोहें केस ॥१२॥ ग्रहग्रहते दौरी सबअली ॥ फूली सरद सरोजसी कली ॥१३॥ अंचल पटमुख देजुहसी ॥ सब हरिके उरवीचबसी ॥१४॥ जबमोहन दुरिकें चितयो ॥ ते छिन मोमन चोरिलयो ॥१५॥ सोचि संभारि संकेत चली ॥ भूलि गई नवकुंज गली ॥१६॥ तहां ओचकामो भुजगही ॥ बिनबोलें मुख देखि रही ॥१७॥ मुखसों खात खवावत पान ॥ करत मधुर अधरा मृत पान ॥१८॥ तब उरलागि करी रति केलि ॥ पलपल बढी परम सुख बेलि ॥१९॥ यह सुख निरखित सुरनर रहे भूलि ॥ आनंद बरखे नौतन फूलि ॥२०॥ पुनि विपरीत सुरति मति करी ॥ राग रंग आनंद भरी ॥२१॥ त्रिविधि सुखद मलया निल चल्यो ॥ सबे निकुंज फूलीले हल्यो ॥२२॥ तिहिं औसर पलटे पटचीर ॥ देखि बलैयां ले रघुवीर ॥२३॥

५  राग टोडी  नीको बन्यों गोकुल गाम सुहावनों जहां खेलत हरि होरी ॥ इतही सकल ब्रजके बालक सब झुंडन जुरि आई तरुनी सब तिनमे राधा गोरी ॥१॥ विविध भांति बाजेबाजत नबकेसरि अरगजा कुंकुम घोरी ॥ रतन जटित पिचकाई करगहि छिरकत तकि तकि मुदित परस्पर नवल किसोर किसोरी ॥२॥ यह विधि करि खेलत रस सिंधु तरंग भरी

ब्रज खोरी ॥ मोही अमर वधू निरखत बरखत कुसमन रघुवीर फिरत संग
भरि भरि वीरा झोरी ॥३॥

६ (॥३॥) राग टोड़ी (॥३॥) हां हो हरि चले फाग खेलनकों ॥ध्रु०॥ सब ब्रजके
लरिका संग लये ॥ भूषन वसन बनायदये ॥१॥ तिनमें सोभित बलि ओर
स्याम ॥ ऐनमेन सोभा के धाम ॥२॥ हो हो बोलत ग्रहतेचले ॥ कोटि
काम अभिमान दले ॥३॥ जायजुरे सब ब्रजजन जोरि ॥ श्रीवृषभान गोपकी
पोरि ॥४॥ सखी सकल दौरी तहां गई ॥ तब प्यारी वे बोलि लई ॥५॥
खेलत ही सब गुरजन मांझ ॥ यों लागत मानों फूली सांझ ॥६॥ सखी
एककी बांहगही ॥ उझकि झरोखां झांकिरही ॥७॥ तब उततें चित्तये
नंदलाल ॥ रहीनवाय सीस ब्रजवाल ॥८॥ तिहि ओसर कछु सेन दई ॥
प्यारीकी रुचि जानि लई ॥९॥ भरि भरि थार पठायेपान ॥ अति आनंदसों
लागे खान ॥१०॥ द्वादश भूषन अंगबने ॥ अरुन बसन सिंगार सने ॥११॥
खेलनकी सब सोंजकरो ॥ जनजनकों सब जाय भरो ॥१२॥ उठि ठाडे
हरि अपने खेत ॥ इत राधा सब सखिन समेत ॥१३॥ आयजुरे तब दोऊ
टोल ॥ जोरी सरस बनी निर्मोल ॥१४॥ विविध भांति सब बाजे बजे ॥
खेलत बीचबीच बरसजे ॥१५॥ चोवा चंदन कलस भरे ॥ ढेरन सुरंग गुलाल
धरे ॥१६॥ पिचकाई सुंदर करलई ॥ उतबंसन की मारभई ॥१७॥ होरी
खेलत रंग रझ्यो ॥ देखनकों गोकुल उमझ्यो ॥१८॥ जो मांग्यो फगुवासो
दयो ॥ सब मनको मान्यो सो भयो ॥१९॥ देत असीस चली सब बाल ॥
चिरजीवो ब्रजको प्रतिपाल ॥२०॥ जब हरि लोचन चलेनवाय ॥ माधोदास
निरखि बलिजाय ॥२१॥

७ (॥३॥) राग टोड़ी (॥३॥) देखो ब्रज की वीथिनि बिथिनि हो हो करति खेलति
ग्वाल बाल ॥ साजि रबाब बीन बाजे अधवट उपंग चंग बिच बिच मुरली
धुनि मृदंग ताल ॥१॥ जोई जोई निकसत तिन कौं पकरि लेति, छतियाँ
लगावति करति ख्याल ॥ यह विधि होरी खेले रँग भरे रस सिंधु झेले
बलि बलि जाई तहाँ 'लघु गुपाल' ॥२॥

ताल मृदंग उपंग ॥ झांझझालरी किन्नरी ॥ आबजकर मुखचंग ॥३॥ उतहि
समाज गोपालके ॥ बलियुत नंदकुमार ॥ इतगोपी नबजोवना ॥ अंबुज लोचन
चारु ॥४॥ गारीदेत सुहावनी प्रमुदित गोप कदंब ॥ युवति यूथ एकत्र भये ॥
गावत मदन विटंब ॥५॥ रतनजटित पिचकाईयां ॥ कर लीये गोकुलनाथ ॥
तकि छिरकें बनिताबुंदकों ॥ जे राधाके साथ ॥६॥ केसू कुसम निचोयकें ॥
भरत परस्पर आनि ॥ मृगमद चोवा कुंकुमा ॥ चारुचतुर सबसानि ॥७॥
सुरंग गुलाल उडावहीं ॥ बूका बंदनधूलि ॥ चढि विमान सुरदेखहीं ॥ देह
दिसा गई भूलि ॥८॥ खेल मच्यो अति गहगह्यो ॥ चितवत ब्रज बधूधाय ॥
राधा रसिक गुपालकी ॥ आसकरन बलिजाय ॥९॥

३ (॥३॥) राग आसावरी (॥३॥) बरसानेतें सजि चली ॥ रंग भीनी ग्वाल ॥
फाग खेलन हरि संग ॥ होरि रंग रह्यो रंग भीनी ग्वालि ॥ करि सोलहे
शृंगारसबे ॥ रंग भीनी ग्वालि ॥ भरिभरि सेंदूर मंग ॥ होरी रंग रह्यो रंग
भीनी ग्वाल ॥१॥ गृहगृहते सब निकसी ॥ अपने अपने रंग ॥ बहुविधि
वाजे वाजहीं ॥ ताल मुरज डफ चंग ॥२॥ मधि हैं गोरी राधिका ॥ अलियन
वृंदन मांह ॥ फूलन की छरी हाथले ॥ गहि ललिता की बांह ॥३॥ कंचन
घट कुंकुम भरे ॥ चोवा अगर अबीर ॥ बांधे फेंट गुलालकी ॥ केसुकेसरि
नीर ॥४॥ गावत गीत तहां गई ॥ घोष राय जूकी पोरि ॥ सुनत कुंवर
कोलाहल ॥ आये हैं गिरिधर दोरि ॥५॥ पिचकाई सोंधे भरी ॥ करलियें
मदन गुपाल ॥ तकितकि तिनकोंछिरकहीं ॥ जे मृगनयनी बाल ॥६॥
इतखिलारबल मोहना ॥ लरिका गोपकुमार ॥ उत ललिता चंद्रावली ॥
राधा गोपी अपार ॥७॥ अंचल ओट दुरावहीं ॥ भरिभरि कनक कचोल ॥
प्यारे के सीस नवावही हो होकर बोल ॥८॥ काजर नयनन आंजिकें ॥
मंडित करहिं कपोल ॥ फिरफिर श्री मुख देखही ॥ फूले करहिं कलोल
॥९॥ फगुवा कोपट अंचही ॥ लीनें हार ॥ प्यारी कों पहरावही ॥ हसत
देदे करतार ॥१०॥ कमलनमार मचावही ॥ भीजि रहे रस रंग ॥ खेलतहे
नंद लाडिलो ॥ वृषभान लडेंतीके संग ॥११॥ सिथिलचीर कटिमेखला ॥
गये कंचुकी बंद टूटि ॥ गलित कुसुम कबरीनते ॥ गईहे बेनी छूटि ॥१२॥

८ ॥ राग टोडी ॥ मन मेरे की इच्छा पूजी आयो मास फागुन को
नीको ॥ लाज सकुच तजि सास ननद की दौरि गहंकरसों कर पीको ॥१॥
अब मेरो कोऊ कहा करेगो यह तो औसरहे होरीको ॥ मेनभरी मूरति
व्रजपतिकी देखत दुःख मिटेगो जीको ॥२॥

धमार के पद - राग आसावरी

१ ॥ राग आसावरी ॥ धनिधनि नंद जसोमति हो धन्य श्रीगोकुलगाम ॥
धन्य कुंवर दोऊ लाडिले बलिमोहन जाको नाम ॥१॥ छबीलेहो ललना ॥
श्रीवल्लव राजकुमार छबीले ॥ श्रीगिरिवरधारी लालछबीले तुम या गोकुलके
चंदछबीले ॥ध्रु०॥ सखा नाम ले बोलियो सुबलतोक श्रीदाम ॥ श्रवन सुनत
सबधाइयो बोलत सुंदर स्याम ॥२॥ भेष बिचित्र बनाइयो भूषन बसन
सिंगार ॥ मंदिर ते सब सजि चले बालिक बलि बनवारि ॥३॥ गिरिवरधर
अतिरस भरे मुरली मधुर बजाय ॥ श्रवनसुनत सब ब्रजवधू जहां तहाँते
चलिंधाय ॥४॥ रुंज मुरज डफ झालरी बाजे बहुबिधि साज ॥ बिचबिच
भेरिजुबाजही रह्यो घोख सब गाजि ॥५॥ पिचकाई करकनिककी अरगजा
कुंकुम घोरि ॥ प्रान पिया कों छिरकहीं तकितकि नवलकिसोरि ॥६॥ एक
ओर जुवतीभई एक ओर बलबीर ॥ कमलन मार मचाईयो रूपे सुभट रनधीर
॥७॥ उलटि आई ठाडी भई अपने अपने टोल ॥ झूमक चेतबगाबही बिचबिच
मीठे बोल ॥८॥ हँसतहँसत सब आइयो लीनों सुबल बुलाय ॥ हा हा काहू
भांतिसों नेकमोहनकों पकराय ॥९॥ वोहोरि सिमिटि सबधाइयो
मोहनलीनेघेरि ॥ नैनन अंजन आंजिके हँसत बदन तनहेरि ॥१०॥ यह बिधि
होरी खेलही सकल घोष संगलाय ॥ गोवर्द्धनधर रूपे गोविंद बलि बलि
जाय ॥११॥

२ ॥ राग आसावरी ॥ या गोकुलके चोहटे रंग राची ग्वाल ॥ मोहन
खेलें फाग नैन सलोने री रंगराची ग्वाल ॥ नरनारी आनंद भयो ॥ सामलके
अनुराग नैन ॥१॥ दुंदुभी बाजे गहगहे ॥ नगर कुलाहल होय ॥ उमड्यो
मानस घोखको ॥ भवन रह्यो नहीं कोय ॥२॥ डफ बांसुरी सुहावनी ॥

आनंद सिंधु मगन भये ॥ देह दशा गई भूल ॥ उदय चंद गोविंदहे युवती
कुमुदिनी फूल ॥१३॥ रस गिरिधारी सों विलसही ॥ बढ्यो हृदय अनुराग ॥
कृष्णदास प्रभु अधरकी ॥ पीवही सुधा बडभाग ॥१४॥

४ (॥१॥) राग आसावरी (॥१॥) रूप अनुपम मोहनी रंग राचे लाल ॥ मोहे
कुँवर किसोर लाड़ गहेल री रंग राचे लाल ॥ वदन सुधा रस स्रवत री
रंग राचे लाल ॥ पीबत नैन चकोर लाड़ गहेल री रंग राचे लाल ॥१॥
नैन कमल मुख कमल कै ॥ रंग राचे लाल ॥ चरन कमल कर लाल ॥
लाड़ गहेल री रंग राचे लाल ॥ तन मन फूले कमल री ॥ रंग राचे लाल ॥
मोहन मुदित मराल ॥ लाड़ ॥२॥ हासि कुसम जोबन लता ॥रंग॥ अलि
आसक्त तमाल ॥लाड़ ॥ बचन रचन सुर सबद के ॥ रंग ॥ मृग मन मोहे
रसाल ॥ लाड़ ॥३॥ ये घन तुम दुति दामिनी ॥ रंग ॥ मिलि बरसहु प्रेम
सुहाग ॥ लाड़ ॥ आलस क्यों बलि कीजियै ॥ रंग ॥ हिलिमिलि खेलहु
फागु ॥ लाड़ ॥४॥ सुनति भयौ चित चाउ री ॥ रंग ॥ सुघर सिरोमनि
जानि ॥ लाड़ ॥ सहचरी सचि सुरनि लियै ॥ रंग ॥ करति मधुर कल
गान ॥ लाड़ ॥५॥ श्री कुंज बिहारी खेल ही ॥ रंग ॥ प्रेम भरे रस
रंग ॥ लाड़ ॥ बूका बंदन मेल ही ॥ रंग ॥ कुँमकुम कुसम सुरंग ॥ लाड़ ॥६॥
मदन मुदित अंग अंग री ॥ रंग ॥ सुरति सुखद कल केलि ॥ लाड़ ॥
उर कर बर परसे हैंसे ॥ रंग ॥ जुगल नवल रस झेलि ॥ लाड़ ॥७॥
पीबत सुधा रस माधुरी ॥ रंग ॥ चित्रत पीक कपोल ॥ लाड़ ॥ अंग अंग
अनुराग री ॥ रंग ॥ कहत मधुर मुदु बोल ॥ लाड़ ॥८॥ राग रंग अति
रंग रह्यो ॥ रंग ॥ श्री हरि दास बिनोद ॥ लाड़ ॥ बिचित्र बिहारन दास
री ॥ रंग ॥ विपुल बढावति मोद ॥ लाड़ ॥९॥ छिनि छिनि प्रति रति साज
ही ॥ रंग ॥ कुंज सदन सुख रासि ॥ लाड़ ॥ मधुर प्रेम रस बिलस
ही ॥ रंग ॥ बलि बलि 'नागरीदास' ॥ लाड़ ॥१०॥

५ (॥१॥) राग आसावरी (॥१॥) धनि धनि शुभ घड़ी धनि आज ॥ श्री गोकुल
सुख वास बसे अब, श्री विठ्ठलेश प्रभु महाराज ॥१॥ मोतिन चौक पूरे
घर घर प्रति, कुमकुम हाथन शोभित द्वार ॥ मंगल कलश अरु ध्वजा

पताका, घर घर बिथनि बंदनवार ॥२॥ बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ, दुंदभी
मदन भेरि सहनार्ई ॥ स्वस्ती वचन पढ़त ऋषिवर तहां निज जन नाचत
गावत आई ॥३॥ तिहिं अवसर हरि जु को अलंकृत, बागो पाग केसरी
रंग ॥ कुल्हे केसरी तीन चंद्रिका भूषन भूषित राधा संग ॥४॥ वृजजन
के उत्साह भाव सों मेवा मिठाई बहु विधि भोग ॥ बीरा धरि आरती उतारत
आनन्द मगन सबे वृज सबे वृज लोग ॥५॥ छिरकत हैं गिरिधर प्यारे कों,
केसर चोवा अबीर गुलाल ॥ मनहु अरुण उदय घन बिजुरी कनिक बेलि
संग स्याम तमाल ॥६॥ जुग जुग राज करो श्री गिरिधर श्री विठ्ठलनाथ
सदा वृजवास ॥ श्री वल्लभ पद रेणु कृपा बलि यह सुख मांगत है
हरिदास ॥७॥



६ (॥१॥ राग आसावरी (॥३॥) धुनि सुनि श्याम सुंदर खेले होरी बहुरि ढफ
बाजन लागे ॥ उघटति सबद तत थेई तत थेई गावति धमार अनुरागे ॥१॥
बरन-बरन के अंबर पहिरें केसर सौंधे भीने बागे । 'माधो' यह छबि
निरखि-निरखि कै दुसह बिरह दुःख भागे ॥२॥



७ (॥१॥ राग आसावरी (॥३॥) भयौ मदन परंचड ए हरि खेलिए मिलि आई ॥
गोप सब मिलि मतो मतिए रोकिए ब्रज जाई ॥१॥ तरनि-तनया तट बिपिन
में घेरि सकल समाई ॥ रैन दिन इकु ठौर रहिए छाँडिए बन गाई ॥२॥
साजिए कर कनक-पिचकाई बिबिधि रतन जराई ॥ तकि तकि चलाई सनमुख
डारिए मुसिकाई ॥३॥ जोरिए किन साज अपनों एकु एकु सिखाई ॥ ले
गुलाल मुँठिन भरि भरि भाजिए किलकाई ॥४॥ घोरि केसू कुँमकुमा रस
सीस कलस चढाई ॥ ताल, बीना, झांझ, किन्नरि, लेहु ढफ मढ़वाई ॥५॥
दौरिए ब्रज बाल ऊपरि देहु तिन हि हर्राई ॥ कुसुम पल्लव माल अपने
उर पहिराई ॥६॥ घोख काहु न जान कहिए दीजिए जु दुहाई ॥ लीजिए
अचरा पकरि कै कीजिए मन भाई ॥७॥ अंग अंग अनंग प्रकट्यों बिबसता
कों पाई ॥ भवन भवन निसाँन लै लै फिरति उनमद भाई ॥८॥ तान कोऊ
तोरि नाँचै फागु गीत गवाई ॥ जाई पनघट एकुठे व्है बाल बृंद लराई ॥९॥
भयौ ब्रज में अतुल आनंद कहा रसना गाई ॥ देव गन निज गेह भूलै केलि



लखि सुखदाई ॥१०॥ बसन भूषन दए रुचि सों मोल सरस मंगाई ॥ पढ़ति
अस्तुति परसपर मिलि जियौ ब्रज के राई ॥११॥ बिबिधि कुसुमनि होत
बरखा सुर बिमानन छाँई ॥ कमल बदन निहारि ब्रज जन रहति मन अरुझाई
॥१२॥ देति सरबसु बारि मुख पै धरति चित में चाई ॥ कांनि करति न
गुरु जनन की लसति भुज लपटाई ॥१३॥ बजे बाजे मुरझ, आबज ढोल
अरु सहनाई ॥ गारी गावैं दिहुँनि सातैं हाव भाव बताई ॥१४॥ रँगमँग
नँदलाल हरखे, हियो अधिक सिराई ॥ कहा बरनों बाल मति सों जाति
सुधि बिसराई ॥१५॥ श्रीविठ्ठलेश प्रताप कों बल लेहु निस दिन गाई ॥
यह लीला देखि 'जन गिरिधरि' गहे जिन कैं पाँई ॥१६॥

८ (॥१॥ राग आसावरी (॥१॥) जमुना तट क्रीडति नँद नंदन होरी परम सुहाई
हो ॥ जुबती जूथ सँग लियैं राधा, सनमुख खेलनि आई ॥१॥ ठोर ठोर
तैं सखा बुलाये औ बलदाऊ भाई ॥ आये दौरि मदन मोहन पे, उर आनँद
न समाई ॥२॥ रतन जटित की भरि भरि लीने करन कनक पिचकाई ॥
प्राण प्रिया मुख निरख स्याम कों छिरकति मृदु मुसिकाई ॥३॥ प्यारी सुरँग
गुलाल मुँठि ले, पिय की ओरि चलाई ॥ मानों उमगि अनुराग अधिक
बल बाहिर देति दिखाई ॥४॥ मृगमद चोवा भरि बेला कर सखी एकु लै
धाई ॥ सखा जूथ बैनु बजावति मोहन मुख लपटाई ॥५॥ औंधी अधिक
उड़ी जु अबीर की, दिन मनि गयों लुकाई ॥ श्रीदामा हलधर सों बोल्यो,
कीजे कहा उपाई ॥६॥ जुबति वृंद सब जोरि करति अति, क्योंहूँ वच्यो
न जाई ॥ तब संकरषण मतों उपायों ललिता सखी बुलाई ॥७॥ सुबल
सखा के उपरैना सों खेंचि जु गाँठि बँधाई ॥ सनमुख बचन कहति
गिरिबरधरि, यह किन बुधि बताई ॥८॥ ललिता सुबल किये इक ठौरें,
भली जोरि बनि आई ॥ जैसैं चंद्र चकोर सुधानिधि, पीबति नैन अघाई
॥९॥ दौरी कुँवरि अचानक राधा, गहे स्याम सुखदाई ॥ प्रेम गाँठि सों
मन अरुझानों, सुरझति नहिं सुरझाई ॥१०॥ ब्रज बनिता सब गारी गावैं,
मधुरे बचन सुनाई ॥ सुर बिमान चढ़ि कौतुक भूले जै जै गोकुल राई ॥११॥
बाजति ताल पखाबज आबज मदन भेरि सहनाई ॥ पटह झांझ झालरी

महुवरि ढफ, सुनि घन गयों लजाई ॥१२॥ विविध भौंति कुसुमित बिंदाबन
सौरभ कछों न जाई ॥ ऋतु बसंत की कीरति मानों, केकी, अली, पिक,
गाई ॥१३॥ केलि सिंधु बरनौ कहाँलौं बिधि रसना एक बनाई ॥ तन मन
धन सों जुगल रूप पै 'गोकुलचंद' बलि जाई ॥१४॥

९  राग आसावरी  बरसानेकी नबल नारि मिलि होरी खेलनि
आई हो ॥ बरबट धाय जाय जमुना तट घेरे कुंवर कन्हवाई ॥१॥ अतिझीनी
केसरि रंग भीनी सारी सुरंग सुहाई ॥ कंचन बरन कंचुकी उपर झलकत
जोवन झाँई ॥२॥ केसरि कस्तुरी मलयागर भाजन भरि भरि लाई ॥ अबीर
गुलाल फेंट भरि भामिनी करन कनिक पिचकाई ॥३॥ खेलत खेलत रसिक
सिरोमनि राधाजु निकट बुलाई ॥ ऋषिकेस प्रभु रीझि स्यामघन बनमाला
पहराई ॥४॥

१०  राग आसावरी  जमुना तट खेलत गोपी हो ॥ नंद को लाल
गोवर्धनधारी ताके नखमनि ओपी हो ॥१॥ चल री सखी जैये जहां छिन
जियरा न रहाई हो ॥ वेनु शब्द में मन हर लीनो नाना रंग बजाई हो ॥२॥
सजल जलद तन पीतांबर करमुख मुरलीधारी हो ॥ लटपटी पाग बनी
मनमोहन ललना रही निहारी हो ॥३॥ नैनसों नैन मिले करसों कर भुजा
ठई हरिग्रीवा हो ॥ मधि नायक गोपाल विराजत सुंदरताकी सींवा हो ॥४॥
करत केलि कुतुहल माधो मधुरी बानी गावे हो ॥ पूरन चंद सरदकी रजनी
संतन सुख उपजावे हो ॥५॥ सकल सिंगार सजे ब्रजवनिता नख सिख
लों न लखानी हो ॥ लोक वेद कुल धर्मकी नेकउ न राखत कानि हो ॥६॥
बलि जाऊँ बलके वीर त्रिभंगी संतन सुखदाई हो ॥ सकल बिथा जू हरी
या तनकी हरि हैंसि कंठ लगाई हो ॥७॥ माधो नारी नारी माधोको छिरकत
चोवा चंदन हो ॥ एसो खेल रच्यो जु परस्पर नंदनंदन जगबंदन हो ॥८॥
ब्रह्मा इंद्र देवगन गंधर्व सबै एक रस बरसे हो ॥ सूरदास गोपी बडभागी
हरि मुख क्रीडा दरसे हो ॥९॥

११  राग धनाश्री  जमुना तट धूम मची है री माई कृष्ण साँवरो
खेलै होरी ॥ चलो सखी मिल देखन जेयै नीकी बनी राधा गोरी ॥१॥

घर घरतें बनिता बनि आई अबीर लिए भरि भरि झोरी ॥ बदन उधार
उधार निरखत मुँख माँड़त अपनी रोरी ॥२॥ एक नाचत एक मृदंग बजावत
एक गावत हैं धुनि थोरी ॥ 'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे आनंद
सिंधु झकझोरा झकझोरी ॥३॥

१२ (झँझूँ राग आसावरी झँझूँ) डफ बाजन लागे हेली ॥ चलहु चलहु जैये
तहँ री ॥ जहँ, खेलत स्याम, सहेली ॥ जहँ घन-सुंदर साँवरो, नहिं मिस,
देखन दाँऊ ॥ ये गुरुजन बैरी भए, कीजे कौन उपाउ ॥१॥ आबहु बछरा
मेलिये, बन को देहिं बिडारि ॥ वे दैहे हमको पटे, देखैं रूप निहारि ॥२॥
औंजत गागरि द्वारिये, जमुना जल केँ काज ॥ इहिं मिस बाहिर निकसिके,
जाई मिलें ब्रजराज ॥३॥ राग रंग रंगि मँगि रह्यो, नंद राई दरबार ॥ गावति
सकल गुवारिनी नाचत सकल गुवार ॥४॥ घरी घरी आनंद करि, जीवन
जानि असार ॥५॥ खाइ, खेलि, हँसि लीजिये, फाग बड़ौ त्यौहार ॥ मुरली
मुकुट बिराजही, कटि पट राजत पीत ॥ सूरज प्रभु आनंद सौं गावत होरी
गीत ॥६॥

१३ (झँझूँ राग आसावरी झँझूँ) बरसानें तैं वृषभानु पुरा की होरी खेलनि
निकसी हो ॥ बरन बरन बन ठन आभूषन कनक बेलसी बिगसी हों ॥१॥
जोबन रूप मदन मनमथ कों उर मोहन मदमाती हो ॥ ऐंड़त चले चाल
गरबीली मंद मंद मुसिकाती हो ॥२॥ झोरी भरि अबीर कुँमकुमा करन
कनक पिचकाई हो ॥ आवति चंग उपंग बजावति गावति हरि कों गारी
हो ॥३॥ ठाड़े जहाँ सखा संग लीने चतुर खिलारि कन्हवाई हो ॥ सीस
नवाई दूर भई ठाड़ी हँसि हँसि निकट बुलाई हो ॥४॥ उमड़े हैं गोपी ग्वाल
परसपर भारी खेलि मचायौ हो ॥ उड़ति गुलाल अबीर अरगजा अति ही
अंबर छायो हो ॥५॥ गोपीन मतो बनाई धाई केँ मनमोहन गहि लीने हो ॥
आँखि आँजि मुख माँडि महावर हो हो करि तजि दीनें हो ॥६॥ अपुने
दाव स्याम हु पाए तब गहि लीने राधे हो ॥ जेतेक दाव चाव चित उपजे
सकल मनोरथ साधे हो ॥७॥ बेनी गुही बनाई उलटि केँ कछुक संधानी
कीनीं हो ॥ दुहुँ और दिठौना दै केँ तब छाँडि रंग भीनीं हो ॥८॥ तारी

दे दे ज्वाल हँसति है गोपिन मन मुसिकानी हो ॥ मन में मुदित भई बाहिर
तैं राधा कछु कुमलानी हो ॥९॥ नंद नंदन वृषभानु लली की सोभा कहा
बखानैं हो ॥ 'ब्यास-दास' प्रभु रीझि भिंजि सौं वारति तन मन प्रानैं
हो ॥१०॥

१४ (॥१॥) राग आसावरी (॥१॥) बरसानैं तैं कुंवरि राधिका होरी खेलनि
आई हो ॥ सैंग सखी वृंद लीए बहु नागरी उड़गन चंद सुहाई हो ॥१॥
गावति गारी बनीं ब्रजनारी नंद भुवन में आई हो ॥ पकरि लये स्याम सुंदर,
घन दामिनि देति दिखाई हो ॥२॥ तब सखी भेख बनाई मोहन कौं सारी
सुरंग सुहाई हो ॥ अति बहु मोली अरगजा चोली केसरि रंग रंगाई हो
॥३॥ नख सिख भेख बनाई स्याम कौं उपमा कहत न जाई हो ॥ जुबति
बृंद में जुबति भेख धरि बैठें कुंवर कन्हाई हो ॥४॥ तब नंद रानी अति
सरसानी मेवा बहुत मँगाई हो ॥ चिरजीयो नट नागर जुग जुग 'सरस
रंग' गुन गाई हो ॥५॥

धमार के पद - राग सोहनी

१ (॥१॥) राग सोहनी (॥१॥) साँवरो री आज खेलै होरी ॥ उड़ति गुलाल
लाल भए बादर छाँई रह्यो नँदगाँव सबरो री ॥१॥ होरी गोरी रंग में बोरी
मिटि गयो तन ताप सब जोरी ॥ 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर चितवन
में जुरि अवरो री ॥२॥



२ (॥१॥) राग सोहनी (॥१॥) हो होरी के खिलार मेरी अँगिया रंग भरि डारी
हो ॥ बहियाँ मरोरी मेरी चुरियाँ तोरी और दीनी हैं गारी हो ॥१॥ चोवा
चंदन अगर कुँमकुमा पिचकाईनि भरि मारी हो ॥ खेलि मच्यों जमुना तट
कुंजन 'रसिक राई' बलिहारी हो ॥२॥



धमार के पद - राग हिंडोल



१ (॥१॥) राग हिंडोल (॥१॥) नंद नंदन नवल नागर किसोर बर खेलति बसंत
बन्यों रंग अति भारी ॥ राग हिंडोल गावति नवल नागरी अति हिं रस
भीज रही है देति तारी ॥१॥ लाल गुलाल रह्यो गगनलों घुमड़ि कै केसरि

कुँमकुमा भरि हो पिचकारी ॥ ताल किन्नर मुरज बीन ढफ बाज ही बिच
मोहन मुरली सप्त सुर धारी ॥२॥ सुभग जमुना तीर ठौर ब्रिंदा बिपुन बाल
सुक कोकिला कीर किलकारी ॥ गहे द्रुम डार ठाढे नंदलाल जहाँ राधिका
सब सखि मधि सुकुमारी ॥३॥ बढ्यो दुहूँ दिस खेलि अधिक सोहावनी
हँसति मुसिकाय यौ ब्रजनारी ॥ मदन मोहन गिरिधर वर पीय जु देव मुनि
करति कुसुम बरखारी ॥४॥



धमार के पद राग सिंधुडा

१  राग सिंधुडो  झूम सब आई गोपी लपट रही नंदलाल ॥
मानो स्याम धन में चपलासी ज्यों सोभित ब्रजबाल ॥१॥ नेनन सेनन बेनन
गारी दे अंचर और ऐंचत गाल ॥ सुघर खिलार नवल धीरज प्रभु कर
पाई हो ख्याल ॥२॥

२  राग सिंधुडो  अरेकारे प्यारे रतनारे भोंरा बदन कमलके लोभी ॥
फिरत पराग हेततबहीते उपजत कलिकागोभी ॥१॥ फूलरहे द्रुम डारडार
झुक भारकुसुम मकरंद ॥ ताहि छांड पियो चाहत तुम सुधाकिरण मुखचंद
॥२॥ जो तूहोहितृषा आतुरतो रहिब अलक लरलाग ॥ पुनि विश्राम कियो
चाहेतो चिबुक गाढ खगखाग ॥३॥ जो उन्मत्त गान करें तो श्रुतिपथ लग
गुंजार ॥ क्यों भटकें ब्रज बन वन वीथन यह निश्चय उरधार ॥४॥

३  राग सिंधुडो  अरे कुमलाने आनन मोहना क्यों फिरत अनमनो
आज ॥ बीतत जान ख्याल होरीको बिसर गयो सब काज ॥१॥ यह खेल
बाहिर गरियारें विफरिन चेंतजिलाज ॥ कहा भयो जोहें सिर ऊपर मदन
गरीब निवाज ॥२॥ सेवा फाग चतुराई के बल जुर चल्यो सुरतसमाज ॥
कृष्णजीवन लछीरामके प्रभुहरि दिन दूल्हे ब्रजराज ॥३॥



धमार के पद राग धनाश्री

१  राग धनाश्री  हरिसंग खेलन जाय अरी चलि बेगि छबीली
॥ध्रु०॥ निकस्यो मोहन सामरो हो फाग खेलन ब्रज मांझ ॥ घुमड्यो अबीर

गुलाल गगनमें मानो फूली सांझ ॥१॥ बाजत ताल मृदंग मुरज डफ कहीन परत कछुबात ॥ रंगरंगभीने ग्वाल बाल सब मानो मदन बरात ॥२॥ जुरि आईं ब्रजसुंदरी करिकरि अपनोठाट ॥ खेलत नहीं कोऊ कान्ह कुंबर सों चाहत तिहारी वाट ॥३॥ बिनराजा दलकोन काज बलि उठिये छांडीये अंड ॥ उमग्योहे निधि ज्यों नवलनंदको रुकतरावरी मेंड ॥४॥ उठीहे विहंसि वृषभान कुंवरिवर करपिचकाई लेत ॥ सहि न सकत कोऊ महासुभट लों सुनत समर संकेत ॥५॥ आई रूप अगाधा राधा छबि वरनी नहीं जाय ॥ नवलकिसोर अमलचंदे मानो मिली हे चंद्रका आय ॥६॥ खेल मच्यो ब्रज बीधनि महियां बरखत प्रेम आनंद ॥ दमकत भाल गुलाल भरे मानों वंदन भुरके चंद ॥७॥ दुरिमुरिभरन वचावन छबिसों बाढ्यो रंग अपार ॥ मेनमुनीसी बोलत डोलत पग नूपुर झनकार ॥८॥ ओर रंग पिचकारिन भरिभरि छिरकत हरि तनतीय ॥ कुटिल कटाक्ष प्रेमरंग भरिभरि तकितकि पियको हीय ॥९॥ सिव सनकादिक नारदसारद बोलत जयजयजे ॥ नंददास अपने ठाकुरकी जीयूं बलैयाले ॥१०॥

२ ॥ राग धनाश्री ॥ राधाकुंवरि रसिक मनिसों हो हरिहोरी खेलोजू ॥१॥ जमुनातीर सघन कुंजनमें मिलि युवतीदलपेलोजू ॥ सरस गुलाल अबीर अरगजा तकि आंखिनमें मेलो ॥१॥ तब ब्रजके लरिका घरघरतें टेरिटेरि सब बोले ॥ आये अपने थोकनजुरि मानो मदगज मोकल खोले ॥२॥ जेसेमन भाये बागेले सबहिन कों पहराये ॥ तेसेई अपने काजेंसव सोंधें सहित मंगाये ॥३॥ पहले सबन कनिक पिचकाई परममुदित मनदीनी ॥ तापाछें द्वे रतन जटित बलदाऊ आपुन लीनी ॥४॥ अतिसुरंग केसरि के रससों कनिक कलस भरिलीने ॥ फेंटन सुरंग गुलाल अबीर भरायभरे रंगभीने ॥५॥ चोवामेद जवादिसाखि गोरामृगमद घसिघोरी ॥ चले लिवाय अरगजा कुंकुम चंदन बंदन रोरी ॥६॥ भेरिगजक आवज महुवरि डफ झांझताल मुखचंगा ॥ बीनरवाष किन्नरीझालरी बाजत सरस मृदंगा ॥७॥ सबसमाजले जाय जुरे वृषभान रायकी पोरा ॥ तब राधासों कहीयत मुदितमन जहां तहां ते उठि दोरी ॥८॥ श्रवनसुनत वृषभान नंदनी अतिआतुर उठिधाई ॥ सखी

सकल घेरें चहुँदिसतें निरखि स्याम मनभाई ॥९॥ अंचलबीच दुरायकनिक
 पिचकाई भरिलाई ॥ ताकिताकि सुंदरमुखऊपर छिरकीं ओर छिरकाई ॥१०॥
 बलि समेत सब सखा उमगि तरुनीगन ऊपर धाये ॥ होहो करत पलास
 कुसम रंग भरि भरि कलसन माये ॥११॥ करि बिचार मनमें ललिता मधुमंगल
 कैढिगआई ॥ तेरे पांय लागतिहों क्योंहूं नंदलाल पकराई ॥१२॥ तब
 मधुमंगल कढ्यो सखनसों सुनों एकविधि कीजे ॥ हम सब एक ओर बहेकें
 पकराय स्याम कोंदीजे ॥१३॥ लेले सुरंग गुलाल उडावत अरुन अंबर
 कीनों ॥ देखत अचरज होत घोस मानो रजनी करलीनों ॥१४॥ एकदौरत
 बीसकदौरी ले गई स्याम भरिकोरी ॥ सोंधे सोंमुख मांडि कहत अब भलीबनी
 यह जोरी ॥१५॥ पीतांबर मुरली करतें ले ललिता बिसाखा भाजी तिहिं
 ओसर पकरे छलबलसों करगहि अखियां आंजी ॥१६॥ कहोकहा फगुवा
 देहो तुम सुनों गोकुलके राई ॥ फगुवादेन कढ्यो मुखसों तब मुरली आनि
 गहाई ॥१७॥ कैसें छूटन पेहो हमपे बिन दीयें बलिभाई ॥ रतनजटित आभूषन
 रंगके अंबर मोल मगाई ॥१८॥ अनुरागे पागे रससूं सब नंदद्वारपे आये ॥
 वारि आरती विविध भांतिसों जसुमति करत बधाये ॥१९॥ न्हानचले जमुना
 किलकत सब सोभावरनी न जाई ॥ देखतही अंमरेस थकित भये पोहोंपन
 वृष्टि कराई ॥२०॥ खेलिफागु अनुरागसिंधु बढ्यो ब्रजजन संग लगाई ॥
 सुंदर वदन कमल ऊपर रघुवीर वारने जाई ॥२१॥

३  राग धनाश्री  गोरे अंगगुवालि गोकुलगामकी ॥ध्रु०॥ लहर
 लहर जोवना करेहो थहर थहरकरेदेह ॥ छतियां धुकर पुकर करे वाकोनयो
 रसिकसों नेह ॥१॥ कुवटाको पानीभरे गोरी नवि नवि लेजू लेय ॥ घूंघट
 दाबेदांतसों ये गर्व न उत्तरदेय ॥२॥ पहरे नौतन चूनरी लावनि लईसकोरि ॥
 अरग थरगसिर गागरी बहचितेचली मुखमारि ॥३॥ चालचले गजहंसकी
 ऊंची नीची दीठ ॥ ओढनके मिस मुरकिकें नेंक हरिहे दिखारे पीठ ॥४॥
 ठमकि चले मुरिमुरि हसे गोपी फिरि फिरि ठाडी होय ॥ घायलसी घूमत
 फिरे याको मर्म न जानें कोय ॥५॥ तिलक बन्यों अंगिया बनी वाकी पायल
 की झनकार ॥ बडेबगरतें नीकसी स्याम खरे दरबार ॥६॥

४ ॥ राग धनाश्री ॥ मनमोहनकी यार गोरी गूजरी ॥ सब ब्रजके टोकत रहें याते निकसे घूँघट मार ॥१॥ झूठे हूँ कोऊ कहि उठे आये मदन मुरारी ॥ रहि न संके इत उत तके मुरिदेखे वदन उधारि ॥२॥ तनसुख की सारी लसे कंचन सोतन पाय ॥ मानो दामिनि की देहसों रही जोन्हलपटाय ॥३॥ धरतपगन लाली फिरे ढरे भरें रीत जाय ॥ काचकरोती जल रंग्यो कछु यही जुगति ठहराय ॥४॥ गुरु निबंतमधि पातरो ओप्यो सो मुखइंदु ॥ अरुन अधर मुसिकातसो भाल सेंदुरको बिंदु ॥५॥ लाललखें लाली चढे उतसासत्रास पियराय ॥ मानोसंयोगिनि विरहनी अरुझी बीच सुभाय ॥६॥ ज्योंज्यों नरनारी सबे हिलिमिलि करत चवाव ॥ सिरमनि प्रभु दोऊ मिले तातें भयो चोगुनों चाव ॥७॥

५ ॥ राग धनाश्री ॥ छांडि देहु यह बानि प्यारे कमलनयन मनमोहना ॥१॥ प्यारे आबत जाति सदा रहीं कबहुन देखी ऐसी रीत ॥ अनहोती श्रवनन सुनी केसों होय प्रतीत ॥१॥ गिरि घटियां उठि भोरही मारग रोकत आय ॥ बहुरि अचानक सीसतें मटुकीदेत दुराय ॥२॥ ऐसी तुमहीन बूझिये अटक रहत गहिबांह ॥ मातपिता भैया सुने सांझपरत वन मांह ॥३॥ हैंसतही मेमन मसतहो कहि कहि मीठे बोल ॥ सेंटमें तक्यों पाइये यह गोरस निर्मोल ॥४॥ चत्रभुज प्रभु चित करखियो चितवनि नयन विशाल ॥ रतिजोरी मिसदानके गिरिगोवर्धनलाल ॥५॥

६ ॥ राग धनाश्री ॥ नेंक मोहोंडो मांडनदे होहोरीके खिलैया ॥ जो तुम चतुर खिलार कहावत अंगुरिन को रसलेहो ॥१॥ उमडे घुमडे फिरत रावरे सकुचत काहेहो ॥ सूरदास प्रभु होरी खेलो फगुवा हमारो देहो ॥२॥

७ ॥ राग धनाश्री ॥ होरी खेलि कहांत आये लालन रसके सांवरे रंग भीने ॥ रंगचुचात पीतांबर कांधें कनिक पिचककरमें लीने ॥१॥ प्रीत पगे कितलाल गुलालन कोन नारि रस बस कीने ॥ प्रान पिया रे पैयत मनकी होत कहा अबहंसि दीने ॥२॥ हिय अंकित नख चंदन वलकें लखियतहे पटझीने ॥ अंकभरी मुसिकाय छबीले घनदामिनिकी छबिछीने ॥३॥

८ ॥ राग धनाश्री ॥ माई मेरो मन मोह्यो सामरे अबचरहो मोपे रह्यो न जाय ॥ चपल तिरछी भोंहसों सर्वसुहो मेरो लियोहे चुराय ॥१॥ माईहों गोरसले निकसी श्रीवृंदावनही मंझार ॥ आय अचानक औचका मटुकीहोमेरी दीनी ढार ॥२॥ गहि अचरा मोसों यों कह्यो कोनबहूतू काकी नारि ॥ केविरियां यह मग गई दान बहूतूहमारो मारि ॥३॥ कंचुकी पटनी वीगही लई बहोते केतिक मोल ॥ कनिक खुभीके व्याजमें परसे बहो मेरे पानकपोल ॥४॥ हंसि वीरी मुखमें दई ग्रीबाहो मेरे मेली बांह ॥ मिसही मिस मोहिले चले गहवरहो अंधियारे मांह ॥५॥ जिय औरे मिसदानके बतीयनहो मेरे परसे पाय ॥ करतब सीठी मिलनकी सनमुखरी मेरेनेन चलाय ॥६॥ ओर कहां लगि बरनीये कहत बहो मोहि आवे लाज ॥ जन त्रिलोक प्रभु सोंरमी देखि सखी मेरे तनकोसाज ॥७॥

९ ॥ राग धनाश्री ॥ खेलत मदनगुपाल फाग सुहावनों ॥ ब्रजजीवन नंदकोलाल अनंगलजाबनों ॥१॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा सखा संग राजही ॥ बहुआबज संज मुरज मुरली डफ गाजही ॥२॥ करनकनिक पिचकाई फेंट अबीरकी ॥ बहुभावरसों भरिकाबरि केसरि नीरकी ॥३॥ सजिकें साज समाज चले वृषभानके ॥ मुनिमनसा गई भूलि सुनत धुनि कानके ॥४॥ उतते जुरि झुंडन आई ब्रजबासिनी ॥ तिनमें कुवरि किसोरी नित्य बिलासनी ॥५॥ रंगरंगीलो साज लिये नवनागरी ॥ बरनबरन लीये राजत फूलन कीछरी ॥६॥ जुरिआये दोऊटोल पोरी ब्रजरायकी ॥ इतही चेत उत गारी देत बहुभायकी ॥७॥ जे कबहू बधूनवदरसी रवि ने कहू ॥ ते गुरजन की लाज करतन हीं एकहू ॥८॥ खेलनकों हरिसों हुलसी सब आवही ॥ भरि कुंकुम कनिक कटोरन ओट दुरावही ॥९॥ छिरकी जाय परस्पर मोहन भामिनी ॥ उडत गुलाल अबीर कियो दिन जामिनी ॥१०॥ संग सखा नहीं सुझत कीधों कहां गये ॥ सब सखीयन मिलि स्याम अचानक गहिलये ॥११॥ धिरिआई सब बाम ठोर दसवीसतें ॥ दीयो हे अरगजाढारि मनोहर सीसतें ॥१२॥ लेललिता दई गांठि नील पटपीतसों ॥ घनदामिनि ज्यों राजत मोहनमीत सों ॥१३॥ फगुवा मांगत रंग रह्यो नकह्यो परे ॥ यह सुख देखत

कौन अबधीरजकों धरे ॥१४॥ खेलि फाग नरनारि भरे अनुरागसों ॥
ब्रजबासिन में स्याम संग बडभाग सों ॥१५॥

१० (॥१॥ राग धनाश्री (॥१॥ खेलो होरी फाग सबे मिलि झूमक गावो ॥ध्रु०॥
संगसखा खेलन चले वृषभान गोपकी पौरी ॥ श्रवनसुनत सबगोपिका
गईहैंकुवरिपेदौरी ॥१॥ मोहन राधा कारनं गुहिलीनों नोसर हार ॥ हारहेत
दरसन भयो सब ग्वालनकियो जुहार ॥२॥ राधा ललितासों कछो नैंक
हार हाथते लेहु ॥ चंद्रभगा सों यों कछो नैंक इनहीं वेठन देहु ॥३॥ बहोत
भांति बीरादिये कीनो बहोत सनमान ॥ राधामुख निरखत हरिमानो कमल
करत मधुपान ॥४॥ मोहनकर पिचकाई लीये बंसलीये ब्रजनारि ॥ जीती
राधा गोपिका सब ग्वालन मानीहारि ॥५॥ फगुवाकों पटएंचते मुरली आई
हाथ ॥ फगुवादीयेही वनेंतुम सुनि गोकुलके नाथ ॥६॥ मधुमंगल तब टेरियो
लीनो सुबल बुलाय ॥ मुरली तो हम देइंगी प्यारी राधा कों सिरनाय ॥७॥
ढोल मुरज डफ बाजही ओर मुरलीकी घोर ॥ किलकत कोतुहल करें मानों
आनंद निरतमोर ॥८॥ राधामोहन विहरही सुंदर सुघर सरूप ॥ पोहोप
वृष्टि सुरपति करें तुम धनि धनि ब्रजकेभूप ॥९॥ होरी खेलत रंग रछो
चले जमुनाजल न्हान ॥ सिंघपोरि ठाडे हरी गोपीवारिदेन दान ॥१०॥ नरनारी
आनंदभयो तनमन मोद बढ़ाय ॥ श्रीगोकुलनाथ प्रतापतें जनस्यामदास
बलिजाय ॥११॥

११ (॥१॥ राग धनाश्री (॥१॥ खेलें होरी फाग चलो मिलि देखन जैये ॥ध्रु०॥
सुनियतहें दरबारमेंहो नंदरायके आज ॥ ठोरठोर आनंद बढ़यो अति भलो
बन्योहे साज ॥१॥ द्वादश भूषन साजिकें नवसत करो सिंगार ॥ कज्जलले
करसोंसखे रसआंजत नेन सुढार ॥ अपने अपने झुंडसों निकसीहें ब्रजनारि॥
तजि लाजें बस लाडिली कहि गावति मीठी गारि ॥३॥ आवत देखे दूरितें
गोपिन नंद कुंवार ॥ हुलस्यो मन बहुप्रेम सों तन बाढ्यो अतिमार ॥४॥
संगसखा सब बोलिकें उतते आये स्याम ॥ इत तरुनी मधि राधिका कंठधरे
वनदाम ॥५॥ चारघों नेन मिले जबे तब बाढ्यो सरस अनुराग ॥ मानो
नवराजीवके ढिंग पीबत भ्रमर पराग ॥६॥ पंच शब्द बाजे बजें बिचबिच

बेनु रसाल ॥ सुंदरमुख निरखत सबे ले केसरि मींडत भाल ॥७॥ सुरंग
गुलाल उडायके अंबर कीनों लाल ॥ मानो आथे सूरके वीररूपे दे ढाल
॥८॥ अतिसुख केलि विलाससों चले जमुनाजल न्हान ॥ पहोपन बरखत
देवता हुलसत चढे विमान ॥९॥

१२ ॥ राग धनाश्री ॥ रिझवत रसिक किसोरकों खेलतरी प्यारी
राधाफाग ॥ पहरे नवरंग चूनरी अंगियारी आछे अंगलाग ॥१॥ कनिक
खचित खुभियावनी दुलरीरी मोतिन बिचलाल ॥ किंकिनी नूपुर मेखला
लोचनरी सुभसुखद विसाल ॥२॥ गौरगातकी कहाकहूं बेसरि रही कच
अरुझाय ॥ सब सुंदरि मिलि गावही देखत हूं मनमथ हिलजाय ॥३॥
मृदुमुसकनि मुखपट दयो पिचकाई करलई हे दुराय ॥ वंदनबूका अंजुली
नागरि ले दई हे उडाय ॥४॥ मीडत लोचन नागरि पकरचो पीतांबर धाय ॥
सबे सखी जूरि आय गई धेरेहो मोहन बलिआय ॥५॥ मुरलीछीनि चुंबनदीयो
कीनों अधरामृतपान ॥ कमलको सज्यों भृंगकों छांडतनही विनभये विहान
॥६॥ मानो बहुरंग विकसत कमल मधुकर मनमोहनलाल ॥ नयनन स्वाद
सबे गहे पीवत मकरंद रसाल ॥७॥ ऋतु वसंत वन गहगह्यो कुंजत शुकपिक
अलिमोर ॥ तानमान गति भेदसों गावत गिरिधर पियजोर ॥८॥ वेन झांझ
डफझालरी गोमुख ताल मुरज मुखचंग ॥ युवती यूथ बजावही निरतत
मधिसाल अंग ॥९॥ त्रिगुनसमीर तहां बहे सुंदर कालिंदी कूल ॥ सुरसुरपति
सुरअंगना डारत जयजय कहि फूल ॥१०॥ निरखि निरखि सचुपावही हमन
भये खगमृग ब्रजबास ॥ श्रीवल्लभ पदरज प्रतापबल गावत विष्णुदास
रसरास ॥११॥

१३ ॥ राग धनाश्री ॥ ब्रजनायक गोपकुमार सब लीने संग खेले
होहोहोरी ॥ इत ब्रजयुवती यूथ मधिराजत श्रीवृषभान किशोरी ॥१॥ इत
ब्रजकुंवर करनलीये राजत रतनखचित पिचकाई ॥ उनकर कमल कुसुम-
नवलासी गावति गारि सुहाई ॥२॥ मोहन संग दुंदुभी डफ सहनाई सरस
धूनि राजे ॥ बीचबीच युवती मनमोहन महुवरि मुरलीबाजे ॥३॥ स्यामासंग
मृदंग झांझ आबज अनघात बजावे ॥ किन्नरीबीन आदि बाजे साजेगण

गणत न आवे ॥४॥ तब मोहन युवती यूथपर विविध रंग बरसाये ॥ अतिसुख
 फाग सोंजलीने उनये मानो नवधन आये ॥५॥ तब ललिता चंद्रावली मतोकरि
 सुबल सैनदे लीनों ॥ छलबल करि गिरिधर गहिवेकों यह मतोमन कीनों
 ॥६॥ सखाभेद गिरिधर गहि पाये भये युवतिन मनभाये ॥ आंखि आंजि
 गूथवेनी मृगनयनी भेष बनाये ॥७॥ फगुवाके गहने मोहन मोतिन उरमाल
 उतारी ॥ बंसी झटकि लई झुकि प्यारी अधरन विलसन हारी ॥८॥ दीने
 छांडि आप भायो करि स्याम सखन में आये ॥ तब अपनी समसर करिवेकों
 बलदाऊ पकराये ॥९॥ तब हलधर बस परे युवतिनके केसर कलस नवाये ॥
 जोइ जोइ विध उपजी जाके जिय तिहिं तिहिं भांति नचाये ॥१०॥ कीनों
 बीच सुबल श्रीदामा दाऊ आनि छुड़ाये ॥ फगुवा देन कछो मनमोहन ब्रजपति
 टेरि सुनाये ॥११॥ तब ब्रजराज बसन भूषनले युवती यूथडिंग आये ॥ अति
 आनंद बदन प्रफुल्लित सो दीये बसन मनभाये ॥१२॥ दैत असीस सकल
 ब्रज सुंदरि रसना नहीं लखकोरी ॥ चिरजीवो मदनमोहन पिय स्यामा स्याम
 समजोरी ॥१३॥

१४ ~~॥~~ राग धनाश्री ~~॥~~ रसिक सिरोमनि खेलें होरी नंदरायकी पौरीहो ॥
 एकओर बलिराम कृष्ण भये एक ओर सब गोरीहो ॥१॥ अपनी अपनी
 भीर बांटिले मेली परस्पर होडी ॥ बंसनमार होति हे अतिशय गोप चलेपगु
 छोडी ॥२॥ ब्रजललना सब हैंसि बोलीहें हम जीते तुम हारे ॥ अबही ओर
 छोडिहें नाहीं सुनो रसिक पर प्यारे ॥३॥ चंद्रभगा चंदन लीनेकर कृष्णगही
 पिचकारी ॥ राधादौरि भरे सुंदरवर खेल मच्योहै भारी ॥४॥ सुरविमानगन
 मोहि रहेहें जयजय शब्द उचारी ॥ कहा वैभव बरनोंया ब्रजको बलभद्रजन
 बलिहारी ॥५॥

१५ ~~॥~~ राग धनाश्री ~~॥~~ होहोहोरी होहो होहोरी ॥ इतहि गुपाल ग्वाल
 समूह उत युवती मधि राधागोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंगरंग दरसत परसत
 बरसत दुहुं ओरी ॥ देकर ताल उघट नाचत मिलि आप आपमें बांहां जोरी
 ॥२॥ केसर बहुत मंगाय अबीर उडाय ओर लीने भरिझोरी ॥ ललिता
 मुठीचलाय दुहुंन दृष्टिबचाय गांठि गहि जोरी ॥३॥ अंचल खिच्यो जानि

सकुचेदंपतिमन हैंसिहैंसिभोंह मरोरी ॥ चतुरसखी लखिहाथदेपाई
जानीजातिदुहुंन की चोरी ॥४॥ बनिहैं फगुवादी ये मोहनप्रभु फेंटगहे जो
कहत किसोरी ॥ कीजे आज आप भायो हरि पायेहें घेरि सांकरी खोरी ॥५॥

१६ ॥ राग धनाश्री ॥ रंगीलेरी छबीले नयना रसभरे नयना नाचत
मुदित अनेरे ॥ खंजरीट मानों महामत्त दोऊ केसेहूं घिरतन घेरे ॥१॥ स्याम
सेतराते रंगरंजित मानों चित्रचितेरे ॥ कुमनदासप्रभु गोवर्धनधर स्याम सुभग
तनहेरे ॥२॥



१७ ॥ राग धनाश्री ॥ होरीके खिलार भामते योंहीं जाननदेहों ॥
मनभाये बागे बनि आये जागे भागि हमारे नयननहींमें भरि रसलेन फगुवा
लेहों ॥१॥ चोवाचंदन ओर अरगजा केसरि कलसन वेहों ॥ अग्र स्वामीसों
कहत स्वामिनी मिलि तनतपत बुझेहों ॥२॥



१८ ॥ राग धनाश्री ॥ खेलत फाग सखा संगलीने ब्रजवीथनि
गिरिधारीहो ॥ युवती यूथ संग ले आई श्रीवृषभान दुलारीहो ॥१॥ विविध
भांति पहरे बहुभूषन तन तन सुखकी सारी ॥ रूपदेखि अपने मनहीमन
काम कामिनिहारी ॥२॥ केसररंग कनिक पिचकाई भरि धाई ब्रजनारी ॥
मदनगुपाल लालकों छिरकत गावत मीठीगारी ॥३॥ एकअबीर गुलाल मुठीले
मोहनमुखपर डारी ॥ एकजु आंखिन आंजत काजर एकबजावत तारी ॥४॥
नंदनदनतन चितबत राधा तनकीदशा बिसारी ॥ नेह गांठि छूटत नही छोरी
ललनारतन उजारी ॥५॥ प्रेम मगनदौरी त्रियगनते लालभरे अंकवारी ॥
अधरामृतदीनों पियकोतब बढघोरंग अतिभारी ॥६॥ राधाबदन विलोकि
स्यामघन मनमें बात विचारी ॥ मुठीकामरस सिंधुमगन व्हे होहोमंत्रपढि
डारी ॥७॥ चहुंओर ब्रज बनितन घेरे फगुवा मांगत प्यारी ॥ सुघरराय अपनों
तनमनधन दियो सबन सुखकारी ॥८॥

१९ ॥ राग धनाश्री ॥ नवल कुंवर मिलिखेलें फाग होहोहोरी बोलही ॥
आगम सुनि क्रतुराजको उपज्यो मनमें अति अनुराग ॥१॥ बरस घोस लागी
रहे या सुखकी आसाजिय मांहि ॥ जोबिधना ऐसीकरे सवेद्यो सहोरी व्हें

जाहि ॥२॥ अतिहुलास चितमें बाँढियो अब रोक्क्यो यहकापे जाय ॥ उमगि चलयो रससिंधुको अपनी मर्यादा विसराय ॥३॥ सुबल सुबाहु सखा सबे जोरिलियो निज संग समाज ॥ अपने अपने घरनते निकसे करि खेलन को साज ॥४॥ एक सखाहोहो करे एककरे उलटी कछु रीत ॥ मधुमंगल नाचतचले गावतहें होरी कें गीत ॥५॥ एक दिगंबर रूपधरे नखसिख अंगविभूत चढाय ॥ एक कोउ कामिनि भई चलेहें दुहुन की गांठिजुराय ॥६॥ ताल पखावज बाजही बाजेंरुंज मुरज सहनाय ॥ दुंदुभी डफ ओर झालरी रझो कुलाहल सब ब्रजछाय ॥७॥ सेननहीमें सांवरे कछो सुबलसों यों समझाय ॥ आजभैया यह साजसों खेलें वरसानेमें जाय ॥८॥ आये बट संकेतमें जहांकीनी मुरलीकी घोर ॥ श्रवन सुनत प्यारी राधिका चौकि परीचित रझोन ठोर ॥९॥ निकसी संग समाजले खेलनको सब साज बनाय ॥ पावस ऋतु सरिता मानों उमगि चली रससिंधुसमाय ॥१०॥ एकन करगेंदुक सोहे एकन नवलासी बहुरंग ॥ झुमक मिलि गावत चली झोरिन भरि गुलाल सुरंग ॥११॥ ताल पखावज बाजही सुरवीना महवरि मुखचंग ॥ मधुर मधुर स्वर बाजहीं मदनभेरि डफ चंग उपंग ॥१२॥ आयप्रिया पोहोंची तहां खेलतहें जहां नंदकिशोर ॥ मानोसमर संकेतमें रूपे सुभट सनमुख दोऊ ओर ॥१३॥ विविध भांति फूलनगुही पहलें गेंदुक दइ चलाय ॥ मानो रस संग्रामकी आगें दईवसीटपठाय ॥१४॥ पिय पिचकारी पूरि कें दई प्रिया उर ऊपर तानि ॥ अगर अरगजा घोरि कें मुख सोधों लपटायो सानि ॥१५॥ बरखतहे दुहुं ओरतें मनोमेघ उमडे जलरास ॥ गौरघटा ओर सांवरी बरखत केसरनीर सुबास ॥१६॥ सब सखियन ढिंग स्यामके दीनो लाल गुलाल उडाय ॥ दुरि पाछेते घातसों गहेकुंवरि मनमोहन जाय ॥१७॥ एकन भुज गाढीगही एक बनावत चित्र कपोल ॥ एक निडर आंजन लगी नयन कमलदल परम सलोल ॥१८॥ इक सनमुख मुख चाहही एकलेतकर चिबुक उठाय ॥ बहुत कहावतहो आपुनकों आज वदूँजो जाओ छुडाय ॥१९॥ एकन मुरली हरिलई एकन मोतिनमाल उतारि ॥ नवकेसर मुखमांडिकें एक नाचतहे देदेकरतारि ॥२०॥ एकन गहिवेनी गुही एकन मोतिन मांग संवार ॥ उरज परकंचुकी कसी तापर मोतिन माल सुढार ॥२१॥ तनसुख की सारी बनी

अतिझीनी सोंधे सोंसान ॥ अगर अरगजा बोरिकें पहरावत प्रीतमकोंआन
॥२२॥ नूपुर कंकन किंकिनी नखसिख भूषणसजे सिंगार ॥ सो सुखदेखेही
बने अद्भुत सोभा बढी अपार ॥२३॥ कर परकर धरि लेचली बेठेरी प्यारी
ढिंगजाय ॥ आई नई यह सहचरी चाहत हो देखन को पाय ॥२४॥ अति
प्रवीन गुन आगरी वेन बजावत परमअनूप ॥ सेवा अंग सिंगारमें सुघर
सखी सावरी स्वरूप ॥२५॥ उतकंठा तुम मिलनकों लगी रहत याके जीय
मांहि ॥ हैंसि भेटो दोऊ अंकभरो जेसें तनमन नयन सिरांहि ॥२६॥ अतिआनंद
हुलाससों मिली सखी दोऊ भरि अंकवारि ॥ जब जान्यो यह भेदकछू तबही
सकुच मुसिकाय निहारि ॥२७॥ जो आनंद उरमें बढ्यो एक रसना वरन्यों
नहीं जाय ॥ दिनदिन यह सुख दुहुनकूं निरखि माधुरी नयनसिराय ॥२८॥

२०  राग धनाश्री  पिय प्यारी खेले फाग वागे मरगजा ॥ इत
चंदन वंदन बूकाउत अबीर अगर ओर अरगजा ॥१॥ जोरे सकल ग्वाल
संग आये मोहन मनमें धरिगजा ॥ श्रीस्वामिनि कामिनिलेधाई आईं गिरिधर
करिगजा ॥२॥ सब जन नितुर भई तिहिं ओसर छिरकत रंगरंगजा ॥ रसिक
राय हरि अति छबिबाढी सुरमुनि मोहेगरगजा ॥३॥

२१  राग धनाश्री  बाढ्यो अतिआनंद खेलत फाग हरी ॥ संगसकल
आभीर अरगजा माट भरी ॥१॥ ताल मृदंगउपंग मुरज डफ वेन धुनी ॥
जग मोहन मुरली भई छुडावत ध्यान मुनी ॥२॥ वाजत पटह निसान अरुकठ-
ताल धरी ॥ बीच मृदुल मुख चंग उपंगन सुरतिकरी ॥३॥ रतन जटित
पिचकारी केसर घोरि भरी ॥ उडत अमित गुलाल अंबर गति अरुनकरी
॥४॥ बोले सुबल श्रीदामा श्रीमुख स्याम कछो ॥ चलित बरसानें जांय
श्रीराधा जाय गहो ॥५॥ गावत अगनितगोप चले सब रंग भरे ॥ बोलत
हो हो होरी श्रीराधा द्वार खरे ॥६॥ श्रवन सुनत सबनारी द्वार न झुंड भई ॥
अनेक अरगजा घोरि सनमुख स्याम गई ॥७॥ धायगहे बलबीर धीरमन
कछु न रही ॥ चंदन बंदन रोरी कपोल न लायलही ॥८॥ दृगसों कज्जल
लावति गावति गारि खरी ॥ मृगमद चंदन कुंकुम डारत माट भरी ॥९॥
वेनी बनावत सीस हरिजू के हाथ गये ॥ श्रीराधा वदन निहारत वारत

प्रानदये ॥१०॥ मोहन दीनी सेन बलदाऊ जाय गहे ॥ फगुवा देहु मंगाय
युवतिनयों जु कहे ॥११॥ मोहन मनहिं विचारिकें बलिहिबचायलये ॥ जो
मांग्यो सो दीनों मोहन मगन भये ॥१२॥ ब्रज ही चले ब्रजराज गावत रंग
भरे ॥ देत परस्पर गारि द्वारें जाय खरे ॥१३॥ यह लीला रस सिंधु
कोकविवरनिसके ॥ दास गदाधर गाय निरखत नयन थके ॥१४॥

२२ (॥१॥ राग धनाश्री (॥१॥) अपने पिय संग खेलों मिलि होरी पिचकारिन
रंग भरों गोरी ॥ गृह गृहते बानिक वनिवनि आंई साँवरी सलोनी सुंदर
भोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग मुरज डफ वीच वीच मुरली धुनि थोरी ॥
चोवा चंदन ओर अरगजा अबीर लिये भरि भरि झोरी ॥२॥ में अपनों
वर पायोरी सजनी बांधि प्रीति रस की डोरी ॥ सूर स्याम प्रभु रस भरे
खेलत मदन मोहन राधा जोरी ॥३॥

२३ (॥१॥ राग धनाश्री (॥१॥) खेलति राधा फाग गिरिधर धीरसों ॥ युवती
यूथ मिले आवहीं अति रंग मच्यो बलवीरसों ॥१॥ गारी मीठी गावहीं मिलि
युवतीन की भीरसों ॥ होरी हो हो बोलिकें मिलि कूकेंदेत अहीरसों ॥२॥
पिचकाई कर कनिककी भरि छिरकत केसरि नीरसों ॥ सुरंग गुलाल उडावहीं
लेमारत मुठी अबीरसों ॥३॥ प्रेम रंग सोभरि रहीं तन पहरें दक्षिण चीरसों ॥
वचन विवेकन बोलहीं सब व्याकुल मनमथ पीरसों ॥ ताथेई ततथेई उघटत
धुनि मधुर मंजीरसों ॥५॥ प्रफुल्लित वृंदावन भयो बहुविध कालिंदी तीरसों ॥
मधुर मधुर धुनि बोलही अलिकेकी कोकिलकीरसों ॥६॥ ऋतु कुसुमा कर
सुखद को मानो आयो त्रिविध समीरसों ॥ यह विध खेलत रंग रझ्यो गोकुल
चंदस्याम शरीरसों ॥७॥

२४ (॥१॥ राग धनाश्री (॥१॥) होरी खेले सावरो मनमोहन जाको नाम ॥
फाग सकल ब्रजरमरझ्यो रसभीजि रझ्यो सब गाम ॥१॥ नटवर भेष उतारिकें
विप्रभये गोपीनाथ ॥ जिनके नयनन कौतिक वारे तेइ ब्रजके लरिका साथ
॥२॥ नव तरुनी ओर रूप बतीहें हरिताकी बाखर जात ॥ चितवत अति
अनुरागसों ओर कहत भेद की बात ॥३॥ गोपी कहे अहो बिप्रजू हम कछु



पूछत तुमसों ॥ हमारी प्रीति हरिसों लागी कछु हरिहूकी हमसों ॥४॥ कहत
हों बाके जियकी तुमसों तुम सुनों हितू कोहेत ॥ जो कछु करत तुम कारनें
हरि चाहत सदा संकेत ॥५॥ पियकी हँसि चितवनिलखी ओर सोभा रही
निहारि ॥ रीझि रीझि सब संग लगी लोक लाज डरडारि ॥६॥ श्रीराधा
मंत्र जपत चले हरि जहां कीरति वृषभान ॥ कहिन सकत चाहत कहा दानन
में कन्यादान ॥७॥ करगहिकें डफ लाडिली आई गावत सखियन संग ॥
कहि भगवान हित रामराय प्रभु भई नयन गतिपंग ॥८॥

२५ (१६) राग धनाश्री (१६) खेलोंगी चांचरि माई अपने लालन संग ॥
सखी सब जुरजुर मोरिहें अंग ॥१॥ उतते गोप बालक सुवन सबआये ॥
तिनमें सुंदर स्याम लागत सुहाये ॥२॥ उतते झुंडन जुरब्रज वधुआई ॥
तिनमें राधिका गोरी बनी एकदाई ॥३॥ उततें कनक पिचकाई छूटी ॥ इततें
युवती करबंसलेटूटी ॥४॥ गोरा जवादमेद केसर घोरी ॥ छिरकें परस्पर
चंदनरोरी ॥५॥ ढोल आवज ताल डफ मोहों चंगा ॥ बीनरबाववाजे सरस
मृदंगा ॥६॥ बोलत हो हो होरी कर बजावत तारी ॥ बीच बीच धुनि राखिकें
देत हेंगारी ॥७॥ तब सब मतोमति चहुंदिस आई ॥ औचका तककेहीं स्याम
गहिलाई ॥८॥ अरगजा वंदनसों पिय मुख मांडे ॥ तब अपनों मन भायो
करि कें छांडे ॥९॥ ललिता करते मुरली तब लीनी ॥ सदाही रहत अधरन
रंग भीनी ॥१०॥ उडत गुलाल तहां भयो हे अंधेरो ॥ रति सुख केलि
किये मैनचेरो ॥११॥ पीत पट अंचलसों दुहुंगांठि जोरी ॥ यह छवि वरणि
सके कवि कोरी ॥१२॥ बोहोरचों सिमिटि बलदाऊ जाय घेरे ॥ काजर
नयनन आजि मुख तनहेरे ॥१३॥ फगुवा बिनादीये छूटन केसेपेहो ॥ पीतांबर
मुरली तबही भलेंलेहो ॥१४॥ विविध भूषण पटमोल मंगाये ॥ फगुवा निवेरि
ब्रजराज ढिंग आये ॥१५॥ देत असीस प्रमुदित सब गोपी ॥ अपनपों बरन
करत चोपा चोपी ॥१६॥ यमुना चले न्हान जुरजूरटोल ॥ कहीन परत
यह सोभा निरमोल ॥१७॥ सुरनर सुनिजन वरखावत फूल ॥ कहत हैं इन
की कोऊ नहीं समतूल ॥१८॥ यहविध होरी खेलें सब सुखदाई ॥ यह
सुख देखि रघुवीर बलजाई ॥१९॥

२६ (१६) राग धनाश्री (१६) मेरी अंखियन जिन डारो हो गुलाल लाल
 रहो तुमसों बिनती करों ॥ मोपें सख्यो न परेगो लाल यह निपट कपटको
 खेललाल ॥ध्रु०॥ चोबा चंदन अरगजा हो केसर बहुत रसाल गागरी ढोरी
 औचका मन भई हे रंगीली बाल लाल ॥१॥ हों अपने मन की कहों तुम
 सुनियो हो गोपाल ॥ रंग जो ठान्यो अटपटो हो हम भई हैं हाल वेहाल
 लाल ॥२॥ मोहन मूरति सांवरी हो रसिक नंद के लाल ॥ कृष्ण जीवन
 लछीराम के प्रभु कों देखि भई हों निहाललाल ॥३॥

२७ (१६) राग धनाश्री (१६) हो हो होरी बोलि ही ॥ नवल कुँबर मिलि
 खेलें फागु ॥ आगम सुनि ऋतुराज कों उपज्यों मन में अति अनुरागु ॥१॥
 बरस द्यौस लागी रहे या सुख की आसा जिय माँहि ॥ जो बिधना ऐसी
 करै सबै द्यौस होरी व्हें जाँहि ॥२॥ अति हुलास चित में बढ्यों अब रोक्यों
 यह कापै जाई ॥ उमगि चल्यों रस सिंधु कों अपनी मरजादा बिसराई
 ॥३॥ सुबल सुबाहु सखा सबै जोरि लियौं निज सँग समाज ॥ अपने अपने
 घरन तैं निकसे करि खेलनि कों साज ॥४॥ एक सखा हो हो करे एक
 करै उलटी कछु रीत ॥ मधुमंगल नाँचति चले गावति हैं होरी के गीत
 ॥५॥ एक दिगंबर रूप धरि नख सिख अंग बिभूति चढ़ाई ॥ एक कोउ
 कामिनि भई चलैं हैं दुहुँन की गाँठि जुराई ॥६॥ ताल पखाबज बाज हीं
 बाजै रूज मुरज सहनाई ॥ दुंदुभि ढफ औ झालरी रह्यो कुलाहल सब ब्रज
 छाई ॥७॥ सैननि ही में साँवरे कढ्यों सुबल सौं यौं समुझाई ॥ आजु भैया
 यह साज सौं खेलैं बरसानैं में जाई ॥८॥ आये बट संकेत में जहँ कीनीं
 मुरली की घोर ॥ सबन सुनति प्यारी राधिका चौंकि परी चित रह्यो न
 ठौर ॥९॥ निकसी संग समाज लै खेलनि कों सब साज बनाई ॥ पावस
 ऋतु सरिता मनौं उमगि चली रस सिंधु समाई ॥१०॥ एकन कर गेंदुक
 सोहे एकन नबलासी बहु रंग ॥ झूमक मिलि गावत चलीं झोरिन भरें गुलाल
 सुरँग ॥११॥ ताल पखाबज बाज हीं सुर बीना महुवरि मुख चंग ॥ मधुर
 मधुर सुर बाज हीं मदन भेरि ढफ चंग उपंग ॥१२॥ आइ प्रिया पहुँची
 तहाँ खेलति हैं जहाँ नंद किसोर ॥ मानौं समेर संकेत में रूपे सुभट सनमुख

दोऊ और ॥१३॥ बिबिध भाँति फूलन गूही पहिलैं गेंदुक दई चलाई ॥
 मानौं रस संग्राम की आगैं दई बसीठ पठाई ॥१४॥ पिय पिचकारी पूरी
 कै दइ प्रिया उर ऊपर तानि ॥ अगर अरगजा घोरि कै मुख सौंधीं लपटायों
 सानि ॥१५॥ बरखत हे दुहुँ और तैं मनौं मेघ उमड़े जलरास ॥ गौर घटा
 ओ साँवरी बरखति केसर नीर सुबास ॥१६॥ सब सखियन ढिग स्याम
 के दीनों लाल गुलाल उड़ाई ॥ दुरि पाछे तैं घात सौं गहे कुँवरि मन मोहन
 जाई ॥१७॥ एकन भुज गाढ़ी गही एकु बनाबति चित्र कपोल ॥ एकु निडर
 औंजन लगी नैन कमल दल परम सलोल ॥१८॥ इकु सनमुख मुख चाह
 हीं एकु लेति कर चिबुक उठाई ॥ बहुत कहावत हों आपुन कौं आजु बंदों
 जो जाउ छुड़ाई ॥१९॥ एकन मुरली हरि लई एकन मोतिन माल उतारि ॥
 नब केसरि मुख माँडि कै इकु नाँचति हैं दै दै कर तारि ॥२०॥ एकन गहि
 बैनी गुही एकन मोतिन माँग सँवार ॥ उरज पै कंचुकी कसी तापे मोतिन
 माल सुढ़ार ॥२१॥ तनसुख की सारी अति झीनी अरु लीनी सौंधे सौं
 साँन ॥ अगर अरगजा बोरि कै पहिरावति पीतम कौं आँन ॥२२॥ नूपुर
 कंचन किंकिनि नख सिख भूषन सजे सिंगार ॥ सो सुख देखैं ही बने
 अद्भुत सोभा बढ़ी अपार ॥२३॥ कर पै कर धरि लै चलीं बैठारे प्यारि
 ढिग जाई ॥ आई नई यह सहचरी चाँहति है देखन कौं पाई ॥२४॥ अति
 प्रवीन गुन आगरी बैनु बजावत परम अनूप ॥ सेबा अंग सिंगार में सुघर
 सखी साँवरी सरूप ॥२५॥ उतकंठा तुम मिलन की लगी रहत जाके जीय
 माँहि ॥ हँसि भेटो दोऊ अंक भरो जासौं तन मन नैन सिराहि ॥२६॥ अति
 आनंद हुलास सौं मिली सखी दोऊ भरि अँकवारि ॥ जब जान्यो यह भेद
 कछू तब हि सकुचि मुसिकाई निहारि ॥२७॥ जो आनंद उर में बढ्यो एकु
 रसना बरन्यो नहिं जाई ॥ दिन दिन यह सुख दुहुँन कौं निरखि 'माधुरी'
 नैन सिराई ॥२८॥

२८  राग धनाश्री  एकु दिना ब्रज नारि सिमिटि चली फगुवा
 माँगन ॥ मृगमद साख जबाद लियैं कर गोप घनी गन ॥ राधा प्रमुख सबै
 चलीं उपमा कही न जाई ॥ माँनहु मत्त गयंद पै ज्यों करिनी चली धाई ॥१॥

फगुवा देहों लला नातरु उपरैना अरु पाग भरैंगी ब्रज अबला ॥१०॥ किन
 कैचुकि लौक कीने बर पीत बनाई ॥ तनसुख सारी साजि माँग सिंदूर
 सुहाई ॥ नकबेसर मोतिन की कीनीं अरु नुपूर घन घोर ॥ नैननि में कजरा
 बने अरु सौंधे झकझोर ॥२॥ गावति धावति गई सबे नैद राई की पौरी ॥
 मन में मदन गुपाल गह्वों चाहति भरि कौरी ॥ फागुन मास बसंत ऋतु
 मदन जु ब्यापत अंग ॥ झुंडन मिल आई सबै खेलनि हरि के संग ॥३॥
 बाजति ताल मृदंग चंग मुख चंग उपंगा झांझ झालरी पटह भेरी दुंदुभी
 सुर उतंगा ॥ बीन अरु प्रनव ढफ तुरी सुबंस रसाल ॥ औरु अधोटी सबद
 वर, उघंटत हैं कट ताल ॥४॥ मोर मुकुट सिर बने बनी मुकता फल माला ॥
 कुंडल मंडित गंड कुटिल भू नैन बिसाला ॥ पीतांबर कटि किंकिनी कर
 मुरली सबद रसाल ॥ कोलाहल सुनि द्वार पै निकसे हो नैदलाल ॥५॥
 उझकत इत उत ग्वालि तकत मोहन की घातें ॥ गहवे कों छल करत मदन
 मोही मदमातें ॥ सौंधों पिचकारी भरी अंचर ओट दुराई ॥ आसपास सिंध
 द्वार पै रही गैल सब छाई ॥६॥ बाढ्यों अद्भुत झुंड राधिका मधि दुराई ॥
 सब तरुनी सिर तिलक करों चाहत हरिराई ॥ तब ही सब मिली नारि
 धाई हरि के ढिंग आई ॥ सखी परसपर सैन दै सिर पै रंग दियो ढरिकाई
 ॥७॥ तब लीये अरगजा लाल जुबती मंडल मधि दौरि ॥ मानों मदन मदमत्त
 गज करिनी गन ओरे ॥ पट झीने पहचानि मुख श्री राधा दृग लोल ॥
 छूबति अरगजा ब्याज कैं कुच वर ललित कपोल ॥८॥ कोऊ कर अंचर
 गहै कोऊ पटका झकझोरे ॥ कोऊ आन गहे दाम नैन सौं नैना जोरै ॥
 काजर हरद कपोल बर लावति गावति ग्वार ॥ स्यामा सनमुख आई कैं
 भरि लीनि अँक वार ॥९॥ हम अँकवारो भरचों करों जीय कों तुम भायों ॥
 श्री भामिनि कों अतरौंट खेंचि काऊ जु उढ़ायों ॥ मुरली पगिया पीत यह
 आनि चंद्रिका मोर ॥ भामिनी अंग बनाव ही हरि सिर गूंथी डोर ॥१०॥
 कोऊ कर अंजन करै किनहुँ लै माँग सँवारी ॥ रोरी बिंदुका भाल चिबुक
 काजर बिंदुका री ॥ सारी सुरैंग बनाई कैं बागो लियो उतारि ॥ प्यारी
 कों पहिराव हीं दै सिर मुकुट सँवारि ॥११॥ कोऊ नकबेसरि दर्ई किनहुँ
 मुक्ता फल हारा ॥ खुभी चोकी पदक पोत दुलरी ब सुढारा ॥ बलैय पोंचिका

मुद्रिका झाँवे झूमका चार ॥ कर कंकन अरु किंकिनि पग नूपुर इनकार ॥१२॥ कर जोरें कोऊ सखी कोऊ पै गाँठि बनावै ॥ मंडल कर जु फिराई सरसधमार हि गावैं ॥ कुँवरि कुँवर बिलसति अधिक कोक कला सब जान ॥ नव नागरि दुलहा भई नव दुलहनि भए कान ॥१३॥ कोऊ आलिंगन करै कोऊ मुख चुबत नीकें ॥ लाल भुजा उर धरै धरै भुज अंसन पीकें ॥ पीबन पिबावत अधर मधु मुख में बीरी देन ॥ खंडित दसनन अधर पुनि आपुन मुखि धरि बैन ॥१४॥ पुनि आये सब ग्वाल सबै नाना रँग भनी ॥ अरगजा कुँमकुम नीर सरस सौंधो सँग लीनि ॥ फूल माला गरै धरैं अरु फुलेल धरि माथ ॥ गोद गुलाल बीरा मुखै धरि पिचकारी हाथ ॥१५॥ तब बोले बलराम ग्वालि घेरो एकु ठोरी ॥ ठोर ठोर तैं जाई रोकि रहों ब्रज की खोरी ॥ एकु एकु करि कैं भरों कुसुम रंग के माँझि ॥ ए सब बन तैं एकु घर जान न पावै साँझि ॥१६॥ सिमिटि कैं सब ग्वाल प्रथम पूजो बलि देवा ॥ कुँमकुम रोरी हरद करों वाई की सेवा ॥ सौंधे कनक बेला भरि लै बल ऊपर ठोरी ॥ तारी हाथ बजाई कै मुख बोलति हो हो होरी ॥१७॥ तब सुबल सुबाहु बांधि फैंटा अरु दौरे ॥ केसर केसू कलस आनि जूबतिन पै ढोरे ॥ मोहन पिचकाई लिये चोवा चंदन घोरि ॥ अरु सखियन की ओट दै स्याम सनमुख दई छोरि ॥१८॥ अरी सब पिचकाईन धरों अब कों ये खेला ॥ एकु ही बेर सौं छोरि भरों तुम कान्ह अकेला ॥ छुटी एकु ही वार सुभ धार बिबिध बिध रंग ॥ घन गन बरखत मानों अमृत चातक नव रँग ॥१९॥ लै गुलाल नंदलाल जुबति मंडल मधि दौरि ॥ सब सखीयन में भामिनि मूढि डारत मुख मोरि ॥ तेल गुलाल लगाई कैं हाथ पिछौरा कीन ॥ रसिक सिरोमनि साँवरे सब के मुख पै दीन ॥२०॥ तब राधा अति चतुर हँसति मोहन ढिंग आई ॥ करी रसीली बात मुख हि हेर रहे कन्हवाई ॥ सैन दई सब सखिन कों हरैं हरैं ढिंग आई ॥ स्याम परे बस तियन के मुरली लई छिनाई ॥२१॥ कान लागि कैं कह्यो सखी स्यामा सुन स्याम ही ॥ तो तुम मुरली दैहि नैकु पकराव हु राम ही ॥ इतनों कहत में और सखी सब झटकत पट हि उतार ॥ पीतांबर तब लै भजी मोहन रहे हैं निहार ॥२२॥ मधुमंगल के भेद स्याम हलधर पकराए ॥ सब गोपिन कों घेर करो तुम मन के

भाए ॥ केसू कुँमकुमा कुसुम रंग हरद लगावति गाल ॥ एकु आँखि औंजी सखियन तब हैंसि हों ब्रज बाल ॥२३॥ तबै आनि कैं नंद बीच कीनों यह औसर ॥ विविध बसन परिधान हार दीने हैं नौसर ॥ पीतांबर मुरली लई दई स्याम के हाथ ॥ तब निकसी निज गेह तैं भरयो है जाई ब्रजनाथ ॥२४॥ एकु उछारत फूल एकु गुलाल उड़ावै ॥ उरप तिरप गति लेत एकु पट ताल बजावै ॥ सौंधो सौरभ नभ बढ्यो धरनि अरगजा कीच ॥ ग्वालन मिल उधम कियों अनेक नागरी बीच ॥२५॥ तब राधा नंदलाल देखि रानी बिहँसानी ॥ करि आरती दै अरध अंग अंग सुखसानी ॥ करि न्योछावर तोर सून बढो सत्रु सिर सुल ॥ दुंदुभि देव बजाव ही बरसन लागे फूल ॥२६॥ हरि जस गावति सबै चली निज निज गृह नारी ॥ मदन गुपाल के सँग रंग रस भीनीं सारी ॥ देति असीस जीयो सदाँ ब्रज के जीवन प्राण ॥ राज करो वृषभानुजा सौं सदाँ गिरिधरन सुजान ॥२७॥

२९ (॥१॥ राग धनाश्री (॥३॥) सखी री रसिया नंद कुँमार दधि बेचन गई ॥ गलिन गलिन सखी हों फिरी दधि काहु नौहि लई ॥१॥ चितबनि में चित चोरचो मोहन हम ब्याकुल जु भई ॥ चपल पथ भारि भयों मोकों प्रेम की गौंठि दई ॥२॥ अब न जाउ सखी या गोकुल घर बैठें बेचो सही ॥ 'सूरदास' प्रभु वे बहु नाइक जिनि मेरी बाह गही ॥३॥

३० (॥१॥ राग धनाश्री (॥३॥) इक समे घनस्याम कैं मंदिर सुंदर होरी की हो बारि बँधी ॥ भीज रही सब नारि ब्रज की धौवति दाग अरगजा सुगंधी ॥१॥ नारि ब्रज की धौवति दाग अरगजा सुगंधी ॥१॥ केसू केसर ओर कुँमकुमा पिचकाईन भरि भरि साँधि ॥ चोवा की कीच फूलेल की रेल गुलाल कों मेह अबीर की आँधि ॥२॥ बाजत बीन मृदंग बाँसुरी छायो है रागु धनासरी छंदी ॥ सखीयन घूमर दै दै गावति निरखि 'सूर' भयों परमानंदी ॥३॥

३१ (॥१॥ राग धनाश्री (॥३॥) खेलनि आईं हम मोहन तुम सँग ॥ बेगि मँगाओ जु अबीर अरगजा और केसरि कों रँग ॥१॥ धाँई गहि बैयाँ गिरिधर की चोवा चंदन लपटावति अंग ॥ 'हरि बलभ' प्रभु दिजै फगुवा

जानति तुहारे ढंग ॥२॥

३२ (४१) राग धनाश्री (४१) खेलै नगर अजोध्या माँहै रघुवीर जानकी ॥ कस्तुरी कों तिलक हों बलि जाँऊ मुख पान की ॥१॥ इत तै निकसे जनक नैदिनी उत तै निकसे राम ॥ चोवा चंदन औरु अरगजा छिरकति मोहन स्याम ॥२॥ गुनी गंधरव सुर नर मुनि मोहै चंग बजावति हनुमान की ॥ 'परमानंद' कर जोर कहति मेरी बिरध हरि नाम की ॥३॥

३३ (४१) राग धनाश्री (४१) मिलि दियौ है सखी को भेष अपुने लाल कों ॥ मिलि गावत चली है धमार गजगति चाल सों ॥१॥ वृषभानु सुता नंद लाल कों हो दियौ है सखी कों भेष ॥ सारी सुरंग सुहाबनी हो नैननि काजर रेख ॥२॥ जसुमति आगें राधिका को कहति हैं बात बिचारि ॥ स्याम सुंदर के कारने हम लाई हैं एकु नारि ॥३॥ जसुमति बुझे राधिका हो कहा की कन्या होई ॥ कहा नाम या बाल कों हों में फुनि जानों सोई ॥४॥ नंद महर की यह सुता हो मोहनी जाकों नाँऊ ॥ महारावर साँची कहाँ हो गोकुल जाकों गाँऊ ॥५॥ यह रावर मुसिकाई के हो जब जान्यौ या भेव ॥ तन मन धन नोछावरि हो बलिहारी या देव ॥६॥ फगुवा माँगै राधिका हो महा रावर गहि धाई ॥ अब भलें तुम छूटी हो मोए फगुवा देहु माँगाई ॥७॥ फगुवा दीयौ जसुमति हो पांन फूल पकवान ॥ फगुवा लीनै राधिका हो भए सकल कल्यान ॥८॥ लाल गुलाल उड़ाव हि गगनलों सब छाई ॥ एकु एकनु अँक भरे हो सोभा कही न जाई ॥९॥ रस बाढ्यों गोपिका हो खेलति झूमक चारि ॥ एकु सखी मिलि एकु सों देति है होरी की गारि ॥१०॥ पुहुप सुरंग सुहाबनों हो फूले फले सुवास ॥ जसोदा नंदन राधिका हो खेलें रँग बिलास ॥११॥ ऐसी सोभा फागु की हो मोपै बरनि न जाई ॥ 'रसिक' सुंदर लाल पैं हो निरखि सदाँ बलि जाई ॥१२॥

३४ (४१) राग धनाश्री (४१) ब्रज में होरी खेलति साँवरो मनमोहन जाकों नाम ॥ फागु सकल ब्रज रम रह्यो रस भीजि रह्यो सब गाम ॥१॥ नटवर भेष उतारि कें बिप्र भये गोपीनाथ ॥ जिनके नैननि कौतुक बारे तेइ ब्रज कें लरिका साथ ॥२॥ नव तरुनी और रूपवती हैं हरि ताकी बाखर जात ॥

चितवत अति अनुराग सों औ कहति भेद की बात ॥३॥ गोपी कहे अहो विप्र जू हम कछु पूछत तुम सों ॥ हमारी प्रीत जू हरि सों लागी कछु हरि हू की हम सों ॥४॥ कहति हों बाके जिय की तुम सों तुम सुनों हि कों हेत ॥ जो कछु करति तुम कारनें हरि चाहत सदाँ संकेत ॥५॥ पिय की हँसि चितवनि लखी ओर सोभा रही निहारि ॥ रीझि रीझि सब सँग लगी लोक लाज डर डारि ॥६॥ श्री राधा मंत्र जपत चले हरि जहाँ कीरति वृषभानु ॥ कहि न सकत चाहत कहा दानन में कन्या दौनु ॥७॥ कर गहि कें ढ़फ लाड़िली आई गावत सखियन सँग ॥ कहि 'भगवान हित रामराई' प्रभु भई नैन गति पंग ॥८॥

३५ (१५) राग धनाश्री (१५) सलौनें श्री गोरे गात सुंदर नागरी ॥ हंस चाल रबि तें छबि नीकी चंचलता ले मीन ॥ अंबुज जोति बदन छबि तिय की चंदा भये मलीन ॥ सुंदर नागरि ॥१॥ छूटी लर लपटी छतियन पै सोभा बरनी न जाई ॥ माँनों माँगन चली हे सुभ्र पै मौतिन चौक पुराई ॥ सुंदर ॥२॥ केवरा कर कंकन सोहै कंठ सोहै दुलरी ॥ माथे तिलक भाल माँनों राजति कामिनि काम भरी ॥ सुंदर ॥३॥ केसर लंक बरन चंपे कों बोलति हे पिक बेंन ॥ आसा नासा ईल कील माँनों लुटे सारंग बेंन ॥ सुंदर ॥४॥ थोरे दिनन की गोरी भोरी होरी खेलन आई ॥ 'रामदास' प्रभु मिले परसपर चितवनी चली मुसिकाई ॥ सुंदर ॥५॥

३६ (१५) राग धनाश्री (१५) श्री राधा नवल किसोर डोलें गुजरी ॥ बाके नैन चपल चित चोर डोलें गुजरी ॥ संग लिए सकल ब्रज सुंदरी अति रस रंग ढरी ॥१॥ कानन करनफूल, नकबेसर, मौतिन माँग भरी ॥ अधर प्रवाल नैन खंजन, मृग सावक तैं अगरी ॥२॥ मुकत माल चौकी हमेल खग वारी पर दुलरी ॥ अँगिया बनी कटाव की निज जोबन करि सुघरी ॥३॥ सुवन पाट की ओढ़नी ओढ़नि पै ईँडुरी ॥ कनक मटुकियाँ सिर धरै बाबा नंद जु के द्वार खरी ॥४॥ बिद्यापति बरनें काहा हो अंग अंग सुघरी ॥ कोकिल बन संपुट खुले माँनों फूली कमल करी ॥५॥

३७ (१५) राग धनाश्री (१५) आंखिन में जिन डारो-डारो जू अबीर ॥

रतनजटित पिचकाइन कर लिये अहो भरि केसरि नीर ॥१॥ ललिता मोहन को मुख माँडयो चरचयो स्याम सरीर ॥ 'सूरदास' प्रभु सर्वसु करि लीनो इन हलधर के वीर ॥२॥

३८ (११) राग धनाश्री (११) कनकपुरी होरी रची मोहन ब्रज बाला ॥ मथुरा काढ्यो जाए सुंदर राधिका मोहन ब्रज बाला ॥१॥ काहे की तुम ग्वालिनी ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ का दधि बेचन जाई ॥ सुंदर राधिका मोहन ब्रज बाला ॥२॥ गोकुल की हम ग्वालिनी ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ मथुरा दधि बेचन जाई ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥३॥ काहे के तुम दानैया ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ काहे को जु मुरार ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥४॥ गोकुल के हम दानैया ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ श्री मथुराजी को मुरार ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥५॥ लौंग सुपारी दानैया ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ दधि को दानी होय ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥६॥ जाइ पुकारों कंस पै ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ पकर मंगाउ तोय ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥७॥ कंस को मार न सके ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ करो मथुरा को राज ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥८॥ नैन हमारे झुंड में ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ चोखी चोर मजीठ ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥९॥ श्री विठ्ठल पद पदम कैं ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ पावन रैनु परताप ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥१०॥ 'छीत स्वामि' गिरिधर मिलै ॥ मोहन मेंट्यों तन को ताप ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥११॥

३९ (११) राग धनाश्री (११) खेलत फाग कुँवर नंदनंदन श्री वृषभानदुलारी हो ॥ संग लिए सहचरी रंगीली नाचत दै कर तारी हो ॥१॥ बीन मृदंग मुरज डफ मुरली कल मुख चंग बजावै हो ॥ गावति राग रागिनी सुन्दर नाना गति उपजावै ॥२॥ मृगमद केसर सत गुलाल को घोरि परसपर मैलै हो ॥ त्रिविध समीर बहति ले आवत अति सौरभ की रेलै हो ॥३॥ अति आनंदित कुँवरी बिबिध रंगभरी पिय मुख की निहारी हो ॥ नख सिख लालच भयों लालची लै प्यारी उर धारी हो ॥४॥ लटकत ललना लाल मिलि दोऊ करत बहु बिधि केलि हो ॥ मानों तरुन तमाल हि लपटी नवकंचन की बेली हो ॥५॥ दुलह मदनगोपाल विराजति दुलहनि नवल किसोरी हो ॥ ललित विलास करत वृन्दावन नवल एक सम जोरी हो ॥६॥

४० (११) राग धनाश्री (११) नंद कुमार लाड़िले अब कैसें छूटि जैहो ॥
अब तो परे तियन बस मोहन गहरे उसासन लैहो ॥१॥ तब छाड़िंगी ब्रज
नारी जब पाँइन पर हा हा खैहो ॥ 'सूरदास' प्रभु गहेनों दै राधा को फगुवा
दैहो ॥२॥

४१ (११) राग धनाश्री (११) मिलि दियौ है सखी को भेष अपुने लाल
कों ॥ मिलि गावत चली है धमार गजगति चाल सों ॥१॥ वृषभानु सुता
नंदलाल कों हो दियौ है सखी को भेष ॥ सारी सुरंग सुहाबनी हो नैननि
काजर रेख ॥२॥ जसुमति आगें राधिका हो कहति हैं बात बिचारि ॥ स्याम
सुंदर के कारने हम लाई हैं एकु नारि ॥३॥ जसुमति बुझे राधिका हो कहाँ
की कन्या होई ॥ कहा नाम या बाल कौ हौ मै सुनि जानों सोई ॥४॥
नंद महर की यह सुता हो मोहनी जाकौ नाँऊ ॥ महारावर साँची कहों
हो गोकुल जाकौं गाँऊ ॥५॥ यह रावर मुसिकाइ कैं हो जब जान्यों या
भेव ॥ तन मन धन नोछावरि हो बलिहारी या देव ॥६॥ फगुवा माँगै राधिका
हो महा रावर गहि धाई ॥ अब भले तुम छूटी हो मोए फगुवा देहु मैगाई
॥७॥ फगुवा दीयौ जसुमति हो पान फूल पकवान ॥ फगुवा लीनै राधिका
हो भए सकल कल्यान ॥८॥ लाल गुलाल उड़ाव हि गगनलों सब छाई ॥
एकु एकनु अँक भरै हो सोभा कही न जाई ॥९॥ रस बाढ्यौ गोपिका हो
खेलति झूमक चारि ॥ एकु सखी मिलि एकु सौं देति है होरी की गारि
॥१०॥ पुहुप सुरंग सुहाबनों हो फूले फले सुबास ॥ जसोदा नंदन राधिका
हो खेलें रँग विलास ॥११॥ ऐसी सोभा फागु की हो मोपै बरनि न जाई ॥
'रसिक' सुंदर लाल पैं हो निरखि सदाँ बलि जाई ॥१२॥

४२ (११) राग धनाश्री (११) रंग भरि डारघो रे अबीर ॥ चोवा चंदन अगर
कुमकुमा छिरकत केसर नीर ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ फिरत
जमुना के तीर ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे हरि हलधर दोऊ
बीर ॥२॥

४३ (११) राग धनाश्री (११) होरी खेलत ब्रज-खोरिनि में, ब्रज-बाला बनि

बनि बनवारी ॥ डफ की धुनि सुनि बिकल भई सब, कोउ न रहति घर
घूँघटवारी ॥ जाहि अबीर देत आँखिनमें, ताहीकों छिरकत पिचकारी ॥
साँधे तेल अबीर अरगजा, तैसि जरद केसरि चटकारी ॥ उड़त गुलाल,
लाल भै बादर, रँगि गै सिगरे अटा-अटारी ॥ सूरदास, वारी छवि-ऊपर,
कल न परति छिनु बिनु-गिरिधारी ॥

४४ ॥ राग धनाश्री ॥ हो हो होरी खेलै लाल ॥ एक गारि निपट
उधारी गावत कौन टेव परी गोपाल ॥१॥ पिचकारिन रंग भरत भरावत
मुख मांडत ले गुलाल ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु संग लिये सब
ग्वाल बाल ॥२॥

४५ ॥ राग धनाश्री ॥ हों बलि जाऊँ लाडिलि चली खेलिए फागु ॥
रस निधान नबल नैदलाल सों प्रगट करौ अनुरागु ॥१॥ जाय लाल चोहटे
सजि कै सरस सखा लै सँग ॥ नाँचति गावति करति कौतुहल बाजति
ताल मृदंग ॥२॥ जब आये हरि निकट पौरि कै तब रही है न संभार ॥
सकल साज रतिराज सँग लै चरन धरौ निज दुआर ॥३॥ तब बोली बृषभानु
नैदनी जाउ नैद ग्रह तीर ॥ बिबिध भाव मन हि मन संचति मुसिकात रति
रनधीर ॥४॥ दोऊ ग्रहे कर गहें बलि बलि कै हरखि चली चंद्रावलि ॥
काम खबरी रति लै चली मनौ पहिरावति निज मालि ॥५॥ उत तैं जाइ
नैद लाड़िलो इत तैं गोप कुमार ॥ पुलकति तन निरखति नैननि करै घूँघट
जोट जुहार ॥६॥ मोहन उत मुरली में उघटति नबल सखि कौ नाम ॥
एहि कलि कंठ कोकिला कूजे पूजे मन के काम ॥७॥ उत तैं धुँधरि करति
गुलालनि इत पिचकाईन धार ॥ मनौ अरुन धन में झलकति है चपल
चमकि सुझार ॥८॥ एक सखि नब धन साँवल सों कहि रस जिय की
बात ॥ लै पधराइ चलै मंदिर में जहाँ दामिनी दुति गात ॥९॥ पीय सों
मिलि सरस ससि बदनी करत भाँवते छेलि ॥ मनौ कलप सिंगार द्रुम पहिरे
कनक बेलि रही झेलि ॥१०॥ मोहन पीय निज भुज अंतर लै डारौ कुँमकुम
नीर ॥ मनौ राधिका नव दुति विलसै साँवल सुभग सरीर ॥११॥ पिय
मुख कमल पराग लगावैं जोति अद्भुत छवि होत ॥ सुधा सिंधु मनौ चंद

प्रगट भए परी कमल मुख जोत ॥१२॥ इंदु मुखि चोवा बिंदु लावैं पिय
 बदनार बिंद ॥ ब्रज जुवतिन कौं मन मधुकरि वे मनौं पीयौ मकरंद ॥१३॥
 मन तब एके स्याम चंद कौं निरखेई ढिंग जाई ॥ ज्यों ज्यों किरन सुधा
 छबि बाढ़ैं त्यों त्यों तृषा बढ़ाई ॥१४॥ जोरे भरति लाल जब देख्यो कोऊ
 दुरि हरि भरि जाई ॥ कोऊ पिचकाईन की छुटति हैं मीडति अंग बचाई
 ॥१५॥ कोऊ प्यारी उलटि जात है सरस रंग ले ग्वारि ॥ भरति ताप पनह
 तन लाल कौं पीय नहि सकत सह मारि ॥१६॥ भरति लाल एक भरे अंक
 में एक अंजन दे नैन ॥ एकु चुंबति जाँऊ दुरि मुरि कै अपनों बदलो लैन
 ॥१७॥ पीय बने भाम दस दिस ठाड़ें देखि अन देखि री नारी ॥ जोरी
 गाँठि सब सुख निरखति है 'रसिक' सखी बलिहारी ॥१८॥

४६ ॥ राग धनाश्री ॥ हो हो होरी राधा खेलति नंद के लाल सौं ॥
 ब्रिंदावन खेलनि चली गज हस्ती छूटैं ढाल सौं ॥१॥ चोवा चंदन कुँमकुमा
 पिचकारी भरति गुलाल सौं ॥ चंद-बदनि मृगलोचनी ढफ बाजति नाँचति
 ताल सौं ॥२॥ स्याम राधिका जोरी बनी हो उरझि रहे ब्रनमाल सौं ॥
 इत राधा बानक बने, उत मोहन बने ग्वाल सौं ॥३॥ 'धोंधी' के प्रभु तुम
 बहु नाइक फगुवा देति खुसाल सौं ॥४॥

४७ ॥ राग धनाश्री ॥ गोपकुंवर लिये संग होरी खेले ब्रजनायक
 होरी ॥ इत ब्रज जुवतिजूथ मधि नायिका श्रीवृषभान किसोरी ॥१॥ मोहन
 संग डफ दुंदुभि सहनाई सरस धुनिजु बाजे ॥ बीच-बीच जुवति मनमोहन
 महुवरि मुरली राजे ॥२॥ संग स्याम मृदंग आबज झालर झांझ बजावे ॥
 किन्नरी बीना आदि बाजे साजें गिनत न आवे ॥३॥ इत ब्रजयुवति लिये
 कर राजें रतन खचित पिचकाई ॥ उन करकमल कुसुम नवलासी गावत
 गारी सुहाई ॥४॥ तब मनमोहन जुवतिजूथ पर विविध रंग बरखाये ॥ अति
 सुख सौंज फागकी लीने नव घन उनये आये ॥५॥ ललिता चन्द्रावलि मतो
 कर सुबल सने दे लीनो ॥ छलबल करि गिरिधर गहिबेको यह जु मतो
 मन कीनो ॥६॥ सखा भेद गिरिधर ही पाये भयो जुवति मन-भायो ॥ आंख
 आंजी गुंथी जु बेनी मृगनेनी भेख बनायो ॥७॥ फगुवाके गहने मनमोहन

मोतिनमाल उतारी ॥ बंसी झटक लई झुक प्यारी अधरन विलसनहारी ॥८॥ दीने छौंड आप भायो करि स्याम सखन में आये ॥ तब मोहन सरवर करिवेको बलदाऊ पकराये ॥९॥ तब हलधर बस जुवतिनके जु केसर कलस नवाये जोड़ जोड़ विधि अपनी जाके जिय तिहि तिहि भौंति नचाये ॥१०॥ कीनो बीच सुबल श्रीदामा दाऊ आन छुड़ाये ॥ फगुवा देन कछो मनभायो ब्रजपति ढेर सुनाये ॥११॥ तब ब्रजराज बसन भूषन लिये जुवतिजूथ ढिंग आये ॥ अति आनंदवदन हरख तब दिये वसन मनभाये ॥१२॥ देत असीस सकल ब्रजसुंदरी रसना नहीं लखी कोरी ॥ चिरजीयो मदन मोहन पिय स्यामा गौर स्याम सम जोरी ॥१३॥

४८ (११) राग धनाश्री (११) इत माधों उत राधिका ॥ नंद ललनौ ॥ खेलति जमुना तीर ॥ मोहन मूरति नंद ललनौ ॥१॥ काहु के माँथे रोचनौ ॥ नंद ॥ काहु के बहुत अबीर ॥ मोहन मूरति ॥२॥ मोहन माँथे अरगजा ॥ नंद ॥ गोपीन बहुत गुलाल ॥ मोहन ॥३॥ काहु के कर पिचकाईयौ ॥ नंद ॥ काहु के सिर पाटिर ॥ मोहन ॥४॥ काहु के चोवा कुमकुमा ॥ नंद ॥ बूका बंदन धूरि ॥ मोहन ॥५॥ ढफ बाँसुरी सुहावनी ॥ नंद ॥ ताल मृदंग उपंग ॥ मोहन ॥६॥ गोकुल तैं गोपी चली ॥ नंद ॥ पहिरे दछिन चीर ॥ मोहन ॥७॥ सेस पताले मोहियो ॥ नंद ॥ मोहें चंदा सुर ॥ मोहन ॥८॥ जान अजान बिनति करें ॥ नंद ॥ 'आसकरन' बलि जाई ॥ मोहन ॥९॥ यह लीला कों दरस देहु ॥ नंद ॥ कृपा करो प्रभु हरिराम ॥ मोहन ॥१०॥

४९ (११) राग धनाश्री (११) कान्ह कुँवर खेलनि चले रंग भीने हो ॥ संग सखा बलराम ॥ लाल रंग भीने हो ॥ भूषन बसन बनाई कैं रंग भीने हो ॥ सोभा सुख के धाम ॥ लाल रंग भीने हो ॥१॥ बनि ठनि निकसे अति बने रंग ठाड़े सिंघ दुवार ॥ लाल ० ॥ स्याम सुभग अति राज ही ॥ रंग ॥ पूरन चंद ऊदार ॥ लाल ॥२॥ बाजे बहु बिधि बाज ॥ ही ताल मृदंग ढफ चंग ॥ बिच बिच मुरली सुर लिये हुलसत सब के अंग ॥३॥ सून कैं दौरि ब्रज बधू आई नंद जू की पौरी ॥ तिन में तरुनी सिरोमनी राजति नवल किसोरी ॥४॥ सनमुख ठाड़ी लाल कैं गावति मीठी गारि ॥ मुख

पर अंचल दै हँसी हासि चितवन वर नारि ॥५॥ मोहन के चित रति बढ़ी खेलि मच्यों अति जोरि ॥ भरि लीये सुरंग गुलाल सौं फेंटन के दोऊ ओरि ॥६॥ मृगमद कुँमकुम घोरि कैं भरति कनक पिचकाई ॥ छिरकति तकि तकि प्यारी कौं चितवति चितहि चुराई ॥७॥ मुख पर चंदन डारि के ओहट फिरति हँसि लाल ॥ कोलाहल सब करत हैं हो हो बोलत ग्वाल ॥८॥ ये ऊन के वे ऊन ही के मछो चाहत पीय प्यारी ॥ छल बल सौं सबन सब तकि के पगन परत नर नारि ॥९॥ तब ललितादिक दौरि हे गहे अचानक कान्ह ॥ सबै मिली हे सुंदरी पाए है जीवन प्रान ॥१०॥ निरखि हँसी मुख मुसकि कैं परसत बैन अघाई ॥ मोहन सौं ललिता कहे छाँडो करि मन भाई ॥११॥ बैनी गूथी माँग सौं भूषन सबै सिंगारि ॥ पहिरावे पट कंचुकि अँजन दीये सँवारि ॥१२॥ नील नलिन खंजन मृगी डारै उन पै वार ॥ अति अनूप नब नागरी भूले भवन नर नार ॥१३॥ चोवा मृगमद अरगजा छिरकति केसर घोरि ॥ छाये गगन गुलाल सौं अरुन घटा घन घोर ॥१४॥ बरखति अति अनुराग सौं स्यामा स्याम किसोरि ॥ पिप प्यारी मुख चंद के पीबत नैन चकोर ॥१५॥ छाँडे मन जु मनाइ कैं पकरे फिरि बल घेरि ॥ जुबति भेष बनाई कैं पहिरावे पट फेरि ॥१६॥ नैननि अँजन दै हँसी भले बने बल दाऊ ॥ छिरकति केसर घोरि कैं कहो कुंवरि कौं नाऊ ॥१७॥ इहि बिधि होरी खेलि ही बाढ्यो अति अनुराग ॥ सुधि कछू न समार ही प्रमुदित ब्रज बडभाग ॥१८॥ नवल लाल रसिक मनी गिरिधर प्रान आधार ॥ नैननि कौ फल यह सखी निरखे नैदकुमार ॥१९॥

५० (॥१॥ राग धनाश्री ॥१॥) फगुवा देहो लला नातर उपरैना और पाग भरेंगी ब्रज अबला ॥१॥ इक दिना ब्रज नार सिमिट चली फगुवा मांगनाँ ॥ मृगमद साख जवाद लीए कर गोप घनी घनाँ ॥ राधा प्रमुख सबै चली हो उपमा कही न जाई ॥ मनहु मत्त गयंद पै हो ज्यों किरिनी चलीं धाई ॥ फगुवा देहो लला ॥१॥ किनहु कंचुकी लाल किनहु लै पीत बनाई ॥ तनसुख सारी साज माँग सेंदुर भराई ॥ नकबेसरि मोतीहरा हो किंकिनि नुपूर घोर ॥ नैननि में कजरा बन्यों हो अरु सीधे झकझोर ॥ फगुवा ॥२॥ गावति धावति

चली सबैं नंदराई की पौरि ॥ मन में मदनगुपाल गह्यौ चाहत भरि कोरी ॥
 फागुन मास बसंत ऋतु हो मदन ब्यापत अंग ॥ झुंडन आई सबै हो खेलन
 हरि जू के सँग ॥ फगुवा ॥३॥ बाजत ताल मृदंग और मुख चंग उपंगा ॥
 झाँझ झालरि पटह भेरि दुंदुभी सुरंगा ॥ बीना महुवरि प्रनव ढफ हो तूरी
 बंस रसाल ॥ और अधोटी सबद बर हो उघटत हे कठताल ॥ फगुवा
 ॥४॥ मोर मुकुट सिर बन्यौ बनी मुक्ता फल माला ॥ कुंडल मंडित गंड
 कुटिल भौंह नैन बिसाला ॥ पीतांबर कटि किंकिनी हो मुरली सबद रसाल
 कोलाहल सुनि द्वार पै हो पौरि निकसे नंदलाल ॥ फगुवा ॥५॥ उझकि
 इत उत ग्वालि तकत मोहन की घाते ॥ गहवे को छल धरति मनहू मोहि
 मदमाते ॥ सौंधे पिचकाई भरि हो अंचल ओट दुराई ॥ आसपास सिंघ
 द्वार पै हो रही गेल सब छाई ॥ फगुवा ॥६॥ बाढ्यौ अद्भुत झुंड राधिका
 मधि दुराई ॥ सब तरुनी तिलक हरचौ चाहति हरिराई ॥ तबहि तलमली
 नैन हरचौ हो ढिंग आई अकुलाई ॥ सखी परसपर सैन दे हो सिर रंग
 दीयौ ढरिकाई ॥ फगुवा ॥७॥ लियै अरगजा लाल जुबती मंडल मधि दौरे ॥
 मनहु मदन मत्त गज तरुनी गन घेरे ॥ पट झीनों पहेचान मुख हो श्री
 राधा ढिंग लोल ॥ छूवत अरगजा ब्याज के हो कुच भरि ललित कपोल ॥
 फगुवा ॥८॥ कोऊ कर अंचल गहे कोऊ पटुका झकझोरे ॥ कोऊ भाँम
 लै दाम नैन सौं नैना जोरे ॥ काजर हरद कपोल बर हो गावति धावति
 नारि ॥ स्यामा सनमुख आई कें हो भरि लीनें अंकवारि ॥ फगुवा देहो
 लला ॥९॥ में अंकवारो भरचौ करो जीय कौं तुम भायौ ॥ भाँमिनि को
 अचरोट खैंचि काहु को उढ़ायौ ॥ मुरली पगीयाँ पीत पट हो आनि चंद्रिका
 मोर ॥ स्यामा अंग बनाव हीं हो हरि सिर गूंथी है डोर ॥ फगुवा ॥१०॥
 कोऊ कर अंजन करे कोऊ लै माँग सँवारी रोरी बिंदुका भाल तिलक काजर
 बिंदुका री ॥ सारी सुरंग बनाई कें हो बागो लियौ है उतारि ॥ प्यारी
 कौ पहिराव ही हो दै सिर मुकट सँवारि ॥ फगुवा ॥११॥ किन नकबेसरि
 दर्ई किनहु मुक्ताफल हारा ॥ खुभी चौकी पदक पोति दुलरी व सुढारा ॥
 बलय पहीचिका मुद्रिका हो झाँबे झूमक चार ॥ बर कंकन अरु किंकिनि
 हो पग नूपूर झनकार ॥ फगुवा ॥१२॥ कर जोरे कोऊ सखी कोऊ पट

गाँठि बनावे मंडल करि जु फिराइ सरस धमार हि गावे ॥ कुँवरि कुँवर
 विलसति अधिक हो कोक कला ब सुजान ॥ नव नागरि दुलहो भई हो
 नव दुलहनि भए कान्ह ॥ फगुवा ॥१३॥ कोउ आलिंगन करे कोउ मुख
 चुंबत नीके ॥ लाल भुजा उर धरे करे भुज अंसन पीय के ॥ पीबत पीबाबति
 अधर मृदु हो कर मुख बीरी देत ॥ खंडित दसनन अरध फुनि हो अपुने
 मुख धरि लेत ॥ फगुवा ॥१४॥ सुनि आए सब ग्वाल सबै नाना रंग भीने ॥
 अरगजा कुँमकुम नीर सरस सौंधे सँग लीने ॥ फूलन माल गरे धरी हो
 अरु फुलेल धरचौ माथ ॥ गोद गुलाल बीरा मुखे हो धरि पिचकारी हाथ ॥
 फगुवा ॥१५॥ तब बोले बलराम ग्वालि घेरो इक ठौरी ॥ ठौर ठौर तैं जाई
 रोकि रहो ब्रज की खोरी ॥ इक इक गहि डारियौ हो कुसुम रंग के मौझ ॥
 इन जुबतीन में इक धरी हो जान न पावे सौँझ ॥ फगुवा ॥१६॥ ओर
 सिमिट सब ग्वाल प्रथम पूजो बलदेवा ॥ रोरी हरद गुलाल करो याही
 की सेवा ॥ सौंधे कनक बेला भरे हो लै बल पै ढोरी ॥ तारी हाथ बजाई
 कैं मुख बोलत हो हो होरी ॥ फगुवा ॥१७॥ सुबल सुबाहु उठे बाँधि फेटा
 अरु दौरे ॥ केसर के सत कलस आनि जुबति पै ढोरे ॥ मोहन पिचकाई
 लई हो चोवा चंदन घोर और सखीन की ओट के श्री भौमिनी मुख दर्ई
 छोर ॥ फगुवा ॥१८॥ सब पिचकाई भरौ करौ अब कैं एकु खेला एकही
 बेर सौंधे भरो तुम कान्ह अकेला ॥ छूटी एकु ही और सबै हो धार बिबिधि
 बिधि रँग ॥ घन जानौं बरखत मानौं अमृत हो चातक श्री
 नवरंग ॥ फगुवा ॥१९॥ लै गुलाल नंदलाल जुबती मंडल मधि दौरे ॥
 सब सखियन में भौम मूठि डारति मुख मोरे ॥ तेल गुलाल लगाई के हो
 हाथ पिछोडे कीन ॥ रसिक सिरोमनि साँवरे हो सबन के मुख भरि
 लीन ॥ फगुवा ॥२०॥ तब राधा अति चतुर हँसति मोहन ढिंग आई ॥
 करी रसिली बात हेरी मुख रहे कन्हवाई ॥ सैन दर्ई सब सखियन सीं हो
 ढिंग आई हरि वाई ॥ स्याम परे बस मैन के हो मुरली व लई है
 छिनाई ॥ फगुवा ॥२१॥ कान लागि कै कछौ सखी स्यामा की स्यामैं ॥
 तो तुम्हे मुरली देहुं नैकु पकरावौ रामे ॥ इतनौ कहत में और सखी हो
 चटक ही में पट मार ॥ पितांबर तब लै भजी हो मोहन रहे



निहार ॥ फगुवा ॥२२॥ मधुमंगल कहति स्याम हलधर पकरायौ ॥ सब गोपीन की घरुनी करो जीय को तुम भायौ ॥ कुँमकुम केसर कुसुम रंग हो हरद लगावत गाल ॥ इक आँखि आँजी सखी तब हँसी सकल ब्रज बाल ॥ फगुवा ॥२३॥ तब ब्रजरानी आई बीच कीनों तिहिँ औसर ॥ बिबिधि बसन परिधान हार दीने है नौसर ॥ पीतांबर मुरली लै हो दई स्याम के हाथ ॥ तब निकसी निज गेह तैं हो भरे जात ब्रजनाथ ॥ फगुवा ॥२४॥ इक उछारत फूल इक गुलाल उड़ावे ॥ उरप तिरप गति लेति इक पट तार बजावे ॥ सौंधे सौरभ नभ बढ़ायौ हो धरनी अरगजा कीच ॥ ग्वालिनी मिलि उद्यम रच्यौ हो ब्रज गलीयन के बीच ॥ फगुवा ॥२५॥ तब राधा नंदलाल देखि रानी बिहँसानी ॥ करि आरती अरघ अंग अंग अति सुख सानी ॥ करि न्योछावर तौरि तृन हो परो सन्नू सिर धूल ॥ दुंदुभी देव बजाव ही हो बरखन लागे फूल ॥ फगुवा ॥२६॥ हरि जसु गावति चली सबै निज घर ब्रजनारी ॥ मदन गुपाल के सँग रंग भरि भीनी सारी ॥ देत असीस जीयौ सदाँ हो 'ब्रज जन' जीवन प्रान ॥ राज करो वृषभानुजा हो सो गिरिधरन सुजान ॥ फगुवा ॥२७॥



धमार के पद राग जेतश्री

१ (॥१॥) राग जेतश्री (॥१॥) खेलत फाग संग मिलि दोऊ आनंद भरि पिय प्यारी हो ॥ नवल किसोर रसिक नंदनंदन नव वृषभान दुलारी ॥१॥ नवक्रतु राज लताद्रुम फूले बरन वरन छवि न्यारी ॥ गुंजत मधुप कीर पीक कुंजत श्रवन सुनत सुखकारी ॥२॥ तेसेई सुभग गौर सामलतन बनी जोटइक सारी ॥ कमलनेन पर बूकामेलत हैंसि सकुचत कुमारी ॥३॥ भरि अरगजा कनिक पिचकाई धाँईसवे ब्रज नारी ॥ भरत भावते मदन गुपाले बढ्यो रंग अतिभारी ॥४॥ वोहोरच्यों मिलि दसपांचअली गोविंद भरे अकवारी ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा दियो सीस तैं ढारी ॥५॥ प्रेम मगन मोहन सुख निरखत तन सब दसा बिसारी ॥ चन्नभुज प्रभु सुरनर मुनि मोहे गुननिधान गिरिधारी ॥६॥

२ (॥१॥) राग जेतश्री (॥१॥) खेलत बलि मनमोहना ऋतु बसंत सुख होरी

हो ॥ सखा मंडली संग लिये बलिराम कृष्ण की जोरी हो ॥१॥ भेरि मृदंग
डफ झालरी बाजत करकठताल ॥ सबतन मदन प्रगट भयो नाचत ग्वालिनि
ग्वाला ॥२॥ ब्रजजन सब एकत्र भये घोखराय दरबारा ॥ इतवनी नवल
कुमारिका उतवने नवल कुमारा ॥३॥ युवति यूथ चंद्रावली अपने यूथ
श्रीराधा ॥ झूमक चेतवगावही बाढ्यो रंग अगाधा ॥४॥ बलि मोहन एकत्र
भये सुबलतोक एक कोदा ॥ दुहूदिस खेल मचाइयो बाढ्यो हैं मनसिजमोदा
॥५॥ चमकिचली चंद्रावली सुबलतोक पर आई ॥ उतहीकोपि प्यारी राधिका
बलिराम कृष्ण परधाय ॥६॥ कमलन मार मचाइयो जुरेदुहूँके टोला ॥
मधु मंगल पकरि कढेरियो बांधि गुदी में ढोला ॥७॥ बहोत हैंसे बलि मोहना
हैंसे सकल ब्रजवासी ॥ छोरेहूँ छूटेंहीं परिगई गाढी पासी ॥८॥ हैंसतहैंसत
सब आइयो गावति गारी सुहाई ॥ सेनाबेनी करिसबे बलिमोहन पकरेधाय
॥९॥ बलिजूकी आंखिजो आंजीयो पीयकी मुरली छीनी ॥ मन मान्यो
फगुवालियो पाछें जायबह दीनी ॥१०॥ यह विधि होरी खेलही ब्रज वासिन
सब सुख पायो ॥ भक्तनमन आनंद भयो ॥ गोविंद यह जस गायो ॥११॥

३  राग जेतश्री  रसिकफाग खेलनवनागरी सोसर सब ऋतुराज
की ऋतुआई ॥ पवन मंद अर्बिंद ओर कुंदबिगसेबिसदचंद पियनंद सुत
सुखदाई ॥१॥ मधुपटोल मधुलोल संग संग डोलें पिकन बोल निरमोल
श्रुतचारु गाई ॥ रचित रास सो बिलास जमुना पुलिन में सघन वृंदाबिपिन
रही फूलि जाई ॥२॥ कनिक अंग वरुनीसुकरनी विराजे गिरिधरन युवराज
गजराज राई ॥ युवती हंसगामी मिले छीत स्वामी कुनित वेनु पदरेनु बड
भागी पाई ॥३॥

४  राज जेतश्री  नंद कुंवर खेलत राधा संग जमुना पुलिन सरस
रंग होरी ॥ नव घन स्याम मनोहरराजत स्यामा सुभग तन दामिनी गोरी
॥१॥ केसरि रंग कलस भरेबहु संग सखा हलधर की जोरी ॥ हाथ न
लिये कनिक पिचकाई छिरकीं ब्रज की नवल किसोरी ॥२॥ चीर अवीर
उडावत नाचत कटिसों बांधि गुलाल की झोरी ॥ मगन भई क्रीडत सब
सुंदरी प्रेम समुद्र तरंग झकोरी ॥३॥ बाजत चंग मृदंग अधोटी पटह झांड

झालरि सुरघोरी ॥ तालरवाब मुरलिका बीना मधुर शब्द उघटत धुनि थोरी ॥४॥ अतिअनुराग बढ्यो तिहिं ओसर कुललज्या मर्यादा तोरी ॥ मदन गुपाल लाल संग बिहरत देहदसा भूली भईबोरी ॥५॥ एक गहत फेंटा फगुवाकों एक करत ठाडी जुठठोरी ॥ एकजु आंखि आंजि कें भाजी एक बिलोकि हंसी मुख मोरी ॥६॥ एकनलई छिनाय मुरलिका देति गारि मोहन कों भोरी ॥ एक फुलेल अरगजा चोवा कुंकुम रस गागरि सिर ढोरी ॥७॥ विविध भांति फूल्यो वृंदावन कूजत कीर खट पद पिकमोरी ॥ निरखत नेहभरी अंखियांसो योंचितवतनिस चंद चकोरी ॥८॥ थकेदेव किन्नर मुनिगन सब मन मथनिज मन गयो लज्योरी ॥ परमानंददास यासुखकों जाचत विमल मुक्ति पदछोरी ॥९॥

५ (१५) राग जेतश्री (१५) ऋतु बसंत के आग माहो प्रचुर मदन को जोर ॥ केलिरस झूमकारेझूमकरा ॥ राधा गोरी सुंदरी सुंदर नंद किसोर ॥१॥ झूंडन मिलि गावत चलीं झूमक नंद के द्वार ॥ नृत्य करें ब्रज सुंदरी मोहि लियो मनमार ॥२॥ बिपिन गलीं सुंदर बनीं ललित लवंगन मेलि ॥ अंबमनोहर मोरियो करन केतुकी बेलि ॥३॥ गोकुल गाम सुहावनो वृंदावनसो ठोर ॥ खेलहिं ग्वालनि ग्वारिया रसिक कान्ह सिरमोर ॥४॥ एक गोरी एक सांवरी एक चंदवदन सोहे बाल ॥ एकन कुंडल जगमगे एकन तिलक सुभाल ॥५॥ एकन चोली अधखुली एक रहे वंद छूटि ॥ एक अलकावलि उरधरें एक रही लटरखूटि ॥६॥ एकनचीर जोखसिपरे एकन लटकतलूम ॥ एक अधर रसघूंटहि एक रही कंठझूम ॥७॥ ताल पखावज बाजही बीना बेनु रसाल ॥ महुवरि चंगजो बांसुरी बजावत गिरिधर लाल ॥८॥ चोवा चंदन कुंकुमा उडत गुलाल अबीर ॥ सुरनर मुनि मनमानियो व्योमविमाननभीर ॥९॥ सुरति समागम रस रह्यो मनहुं महागजमंत ॥ परमानंद प्रभु श्रीपति रसिक राधिका कंत ॥१०॥

६ (१५) राग जेतश्री (१५) फागु खेलै राधा गोरी श्री वृषभानु जु की पौरि हो ॥ नंदलाल वृषभानु नंदनी भली बनी यह जोरी हो ॥१॥ चारु, अबीर, गुलाल, लसत तन, बिच बिच राजति रोरी हो ॥ झख करदम हरि रहसि

भरै तब, केसर कुँमकुम घोरी हो ॥२॥ तन सुख चारु छींट छिरकति तन,
 डगमगात डोरी हो ॥ अंचल पट सोभित ऊरु कुच पै उपमा श्रीफल कोरी
 हो ॥३॥ स्याम सुभग के बाम अंस पै राजति नवल किसोरी हो ॥ नूपुर
 रुनति कुनित कटि मेखला निरखि मदन मति भोरी हो ॥४॥ रीझि-रीझि
 तब 'रसिक राई' कौं मृदु मुसिकनि मुख मोरी हो ॥ प्रेम गाँठि परि जू
 परसपर छुटत नहिं क्यों हैं छोरी हो ॥५॥

धमार के पद - शिवरात्री के दिन

१ (१११) राग ललित (१११) भोरही आयो मेरे द्वार जोगीया अलख कहे कहे
 जाग ॥ मोहन मूरति एनमेनसी नैन भरे अनुराग ॥१॥ अंग विभूतिगरे
 बिचसेली देखीयत विरह बिराग ॥ तनमन वारूँ धीरज के प्रभुपर राखूँगी
 बांध सुहाग ॥२॥ तुम कोनकेवस खेले हो रंगीले हो हो होरियां ॥ अंजन
 अधरन पीक महावरि नेनरंगे रंगरोरियां ॥३॥ वारंवार जंभात परस्पर
 निकसिआई सब चोरियां ॥ नंददास प्रभु उहांई वसोकिन जहां बसेवेगोरियां
 ॥४॥

२ (१११) राग काफी (१११) बाघंबर ओढें सांवरो हो यामें जोगी कोहुनरकोन
 ॥१॥ संखशब्द ध्वनि सुनजित तिततें धिरि आईं ब्रजनार ॥ वदन विलोकि
 कुंवरि राधे को बेटे हैं आसन मार ॥१॥ हंसि बृझत वृषभान नंदिनी रावल
 उत्तर देह ॥ कारन कोन रूपतसीको वनतज दूँढतगेह ॥२॥ कोन देसते
 आए हो रावल कहां तेरी मनसाजाय ॥ आपुन साधि मौन धरि बेटे दक्षन
 दिस बताय ॥३॥ सींगी पत्र विभूतिन बटुवा सिर चंदन की खोर ॥ मेरे
 जिय ऐसी आवति हे संकर विसरी गोर ॥४॥ चुटकी विभूत दई राधाकों
 चले हैं बाघंबर झारि ॥ मनहरि लियो तनक चितवन में गोहन लागी सकुमारि
 ॥५॥ नगर नगर प्रति भवन भवन प्रति निशदिन फिरत उदास ॥ नयन
 चकोर भये राधा के हरि दरसन की प्यास ॥६॥ जतन जतन कर मनमोहो
 हो निरख नयन की कोर ॥ जगन्नाथ जीवन धन माधो प्रीति लगी
 दुहुँओर ॥७॥

३ **॥** राग सारंग **॥** मोहन मुनि हे आये हो ॥ हो मेरे ललना सबको मनहरलीनों ॥ध्रु०॥ रसमसीचाल चले अलबेली अंग चढाय विभूत ॥ कानन कुंडल मुकुट विराजत पीतांबर ओढे कटिपूत ॥१॥ दंड कमंडल गहीजपमाला आसन लीनों बनाय ॥ कोटि जतन राधा पचिहारी मुख न बोलत मुसिक्याय ॥२॥ जगजीवन जोगी हे आये अरस परस लिये ग्वाल ॥ मानों कोटि उडुगण शशि जैसे ऐसे बने नंदलाल ॥३॥ दृग दृग थेई थेई धुनि बाजे इत गोपी उत्ग्वाल ॥ आनंद भई हें सकल ब्रज वनिता बोलत वचन रसाल ॥४॥ ब्रह्मादिक इंद्रादिक मुनिवर देखत कोटि तेतीस ॥ श्री गोपीनाथ एक ख्याल बनायो सकल रचना को ईस ॥५॥ जान्यों भेद बलि मोहन को मुख माड्यो सकल सुवास ॥ जय जय कार करत सुरनर मुनि वरखत कुसुम अकास ॥६॥ नवल किसोर कहां लो वरनो शोभा कही न जाय ॥ सूरदास बलि लाल छबीले निगम निरंतर गाय ॥७॥

४ **॥** राग सारंग **॥** होरी खेलें में भेख धरिके आयो लंगरवा जोगी ॥ ब्रज जुबतिन के जूथ लै खेलत अति अनुरागी ॥१॥ कांख कुबरी गुदी गुदरी तिलक छाप गुदी सेली ॥ ब्रजनारी मधि राधा प्यारी देखत आई पहेली ॥२॥ बोले नहीं सेननि समुझा वे अधर उरज पर चाहे ॥ कर सों बताय कुंजन में चलिये अंक भरें दोऊ बांहें ॥३॥ ललिता अबीर लाई मुख माँड्यो रोरी केसर ढोरी ॥ गोपी सब मिलि गावें बजावें बोलत हो हो होरी ॥४॥ चंचल नैन चितै चित चोर्यो मोहन मेदक रोरी ॥ उठि लै आतुर संकेत कुंज में मोहन लागी गोरी ॥५॥ मगन भए रस बस दोऊ आनन्द उरन समाय री ॥ 'श्री विट्ठल गिरिधर' ब्रज जुबतिन स्वांग मनाय री ॥६॥

५ **॥** राग सारंग **॥** होरी खेलै साँवरो मनमोहन जाको नाँउ ॥ फागु सकल ब्रज रमि रह्यो रस भीजि रह्यो सब गाँउ ॥१॥ नट भेष बनाई कै हो बिप्र भए गोपीनाथ जिन कै नैन कौतिक हारे ब्रज लरिका के नाथ ॥२॥ नव तरुनी नव रूपवंत हरि जाकी बाखरि जात ॥ चितवति अति अनुराग



सों अरु कहति भेद की बात ॥३॥ गोपी कहति अहो बिप्र जू हम बूझति
हैं तुम सों ॥ हमारी प्रीति हरि सों लागी कछु हरि हू की हम सों ॥४॥
कहति हौं बाके जिय की तुम सों नाहिन ताकों हेत ॥ जो कछु करत तुमारे
कारन हरि चाहति सदाँ संकेत ॥५॥ राधा मंत्र जपत चलै हरि जहँ कीरति
वृषभानु ॥ कहि न सकत चाहत कछ्यों दानन मनि कन्या दानु ॥६॥ कर
गहि ढफ नव लाड़िली हो गावति सखियन संग ॥ कहि 'भगवान हित
राम राइ' प्रभु नैन की गति पंग ॥७॥

धमार के पद - राग काफी

१ (१०१) राग काफी (१०२) एरी सखी निकसे मोहनलाल ॥ खेलन ब्रज में
फागरी ॥ रंग हो हो हो होरियां ॥ एरी सखी घुमड्यो अबीर गुलाल ॥
मानो उनयो अनुरागरी ॥१॥ शोभित मदन गोपाल ॥ कटि बांधे पट सोहनों ॥
काछनी काछें लाल ॥ लालनिचोय रंगीमानों ॥२॥ मोर मुकुट छबिदेत ॥
बंक दृगनहँसि देखनों ॥ सब ही को मनहर लेत ॥ एनमेन मानो पेखनों
॥३॥ पट आबज सुरबीन अनाघात गतिगाजही ॥ ताल मृदंग उपंग रंज
मुरजडफ वाजही ॥४॥ घिरआई ब्रजनारि मृगनयनी गजगामिनी ॥ रोके
हैं सावरेलाल घनघेरघो मानो दामिनी ॥५॥ छिरकत पियनंदनंद ॥ त्रियपट
ओट वचावहीं ॥ मानो घन पूरनचंद ॥ दुरनिकसें पुनि आवहीं ॥६॥ बने
हैं त्रियन के अंग छिरकछींट छबिछेलकी ॥ मानो फूली रंग रंग ॥ ललितलता
जनुप्रेमकी ॥७॥ बढ़यो परस्पर रंग ॥ उमग उमग रस भरनमें ॥ निरख
भई मतिपंग ॥ पीतांबर फरहरनमें ॥८॥ जब गहि रंगन भरे ॥ मोहन मूरति
सांवरे ॥ हर हर हर हँसि परे ॥ मुनि मन व्हे गये बावरे ॥९॥ भई सरस्वती
मतिबोर ॥ ओर खेल कहां लोकहें ॥ रस भरे सांवलगौर ॥ नंद दास
केहियरहें ॥१०॥

२ (१०३) राग काफी (१०४) एरी सखी निकसी वृषभान कुमारि होरी खेलन
स्यामसों ॥ रंग हो हो हो हो होरियां ॥ एरी सखी उडत अबीर गुलाल
कटिपिच काई भामसों ॥१॥ शोभित राधाबाल सब सुंदरिनमें सोहनी ॥

शोभित लहेंगालाल मोहन को मनमोहनी ॥२॥ झूमक सारी पीत अंगिया
कुचन पर राजही ॥ सोहे नकवेसर आड पायल रुनझुन वाजहीं ॥३॥ आभूषण
बहुसार मनमथ कोटिल जावही ॥ राधा वदन चंददेख युवती नक्षत्र छबि
पावही ॥४॥ आवत बल नंदनंद चहुंओर डफ वाजही ॥ उडत गुलाल सुरंग
सुबल तोक मध्य गावहीं ॥५॥ केसर के भरमाट पिचकाई इत उतचली ॥
चोवा मृगमद मान बलमोहन के मुखमली ॥६॥ सबको मनहर लेत गजगति
चाल चलनमें ॥ ज्यों घन पूरनचंद राधा सखियन दलनमें ॥७॥ फूलदंडागहि
हाथ मारत सबहिन भालसों ॥ ज्यों मृगसेना देख लपटी स्यामत मालसों
॥८॥ घेर लिये नंदलाल घनघेरचो मानो दामिनी ॥ मुरली पीतांबरछीन
चली ललिता गजगामिनी ॥९॥ चंद्रावलि चलीजाय दोऊ दृगन अंजन
कियो ॥ पुष्पन गेंदचलाय दोउन मुख बीरा दियो ॥१०॥ बाजत ताल मृदंग
मुरली वेणु सुहावनी ॥ हो हो हो सब बोल बलमोहन कोनचावनी ॥११॥
झूमक खेल मचाय सब हिन कों बैठारकें ॥ वंसलिये कर धाय सखादीये
सब मारकें ॥१२॥ दुंदुभी देव बजाय फूलन वरखत आयकें ॥ सुर ललना
भईचूर श्रीमुख देखें जायकें ॥१३॥ देवमुनी मनपंग खेल फाग मनमेलहे ॥
छबि देखत कृष्णदास खेल फाग को कहा कहे ॥१४॥

३  राग काफ़ी  खेलति स्याम सुजान सखा संग राजे हो ॥ ज्यों
व प्रभाकर रवि सुकमल बिराजें हो ॥१॥ उत बनी नवल किसोरी सखी
संग सोहनी ॥ इक तै इक सरूप स्याम मन मोहनी ॥२॥ बाजति वर डफ
झांझि परम मन भाव ही ॥ गावत गारी धमारि प्रेम उपजाव ही ॥३॥ छिरकति
केसरि नीर अबीर उड़ाव ही ॥ कमलासी नवलासी लीये तीय धाव ही
॥४॥ गह्वो अचानक आई लला ब्रजराज के ॥ करन लगी मन भायो डारि
डर लाज के ॥५॥ इक धरे भुज अंस बनी अति भाँमिनी ॥ इक रही उर
लागि मनोँ घन दामिनी ॥६॥ लै करि केसर अंग प्रिया ससि प्रिया मुसिकाय
कें ॥ छिरके हैं मोहन लाल हीयें हुलसाइ के ॥७॥ बोलि उठी हो होरी
सखी सब आई के ॥ मगन भये जे कृष्ण ध्यान उर लाई के ॥८॥

४ **॥** राग काफी **॥** श्रीगोकुल राजकुमार लाल रंग भीनेहें ॥ खेलत डोलत फाग सखा संग लीनेहें ॥१॥ चित्र विचित्र सुदेस सबे अनुकूलेहें ॥ राजत रंग बिरंग सरोजसे फूलेहें ॥२॥ एकनके करकंकण जेरी जरायकी ॥ एकन के पिचकाई सुहेम भरायकी ॥३॥ कुंकुम घोर भरे घट हाटिकके घने ॥ पंकज पुंज पराग सुमृगमद सोंसने ॥४॥ ढोलकी ढोल निसान मुरज डफ बाजहीं ॥ मेनके मेघ मानो रस वृष्टि सों गाजही ॥५॥ धुनि सुनके अकुलाई चली नव नागरी ॥ एकते एक महागुण रूपकी आगरी ॥६॥ राधाके संग सुहाई अनेक सहेली हैं ॥ कामके काननकी मानों कंचन बेली हैं ॥७॥ भेष बनायेकी भांति न जात वखानी हैं ॥ जेती तेती उपमा मनमें बिलखानी हैं ॥८॥ कोयल कूरकहा सुर भेदहि जानही ॥ कुंजर कायर कोन कहा गति ठानहीं ॥९॥ केरनकोजुसुभाव परचो अति कंपको ॥ हेमलियो हठनेम सुपावक झंपको ॥१०॥ खंजन कंजसों लागि रहे गति लासतें ॥ के हरिकंदर मंदिरमें दुरचो त्रासतें ॥११॥ पंक में पंकज मूलरह्यो छिपि लाजतें ॥ नित्य प्रकास विलास मिट्यो द्विज राजतें ॥१२॥ ताल पखावज आवज बाजे जंत्रहें ॥ गान मनोहर मेनके मोहन मंत्र हैं ॥१३॥ सो इतकी उतकी धुनि लागे सुहाई हैं ॥ मानो अनंगके आंगन बाजे बधाई हैं ॥१४॥ गोकुल गोरिन खोरिन खेल मचायो हे ॥ रंग विरंग अबीरसों अंबर छायो हे ॥१५॥ लाल गुलालकी धुंधरमें मुखचों लसें ॥ प्रात पतंग प्रभावचि कंचन कंजसें ॥१६॥ दृष्टि करी पिचकारी भरी अनुरागसों ॥ जाय लगी ब्रजराज लला बडभागसों ॥१७॥ उज्ज्वल हास कपूरकी धूर उडावही ॥ सुंदर स्याम सुजानसों नयन जुडावही ॥१८॥ गावत गारिन नारि सबे झुक प्रीतिकी ॥ बात बनावत आपनी आपनी जीतकी ॥१९॥ घिरिआई अबला सब लाल गोपालसों ॥ हेमलता लपटी मानो स्याम तमालसों ॥२०॥ कोऊ गहें पटपीत कोऊ वन दामकों ॥ कोऊ निसंक नै अंकभरे घनस्यामकों ॥२१॥ स्यामके सीसतें स्यामाजू केसरढोरी है ॥ दे करतारी कहें सब हो हो होरी है ॥२२॥ एसोई ध्यान सदा हरिको जीय जोरहे ॥ तोपें गदाधर याके भागिकी को कहे ॥२३॥

५ **॥** राग काफी **॥** श्रीवृषभान कुंवरि महारंग भीनी हैं ॥ सखी स्वरूप

अनूप सबे संग लीनी हैं ॥१॥ खेलत फाग सुहाग भरी अनुराग हैं ॥ नंद
 के लालसों बाल बडीवड भागहें ॥२॥ कंचन वेलि सुकोन कहा द्युति
 दामिनी ॥ चंद कहा अरविंद को काम की कामिनी ॥३॥ खंजन मीन आधीन
 करी कदली जहां ॥ केहरि हंस प्रसंस करें अति से तहां ॥४॥ कोकिला
 कुंद कपोत सुकीरन कोगिनें ॥ बिंब बंधूक प्रवाली वारी वारनें ॥५॥ वास
 सुवास बने सु बने रंग रंग हैं ॥ हेम मणि खची है रची भूषण अंग हैं
 ॥६॥ सोंधेकी सरसाई कहां लोंकही परे ॥ गुंजत हैं अलि पुंज अंग अंग
 उपरे ॥७॥ दुंदुभी ताल मृदंग वाजे बजावहीं ॥ ले रसरीतिसों प्रीतिसों चाचर
 गावहीं ॥८॥ वेसुन सुंदर स्याम सखा संग आयेहें ॥ झीने सुगंधसो भीने
 बागे बनाये हैं ॥९॥ देखत दोरी किशोरी भरोरी भरो भनी ॥ रीझीहें रूप
 निहार सनेहसों सनी ॥१०॥ सोंधे भर पिचकारी जरीनगहेमसों ॥ छबिसों
 छोडी छबीली छकीहे प्रेमसों ॥११॥ कंचनकी जु कमोरी सो केसरसों भरी ॥
 डारति हैं पिचकारी सखी सबहें खरी ॥१२॥ भामकों स्याम चलाई गेंदुक
 फूलकी ॥ आय लगी उरमांझके कामके मूलकी ॥१३॥ कंज पराग कपूरकी
 धूरि गोपालकें ॥ लावत गालसों बाल लगी उरलालकें ॥१४॥ आंधी करी
 हरि वीर अबीर गुलाल हैं ॥ धूंधरमें झकझोर टूटी उरमाल हैं ॥१५॥ आई
 झुंडन झूमकें घूमके वारकों ॥ फूल छरीवधरी उर कंचन की मारकों ॥१६॥
 यह रस श्रीगिरिधारी की प्यारी को गानहें ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरसो जीवन
 प्रान हैं ॥१७॥



६ (॥१॥ राग काफी (॥१॥) तृभंगी मोहन मन हरयो हो ॥ सब ब्रजजन सुख
 देन ॥१॥ ॥ घर घर तें बनि बनि ब्रज वनिता चली हैं नंददरवार ॥ देखन
 रूप मदन मोहन को कीनो हे प्रेम विस्तार ॥१॥ तन तन सुख की सारी
 पहरे अतरोटा छवि देत ॥ नील कंचुकी अति राजत हैं कसंबी फूल समेत
 ॥२॥ रत्नजटित राखरी विराजत वेनी सो छवि देत ॥ कनिक खंम पर
 चढ्यो भुजंगम जानों अमिके हेत ॥३॥ विधि वांहन वखमांग विराजत सीस
 फूल की कांति ॥ करनोटी अरु करन फूल मानो शशि उडुगन की पांति
 ॥४॥ मृगमद आड ललाट विराजत विच वंदनको बिंदु ॥ कही न जाय

कछु ऐसी शोभा मनहुं राहु पर इंदु ॥५॥ पंकज लोचन ऊपर भृकुटी मनहुं
 काम के बान ॥ छूटत नहीं आप बस राखे मदन रायकी आन ॥६॥ नयनन
 न अंजन खंजन मोहे चंचलता थके मीन ॥ चपल चितवनी मृग मोहे पुतरी
 कमल आधीन ॥७॥ नासा बेसर जल सुतराजे कहिये कहा बनाय ॥ मानो
 चंद निज बंधु जानिकें लीनो निकट बुलाय ॥८॥ अधर सुधा मुख मधुरी
 वानी मुसकनि बरखत फूल ॥ दसन तडित के बीज बयेहें मध्य सुधा के
 कूल ॥९॥ चिबुक चिन्ह ऐसे देखियत हैं मधुकर सुत जेसैं होय ॥ करि
 मधुपान प्राण सुखदीनों रह्यो कमल ढिंगसोय ॥१०॥ मुक्तामाल चौकी
 हमेल खगवारो दुलरी पोत ॥ कंठ पदिक सरी जगमगात मखतूल जामें
 जोत ॥११॥ चार चार चूरी रही पोहोंची खुभि परवरा सु घाट ॥ कर
 पल्लव मुदरी अति राजें बाजूबंद भरे पाट ॥१२॥ क्षुद्र घंटिका कटितट
 राजें सप्तसुरनकल वाज ॥ आतुर व्हे आये धाये सब मनहुं मत्त गजराज
 ॥१३॥ गजगामिनि भामिनि अति प्रमुदित पग नूपुर झनकार ॥ मानो मराल
 मंडली शोभित रह्यो नरति अहंकार ॥१४॥ सकल सिंगार किये ब्रजवनिता
 उपमा कही न जाय ॥ कोटि कोटि राकेश मानो प्रगट भयें हैं आय ॥१५॥
 कोकिल बेन सकल ब्रज सुंदरि करत मधुर स्वर गान ॥ मानो एकचट
 सार पढी हैं घट बढ परतन तान ॥१६॥ चावा चंदन ओर अरगजा साख
 गुलाल अबीर ॥ नब मटुकी भर केसर घोरी निरमल यमुना को नीर ॥१७॥
 छिरकें जाय गोपाल बाल सब बाढ्यो मन आनंद ॥ गावत हसत करत
 कौतूहल राजत श्री नंदनंद ॥१८॥ दुहुंदिसते बाजे वाजत हैं मुरली चंग
 उपंग ॥ रुंज मुरज डफ झांझ झालरी वाजत मधुर मृदंग ॥१९॥ सब सखियन
 मिल मोहन पकरे छांडे आंखि अंजाय ॥ तब तो वसनही हरे अब दाव
 परचो हे आय ॥२०॥ मुख मांडत ओर आंखि आजतहें राजत सुभग
 सुदेस ॥ देखत रूप मदन मोहन को होत प्रेम आवेस ॥२१॥ ताल घेर
 गायन गायें गंधर्व से गुनी अपार ॥ मोहन रीझ देत पीतांबर राधा उर
 को हार ॥२२॥ हरिनारायण फगुवा दीनों मेवा बहुत मंगाय ॥ गावत चलीं
 सकल ब्रजवनिता स्यामदास बल जाय ॥२३॥

७ ॥ राग काफी ॥ त्रिभंगी मोहन रंग भरे हो ॥ रंग भरे खेलति
 फागु बिलास ॥१॥ होरी डाँडो रोपन कों मिलि चले सखा लिए संग ॥
 बाजत धौसा भेरी झालरी आबज ताल मृदंग ॥२॥ ढोलक ढोल किसांन
 किन्नरी झांझि और कठताल ॥ कर ढफ लिए बजावत गावति किलकत
 नाँचत ग्वाल ॥३॥ फैंटन भरे गुलाल सुरंग रंग उड़वत विमल अबीर ॥
 चोवा चंदन और अरगजा कलस भराए बलबीर ॥४॥ एकनि पै बीरा भरि
 ओरी एकनि पै कुसुमनि हार ॥ एक कर लिए गेंद बकुलन की करत परसपर
 मार ॥५॥ जाय चोहटे होरी को आरोपन कियौ हैं गुपाल बिधि सों द्विजन
 सों पढ़ाई मंत्र करि धुनि पहिरावत माल ॥६॥ इहि बिधि करी पूजा होरी
 की, ब्रज जन मन आनंद बरखत ॥ पुहुप देव गन उचरत, जै-जै गोकुल
 चंद ॥७॥ सुनि कुलाहल लरिकन कौ उठि धाई सब ब्रज नारी ॥ झुंड
 झुंडन जुरी औई हो देति भौंमती गारी ॥८॥ नवसत साजि सिंगार कनक
 तन बरनि सके कबि कौन ॥ अंग-अंग रूप सुधा की सीमा देखत लाजत
 मौन ॥९॥ देखि ग्वाल सब मतौ मत्तौ मन जुबती जूथ पै दोरी ॥ हो हो
 हो करी कनक कलस भरि री ढोरी है केसरि घोरी ॥१०॥ तब गोपी
 अति कोपी बोहर्यौ सिमिटि सबे इक ठौर ॥ करी धूंधरी ललिता उठि धाई
 पकरे हैं नंद किसोर ॥११॥ झटकत पीत बसन कटि ते कर मुरली लई
 छिड़ाई ॥ गूँथि स्याम सिर बैनी बनावत काजर नैन अंजाय ॥१२॥ एक
 लाल कौ अंक भरति है एक जु चुंबन देति ॥ एक अधर रस पान करत
 हैं अति दुर्लभ सुख लेति ॥१३॥ मनमोहन कौ बागौ लै श्री राधा कौं
 पहिराई ॥ स्यामा के आभूषन स्याम को सजि सब लेति बलाई ॥१४॥
 गाँठि जोरि मुख माँडि कुंमकुमा फगुवा लियौ मँगाय ॥ इहि बिधि फागु
 खेलि प्रमुदित मन बहुरी आपुने घर आय ॥१५॥ आरति करति जसोदा
 मैया राई लौन उतारि ॥ बिबिध भाँति के बसन देत हैं बारि न्योछावरि
 डारि ॥१६॥ यह सुख श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल चरन कृपा बिनु नाँहि ॥ नंद
 नंदन की या छबि पै 'दास' वारने जाँहि ॥१७॥

८ ॥ राग काफी ॥ मन मोहन ललना मन हरचो हो ॥ हरचो मन

सकल घोष सिरताज ॥ ध्रु० ॥ गृह गृहते सुंदरि चली देखन ब्रजराज कुमार ॥
 निरख बदन बिथकित भई हरिठाडें सिंघ दुवार ॥१॥ डिमडिम पटह झांझ
 डफ बीना मृदंग उपंगन तार ॥ गावत चेत सुबल श्रीदामा बाढ्यो रंग अपार
 ॥२॥ रत्न जटित पिचकाई कर लियें छिरकत घोख कुमार ॥ मदन मोहन
 पिय अति रसकमाते कछु बन अंग सह्यार ॥३॥ इत राधा प्रभृति चंद्रावली
 ललिता गोपि अपार ॥ उत हलधर मोहन दोऊ भैया खेल मच्यो दरबार
 ॥४॥ शिथिलित कटि तट बसन मेखला उरगज मोतिन हार ॥ बिथुरी अलक
 बदन छबि राजत गलित कुसुम सिरभार ॥५॥ मोहन प्यारी सेनदे हलधर
 पकरे जाय ॥ आपुन हसत पीतपट मुखदे आये हैं आंखि अँजाय ॥६॥
 बहोरचों सिमटि सकल सखियन मिल मोहन पकरे धाय ॥ अधर माधुरी
 पीबत पिबाबत मुरली लई हे छिनाय ॥७॥ परिवा सिमिटि सकल ब्रजबासी
 चले जमुना जल न्हान ॥ बार कुंवर नंदरानी हो देत बिप्रन बहु दान ॥८॥
 द्वितीया पाट सिंघासन बैठे छत्र चवर सिरताज ॥ राजत सभा सहित श्रीदामा
 बल बल बल युवराज ॥९॥ स्याम सुभग तन अति राजत हैं अरगजा पीत
 सुवास गोविंद प्रभु पर सकल देवता बरखत कुसुम अकास ॥१०॥

९  राग काफ़ी  सलोनी स्यामा मन हरचो हरचो मन रसवस
 कीने नंदकुमार ॥ ध्रु० ॥ सब युवतिन में राजत आज भली वृषभान कुमार ॥
 नख सिखलों अंग अंग प्रतिमानो उदयो कोटि कमार ॥१॥ चरण कमल
 वर विमल कंचन के नूपुर के झनकार ॥ मानो हो मराल बालकी मंडली
 बोलत डोलत चार ॥२॥ कदली खंब जंघ जुग मानो मद गयंद अतिचार ॥
 केहरि कटि किंकिणी हाटक तन पहरें नील पटसार ॥३॥ नीवीनाभि त्रिवली
 रोमावलि कंचुकी कुंच बिचहार ॥ मानो सुभग सुमेर अंगतें धसीहें गंगद्वे
 धार ॥४॥ कर पहेंची फुंदना मुद्रावलि कंकन चुरी सुहार ॥ राजत अति
 फल फूल भरीद्वे मोनो कल्पतरु डार ॥५॥ बदन इंदु अरविंद नयन भय
 मनहुं मधुप गुंजार ॥ ताटक श्रवण सरस नकवेसर बिंदु चिबुक सिंगार
 ॥६॥ हसन दसन द्युति अधर बिंब छबि मृगमद तिलक लिलार ॥ रसना
 एक छबिसरसिसीसछबि मानो तरंग निधिवार ॥७॥ अपनी बुद्धि हरिहेत

बिरंचि रचि जनु राधाजु नारि ॥ सूरदास प्रभु मोहन नागर निरखत वदन
निहारि ॥८॥

१० (१०१) राग काफी (१०२) मोहन की मुरली मन हरचो हो ॥ हो मेरे प्यारे
जब तें सुनि है मधुर धुनि कान ॥ ध्रु० ॥ प्रथम प्रारंभ निकसि सखी ब्रजते
ब्रिंदावन की भूमि ॥ ता पर केलि करत नंदनंदन ललित लता रही झूमि
॥१॥ तेसौई रितु बंसत प्रगट्यौ ब्रज सबहिन के जिय फूल ॥ जाग्यौ मदन
देखि कुसुमावलि भँवर भयौ मन भूल ॥२॥ श्री ब्रजराज सखी सँग लीने
राजत जमुना तीर ॥ उत राधिका झुंडन अपने सों गावत गहर गँभीर ॥३॥
मोर मुकुट बनमाल बिराजत उर पीतांबर अंग ॥ सुनि सजनी गिरिधर
नहीं चितवत लज्जित कोटि अनंग ॥४॥ बाजत तहाँ मृदंग ताल बीना श्री
मंडल डफ डोल ॥ खेलत फाग, कान्ह हो हो कहि नाचत करत कलोल
॥५॥ लिये ग्वाल हाथ पिचकारी तकि-तकि करत हैं घात ॥ भिजवत चीर
गात गोपिन के रीझि स्याम मुसकात ॥६॥ दुचित भये जब ही हरि नागर
राधा दीनी सैन ॥ पकरे आय अचानक सखियन आंजि लिये दोऊ नैन
॥७॥ लियौ छीन पीत पट बाँसुरी तारी दै-दै नचाय ॥ ऐसे सुत 'जन हरिया'
के प्रभु फगुवा दियो है मैगाय ॥८॥

११ (१०१) राग काफी (१०२) गोकुल को जीवनि मन हरचो हो सखी री,
खेलति होरी फाग ॥ ध्रु० ॥ दुहुँदिस रंग बढ्यौ अति भारी सोभा कही
न जाई ॥ नाँचत ग्वाल करति कुलाहल सुरँग-गुलाल उड़ाई ॥१॥ लै लै
करन करन पिचकाई केसरि कलस भराई ॥ चोवा साख जवादि कुँमकुमा
गोरा मेद मैगाई ॥२॥ सनमुख हैं छिरकत गोपिन कौं ग्वाल सबै सतराई ॥
दीठि बचाई आई ललिता तब पकरे हलधर धाई ॥३॥ अपने मन कौं भायौ
करि कैं छाड़े है तब जाई ॥ पिय तन देखि रही ब्रज बनिता आनंद उर
न समाई ॥४॥ दुंदुभि डोल पखावज आबज बाजत डफ सहनाई ॥ बैनु
रबाब किन्नरी महुवरि मुरली मधुर बजाई ॥५॥ सब समाज लै कैं घर आए
प्रफुल्लित भए नंदराई ॥ करि आरति जसुमति अति आदर सौं आतुर सनमुख
आई ॥६॥ इंद्रादिक सनकादिक संकर कुसुमन वृष्टि कराई ॥ यह जोरी

अविचल या जग में 'रामदास' बलि जाई ॥७॥

१२ (११) राग काफी (११) श्रीराधा नागरि मन हरघो हो हरघो मन सकल
घोख सुखदेन ॥ ध्रु० ॥ मोहन तेरी प्राण प्रिया को वरनों कहा शृंगार ॥
जो तुम मेरो आदि अंतलों मानो यह उपकार ॥१॥ चंद्रमुखी भूँह कलंक
विच चंदन तिलक लिलार ॥ मानो वेनी भुजंग के चापे स्रवत सुधाकी
धार ॥२॥ नयन मीन आनन सरोवर में परत हैं पलकनजार ॥ मानो करण
फूल चारचों के रवकत वारंवार ॥३॥ वेसर बनी सुभग नासा पर मोती
सजल सुधार ॥ मानो तिल प्रसून सूक्ष्म शशी द्वेदिस बंदतुसार ॥४॥ सुठ
सुठोन ठोड़ी पर लोनो लीला यह आकार ॥ चुवत चुवत अधर रस मानो
पर गयो चिन्ह मझार ॥५॥ कंठसरी विच पदिक विराजत यों राजत उरहार ॥
दहनावत देत धूतारे मानो नक्षत्र की माल ॥६॥ कुचवर कुंभ सुंद रोमावलि
नाभीसरसि अनुहार ॥ मानो पानी पीवत सै सब तहां जोवनगज मतवार
॥७॥ खमकि बने कंचन बिजायठे शोभा भुजन अपार ॥ फोंदा सुरंग फूल
फूले मानो मदन विटप की डार ॥८॥ छीन लंकनीवीकटि के हरि यों राजत
व्योहार ॥ मोरबांध मानो बेठ्योदुले मन्मथ आसनमार ॥९॥ युगल जंघजे
हरि जरायकी पग नूपुर झनकार ॥ चलत हंस गति राजकिशोरी अतिनितंबके
भार ॥१०॥ छटक रद्यो लहेंगा गुलगजको मिलतन सुखकी सार ॥ सूरदास
स्वामिनी के ऊपर भ्रमर करत गुंजार ॥११॥

१३ (११) राग काफी (११) मोहन के खेलत रंग रद्यो हो श्री राधा गिरिधर
खेलत फाग ॥ ध्रु० ॥ खेलत चलत करत अतितरकें छिरकत पिय पें धाय ॥
खेलि चली जोवन मदमाती अधर सुधारस प्याय ॥१॥ बागे दुहुं दिस सरस
विराजत राजत कंचन माल ॥ इते रंग रंगीली राधा उते नदजू के लाल
॥२॥ इतलिये कनक लकुटिया नागरि उत हरि ओढन साल ॥ झुंडन जुर
चहुंदिसते आई गावत गीत रसाल ॥३॥ मारलगी तब उलटि चलीहैं वेनीहले
चहुं अंग ॥ मानो इंदु के वदन सुधा पर उडि उडि परत भुजंग ॥४॥ खेलदगाको
जिनकरो लालन के लागेगी चोट ॥ मोहन मूरति सांवरी राखोंगी अचरा
की ओट ॥५॥ एकजु आई आन गामते सुंदर चतुर सुजान ॥ यह ढोटा

माई कोन गोपको मारत मोहन बान ॥६॥ झांझ भेरि दुंदुभी पखावज ओर
आवज डफताल ॥ मदनभेरि ओररराय गिडगिडी बिच बिच बेनु रसाल
॥७॥ यमुना कुल मूल बंसीबट गावत गोप धमार ॥ लेले नाम गाम बरसानों
देत परस्पर गार ॥८॥ खेलें फाग प्रेमसों मोहन फगुवा दियो मगाय ॥
हरिनारायण प्रभु सोभा बाढी स्यामदास बल जाय ॥९॥

१४ ~~झांझ~~ राग काफी ~~झांझ~~ खेलत मोहन रंग रख्यो हो ॥ लाल माई सुंदर
सब सुखरास ॥ ध्रु० ॥ स्याम संग खेलन चली स्यामाजू सखियन जोर ॥
अबीर गुलाल कुंकुमा केसर बहु चंदन घटघोर ॥१॥ फूलन की गेंदुक नवलासी
कनक लकुटिया हाथ ॥ धायगही ब्रज खोरि राधिका कोटिक युवतिन साथ
॥२॥ उतते हरि आये जब हो हो बोलत ग्वालन संग ॥ कान परी सुनियें
नहीं बहु बाजत भेरि मृदंग ॥३॥ पहलें सुधि पाई नहीं अब घिरेहें सांकरी
खोर ॥ अब हलधर उलटो कहा तुम धावो ग्वालन जोर ॥४॥ भरत धरत
भाजत राजत गेंदुक नवला सिनमार ॥ बसन रसन छूटत न संभारत दूटत
मुक्तन हार ॥५॥ उडत गुलाल अबीर कुंकुमा जुरि आई सब वाम ॥ गयो
हे गुलाल नयन कर मींडत गहि पाये सखि स्याम ॥६॥ मोहन पिय इकले
करि पाये चहुंदिसते आई घेरि ॥ बोलोजू अब आनि छुडावे बलिभैया देहुं
टेर ॥७॥ आज हमारे बस परेहो भले होतो जाउ छुडाय ॥ केबल छूटो
आपने के जसुमति माय बुलाय ॥८॥ एक श्रवन में कहि कछु भाजत एक
भरत अंक वार ॥ एक निहारत रूप माधुरी रही अपन पोहार ॥९॥ एक
बनाय देत बीरी कर पल्लव छुवत कपोल ॥ वल्लभ युवती बड भागिनि
हरि वस कीने बिन मोल ॥१०॥ एक उठावत बदन चिबुक गहि हम तन
स्याम निहार ॥ एक नयन कीसेन मिलावत वेनन देत बगार ॥११॥ तब
तुम बसन हरे हमारे कीने अनेक उपाय ॥ सब तुम नगन करी हतीं हम
छोडेंगी तुमहि नंगाय ॥१२॥ आंखि दिखावत हो कहा तुम करहो कहा
रिस्याय ॥ हम करिहें अपनों मन भायो छांडेंगी तुमहि नचाय ॥१३॥ एक
गहि कर फेंट एक पीतांबर लियो हे छिनाय ॥ राधा हसत ओटभी ठाडी
सेनन देत बताय ॥१४॥ उडत गुलाल अरुण भयो अंबर छबि छाई मानो

सांझ ॥ राधा प्रगट करें नहीं मुखचंद नीलांबर मांझ ॥१५॥ हरि अपने छलबल सों घूंघट पटकीनो दूर ॥ हसत प्रकास होत चहूंदिसते सुधा किरन भरपूर ॥१६॥ हसि हसि कहत लाल सबहिनसों आभूषण मेरे लेहु ॥ नासा को मुक्ता हों देहूं पीतांबर मेरो देहु ॥१७॥ कहो कहा फगुवा देहो तुम बोलो सांचे बोल ॥ केहमसों हा हा करो के देहु श्रीदामा ओल ॥१८॥ मुख की कहत सबे झूठी सी मन में अधिक सनेह ॥ कूट करेंगे बलभैया तुम हमहि जान किन देह ॥१९॥ खेलि फाग अनुराग बढ़यो तब मची हे अरगजा कीच ॥ ब्रजनारी कुमुदिनी फूली हरि शशि राजत बीच ॥२०॥ देखत शोभा सुख संपति की मनमें यह विचार ॥ ब्रजनारी क्यों न भई यों कहत सकल सुर नार ॥२१॥ काम कोटि ओर भाम कोटि कोटिरमारहि लाज ॥ रोम रोम प्रति कोटि कोटि शशि सुधा किरण बहु भ्राज ॥२२॥ अष्ट सिद्धि नव निधि ब्रजवीथन डोलत घर घर द्वार ॥ सदा वसंत रहत वृंदावन लता लता द्रुमडार ॥२३॥ जुगल किशोर चरण रज याचूं सरस धमारहिं गाय ॥ मदन मोहन की या छबि ऊपर सूरदास बल जाय ॥२४॥

१५ (॥ राग काफी ॥) खेलत जाके रंग रङ्गो हो ब्रजवासिन संग फाग ॥ ध्रु० ॥ वीना ताल मृदंग झांझ डफ बाजत वंश रसाल ॥ गावत गिरिधर रुचि उपजावत विवश भई ब्रजबाल ॥१॥ लाल गुलाल लिये ओलिन में बहुविध केसर घोरि ॥ मोहन हाथ कनक पिचकाई क्रीडत ब्रज की खोरि ॥२॥ मधु मंगल श्रीदामा तुमहुं होहु त्रियन की ओर ॥ जाके खेलत सुख उपजत हे यों कछो नंदकिशोर ॥३॥ गारी देंहि जसोदा कों सब प्रेम प्रीति रससान ॥ यह छवि फवीजु कहां लगी वरनें बुधि थकित अनुमान ॥४॥ गोरे नंद जसोदा गोरी कान्हर कोन गुन स्याम ॥ प्रथमही न्हाय जसोदा बैठी देखे हें वृषभान ॥५॥ हलधर कछो भुजा ऊंची कर कारे जो वृषभान ॥ कीरति कहो कोन सों जाई राधा रूप निधान ॥६॥ बहोरचो सिमिटि सकल ब्रज सुंदरि वेनी गुही बनाय ॥ मांग संवार त्रिया से कीने पचरंग पाग छिनाय ॥७॥ श्रीराधा चोली पहराई ललिता लहेंगा सारी ॥ आभूषण सब अंग बनाये निरिख थकी ब्रजनारी ॥८॥ राधे बोलि कछो सखियन सों रही रूप

रसपाग ॥ जो पुरुषारथ देहि विधाता ऐसी कामिनि लाग ॥९॥ कान पकर
गुलचे चंद्रावलि सखियन पहोंची जाय ॥ राधा मगन भई विहरत ही सकुचि
रही सिरनाय ॥१०॥ उपरना पचरंगी पगिया सिर बांध चली एक नारि ॥
निकट गई मोहन के घोखें हलधर गहे हें संभारि ॥११॥ कोऊ नीलांबर
ले भागी कोऊ बेन बखासतनाम ॥ काहू दई कपट की बीरी लीजेजू बलिराम
॥१२॥ सारी सुरंग चूनरी हमकों आभूषण बहु मोल ॥ इतनो फगुवा दे
छूटोगे देहु श्रीदामा ओल ॥१३॥ तब हलधर युवती सनमानी मेवा दियो
मंगाय ॥ कंचन थार भरही रामाणिक सूरदास बलिजाय ॥१४॥



१६ (१६) राग काफी (१६) या ब्रज में होरी रंग बढ्यो ॥ हो हो सबहिन
हिये हुलास ॥ ध्रु० ॥ खेलत मोहन लाडिलो हो नंदराय की पोरि ॥ हलधर
सुबल सुबाहु श्रीदामा सब लरिकन संग जोरी ॥१॥ विविध भांत के भेष
बनाये नाचत अतिहि सुधंग ॥ गावत गारी तारी दे दे किलकत अपने रंग
॥२॥ ढोलकी ढाल पखावज वीना झांझ संख डफ ताल ॥ भेरि दुंदुभी
अगणित वाजे विच विच वेणु रसाल ॥३॥ कोलाहल सुनि सब ब्रजसुदरि
सकल सिंगार संवारि ॥ झुंडन मिल गावति आई अतिही सरस सुरगारि
॥४॥ दुहुंदिशतें छूटी पिचकारी घुमड्यो अबीर गुलाल ॥ रपटत झपटत
तनले धावत टूटत उर वनमाल ॥५॥ तिहिं छिन चपल चतुर चंद्रावलि हलधर
पकरे दोर ॥ आंखि आंजि मुख मांडि कुंकुमा छोडे रंगनवोर ॥६॥ पोंछत
नयनन खोरनीलपट तन नवहीं वसन संभार ॥ हो हो हो करि ग्वाल हसतहें
वाढ्यो रंग अपार ॥७॥ तब नंदन नंदन फगुवादेनमिस प्यारी सन्मुख आय ॥
मृगमद केसर ओर अरगजा भीजे उर लपटाय ॥८॥ तब सकुची गोपी सब
कोपी कनक लकुट ले हाथ ॥ पकरन धाई छबीले लाल कों खसत झीने
पट माथ ॥९॥ भागे सकल सखा संग के तब मोहन लीने घेर ॥ अछन
उठाय गई ले पियकों फिर चितवत मुख फेर ॥१०॥ प्यारी धाय गहे
भुज बंधन अति आतुर अकुलाय ॥ करत मनोरथ सब ही जियके रस बस
रहे अरुझाय ॥११॥ एक सखी सोंधो लपटावत नावत केसर नीर पीतांबरसों
गूथि बनावत गहि राधाजू को चीर ॥१२॥ एक कहत बलबल जोरीकी



त्रिभुवन नहीं समतूल ॥ वदन निहारें ज्यों चंद चकोरी अंग समातन फूल ॥१३॥ एक कपोल परसि लपटावत केसर कुंकुम घोर ॥ एक भालरचि बेंदी बनावत हंसत सबे मुखमोर ॥१४॥ एक कहे भली बनीहें सहचरी राधाजू की जोरि ॥ यह सुनिमुसकि हँसत पियप्यारी चितवत नयनन मोरि ॥१५॥ या छबि ऊपर तन मन बारत राई लोन उतारि ॥ चिरजीयो युगयुग यह जोरी कहति यों अचरा पसारि ॥१६॥ हरि संग करत विहार विविध रस केसैं बरन्यों जाय ॥ सुरनर मुनि विधकित भयेहें रति पति रहे सिरनाय ॥१७॥ फगुवा मन मान्यों दियो सब पूजी मन की आस ॥ श्रीविठ्ठल पदरज प्रतापतें गावत यह यशदास ॥१८॥

१७ (ह्रै राग काफी ह्रै) तुम चलो सबे मिलि जांय खेलन होरियां ॥ अपनी अपनी सुरंग चूनरी मोतिन मांग भरोरियां ॥१॥ थरहरात अधरन पर मोती अंगिया केसर बोरियां ॥ चोवाचंदन अगर कुंकुमा भरि भरि देत कमोरियां ॥२॥ अंग सों अंग गुलाल बिराजत भली बनी यह जोरियां ॥ केहरि लंक नितंब विराजत गज गति चाल चलोरियां ॥३॥ पिचकाई मोहन पर डारत बिहसी घूंघट खोलियां ॥ वाजत ताल मृदंग ओर डफ पडि पडि बोलत बोलियां ॥४॥ नयन आज मुख मांडिं स्याम को सबमिलि करत कलोरियां ॥ सुरदास प्रभु सब सुख क्रीडत बिहरत ब्रज की खोरियां ॥५॥

१८ (ह्रै राग काफी ह्रै) निकस कुंवर खेलन चले ॥ रंग हो हो होरी ॥ मोहन नंद के लाल ॥ रंगन रंग हो होरी ॥ संग लीने रंग भीने ग्वाल बाल ॥ वेगुन रूप रसाल ॥१॥ कंचन माट भराय ॥ सोंधे भरी हे कमोरी ॥ रत्न जटित पिचकाई करन ॥ अवीर भरें भर झोरी ॥२॥ सुरमंडल डफ झांझ ताल ॥ बाजत मधुर मृदंग ॥ तिनमें परम सुहावनी ॥ महुबरि बांसुरी चंग ॥३॥ खेलत खेलत जब रंगीलो लाल ॥ गये वृषभान की पोरि ॥ जेहुती नवल किंसोरी भोरी ॥ ते आई आगें दोरि ॥४॥ सुनि निकसी नव लाडिली ॥ श्रीराधा राज किशोरी ॥ ओलिन पोहोप पराग भरे ॥ रूप अनुपम गोरी ॥५॥ संग अली रंगली सोहें ॥ करन कनक पिचकारी ॥ मोहन मनकी मोहनी ॥ देति रंगीली गारी ॥६॥ तिनकों छिरकत छबीलो लाल ॥ राजत

रूप गहेली ॥ मानो चंद सींचत सुधा ॥ अपने प्रेमकी वेली ॥७॥ नवल
वधुन के रंगीले बदन ॥ अबीर घुमडमें डालें ॥ छुटह निसंक अरुन घनमें ॥
हिम करनिकर कलोलें ॥८॥ इतने मांझ छिपि छबीली कुबरि ॥ पकरेहें
मोहन आन ॥ छबिसों परस्पर झक झोरत ॥ कापे परति बखान ॥९॥
गुप्त प्रीति प्रगटित भई ॥ लाज तनकसी तोरी ॥ ज्यों मदमाते चोर मोर ॥
भलकत निकसी चोरी ॥१०॥ सखियन सुख देखन के काज ॥ गांठ दुहुन
की जोरी ॥ निरख वलैयां ले सबें ॥ छबिन बढी कछू थोरी ॥११॥ कोऊ
छेल छकि छबिले लाले ॥ छिरकत रंग अमोल ॥ कोऊ कमल करले पराग ॥
परसत रुचिर कपोल ॥१२॥ बने हे पियाके कमल लोचन ॥ जब गहि
आंजे अंजन ॥ जनु अकुलात कमल मंडल में ॥ फंदन फंदे युग खंजन
॥१३॥ देखि बिबस वृषभान घरनि ॥ हँसत हँसत तहां आई ॥ वरजीआन
नवल वधू ॥ भुज भरि लिये कन्हआई ॥१४॥ पोछत मुख अपने अंचल ॥
पुनि पुनि लेत बलाय ॥ मुसकि मुसकि छोरत सु गांठ ॥ छबि बरनी नहीं
जाय ॥१५॥ छोडन न देखी नवल वधू ॥ मांगें कुंवर पें फाग ॥ जोपें फगुवा
दियो न जाय ॥ प्यारी राधा के पायलाग ॥१६॥ ओर कहां लगि वरनिये ॥
बढ्यो सुख सिंधु अपार ॥ प्रेम कलोल हलोलन में ॥ किनहुं रहिन संभार
॥१७॥ रंग रंगीली ब्रजवधू ॥ रंगाले गिरिधर पीय ॥ यह रंग भीने नित
बसो ॥ नंददास के हीय ॥१८॥

१९  राग काफी  मिल खेलें फाग वनमें श्रीवल्लभ बाला ॥ संग
खरे रसरंग भरे नवरंग तृभंगी लाल ॥१॥ बाजत बांसुरी चंग उपंग पखावज
आवज ताला ॥ गावत गारी दे दे ब्रजनारी मनोहर गीत रसाला ॥२॥ कंचन
बेलि करे जानों केलि परे बिच स्याम तमाला ॥ धाड़ धरें हसि अंक भरें
छूटे केस टूटी उर माला ॥३॥ सींचत अंगन रंग भरे बाढ्यो प्रेम प्रवाह
रसाला ॥ मेन सेन खुर रेणु उडी नभ छायो अबीर गुलाला ॥४॥ देखि
थकी भवरी सबरी मृगी मोरी चकोरी नजाला ॥ राधा कृष्ण बिलास सरोज
गदाधरमन्न मराला ॥५॥

२०  राग काफी  अरी तेरे नैन सलोने मनमोहन रिझवार ॥ तूजो

नई दुलही नव जोबन अबही आई गोने ॥१॥ खेलत नाहि फाग गिरिधरसों
यह जुदई सिख कोने ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभूसों खेलत नाहि
अघोने ॥२॥

२१ ॥ राग काफी ॥ वालिमतोहों खेलोंगी होरी ॥ मेरी आंखिन भरोन
गुलाल ॥४०॥ कहा कह्यो हो तब मोसों खेलत यमुना तीर ॥ तन मन
सुधि भूली अब काहे धाय गहत मेरो चीर ॥१॥ सखी बुलाय कह्यो प्यारे
प्यारीसों कहि समुझाय ॥ अब ज्यों ज्यों कहिहो तुम त्यों त्यों खेलेंगे हम
आय ॥२॥ यह सुन उत खेलन कों प्यारी कीयो अपनों जोर ॥ इत हलधर
नंद नंदन दोऊ ग्वालन में कीयो सोर ॥३॥ रत्नजटित पिचकारि भरिलिनो
केसर नीर ॥ ताक ताक युवती गण ऊपर छिरक कीयो हियोसीर ॥४॥
तब प्यारी सखियन ले धाई वंसन लीने हाथ ॥ सुरंग गुलाल उडाय दुहुं
दिस धाय गहै ब्रजनाथ ॥५॥ चोवा भेद जवाद साख गोरा मृगमद घन
सार ॥ सरस फुलेल अरगजा ले ले पहरावत उरहार ॥६॥ झांझ भेरि किन्नरि
रबाब बीना महवर सहनाइ ॥ वीच वीच मरलीहि बजावत ओरवाजे बजवाई

॥७॥

दमाती डोले बिना बुलाई बोले ॥ चोवा
डोले ॥१॥ तूजो जोवन ठीटरी ग्वालिन
की गांठ धीरज प्रभु भरुवा होय सो

हो होरी खेलें लाल संग ग्वाल इकदिस
र वीना श्रीमंडल अमृत कुंडली आवज
सुमन कलस नवतमाल उडवत अवीर
छतियां लाय चुंवन दे करत ख्याल ॥
ग कर रसाल राग रंग सहित गावत
देहु गोकुल पाल मेवा पीतांबर गुंजहार

फगुवा गुंजहार ॥८॥

२२ ॥ राग काफी ॥ गुजरी म
चंदन अगर कुमकुमा केसर भर भरि
बसजु कीये बिन मोले ॥ गठजोरे
खोले ॥२॥

२३ ॥ राग काफी ॥ हो हो हो
लीने राधा नवसत साजें बाल ॥ सु
अधवट उपंग बाजे मृदंग ताल ॥१॥
गुलाल ॥ इक झोरत दोरत गहि
नयननसों नयन मिलवत बोलत रं
ग्वालिनी गारी सुढाल ॥२॥ फगुवा

चलत एंडी गयंद चाल बहोरघों जल जमुना तीर छिरकत छीटें रसाल ॥
आरती वारत ब्रज वनिता लीनें कंचन थाल जनहरि या प्रभु को मुख निरखत
मिटे विरह जाल ॥३॥

२४ (॥३॥ राग काफ़ी (॥३॥ आयो फागुन मास कहें सब होरी होरा ॥ एक
ओर वृषभान नंदनी एक ओर हरि हलधर जोरा ॥१॥ ब्रजनारी गारी देवेकों
भजि भजि आवें तजि तजि कोरा ॥ जानन देहो पकरोरी स्यामकों सवे
धरत जोवन को तोरा ॥२॥ रहि न सकत अपने घर कोऊ मानो काम
को फिरयो ढंडोरा ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभुसों होतहे झकझोरी
झकझोरा ॥३॥

२५ (॥३॥ राग काफ़ी (॥३॥ रंग हो हो होरियां ॥ इत बने नवल किशोर
ललन पिय उत बनी नवल किशोरियां ॥१॥ ये नव नील जलद तन सुंदर
वे कंचन तनगोरियां ॥ उनके अरुण वसन तन राजत इनके पीत पटोरियां
॥२॥ फेंटन सुरंग गुलाल विविध रंग अरगजा भरीहें कमोरियां छलबल
करि दुरि मुख लपटावत चंदन बंदन रोरियां ॥३॥ राखीहें करन दुराय सबन
मिल केसर कनक कमोरियां ॥ सन्मुख दृष्टि वचाय धाय जाय स्याम सीस
तें ढोरियां ॥४॥ वाजत ताल मृदंग मुरज डफ मधुर मुरली ध्वनि थोरियां ॥
नाचत गावत करत कुलाहल परम चतुर ओर भोरियां ॥५॥ एकन कर
गेंदुक नवलासी ओर फूलन भरि झोरियां ॥ भाजत राजत भरत परस्पर
परिरंभन झकझोरीयां ॥६॥ येहीरस निवहो निसवासर बंधीहें प्रेम की
डोरियां ॥ माधुरी के हित सुख के कारन प्रगटीहे भूतल जोरियां ॥७॥

२६ (॥३॥ राग काफ़ी (॥३॥ हो हो होरी बोलें ॥ध्रु० ॥ फगुवा मिस ब्रज
सुंदरि जसुमति गृह आई ॥ गावत गारि सुहावनी सबके मन भाई ॥१॥
तब ब्रजरानी बोल के रावर में लीनी ॥ मुसकि मुसकि के कहत हैं बतियां
रंग भीनी ॥२॥ अहो जसोमति भोरही हम नोतें आई ॥ आज कछू वृषभानजू
तुम वोलि पठाई ॥३॥ ओर तुमसों कछु कब्यो हे सदेसजु न्यारो ॥ कन्या
हमारी राधिका हरि पूत तिहारो ॥४॥ मन वच क्रम करि कहत हैं हम सोंह

तिहारी ॥ तुम लागत हमकों सदा प्रानन ते प्यारी ॥५॥ भर होरी के दिन सबे बरसानें रहिये ॥ समझत हो तुमही सबे तुमसों कहा कहिये ॥६॥ जो तुमसों कछु कहतहें बिनती कर मानो ॥ बरसानों नंदगामकों एकही कर जानो ॥७॥ ब्रजवासिन विनती करी सोहू सुन लीजे तुम सुखदाई सबनकी हमहूं सुख दीजे ॥८॥ तब जसुमति मुसिक्याकें बोली मृदुबानी जो कछु हमसों कहत हो हम सो सब जानी ॥९॥ एक सदेसो जायकें कीरतिसों कहियो ॥ नंदराय ढिंग आयकें केऊदिन रहियो ॥१०॥ हसी सकल ब्रजवासिनी नाचत दे तारी ॥ समझ समझ मुसकें कछु ठाढे गिरिधारी ॥११॥ केसर कलश भरायकें सब पर बरखायें ॥ मृगमद केसर घोरकें मुख पर लपटायें ॥१२॥ मन भायो फगुवा लियो तन सुख की सारी ॥ अंकमाल सब के हिये दीनी दुति न्यारी ॥१३॥ खेल बढ्यो अति चोगुनों आनंद भयो भारी ॥ फागुन कियो सुहावनों हरिसों ब्रजनारी ॥१४॥ अरस परस रसजो बढ्यो कछु कहत न आवे ॥ दिन दिन या सुख माधुरी निरखे ओर गावे ॥१५॥

२७ (११) राग काफी (११) बोलें सब हो हो होरी ॥ खेलें श्रीराधा गोरी ॥१॥ सहेली संग सुहाई ॥ बनी सब एकई दाई ॥२॥ भरेकेसर कमोरी ॥ लालनके सीसतें ढोरी ॥३॥ सोंधो बहुत मंगायो ॥ प्यारीजू के अंग लगायो ॥४॥ बाजे डफ ताल मृदंगा ॥ वीणा मुख चंग उपंगा ॥५॥ भरे फेंटन गुलाला ॥ आये उत नंदके लाला ॥६॥ सबे मिलि घात सों आई ॥ लालनकों घेरकें लाई ॥७॥ भरी रस दृष्टि निहारें ॥ जुरी अनुरागकी धारें ॥८॥ गारीरस भेदकी गावें ॥ तारी दे लाल नचावें ॥९॥ सहेली को भेष बनायो ॥ माधुरी के मन को भायो ॥१०॥

२८ (११) राग काफी (११) मेरे अंग संग लाग्यो सांवरो मोहे रंगमें डारत बोररी ॥ मोरमुकुट वैजयंतीमाला वाके माथे चंदनखोररी ॥१॥ ब्रजकीवधू सब खेलन आई सबनमें पड़ी होडा होडी ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभुसों बहुतभई झकझोरा झोरी ॥२॥

२९ ॥ राग काफी ॥ ओरन सों खेले धमार लालमोसों मुखहू न बोले ॥ नंदमहरको लाडिलो मोसों अंडयोही डोले ॥१॥ राधाजू पनियां निकसी वाको घूंघट खोले ॥ सूरदास प्रभु सांवरो हियरा विच डोले ॥२॥

३० ॥ राग काफी ॥ न नदीया होरी खेलनदे जोई मांगेगी सोई देऊंगी फागुन में जसले ॥१॥ आनगिरारें फाग मच्योहै रह्यो न परे मोपे ॥ आनंदधन सों उघर मिलोंगी यह मेरो प्रनहै ॥२॥

३१ ॥ राग काफी ॥ बाई दिन वारीं आईहैं वृजनारी ॥ रंग मचावत घोर झीलसों गांय गंवारी गारी ॥१॥ बूढ़ी महरि लथेर कीचसों एक कहत बलहारी ॥ नंदबवातन सेनमारकें मचक-मचक देहें गारी ॥२॥ आओ ग्वालबाल सब बोलकें घेरो पकरें दारी ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभुसों जेहें कहां बिचारी ॥३॥

३२ ॥ राग काफी ॥ श्रीवल्लभ मेरे मनबसे हो ललना ओर न कहू सुहाय ॥१॥ नवजोबन ब्रजभामिनी नवसत साज सिंगार ॥ प्रीतम सों खेलन चलीहो प्रेम मगन न संभार ॥१॥ बहुविध साज संवारकें अंजनली ने संग ॥ वसन विचित्र बनायकें पहरावत पिय अंग ॥२॥ चंदन वंदन अरगजा मुदित खिलावत फाग ॥ अबीर गुलाल उडावत चहुंदिश छाय रह्यो अनुराग ॥३॥ केसर तिलक बनायकें ओर कुसुमनके हार ॥ आरती करें मनमोदसों लेत तंबोल उगार ॥४॥ वदन कमल ढिंग शोभहीं केशसचिक्कन स्याम ॥ तिनवत्त चंचल वरावकी मोहन कोटिक काम ॥५॥ वेष मरज हफ बांसरी

॥६॥ नखोंसख

नयननरहीसमाय

श्री वल्लभरायकी

कोजलबालभुंग ॥ हसरसधमारहं गावहो जयजल ललत हर

ली छविपिपकी खापे ब्रसोजिखवा निरखतही बनआवही

॥७॥ यह लीला अवलोकिकें पल कलगे नहि चैन ॥ शोभ

पीजिये भरभर नयन ॥८॥

लसों ॥ रंगरंगीले

र अरगजा केसर

करतालसों ॥२॥

३३ ॥ राग काफी ॥ चलोरी होरी खेलें नंदके ला

छेल छबीले मोहन मदनगोपाल सों ॥१॥ मृगमद अबी



फेंट जुभरीहे गुलालसों ॥ रंज मुरज आबज बाजें रंगरह्यो

छिरकत भरत परस्पर सब मिल लाल हंसत ब्रजबालसों ॥ चंद्राबलि बलिराम
मुख मांड्यो लटकत गजगति चालसों ॥३॥ राधाजू अचानक आयगहे हरि
बेंदी लागी भालसों ॥ विप्र गदाधर प्रभु मुख निरखत सुख पायो दीनदयालसों
॥४॥

३४ (॥३॥ राग काफी (॥३॥) ऐसें होरी खेले सांवरो संग लियें ब्रजबाल ॥
पहेलेहीं आपुन बने ओर तापाछें सब ग्वाल ॥१॥ यमुनाकूल सुभाय आपने
मानोहो मंडली मराल ॥ सुनकें धाई सब ब्रज नागरि चलत हैं गजगति
चाल ॥२॥ नखसिखते बनिकें ब्रज बनिता गावत आईं गारि ॥ एकत स्याम
सखा भये ठाडे एक लीने राधे संग नारि ॥३॥ वीना वेणु उपंग बांसुरी
बाजत ताल मृदंग ॥ पटह निसान बाजत चहुंदिशतें होत परस्पर रंग ॥४॥
तारी देदे ग्वाल हंसतहें अंचल अंचल जोरि ॥ अबीर गुलाल अरुन भयो
अंबर भरत अंक झकझोरि ॥५॥ चोलीतरकि हसी अरु चितवनि उपजत
अंग सुभाय ॥ एकले सोंधो भरत स्याम कों एकन मुरली छिनाय ॥६॥
केसरके रंग कुंकुम बंदन भुजगहि भरहि अपार ॥ गावत फागके गीत सबे
मिल घुमड रह्यो नंदद्वार ॥७॥ चतुरसखी नयनन की सेनन मिल मन मतो
उपाय ॥ कर गहि वंस गोपी ले धाई लेत निसान पलाय ॥८॥ स्यामा
सोंह दई ललिताकों हलधर पकरे अेन आविन मांडि वेनी गुही माथें अंजन
लावे नयन ॥९॥ नारिन में वृषभान नंदिनी ज्यों उडुगनमें चंद ॥ ताको
रूप नयन निरखतही मगन भये नंदनंद ॥१०॥ नारि गारि ऐसी गावत मानो
कोकिल बोले अंब ॥ भीजे वसनअंग ऐसे लागत मानो कनक के खंब ॥११॥
फगुवा दीनो नंदजसोदा मेवा बहुत पकवान ॥ गावत सबे मिल ब्रजवासी
चलेहें यमुना जल न्हान ॥१२॥ पोहोपन की वरषा सब सुरकरें इकटक
ध्यान लगाय ॥ हरिको फाग परम रसलीला जनहरिया मुख गाय ॥१३॥

३५ (॥३॥ राग काफी (॥३॥) खेलत गोकुल ग्वालिनोहो सकल सहज सिंगार
॥१॥ उतते आये स्यामघन सुंदर इतते आईं ब्रजनार ॥ भीर भई गोकुल
गलियनमें रंग मच्यो सिंध द्वार ॥१॥ बाजे बहुविध वाजही रंजमुर डफ
ताल ॥ दुंदुभी आवज झालरी अरुमुख चंग करताल ॥२॥ कुंकुम केसर

जोरकें घट भरभर लीने संग ॥ पिचकाई भर छिहकहीं शोभित सांवरे अंग ॥३॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा सोंधे अगणित एन ॥ उडत गुलाल छायो जुगनमें घोसते लागत रेन ॥४॥ सब सखियन मिल मतो मत्योहे मोहन लीने घेर ॥ आयअचानक प्यारीराधिका रही वदन तन हेर ॥५॥ प्रीति बढी राधा मोहनसों निरख नयन सिराय ॥ युगल कुंवरकी छबि ऊपर मोहन सुबन बलजाय ॥६॥

३६'  राग काफी  वृंदावन चंद लाल रंग भरेहो ब्रजजन नयन चकोर ॥ नंदलालकी नवजोबनता लियो सबको चितचोर ॥१॥ वांकी पाग वदन अतिसुंदर स्याम मनोहरगात ॥ ऋतु वसंतके वसन पहेर पिय आंखिन मांझ समात ॥२॥ कमल नयन करलई पिचकाई फेंटन पोछोप पराग ॥ अतिशोभित संगत्रिय मंडली खेलत डोलत फाग ॥३॥ किंकर बने लियें कंचनघट भर बहुरंग सुगंध ॥ इंद्रमनो देखन के लालच भर कावर लिये कंध ॥४॥ जेनवड-गरबनी उझकें देखे पिय गोविंद ॥ तिनहि छिरक छबि देख वदन की कहांते ऊग्यो अबचंद ॥५॥ हरि मन मोहें रंग रंग सोहें खेल मच्यो ब्रज मांहि ॥ बड भागिनि गोकुल की ललना जेहरि देखन जांहि ॥६॥ वाजेबहु वाजत हैं अगणित सुख समूह की गाज ॥ सुन अकुलाय चलीं ब्रजसुंदरी छूटि गई सबलाज ॥७॥ बन निकसी वृषभान नंदिनी संग लिये प्रेम समाज ॥ उतवने सकल कुंवर गोकुल के मध्य सांवरो सिरताज ॥८॥ कुसुम गेंदकरलीने नवलासी मार करत ब्रजबाल ॥ ग्वालन की किलकन भई भाजत हसत हैं मदन गोपाल ॥९॥ घातवनी गुलाल धूंंधरमें अछन अछन आई भाम ॥ निकट जाय दौरी दामिनि ज्यों घेर लिये घनस्याम ॥१०॥ कोऊ एक चिबुक देख्यो चाहे इतचितवो नंदलाल ॥ कोऊ एक लालन गहिपायेहें कर लपटटी वनमाल ॥११॥ कोऊ एक गिरिधर की सुंदरता छकी निहार निहार ॥ कोऊ एक पकरन मिसभुजभरकें वारत प्रान अधार ॥१२॥ भाग भरे अनुराग भरे तन चितवत आनंद कंद ॥ वनिता वदन सरोज भ्रमर हरि पीवत रूप मकरंद ॥१३॥ बहु भांतन छिरक्यो प्यारी राधा अपने चितको चेन ॥ नटवर वपुसोंभीजिलगेपट लपटे पियाके नयन ॥१४॥ अति

रस भीने मन हरिलीने सुंदर स्याम सुजान ॥ राम राय प्रभु गिरिधर छवि पर बलकीनो भगवान ॥१५॥

३७ (॥१॥ राग काफी (॥३॥) बन्यों खेलत फाग सुंदर नंदको लाला ॥ बने संग गोपकुमार उदार सनेरंग गयन बिशाला ॥१॥ वाजत रंग भरे डफ झांझ मिल्यो मृदु वेणु रसाला ॥ गावत गीत भरी रसरीति खरी नवल ब्रजबाला ॥२॥ लाल करी हे रंगीले सगरी सुडारी अबीर गुलाला ॥ वाढ्यो हे रंग अनंग लज्यो हे कृष्णदास रस ख्याला ॥३॥

३८ (॥१॥ राग काफी (॥३॥) होरी खेलें स्याम संग नवल वाम वृषभान वाम धननननन ॥ संग लिये ग्वाल बाल वाजत डफताल उडत गुलाल फननननन ॥१॥ उतबनी युवलाज दिये बेदी आड भाल गावे मुख गारी एक मननननन ॥ जुरी हैं सकल नारी पकरे मुरारी लीने पटउतारी आंजे दृगननननन ॥२॥ भरे रंग माट अति विविध भांत घट मारत सांट सननननन ॥ भीजे हे रंग चीर रहेसरीर त्रियदेहो दरस लागे लाज नयननननन ॥३॥ फगुवा मंगाय दियो मन मनाय लीयो कुंवर कुंवरि एक मननननन ॥ सूरदास प्रभु निरख दंपति सुख वारवारबल चरननननन ॥४॥

३९ (॥१॥ राग काफी (॥३॥) निरत दोऊ गति लिये हो ललना वृषभान नंदिनी नंदलाल ॥ध्रु०॥ नबसत साज सिंगार किये अंग मोपें वरनीन जाय ॥ राधे आधे कोरे चितवत हरि चित लियो चुराय ॥१॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल घूंघर वारे बार ॥ मृगमद तिलक बन्यों भृकुटी विच ब्रज युवतिन फंदवार ॥२॥ अधर कपोल नासिका मोती दृग चंचल मनमीन ॥ देख मुखार विंदकी शोभा राधा जू भये आधीन ॥३॥ यूथनियूथ चली ब्रजवनिता ले भरि मोद अबीर ॥ जाय मिली वृषभान नंदिनी नदी यमुना के तीर ॥४॥ गोप ग्वाल मिल चले घोखतें नाना स्वांग बनाय ॥ गावत हंसत करत कौतूहल मिले हैं स्यामपें जाय ॥५॥ उत हलधर ब्रजबासी लीये संग इत सब ब्रजकी नारि ॥ दोऊ मिलि रस रंग बढावत गावत फाग धमार ॥६॥ ताल मृदंग झांझ डफ बाजत विच मुरली की घोर ॥ पून्यों चंदवदन मोहनको राधा

जू नयन चकोर ॥७॥ लीनी हाथ कनक पिचकाई गोकुल के नरनार ॥
 खेल मच्यो वृषभान पोरिमें कोऊन मानतहार ॥८॥ उडत गुलाल अबीर
 कुंकुमा रङ्गो दसोंदिस छाया ॥ प्रेम मगन भई फिरत ग्वालिनी आनंद उरन
 समाय ॥९॥ नील कमल लीने गोपिनकर ग्वालन दीये मार ॥ हो हो हो
 करि होरी खेलत देत परस्पर गार ॥१०॥ कोऊ हलधरकों कोऊ स्याम
 कों करो कछू भेद उपाय ॥ सावधान न्है फिरत ग्वाल सब दृष्टि न इतउत
 जाय ॥११॥ सात पांच मिल गोप भेषधर हलधर पकरे जाय ॥ फेंट पकर
 वसकिये आपने छूटोगे आंखि अंजाय ॥१२॥ तब मोहन कीयों भेख सखी
 को ओरों सखी बनाय ॥ जाय गहे वृषभान नंदिनी दाऊ लिये छिडाय ॥१३॥
 जित तितते सबधाई ग्वालिनि मोहन घेरेजाय ॥ राधा कहे जान नहीं पावें
 मुरली लई हे छिनाय ॥१४॥ श्रीराधा जाय गहे मनमोहन अंचललियो
 छिडाय ॥ केनाचो केरहो हारतुम फगुवा देहो मंगाय ॥१५॥ मोहन सखा
 बुलाय आपनो मेवा बहुत मंगाय ॥ आपुन चाखि चखावत ग्वालन गोपिन
 अंगुरी दिखाय ॥१६॥ तब प्यारी उठिधाय सखिनले मेवालियो छिडाय ॥
 आपुन खाय खवावत गोपिन ग्वाल रहे डहकाय ॥१७॥ मोहन हसिवस
 करी ग्वालिनी लीने सबे मनाय ॥ राधा माधो केलि करो दोऊ रति पति
 अति सुख पाय ॥१८॥ सिवविरंचि सुरपति सुधि विसरी चकृत रङ्गो
 रथभान ॥ वरखत सुमन सुरेसत्रिया सब वारत तनमन प्रान ॥१९॥ युगल
 किशोर सदा मन मेरे रहो रस रूप समाय ॥ सूर स्यामस्यामा प्यारी छवि
 निरखत दृगन अधाय ॥२०॥

४० (॥१॥ राग काफी ॥१॥) आज हरि ब्रजयुवतिन पकरे ॥ पहली रिस होरी
 के मिस मनभायो सोजुकरे ॥१॥ मोर मुकुट पीतांबर मुरली ये सब साज
 हरे ॥ पहराई चूरी चूनरि बेंदीदे दृगकजरे ॥२॥ चरन घूंघरा कर कंकन
 बाजूबंद बांह धरे ॥ सीसफूलना सावेसरिहरि मोतिन मांग भरे ॥३॥ तृणावर्त
 ऊपरते डारयो तब नहींनंक डरे ॥ सो हरिपरे ब्रज युवतिन के बस हाहा
 खात खरे ॥४॥ करन काम कह नंद जसोदा कीये से न्हेनि दरे ॥ सूरदास
 प्रभु छलते न छूटे छूटे जब पांय परे ॥५॥

४१ ॥ राग काफी ॥ मेरो प्यारो रंग रंगीलो ॥ खेले यह खेल छबीलो ॥१॥ सब मिलि खेलन आई ॥ वल्लभ के संग सुहाई ॥२॥ वाजे बहुभांत बजावें ॥ जेसे लालन के भावें ॥३॥ केसर भरी कटोरी ॥ प्यारीने पिय सिरढोरी ॥४॥ उडावे गुलाल ले झोरी ॥ भई निस सूझे नहीं कोरी ॥५॥ कियो तवमन को भायो ॥ प्यारे कों कंठ लगायो ॥६॥ मानो निधि रंकन पाई ॥ गोवर्धन पीय रिझाई ॥७॥

४२ ॥ राग काफी ॥ मेरो प्यारो रंगन भीनों ॥ खेले यह खेल नवीनों ॥१॥ संग समाज सुहावे ॥ बहुविध वाजे बजावे ॥२॥ खेले गोकुल की गली ॥ त्रिया देखन कों चली ॥३॥ पीतरंग केसर लाई ॥ छिरकत नेह सुहाई ॥४॥ सोंधो अनुराग लगावें ॥ लालन के संग सुहावें ॥५॥ प्यारीकों कंठ लगाई ॥ फूलीजो माल सुहाई ॥६॥ परस्पर रीझि रिझाये ॥ जो जेसे मन भाये ॥७॥

४३ ॥ राग काफी ॥ रस होरी खेले सांवरो रंग भीने नंदलाल बाल ॥ संग गारी निपट उधारी गावत कोन टेव पकरी गोपाल ॥१॥ चोवा चंदन ओर अरगजा मुख मंडन धाई ले गुलाल ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु प्यारे संग सखा लियें ग्वाल ॥२॥

४४ ॥ राग काफी ॥ तुमें ब्रजराज दुहाई ॥ जिन गुलाल आंखिन में डारो ॥ पलक ओट में जुग सम वीते यह कहा नेंक निकाई ॥१॥ मुख मकरंद लुब्ध मधुकर दृग ओरन कछू सुहाई ॥ अनुरागे एते ही रससों चाख रूप चिकनाई ॥२॥ सुनि सोंधे भीने गिरिधर मनगति अधिकाई ॥ मुकुट लटक कुंडल चटकन पर कृष्णदास बलजाई ॥३॥

४५ ॥ राग काफी ॥ माई नये खिलर आज में देखे चंचल चपल चवाई ॥ हसि मुसिकाय नयन सेनदे मोकू पकर नचाई ॥१॥ कोऊ गुलचे कोऊ करमुख मांडे गोपी करें हँसाई ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु की मुरली लेहु छिनाई ॥२॥

४६ (११) राग काफी (११) माई नंद के नंदन मोहि ओचका दीनी हेगारी ॥
 ढीठ लंगर वरज्यो नहीं मानत कान्ह बडो वटपारी ॥१॥ हों दधि बेचन
 जात गोकुलमें ठाडो कृष्ण मुरार ॥ बइयां पकर झकझोरी ललना तोरचो
 मोतिन हार ॥२॥ अब केसें घर जाऊं सखीरी करियेकहा विचार ॥ सूर
 प्रभुसों हिलमिल रहिये दीजे सर्वसवार ॥३॥

४७ (११) राग काफी (११) लालन खेलत हैं हो होरी ॥ चोवा चंदन अगर
 कुंकुमा अवीर भरें भरि झोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ ओर मुरली
 धुनि थोरी ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभुसंग खेलत राधा गोरी ॥२॥

४८ (११) राग काफी (११) होरी खेलें नवल लाल चितवत लोचन विशाल ॥
 करत हैं रति रंग ख्याल लिये संग ब्रजबाल ॥ चोवा चंदन कपूर बूका
 वंदन चूर कुंकुम पिचकारी भरि उडवत अबीर गुलाल ॥१॥ सोंधो केसर
 लाय प्यारी पीय उरमिलाय आलिंगन परिरंभण अंजन दृग चुंबन गाल ॥
 खेलत रस रंगरेल यमुना चले विविध केलि बल्लभ पिय निरखत छबि
 वारतले कंचन माल ॥२॥

४९ (११) राग काफी (११) नंद गामते बन ठन कें चले बरसाने खेलन
 होरी ॥ वसन बिचित्र सबे रंग भीने रसिक मंडली संग सब जोरी ॥१॥
 विविध भांत पाग सिर शोभित कटि पट पीत पिछोरी ॥ हाथन कंचन जेरी
 विराजत करत कौतूहल किलक कलोरी ॥२॥ फूलन की माला झोरा झुकि
 काहू फूलन भरि झोरी ॥ कोऊ अबीर गुलाल उडावत चंदन वंदन रोरी
 ॥३॥ कोऊ ताल मृदंग बजावत कोऊ आवज डफ जोरी ॥ कोउ भेरि दमामा
 बजावत दुंदुभी सेहनाई की सोरी ॥४॥ कोउ चंदमुखि चंग बजावत संख
 शृंग मुरली घनघोरी ॥ एक रबाब किन्नरी बजावत एक मंजीर झांझ झनकोरी
 ॥५॥ एक सारंगी अधोटी बजावत जल तरंग रस रंग रखोरी ॥ एक प्रवीन
 जो वीनबजावत श्रीमंडल बाजत मधुरोरी ॥६॥ एकन अमृत कुंडली राजत
 नवसत रंगखजोरी ॥ कटतारन चुटकी जो बजावत गावत हो हो होरी ॥७॥
 ले समाज सबजाय जुरे वरसानें चोहटेपोरी ॥ उतते सब ब्रज युवती यूथजुर

आय भई इकठोरी ॥८॥ लहंगा लालचूनरी बहुरंग कंचुकी ललित कुचनपे
होरी ॥ मेन मुनीसी ठाडी मानों चंचल नयन चकोरी ॥९॥ हाथन लिये
कनक पिचकाई फूल छरी गेंदुक सोहे गोरी ॥ घूंघट माझ निहारत पियतन
सबसे सयानी हें अतिभोरी ॥१०॥ केसर चोवा छिरकत बहुरंग वैयां पकर
झक झोरी ॥ नयनन काजर आंजि गुलचावत सबही धरत जोबन की तोरी
॥११॥ एक जो सन्मुख पढत दोहरा तापाछे एक सखी जो दीरी ॥ एक
दौरतदसवीस कदौरी सब ही भजाय करीमतिबोरी ॥१२॥ मार परी कोऊ
आय सकत नहीं प्रीतम भुज भरि लेमेटोरी ॥ आलिंगन दे अधरामृत पीवत
यह रस सदा एक पलनघटोरी ॥१३॥ खेलि फाग रस सिंधु अधिक वढ्यो
उमगि चल्थो जानो हृदतोरी ॥ सुर वनिताजो निरख थकित भई ये बड
भागि ब्रज युवतिन कोरी ॥१४॥ जो जाके मन हुती कामना सो सबहिन
पूरन जो भयोरी ॥ फगुवादेन कह्यो सबहिन को बल्लभ पिय सुख प्रेम
हियोरी ॥१५॥

५० (झंझूँ राग काफी ११३३) अरी वह नंदमहर को छोहरा वरज्यो नहीं मानें
प्रेम लपेटे अटपटे ओर मोहि सुनावे दोहरा ॥१॥ केसैं के जाऊँ दुहावन
गैया आये अघोरे गोंहरा ॥ नखसिख रंग बोरे ओर तोरे मेरे गरेको डोहरा
॥२॥ गारी देदे भाव जनावे ओर उपजावे मोहरा ॥ गोविंद प्रभु बलवीर
विहारी प्यारी राधा को भीत मनोहरा ॥३॥

५१ (झंझूँ राग काफी ११३३) गोपकुमार लिये संग हो हो होरी खेलें ब्रजनायक ॥
इत ब्रज युवती यूथ मधिनायक श्रीवृषभान किशोरी ॥१॥ मोहन संग डफ
दुंदुभी सहनाई सरस धुनिराजें ॥ वीचवीच युवती मनमोहन महुवर मुरलीबाजें
॥२॥ स्याम संग मृदंग झांझ आवज आनभांत बजावें ॥ किल्लरी वीन आदि
बाजे साजे गनतन आवें ॥३॥ इतब्रज कुंवर करनि कर राजत रत्नखचित
पिचकाई ॥ उनकर कमल कुसुम नवलासी गावत गारि सुहाई ॥४॥ तब
मनमोहन युवती यूथपर विविध रंग वरखाये ॥ अति सुख फाग सोझ लीने
उनये मानो नवधन आये ॥५॥ तब ललिता चंद्रावली मतोकर सुबल सेनदे
लीनों ॥ छलबल कर गिरिधर गहिवेकों यह मतोमन कीनों ॥६॥ सखा

भेद गिरिधर गहिपाए भयो युवतिन मन भायो ॥ आंखि आंजि गूंथी वेनी
मृगनयनी भेष बनायो ॥७॥ फगुवा के गहने मोहन मोतिन माल उतारी ॥
वंसी झटक लई झुकि प्यारी अधरन की विलसनहारी ॥८॥ दीने छांडि
आप भायोकर स्याम सखन में आये ॥ तब मोहन समसर करवें कों बलदाऊ
पकराये ॥९॥ जब हलधर वसपरे युवतिनके केसर कलश नवाये ॥ जोई
जोई बिध उपजी जाके जिय तिहिं तिहिं भांतन चाये ॥१०॥ कीनो वीच
सुवल श्रीदामा दाऊ आनि छुडाये ॥ फगुवा देन कह्यो मन भायो ब्रजपति
टेर सुनाये ॥११॥ तब ब्रजराज वसन भूषणले युवती यूथडिंग आये ॥ अति
आनंद वदन प्रफुल्लित दिये सबन मन भाये ॥१२॥ देत असीस सकल
ब्रजवनिता रसना नहीं लखे कोरी ॥ चिरजीयो मदन मोहन पिय स्यामा
गौर स्याम समजोरी ॥१३॥

५२ (श्री राग काफी श्री) विलोको नागरि राधा प्यारीहो ॥ सखीरी छबि
गुण रूप निधान ॥ध्रु०॥ सारी नील मोल मेंहेंगेकी गोरेगात छबि होत ॥
मानो नीलमणि मंडप मधि बरत निरंतर जोत ॥१॥ चोटी चारुतीन सरमानो
कहूँकेतु अरुराह ॥ चढि हिल मिल एक संग हेम गिरि शशि मुख कीनो
ग्राह ॥२॥ मंजुल मांग मोती लर लटकत मटकत उपमा देत ॥ मानो उडुगण
सिमटि एकव्हे वीच करत शशिहेत ॥३॥ सुंदर बाल भाल शशि मानो रचित
ललित रजबिंदु ॥ मानो वंदू कुसुमन आन्यों एक मनसिज जीत्यो इंदु ॥४॥
जूआआड ताटक चक्रयुग भूसंकेत मृगनेन ॥ मानो तिलक बिबगहि बैठयो
शशि रथ सारथी मेन ॥५॥ पीन कपोल चारु चिक्कण अति उपमा देत
संकात ॥ मानो संख करत शशि सोमतो मान अनुजको नात ॥६॥ नासा
सुभग मोती बेसरको वरनत होत संकोच ॥ मानो कीरदारच्यो फलफोरच्यो
वीज लागि रह्योचोंच ॥७॥ रच्यो अधर बिच दसन सुधारस यह उपमा
को अंत ॥ मानो मुकुलित सीप रूपनिधि मोती दमकत दंत ॥८॥ ठोडी
ठकुराइनकी नीकी नीलो बिंदु मझार ॥ शालिग्राम कनक संपुटमें रहगयो
नैंक उधार ॥९॥ कपोती कंठराजे कंठसरी संख किये अवरन कांति ॥ मानो
कनक मूरत गंगातट निकट दिपतदीप पांति ॥१०॥ पोहोप पाणि दांह बाजूवंद

फवित फोंदना रूर ॥ मानों काम अंकुर हीगहके झूलत बाल मयूर ॥११॥
 छबि हरनी छाती परराजे सेतसीपजको हार ॥ मानो महेसपरसि मंदाकिनी
 धसिधरनी युगधार ॥१२॥ चुनीन मध्य चौकी नग उदित यह उपमा
 जियहेर ॥ मानो कुज्ज उपज्यो अबनी पर इंद्रवधुन लीनोघेर ॥१३॥ चोली
 चारु छाँटकी छाजत कविजिय करत अठोट ॥ मानो महेस मनसिज भयते
 दुर बैठे छलओट ॥१४॥ रोमरेख उर्ध्वधनुषकृत नाभि वसत रतिरोन ॥
 मानो साधि सूधो करबैठयो द्वेमेंमारुं कोन ॥१५॥ नीवी बनी बोरि केसरसों
 कसी विनोदे वाम ॥ मानो सीससदवरगवांधके वेढ्यो सदन चढकाम ॥१६॥
 चंपकली अनुहार छुद्रावलि कटिके हरिसी छीन ॥ युगनितंब मानोतुवपर
 सीरस समर ढूँढत सरवीन ॥१७॥ युगल जंघविपरीत रमतमानो लेहेंगा
 ललित सुहाय ॥ मानो मदन गढमेंडपेंडके उमगि चल्थो गजराय ॥१८॥
 अंबुज चरण पांयटेफोंदा यह उपमा कोठोर ॥ मधुरनाद गुंजार करतहें उडउड
 बैठत भोर ॥१९॥ कहे सहचरी बडे दुःख लाई प्रभु तेरे सुख लाग ॥ अवरस
 परस विलस वृंदावन उभय सकुच जिय त्याग ॥२०॥ जोरी बनी विचित्र
 सूरप्रभु बढ्यो रतीरस संग ॥ ठकुरायण राधाजू मेरी ठाकुर नवल
 त्रिभंग ॥२१॥

५३ (११) राग काफी (११) रंग भीनी जोरी होरी खेलें हो ॥ कबहुंक दोऊ
 लटपटाय तन अंस भुजावर मेलेंहो ॥१॥ अरस परस छिरकत छिरकावत
 कर कर नयनन कोरें ॥ ले गुलाल मुख लावत प्यारी प्रीतम को चितचोरें
 ॥२॥ कुंकुम ले मोहन प्यारी पर डारत हैं वडभाग ॥ अरुन कमल पर
 वरखत मानों नील सरोज पराग ॥३॥ निरख निरख ललितादिक बिबछबि
 तृनतोरत बलिजाय ॥ श्रीवल्लभ हित यह सुख निरखत उर आनंदन
 समाय ॥४॥

५४ (११) राग काफी (११) मोहन परयोरी मेरे गोंहन परचोनंदको छोना
 मेरे गोहनपरचो ॥१॥ साँवरे कमलनयन आगेंढूके आय ॥ लाजन के मारे
 कहुं गयोहू न जाय ॥१॥ याकी घाली मेरी आली कहो कित जाऊं ॥ बासुरी
 में गावे गीत तामें मेरो नाऊं ॥२॥ अंगना में ठाडी भई अटाचढि आवे ॥

मुकुटकी छैयां मेरे पायन छुवावे ॥३॥ जबहूं चितऊं आडोदे चीर ॥ सेनन में कहें चलि कुंज कुटीर ॥४॥ हित घनस्याम अब होय सोहोहु ॥ कृष्ण चरण प्रभुसों बाढ्यो अतिमोह ॥५॥

५५ ॥ राग काफी ॥ श्रीवृंदावन चंद खेलें होरी हो ॥ध्रु०॥ इत मोहन संग सब ब्रज बालक बन बन आये टोल ॥ उतब्रज युवतिन वसन साजे पहरे चीर अमोल ॥१॥ तिनमें मुख्य वृषभान नंदनी शोभा वरनीन जाय ॥ गौर स्याम जोरी बनीहें उरआनंद न समाय ॥२॥ कनक कलश केशर के रंगसों भरलीने दोऊओर ॥ पिचकाई परस्पर छिरकत तक तक नवलकिशोर ॥३॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ सुर मंडल कठताल ॥ वीना वेनरबाब किन्नरी बाजत वेणु रसाल ॥४॥ चोवा चंदन ओर अरगजा भरिलीने कनक कचाल ॥ युवति यूथ सब मिलिकें धाई दियोहे स्याम सिरढोल ॥५॥ तब बलभद्र सखा सब उमडे उडत अबीर गुलाल ॥ हो हो हो कहि बोल न लागे नाचत गोपी ग्वाल ॥६॥ सेनावेनी सब सखियन मिल गिरिधर लीनेघर ॥ नयन आंजि मुख मांडरोरी हसत वदन तनहेर ॥७॥ बहोरचों मिलदसपांच सुंदरी बलदाऊ पकरे धाय ॥ मोहन की गति उनकी कीनी नीलांबर लिये छुडाय ॥८॥ दोउन लीनों फगुवा आभूषन ओर पटकूल ॥ अति रस प्रेमबढ्यो गोकुल में सुरपति वरखत फूल ॥९॥ यह विध खेलत ब्रजजन सबमिल चले श्रीयमुनान्हान ॥ अति प्रफुल्लित नंदजू पहराये बिमल वसन परिधान ॥१०॥ तब नंदरानी नयन सिरानी भर मुक्ता फलधार ॥ आरती वारत प्रान पिपापर त्रिभुवन जयजयकार ॥११॥ युग युगराज करे ब्रज अबचल भक्तन देहु आनंद ॥ श्रीवल्लभ पदकमल मधुप मन हरिजन पीवें मकरंद ॥१२॥

५६ ॥ राग काफी ॥ बरसाने कीसीम खेलत रंग रह्योहे ॥ छल बल वानिकवान ललिता नें लाल गह्योहे ॥१॥ सखा श्रीदामा आदि हलधर भाज गयेहें ॥ गही पिचकारी हाथ जुरि चहुंकोद भयेहें ॥२॥ कोऊन आवंपास उतबल बहुत भयोहे ॥ अधिक भई अधियारी गगन गुलाल छयोहें ॥३॥ तामधिदमकत अंग ब्रजजन रूप छटारी ॥ सारी भरी सुरंग सोहेकनक

किनारी ॥४॥ जोरी वंदनधूर अबीरमिलाय लियोहे ॥ छिरक छिरक घनस्याम
 सबे एक रंग कियोहे ॥५॥ लपटपरी विहवाल तरुनतमाले हेली ॥ पोहोप
 लता सिरताज कोंधत ऊपर वेली ॥६॥ करत मनोरथ घेर गिरिधर सुघर
 सलोनों ॥ लग्यो अरगजा गाल श्रीमुख लसत रिझोनों ॥७॥ पाग उतारत
 आप श्रीवृषभान कुमारी ॥ केसखोल निरवार बेनी सरससंवारी ॥८॥
 झबीजराउजोर अग्रनिग्रंथ संवारी ॥ मांग भरी मोतिनकी पटियन ही लेपारी
 ॥९॥ सीस फूल सीमंत किशोरी आपुन दीनों ॥ समझवार समझावत नयनन
 अंजन कीनों ॥१०॥ मृगमद आड सुदेस करी चंद्रावलि नीकी ॥ चंद्रभगा
 लेवी चल गावत पिय कोंटीकी ॥११॥ पहरावत झकझोर वेसर निरमोली
 हे ॥ चारु छपेरी साज पचरंग उरचोली हे ॥१२॥ जेहर तेहर पाय विछुवन
 छनिउप जायल ॥ अनवट नूपुर चूरा रत्न खचित हैं पायल ॥१३॥
 नखसिखलों यह भात अभरन भीर भईहे ॥ निरख निरख यह कांति ब्रज
 आनंदमईहे ॥१४॥ वाजन लागे ढोल ओर डफ ताल मृदंगा ॥ गोमुख किन्नरि
 झांझ वीचबिच मधुर उपंगा ॥१५॥ सहचरी भई आनंद गावद गारि सुहाई ॥
 दिसदिस मोहन ओर चलत निकर पिचकाई ॥१६॥ एक सखी वीचआई
 अरगजा डारगई हे ॥ देख पलक पररेल पियजूगारी देई हे ॥१७॥ लेले
 अंचल आप पोंछत अंगुरिन दलसों ॥ मुठियन चलत गुलाल आगें पाछें
 छलसों ॥१८॥ तेई घातन मधुपाय प्रान पियाकों पोखत ॥ प्रेम विवशता
 हरि भर अंकवारी झोखत ॥१९॥ हो हो होरी बोलत ललिता आंगन नाचत ॥
 करे प्रेमकी टोक चोख एको नहीं वांचत ॥२०॥ नंददास खिलवार खिलारी
 खेलन हारो ॥ भयो ने हमदमाद टोल दुहुंदिस मतवारो ॥२१॥

५७ (॥ राग काफी ॥) होरी खेलै लाल, डफ बाजें ताल, झांझ इनननननन
 ॥६०॥ चोवा, फूलेल, अबीर, अरगजा, भँवर उड़ति भननननन ॥ निकसे
 कुँवर झूमकि खेलनि कों हैंसति चलति ठननननन ॥१॥ घर घर तैं बनिता
 बनि आई भनक परे सबननननन ॥ कंचन की पिचकाई कर गहें छिरकि
 स्याम तननननन ॥२॥ केसरि कीच मची हरि आँगन उमड़ि घुमड़ि आई
 घननननन ॥ उड़ति गुलाल अरुन भयौ अंबर लखि न जात रेंनि

दिनननननन ॥३॥ एकु नाँचति, एकु गहि झक झोरति गावैं तान तनननननन ॥
 'सूर स्याम' प्रभु किसोरी खन सँग धुरि गोकुल ब्रज गगनननननन ॥४॥

५८ (॥३॥ राग काफी (॥३॥) अहो वृषभानु सुता नंदलाल जुगल जस गाइए
 हो ॥ धनि धनि गाँम सखी बरसानौ जहँ प्रगटी सुकुमार ॥ मोहन की
 कहा कहौ माधुरी, गोकुल उदित उदार ॥१॥ माँनों कंचन-बेलि सखी री
 कहा बरनैं कवि रूप ॥ नब-धनस्याम-तमाल लाड़िलौ नख सिख रूप अनूप
 ॥२॥ बदन बधू बिधू मथित बिधिनि चाई अमृत सीचों इही ठौर ॥ सरस
 कुमार मथित तपैया छबि नहि सुधा बिनु और ॥३॥ षटदस साजि सिंगार
 सखी री मुख तमोल जैसें लाल ॥ कंचन दंड सुखंड खंड द्वै अधरन मुरली
 रसाल ॥४॥ स्यामा बृंद सखीन में राजति ज्यों उडगन में चंद ॥ मोहन
 ग्वाल बाल संग डोलैं माँनों मत्त गयंद ॥५॥ ताल मृदंग इत उत तैं बाजत
 ढफ सहनाई ढोल ॥ अति मीठे मृदु परम भावतैं गोपिन कोकिल बोल ॥६॥
 चोवा चंदन अगर कुँमकुमा और सुरंग अबीर ॥ उडति गुलाल अरुन नभ
 ढाँप्यो बदरन माँनों बिनु नीर ॥७॥ सुंदरि पाँच अगमनै पठाई जान पीया
 कौ हेत ॥ फाग समें बड़भाणि हमारौ खेलिये आजु संकेत ॥८॥ घेरि आँई
 सब मिलि मोहन कौ कीनौ जुबतिन भेष ॥ आजि भलैं नंदलाल बिराजति
 अधरन अंजन रेष ॥९॥ स्यामा स्याम कीए ढिंग ठाड़े बनी अनूपम जोरी ॥
 सकुच दुराई अंक कौ प्यारी नैकु हँसीं मुख मोरी ॥१०॥ मुरली छिड़ाई
 कहाँ ललिता यौं फगुवा देऊ मँगाई ॥ कै तुम अनुचर होऊ हमारे परसौं
 दुलहिन पाँई ॥११॥ सुर सिब बिरंचि सेस नारद, चढ़ि बिमान सब आए ॥
 कौतुक देखि देखि ब्रजपति कौ, मुदित कुसुम बरखाए ॥१२॥ परम भौमती
 जसुमति रानी कौन पुन्य तै कीन ॥ कुंवरि कुंवर ग्रह बिहरति जाके, त्रिभुवन
 होति अधीन ॥१३॥ गोप ग्वाल पहिरै पट भूषन पहिरें अंग न मात ॥
 'रामदास' प्रभु गिरिधर नागर, नागरि पकरि नाचत ॥१४॥

५९ (॥३॥ राग काफी (॥३॥) अहो मेरी बौरी बीर गई है ॥ बीर गई है तन
 पीर भई है ॥१॥ कहा कहौ कछु कहत न बनि आवै कृष्ण सांवरे छिनाई
 लई है ॥ चोवा चंदन और अरगजा पिचकाइन झर लागि रही है ॥२॥

सब सखियन मिलि धुनि मचि है सांवरी सलोनी गोरी भोरी आई खरी है ॥ 'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे हैंसि चरने चित लागि गई है ॥३॥

६० (॥३॥ राग काफी (॥३॥) ए रंगीला रंग डारि कै कित जादां ॥ ध्रु०॥
दुरि-आंदाँ तनक छिपजादां तब तो चोर कहादां ॥ जब जानों जसुमति के ढोटा सनमुख दरस दिखादां ॥१॥ गारी गादां घेरि मिलांदाँ लरिकन कौं सिखलांदाँ ॥ भले भए तुम सुधर सयाने ब्रज में लोग हैंसादां ॥२॥ पकरंगा तेरी पगिया रंग हो तब तो कौन छुड़ावाँ ॥ निरलज निपट लाल लंगरवा सौ सौ सोगंद खादाँ ॥३॥ चोवा चंदन औरु अरगजा रोरी रंग मिलादां ॥ आजु सरखी 'हरिदास' के ठाकुर इह बिधि धूम मचांदां ॥४॥

६१ (॥३॥ राग काफी (॥३॥) कान्ह कुंवर खेलनि चले रंग भीने हो ॥ संग सखा बलराम लाल रंग भीने हो ॥ भूषन बसन बनाई कै रंग भीने हो ॥ सोभा सुख के धाम ॥ लाल रंग भीने हो ॥१॥ बनि ठनि निकसे अति बने रंग, ठाड़े सिंघ दुवार ॥ लाल रंग भीने हो ॥ स्याम सुभग अति राज ही ॥ रंग भीने हो ॥ पूरन चंद उदार ॥ लाल रंग भीने हो ॥२॥ बाजे बहु बिधि वाजहि ॥ ताल मृदंग ढफ चंग ॥ बिच बिच मुरली सुर लिये हुलसत सब के अंग ॥३॥ सुनि कै दौरि ब्रज बधू आईनंद जू की पौरी ॥ तिन में तरुनी सिरोमनी राजति नबल किसोरी ॥४॥ सनमुख ठाड़ी लाल कै, गावति मीठी गारि ॥ मुख पर अंचल दै हंसी, हासि चितवत नर नारि ॥५॥ मोहन के चित रति बढ़ी, खेलि मच्यौं अति जोरि ॥ भरि लीये सुरंग गुलाल सौं, फैंटन के दोऊ ओरि ॥६॥ मृगमद कुंमकुम घोरि कै, भरति कनक पिचकाई ॥ छिरकति तकि तकि प्यारी कौं, चितवति चितहि चुराई ॥७॥ मुख पर चंदन डारि कै, औहट फिरति हैंसि लाल ॥ कोलाहल सब करत हैं हो हो बोलत ग्वाल ॥८॥ ये उनके वे उनही कै, मद्यो चाहत पिय प्यारी ॥ छल बल सौं सबन सब तकि के पगन परत नर नारि ॥९॥ तब ललितादिक दौरि हे गहे अचानक कान्ह ॥ सबे मिली है सुंदरी पाए हैं जीवन प्रान ॥१०॥ निरखि हैंसी मुख मुसकि कै परसत बैन अधाई ॥ मोहन सौं ललिता कहे छाँडौ करि मन भाई ॥११॥ बैनी गूंथी माँग सौं भूषन

सबैं सिंगारि ॥ पहिरावे पट कंचुकि अंजन दीये सँवारि ॥१२॥ नील नलिन खंजन मृगी डारि उन पै वार ॥ अति अनूप नव नागरी भूले भवन नर नार ॥१३॥ चोवा मृगमद अरगजा छिरकति केसर घोरि ॥ छाये गगन गुलाल सौं अरून घटा घन घोर ॥१४॥ बरखति अति अनुराग सौं स्यामा स्याम किसोरि ॥ पिय प्यारी मुख चंद के पीवत नैन चकोरि ॥१५॥ छांडे मन जु मनाई कै पकरे फिरि बल घेरि ॥ जुबति भेष बनाई कै पहिरावे षट फेरि ॥१६॥ नैननि अंजन दै हँसी भले बने बलदाऊ ॥ छिरकति केसर घोरि कै कहो कुंवरि कौं नाऊ ॥१७॥ इहि बिधि होरी खेलि ही बाढ्यो अति अनुराग ॥ सुधि कछू न समार ही प्रमुदित ब्रज बडभाग ॥१८॥ नवल लाल रसिक मनी गिरिधर प्रान आधार ॥ नैननि कौ फल यह सखी निरखे नंदकुमार ॥१९॥

६२ (॥१॥ राग काफी (॥१॥) गिरिधरलाल लडाइये हो जाको भक्त वत्सल हरि नाम ॥ गोकुल गांव सुहावनो हो नंदमहर कौ राज ॥ कान्ह कुमर को खेलनो हो सब गोपिन सिरताज ॥१॥ हाथन डफ पिचकाई लीने हो फैंटन भरी अबीर ॥ इत राधा चंद्रावली हो उत हलधर दोऊ बीर ॥२॥ मोहन स्यामा भेख धरे हो स्यामा भेटी जाय ॥ छल बल भुजा छुड़ाय कै हो चिते चलि मुस्काय ॥३॥ ललिता एक मतो कियो है मोहन पकरे जाय ॥ आँखि आंजि मुख मोड़ि के हो नेक लीने ताल बजाय ॥४॥ लीला गिरिधर लाल की हो गावे सब संसार ॥ “ दास नारायण ” यों कहें हो तुम खेलो फाग धमार ॥५॥

६३ (॥१॥ राग टोड़ी (॥१॥) ग्वाल हँसे मुख हेरिकें, अति बने कन्हआई ॥ हलधर कौं लिय टेरि, आजु अति बने कन्हआई ॥ हो हो करि करि कहत हैं, अति बने कन्हआई ॥ रहे चहुंधा घेरि, आजु अति बने कन्हआई ॥ ऐसेहिं चलिये नंद पै, अति बने कन्हआई ॥ बल की सौंह दिवाई, आजु अति बने कन्हआई ॥ भुजा गहे तहँ लै गए, अति बने कन्हआई ॥ वह छबि बरनि न जाई, आजु अति बने कन्हआई ॥ इत जुवती मन हरत है, अति बने कन्हआई ॥ उतहि चले हैं भोर आजु अति बने कन्हआई ॥ और सखी आई तहाँ, अति

बने कन्हआई ॥ करि-करि नैन चकोर, आजु अति बने कन्हआई ॥ महर हंसे छबि देखि कै, अति बने कन्हआई ॥ सुनि जननी तहँ आई, आजु अति बने कन्हआई ॥ हँसि लीन्हौ उर लाइकै, अति बने कन्हआई ॥ आनंद उर न समाई, आजु अति बने कन्हआई ॥ कछुक खीझि कछु हँसि कछो अति बने कन्हआई ॥ किन यह किन्हौं हाल आजु अति बने कन्हआई ॥ लेति बलैया वारिकै अति बने कन्हआई ॥ ये ऐसिय ब्रजबाल, आजु अति बने कन्हआई ॥ रंग-रंग पहिरावनि दई, अति बने कन्हआई ॥ जुवतिनि महर बुलाई, आज अति बने कन्हआई ॥ यह सुख प्रभु कौ देखिकै, अति बने कन्हआई ॥ सूरदास, बलि जाई, आजु अति बने कन्हआई ॥

६४ (१०१) राग काफी (१०२) जमुना के तट खेलति हरि-संग, राधा लै सब गोपी ॥ नंदलाल गोवरधन धारी, तिन के नेहनि ओपी ॥१॥ चलहु सखी ! चली तहाँ जाइयै, छिनु जियरा न रहाई ॥ बेनु-सब्द करि मन हरि लीन्हौ, नाना राग बजाई ॥२॥ सजल-जलद-तन पीतांबर छबि, कर मुख मुरली धारी ॥ लटपट पाग बने मन-मोहन ललना रहीं निहारी ॥३॥ नैन नें नसौ मिलि, कर सों कर, भुजा ठए हरि ग्रीवा ॥ मधि नायक गोपाल बिराजत सुंदरता की सींवा ॥४॥ करत केलि-कौतूहल माधौ, मधुरी बानी गावै ॥ पूरन चंद सरद की रजनी, संतन सुख उपजावै ॥५॥ सकल सिंगार कियौ ब्रज-बनिता, नख-सिख-लों भल ठानी ॥ लोक-वेद-कुल-धर्म काहु की, नैंकु न मानति कानी ॥६॥ बलि-बलि बल के बीर त्रिभंगी, गोपिनि के सुखदाई ॥ सकल बिथा जु हरी या तन की हरि हँसि कंठ लगाई ॥७॥ माधव नारि, नारि माधव कौं, छिरकत चोवा-चंदन ॥ ऐसौ खेल मच्यौ उपरापरि, नंद-नंदन जग-बंदन ॥८॥ ब्रह्मा, इन्द्र, देव-गन गंधर्व, सुमन एक रस बरषैं ॥ सूरदास, गोपी बड़भागिनि, हरि-क्रीड़ासुख करषैं ॥९॥

६५ (१०१) राग काफी (१०२) जमुना तट ठाढ़ी सांवरो हो हो सखी री नख-सिख भेख बनाय ॥ध्रु०॥ तन तनसुख को झगा सुरंगी सीस केसरी पाग ॥ कहूँ-कहूँ कृष्णागर की छींटे उपरेना रंजित राग ॥१॥ रतन खचित पिचकाई कर लिये सुरंग गुलाल अबीर ॥ रंग रंगीले सखा संग ले श्रीदामा

बलबीर ॥२॥ बेनु विषान झाँझ ढफ ढोलक गोमुख ताल मृदंग ॥ श्रीमंडल
अरुं अमृत कुड़ली आवज बीन उपंग ॥३॥ श्रवन सुनत जित तित दौरी
करि-करि अपनौ ठाट ॥ कनक कलस केसर जल भरिके मृगमद मलयन
माट ॥४॥ खेल मच्यौ वृन्दावन अद्भुत इत गोविन्द उत नार ॥ छिरकत
रंग महा मदमाते देत परसपर गार ॥५॥ मतौ मत्यौ ललितादिक सखियन
लीनो सुबल बुलाय ॥ तेरे पाय लागत हौं छल करि मोहन को पकराय
॥६॥ तब मधुमंगल कछो सुबल सौं सुन हो सखा एक बात ॥ हरे-हरे
निकसी छलबल सौं लालन पकरे जात ॥७॥ मुख मांड्यो नैननि अंजन
करि स्वांग जु सबै नचाय ॥ फगुवा माँग लियो मनभायौ खेलौ हँसौ चित
लाय ॥८॥ यह विधि फाग सुहाग भर्यौ मिलि खेलो श्री ब्रजनारी ॥ “श्री
गोपाल” रीझी देखत दृग सर्वसु देत है बारी ॥९॥

६६ (॥१॥ राग काफी (॥१॥) तेरे नैननि में है जु ठगोरी ॥ जो खेले ताही
सौं खेलौ हौं न खेलौ पीय तुम संग होरी ॥१॥ काहे कौं फंद में डारति
हो मोहि बड़ी बेस किसोरी ॥ ‘कृष्ण जीवन लछीराम’ के प्रभु नित प्रति
आवो मेरी पौरी ॥२॥

६७ (॥१॥ राग काफी (॥१॥) नंद के नंदन आली ! मोहि कीन्हीं बावरी ।
कहा करौं क्यों हूँ, चित्त, रहत नाहिं ठाँई री ॥ बिहरत हरि जहाँ आलि !
तहाँ तु हूँ आई री ॥ बासर अरु निसिहुं आलि, मोहि यह चाई री ॥
जमुना तैं भरिबे जल, जान यहै दाँई री ॥ गुरु-जन अरु पुर-जन सौं,
और नहिं उपाई री ॥ मुख गावै काफि राग, मुरलिका बजाई री । धुनि-
सुनि मैं तनु भूली, अति ही सुखदाई री ॥ चंदन चूरी कपूर, फेंटनि सु
भराई री ॥ साँधे भरि पिचकारी , मारत सौ धाई री ॥ आतुर हूँ चली,
और जाई कि न जाई री ॥ चित न रहत कहूँ ठौर, और नहिं सुहाई री ॥
मिलिये प्रभु-सूरज-कौं, सकुच सब गँवाई री ॥ लाज डारि, गारि खाई,
कुल ही बिसराई री ॥

६८ (॥१॥ राग काफी (॥१॥) नंद-नंदन वृषभानु-किसोरी, मोहन राधा खेलत
होरी ॥ श्री बिंदावन अति हि उजागर, बरन-बरन नव दंपति भोरी ॥१॥

एकनि कर है अगरु कुँमकुमा, एकनि कर केसरि लै घोरी ॥ एक अर्थ
सौं भाव दिखावति नाचति तरुनि, बाल, बृध, भोरी ॥२॥ स्यामा उतहिं
सकल ब्रज-बनिता इतहिं स्याम रस-रूप लहो री ॥ कंचन की पिचकारी
छुटति, छिरकत ज्यों सचु पावैं गोरी ॥३॥ अति हिं ग्वाल दधि-गोरस
माते, गारी देत, कहौ न, करो री ॥ करत दुहाई नंदराई की, लै जु गयौ
कल बल छल जोरी ॥४॥ झुंडनि जोरि रही चंद्रावलि, गोकुल में कछु खेल
मच्यो री ॥ 'सूरदास-प्रभु' फगुवा दीजै, चिरजीवौ राधा-वर-जोरी ॥५॥

६९ ~~राग काफी~~ राग काफी ~~पै~~ नव रंगी दुल्हे गाइए हो सखी री ॥ आयो
फागुन मास ॥ध्रु०॥ सहज सिंगार पहिरि पट भूषन मिलि निकसी ब्रज
बाल ॥ गावत होरी खेलत होरी रोक्यौ नंद दरबार ॥१॥ सुनति श्रीदामा
ग्वाल बुलाए बोलि लए बल बीर ॥ सब लै संग चले मनमोहन, खेलन
जमुना तीर ॥२॥ दै करि ओट जसोदा मैया, बैठी अटारी जाई ॥ फगुवा
दै छूटौगे मोहन नाहीं तो गावे नंद राई ॥३॥ ऊँचे तान मिलावत अंगुरी
गावत गीत रसाल ॥ सुर ब्रह्मादिक पार न पावे धनि-धनि दीन दयाल
॥४॥ खेलति बीच कीच मच्यौ अति उड़ावति अबीर गुलाल ॥ चहुँ दिसि
तैं छूटति पिचकारी, बीच बन्यौ नंदलाल ॥५॥ ताल पखावज बैन चंग
बाजै बिच मुरली घनघोर ॥ निरखति बदन सबै सुर मोहे नाँवे अंब पै
मोर ॥६॥ नवरंग खेलि मच्यौ अति नीकौ यह सुख बरन्यौ न जात ॥
“मानदास” प्रभु नवरंग दूल्हो नाईक अपनौ नाथ ॥७॥

७० ~~राग काफी~~ राग काफी ~~पै~~ नंद के लाल नवल नागर अनुरागे हैं ॥ खेलति
होरी फागु प्रेम रस पागे हैं ॥१॥ गोप कुमार सखा संग रंग रंगीले हैं ॥
प्रेम छके छिरकैं पट छैल छबीले हैं ॥२॥ ताल पखावज आवज महुवारि
बाजे हैं ॥ माँनौ सरोज सभा में बसंत बिराजे हैं ॥३॥ अनुरागे रस पागे
गायन गावे हैं ॥ कुँमकुम नीर अबीर गुलाल उड़ावे हैं ॥४॥ गारि-गारि
घनसार अरगजा घोरै हैं ॥ केसरि रंग सुरंग में अंबर बोरैं हैं ॥५॥ धाई-
धाई पिचकारिन भरि-भरि छाँटैं हैं ॥ महामंगल मन मोद सौं भरि-भरि

बाँटें हैं ॥६॥ कालिंदी के कूल कुलाहल भारी हैं ॥ 'रिषीकेस' के जीवनि-
कुंज-बिहारी हैं ॥७॥

७१ (॥६॥ राग काफी (॥६॥ न भरौ रेन भरौ रे लंगरवा । हो हो मोहि जिन
भरौ रे लंगरवा ॥ सब सखियन मिलि केसरि घोरयौ भरि-भरि लाई करबा ॥
भरि पिचकारी मेरे मुख पै डारि मेरी अँगियाँ भीजी बस करौ रे लंगरवा
॥१॥ बरजति हों बरज्यौ नहीं मानत तोरयौ उर कौ हारुवा ॥ फगुवा माँगति
मो पै मोहन होई रहो होरी कौ भरुवा ॥२॥ सुनैगो नाँहिं नहक लरैगो
औरु कुटम कौ डरवा ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे लेऊ बलैयाँ
पाँई परिबा लंगरवा ॥३॥

७२ (॥६॥ राग काफी (॥६॥ नवरंगी केसर हम बोई हो ललनाँ कृष्णजीवन
जू के काज ॥ध्रु०॥ केसर क्यारी हम बोई हो ललनाँ बीज आँन्यौ कसमीर !
अपने पीतम जू के कारनें सजनी सींचौंगी नैननि नीर ॥१॥ गिरि परबत
पर केसर बोई मृग जू चरि-चरि जाई ॥ क्यों रे मृगा तू डरपति नाँहीं
मारौंगी धनुष चढ़ाई ॥२॥ आसपास सब केसर बोई बिच बोयौ अबीर
गुलाल ॥ जाकी रे बास सुबास आवै वाई कौ गुंथों नव सत हार ॥३॥
कनक कचोला केसर घोरी बिच डार्छो जमुना कौ नीर ॥ श्रीकृष्ण जीवन
जू कौ बागी चरच्यौ राधा जू कौ चीर ॥४॥ रंग रस रंग ब्रिंदावन के
बीच मोहन खेलें फागुन मास ॥ 'सूरदास' प्रभु ब्रजई अखंडित होति है
रंग बिलास ॥५॥

७३ (॥६॥ राग काफी (॥६॥ पकड़े ब्रजजन गिरिधारी ॥ उमंग भरी गोपी
सब आई ॥ खेल मचायो भारी ॥ खेंचलेई पीतांबर मुरली ॥ हां हां करत
मोरारी ॥ हँसी सब देकर तारी ॥१॥ जीही जपत मुनिवर ज्ञानी ॥ सकल
वासना टारी ॥ शारद शेष पार नहिं पावत ॥ जीहीं जपे त्रिपुरारी ॥ ताकुं
गोपी देत हैं गारी ॥२॥ काल को काल ईश को ईशन ॥ जीत लीयो
सुकुमारी ॥ कर जोरी के पीतांबर मांगत ॥ द्यो द्यो मुरलीया प्यारी ॥
जाओ अब जी तुम्हारी ॥३॥ भक्त आधीन निगम नित गावत ॥ मुनिवर

कहेत बीचारी ॥ सूरदास के प्रभु रसीले ॥ बार-बार बलिहारी ॥ मगन
कीनी ब्रजनारी ॥४॥

७४ (॥४॥ राग काफी (॥४॥) बरजो न माने आज री नंद महर की छोहरा ॥
प्रेम बढ़ावत अटपटे पेचन पढ़त फिरत है दोहरा ॥ वन-वन डोलत ग्वालन
बोलत रोकत फिरत गौ गोहरा ॥ 'आस करन' प्रभु गिरधर मोहन राधा
कौ मोती मनोहरा ॥२॥

७५ (॥४॥ राग काफी (॥४॥) ब्रजवासी सबै आनंद भरे हो हो मेरे ललनां
रसिकराई सिर मौर ॥ध्रु०॥ खेलनि कौ उद्युति भए बल मोहन कियौ
बिचार ॥ भवन भवन अपने सुनि गोपी लागी है करन सिंगार ॥१॥ मज्जन
करि तन अंबर पहिरे तन बरन बरन बहु भांति ॥ आगे धरि दरपन मुख
निरखति मंद मंद मुसिकाति ॥२॥ चिकुर सुगंध सगबगे सुंदर बैनी गुही
बनाई ॥ मांनौ बृष्टि श्री खंड खंभ पै रही उरगिनी लपटाई ॥३॥ सीसफूल
सिर मांग संवारी मुकता वारि सुदार ॥ मांनों इंदु बैठे करि मंडल उड़गन
अमित अपार ॥४॥ करनफूल जुग अलक बदन बिधु अद्भुत है यह बात ॥
मानों सुमेर कौ तिमिर हरन कौ उदै करत निस प्रात ॥५॥ भाल सुदेस
तिलक मृगमद कौ कबि छबि करति बिसेष ॥ तिरलोकि जीतन कौ मांनों
करी है अनंग कर रेष ॥६॥ भ्रुकुटी-बंक निसंक निरखि छबि किधौं मैं
सारंग ॥ आनन नवल कमल मधि मानों है सखी सुधा तरंग ॥७॥ दै नैननि
अंजन खंजन अलि, मांनों कुरंग क मोद ॥ बारबार पौंइन लागति है मांनों
बढ़ावति है मोद ॥८॥ नासा पुट बेसरि केसरि कौ जैसौ सुवन सुरंग ॥
मांनों उभै-जलज खेलति है, बधु राकेस उछंग ॥९॥ अधर-बिंब दाचौं कन
मांनों दसनावलि छबि देति ॥ मधुर मधुर रसना पिक बोलति जुगल फलनि
रस हेत ॥१०॥ साँवल बिन्दु बन्धौ सखी मधि ठाड़ी सहज सुभाई ॥ अतन-
जतन करि कनक कंज दल खची नीलमनी आई ॥११॥ कंठ पोति पदक
की रही फबि दुलरी चौंकी हार ॥ झवा सुघट पाट भरे रुरिकत उर पै
बारंबार ॥१२॥ जगमगात भूषन जराई के लटकत भूज मखतूल ॥ मांनौ

सखी प्रगट दोखियतु है रति-बेलि फल-फूल ॥१३॥ कटि किंकिनि सप्त
 सुर राजै जे हरि नूपुर, बिछिया बाज ॥ जहँ तहँ उठि चलि माँनौ मराल
 मत्त गजराज ॥१४॥ कंचन कलस लिए केसरि भरि चोवा अबीर गुलाल ॥
 उत तै राम कृष्ण बनि आए, संग रंगीले ग्वाल ॥१५॥ लाल पाग चन्द्रिका
 मनोहर कुंडल करन गरे बनमाल ॥ पीतांबर काछिनी पिचकाई छिरकति
 अंग ब्रजबाल ॥१६॥ नवनागरि धाई सनमुख सब मदन मोहन की चोरी ॥
 छिरकि भरे किए बस अपने, नागर-नंद किसोरी ॥१७॥ छूटिलट बिगलित
 पट दंपति नहिं तन मन हिं संभार ॥ प्रेम-मत्त रस-रक्त रसिक वर, हिलि-
 मिलि करत बिहार ॥१८॥ ठौर-ठौर बाजे बाजति हैं पटह जु भेरी मृदंग ॥
 बैनु रबाब किन्नरि महुवरि मुरली चंग उपंग ॥१९॥ वर किन्नर तूवर गंधरब
 मिलि बिमल कर हि करि गान ॥ “जुगल चंद” आनंद भरे हैं देति रतन
 मनि दान ॥२०॥ नंद कुंवर फगुवा जुबतिन कौं मेबा दियो मंगाई ॥ कर
 जोरै सनमुख सबहिन के पट भूषन पहिराई ॥२१॥ हरि नारायण प्रभु होरी
 खेलति फागु बढ्यौ अनुराग ॥ यह लीला जो सुनै सुनावे ‘स्यामदास’
 बड़भाग ॥२२॥

७६ (॥१॥ राग काफी ॥१॥) बन्यौ खेलत फागु सुंदर नंद कौ लाला ॥ बने
 संग गोपकुमार उदार सने रंग नैन बिसाला ॥१॥ बाजति रंग भरे ढफ
 झांझ मिल्यौ मृदु बैनु रसाला ॥ गावति गीत भरी रस रीति खरी नवल
 ब्रजबाला ॥२॥ लाल करी है रंगीली सगरी सुडारि अबीर गुलाला ॥ बाढ्यौ
 है रंग अनंग लज्यौ है ‘कृष्णदास’ रस ख्याला ॥३॥

७७ (॥१॥ राग काफी ॥१॥) बेसर कौ मोती जग मोह्यो हो मेरे ललनाँ ब्रजजन
 सब सुख दें ॥१॥ अंजन दै दृग खंजन बैठे बीरी दसन बनाई ॥ चंचल
 चपल देखि मनमोहन मनमथ रह्यो है लजाई ॥२॥ अँगिया अजब कसूँभी
 सारी लहँगा लाल गुलाल ॥ मुजरा लेति स्यामा जु के आगे निरखौगी
 नंदलाल ॥३॥ ब्रिंदावन में मुरली बाजे धुनि सुनि सही न जाई ॥ ‘हरिदास’
 प्रभु बेगि मिलौ हो राखौंगी कंठ लगाई ॥४॥

७८ ॥ राग काफी ॥ बरसाने की नागरि इक नवल मतो जुरि कीनौ
 जु ॥ फगुवा चाहे लाल पै होरी कौ खेलि संग लीनों जु ॥१॥ एकनु केसर
 घोरि कैं हो एकु कनक पिचकाई जु ॥ एकनु बूका बंदन एकु अबीर कपुर
 मिलाई जु ॥२॥ एकनु चोवा मृगमद सुरैंग गुलाल भरि झोरी जु ॥ एक-
 एकु पै डारि हीं मधि सुन्दर राधा गोरी जु ॥३॥ बहु बिधि बाजे साजि
 कै ढँफ दुंदुभि करताला जु ॥ नंद सदन सब आव ही सकल बयस ब्रजबाला
 जु ॥४॥ नंद रानी अरघ दे वारनैं श्री राधा सनमुख हेरे जु ॥ चमकि उठि
 चंद्रावलि सखी वृंद मुख फेरे जु ॥५॥ भीतर धसी गहे लाल कौं भुज भरि
 आने हो लाल जु ॥ श्री राधा की दिसि जाई कैं लाए लाल अमोला जु
 ॥६॥ केसर मुख ते नाइ के इक चोवा मुख लपटावै जु ॥ बंदन बूका डारि
 के होरी की गारि सुनावै जु ॥७॥ रँग अबीर उड़ाई कैं अरुन अंबर लौं
 आयो जु ॥ हो हो बोले रँग सौं मानौ गगन घोरी कैं धायो जु ॥८॥ घोष
 कुलाहल है रख्यो मनौ निरधन धन पायौ जु ॥ भुज भरि भैटे लाड़िलो
 किही बिधि छुटि न जाए जु ॥९॥ ब्रज रानी बरजे सबै मनभायौ फगुवा
 लेओ जु ॥ पट भूषन बहु भाँति के नैकु लालन छोरि देहो जु ॥१०॥ स्याम
 चिते नैकु हेरि कैं सकल सुंदरी बस कीने जु ॥ मन बच क्रम करि वारने
 गिरिधरि सरबसु दीने जु ॥११॥ तब मतो जु कीनों मोहना लीला अनौखी
 आनी जु ॥ सकल मनोरथ पुजे उत धाम काम ऋतु मानी जु ॥१२॥ बरसाने
 जे गोप हैं ते ते स्वरूप हरि लीने जु ॥ उन लच्छन वे कंठ मिलि वे भेख
 परसपर कीने जु ॥१३॥ अपुनी महतारीन सौ सबै बुझति हैं इक गाथा
 जु ॥ मैया तुम कौतुक सुनौ इक नंद कुंवर ब्रज नाथा जु ॥१४॥ आजु
 बेगि घर आव ही वे तिहारे सुत होई जु ॥ तुम हो भोरी बोरी चोरी जानत
 है सब कोई जु ॥१५॥ इक मैया तुम सौं कहौ बात सबै जिय भावै जु ॥
 मैरो रूप धरि आव हीं वे किही मिसि पेट न पावै जु ॥१६॥ मोहन रूप
 है मोहना जग मोहन बस कीनों जु ॥ जंत्र -मंत्र सब जान हीं इन बात
 सबैं बस कीनों जु ॥१७॥ निसचै वे हम घर आव हि सुत नाम लै लै
 बोलै जु ॥ बहुत बल करें आपुनौ क्यों न दरबाजा खोले जु ॥१८॥ जब

वे घर दिसि आव ही हौ इंटन मारि भजावौं जु ॥ मीठी सी बात सुनाबहिं
 वे निज बिसबास न लाओ जु ॥१९॥ सुनौ न चित दे कान तुम भोरी
 अजानी बारी जु ॥ निरदया हूँ बैठियों मति निज ग्रह आई किवारे जु
 ॥२०॥ इतनो बोलि इत हरि घर-घर चढ़े अटारी जु ॥ सकल सुंदरी संग
 पोढ़ि कै रस रीति कला जन टारी जु ॥२१॥ आन फिराई राज की मनमथ
 तू जहँ राजे जु ॥ दृष्टि पोर वा हूँ रहै भाव धरी ग्रह साँजे जु ॥२२॥ भूले
 सुरति के रंग में हो ताकि मारे दृग दीने जु ॥ नैन पुतरी लाज तर्जा हो
 आपु समान सीर कीने जु ॥२३॥ डंड कुचन पै डारि कै मन भाया सो
 कीनां जु ॥ चुंब कपोल दे अंक ले मदन प्रसंसा भीनां जु ॥२४॥ चित
 चोगान गहि लाई कै कुटिल कटाच्छन मारि जु ॥ हाव-भाव के भाग में
 दंपति तहं बिकसति भारे जु ॥२५॥ बरसाने बरखा भई प्रेम नीर झरि आई
 जु ॥ रस बस भई गोपिका मानौं नौ निधि पाई जु ॥२६॥ उत की गति
 हों कहा कहीं गोप सबे घर आए जु ॥ आपुनी आपुनी महतारीन कां टेरि
 दीए दरसाए जु ॥२८॥ पकरे तोरी किवार के हो कोउ न बोलन पाव जु ॥
 बहुत कीन गोप तबे उत तँ इंट चलावे जु ॥२८॥ लागे जु वही अंग पे
 सब भाजत कुदल डोलै जु ॥ भार भरो रे चहुँ दिसि गोप कुलाहल बाले
 जु ॥२९॥ निसा यह गति पाई कै परी रहौ बाग बगीचा जु ॥ गोप सबे
 मन लाई के मति सोच करी सुखीचा जु ॥३०॥ कुल के देव लगे
 मया पे इहि विधि होरी भारी जु ॥ बलि जू सबरे दीजिए सुख पाव नर नारी
 जु ॥३१॥ केते गुन बरनन करों श्रीगिरिधर के गुनन्यारे जु ॥ रसना इक
 बरखाने के को विधि गीने गुन भारे जु ॥३२॥ मद अजान जु हे मेरी मति
 दृष्टि न परे जाई जु ॥ 'दास गदाधर' प्रभु की लीला सुमर-सुमर उर माँही
 जु ॥३३॥

७७. राग काफी ॥ मन हरि लीन्हौ नंद-दुटोना । चितवनि में वाके
 कछु टोना । निरखत सुंदर अंग सलोना । ऐसी छबि कहूँ भई न होना ॥
 काल्हि रहं जमुना तट जीना । देख्यो खोरि सांकरी तौना ॥ बोलत नाहिं
 रहत व मोना । खात रह्यो दधि छीने दौना ॥ घर-घर माखन चोरत जीना ।

बाटनि घाटनि लेवै दौना ॥ खेलत फागु ग्वाल-संग छौना । मुरलि बजाई बिसारै भौना ॥ मो देखत अब ही किय गौना । नटवर अंग सुभ सजे सजौना ॥ त्रिभुवन में बस कियो न कौना । सूर, नंद-सुत मदन-लजौना ॥

८० (११) राग काफी (११) मोहन मूरति माई । सांवरीं, नंद नंदन जिहिं नांवरी । अबहि गये मेरे द्वारैं छै, कहत रहत ब्रज गांवरी ॥ मैं जमुना जल भरि घर आवति, मोहि करि लागौ तांवरी ॥ ग्वाल-सखा संग लीन्हें डोलत, करत आपनौ भावरी । जसुमति कौ सुत, महर-दुटौना, खेलत फागु सुहावरी । सूर, स्याम-मुरली-धुनि सुनि री । चित न रहत कहुं ठांवरी ॥

८१ (११) राग काफी (११) महा मोहन डोटा सांवरी हो अरी मेरी लीनों है चितचोर ॥ राजति आजु महारंग भीनि ठाड़े हैं सांकरी खोर ॥१॥ सोभित रतन जटित पिचकाई अबीर भरे भरि फैट ॥ संग खरे अनुराग भरे सो भई है अचानक भेंट ॥२॥ दुरि रहि ढीली पाग रंगीली कुंचित कच न समाई ॥ चंचल नैन अरुन अनियारे छबि भरे मुरि-मुरि जाई ॥३॥ जगमग रहे सबनन कुंडल गंडन लग्यौ है गुलाल ॥ कान्ह कुंवर की मूरति देखैं चलि न सकत तिहिं काल ॥४॥ चितयौ काहू भांति सखियन करी है मदन सर घात ॥ पान भरे मुख हैंसि मोसौं कहीं प्रेम लपेटी बात ॥५॥ रूप ठगोरी किधौं अरगजा दियौ मोपे दुरकाई ॥ बूका मंत्र मनौं पढ़ि डार्यौ तन-मन लियौ अपनाई ॥६॥ भूली लाज कानि की सब सुधि चित न अनत ठहराई ॥ 'राम राई' कहै चित भगवानैं स्याम कौ संग सुहाई ॥७॥

८२ (११) राग काफी (११) मन हर्चौ री बिहारी की देखि लटक ॥ मेरे मन में रही जाकी मूरति अटक ॥१॥ जमुना तट पनघट के ऊपर ठाड़ौ त्रिभंगी लाल ठठकि ॥ चटक-चटक मुख गारी गावैं मटक-मटक नाचै गति लै लटक ॥२॥ मोर मुकुट कटि पियरी सौ पट, जाके देखति भजी जिय की भटक ॥ ब्रज दूल्है की रूप माधुरी मेंटत मान मदन की खटक ॥३॥

८३ (११) राग काफी (११) मोहि होरी खेलन कौ चाव री बेरन जान दै ॥

ब्रज कि बीथनि में नंद कौं लैंगरवा वाहि सौं खेल मचान दै ॥१॥ रंग भिजोई करौं आलिंगन तनकि तपति बुझान दै ॥ 'सरस रंग' नैन में बस्यौ आलि काहे कौं लोग हँसान दै ॥२॥

८४ (११) राग काफी (११) मोहन ! गए आजु ? तुम जावौ, दाँव आपनौ लेहिं ॥ लालन हमहिं बिहाल करै जो, सोई हम फल देहिं ॥ आजुहि दाव आपनौ लेतीं, भले गए हौं भागि ॥ हा हा करते, पाइनि परते, लेत पितांबर मांगि ॥ बेनी छोरत, हँसत सखासौं, कहत, लेहु पट जाई ॥ सौंहैं करत हौं नंद बबाकी, अपनी अपति कराई ॥ जो मैं लेहुं पितंबर अबहीं, कहा देहुगे मोहि ॥ इत उत जुबती चितवन लागीं, रहीं परसपर जोहि ॥ एक सखा हरि, तिया-रूप करि, पठे दियौ तिन पास ॥ गयौ तहाँ मिलि संग तियनि कें, हँसत देखि पट-बास ॥ मोहि देहु राखौं दुराइकैं, स्यामहिं जनि लै देहु ॥ लियौ दुराई गोद में राख्यौ, दाँव आपनौ लेहु ॥ पीताम्बर जनि देहु स्याम कौं, यह कहि चमक्यौ ग्वाल ॥ सूर, स्याम पट फेरत करसौ, चकित निरखि ब्रज-बाल ॥

८५ (११) राग काफी (११) या खेलौं रंग फागु री ॥ कनक कमोरी में केसरि घोरी, छिरकौं मैं पिय की पाग री ॥१॥ चोवा चंदन औरु अरगजा चोली पै डारुं दाग री ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे खुले हमारे भाग री ॥२॥

८६ (११) राग काफी (११) राधा माधौ संग-खेली ॥ बार-बार लपटाति स्याम-तन कनक-बाहु पिय गल मेली ॥ चोवा-चंदन सरस कुँमकुमा बहुत सुगंध अबीर ॥ कुसुम माल राजति उर-अंतर प्रहसित जादौ-वीर ॥ मदन-महोच्छव फाग मनोहर रति-रस फागुन मास ॥ गोप-बधू गावति नाना रंग बलि 'परमानंददास' ॥

८७ (११) राग काफी (११) राधा-मोहन रंग भरे हैं, खेल मच्यौ ब्रज खोरि । नागरि संग नारिगन सो हैं, स्याम ग्वाल-संग जोरि ॥ हरि लिय हाथ कनक पिचकारी, सुरंग कुंकुमा घोरि । उतहिं माट कंचन रंग भरि-भरि, लै आई

तिय जोरि ॥ आतुर है धाई उत नागरि, इत बिचले सब ग्वाल । घेरि लई सब खोरि साँकरी, पकरे मदन गुपाल ॥ गढ्यौ धाई चंद्रावलि हैसिके, कढ्यौ भले हो लाल । जनि बल करौ, नैकु रहु ठाढ़े, जुरि आई ब्रज-बाल ॥ आई हंसति कहति, हरि येइ, बहुत करत है गाल । क्यों जू खबरि कहौ, यह कीन्हीं, करत परसपर ख्याल ॥ काहू तुरत आई मुख चूम्यौ, करसौं छुयौ कपोल । कोउ काजर, कोउ बंदन माँड़ति, हरषहिं, करहिं कलोल ॥ कोउ मुरली लै लगी बजावन, मन-भावन मुख हेरि । किनहुं लियौ छोरि पट कटिते, वारत तन पै फेरि ॥ सबननि लागि कहति कोउ बातें बसन हरे तेइ आप । काल्हि कढ्यौ करिहौ कह मेरौ, प्रगट भयो सोइ पाप ॥ कोउ नैननि सौं नैन जोरिकैं कहति, न मो-तन चाहु । अबहीं तुम अकुलात कहा हौ, जानहुगे मन लाहु ॥ घेरि रहीं सरघा की नाई, करति सबै मन लाह । इक बूझति इक चिबुक उठावति, बस पाए हरि नाह ॥ पीतांबर मुरली लई तबहीं, जुबती-स्वांग बनाई ॥ देखत सखा दूर भै ठाढ़े, निरखत स्याम लजाई ॥ नख-छत-छाप बनाई पठाए, जानि मानि गुन येहु । 'सूर स्याम' हमकों जनि बिसरौ, चिन्ह यहै तुम लेहु ॥

८८ (११) राग काफी (११) रंग गुलाल के नैना राते ॥ गए जु अबधि करि मोसों प्यारे फिर अति मुसिकाते ॥१॥ होरी के दिनन में मोहि छांड़ि पिय अनत कहाँ तुम जाते ॥ को खेलै गोकुल पति तुम सौं, सोंह वृथा क्यों खाते ॥२॥

८९ (११) राग काफी (११) रंग भीनीं होरी हो खेलौंगी स्याम सौं ॥ चोवा चंदन औरु अरगजा छिरकौंगी बिसराम सौं ॥१॥ हौं तौ पियारे कौ न्यारौ न करि हों राखौंगी आदर मान सौं ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' कैं प्रभु सौं मेरो काम जु अपने राम सौं ॥२॥

९० (११) राग काफी (११) लालन! प्रगट भए गुन आजु, त्रिभंगी लालन ऐसे हौ । रोकत घाट बाट, गृह-बनहुं, निबहति कहिं कोउ नारि ॥ भली नहीं यह करत सांवरे, हम दैहैं सब गारि ॥ फागुन में तो लखत न कोऊ,

फबति अचगरी भारि ॥ दिन दस गए, दिना दस औरों, लेहु साध सब सारि ॥ पिचकारी मोकों जनि छिरकौ, झरकि उठी मुसुकाई ॥ सासु-ननद मोकों घर बैरिनि, तिनहिं कहों कह जाई ॥ हा हा करि, कहि नंद दुहाई, कहा परी यह बानि ॥ तासों भिरहु तुमहिं जो लायक, इहिं हेरनि मुसुकानि ॥ अनलायक हम हैं, की तुम हो, कहौ न बात उधारि ॥ तुमहूँ नवल, नवल हमहूँ हैं, बड़ी चतुर हो ग्वारि ॥ यह कहि स्याम हँसे, बाला हँसि, मनही मन दोउ जानि ॥ 'सूरदास' प्रभु गुननि भरे हो, भरन देहु अब पानि ॥

९१ (१११) राग काफी (१११) सांवरासुं में खेलुं न होरी ॥ में निकसी घरते दधि बेचन ॥ मिल गयो सांकरि खोरी ॥ आय अचानक पकरी मोकुं ॥ मही की मदुकी ढोरी ॥ लाल मेरी बैया मरोरी ॥१॥ अबीर गुलाल आँखन में डायो ॥ हँसत हँसत मुख मोरी ॥ घुंघट खोल दै गुलचा सिर ॥ केसर गागर ढोरी ॥ चुनरीया रंग में बोरी ॥२॥ गावत गारी दै-दैकर तारी, बैया पकर झकझोरी ॥ कंचुकी खेंच दीयो कर उपर ॥ मोतिन माला तोरी ॥ बोले मुख हो हो, होरी ॥३॥ कहा करुं कित जाउँ मोरी सजनी ॥ लाज न गई कछु थोरी ॥ मन भायौ सो कियौ मनमोहन ॥ सो मैं सबहि सच्चोरी ॥ एसी मैं तौ मन की भोरी ॥४॥ या ब्रज में कहो कैसे रहिये ॥ निर्लज नंदकिशोर ॥ गिरिधर प्रभु के नैन रसीले ॥ चितवत लेत चितचोरी ॥ नहि या जुग में जोरी ॥५॥

९२ (१११) राग काफी (१११) सांवरे कों मै रंग सों भरौंगी ॥ आँखि आँजि मुख मांड़ि पीतम कों अब काहु सों मैं नांही डरौंगी ॥१॥ फगुवा लै पीतांबर देहु औरु बहुत भांति के नाम धरौंगी ॥ 'मानिक चंद' प्रभु मोहि सौंह तिहारी अब कौ फागु में सुफल करौंगी ॥२॥

९३ (१११) राग काफी (१११) होरि खेलति ब्रज कुंजन महिया ॥ नंद नंदन सों अति रति बाढ़ी लाड़िली बिहरति कदंब की छैया ॥१॥ पौढ़न के समै के औसर और न कोऊ रह्यो तिहिं सैया ॥ 'सरस रंग'-संतत यह जोरि पीतम प्यारी बिना कोऊ नहिया ॥२॥

९४ (१५) राग काफी (१५) हो मेरी आली री हो मेरी आली री, श्री यमुनाजी के तीर गुलाल की मार पड़ी ॥ तुम देखो राधे रंग भरी, हो मेरी आली री, हो मेरी आली री ॥ इत मोहन उत राधिका, बिच-बिच नाचे ग्वालन, राधे रंग भरी ॥१॥ हो मेरी आली री, हो मेरी आली री, मदन मोहन जू की बांसुरी ॥ तुम लीने राधा छीन, तुम फगुवा दियो है मंगाई ॥२॥ हो मेरी आली री, हो मेरी आली री, 'सूरदास' प्रभु सांवरो सब सखियन को सिंगार ॥३॥

९५ (१५) राग काफी (१५) हम तुमसों बिनती करें, जनि, आँखिनि भरौ गुलाल । सखौ परत हम पै नहीं ये, निपट अनोखौ ख्याल ॥ दरसन तैं अंतर परे हो, करहु अबीर अबीर । तुमहि कहौ कैसे जियैं जहँ, मीन न पावैं नीर ॥ स्याम ! तुम्हारे रंग रंगी कछु, और न रंग सुहाई । नितही होरी खेलियै हो, तुम संग जादवराई ॥ यह फगुवा हम पावहीं हो, चितवनि मृदु मुसुकान । सूर स्याम करौ जू, तुम हौ जीवन-प्राण ॥

९६ (१५) राग काफी (१५) होरी लाल खेलै मुख देखनिदा चाव ॥ उत तै आवै सो मन भावै संग लगाई मिलाव ॥१॥ सहरागी साहुरो सहरागी साहुरो सेज सुभाई ॥ देवर घोरानी अति दुःखदाई कीजै कहा उपाई ॥२॥ हो लग और सहा किन आवौ मो जिय यह उछाह ॥ 'जन हरिया' प्रभु कौं मिलौंगी होंगी बे परवाह ॥३॥

९७ (१५) राग काफी (१५) हो हो होरी कहि कहि, नव दुलहिन कौननि में भवननि, मै दुरि-दुरि हो ॥ निपट सुसील झील की टेरनि, गाबति हैंसति दै तारी मुरि-मुरि हो ॥१॥ सब तैं सरस देखिये सुंदरि, निरखि स्वरूप, परति रतिपति झुरि-झुरि हो ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु आवति रंग भीने, अति दुरि-दुरि हो ॥२॥

९८ (१५) राग काफी (१५) ए दोऊ खेलति होरी हो ॥ होरी नहीं बरजोरी ॥१॥ ब्रज की वधू अटा चढ़ि ठाड़ी झाँकति लै पिचकारी ॥ छूटी अलक कुंडल सौं उरझी उरझी पीत पिछौरी ॥ चलो सुर गावै गोरी ॥१॥ भुज

भरि भेटि सकुच गुरु जन की मिलि करि छिप्यों री ॥ 'परमानंद' रूप
रस भीजे अबीर लिए भरि झोरी ॥ बोलें सब हो हो होरी ॥२॥

९९ (११) राग काफी (११) आजु रस खेलति फागु बीनी छुटति मुठि गुपाल
लाल की मुरि मुरि जात अनी ॥ इत कौं ठाड़ी कुँवरि राधिका उत गोकुल
कों घनी ॥१॥ चोवा कौं डोवा करि ललनां केसरि कीच घनी ॥ तारी
दै पिचकारीन छिरकति सारी जात सनी ॥२॥ तुम कहियतु गिरिवर के
ठाकुर राखति मान मनी ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु सौं राधे फागु
ढनीं ॥३॥

१०० (११) राग काफी (११) मनमोहन रिझवार री तेरे नैन सलोनें ॥ तू
अलबेली आनं गाम की अब ही आई गोने ॥१॥ खेलति नांहि फागु गिरिधर
सौं धरजु रही मुख मोने ॥ मेरे बगर में अब ही होरी के केतिक कौतिक
होने ॥२॥ नीची दृष्टि करे नहीं चितवत यह सिखई कहो कोने ॥ 'कृष्ण
जीवन लछीराम' के प्रभु कौं देखत हों न लजोनें ॥३॥

१०१ (११) राग काफी (११) या हिं तैं पीय तेरो नाम धर्यौ हें ढीठ ॥ होरी
आई है मन भाई पायो जतन करि नीठ ॥१॥ मोय देखि उपहास करत
सब आइये मोहन मीत ॥ सुनों स्याम समझाई कहेत हों गुप्त राखीए पीति
॥२॥ कबहुं सैन दै भाजि जात हो यह जो करत अनीत ॥ जानति हों पीय
हो बहु नाईक परति नहीं परतीत ॥३॥ कबहुं क रवकि कंठ लपटावति कबहुं क
चलति दै पीठ ॥ 'श्री विठ्ठल गिरिधरन लाल' तुझे लगे न काहू की दीठि ॥४॥

१०२ (११) राग सारंग (११) रंगीली होरी खेलै रंग सौरंग रंगीली लाल ॥
रंगीली ॥ रंग रंगीली श्री राधिका सँग रंगीली बाल ॥ रंगीली ॥१॥ भाजन
भरि भरि रंग के केसु केसर नीर ॥ रंगीली ॥ चोवा चंदन अरगजा सँग
गुलाल अबीर ॥२॥ सौंधे संगबगे तन सोहै बसन रंगमगे रंग ॥ स्यामा
अपने जुथ सौं स्याम सरखा लीये सँग ॥३॥ पटह निसान महुवरि बाजति
ताल मृदंग ॥ दुहुं दिसि सुघर समाज सौं उपजति तान तरंग ॥४॥ जुरे
टोल दोऊ आई कै रहै उमँग रस पाग ॥ करन मनोरथ आपनौं ज्यों मन

में अनुराग ॥५॥ जम्प्यों रँग चौंचरि मच्यों कहा कहु सुर साँच ॥ अंग
 अनंग न लाय के भ्रुकुटी नैननि नाँच ॥६॥ उमँग्यों आनंद क्यों रहे कापे
 रोक्क्यौ जाई ॥ औचक हो हो करि उठी दीनै सब टहुकाई ॥७॥ सीमटि
 सखा सनमुख भयी जल मंत्रन मार मचाई अबीर गुलाल उड़ाई केँ दिनमनि
 दीयौ छिपाई ॥८॥ मेघ घटा ज्यों छाई केँ बरखन लागी आई ॥ तन सौं
 तन सुझति नहि चंद उज्यारी भाई ॥९॥ बंसन मार मचाई केँ दीनै सखा
 भजाई ॥ हरि हलधर गहि पाई केँ दीयै जीत के बाजे बजाई ॥१०॥ घेरि
 रही चहुँ और तें भाजन कौं नहि दाव ॥ अकबक से मन व्हे रहै भुले सकल
 उपाव ॥११॥ हँसति सखी सब तारी दे दे आवे करि आवेस ॥ फाग में
 प्रभुता को गीनै कीयै है चोर के भेष ॥१२॥ इक सखी ढिंग आई केँ बोली
 चिबुक उठाई ॥ कहति मौन गहि क्यों रहें ठग केसैं लडुवा खाई ॥१३॥
 नैन आँजि मुख माँडि केँ हलधर दीने छाँड़ि ॥ ग्वाल सखन की लाज तें
 लियौ है नीलांबर आडि ॥१४॥ दृग मुख पोंछति जब चले बहुत खिसानें
 होई ॥ हँसति सखा बलराम सौं आए एक गए दोई ॥१५॥ कीलकि कीलकि
 हँसि यौं कहै धन्य तिहारौ खेलि ॥ भाजे जीव बचाई केँ निज भैया कौं
 मेलि ॥१६॥ संकरषन तब यौं कह्यौ तुम ही लावो जीति ॥ बड़े मिलनीयौं
 मिलि गयै भूलै मन प्रतीति ॥१७॥ इत गोपी नंदराई केँ आई भवन मँझारि ॥
 द्वार कपाट बनाई केँ लै घेरे दोऊ सार ॥१८॥ इत राधा नंदलाल कौं करि
 एकांत इक ठौरि झूमकि चेतब गाव हि जुरि जुथ सब पौरि ॥१९॥ ल्हेकन
 रस बस व्हे रही राखति बाजति ढोल ॥ जो चाहै सौं लीजियै नंद बदति
 यौं बोल ॥२०॥ राधा माधो बोलि केँ लै आई पुन पास ॥ नंद जसुमति
 बोलिकें पुजवाई जिय आस ॥२१॥ दोऊ रँगमगे रँग में मिल कीनों एक
 बिचार ॥ इत गठजोरो जोरी केँ राधा नंदकुमार ॥२२॥ महरि घर आनंद
 बढ्यौ लीयै गोद बैठारि ॥ पाट पाटंबर लै दीयै मनि कंचन नग वारि ॥२३॥
 सब बिधि सब भाये भयै पुरई मन की आस ॥ या घर या सुख कारनैं
 भावति ब्रज कौं बास ॥२४॥ गोपीजन हित कारनैं गोप भेष अवतार ॥
 ब्रिंदावन बसति सदा जहाँ क्रीड़ा नित बिहार ॥२५॥ श्री विट्ठल पद रज

कृपा ऐसा हिय में ध्यान ॥ 'छीत स्वामी' गिरिधरन कौं कीनों सुजस
बखान ॥२६॥

१०३ (॥१॥) राग काफी (॥१॥) रसिक फागु खेलै नवल नागरि सौं सरस
बर ऋतुराज की ऋतु आई ॥ पवन मंद अरबिंद औरु कुंद बिकसे विषद
चंद पीय नंदसुत सुखदोई ॥१॥ मधुप टोल मृदु बोल सँग सँग डोले पिकन
बोल निरमोल सुति चारु गाई ॥ रचित रास सौं बिलास जमुना पुलिन
में सघन ब्रिंदा बिपुन रही फूलि जाई ॥२॥ कनक अंग बरनी सुकिरनी
बिराजे गिरिधर नव जुबराज गजराज राई ॥ जुबती हंसगामी मिले 'छीत
स्वामी' क्वनित बैनु पद रैनु बडभाग पाई ॥३॥

१०४ (॥१॥) राग काफी (॥१॥) फागुन मास सुहायो ॥ रसिया होरी खेलनि
आयो ॥ अबीर गुलाल भरे फेंटन में दौरि बदन लपटायो ॥ हो रसिया०
॥१॥ गारी गावे भाव बतावे रस भर रीझि रीझायो ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम'
के प्रभु कौं नाना भाँति नचाँयो ॥ हो रसिया०॥२॥

१०५ (॥१॥) राग काफी (॥१॥) खेलन दे मोए होरी रसिया ॥ जाने न देउंगी
गही राखुंगी ॥ मेरी काहेकुं बहीयां मरोरी ॥१॥ सखी सब मिलि होरी
खेले ॥ में कहा कीनी चोरी ॥२॥ चोवा चंदन और अरगजा ॥ केसर
गागर भरि होरी ॥३॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु सौं ॥ फगुवा लीयो
भरि भरि झोरी ॥४॥

धमार के पद - राग सारंग

१ (॥१॥) राग सारंग (॥१॥) स्याम छबीले मन हरयो श्रीवृंदावन के चंद ॥
ललनां ॥१॥ मोहन मेरे द्वार व्हे उझक चले जबभोर ॥ ललनां ॥ झलकत
श्रीमुख देखिये चितेलियो चितचोर ॥१॥ मस्तक पंख मयूरके गरें गुंजा
के पुंज ॥ वेणु बजायो हो सखी नागर नवल निकुंज ॥२॥ सुंदर स्याम
सुहावनो ओर सुंदर वन माल ॥ ओढें सुंदर पटपीयरो सुंदर नयन विशाल
॥३॥ हियपरी जोता लावेली सुन मुरली की घोर ॥ चल सखी देखन जाइये
नागर नवल किशोर ॥४॥ माईरी मनन रहे क्यों राखिये राखत नहीं रहाय ॥

कोटि यत्नजो कीजिये जहां प्रीतम तहां जाय ॥५॥ कैसें राखों क्यों रहे कैसें के बन जाय ॥ कैसें के गिरिधर मिलें सोमिस कोन कराय ॥६॥ कसें संग मिल खेलिये सास ससुर की लाज ॥ लाज किये दुःख पाइये बिन मिले होय अकाज ॥७॥ ऊंचे जो गिरिधर वसें जो नीचें घर होय ॥ बिना बुलायें बोलिये नयन निरख सुख होय ॥८॥ वन वपुरी हरनी भली अपने पतिन समेत ॥ निस दिन श्री मुख देख हीं नयनन को फललेत ॥९॥ लटकन लटकें फूलके घूंघर वारे केश ॥ गाय गोप के वृंदमें बलहारी यह वेश ॥१०॥ सांझ समें घर आवही मुदित सकल ब्रजबाल ॥ मदन मोहन के वारनैं बल बल दास गोपाल ॥११॥

२ ॥ राग सारंग ॥ ललना तुम मेरे मन अतिवसो सुंदर चतुर सुजान ॥ ललनां ॥ करगहि मोंहन मुरलिका नीकें सुनावो तान ॥ ललनां ॥१॥ मोर मुकुट सोभाबनी सुंदर तिलक सुभाल ॥ मुख पर अलका बलि विथुरी मनहुं कमल अलिमाल ॥२॥ अधर दशनबरनासिका ग्रीवा चिबुक कपोल ॥ पीतांबर क्षुद्र घंटिका लाल काछनी डोल ॥३॥ नखसिख अंग वरनों कहा अंगअंग रूप अतोल ॥ पटतर कों कोऊ नहीं अति मीठे मृदुबोल ॥४॥ एक दिनासेनन मिले नवल कुंवर ब्रजराज ॥ ग्रहते आवन ना बन्यों भई बेरिन कुल लाज ॥५॥ ग्रहते गोरस मिस चली लाज छाड कुलऐन ॥ वे मुसिकनि हृदेवसी अति अनियारे नयन ॥६॥ कहा जानें तुम कहा कियो ग्रह अंगना न सुहाय ॥ बिन देखें नागर प्यारो युग समान पलजाय ॥७॥ सकल लोक मोहि वरजही पचिहारे समझाय ॥ नहीं भावे मोहि कुलकथा मोहि तिहारी चाय ॥८॥ ग्वालिन पर गिरिधर रीझे लीला कही न जाय ॥ गोपालदास प्रभु लाल रंगीलो हंसलीनी उरलाय ॥९॥

३ ॥ राग सारंग ॥ तें मोहन को मन हरयो और तो बिन रह्यो न जायरी प्यारी ॥१०॥ कुंज महल बैठे पिया नव पल्लव तल्पसंवार ॥ वीच जुही विच सेवती विच विच नवल निवार ॥१॥ तुव पथ बैठ निहारही कुंज कुटी के द्वार ॥ लोचन भर भर लेतहें सुंदर ब्रज राजकुमार ॥२॥ अपने कर नख गूथहिं विविध कुसुम की चोली ॥ तेरे उर पहरावहीं चलो वेग

उठबोली ॥३॥ कबहुं नयनन मूदके करत वदन तुवध्यान ॥ तनपुलकित भुजभेटही करत स्वकीय धरपान ॥४॥ चंददेख आनंद ही तुव मुख की अनुहार ॥ यह छबि वाहिन पूजही निरख कलंक विचार ॥५॥ यद्यपि सकल ब्रज सुंदरी कबहुं न मन अरुझाय ॥ चातुक जलधर बूंद ज्यों भुवजल तृषा न जाय ॥६॥ पियको प्रेम सखी मुख सुन्यों तब ही चली उठधाय ॥ गोविंद प्रभु पिय सों मिली रहसि कंठ लपटाय ॥७॥

४ ॥ राग सारंग ॥ सुरंगी होरी खेले सांवरो ब्रज वृंदावन मांझ ॥ सुरंगी ॥ ब्रज की नवल जु नागरी धिर आई सब सांझ ॥ सुरंगी ॥१॥ सरस वसंत सुहाबनो ऋतु आई सुखदेन ॥ माते मधुपामधुपनी कोकिल कुलकल वेन ॥२॥ फूले कमल कलंदजा केसू कुसुम सुरंग ॥ चंपक बकुल गुलाल के सोंधे सिंधु तरंग ॥३॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा पठये सखा पढाय ॥ वाजे साजे वनरंगी लीने मोल मढाय ॥४॥ झाझ मुरज डफ बांसुरी भेरिनकी भरपूर ॥ फूंकन फेरी फेरिकें ऊंची गई श्रुति दूर ॥५॥ ब्रजको प्रेम कहा कहूं केसर सों घटपूर ॥ कंचन की पिचकाईयां मारत हैं तकदूर ॥६॥ आंधी अधिक अबीर की चोवा की मची कीच ॥ फेली रेल फुलेल की चंदन वंदन बीच ॥७॥ ब्रजकी नवल जु नागरी सुंदर सूर उदार ॥ खेलन आई सबें जुरी श्रीराधा के दरबार ॥८॥ फूल डंडा गहि हाथ सों मारत बांह उठाय ॥ चंचल अंचल फरहरे पेने नयन चलाय ॥९॥ श्रीराधा की प्रिय सखी ललिता लोल सुभाय ॥ छलकर छेले छिरककें हंसि भाजी डहकाय ॥१०॥ नारी को भेष बनायकें पठयो सखा सिखाय ॥ अतिही अधिक कहावती ललिता भेटी जाय ॥११॥ गेंदुक कीनी फूलकी दीनी श्रीराधा हाथ ॥ आय अचानक ओचका तक मारी ब्रजनाथ ॥१२॥ ब्रज की वीथनि सांकरी उत यमुना को घाट ॥ बलदाउ कों बोलकें दीने गाढे कपाट ॥१३॥ हलधर हैं जु महाबली सांचे हैं बलरास ॥ बलिको बलजो कहा भयो गहि बांधे भुज पास ॥१४॥ नयनन अंजन आंजिके सोंधो ऊपर डार ॥ पाय परि द्वारे पटदये रसकी रास विचार ॥१५॥ फिर भाजी सब दे दगा आनन दीने और ॥ मदन गोपाल बुलायकें गहिलाई वरजोर ॥१६॥ गिरिधारचो



करवामसों खरमारयो गहिपाय ॥ तिनको भार कहा भयो ललिता लेत उठाय ॥१७॥ घरमें घेर सबें चली श्रीराधा कों संगलेत ॥ दोऊ जनअंच मिलायकें नयनन कों सुखदेत ॥१८॥ तब ललिता हैंसियों कढ्यो श्रीराधा कों सिरनाय ॥ नीलांबरसों ढांपकें मुख मूंद्यो मुसिकाय ॥१९॥ उतश्रीदामा अचगरो इतललिता अतिलोल ॥ बीच विसाखा साखिदे मुरली मांगत ओल ॥२०॥ ब्रजवासी वृषभान को मदनसखा वाको नाम ॥ स्याम मतेकोमिलनियां वसकीनों सब गाम ॥२१॥ पठयो मदनवसीठही ढीठ महा मदलोल ॥ छिन ओरे छिन ओर व्हे छाक्यो छेलदुछोल ॥२२॥ मदनामदन गोपाल को हलधर कों लेआय ॥ श्रीराधा की दिसजायकें चांपतहें हैंसिपाय ॥२३॥ श्रीदामा हैंसियों कढ्यो मेवा देहु मंगाय ॥ नैंक हमारे स्याम कों आनन को मधुप्याय ॥२४॥ भाग सुहाग सबें बढ्यो खेलत फाग विनोद ॥ राधा माधो बैठारे ब्रजरानी की गोद ॥२५॥ भूषण देत यसोमति पोहोंची पान पछेल ॥ टीको टीकी टीकावली हीरा हार हमेल ॥२६॥ श्रीविठ्ठल पद पद्म की पावन रेणु प्रताप ॥ छीत स्वामी गिरिधर मिले मेटे तन के ताप ॥२७॥

५ (॥१॥ राग सारंग ॥१॥) अहो पिय लाल लडेंती को झूमका सरस सुर गावत मिल ब्रजबाल अहो कल कोकिल कंठ रसाल ॥ लाल बल झूमका हो ॥ध्रु०॥ नवजोबनी शरद शशि वदनी युवती यूथजुर आई ॥ नवसत साज सिंगार सुभग तन करन कनक पिचकाई ॥ एकन सुवन यूथ नवलासी दामिनि सी दरसाई ॥ एक सुगंध संभार अरगजा भरन नवल कों आई ॥१॥ पहरें वसन विविध रंग रंगन अंग महारस भीनी ॥ अतरोटा अंगिया अमोलतन सुख सारी अति झीनी ॥ गजगति मंदमराल चाल झलकत किंकिणी कटिछीनी ॥ चोकी चमक उरोज युगल पर आन अधिक छबिदीनी ॥२॥ मृगमद आड ललाट श्रवण ताटंक तरणि द्युति हारी ॥ खंजन मान हरण अखियां अंजन रंजित अनियारी ॥ यह वानिक बन संग सखी लीनी वृषभान दुलारी ॥ एक टक दृष्टि चकोर चंद ज्यों चितये लाल विहारी ॥३॥ रुरकत हार सुदार जलज मणि पोत पुंज अति सोहें ॥ कंठसरी दुलरी दमकनि चोका चमकन मन मोहें ॥ वेंसर थरहरात गजमोती रतिभूली गति जोहे ॥



सीस फूल श्रीमंत जटत नग वरण करण कवि कोहें ॥४॥ नवल निकुंज महल रस पुंज भरे प्यारी पिय खेलें ॥ केसर ओर गुलाल कुसुम जल घोर परस्पर मेलें ॥ मधुकर यूथ निकट आवत झुक अति सुंगंध कीरेलें ॥ पीतम श्रमित जान प्यारी तब लाल भुजा भर झेलें ॥५॥ बहुविध भोग विलास रास रस रसिक विहारण रानी ॥ नागर नृपति निकुंज विहारी संग सुरतरति मानी ॥ युगल किशोर भोर नहिं जानत यह सुख रेनविहानी ॥ प्रीतम प्राण प्रिया दोऊ विलसत ललितादिक गुणगानी ॥६॥

६ ॥ राग सारंग ॥ मोहन खेलत होरी ॥ ध्रु० ॥ बंसीवट यमुना तट कुंजन तर ठाड़े बनवारी ॥ उतही सखिन को मंडल जोरें श्रीवृषभान दुलारी ॥ होडा होडी करत परस्पर देतहें आनंद गारी ॥ भरें गुलाल कुंकुमा केसर करन कनक पिचकारी ॥१॥ बाजत वेणु बांसुरी किन्नरि महुवर ओर मुख चंगा ॥ आवज अमृत कुंडली अघवट ताते सरस उपंगा ॥ ताल मृदंग झांझ डफ बाजत सुरके उठत तरंगा ॥ गावत नाचत करत कौतूहल छिरकरत केसर अंगा ॥२॥ तबही स्याम सब सखा बुलाये सबहिन मतो सुनायो ॥ अरे भैया तुम चौकस रहीयो मत कोऊपाय गहायो ॥ जो काहु को पकर पायहें कर हें मन को भायो ॥ ताते सावधान ब्रह्म रहियो में तुमको समुझायो ॥३॥ तबही किशोरी राधा गोरी मनमें मतो जुकीनों ॥ एक सखी तहां बोल आपनी बेष सुबल को दीनों ॥ ताको मिलन चले उठ मोहन सखान कोऊ चीनों ॥ नेंसिकवात लगाय लालकों पाछेते गहिलीनों ॥४॥ आई सिमट सकल ब्रज सुंदरि मोहन पकरे जबही ॥ मांगत हुती यही विधिनापें दाव जो पायो अबही ॥ तब तुम वसन हरेजु हमारे हा हा खाई सबही ॥ अब हम वसन छीनि कें लेहें हा हा खेहो तुमही ॥५॥ एक कहे नेंक वदन उधारो हम हूं देखन पावें ॥ एक कहे मुखमांड स्यामको माथे बेंदालावे ॥ श्रीमुख कमल नयन मेरे मधुकर तिनकी तृषा बुझावें ॥ एक कहे नेंक इनहिं नचावो हमसब ताल बजावें ॥६॥ एक सखी मधुरे स्वर गावें मुखते गारी भाखें ॥ एकजु हैंसत दूर भई ठाडी घूंचट पटमुख ढांके ॥ एक सखी हरि को मुख चितवत तनकी दशा न ताकें ॥ श्री हरि चरित्र अंतको पावे सबहिन

की दिसताकें ॥७॥ एक जु सखी आय पाछेते मोर पक्ष गहिलीनो ॥ एक अचानक आय लालको पीतांबर गहिछीनो ॥ एकन आंख आंज मुख मांडयो ऊपर गुलचादीनों ॥ मानत कोन फाग में प्रभुता मन मान्यों सो कीनों ॥८॥ एक कहे बोलो बलभैया तुमें ही आन छुडावे ॥ सखा एक पठवो तुम घरलों जसुमति कों लेआवे ॥ छल बल सों छूटयो चाहतहो गहेन छूट न पावें ॥ श्रीराधाजू की करो वीनती सो तुम भले हि छुडावें ॥९॥ दूरही ते देखे बलआवत एक सखी उठधाई ॥ छल बल कर जेसें तेसें कर उनहूं कों गहिलाई ॥ आन पकर इक ठोरे कीने हरिहलधर दोऊ भाई ॥ उनहूंकी आंख आंज मुख मांडयो श्रीराधाजू सेन बताई ॥१०॥ करजोरें हरि हलधर ठाडें आज्ञा हम कों कीजे ॥ जो कछु इच्छ होय तुमारी फगुवा हमसों लीजे ॥ हंसहंस बात कहत मनमोहन बोवत सुख के बीजें करो विदा जाय अपनेघर पीतांबर मेरो दीजें ॥११॥ देख देख ब्रह्मा शिव नारद मनहींमन पछिताई ॥ ये बड भाग्य सकल व्रज वनिता हम मुख कही न जाई ॥ ज्याकारण हम ध्यानरत हें ध्यानहूं आवत नाहीं ॥ सो देखो व्रज युवतिन आगें ठाडे जोरे बांही ॥१२॥ तब ही स्याम सब सखा बुलाये फगुवा बहुत मंगायो ॥ जो जाके जेसो मन मान्यों तेसो ताहि पहरायो ॥ श्रीजगन्नाथराय चिरजीयो सबको भलो मनायो ॥ बाढो वंश नंद बावा को माधोदास यश गायो ॥१३॥

७  राग सारंग  ग्वालनि सोंधे भीनी अंगिया सोहे केसर भीनी सारी ॥ लहेंगा छापेदार छबीलो छीन लंक छबि न्यारी ॥१॥ अधिक वार रिझवार फाग खिलवार चलत भुजडारी ॥ अतर लगाये चतुर नारि तब गावत होरी की गारी ॥२॥ बडी बडी वरुणी तरुणी करिणी रूप जोबन मतवारी ॥ छबि फुलेल अलकें झलकें ललकें लखछेल विहारी ॥३॥ हाव भाव के भवन केशों भ्रूंहन की उपमा भारी ॥ वसीकरन केशों जंत्रमंत्र मोहन मनकी फंदवारी ॥४॥ अंचलमे न समात बडी अखियां चंचल अनियारी ॥ जानों गांसी गजबेल कामकी श्रुति खरसान संवारी ॥५॥ वेसर के मोती की लटकन मटकन की बलहारी ॥ मानों मदन मोहन जूको मन अचवत अधर सुधारी ॥६॥ बीरी मुख मुसकान दशन चमकत चंचल चोकारी ॥

कोंधि जात मानों धनमें दामिनि छबि की पुंज छटारी ॥७॥ स्याम बिंदु
गोरी ठोडी में उपमा चतुर विचारी ॥ जानों अविंद चुभ्यो न चले मचल्यो
अलिको चिकुलारी ॥८॥ पोति जोति दुलरी तिलरी तरकुली श्रवण
खुटिलारी ॥ खयनवने कंचन विजांयठे करन चूरी गजरारी ॥९॥ चंपकली
चोकी गुंजा गजमोतिन की माला री ॥ करें चतुरचित की चोरी डोरी के
जुगल झवारी ॥१०॥ पेने सुख देने कंचन कुच खुभी कंचुकी कारी ॥
काम कुटी करदीनीहे कीनी शिव सों फिर यारी ॥११॥ एडी लाल महावर
जेहर तेहर बाजन वारी ॥ घायल किये पाय पायल कर सायल नंद ललारी
॥१२॥ जोर दीठसों दीठ ईठमंजीठ रंगनरंग भारी ॥ लगी लाल के पगी
खगी चित चितवन की पिचकारी ॥१३॥ मोहन मदनगोपाललालपर पढ
गुलाल जब डारी ॥ संग लग्यो डोले रसीया वृंदावन में बनवारी ॥१४॥
छबि दौरन मोरन मरोर पिय जाय भरे अंकवारी ॥ प्रेम फंद पकरे जकरे
गोरी नें गिरिवरधारी ॥१५॥ छीन लई मुरली करते पटुका पट पीत उतारी ॥
ग्वालिन अधर धरी बंसी वरषी रस सिंधु सुधारी ॥१६॥ जो भावे सो ले
ललना कलना पलना मोहि प्यारी ॥ तोहिददाकी सोहे ग्वालनी देबंसी हा
हारी ॥१७॥ बाहनमें बाहें चाहें मुख चंद चकोर पियारी ॥ मोहन स्यामत
माल बाल लपटानी हेम लतारी ॥१८॥ गांठ जोर गोविंद चंदसों दीनी सखिन
संवारी ॥ तारी देदे गारी गावें ग्वाल देत किलकारी ॥१९॥ वशीकरण बतियन
रस वरखत बरसाने की नारी ॥ प्रभु धनस्याम दियो मनमेवा फगुवा प्रानप्यारी
॥२०॥

८  राग सारंग  एसो खेल होरी को जहां रहत नहीं कलुकान ॥
जहां कहियत परम वखान ॥ जहा मिलवे की अकुलान ॥ जहां बोलत जान
अजान ॥ जहां खेलत में न अघान ॥ जहां परत नहीं पहेचान ॥ जहां
रूप भेष उलटान ॥ जहां परमनिर्लज्जिताबान ॥ जहां खेलन की रहठान ॥
जहां अति आनंद बढान ॥ जहां रहत सबे ऋतुमान ॥ जहां खेललराई ठान ॥
जहां तन मन धन विसरान ॥६०॥ कर सिंगार घरनते निकसीं द्वारें ठाडी
आय ॥ खेलन को नंद लालसों ब्रज युवती सहज सुभाय ॥१॥ गावत गीत

सुहावने ऊंचे स्वर पियहिं सुनाय ॥ सुनत श्रवण ले सखनकों आये ब्रजभूषण
 धाय ॥२॥ मोहन मन वसकरणकों ब्रज युवतिन रच्यो उपाय ॥ नाचत गावत
 रसभरे अरुवाजे विविध बजाय ॥३॥ वदन विलाक्यो लालको हँस घुंघट
 पट सरकाय ॥ उरआनंद अतिही बाढ्यो मन भावन यह विधपाय ॥४॥
 मोहन के सिंगार को सब लीनो साज मंगाय ॥ चोवा चंदन अरगजा ओर
 सुगंध गुलाल भराय ॥५॥ लये सेन देवातके मिस मोहन निकट बुलाय ॥
 परस कपोलन प्रेमसों पियलीने अंग लगाय ॥६॥ वसननये ले आपने प्रीतम
 कों सब पहराय ॥ आभूषण बहुभांतके पहराये देख बताय ॥७॥ प्रथम कपोलन
 छिरककें ले चंदन बिंदु बनाय ॥ सुरंग गुलाल अबीरसों कर चित्ररहत
 मुसिक्याय ॥८॥ पगिया पेचन छिरककें वागोइ जार छिरकाय ॥ शोभा
 चित्र विचित्र की नयन नहीं परतल खाय ॥९॥ अधिक गुलाल उडायकें
 सब हिन की दृष्टि बचाय ॥ मन भायो पिय सों करें प्रति अंगन अंग मिलाय
 ॥१०॥ मंडल मध्य पियराखकें मिल नाचत अति सरसाय ॥ गावत अति
 आनंदसों पिय छिन छिन ह्वो अधाय ॥११॥ खेल रच्यो ब्रजलाडिले
 ब्रजयुवतिन पाय सहाय ॥ दूरभये गुण गावही सब गोप शब्द उघटाय ॥१२॥
 रस रसिकन मन अति बढ्यो हो तिहुंलोक रह्यो छाय ॥ श्रीबल्लभ पद
 कमल की जनरसिक सदा बलिजाय ॥१३॥

९ (१३) राग सारंग (१३) हों लाल तें प्यारी चित हरि लियो तो बिन कछु
 न सुहाय लाल ॥ तलफे जल बिन मीन ज्यों चन्द चकोर दिखाय लाल
 ॥१॥ लाल फिर-फिर बात वही पूछे बूझ-बूझ पछताय लाल ॥ झुकि लई
 दुपति करि लाग्यो लग्यो मदनसर जाय लाल ॥२॥ लाल देखे ही सब
 जानि हो बैन न कछु कहाय लाल ॥ यह सुनि स्याम कुंज चले गडे पाछे
 आवे लाल ॥३॥ लाल सखान सहित प्यारी जहाँ सेन सबै समुझाय ॥
 इत जुग हस्त अँखियाँ मींची पुनि मुरली मुख लाय लाल ॥४॥ लाल जब
 कछो यह को है हो जुगत चतुरभुजराय लाल ॥ यों कर रीझये लाडिली
 सन्मुख वही हरखाय लाल ॥५॥ लाल छिरकत योवा चंदन अबीर गुलाल
 उडाय लाल ॥ प्रफुलित मन बातें करें आनंद उर न समाय लाल ॥६॥

लाल रीझ हार ललिता दियो प्यारी कछु मुसकाय लाल ॥ चरनकमल
वंदन करे द्वारिकेश गुन गाय लाल ॥७॥

१० (१०१) राग सारंग (१०१) माई होरी खेले मोहना लियें गुलाल अबीर ॥
वनवन चली सकल ब्रजवनिता पहरेविविध पटचीर ॥१॥ अरगजवाद कुंकुमा
केसर चरचे स्याम शरीर ॥ मृदु मुसिकाय परस्पर सुंदरि दशन झलक
मुख हीर ॥२॥ प्रेम पतंग पिचकारी छूटत ओर यमुना को नीर ॥ सूरदास
प्रभु रस बसकर लीने हरि हलधर के वीर ॥३॥

११ (१०१) राग सारंग (१०१) कान्ह रस भीनी ग्वालिनी ओए गोरस तज
कुलकान ॥ नाघर में कलना अंगना बाको मन जो लाजके पान ॥१॥ जोबन
रूप रिझोने नयननमें बाकी परीचितवन की वान ॥ डफ मुरली सुन गई
कोरतज पानी कोउत्तर ठान ॥२॥ खेलत मोहन गहिका जरदे हँसी पीत
पटतान ॥ जगन्नाथ कवि राय के प्रभुसों फाग खेल खिलरान ॥३॥

१२ (१०१) राग सारंग (१०१) हों क्यों जाऊंरी दधि वेचनमाई नंद लाल खेलत
होरी ॥ विन होरी होरी सी खेलत अबतो होरी करपाई ॥१॥ गोरस की
मटुकी ले सीसते दौर कहत तूमोकों लाई ॥ कृष्ण जीवन लछी राम के
प्रभुसो पकर पाये हैं तो करहें आप मन भाई ॥२॥

१३ (१०१) राग सारंग (१०१) होंसनायक खिलवार होरी की कर लियें डफ
हिं बजावेंहो ॥ पान भरे मुख चमकत चौका ओर दिये बेंदी रोरी की ॥१॥
तनसुख सारी रातो लहेंगा कहा कहों छबि गोरी की ॥ नीवी गढ जु रही
नाभीपर ओर कसगांठ दई डोरीकी ॥२॥ चोवाकी बेंदी तोयन पर ओर
अचरा हिंग थोरी की ॥ उसरत अंगिया कठन कुचन पर आय मनोरथ
जोरी की ॥३॥ जोबन रूप बनी सुबनी मानों है वृषभान की ओरी की ॥
नंदलाल कों गारी देत हैं ग्वालिन सों गठजोरी की ॥४॥ भरत न डरत
आंखि आंजत हैं करत दुहाई किशोरी की ॥ हो हो कहि सुधर राय प्रभु
नयन सेन चित्त चोरी की ॥५॥

१४ (१०१) राग सारंग (१०१) छांडो छांडो हमारी बाट लंगर सांवरे ॥ जिन

फोरो ढोरो मेरी गागर भरन देहु यह घाट ॥१॥ जिन झगरो पकरो मेरो
अचरा देख विचारो ठोर ॥ तुम होरी के रातेमाते बोलत ओर की ओर
॥२॥ लेहों घेर निवेर सबनपें कर हों न काहू की कान ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन
लाल तुम जीते हो मुसिकान ॥३॥

१५ ॥ राग सारंग ॥ होरी खेले नंदलाल होरी नंद महर की पौरी
ठाडो संगलिये ब्रजबाल ॥१॥ वेणु बजावे मधुरे गावे और उघटावे ताल
हरें हरें युवति में धस के चुंबनदे भजेगाल ॥ वदन उधारे बिंदुलीनि हारे
तिलक बनावे भाल ॥ कबहुंक आलिंगनदे भाजे आय मिले ततकाल ॥३॥
कबहुंक ढिंग वहे अचरा खेंचे छुवावे नीरज नाल ॥ कबहू आय बलैयां
लेले पहरावे वनमाल ॥४॥ कबहुंक नाचे भाव दिखावे कबहू बजावे ताल ॥
कबहुं अबीर अरगजा लेकें ओर उडावे गुलाल ॥५॥ कबहुंक हाथाजोरी
नाचे मंडल मध्य प्रतिपाल ॥ श्रीवल्लभ पद कमल कृपाते गावें रसिक
रसाल ॥६॥

१६ ॥ राग सारंग ॥ अहो पिय मोसों हीं खेलो हों खेलों तुमसंग ॥
जो कोऊ ओर खेलिहे तुमसों करहों तामें भंग ॥१॥ हों हीं आंजों तुम्हारे
नयना जानेन ओर गमार ॥ तुम मेरे मुख मृगमद मांडो हों भेटों अंकवार
॥२॥ तुम डफ लेहु आपनेहीकर हों गाऊंगी गार ॥ कुंकुम रंग जो छिरको
भरभर रत्न जटित पिचकार ॥३॥ तुमसों कहें लेत फगुवा में हों आलिंगन
लेहों ॥ ब्रजपति आज आन वनिता को लागन लागन देहों ॥४॥

१७ ॥ राग सारंग ॥ हा हा अब के मोसों खेलियें बहोरिन भरि
हों आँख ॥ जो तुमारे परतीत नाहिजिय ललिता देहूसांख ॥१॥ जो अब
के न खिलायहो ये सबें हसेंगी मोहि ॥ बावा की सो पाय लागत हों यह
विनवत हों तोहि ॥२॥ अपने निकट सबन के देखत बोललेवो एकवार ॥
कुंददाम श्रीकंठतें हस मुखते देहोउगार ॥३॥ बहुत गुलाल उडाय सांवरे
दिनकर लीजे सांझ ॥ आलिंगन दे सांवरे कोऊ लखे न धूंधर मांझ ॥४॥
खेल फाग त्योहार मानिये आज हमारे धाम ॥ मदन मान मर्दन करो पिय
ब्रजपति पूरन काम ॥५॥

१८ (१६) राग सारंग (१६) लाल तुम वरसाने क्योंन आवो मोहन नागरहो ॥
 यूथ यूथ युवतिन के देखो लोयनहियो सिरावोहो ॥१॥ शशिबदनी शाबक
 मृगनयनी खेलन कुंजन आवें ॥ अतिविचित्र मधुर स्वरलीने गीत काम के
 गावें ॥२॥ एक बेस किशोर सबन की प्रीति रीति उपजावें एको पलजो
 देखन पावो तो तुम सुधि विसरावें ॥३॥ तिनमें श्रीराज किशोरी राधा
 श्रीवृषभान दुलारी ॥ कनक वेलि कमनीय गजगमनी कीरति प्रान पियारी
 ॥४॥ अष्ट सखी तिनके संग सोहें चंद्र भगा ललितारी ॥ जोबन संग सुगंध
 माधुरी सुंदर सब बारी ॥५॥ चले स्याम अभिराम धाम वृषभान नृपति
 के आये ॥ कोऊ न लीनों संगसखा बनकों सब फेर पठाये ॥६॥ सहचरी
 को धर भेष सकल सिंगार अद्भुत बनावे ॥ चंपकली भेद लालजू ललितानें
 लखपाये ॥७॥ कही कुवरी सों जाय बातएक भांत विचित्र बनाई ॥ सखी
 सांवरी आज कोऊ अद्भुत या भू ऊपर आई ॥८॥ एक जू तुम्हारी वेस
 विलास बाल शोभा नित सुंदर ताई ॥ तुम गोरी वे सांवरी मूरति मानों
 मेन बनाई ॥९॥ मधुक्रतु फागुन मास आज हम तुम मिल खेलें होरी ॥
 चोवा चंदन बूका बंदन फेंट भरे भरझोरी ॥१०॥ बिपिन विनोद परस्पर
 बाढ्यो झखझोरा झकझोरी ॥ ब्रज भूषण हित दंपति संपति भूतल अविचल
 जोरी ॥११॥



१९ (१६) राग सारंग (१६) कांकरी कान्ह मोहि मारे ॥ टेढी चितवन मोतन
 चितवत लोट-पोट करडारे ॥१॥ हूं गुरुजन की लाज करत सखी निकसत
 निपट सवारे ॥ वरज्यो न मानें नंदको कोऊ कहि पचिहारे ॥२॥ कहा करूं
 कित जाऊं सखीरी को यह न्याव विचारे रसिक राय प्रीतम की बातें इतनी
 कोन सहारे ॥३॥

२० (१६) राग सारंग (१६) स्यामा नकवेंसर अति बनी छबि कविपें वरनी
 न जाय ॥ सोने सरस सुनार गढी हे हीरा लाल लगाय ॥१॥ आधे अधर
 विराजत मोती लाल रहे ललचाय ॥ ताकी शोभा अति बाढी हे भयोगुंज
 को सुभाय ॥२॥ तनसुख सारी रातो लहेंगा क्यों न स्याम मन भाय ॥
 शोभाहित हरिवंस सांवरे चिते चली मुसिक्याय ॥३॥

२१ ॐ राग सारंग ॐ चलरी सिंघ पोरि चाचरमची जहां खेलत ढोटा
 दोय ॥ जोन पत्याय सुनें किन श्रवणन हो हो हो हो होय ॥१॥ अपने नयन
 निरख हों आई कहत न बात बनाय ॥ तोसों मोहन सेना देखके मन धीरज
 धरयो न जाय ॥२॥ एक न किये बनायतिलोना एक अरगजा भीने ॥ एक
 न करी खोर चंदन की चोवा बेंदी दीने ॥३॥ तहां वाजत वीन रबाव किन्नरी
 अमृत कुंडली जंत्र ॥ अधर सुधायुत बांसुरी हरि करत मोहनी मंत्र ॥४॥
 सुर मंडल पिनाक महुवर जल तरंग मन मोहे ॥ मदन भेरि राय गिड गिडी
 सहनाई सुरसोहे ॥५॥ कठतार तार करतारीदेदे बजत चुटकिन चुटकारें ॥
 झांझ झनक खंजीर बजें भई झालर की झनकारें ॥६॥ एक शृंग संख ध्वनि
 पूर रही अधर धरें मुखचंगा कर ले झूही बजाव ही एक डिम डिम ढोल
 मंदगा ॥७॥ तहां घुरें निसान-नगारे की ध्वनि रह्यो घोख सब गाज ॥
 दुंदुभी देव बजावहीं सब व्योम विमान न साज ॥८॥ तहां बहुविध भरे रंग
 सोधे केसर कुंकुमनीर ॥ मृगमद मेदलयो वेलाभर अरगजा अरक उमीर
 ॥९॥ रत्न जटित पिचकारिन भरभर छिरकत सुंदर स्याम ॥ ग्वालिन सुरंग
 अर्बीर गुलाल मुठीभर भर डालत बलराम ॥१०॥ एक बूका वंदन कुंकुमजल
 घोर कलश भरलावे ॥ अचकां आय पीठ पाछेते मोहन के सिरनावे ॥११॥
 फिर सुमन सुगंध फुलेल अरगजा लयो करन लपटाय ॥ नैंक मोहनसों
 बतराय भजी बलदाऊ वंदन लगाय ॥१२॥ सब होरी के रंग राते माते
 डोलत करत कलोलें ॥ रंग रंगीली गारी देदे हो हो होरी बोलें ॥१३॥
 सुख समूह कछु कहत न आवे निरख नयन सचुपैये ॥ पूजे मन अमिलाष
 तबे ब्रजपति सों खेलनजैये ॥१४॥

२२ ॐ राग सारंग ॐ तु कबकी खिलवारि होरी खेलनजानें ॥ वरजति
 हों रहि ग्वालिन खेलें कीरति सकुमारि ॥१॥ जब आवत कर कमल ना
 ललें थोरो सो घूंघट डार ॥ चलत दृगं चल अंचल औझल मुर्ति मेन सरमार
 ॥२॥ गरुवे वचन बोल हरुवेदे जाति सबन को मार ॥ कर पर कर धर
 चिबुक अंगुरिया इकटक रही निहार ॥३॥ दक्षण चरण उठाय उलट धरणी
 जो अंगूठाधार ॥ एक टक देख रहत ठाडीधर रूप तृभंगी नार ॥४॥ कबहु

सकुचि घूँघट गहरो दे गाबत सरस धमार ॥ बहुत गुलाल उडाय गगन
फिर देखत वदन उधार ॥५॥ तुलतनरति नखसिख एको अंग को कहि
सके विचार ॥ मन हरणी ब्रज तरुणी सबे ये मोहन मन फंदवार ॥६॥



२३  राग सारंग  सुन चली सकल ब्रजनार प्यारो मदनमोहन
खेले होरी ॥ बगर बगर तें झुंडन निकसी नवसत साजि सिंगार ॥ध्रु०॥
तिनमें श्रीवृषभान कुवरिको मध्य झूमका सोहे ॥ कीर कुरंग कपोत कोकिला
निज प्रतिनिधि ते मोहे ॥ छेल छबीली चरण धरन गति मत्त गयंद लजावे ॥
रंग रंगीली एडी महावर नवनूपुर परसावे ॥१॥ लहेंगा लाल नील कंचुकीतन
तन सुख सारी नीकी ॥ माणिक जटित जुगल ताटंकन तरण किरण द्युति
फीकी ॥ लसत कपोल लरें मोतिन की सेंदूर मांगभरी ॥ कंचन आड ललाट
सुभगविच बेंदी जरायजरी ॥२॥ मृगमद खोर रुचिर नकवेसर अधर बिंबकी
शोभा ॥ यह बानिक बनठन आई मनमोहन को मन लोभा ॥ सन्मुख स्याम
हि हरख निरख मन ठठकि रही ब्रजनारी ॥ अंजन युत खंजनसी चलवत
चपल दृष्टि अनियारी ॥३॥ केसर भरी कनक पिचकाई अंचल ओट दुराई ॥
औझल व्हे तकतान हिये वर लगत स्याम के जाई ॥ मोहन सखा समूह
संगले कुंकुम कलश भराई ॥ युवती यूथ में जाय अचानक दिये सीसतें
नाई ॥४॥ ललिता चंद्र भगा आदिमिल गूढ मंत्र एक कीनों ॥ बूका बहुत
उडाय गगन तन दिन रजनी करलीनों ॥ श्रीवृषभान लली को श्रीमुख राकापति
ज्योराजे ॥ हिमकर चांदनी जलद में ज्यों त्यों घुंघट छबिछाजे ॥५॥ तब
ललिता धाय अचानक जाय गहे भुज बल हलधारी ॥ आई ले निजटोल
सबे मुदित भई ब्रजनारी ॥ नयन आंजि चोवा मृगमद के चित्र कपोलन
काढे ॥ कुंकुम घोर पीठि थापेदे नीलबसनले छांडे ॥६॥ तब निरख सखा
किलक मन महियां सबहिन मतो उपायो ॥ एक एक कर पकर सबन को
करत आप मन भायो ॥ सुनब्रज वधू दसक एकत्र व्हे विफरी खेलन आंई ॥
फुल छरीदे हाथ ग्वालके चाचर भली मचाई ॥७॥ मधुमंगल डफ लेले आवे
वांके वेन सुनावे ॥ पाय पिछोडे भाजे ही सन्मुख चुटकीदे चुटकावे ॥ एकजु
चित्र लिखी सी ठाडी हरे हरे आवनदीनों ॥ फूलछरी दे मुखमें छलसों बल

कर गहिलीनों ॥८॥ तब छीन लियो डफ छोर पंचांगी मुख चोवा लपटायो ॥
 कर चुटकी क्यो देत हु तोयों कहत चिबुक उचकायो ॥ एक फुलेलनरि
 सों चोवा सान चिकुर चिकटायो ॥ कछो सबन भरुवा भयो उनकर संकोच
 सिरनायो ॥९॥ तहां पिचकारिन की धारें छूटी दुहुं दिस होडा होडी ॥ सब
 मन खोलें मुखहो बोलें कुल मर्यादा तोरी ॥ हरें हरें सब निकट आई मागन
 फगुवा भई ठाडी ॥ पकर फेंट प्यारे प्रीतम की चीत चित्रज्यो काढी ॥१०॥
 तब छीनिलई मुरली कटिते कोऊ लेजु भगी वनमाला ॥ तारी देहसु यों
 कहेंनेक नाचो मदन गोपाला ॥ भूषण वसन मंगाय अमोलक सबहिन कों
 पहराये ॥ मेवा गोदभराय सबन की अति आनंद बढ़ाये ॥११॥ खेल फाग
 अनुराग सबे मिल टिके नंद की पौरी ॥ देव दुंदुभी बाजत राजत बलमोहन
 की जोरी ॥ देत असीस चलीं ब्रज भामिन अवचल रहो ब्रजराई ॥ चिरजीयो
 हलधर ब्रज नायक गोवरधन होय सहाई ॥१२॥

२४ (११) राग सारंग (११) खेलें चाचर नरनारि माई होरी रंग सुहावनों ॥
 वाजत ताल मृदंग मुरज डफ वीना ओर सहनाई माई ॥१॥ उतखिल वार
 रसिक गिरिधर पिय इतराधिका खिलार ॥ उनसंग ग्वाल बाल सबराजत
 इन संग गोपकुमार ॥२॥ उनन लई भर फेंट गुलालन इनन लई पिचकारी ॥
 अति अनुराग भरे मिल खेलत अंतर भाव उधारी ॥३॥ उतले नाम पढत
 हो लें मुख इतहि देत ये गारी ॥ एक जु युवती धाय गहिलाई भर पियकों
 अंकवारी ॥४॥ एकन लई झटक कर मुरली एकन लीये हार उतारी ॥ एक
 मुख मांड आंज दोऊ नयना एक हसत देतारी ॥५॥ एक आलिंगन देतलेत
 एक रही जो वदन निहार ॥ एक अधर रसपान करत एक सर्वस डारत
 वार ॥६॥ एक मगन रस भुज प्रीतमकी लेत आप उरधारी ॥ धन्य ब्रजयुवती
 भाग्य पूरन ये यह रस विलसन हारी ॥७॥ मच रह्यो गहगड सिंध द्वारपें
 सकतन कछू संभारी ॥ भीजे खेल रेल पेलन में श्रीविठ्ठल गिरिधारी ॥८॥

२५ (११) राग सारंग (११) कुंवर दोऊ राजत नवल किशोर अति आनंद
 भरे ॥ अहो ब्रज युवतिन के चितचोर परम विचित्र खरे ॥१॥ इत श्रीमदन
 गोपाल सखा भुज अंसन दीने ॥ उत राधिका प्रवीन मेल अपने संग लीने ॥

कुंवर कुंवर सोनेहहे बढ्यो अधिक अनुराग ॥ निकसि गामके गोंयडें हरि खेलन लागे फाग ॥१॥ वाजत डफ बांसुरी ताल मिल मधुर मृदंगे ॥ गावत सारंग राग अधिक सुख उपजत अंगे ॥ नरनारिनके नेहहें लाज रही नहीं गात ॥ कछु वे कहत कछु ये कहें सबे स्याम रंग रात ॥२॥ तब उन ग्वालन उमग लई हाथन पिचकारी ॥ गोपिन के मुख भरत देत होरी की गारी ॥ घात किये चितवत फिरें उतेंछेल के बाग ॥ सावधान सब गोपिका देतन लागन लाग ॥३॥ तब ही ग्वालिनी धाय गह्वो एक संग मिल पीकों ॥ आंख आंज सुख मांड दियो सेंदुर को टीको ॥ कान अँचि गुलच्यो सबे और दीनों मुकराय ॥ चलत आपने मेल कों खिसल परत नहीं पाय ॥४॥ तब ही नंद के लाल समझ कछु बात विचारी ॥ धरयो त्रियाको रूप जाय भेटे व्रजनारी ॥ पाछे ते सकुची सबे जब जान्यो यह भाव ॥ तारी देहसकें चले हम लियो हे सखा को दाव ॥५॥ तब ही सहचरी एक भेष हलधर को कीनो ॥ गोकुल तन व्है आय पहरनील पटझीनों ॥ ताहि मिलन केशव चले कर अग्रज की कान ॥ इत चितवत दुचिते भये उत गहे ग्वालिनी आन ॥६॥ एक अली भुजगहे एक पटका झकझोरे ॥ एक धरे हरिहसे एक मुखसों मुख जोरें ॥ एक कहेरी छांडिये कहिये गरभदुभाय ॥ एकन वात न लाय लालकी मुरली लई छिनाय ॥७॥ छूटन पाओ तबे देयो फगुवा मन मान्यो ॥ रंग रंग वसन मंगाय दियो जाहि जेसोही बान्यो ॥ एक नयन की सेनदे एकनतन मुसिक्याय ॥ एक आंकों भरले चले हरि सबको भलो मनाय ॥८॥ नाना भोग विलास रास वृंदावन कीनों ॥ हरखि बल्लवी नारि परम सुख सब कों दीनों ॥ मदन लजानों देख कें कमल नयन की केलि ॥ गिरिधर पिय आये घरें सब सुख सागर झेलि ॥९॥



२६  राग सारंग  करतारी देदे नाचेंही बोलें सब होरी हो ॥१०॥ संग लियें बहु सहचरी वृषभान दुलारी हो ॥ गावत आवत साजसों उतते गिरिधारी हो ॥१॥ दोऊ प्रेम आनंदसों उमगे अति भारी ॥ चितवन भर अनुरागसों छूटी पिचकारी ॥२॥ मृदंग ताल डफ वाजहीं उपजे गति न्यारी ॥ झूमक चेतव गावहीं ये मीठी गारी ॥३॥ लाल गुलाल उडावहीं सोंधे



सुखकारी ॥ प्यारी मुखहिलगावहीं प्यारो ललन विहारी ॥४॥ हरे हरे आंई
 दुरकरी अबीर अंधियारी ॥ घेरले गई कुंवरकों भरकें अंक वारी ॥५॥ काहू
 गहिवेनी गुही रचि मांग संवारी ॥ काहू अंजनसों आज अरु अखियां अनियारी
 ॥६॥ कोऊ सोंधे सों सानकें पहरावत सारी ॥ करते मुरली हरि लई वृषभान
 दुलारी ॥७॥ तब ललिता मिल कें कछू एक बात विचारी ॥ प्रिया वसन
 पिय कों दये पियके दीये प्यारी ॥८॥ मृगमद केसर घोरकें नख सिखते
 ढारी ॥ सखियन गठजोरो कियो हँस मुसकाय निहारी ॥९॥ याही रस
 निवहो सदा यह केलि तिहारी ॥ निरख माधुरी सहचरी छबि पर बलहारी
 ॥१०॥

२७ ॥ राग सारंग ॥ खेलत ग्वालि गोपाल लालसों मुख मूदेंमन
 खोलें ॥ घुंघट ओट वदन राजतयों विधु बादर की ओलें ॥१॥ भूहें कुटिल
 कुरंग चपल चखसे अरुण डोलें ॥ मानो तिलक पारधी दूंकयो चांप चढायें
 सोलें ॥२॥ वेंसरको मोती राजतयों अति छबि देतअतोलें ॥ मानो रूप
 मंजुरी लेकें कीर करत है कोलें ॥३॥ चिकने चिहुर छूटे वेनीतें दुरेवसनमें
 डोलें ॥ मानो कुटुंब सहित कालिंदी काली करत कलोलें ॥४॥ वाणी सबे
 सरस सुर गावत अपने अपने टोलें ॥ मानों सुरभरत कपोत कोकिला वनहि
 विहंगम बोलें ॥५॥ वरखत हरखत मनमोहन पर सोंधो अधिक अमोलें ॥
 फिरदे चली गमार गारी हो हो होरी बोलें ॥६॥



२८ ॥ राग सारंग ॥ चलरी होरी खेलें श्रीगिरिवरधर श्रीवल्लभ वर
 रच्यो विविध विध खेल माई ॥ डफ पुंजन की गुंज रही छबि कालिंदी
 के कूल ॥१॥ यह सुनकें मिल सब ब्रज सुंदरि एक एक उठ धाई ॥ खेलें
 फाग जाय प्रीतम संग सुफल घरी ये आई ॥ येसोमतो कियो एकत्र व्हें
 आनंद उर न समाई ॥ यह अवसर अब दियो विधाता करो सबे मन भाई
 ॥२॥ हीरा रत्न जटित मणि मुक्ता आभूषण सजलीने ॥ वसन विचित्र बनाय
 विविध अंग सारी सरस रंग भीने ॥ लहेंगा लाल लसतनितंबपर
 छीनलंकछविछीने ॥ कनकवरन कंचुकी स्यामतन आन अधिक छबि दीने
 ॥३॥ मृगमद आड ललाट सुभग अति बेनी सरस सुढारी ॥ सीसफूल श्रीमंत



जटितनग वरनन सकेक विहारी ॥ श्रीमुख कमल राजत पूरण शशि अलक
 सोहें घुंघरारी ॥ दशन दामिनी अधर पानकों झूमत पन्नगनारी ॥३॥ नयन
 विशाल श्रवण झलमले नक बेसर गजमोती ॥ पिकवेनीजो कपोत कंठअति
 सोहे जंगाली पोती ॥ चौकी जरायंहार रुकत अति दूरकर तरविजोती ॥
 बांह वरागजरा सोहत चूरीगज दंतीहोती ॥४॥ कटिटिकिणी रुनझुनात अति
 पग नूपुर झनकारा ॥ पग पायल ढिंग एडी महावर विछुवन शब्द अपारा ॥
 चलत हंस गति मोहिलेत चित उमडी रस की धारा ॥ यह बानिक बनि
 चली सखी निरखन कों प्रान अधारा ॥५॥ पोहोंची जाय निकट पीतम
 के बिपिन युवती समुदाई ॥ फुल बाग शोभा अति सुंदर फूल रही बनराई ॥
 एकटक व्है चितवत चंचल अति दृष्टि भरी पिचकाई ॥ प्रीतम मन अनुराग
 बढ्यो अति आनंद उर न समाई ॥६॥ अबीर गुलाल उडाय गगन मध्य
 दिन रजनी कर लीनों ॥ राका पति ज्यों राजत गोकुल पति यह समेरंग
 भीनों ॥ मिली जोबाल गुलाल मध्य कोऊ काहू नहीं चीन्हों ॥ प्रीतम जाय
 धाय उरले भुज भर आलिंगन कीनों ॥७॥ अधर माधुरी पीवत पिवावत
 रंग बढ्यो रस भारी ॥ प्रीतम विवश होय प्यारी वश रहत न कछु संभारी ॥
 ये अविचल ब्रजरहो सदां अब नित नित केलि तिहारी ॥ वल्लभ पिय हिय
 सुख निसवासर चिरजीयो लाल बिहारी ॥८॥

२९  राग सारंग  माई मेरो मन मोह्यो सांवरे मोहि घर अंगना
 न सुहाय ॥ ज्यों ज्यों आंखिन देखियें मेरो त्यों त्यों जिय ललचाय ॥१॥
 हेली मनमोहन अति सोहनो इत व्है निकस्यो आय ॥ मोहि देख ठाडो भयो
 वह चितयो मुरमुसकाय ॥२॥ रूप ठगोरी डारकें चल्यो अंग छबि छेल
 दिखाय ॥ नयन सेनदे सांवरो मन ले गयो संग लगाय ॥३॥ लोक लाज
 कुलकान की जिय कछून ठीक ठहराय ॥ कें ले चल मोहि स्यामपें कें स्यामहि
 आन मिलाय ॥४॥ प्राण प्रीति परवसपरे अब काहू की न वस्याय ॥ रसिक
 बाल नंदलालपें रसिक सदा बलजाय ॥५॥

३०  राग सारंग  उत सांवरो बहु रंगन रंगीलो इतगुण निधि
 राधा गोरी ॥ डफ पुंजन की गुंज गान सुन खगमृग मुदित मची होरी ॥१॥

अंबर चढ्यो गुलाल उडायो ललितादिक लिये भर भर झोरी ॥ मानो दुहुंदिसनते सजनी उठी अनुराग घटा घोरी ॥२॥ कुंकुम की पिचकारी डारत चोंक चपलता करत किशोरी ॥ लचक्यो लंकइते मुख फेरयो मानो कनक लता मोरी ॥३॥ छिरक छींट उठत चोवा की लगी कपोल बाल के थोरी ॥ प्रगट करत दोऊ कर अपने गोकुलेश चित्त की चोरी ॥४॥

३१  राग सारंग  खेलें पिय राधा गोरी ॥ नंद नंदन वृषभान नंदिनी बोलत हो हो होरी ॥१॥ कंचन की पिचकारी लीयें अबीर भरें भर झोरी ॥ छुटत मुठी गुलाल लाल की भरत नयन की कोरी ॥२॥ पकरे लाल भई झक झोरन प्रगटी प्रीति की चोरी ॥ आंख आंज कपोलन मीडत लाज तृणकसीतोरी ॥३॥ केसर अगर गुलाल अरगजा सोंधें भरी कमोरी ॥ हैंसत लसत ओर भरत परस्पर गांठ दुहुन की जोरी ॥४॥ विहस विहस सब लेत बलैया ॥ अविचल भूतल जोरी ॥ माधोदास प्रभु लाल लाडिले नवल किशोर किशोरी ॥५॥

३२  राग सारंग  अहो खेलत होरी प्यारो लाल विहारी संग वृषभान दुलारी ॥ यमुना पुलिन सुहावनों जहां फूल रहे द्रुम भारी ॥१॥ गुंजत मधुप कीर पिक कूजत श्रवण सुनत सुखकारी ॥ इतहिं गोप कुमार विराजत उत सब गोकुल नारी ॥२॥ इतनायक बल मोहन दोऊ उतचंद्रावलि प्यारी ॥ इनके करगेंदु फूलन की उतगुही माल संभारी ॥३॥ पहरावत पीतम प्यारे कों देत दिवावत गारी ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ तूरभेरि सहनारी ॥४॥ ढोलक ढोल निसान महुवर विच मुरली मनहारी ॥ इनन लई भर कनक कटोरी उनन लई पिचकारी ॥५॥ अतिकसबांधे फेंट गुलालन मुठी अबीर उडारी ॥ बूका बंदन उडत चहुँदिश दिननिशज्यो अंधियारी ॥६॥ नयन सेनदे हैंसत परस्पर धाय गहे गिरधारी ॥ चोवा केसर मृगमद घोरी दियो सीसते ढारी ॥७॥ रोरी हरद कपोलन मीडत आंख आंज अनियारी ॥ एकन लियो झटक पीतांबर एक भरत अंकवारी ॥८॥ श्रीराधाजी सोंकर गठजोरो नाचत देकरतारी ॥ भीज्यो रस खेलत रंगन में रंगमगे भूषण सारी ॥९॥ अधर माधुरी पीवत पिवावत मेटी मदन व्यथारी ॥ क्रीडत देख

नंदनंदन सुरकरें कुसुम बरखारी ॥१०॥ रस बस खेल मच्योजु परस्पर
वरने कवि कहारी ॥ अविचल रहो सदा यह जोरी कृष्णदास बलिहारी ॥११॥

३३ (११) राग सारंग (११) हो हो होरी खेलन जैये जाय खिलैये कुवर
कन्हैये ॥ अपने संगते फूट परेछिन वाहि न्यारें न पतयैये ॥१॥ बहुत गुलाल
केसर रसले समाज खिलारतन धैये ॥ अपने रंग में एसें बोरिये स्याम
रंग दुंदुब्यो नहिं पैये ॥२॥ एक तन एक मन होय सखीरी बांह पकर वाको
सीस नवैये ॥ भाज चले तोतारी दे हैंस सब ब्रज मेरी बाहिलजैये ॥३॥
फगुवा के मिस फेंट पकरकें मृदु मुसिकाय वदन तन चहिये ॥ जगन्नाथ
कविराय के प्रभुसों हिल मिल कें रस सिंधु बढैये ॥४॥

३४ (११) राग सारंग (११) राजत हें वृषभान किशोरी ॥ ब्रज के आंगन
में खेलत पियसों क्रतु वसंत के आगम होरी ॥१॥ ताल मृदंग वेणु चंग
बाजे राजत सरस बांसुरी ध्वनि धोरी ॥ अगरजबाद कुंकुमा केसर छिरकत
स्याम राधिका गोरी ॥२॥ जब हीरवक पीतपट पकरत यह रसरसिकन
देत झकझोरी ॥ परमानंद चरण रजवंदित राधा स्याम बनी हें जोरी ॥३॥

३५ (११) राग सारंग (११) चंग मृदंग बांसुरी बाजत हो हो हो हो होरी ॥
मानो किल कार सेन दे बोली उमगि चली गृहगृहते दोरी ॥१॥ सारी सेत
पीत रंग बोरी भूषण भूषित नवलकिशोरी ॥ नील कंचुकी उरपर राजत
मानो शोभा भई इक ठोरी ॥२॥ रंगभीनी भामिनि गारी गावें कहें राधा
माधो की जोरी ॥ गुरुजन वरजत नेकनमानत लोक लाज तिनुका ज्यों
तोरी ॥३॥ काहू कर साखजबाद कुंकुमा काहूकर लीने केसर घोरी ॥ उमगे
ज्वाल गोपिका दुहुंदिश मानो मधवा वरषत घनघोरी ॥४॥ फगुवा दिये जीय
के रीझे लाल गोवर्धन धारी ॥ देत असीस चली ब्रज वनिता दास कल्याण
जाय बलिहारी ॥५॥

३६ (११) राग सारंग (११) तारी दे गारी गावहीं ॥ एकते एक बनी ब्रज
वनिता नाना रंग बरसावहीं ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मोहन वेणु
बजावहीं ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा सुरंग गुलाल उडावहीं ॥२॥ इतमोहन

उत सखी समूह मिल खेलें हैंसें हैंसावहीं ॥ सूरदास प्रभु तुम बहु नायक
फगुवा दे घर आवहीं ॥३॥

३७ (११) राग सारंग (११) नयनन में जिन डारो गुलाल तिहारे पांय परत
नंदलाल ॥ होत हे अंतर पिय दरसन में विन दरसन बेहाल ॥१॥ कनक
वेलि वृषभान नंदिनी प्रीतम स्याम तमाल ॥ ऋतु वसंत वृंदावन फूल्यो नाचत
गोपी ग्वाल ॥२॥ ब्रज के लोग सबे जुरआये करत कुलाहल ख्याल ॥
रामदास प्रभु गिरिधर नागर पीक रंग सोहें गाल ॥३॥

३८ (११) राग सारंग (११) दिये महावर गोरे पायन ॥ नगनजटित कंचन
की जेहर सुमन बनी डोलत हैं चायन ॥१॥ जंघ युगल कदली कटि के
हरि रूप अनूप गुसायन ॥ भुज मृणाल श्रीफल कठोर कुच जानत रसके
दायन ॥२॥ खमक बनी अंगिया जुखयन तैसीये भ्रूंह चढायन ॥ मानो मेन
खराद खरादी वह पाई उपमायन ॥३॥ गुलाल भरचो तन एसो लागत
मानो हेम काढ्यो हे तायन ॥ सुघर रायको प्रभु रीझ्यो वृषभान कुंवरि
के भायन ॥४॥

३९ (११) राग सारंग (११) सखी नंदनंदन वृषभान कुंवरिसों बाढ्यो अधिक
सनेह ॥१॥ अबकितदुरत सांवरे ढोटा फगुवा हमारो देह ॥ जबतो गोंहन
नेकनछांडत अबभज पकरचो गेह ॥१॥ सबे सखी मिल चली नंदपें मोहन
माँग्यो देह ॥ दिनाचार अवसर होरीको बहोर आपनों लेह ॥२॥ प्यारी
मोहन मागेना मिलें घटेतो भरदेह तुम लाय तराजू तोल लेहु मोहन घटेतो
दूनोलेह ॥३॥ अधिक बार खिलवार होरी की पिचकारिन बाढ्योनेह ॥ गौर
स्याम मिलयों राजतहें ज्यों भादों को मेह ॥४॥ बिन्हल भई तनमन नहीं
सूझे सब हिन विसरचो गेह ॥ सूरदास मोहनजू के बदले जो चाहो सो
लेह ॥५॥

४० (११) राग सारंग (११) चलो सखी बाग तमासें प्यारो मोहन खेलत
होरी ॥ सगरी सखी मिल देखन निकसी पातरी पवारी गोरी भोरी ॥१॥
काहूपें गुलाल काहूपें केसर अबीर लियें भरभर झोरी ॥ कृष्ण जीवन लछी-

राम के प्रभु बने किशोर किशोरी ॥२॥

४१ (॥१॥) राग सारंग (॥१॥) सुंदरी हो हो होरी रंग भरी खेलें रसिक रसिक
फाग ॥ सुंदरी एकते एक सुंदर बनी फूल्यो कुसुमन मानो बाग ॥१॥ बागो
धराये श्रीअंग लटकत सीसों पाग ॥ केसर छिरके वल्लभ पिय प्रगट करत
अनुराग ॥२॥ अरगजा भरभर पिचकाई चलावें परम पराग ॥ अबीर उडावें
रंग भरे खिलावें महा बड भाग ॥३॥ सब मिल बाजे बजावहीं धमार गावें
बहुराग ॥ खेलें गोकुल में समाजसों पूरे भाग्यन जाग ॥४॥ यह बिधि
खेलें परस्पर पूरण प्रगट्यो सुहाग ॥ वल्लभदास सुख निरखेही चरण कमल
चितलाग ॥५॥

४२ (॥१॥) राग सारंग (॥१॥) अहो पिय अबकें होरी अनत जान नहीं देहूंगी ॥
निशवासर इकठोर बैठकें तुम संगम रस लेहूंगी ॥१॥ विविध विपिन द्रुम-
वेली फूली मधुप करत गुंजार ॥ मानो कामी जनदेख मत्तनर गावत करत
विहार ॥२॥ केसू कुसुम विकास मास फागुन उपज्यो अनुराग ॥ मानो
कामीजन मत्त फेरनकों प्रगटे अंकुश नाग ॥३॥ रुचि उपज तलपटी देखियत
माधविका जाई रसाल ॥ मानो पथग गहत फगुवा कों गह्यो युवतिन ततकाल
॥४॥ बहत वायु सुखदाई सबन कों उडत सुंगध पराग ॥ मानो गुप्त विहार
करन कों मेन रुपायो बाग ॥५॥ फूले कुसुम गुलाब अचल ता मध्य बैठे
अलिआय ॥ मानो जगे नयन युवतिनके इकटक देखन जाय ॥६॥ कुंद
कुसुम प्रफुल्लित अति सौरभ वरणिसकेको कांति ॥ मानो निवड हंसत युवतिन
के प्रगट भई द्विज पांति ॥७॥ बोलत शुक कूजित कोकिल कुल भयो विपिन
में सोर ॥ मानो वरन करत रति पतिसों होत स्वरन रसघोर ॥८॥ जेहो
कहां सभें ऐसेमें रह्यो हमारे गेह ॥ सुनो स्याम रसरीत लायचित करो सुफल
चित नेह ॥९॥ चोवा चंदन बूका वंदन नंद नंदन सुरंग गुलाल ॥ विविध
भांत छिरको गोपिन कों विलसो परम रसाल ॥१०॥ सुन प्यारी मुख बचन
प्राणपति भये परम आधीन ॥ रहिन सकत छिनहूं बिन देखें ज्यों जल बाहिर
मीन ॥११॥ यह सुमरति रसिकन के मनमें होत आनंद अपार ॥ श्रीवल्लभ
पदरज वल्लभ हरि गुण गावत सुखसार ॥१२॥

४३ (११) राग सारंग (११) आज हरि खेलन फागबनी ॥ इतगोरी रोरी भरभोरी उतगोकुल कोधनी ॥१॥ चोवा कोढो वाकर राख्यो केसर कीच घनी ॥ अबीर गुलाल उडावत गावत सारी जातसनी ॥२॥ हाथन बनी कनक पिचकाई ग्वालन छूटतनी ॥ नंददास प्रभु संग होरी खेलत मुरमुर जात अनी ॥३॥

४४ (११) राग सारंग (११) अहो रस मोरन मोरे लाल स्याम तमाल होरी खेलहीं ॥ कनकलता संकुलित सघनपर आनंदमय रस फैलहीं ॥ ध्रु० ॥ गृहगृहते नवला चपलासी जुरजुर झुंडन आई ॥ लहेंगा पीतहरे ओर राते सारीश्वेत सुहाई ॥ अतिझीनी झलकत नवसत तन करन जटित पिचकाई ॥ कंचुकी कनक कपिश सब पहरें तहां उरजन की झांई ॥१॥ कहां लोक हों सकल शोभा युत ए गोकुल की नारी ॥ अंगअंग गिरिधर गुणालंकृत विधन जात विस्तारी ॥ प्रफुल्लित वदन तंबोल भरे मुख गावत मीठी गारी ॥ ध्वनि सुन श्रवण निकसे सिंधपौरी मोहन लाल निहारी ॥२॥ उतते श्रीवृषभान दुलारी आवत रूप छटारी ॥ छापेरी झूमक अंग साजे चहुंदिश लगी किनारी ॥ बेनी चंपक बकुलन ग्रंथित रुचिर सखिन संवारी ॥ मोतिन मांग ओरसीस फूल मध्य रत्न जटित फुलकारी ॥३॥ श्रवणन कुसुमजराऊराजे लरे द्वेद्वे दुहुं ओरें ॥ पटियनपे जुलसत दमकन में छबि की उठत झकोरें ॥ चलदल पत्र प्रवाल वज्रसो कोंधत पंकति जोरें ॥ भाल दिपत आड मृगमद में बक्रभ्रोंह जुगमोरें ॥४॥ अखियां सुखी सुखेन बडेरी कहा कहां लोनाई ॥ सेत अरुण ऊपर मधुराई तामें कछु चिकनाई ॥ वसीकरण रससों मिल रचपच अंजन रेख बनाई ॥ रस वस ललकें ऊपर झलकें परमावधि चपलाई ॥५॥ नासा सौभग निपट सुढारी वेसर सिखी आकारी ॥ पन्ना करच चूनी बहुवरणी छांह सिखर परकारी ॥ सलिल कुंवर सातो जुग ऊपर अधर अरुणता भारी ॥ गमन करत जब हंस लजावत अरक थरक द्युति न्यारी ॥६॥ दशनावली घन संपति लीये दरशत जब मुसिकानी ॥ चिबुक मध्य सामल बिंदुराजें मुख सुख सदन सयानी ॥ ग्रीवा लटक अटक नागरिकी बोलत अमृत बानी ॥ चौली मुलकटहेमगुननका कवच सुभटता ठानी ॥७॥

चौकी चंपकली कौस्तुभ मणि वृंदावन में लीनी ॥ कहतन बने रहस्य में
रीझे मदन गोपाले दीनी ॥ चंद हार पचलरीछरा परसत किंकिणी
कटिछीनी ॥ उरपर भेद भीर भूषण की अद्भुत रचना कीनी ॥८॥ बाजूबंद
ताऊ ढिंग सोहत नगबहुमोली लागे ॥ तेसी तू इतडितकी न्याई ऐसीनोरंग
पागें ॥ नवग्रह गजरा जगमग नव पोहोंची चुरियन आगें ॥ अचल सुहाग
भाग्य की लहरें हस्तहें मेंदी दागें ॥९॥ पांच चवर पटियन पें गूंथी डोर
चुनाव पेंडूले ॥ झूलत झवि फवि सुंदरता फुंदना जहां समतूलें ॥ लहेंगा
लाल गुलाल रंग सम पुरटउदक सो झूलें ॥ इंकृति कोकिल रवमर्दनकर
नूपुर बिछिया बोलें ॥१०॥ दर्पन नृपति मुदरिया धरणी तेज पुंजकी नगरी ॥
दश शशि के अनुमान प्रमाणन चमक जनावत सगरी ॥ हथसांकर रवनी
वांधेगी कृष्ण सार के पगरी ॥ मिलकर वृंदआय विपिनमें जब तब यों झगरी
॥११॥ जे हरते हरपायन सो अनवट कुंदन हीरा बलिता ॥ पीन पिंडुरिया
तेसोई चरनन जावक दीनी ललिता ॥ यह विध राधा रानी गाई नांहि सावरे
सरिता ॥ जोजो रसिक गाई हें ऐसैं प्रेम पुंज फल फलिता ॥१२॥ सब
समाज भामिनि ले दामिनि वृंदन वृंदन हेली ॥ कंज पराग अरगजा गोरा
सज सजलये सहेली ॥ लटकत आवत भांतन कंठन बांह परस्पर मेली ॥
उनमद कोऊ वदतन काहू स्याम समरबनवेली ॥१३॥ बाजत ताल मृदंग
ढोल डफ झांझन झमक लगाये ॥ करत टोक प्यारे प्रीतमसों मुरदुर नयनन
चाये ॥ मुरली स्वरफेरत घोषनमें ढेर ढेर दरसाये ॥ चल्थो सुगंध सहस्र
चारलों कोउ विचार केवाये ॥१४॥ बगर बगरते सखा श्रवण सुन यूथन
यूथन धाये ॥ अपनी भीर सहित संकरषण ले श्रीदामा आये ॥ कुंकुम केसर
माट अरुमथना तेल फुलेल मिलाये ॥ तोलोंतोक सुबल उन सन्मुख आगें
लेन पठाये ॥१५॥ इतहुबाजे लागे वाजन दुंदुभी धोंसा गाजे ॥ रुंजन मुरज
आवज सारंगी यंत्र किन्नरी साजें ॥ इन मध्य मुकुट धरें नंदनंदन नटवर
भेषनराजें ॥ यह शृंगार नंदराय हस्त को कोटिक मन्मथलाजें ॥१६॥ नख
सिखते अभरण की जोतें जग मगाय मेरी माई ॥ खुले बंद सब देह उधारी
काछ जाल समुदाई ॥ खोल भुवन भूषणदे बावा होरी भलें मनाई ॥ खातहें
बीरा उमग अलोलन रोमरोम छबि छाई ॥१७॥ सुनले ललिता आज खेल

यह मचे खिरक में माई ॥ मानत नहीं जब वचन अटपटे उतते अंगुरी फिराई ॥
 चली हे निसंक निरंकुश करिणी एक ठोर तहां आई ॥ सुबल तोक दोऊ
 गहिलोने जान कहूं नहिं पाई ॥१८॥ राखे हैं ओल कहत ब्रज सुंदरि तुमें
 कहां लों पैये ॥ दगा कियो किधों सांच कहत हो कहो किहिंवात पत्थैये ॥
 जो कूटक तो बांध बांध के सांठिन नृत्य नचैये ॥ जो सांचे होइन बातनते
 देहें छांडपुतनैये ॥१९॥ बडी वेर भई सुध जब लीने राखे हैं दोउ घेरे ॥
 कहत हैं अवदूर भज स्याम घन पीतांबर को फेरें ॥ जानसौ दृढ पकरे नहीं
 छूटें दौरे दिये दरेरे ॥ खरिका खेंचि दईले सांकर तरुणी रहगई हेरें ॥२०॥
 चढचढ अटा चतुर्दिश वरषत भरभर कनक कमोरी ॥ नांहिदाव बदलो लेवे
 को सहचरी रंग रंग बोरी ॥ छूटतहे जल जंत्रन चहुंदिश बोलत हो हो
 होरी ॥ सुबल भली विध पहोच्यो मिल मिल यह सिख दीनी गोरी ॥२१॥
 भई मारगो वरकीनीके ललिता सेन जनाई ॥ दुहि पकरी तुम अबमोहि मेलो
 सोंहलाल की खाई ॥ तब जोजीभ दाबि छिटकायो समझे न भेद कन्हआई ॥
 द्वार कपाट उधार भजेहू फिर मोहि सिढी बताई ॥२२॥ उतसामनहीं भये
 संपूर्ण इतहि सब विध पूरी ॥ गहहे ऊपर गनीन जातही मेंन मुनैया चूरी ॥
 विद्रम दाब दशन सोंकोपी चंद्रावलियुधपूरी ॥ कीनी मार उलेंडी गागर
 आंधी बंदन धूरी ॥२३॥ कृष्णागर ओर अबीर सानिकें गेंदुक सरस संवारी ॥
 श्रीदामा दिस खाजे कहियत तिनकें तकतकमारी ॥ कूदतजि ततितलगेगातपर
 हलधर बाह पसारी ॥ लगेहें अति सुकुमार लाल कों कहां गई प्रीति तुम्हारी
 ॥२४॥ हम एसो नहीं खेल खेलिहें जो लागे या तन कों ॥ देहेंभजाई यह
 सेन तिहारी गहेहें दोऊ जनकों ॥ तुम तो कहत ललित यह मूरति जीवन
 हम ब्रजजन को ॥ एकेले आई मिलोकिन अग्रज पूछि आपने मनको ॥२५॥
 जेरी निसंक लइठालेकर पकर लीये भरकोरी ॥ जागि उठे ब्रजराज सदन
 में सब ऐसी भांतिन दोरी ॥ मुख मांडत सुमन नपंकनसों उर चोवा सों
 बोरी ॥ उल्हर रहवादर रंग रंगन ऐसी होत हे होरी ॥२६॥ उतरी कर
 मनोरथ वांके देख यशोमति लाजी ॥ जीती हैं रसरीति कटक वर सुरन
 छबीली छाजी ॥ परमानंद दुंदुभी आई बगर में बाजी ॥ देदेकूक ब्रजेश
 प्रभृति तब सभा अथाई भाजी ॥२७॥



४५ ॐ राग सारंग ॐ अहो खेलति बसंत पिय प्यारी ॥ लाल संधि भरि लई पिचकारी ॥१॥ पचरंग लिये गुलाल लाड़िलो ऊपर डारी ॥ केसर साख जबाद कुंमकुमा भीज रही रंग सारी ॥२॥ गाबति खेलति मिलति परसपर देति दिबाबति गारी ॥ छीन लई मुरली पीतांबर रंग रह्यां अति भारी ॥३॥ देति नहीं डहकावति सुंदरि हँसि हँसि जात सुकुमारी ॥ फगुवा लेहु देहु पीतांबर करति कुंवर मनुहारी ॥४॥ बरनों कहा कहति नहिं आवे सांभा सिंधु अपारी ॥ 'इत हरिबंस' लेहु बलि मुरली तुम जीते हम हारी ॥५॥

४६ ॐ राग सारंग ॐ केसरि की खंर किए, जोबन मद पिण, निडर छल डोलत है नंद को मोहन स्याम ॥ हाथ में गुलाल लाए और कछु छल हायें ॥ काहूँ प दाई से दाईं यहीं बिच मंडरात कौन धों काम ॥१॥ जमुना जल की कब की अरबरात, कबलों धसेई रहिए धाम ॥ 'आनंद घन' धूमि योही देखत उधम गोकुल ही आठो जाम ॥२॥

४७ ॐ राग सारंग ॐ खेलति बल मनमोहना ॥ ए तरेह ॥ नख-सिख भेख कीयो मनमोहन अंग अंग सोभा बरनी न जाई ॥ जाई मिले वृषभानु कुंवरि सौं मन में स्याम बहुत सुख पाई ॥१॥ अबीर की चोली फबि बहु मोली निरखति मनमथ गयो लजाई ॥ 'छीत स्वामी' गिरिधरन श्री विठ्ठल अद्भुत छबि कौन पै कही जाई ॥२॥

४८ ॐ राग सारंग ॐ चलां सुख देखियै हो अहो जहाँ खेलति श्री ब्रजराज ॥ध्रु०॥ आर्यो जान्यों फागु भागु सबहिन करि मांन्यौ ॥ गयें गाम के ग्वेंडे केलि सुख सागर ठान्यौ ॥ एक ओर सब ब्रज बधू स्यामा नृ के संग ॥ एक ओर ब्रजराज लाड़िलो हो सरवन सहित भरि रंग ॥१॥ भूषन बसन अनूप रूप कछु कहति न आवैं ॥ रति नाहिं अनुहारि नारि उपमा कों पावैं ॥ तामें मृगनैनी नवल, राधा जू सुकुमारि ॥ ज्यों उड़गन में चंद्रमा हो कोटिक दीजें बारि ॥२॥ चहुँदिसि बाजे बजे ढोल ढफ भरि नगारे ॥ ताल मृदंग उपंग और बरनन को पारे ॥ तामें मोहन मोहनी हो

मुरली देति बजाई ॥ तान सुनति तिहुं लोक में हो रह्यो दसों दिसि छाई ॥३॥ भरे कनक के माट अंगर-सत, केसर घोरी ॥ भरि-भरि पिचकाई लैंहि फैंट गुलाल की झोरी ॥ गोपिन ही के छिरकै बदन हो मदन बिराजत गात ॥ खेलि परसपर अति बढ्यो हो आनंद उर न समात ॥४॥ गारि गावैं ग्वाल फागु की परम-सुहाई ॥ श्रबनन सुनति सुख होति स्याम-सुंदर सुखदाई ॥ इत तैं मोहन बिहंसि कैं हो वीरी देति पठाई ॥ उत ग्वालन कों मान बढ्यो हो चितै चोगुनों चाई ॥५॥ सबै सखी मिलि सिमटिं गहन एकु सखा बिचार्यो ॥ गह्यो अचानक जाई कौरि भरि प्रीतम प्यारी ॥ ताहि देखि बिह्वल भए हो सखा सकल इहिं ओर ॥ उन दृढ़ कैं ऐसैं गह्यो मानों पायो पलान्यों चोर ॥६॥ बैनी सीस सँवारि सेत-सारी पहिराई ॥ सेंदुर दीनों भाल तनक मसि गाल लगाई ॥ कह्यो तुम जाउ सबै हो जहाँ तिहारे भाई ॥ पाछें तैं तारी दर्द हो बीच रहे खिसि आई ॥७॥ देखि सरखि कौं रूप स्याम कौं सकुचि जनाई ॥ तब उन दुचितें लखे घेरि के गहे कन्हाई ॥ लैं औई गहि झुंड में हो देखैं रूप निहारी ॥ त्रिपत न मानें नेक हूँ हो नैन निमेष बिसारि ॥८॥ गह्यो पीतांबर औनि कौनि कछूबै नहिं कीनी ॥ परसे पानि कपोल मानि सबहिन रति लीनीं ॥ कह्यो बिहंसि कैं बेगि अहो पिय फगुवा देहु मँगाई ॥ कै बाबा वृषभानु कौं हो देऊ जसोदा माई ॥९॥ तब हँसि नंद कुमार बसन बहु भांति मंगाये ॥ पहिराये सबनि जैसे जाके मन भाये ॥ नख सिख लौं भूषन दिये हो मनिमय जटित जराई ॥ तापै चितयो प्रेम सौं हो सो सुख कहाँ समाई ॥१०॥ लागी दैनि असीस प्रेम सौं गदगद बानी ॥ सबहिन के दृग माँझ एकु छबि स्याम समानी ॥ देखि-देखि सुर हरखि कैं हो बरखत सुमन अपार ॥ मदन मोहन जू के चरन रेनु पै हो 'कृष्ण दास' बलिहार ॥११॥

४९  राग सारंग  जानि क्रतुराज सब सुख करन काज ब्रजराज के लाल कौं रुचि नवीनी ॥ उपजी अंग-अंग मानु प्रफुल रंग-रंग सब सखन लिये संग करमनी प्रबीनी ॥१॥ साजि दल जोरि सब लै चले कुंज कों सखिन के संग प्यारी रंग भीनीं ॥ खेलि होरी करें बिबिधि बानिक

धरें रंग गोटन भरें करन लीनी ॥२॥ लाल गुलाल बूका लयें फैंट में नीर
कलसन भरि संग लीनिं ॥ साजि दल भेख सब सुभट से हैं रहें रंग बहु
घुमडि आकास छीनें ॥३॥ लाल दल पेल ब्रज जुबती कैं जूथ पर मदन
दल ठेल संग्राम छाये ॥ ऐकु एकनि धरें मुख हि मंडित करें सीस पै रंग
कैं कलस नाये ॥४॥ बाहु अंसन धरें निरत मानों नट करें कला संगीत
पूरन सुहाये ॥ घोष दुंदुभि बजै झालरी किन्नरी चंग मौहचंग बहु पुर छाये
॥५॥ भाँति भाँतिनि खचित रंग में चूर भये सुर से कुंज तैं पुलिन आये ॥
सुनति ब्रजराज के कुंवर की केलि कौं चढ़ि बिमान सब देव धाये ॥६॥
लोक तिहूँ पुरन में रंग बरखन लग्यौ देव वधू सुनति सब दोरी आई ॥
काम अंग-अंग के बिमल भई चित्रन कैं समन परि पूरन लजित दिखाई
॥७॥ दिवस चालीस ब्रजराज सुत याहि बिध रंग होरी दोऊ झुंड कीयो ॥
तियन रंग रस रख्यौ आप सुख लयो कुसम खेल मकरंद पीओ ॥८॥ नित
लीला ललित रसिकवर पिय की भाग को पूँज जिहि दृगन छाँई ॥ कौन
कवि गणना कर सके तिहूँ लोक में 'सरस रंगन' लसन रसन भाई ॥९॥

५० (॥१॥ राग सारंग ॥१॥) तैं प्यारी चित हर लियौ हो तो बिनु कछु न
सुहाई लाल ॥ तलफत जल बिनु मीन ज्यों हो चंद चकोर दिखाई लाल
॥१॥ फिर-फिर बात वेई बूझे बूझि-बूझि पछिताई लाल ॥ कोकिल इंदु
तपत करै लग्यौ मदन सरजाई लाल ॥२॥ देखैं ही सब जानि हों हो बैनन
कछु न कहाई हो लाल ॥ यह सुनि स्याम कुंज चलि ठाड़े, पाछैं आई
री लाल ॥३॥ सखन सहित प्यारे जहाँ सैनन सबै समुझाई लाल ॥ जुगल
हस्त अखियाँ मिचीं पुनि मुरली उर लाई हो लाल ॥४॥ जब तैं कइयौ
यह को है री जुगत चतुर्भुज राई लाल ॥ यों कहि रीझई लाड़िली सनमुख
हैं हरखाई लाल ॥५॥ छिरकति चोवा, चंदना, अबीर, गुलाल उड़ाई लाल ॥
प्रफुलित मन तब तैं करे, उस आनंद न समाई लाल ॥६॥ रीतिहार ललिता
दयो प्यारी कछूक मुसिकाई हो लाल ॥ चरन कमल बंदन करै 'द्वारिकेस'
बलि जाई हो लाल ॥७॥

५१ (॥१॥ राग सारंग ॥१॥) प्यारी नवल निकुंज महल बैठे पिय नव कुसुमन

सेज संवारी हो प्यारी ॥ नवल-नवल बनी नागरी नवल बने गिरिधारी हो प्यारी ॥१॥ नव केसर को चोलना नवरंग पाग संवारी हो प्यारी ॥ नील पीत पट ओढ़नी नवसत रसिक कुंवरी हो प्यारी ॥२॥ नवल-नवल रितुराज को खटारि तु संग सुहाई हो प्यारी ॥ नव पल्लव अंग ओपतें रतिपति को मन हारि हो प्यारी ॥३॥ सप्त सुरन धुनि बाजही तान मान बंधान री ॥ तौ बिनु पिय न भाव ही लागत जेसे रान री ॥४॥ तें मोहन को मन हर्यौ तुहि-तुहि जपे माल री ॥ छिनु उठत छिनु बैठही छिन में होत दुसाध री ॥५॥ पिय को विरह मन जान्यौ विविध धरे सिंगार री ॥ नवसत अंग संवारि के नव कुसुम धरे दल भार री ॥६॥ कुंज सदन बैठे पिया कुंज निकुंज के द्वार री ॥ आई मिलि नव नागरी देखि सबै मुसकाई री ॥७॥ अधर अमृत रस घुंट ही छिरके मुख तंबोल री ॥ झुंडन आई झुमिके झुंड मच्यौ दे बोल री ॥८॥ कनक बेलि अंग सोहनी जैसे स्याम तमाल री ॥ तेसे पिय अंग सोहनी कंचन की मनि माल री ॥९॥ मृदु मुसिकाई के हैसि बोलत हैं मृदु बोल री ॥ कोककला गति ठान ही उपजत रंग कलोल री ॥१०॥ अरस परस सुख उपज्यौ बाढ्यौ रंग प्रमोद री ॥ 'गोविन्द' के मन ये बसो बढ़ावन नेह री ॥११॥

५२ ~~हो~~ राग सारंग ~~हो~~ बनी रूप-रंग राधे, तातैं अधिक बने ब्रजनाथ ॥ ललिता अरु चंद्रावली मिलि, बन्यौ छबीलीं साथ ॥ ताल पखावज बाजहीं संग, डफ मुरली को घोर ॥ नंद-द्वार औसर रच्यौ दोऊ, राजत नवल किसोर ॥ एक कोद ब्रज-सुंदरी, इक कोद गुवाल गुबिंद ॥ सरस परसपर गावहीं, दे गारि नारि बहु-बृन्द ॥ आवहु री ! हम दुरि रहैं बल-भद्र कृष्ण गहि देहि ॥ लोचन उनके आजही अरु, अधरनिकी रस लेहि ॥ सीला नाम गुवालिनी, तिहिं गहे कृष्ण धपि धाई ॥ उपरैना मुरली लई, मुखनिरखि हरषि मुसुकाई ॥ गहे अचानक राधिका, तब रही कंठ भुज लाई ॥ मन के सब सुख भोगये, जब परसे जादव-राई ॥ कोटि कलस भरि बारुनी, दई बहुत मिठाई पान ॥ राधा-माधौ सु रस रख्यौ, सब चले जमुन जल न्हान ॥ द्वितिया सकल समाज सौं, पट बैठे आनंद कंद ॥ दान देत ब्रज

सुंदरी, नग-भूषण नव निधि नंद ॥ बन-बीथिनि भरि पुर गलिनि में, उमंग्यौ रंग अपार ॥ सूर, सु नभ सुर थकित रहे सब, निरखत प्रान-अधार ॥

५३ (॥३॥ राग सारंग ॥३॥) मोहन नागर हो लाल तुम बरसाने किन आवो ॥ जूथ-जूथ जुबतिन के देखो लोयन हियो सिरावो ॥१॥ ससिवदनी सावक मृगनैनी खेल निकुंजनि आवे ॥ अति बिचित्र मधुर सुर लीने गीत काम के गावे ॥२॥ एकही बेस किसोरी गोरी प्रीतिरीति उपजावे ॥ एको पल जो देख न पावे तुमारी सुधि बिसरावे ॥३॥ तिन में राजे किसोरी श्री राधा श्री वृषभानु दुलारी ॥ कनकवेल कवनी गजगवनी कीरति प्रानपियारी ॥४॥ अष्ट सखी ताके संग सोहे चंद्र भगा ललिता री ॥ जोबन अंग सुगंध माधुरी सुंदरता सब बारी ॥५॥ चले स्याम अभिराम गाँव वृषभान नृपति के आये ॥ एको न लीनो संग सखा बनकौ सब फिर पठाये ॥६॥ सहचरी कौ धरि भेष सकल सिंगार अद्भुत बनाये ॥ चंपकली के भेद लाल ललिता लखि के तब ही पाये ॥७॥ कहीं कुंवरि सों बात जाई एक भौंति विचित्र बनाई ॥ सखी सांवरी आज कोऊ अद्भुत या भुव पर आई ॥८॥ तुमारी गोरी वे स्याम वदन सोभानिधि सुंदरताई ॥ तुम गोरी वे स्याम मूरति मानो मैं बनाई ॥९॥ मधु रितु फागुन मास आज हम तुम मिल खेलैं होरी ॥ चौबा चंदन बुका बंदन भेट भरि-भरि झोरी ॥१०॥ विपिन विनोद परस्पर बाढ्यो झकझोरा झकझोरी ॥ 'ब्रजभूषण' हित दंपति संपति भूतल अबिचल जोरी ॥११॥

५४ (॥३॥ राग सारंग ॥३॥) या हिं तैं पीय तेरो नाम धर्यौ है ढीठ ॥ होरी आई है मन भाई पायो जतन करि नीठ ॥१॥ मोय देखि उपहास करत सब आईये मोहन मीत ॥ सुनौं स्याम समझाई कहत हौं गुप्त राखीए पीति ॥२॥ कबहुं सैन दै भाजि जात हो यह जो करत अनीत ॥ जानति हौं पीय हो बहु नाइक परति नहीं परतीत ॥३॥ कबहुंकर'बकि कंठ लपटावति कबहुंक चलति दै पीठ ॥ 'श्रीविठ्ठल गिरिधरन लाल' तुम्है लगे न काहू की दीठि ॥४॥

५५ (॥३॥ राग सारंग ॥३॥) रंगीली होरी खेलैं रंग सौं रंग रंगीलौ

लाल ॥ रंगीली ॥ रंग रंगीली श्री राधिका संग रंगीली बाल ॥ रंगीली ॥१॥
 भाजन भरि-भरि रंग के केसु केसर नीर ॥ रंगीली ॥ चोवा चंदन अरगजा
 संग गुलाल अबीर ॥२॥ सौंधे सगबगे तन सोहें सबन रगमगे रंग ॥ स्यामा
 अपने जुथ 'सौं' स्याम सखा लीये संग ॥३॥ पटह निसान महुवरि बाजति
 ताल मृदंग ॥ दुहुं दिसि सुधर समाज सौं उपजति तान तरंग ॥४॥ जुरे
 टोल दोऊ आई कैं रहै उमंग रस पाग ॥ करन मनोरथ आपनों ज्यों मन
 में अनुराग ॥५॥ जम्यौं रंग चाँचरि मच्यौ कहा कहु सुर सांच ॥ अंग
 अनंग न लाय के भ्रुकुटी नैननि नांच ॥६॥ उमंग्यौ आनंद क्यों रहै कापै
 रोख्यो जाई ॥ औचक हो हो करि उठी दीने सब टहुकाई ॥७॥ सिमटि
 सखा सनमुख भयौ जल जंत्रन मार मचाई ॥ अबीर गुलाल उड़ाई कैं दिनमनि
 दीयौ छिपाई ॥८॥ मेघ घटा ज्यों छाई कैं बरखन लागी आई ॥ तन सौं
 तन सुझति नहि चंद उज्यारी भाई ॥९॥ बसन मार नचाई कैं दीनै सखा
 भजाई ॥ हरि हलधर गहि पाइ कैं दीयै जीत के बाजे बजाई ॥१०॥ घेरि
 रही चहुं और तैं भाजन कीं निहं दाव ॥ अकबक से मन ह्वै रहै भुले सकल
 उपाव ॥११॥ हँसति सखी सब तारी दै-दै आवे करि आवेस ॥ फाग में
 प्रभुता को गिनै कीये है चोर के भेष ॥१२॥ इक सखी ढिंग आई कैं बोली
 चिबुक उठाई ॥ कहति मौन गहि क्यों रहें ठग के से लडुवा खाई ॥१३॥
 नैन आंजि मुख मांडि कैं हलधर दीने छांड़ि ॥ ग्वाल सखन की लाज तैं
 लियौ है नीलांबर आडि ॥१४॥ दृग मुख पोंछति जब चले बहुत खिसानें
 होई ॥ हँसति सखा बलराम सौं आए एक गये दोई ॥१५॥ किलकि-किलकि
 हँसि यों कहै धन्य तिहारौ खेलि ॥ भाजे जीव बचाई कैं निज भैया कौं
 मेलि ॥१६॥ संकरषन तब यों कछौं तुम ही लावो जीति ॥ बड़े मिलनीयों
 मिलि गये भूलै मन प्रतीति ॥१७॥ इत गोपी नंदराई कैं आई भवन मंझारि ॥
 द्वार कपाट बनाई कैं लै घेरे दोऊ सारि ॥१८॥ इत राधा नंदलाल कौं
 करि एकांत इक ठौरि ॥ झूमकि चेतब गाव हि जुरि जूथ सब पौरि ॥१९॥
 लहेकन रस बस ह्वै रही राखति बाजति ढोल ॥ जो चाहै सौं लीजिये नंद
 नदति यों बोल ॥२०॥ राधा माधौ बोलि कैं लै आई पुन पास ॥ नंद जसुमति

बोलिकैं पुजवाई जिय आस ॥२१॥ दोऊ रंगमगे रंग में मिल कीनों एक
 बिचार ॥ इत गठजोरो जोरी कैं राधा नंदकुमार ॥२२॥ महरि घर आनंद
 बढ़्यो लीयै गोद बैठारि ॥ पाट पाटंबर लै दीयै मनि कंचन नग वारि ॥२३॥
 सब विधि सब भाये भये पुरइ मन की आस ॥ या घर या सुख कारनैं
 भावति ब्रज कौ बास ॥२४॥ गोपीजन हित कारनैं गोप भेष अवतार ॥
 ब्रिंदाबन बसति सदां जहां क्रीड़ा नित बिहार ॥२५॥ श्री विट्ठल पद रज
 कृपा ऐसो हिय में ध्यान ॥ 'छीत स्वामी' गिरिधरन कौ कीनों सुजस बखान
 ॥२६॥

५६ ॥ राग सारंग ॥ ललनाँ नव किसोर नागर हरि धरचौ जु नटवर
 भेख हो ॥ ब्रिंदाबन बिहरति चले आनंद बढ़्यो बिसेष हो ॥१॥ श्री स्यामा
 सखि बोलि लई, गिरिधर पिय के संग हो ॥ ऋतु बसंत मन मोद सौं
 बन पुहुपित नव रंग हो ॥२॥ सेत डँडिया सुरंग बन्यो अति लैहिंगा पचरंग
 बाँनि हो ॥ तोई अरुन, पियरे पलें, केसर छींट सुहांनि हो ॥३॥ मृगमद-
 तिलक अंजन दियो अधरनि रंग तंबोर हो ॥ चिबुक चारु नैकु चुनगीया
 चौकी रवि सम हो रहो ॥४॥ स्रवन खुभी दुलरी गरें, कंचन बलय अमोल
 हो ॥ चूरी चारु द्वै भुज बनी, कबरी कुसुम झकझोल हो ॥५॥ नीवी बंध
 फौंदा बन्यौ नाभि जलज के तीर हो ॥ कटि रसना पद बीछीया, तापै क्वनित
 मंजीर हो ॥६॥ सुखद सिरोमनि साँवरो लटकि पीत सिर पाग हो । चारु
 टकौंचा खासा कौ सौंधे भींजति लाग हो ॥७॥ कनक हि बरन तिलक
 बन्यो कौस्तुभ राजत कंठ हो ॥ उपरैनी आछी बनी कटि किंकिनि फेंटा
 गंठ हो ॥८॥ लाल इजार नूपुर बने कूँजत मृदु कल-बंस हो ॥ मान सरोवर
 में मानौं क्रीड़ति दंपति हंस हो ॥९॥ फूलछरी कर पिचकारी कुच पै मेलैं
 कच सीस हो ॥ घूंघट पट दंतिनि गह्यौ दै भृकुटि कमानक सीस हो ॥१०॥
 कुंमकुम चंदन अरगजा मिस्रित माँझ कपूर हो ॥ कनक कचौरा कर धरें
 तकि तकि मारत दूर हो ॥११॥ बूका थैली हरि गही, दै मूठी मुख माँझी
 हो ॥ घेर अंबर, लखियतु नहीं भ्रमि गुलाल भई साँझि हो ॥१२॥ मुरज,
 पखावज, बांसुरी, आबज, दुंदुभि ढोल हो ॥ ताल मृदंग, चंग, कठतोरी,

बिच मुख चंग सुबोल हो ॥१३॥ गोमुख, डंडा, सुर-तुरी जंत्र, रबाब अनूप हो ॥ गारी परसपर गाव हों सांवल गौर सरूप हो ॥१४॥ इत सौं उन तट खेल हों कौतुक कह्यौ न जाई हो ॥ रिझवति ललनां लाल कों सुंदर सारंग हो ॥१५॥ मुख देखति अति सुख भयो कूजति सुक, पिक, मोर हो ॥ अनंग मुरझि धरनि परचौं सखि डारति हो तिन तोरी हो ॥१६॥ चांचरि चैत सुहावनों गावति फागु धमार हो ॥ 'बिस्तु दास' सुरनर मुनि पद रज, बंदित सार हो ॥१७॥

५७ (११) राग सारंग (११) सुंदरी हो हो होरी रंगभरी खेलै रसिक रसिकनी फाग ॥ सुंदरी एकु तैं एकु सुंदर बनीं फूल्यौ कुसुमन मानों बाग ॥१॥ बागौ धरायै श्री अंग लटकति सीसैं पाग ॥ केसर छिरकै वल्लभ पिय प्रगट करति अनुराग ॥२॥ अरगजा भरि-भरि पिचकाई चलावैं परम पराग ॥ अवीर उड़ावै रंग भरे खिलावैं महा बड़भाग ॥३॥ सब मिलि बाजे बजाव हों धमार गावैं बहु राग ॥ खेलैं गोकुल में समाज सों पूरे भागन जाग ॥४॥ यह बिधि खेलैं परसपर पूरन प्रगट्यौ सुहाग ॥ 'वल्लभ दास' सुख निरखैं ही चरन कमल चित लाग ॥५॥

५८ (११) राग सारंग (११) स्याम दुठौना कौन कों जाके घूँघरवारे बार सखी री ॥ध्रु०॥ सखी री मोर मुकुट माथैं धरे अरु मृगमद-तिलक सुचारु ॥ करनफूल कानन बनें उर गज-मुक्ता हार सखी री ॥१॥ मोर मुकुट कर बांसुरी, अरु पीतांबर करि फैंट ॥ गोरस बेचनि जाति ही मोसों भई अचानक भेंटि ॥२॥ सखी री भोर भवन तैं उठि चली नंद-महर की पौरी ॥ छैल छबीलौ छोहरा छीन लीयौ चित चोरी ॥३॥ सखी री कहा करीं कैसें मिलैं किहि मिसि देखनि जाऊँ ॥ सखी री चितवत ही चोरी लगे इह ब्रज एसों गाँऊँ ॥४॥ बिन देखैं तन तरसैं ही अरु रुचै न भोजन पान ॥ मों मन जैसी बीत हों सो जानति 'जन भगवान' ॥५॥

५९ (११) राग सारंग (११) सुंदर, सुभग, तरनि-तनया-तट, खेलति हैं हरि होरी हो ॥ कौवरि भरि-भरि कुंमकुमा रंग साख अरगजा घोरी हो ॥१॥

बाजत ताल, मृदंग, झाँझि, ढफ, मधि मुरली-धुनि थोरी हो ॥ सुर वीना
 किन्नरि अजै आदि दै बरनि सवै कबि कोरी हो ॥२॥ सब जुबतिन कर
 मतौ परसपर पकरनि स्याम हि दौरी हो ॥ पकरि स्याम कों करत मन
 भायौ, मुख मंडित रंग रोरी हो ॥३॥ आंखिन अंजन आंजि बिंदुली दै एक
 पीत-पट झकझोरी हो ॥ एकु गैर सब सखा बिडारे, गहि बांधे पट डोरी
 हो ॥४॥ गहि राधिका स्याम संग आगैं, दुंदुत दुलहिनि गोरी हो ॥ पछी
 कान्ह जिनि सुभग लगन हैं दिन थोरी मति-भोरी हो ॥५॥ नंद जसोमति
 जानि हरखि जिय गाय दई भरि खोरी हो ॥ मेवा बहुत मंगाई स्याम सखा
 सहित सब छोरी हो ॥६॥ बौहोरी निसंक सब खेलन लागे सब करै जोबन
 तोरी हो ॥ प्रमुदित मन हुलसति सब ब्रज जन करत स्याम सिर होरी हो
 ॥७॥ नांचति गावति करति कुतूहल सबन लगी है ठोरी हो ॥ अबीर गुलाल
 उड़ाई घूँघरि करि करत फैंट टक ठोरी हो ॥८॥ तैसैं किसोर बने बरस
 षोडस के तैसीये सुघर-किसोरी हो ॥ राधा मोहन हाट करषत मिलि घन-
 दामिनी छबि चोरी हो ॥९॥ कुंमकुम अरगजा कीच में पग थके चलि चहुँ
 दिस मोरी हो ॥ बिथुरी अलग तिलक छबि राजै, ज्यों दामिनी घन घोरी
 हो ॥१०॥ मोहन पै पीत रंग के रंग रंगी है सारी घोरी हो ॥ आनंद मगन
 होत पन छूटत, देति गगरिया फोरी हो ॥११॥ ब्योम विमान सुरपति गति
 थकित कहत हतो सुपोरी हो ॥ कंचन-छत्र-चँवर धरि सब जुरे, आये पीय
 सिंघ पौरी हो ॥१२॥ स्यामा स्याम समित आतुर है सिंघासन बैठे इक
 ठोरी हो ॥ बलि-बलि जाई श्री 'गोविंद' इन पै बीरी खवावै कहे चिरजीवो
 यह जोरी हो ॥१३॥

६० (॥१॥ राग सारंग (॥१॥) हो प्यारी होरी खेले रस भरे ब्रज जुबतिन
 के संग री प्यारी ॥ एकत आई सबै जुरीं सौधे भीने अंग री प्यारी ॥१॥
 केसर कलस लिये धरें कटि गुलाल सुरंग री ॥ पिचकाई नगन जराय
 जरी खेलत होत अनंग री ॥२॥ कोऊ कंचन सों धरे छोरत देखि सुकंठ
 री ॥ केसर आड लिलाट करे कोउ लेत उछंग री ॥३॥ कोऊ बजावत
 किन्नरी कोउ उठाई मृदंग री ॥ कोऊ ओचका हँसि परी तोरत तान तरंग

री ॥४॥ लायक नारी बनाय के झूठो नाम कराय री ॥ घूँघट अधिक तनाय
 के नारीन में ले जाय री ॥५॥ कोउ कुल बधु जनायके कहत बात मुरझाय
 री ॥ नैसँकु लाये मनाय के नीके खेल खिलाय री ॥६॥ जब ही चरन
 गनाय के धरत चौंप चित लाय री ॥ पाछे तें सिर नायके हैसत कंठ लपटाय
 री ॥७॥ कोऊ झुमत नायके देत अबीर उड़ाय री ॥ अरगजा अधिक सनाय
 के वदन पानि परसाय री ॥८॥ मिलि आई सब भामिनी पकरि लिए चहुं
 ओर री ॥ उलटि लगी मानो दामिनी रख्यो बीच घनघोर री ॥९॥ एक
 कहे ए कामिनी लेहो अप अपनी कोर री ॥ बिसवासी गजगामिनी बाँधि
 छोरे सो छोरे री ॥१०॥ तब धाई सुखधामिनी राजत रूप मरोर री ॥
 ज्यों उजियारी यामिनी एक एकते जोर री ॥११॥ आई हैं अभिरामिनी
 झटकि लयो कर जोर री ॥ हैं तुमारो एक स्वामिनी सोच करो किन ओर
 री ॥१२॥ हैसि ग्रीवा भुज मेल ही कोऊ उठत अति गाज री ॥ अंस बांह
 धरि पेलही कोऊ जात गहि भाज री ॥१३॥ केतेक रूप नबेलही सोहत
 खरी विराज री ॥ केतेक बेस नबेल ही निरखी रहत काम लाज री ॥१४॥
 इहि बिधि होरी खेल ही मनमथ सेना साज री ॥ तेरे तो अलबेली ही
 कहा रही जिय लाज री ॥१५॥ मदन मोहन पिय के लही रस सागर
 की राज री ॥ यह सुनि चली अकेली हेली धाय कंठ मधि राज री ॥१६॥
 श्री विट्ठल पद पद्म की जैए बलि बलिहार री ॥ 'गोकुल पति' सुख सदन
 की गावत सरस धमार री ॥१७॥

६१ (॥१॥ राग सारंग ॥१॥) होरी खेलत जमुना केँ तट, कुंजनि-तर बनवारी ॥
 इत सखियन कौ मंडल जोरे श्री वृषभानु-दुलारी ॥ होड़ा-होड़ी होती परसपर,
 देवें आनंद गारी । भरे गुलाल, कुँमकुमा, केसरि कर कंचन-पिचकारी ॥
 बाजत बिन, बाँसुरी, महुवरि, किन्नरि और मुहचंगा ॥ अमृतकुंडली और
 सुर मंडल, आउझ, सरस उपंगा ॥ ताल, मृदंग, झांझ, डफ बाजै, सुर
 की उठति तरंगा ॥ हैसत-हैसावत करत कुतूहल, छिरकति केसर रंगा ॥
 तब मोहन सब सखा बुलाये, मिलिकै मतौ बतायौ । रे भैया! तुम चौकस
 रहियो, जिनि कोउ होउ गहायौ ॥ जौ काहूँ पकरि पाइहें, करिहें

मन-कौ भायौ । तातैं सावधान है रहियो, में तुमकौ समुझायौ ॥ राधा गोरी नवल किसोरी, इनहुँ मतौ जौ कीन्हौ । सखि इक बोलि लई अपनै ढिंग, भैष जु बलकौ कीन्हौ ॥ ताकाँ मिलन चले उठि मोहन काहू सखा न चीन्हौ । नैसुक बात लगाई साँवरे, पाछे तैं गहि लीन्हौ ॥ आई सिमिट सकल ब्रज-सुंदरि, मोहन पकरे जबहीं । हम माँगति हीं कह विधिनापे, दांव पाई हैं कब हीं ॥ तब तुम चीर हरे जु हमारे, हा हा खाई सबहीं । अब हम बसन छीनि करि लै हैं, हा हा करिहौ अबहीं ॥ एक सखी कह, बदन उठावहु, हमहूँ देखन पावैं । श्री मुख-कमल नैन मम मधुकर, तन की तृषा बुझावैं ॥ एक सखि कह आँखि आँज के माथे बैदी लावै । एक सखी कह इनहिं नचावहु, हम सब ताल बजावैं । एक सखी आई पाछे तैं मोरपच्छ गहि लीन्यौ । एक सखी त्यों आई अचानक, पीतांबर धरि छीन्यौ ॥ एकै आँखि आँजि, मुख माँड्यौ, ऊपर गुलचा दीन्यौ । मानत कौन फाग में प्रभुता, मन भायौ सो कीन्यौ ॥ एक कहे, बोलौ बल भैया तुमकों आई छुड़ावैं । सखा एक पठवौ कोऊ घर कौं, जसुमति कौं लै आवैं ॥ जानत हो कल-बल के छूटैं, सो नहिं छूटन पावैं । राधाजूसौं करौ बीनती, वै बलि तुमहिं छुड़ावैं । दूरिहि ते देख्यौ बल आवत, सखी बहुत उठि धाई । कल-बल-छल जैसें तैसें करि, उनहुँ कौं गहि ल्याई ॥ किये आनि ठाढ़े इक ठौरहिं, बल-मोहन दोऊ भाई । उनहुंकि आँखि आँजि मुख माँड्यौ, राधा सैन बुझाई ॥ देखि-देखि ब्रह्मा, सिव नारद, मन ही मन पछिता हीं । बड़े भाग हैं श्री गोकुल के, हम मुख कहे न जाही ॥ जाके काज ध्यान धरि देख्यौ, ध्यानहु आवत नाहीं । वे अब देखे बनितनि-आजें, ठाढ़े जोरे बाहीं ॥ हँसि-हँसि कहत सु मोहन प्रीतम, मन मानौं सुख कीजै । छाँड़ि देहु, गृह जाउँ आपनैं, पीतांबर मोहिं दीजै ॥ कर जोरे गिरिवर-धर ठाढ़े, आणा हमकों दीजै । जौ कछु इच्छा होई तिहारी, सो सब फगुवा लीजै ॥ तब गिरिवर-धर सखा बुलाये, फगुवा बहुत मँगायौ । जोई-जोई बसन जाहि मन मान्यौ, सोई-सोई तिहिं पहिरायौ ॥ राधा-मोहन जुग-जुग-जीवौ, सब कोऊ भली मनायौ ॥ बाढ़ौ बंस नंद बाबा कौं, सूरदास जस गायो ।

६२ (१११) राग सारंग (१११) होरी खेलन जैऐ अरी जहां खेलत नंद ढोटना ।
 सखा-बुंद उत जुरे हौंहिगे तुमहूं नारा जोटना ॥१॥ अरी जहाँ सूर सुता
 के तीर बिराजत द्रुम के बिबिधि तरोना । अबीर गुलाल भरौं फैंटन में
 केसरि कलस भरोना ॥२॥ अरी जहाँ अपने संग की दुरि मुरि देखति वदन
 लाल कौ लोना । चल किन दौरि हमहूँ जो पेखैं बिनु देखैं न रहोना ॥३॥
 अरि जहाँ चोवा कुँमकुम कीच मचैगी रंग होरी घोरना ॥ पिचकारी जु
 छुड़ाई करन की मोहन पकरि भरोना ॥४॥ एकु सखी गहि बाँह मरोरै एकु
 रहि धरि मोना । एकु कहें चलि बाँहि बनायौ खेलति होहिगो जना ॥५॥
 अरि जहाँ एकु कहें चलौ उतहूँ खेलिए घर कुल जन के खोना । तौ लौं
 एकु आई रंगी भाजी चक्रित हौं हिं सब छोना ॥६॥ अरी जहाँ अद्भुत
 रंग परसपर लखियतु भूलि जाई ग्रह गोना । गिरिधर राधा कंठ लेत हैं
 जुवती नैन रे टोना ॥७॥ श्रीवल्लभ पद कमल पराग राग ही रे जित होना ।
 तौ यह लीला देखे बिनु भूतल जनम धरोना ॥८॥

६३ (१११) राग सारंग (१११) हों हरि संग होरी खेलौंगी । चोवा, चंदन और
 अरगजा पिचकारिन रँग मेलौंगी ॥१॥ लोकलाज कुल कानि सबैं तजि
 पतिवृत पाँइन पेलौंगी । 'सूरदास' स्वामी की बाँहन पकरि पकरि कैं
 झेलौंगी ॥२॥

६४ (१११) राग सारंग (१११) होरी खेलति मदन गुपाला । संग लये गोकुल
 के लरिका करति कुलाहल ग्वाला ॥१॥ लाल गुलाल अपने कर लीनै छिरकति
 ब्रज बाला । सीस दुमालो अति छबि राजति पीतांबर बनमाला ॥२॥ ताल
 पखावज आवज बीना मुरली सबद रसाला । अति झीने मधुरे सुर गावति
 'श्रीविठ्ठल' गिरिधर लाला ॥३॥

६५ (१११) राग सारंग (१११) हो हो होरी हो हो होरी हो हो होरी खेले गिरधर
 लाल । नंद महारि कौ कुँवर लाडिलौ संग सोभित ब्रज की बाल, होरी ॥
 केसरि भरें कनिक पिचकाई छूटत बूँद रसाल, होरी । किलकि किलकि
 कैं सन्मुख धावत डारत मुठी गुलाल, होरी ॥ नैन नचावत मधुरे गावत

चटक मटक गति ख्याल, होरी ॥ चोवा चंदन मुख लपटावत हँसत दै
दै कर ताल, होरी ॥ एक ब्रज नागरि गुन की आगरि लपटि स्याम तमाल,
होरी ॥ नैना आंजि और मुख मांडे बेंदी दिनी भाल, होरी ॥ रस में मगन
भये मिलि खेलत तन की कछु न संभार, होरी । चतुर्भुज प्रभु सिर मुकुट
बिराजत और वैजयन्ती माल, होरी ॥

६६ ॥ राग सारंग ॥ होरी खेलत नंदनंदन श्री वृषभान किसोरी ॥
इत सखियन के वृन्द जुरे हैं उत सखा मंडली जोरी ॥१॥ आये एकत
हैं सब कोउ नंदमहर की पोरी ॥ मन्मथ मदमाते नरनारी लाज पास गई
तोरी ॥२॥ खेल मच्यौ भारो होरी को अबीर गुलाल उड़ावे । मृगमद चोवा
चंदन छिरकत सीस अरगजा नावे ॥३॥ प्यारे लाल भामिनी ऊपर करिके
गुलाल अंध्यारी । केसर कुमकुम की मुख ऊपर छूटत है पिचकारी ॥४॥
अद्भुत छबि बाढ़ी तिहि औसर सोभा बरनि न जाई । अरुन घटा मानो
कामनि ऊपर अमृत बरखन आई ॥५॥ तब जुरि मिलि आई सब वनिता
मन में अति सुख पाई । भरि-भरि पिचकाई ले दोरी लागत खरी सुहाई
॥६॥ गावति गारी मीठी-मीठी जेसी ए मन भावे ॥ अमृत पगे से अक्षर
बोले कोकिल कंठ लजावे ॥७॥ तब प्यारी राधा प्यारे को छिरक्यो रुचिसों
गुलाल । मदनमंत्र मानो डारिबे गोरी मोहे मोहन लाल ॥८॥ तब ललिता
लालन को ओचका पकरि लिये भर कोरी । सजल जलद संयुत दामिनी
छबि तिहि ओसर चोरी ॥९॥ मांड्यो मुख नेननि आँज करिले दर्पण दरसावे ।
एक हंसत है तारी देके एक वदन निरखि सुख पावे ॥१०॥ तब राधा जू
फगुवा माँग्यो दीजे मोहन लाल । मन भायो श्री प्रिया को दियो पंकज
नैन बिसाल ॥११॥ श्री वल्लभ पद पदम प्रताप ते कछुक गान गुन पायो
अति 'विचित्र' गिरिधरन लाल को ख्याल होरी को गावौ ॥१२॥

६७ ॥ राग सारंग ॥ हो प्यारी होरी खेले रसभरे ब्रज युवतिनके
संग री प्यारी ॥ एकत आय सबै जुरी सोधेभीने अंग री प्यारी ॥१॥ केसर
कलस जु लिये धरे कटि गुलाल सुरंग री प्यारी ॥ पिचकाई नगन जराय
जरी खेलत होरी अनंग री प्यारी ॥२॥ कोऊ कंचनसों धारें छोरत देख

सुकंठ री प्यारी ॥ केसर आड लिलाट करे कोऊ लेत उछंग री प्यारी ॥३॥ कोऊ बजावत किन्नरी कोऊ उठाय मृदंग री प्यारी ॥ कोऊ ओंचका हँस परी तोरत तान तरंग री प्यारी ॥४॥ लायक नारी बनायके झूठो नाम कराय री प्यारी ॥ घूँघट अधिक तनायके नारिन में ले जाय री प्यारी ॥५॥ कोऊ कुलवधु जनायके कहत बात मुरझाय री प्यारी ॥ नेंसकु लाय मनायके नीके खेल खिलाय री प्यारी ॥६॥ जबही चरन गनायके धरत चोंप चित लाय री प्यारी ॥ पोछे तें सिर नायके हँसत कंठ लपटाय री प्यारी ॥७॥ कोऊ झूमत नायके देत अबीर उठाय री प्यारी ॥ अरगजा अधिक सनायके वदन पानि परसाय री प्यारी ॥८॥ मिलि आई सब भामिनी पकरी लिये चहुँ ओर री प्यारी ॥ उलट लगी मानो दामिनी रह्यो बीच घनघोर री प्यारी ॥९॥ एक कहे ये कामिनी लेह्यो अपनी कोर री प्यारी ॥ विसवासी गजगामिनी बाँध छोरे सो छोर री प्यारी ॥१०॥ तब धाई सुख धामिनी राजत रूप मरोर री प्यारी ॥ ज्यों उजियारी यामिनी एक एकतेँ जोर री प्यारी ॥११॥ आई हैं अभिरामिनी झटक लयो कर जोर री प्यारी ॥ है तुम्हरो ये स्वामिन सोच करो किन और री प्यारी ॥१२॥ हंस ग्रीवा भुज भेलही कोऊ उठत अति गाज री प्यारी ॥ अंस बाँह धरि पेलही कोऊ जात गहि भाज री प्यारी ॥१३॥ केतेके रूप नवेलही सोहत खरी बिराज री प्यारी ॥ केतेक वेस नवेलही निरख रहत कामलाज री प्यारी ॥१४॥ इहि विधि होरी खेलही मनमथ सेना साज री प्यारी ॥ तेरे तो अलबेली ही कहा रही जिय लाज री प्यारी ॥१५॥ मदनमोहन पियके लही रससागरकी राज री प्यारी ॥ यह सुन चली अकेली हेली धाय कंठ मधि राजरी प्यारी ॥१६॥ श्रीविठ्ठलपदपद्म की जैये बलि बलिहार री प्यारी ॥ गोकुलपति सुखसदनकी गावत सरस धमार री प्यारी ॥१७॥

६८ (११) राग सारंग (११) खेलनि आई नंद दरबार, सकल ब्रज ग्वालिनी हो ॥६९॥ एक समैं श्री राधा बैठीं सिंगार बनाई ॥ उमँगि आई सब गोप-सुंदरी चलौ जसुमति पै जाई ॥१॥ अपनों अपनों मेलि अरगजा लीनिं कलस भराई ॥ फगुवा के मिस षोडन के हित आँनद उर न समाई ॥२॥ आप

जुवती जूथ में ठाड़ी आगे पठई द्वे चार ॥ नँदरानी सौं यों जाई कहीयो,
सब सखियन बिस्तार ॥३॥ मुदित भई सुनि सबन जसोदा, लीनि सकल
बुलाई ॥ आसन मानि, मनोहर बीरी, दीनी रुचिर बनाई ॥४॥ तेल, फुलेल
सुगंध अरगजा उड़वति अबीर गुलाल ॥ माँनों सामन धन बरखावत बहु
बिधि बूंद रसाल ॥५॥ देखति नैननि परी ठगोरी, पट भूषन गए छूटि ॥
कनक-लता मुकता निधि तामें पायौ रंक मनौ लूटि ॥६॥ मोहन जाई अटारी
ठाड़े दृष्टि परी अली नैन ॥ वर भामिनी गहि लाई भुजाबल, जोबन सब
सुख दैन ॥७॥ ताल रबाब बाँसुरी बैनु कटिकट सबद मृदंग ॥ मानौं रास
भयौ फिर गोकुल, पायौ है दन रति रंग ॥८॥ चंदन बंदन केसरि भरि
भरि झकझोरि कीयौ ब्रज राज ॥ उभै अँक मुख पान परम मद मैँटी सब
कुल-लाज ॥९॥ चिरजीवौ जुग जुग ये जोरी असिस सब मिलि देति ॥
तन मन धन गिरधर पै बारों 'रामदास' समेत ॥१०॥

६९ (॥३॥ राग सारंग ॥३॥ खेलति कुँवर रसिक गिरिवरधर, हो हो होरी
बोलत डोलत ॥ सुबल, सुबाहू, श्रीदामा, हलधर, लै लै नाम टेरि सब
बोलत ॥१॥ ताल, मृदंग, उपंग, मुरज, ढफ, बीना, बैनु किन्नरी बाजति ॥
ढोल, ढुलक निसान, झालरी भेरिन सौं गोकुल सब गाजति ॥२॥ सुनि
सब ब्रज जुवति जुरि आँई गावति गारि सुहाई झुंडन ॥ अबीर गुलाल
भरे भरि झोरि केसर घोरि भरे घट कुंडन ॥३॥ मच्यो खेलि दुहुँ दिस
नर नारिनु, पिचकाई छूटति सनमुख भरि ॥ सखनु संग मोहन उठि धाए,
करि गुलाल अँधियारी धूँधरि ॥४॥ प्यारी सनमुख जाई अचानक मुख
लपटाई भजे सौँधौ करि ॥ ललिता कोपि धाई भाजति ही मोहन गाढे गहें
अँकवा धरि ॥५॥

७० (॥३॥ राग सारंग ॥३॥ खेलति नंद महरि कौ ढोटा ठाड़ो सिंह दुवारि
होरी ॥ बालक सँग बुलाई घोष के कीन्हे विविधि सिंगारि होरी ॥१॥ सूथन
लाल बागो सेत पगिया केसर रँग बोर होरी ॥ फेंटनि पटका तार जरकसी,
सीस चंद्रिका-मोर होरी ॥२॥ केसर रंग निचोई भरे घट मृगमद अतर
फुलेल ॥ करन कनक-पिचकाई छिरकति कीच मचीं सब गेल होरी ॥३॥

दुंदुभि ढोल भेरि सहनाई बाजति मधुर-मृदंग होरी ॥ झाँझि ताल महुवरि
 किन्नरी ढफ सुर मधुरे मुख चँग होरी ॥४॥ धुनि सुनि कै घर घर तैं निकसी
 ब्रजनारी सिंगार बनाई होरी ॥ तिन मधि कुँवरि राधिका राजति पिय-चित
 लेति चुराई होरी ॥५॥ प्रमुदित मन खेलन कौं आवति गावति सरस धमार
 होरी ॥ सैननि सैन मिलाई लाल सौं देति भाँवती गारि होरी ॥६॥ छूटन
 अब न पाओगे मोहन बलदाऊ लेऊ बुलाय होरी ॥ फगुवा के मिस धाई
 गहे हरि मुरली लई छिनाई होरी ॥७॥ चन्द्रावलि चोवा चंदन लै छिरकति
 मदन गुपाल होरी ॥ करत मनोरथ मन के भाए विविधि भाँति के ख्याल
 होरी ॥८॥ तब हलधर सखन लै धाई घेरों सब ब्रजबाल होरी ॥ केसर
 कलस नवाई सीस तैं डारति सुरंग गुलाल होरी ॥९॥ तब नँदरानी बहु
 विधि भूषन मेवा दयौ मँगाई होरी ॥ चिर जीयौ ब्रजराज लाड़िलै कहें असीस
 सुनाई होरी ॥१०॥ दोउ हाथ मुख परसि स्याम कौ, पुनि पुनि लेति बलाई
 होरी ॥ रस बस मगन भई ब्रज सुंदरि, चली सँकेत बताई होरी ॥११॥
 या विधि राज करौं दंपति नित-प्रति रास विलास होरी ॥ श्री विट्ठल पद
 रज प्रताप तैं गावत यह जसु 'दास' होरी ॥१२॥

७१ (॥१॥ राग सारंग (॥१॥) होरी खेलति मोहन, उड़ति गुलाल अबीर ॥
 बनि बनि चलीं सकल ब्रज-वनिता पैहरि विविधि पट चीर ॥१॥ अगर
 जबाद कुँमकुमा केसर चरचैं स्याम सरीर ॥ मृदु मुसिकानि परसपर सुंदरि
 दसन झलक मुख हीर ॥२॥ प्रेम-पतंग पिचकाई छूटत, औ जमुना कौ
 नीर ॥ 'सूरदास' प्रभु सरबसु वारों हरि हलधर के बीर ॥३॥

७२ (॥१॥ राग सारंग (॥१॥) आजु माई खेलति फागु हरी ॥ सब सखियन
 सिंगार कीयो मिलि सेदूर माँग भरी ॥१॥ गुलाल की चोली अबीर की
 झोरी चहुँ दिस लागी झरी ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु राधा कों
 अंक भरी ॥२॥

७३ (॥१॥ राग सारंग (॥१॥) राधा माधौ खेलैं होरी ॥ इत ब्रजराज लाड़िलो
 राजत, उत वृषभानु किसोरी ॥१॥ एकन के कर अगर, कुँमकुमा, एकन

केसर घोरी ॥ छिरकति रतन-जटित-पिचकाई, पिय मुख पौँछत खेलत गोरी ॥२॥ इक गावै, इक मृदंग बजावैं, एकु रबाब झाँझन की जोरी ॥ सुख सागर, आगर, ब्रिंदावन, बरन वनस्पति मोरी ॥३॥ जित तित तैं ग्वालनि उठि धाँई, मुख माँडत लै रोरी ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे चिरजीयौ भूतल यह जोरी ॥४॥

राग गौड सारंग



१ (१॥१॥) राग गौड सारंग (१॥१॥) माई नये खिलार आजु में देखे चंचल चपल चवाई ॥ हँसि मुसिकाइ नैन सैन दे मोकूँ पकरि नँचाई ॥१॥ कोउ गुलचे कोउ कर मुख माँडि गोपी करें हँसाई ॥ 'कृष्ण जीवन लछी राम' के प्रभु की मुरली लई छिनाई ॥२॥



धमार के पद - राग नट



१ (१॥१॥) राग नट (१॥१॥) खेलत गिरिधरनलाल परममुदित ग्वाल बाल उतबनी ब्रजजन बलनारि होरी बोलना ॥ गावत नटनारायण राग युवतीजन खेलें फाग गारीदेत गोपकुंवर कर कलोलना ॥१॥ वीना बेणु तान तरंग बाजत मधुरे मृदंग भेरी महुवर डफ झाँझ डोलना ॥ वीना बेणु तान तरंग पिचकाई भरत रंग ब्रजजुवतिन छिरकत मिल बंदन डोलना ॥२॥ मोहनकों पकर लेहु फगुवामिसफेंट गहें माँडत मुख रोरी घोर कर कपोलना ॥ चतुर्भुज प्रभु फगुवादीयो राधाजूको भायो कीयो पीतांबर खेंचलियो कर झंझोलना ॥३॥

२ (१॥१॥) राग नट (१॥१॥) युवतीयूथ संग फाग खेलत नंदलाल कुंवर होहो होरी बोलना ॥ गावत नटनारायण राग मुदित देत चेतफाग चहुँदिस जुर गोपबाल वृंदलोलना ॥१॥ बाजत आवज उपंग बांसुरी सुरबीन चंग शंख बंस झाँझ डफ मृदंग डोलना ॥ चलत सुर अनेकताल सुघरराय श्रीगोपाल वेणु मध्यगान करत होरी होलना ॥२॥ पहरेँ तन भांत भांत शोभा कछु कहीनजात भूषण आभरण विविध पट अमोलना ॥ कुंकुमा सुरंग छिरकत पिचकाई भरभर परस्पर देत कूक ब्रजकी गोरी खोरी डोलना ॥३॥ काहूको चिबुक चारु परस काहुकी वेसर खूभी काहूके करत कंचुकीके बंद खोलना ॥

काहूको गहत हारतोर काहूकीगहत भुज मरोर काहूकों पकर छांड देत कर
अंझोलना ॥४॥ गोकुलविचकीचमची सौरभ चहुंओर बढ्यो सब तन अनुराग
उमग, रसअतो लना ॥ कुमनदास प्रभु गिरिधर प्रेम सिंधु प्रगट भयो सुरविमान
विथकित देख ब्रज कलोलना ॥५॥

३  राग नट  होरी कोहे अवसर जिन कोऊ रिसमानें ॥ काहूको
हारतोर काहूकी चुरी मोर काहूकी खुभी ले भाजे अचानक काहुके पिचकाई
नयनन तकताने ॥१॥ काहूकी नकवेसर पकरे काहूकी वेनीगहे कंठसरी झटक
आनें ॥ कुमनदास प्रभु यह विध खेलत गिरिधर पिय सब रंग जानें ॥२॥

४  राग नट  होरी हो हरि खेलति आवति ॥ गोपिन कै मन
मोद बढ़ावति ॥१॥ ब्रज जुवतिन लै प्यारी आई ॥ उत तैं नंद कों कुँवर
कन्हाई ॥२॥ सुरंग गुलाल अबीर उड़ावति ॥ केसरि नीर जुवतिन सीस
तैं नावती ॥३॥ बीन रबाब किन्नरी बाजति ॥ ताल मृदंग चंग सुर गाजति
॥४॥ बंसरि लै तरुनी-गन धौई ॥ गोपन लै कनक पिचकाई ॥५॥ फगुवा
लैन नंद-गृह आई ॥ भूषन बसन सबें पहिराई ॥६॥ देति असीस चली
ब्रजनारी ॥ इहि बिधि क्रीड़ति कुंज-बिहारी ॥७॥ सो छबि देखि देव सचु
पावति ॥ फूलन की बरखा बरखाति ॥८॥ जमुना न्हौन चलै जदुराई ॥
यह सोभा मोपे बरनि न जाई ॥९॥ राधा गिरिधर अविचल जोरी ॥ प्राननाथ
जन नवल किसोरी ॥१०॥



५  राग नट  खेलत स्याम ग्वालनि संग ॥ एक गावत, एक
नाचत, इक करत बहु रंग ॥ मुरज, बीन, उपंग, मुरली, झाँझ, झालरि,
ताल ॥ पढ़त होरी, बोलि गारी, निरखिकैं ब्रज-बाल ॥ कनक-कलसनि
घोरि केसरि कर लिये ब्रज-नारि ॥ जबहिं आवत देखि तरुनी, भजत दै
किलकारि ॥ दुरि रही इक खोरि ललिता, जितहिं आवत स्याम ॥ धरे
भरि अँकवारि औचक, धाई आई बाम ॥ बहुत ढीठौ दै रहे हो, जानबी
अब आज ॥ राधिका दुरि हँसति ठाढ़ी, निरखि पिय मुख लाज ॥ लियौ
काहू मुरलि करतैं, कोऊ गह्यौ पटपीत ॥ सीस बेनी गूँथि, लोचन करी
आँजि अनीत ॥ गए करतैं छुटक मोहन, नारि सब पछिताति सीस धुनि,

कर मींजि बोलति, भली लै गे भाँतिं ॥ दाऊँ हम नहिं लैन पायौ, बसन लेतीं लाल ॥ सूर-प्रभु ! कहँ जाहुंगे अब, हम परीं इहिं ख्याल ॥



६ **राग नट** प्रगदयो ऋतुराज, लाज छाँड़ि सकल साज समाज गोपिका गोविंद सँग खेलति ब्रज होरी ॥ वे गुन सब एकु सारि नौतन कीने सिंगारि मधि गौर स्याम सुभग सरस बनी जोरी ॥१॥ बाजत बीना उपंग बाँसुरी सुर बीन चंग मिलवत-धुनि संग-संग मुरली धुनि थोरी ॥ लेति उरप तिरप मान, सुलफ सुगति सौं बंधान, निरतति पिय सँग सुजान, गुन निधान गोरी ॥२॥ गावति अति सरस गान, राग रागिनी सुतान, मोहन नागर सौं मिलि मुदित मन किसोरी ॥ आलिंगन चुंबन हँसि, झकझोरति दोऊ बिबसि, निरखति सुख सखी सकल, प्रेम-सरस बोरी ॥३॥ छिरकत कुँमकुमा रंग, चोवा चंदन सु अंग, डारत बंदन अबीर गुलालन भरि झोरी ॥ भए द्योस अति सुगंध मधुप गुंज प्रेम पुंज लंपट रस प्रेम लुब्ध भ्रमति गोकुल की खोरी ॥४॥ बाढ़्यो अनुराग फाग, खेलति सब ब्रज सुहाग, उमड्यो सुख-सागर पथ आरज महि थोरी ॥ लीला रस मगन झेलि, अखिल केलि रंग रेलि, वर विलास 'नंददास' हिय में रहो री ॥५॥

७ **राग नट** प्रफुलित रुचिर तरनि-तनया तट होरी खेलति मदन गुपाल ॥ बलदाऊ संग सखा सहित सब अद्भुत रूप-रसाल ॥१॥ पहरे विसद सुभग तन वागौ अंबुज नैन बिलास ॥ आसव प्रेम पिऐं मदमाते चलत अटपटी चाल ॥२॥ दुलरी कंठ बिमल मुक्ताफल मृगमद तिलक सुभाल ॥ मकराकृत कुंडल जुग सबनन सोहत उर वनमाल ॥३॥ गावत राग सरस सुर सौं नट बिबिध बनावत ख्याल ॥ बाजत बैनु, मुरज, बीना, ढफ, श्रीमंडल मधु ताल ॥४॥ चोवा मेदि जवादि अरगजा लाए घट भरि ग्वाल ॥ हाथ रतन-पिचकाई रस सौं छिरकत केसर लाल ॥५॥ बिबिधि बिधि ऊड़ौ अति बूका हो उड़त बढ्यो तम-जाल ॥ प्रगट करत अनुराग हृदै कौ डारत मुठी गुलाल ॥६॥ रति संग्राम लरन कौ गारी, गावत जुरि ब्रज बाल ॥ गिरिधर सनमुख राधा दौरी ओट दयै कुच-ढाल ॥७॥ फगुवा माँगति ब्रज की ललनाँ काजर लावत गाल ॥ लीला निरखि थकित महिला

जन चितवत भई बिहाल ॥८॥ दरस करन आयौ कुसुमाकार, कुसमित
नव द्रुम डाल ॥ सुक पिक मोर मधुप मधुरी धुनि प्रगट करी तिहिं काल
॥९॥ क्रीड़ा जलधि कहन कौं को कवि सबै भई मति ग्वाल ॥ 'गोकुलचंद'
रूप अवलोकति मिटे सकल जंजाल ॥१०॥

८  राग नट  खेलत गिरिधर पिय सँग होरी ॥ हंस-सुता तट
सघन कुंज मधि, मिलि आई ब्रज गोरी ॥१॥ राजत नव ब्रजराज कुंवर
वर, सँग नव वृषभानु किसोरी ॥ आलस बलित कटाच्छन चितवत, सकुचि
हँसत मुख मोरी ॥२॥ सहचरि गुन गावत प्रफुलित मन, निरखि निरखि
छबि ओरी ॥ कबहुँक विहँसि सबै मिलि बोलत, हो हो हो हो होरी ॥३॥
ताल मृदंग मुख चंग बजावत, औ बीना धुनि थोरी ॥ उपजत रंग कहत
नहिं आवत, नाँचति उमँगि किसोरी ॥४॥ केसर मृग-मद, मलय, अरगजा
घसि भाजन भरि घोरी ॥ अबीर गुलाल बंदन औ बूका साजि धरो तिहिं
ठोरी ॥५॥ प्यारी अपने कर सौँधौ लै पिय अँग लावत बौरी ॥ अरगजा,
बागो, छिरकि सँवारति, सिथिल पाग ढरकौरी ॥६॥ केसर रंग चित्रता
उपर, सहित गुलाल करघोरी ॥ चित्र कपोलन करि हँसि बीरी देति लेति
मुख जोरी ॥७॥ बूका, बंदन आई सन्मुख व्हे उड़वति भरि भरि झोरी ॥
ता धुंधरि मधि पिय लखि औसर भौमिनि लई भरि कौरी ॥८॥ रीझि परसपर
श्रीमुख विकसत, अंतर भाव बढ्योरी ॥ सखी वृंद रस जुगल विलोकत,
विवस भई मति भोरी ॥९॥ जात नाहीं बरन्यों ता छिनु मधि जो रस सबनि
लह्यो री ॥ श्री वल्लभ श्रीविठ्ठल पद बल रसना कछुक कछौ री ॥१०॥

धमार के पद - राग पूर्वी

१  राग पूर्वी  नंदनंदन वृषभान कुंवरि ब्रज में खेलें होरी ॥ इत
नवसत साजें तरुणी गण उतही सकल गोकुल के बालक किलकत फिरत
घोखकी खोरी ॥१॥ बाजत सुर मंडल पिनाक सुरबीनगजक आवज ध्वनि
थोरी ॥ पटह निसान भेरि महुवर डफ परस मृदंग रबाब किन्नरी सुनत नगनत
कोंन कोरी ॥२॥ चोवामेद जवाद साख नवकेसर अरगजा कुंकुम घोरी ॥
सुंदर करन कनक पिचकाई तक तक छिरकत परममुदित मन नवलकिशोर

ओर नवलकिशोरी ॥३॥ एक सखी काजर करले आंजे सुंदर बलसो बलगोरी ॥ एक सखी अंबर छिरकत अंसन लटकत मटकत नेंकदृग अगणित झकझोर झकझोरी ॥४॥ तब हरि की मुरली करते भरते अतिलेन सखी सब दौरी ॥ तोलों उमगि चली ले केसर उर अनुराग जनावत सुंदरि मुख मांडत करसोरी ॥५॥ आई सकल सखी चहुंदिशते दुहुंपट गांठ जोर तृणतोरी ॥ सरस गुलाल अबीर उडावत भावत सरस धमार हि गावत धावत हैसत कहत हो होरी ॥६॥ गोकुल भूप रूप नवचंद कला पूरण निरमल देख नोरी ॥ तिहि अवसर ब्रज युवती सब परम मुदित मन तृखित चहुंदिश भई आतुर अति नयन चकोरी ॥७॥ यह विध अति क्रीडत सुंदरवर देख धरत धीरज कहि कोरी ॥ विविध भांत कुसुमन वरखत हरखत निरखत सुरकी ललना सब सुरपति सहित लागी जानों ढोरी ॥८॥ तब बल आन बीच कीनों दीनों फगुवा लीनों अपनों ॥ देत असीस सब सीस नवावत नाचत पिय ह्वे प्रेम वशहे अति यह ब्रज युगयुग चिरजीयोरी ॥९॥ आन बिबिध भूषण पट अंबर देत सब नगहि गहि कचडोरी ॥ यह सुख निरख निरखत नमन सर्वस्व अपनों रघुवीर तिहिछिन बलबलबल कीनोरी ॥१०॥

धमार के पद - राग मारू

१ (११) राग मारू (११) ऐसें नंदको नंद बोले हो हो हो हो होरी ॥ ब्रजकी वीथन वीथन डोलेरी ॥१॥ शोभित हैं सखा संग सोंधे में भीने ॥ वरन वरन सब सुगंध फेंटन भर लीने ॥२॥ बाजत ताल पखावज आवज भेरी सहनाई ॥ हलधर डफ मोहन मुख मुरलिका सुहाई ॥३॥ कंचन कलश विविध अरगजा भराये ॥ जोई मिले मारग में ताही शिरनाये ॥४॥ खेलत खेलत वृषभान जू के आये ॥ निरख मोहन मंडली तन सबन नयन सिराये ॥५॥ सुनत वचन घरघरते निकसी सब गोपी ॥ कंचन की मूरति मानो वंदन सों ओपी ॥६॥ अंग अंग अनुराग भरी सबे गोप कुमारी ॥ घुंघट पट ओट दिये देत लाले गारी ॥७॥ निकस निकस ठाडी भई अपनी अपनी खिरकी ॥ चोवा चंदन अरगजासो छेल छबीले छिरकी ॥८॥ झुंडन झुंडन ठाडी भई शोभा अति बाढी ॥ लाल मुनियां खोल मानो पिंजरनते काढी ॥९॥

सबे चतुर सबे भोरी सबे वेसकिशोरी ॥ सबे सुंदर सबे सुघर एक डारकी तोरी ॥१०॥ रत्नजटित पिचकाई कर कुंकुमा भराई ॥ तक तक हरि छिरकत तबे और अचानक आई ॥११॥ विविध भूषण विविध वसन अंगरंग सोहें ॥ तिलक भाल छबि विशाल उपमाकों कोहें ॥१२॥ कीनो काम कारीगर जरी जराय जरीना ॥ चुनी चहुंओर गोपी मध्य गोपाल नगीना ॥१३॥ गोकुल की खोरिन में खेल मच्यो भारी ॥ झपट जाय ओचका गहि लीने गिरिधारी ॥१४॥ नील पीत अंचलसों गांठ सखीन जोरी ॥ हंसत लाल लजात स्याम झपट झकझोरा झकझोरी ॥१५॥ अरुण वसन कंचुकी तन नीलवसन सारी ॥ दीजे क्यों गारि ताहि प्यारे हू की प्यारी ॥१६॥ उडत गुलाल लाल विविध नौतन छबि छाजे ॥ युवती यूथ मंडल में दामिनि विराजे ॥१७॥ बल बल बल माधो रसिक यह प्रसाद पाऊं ॥ श्रीस्यामा दंपति गुण जन्म जन्म गाऊं ॥१८॥

२ ~~॥~~ राग मारू ~~॥~~ खेले नंदको नंदन होरी अपने रंगीले ब्रज में ॥ध्रु०॥ बनेहें ग्वाल बाल संग जनु अनेक मेन ॥ आपन मदन मोहन सोहन कहा कहुं छबि अने ॥१॥ उतते आई युवती वृंद चंदमुखी एक दाई ॥ चंचल तन की दमकजनु दामिनि पट झाई ॥२॥ जुरेहें कंचन चोहटें अपने अपने टोल ॥ आनंदघन ज्यों गाजत राजत बाजत दुंदुभी डोल ॥३॥ सुरमंडल किन्नरी डफ बाजत रंगभीने ॥ बीचबीच बसुरियावीस कीनेहे मनदीने ॥४॥ बजत चटसों पटतार ग्वार गावत संग ॥ नाचत हैं मधु मंगल संगीत बढ्यो हे अतिरंग ॥५॥ कुंकुम चंदन बंदन साख मृगमद मथिघोरी ॥ छबिसों छबीलो भरत डोलत बोलत हो हो होरी ॥६॥ रंग रंग की छींटन भरी सोहत त्रियनवेली ॥ वरन वरन फूलन मानो फूली आनंद वेली ॥७॥ घुमडकर गुलाल को तामें दुरदुर आवे ॥ भरभागत हरिकों भामिनि दामिनी सी छबि पावे ॥८॥ घेरलियें हैं नवल त्रियन सांवरे सिरमोर ॥ यह छबि सों भ्रमत जेसैं कमल कोश भोर ॥९॥ पकरें हैं छबिसों आन मोहन राधिका वरजोरि ॥ कहीन परे प्रेमकी छबि छाई झकझोरा झकझोरि ॥१०॥ वहे ठाडे विवश सबे काहून रही संभार ॥ छूटी हैं छबिसों अलकलर दूटेहें मुक्ताहार ॥११॥

क्योंहीं लुकत लाजपें अति प्रेमकी उरेंड ॥ नंददास निधिन रुकत वारू की
मेंड ॥१२॥

३ (॥१॥ राग मारू (॥३॥) और अबीर फुलेल अरगजा केसरि भीनीं सारी ॥
हो हो होरी बोलति भाँमिनि कामिनि रूप उजियारी ॥१॥ बाजति ताल
मृदंग मुरली ढ़फ़ मुरज कठतारी ॥ मुरि-मुरि झुरि-मठ खेलति पिय संग
नैकु हु होति न न्यारी ॥२॥ रँग-रँग भीनीं रसिक रसीली सखियन में
सुकुमारी ॥ “मदन मोहन” पिय फगुवा दीनो नैननि मुसकनि भारी ॥३॥

४ (॥१॥ राग मारू (॥३॥) सूर-सुता के तीर होली खेलै नन्द कौ नन्दना ॥
ग्वाल बृन्द बूका पट झोरी, भरि लीने सँग बंदना ॥१॥ गावत राग सप्त-
सुर मारू, ब्रज जन मन आनँदना ॥ हाथन लएँ कनक पिचकाई, छिरकत
चोवा चन्दना ॥२॥ उत तें श्रीवृषभानु-नन्दिनी जुबति-जूथ लै आँई ॥ नवसत
अँग सिंगार बनाए मनमोहन मन भाई ॥३॥ भरि बेला घिसि मृगमद गोरा
मेद बहुत सुखदायी ॥ नन्द कुँवर छिरकन के कारन ब्रज-बनिता लै आई
॥४॥ पटह झाँझि झालरि महुवरि ढ़फ़, ताल मृदंग, सुछंद ॥ बाजत बैनु
रबाब, किन्नरी, बीना अति सुर मंद ॥५॥ तनसुख पाग सीस पै सोभित,
वनमाला उर सोहैं ॥ बागौ सेत बन्यौ खासा कौ छबि लखि अति मन
मोहे ॥६॥ सुंदर चहूँ ओर तें एकत्रित कान्ह कुँवर को घेरें ॥ मन में चुप
करि रहे स्याम घन, उलटि सखन तन हरे ॥७॥ पीतांबर फगुवा के कारन
एकनि लीनो छोरी ॥ मुरली एकु छटकि कै भाजी, एक हँसी मुख मोरी
॥८॥ मुक्ता माला एकन लीनि, एकु जु गावति गारी ॥ एक स्याम की अखियन
आँजति एकु बजावति तारी ॥९॥ सनमुख ठाड़ी कुँवरि राधिका करति अपनो
भायौ ॥ सौँधो घोरि कुँमकुमा घसि घट मदन मोहन सिर नायौ ॥१०॥
श्रीवृषभानु-कुँवरी नैं फगुवा मन भायौ सो लीनीं ॥ मदन गुपाल लाल हँसि
मधुरें जो माँग्यो सों दिनीं ॥११॥ बिबिध भाँति कुसुमित ब्रिंदाबन, उपजत
तान तरंग ॥ ऋतु कुसुमाकर गावत मानों क्वनित कीर, पिक भ्रंग ॥१२॥
निरखि थके सुर नर मुनि, किन्नरगन, प्रेम सिंधु सुखदाई ॥ राधा रसिक
कृष्ण रसलीला हँसि ‘गोकुलचन्द’ गाई ॥१३॥



धमार के पद - राग मालव

१ (११) राग मालव (११) हो हो होरी बोलै । नंद कुँवर मदमातो डोलै ॥१॥ सखा वृन्द लये संग आवै ॥ ब्रज नारिन मन मोद बढ़ावै ॥२॥ केसरि भरि कनक पिचकाई छिरकति स्याम जुवती मन भाई ॥३॥ सुरंग गुलाल अबीर उड़ावै ॥ मालव राग सरस सुर गावै ॥४॥ विविधि सुगंध अरगजा कीनों ॥ मनमोहन सब ग्वालन दीनों ॥५॥ ताल मृदंग पटह डफ बाजै ॥ सबन सुनति धुनि घन जिय लाजै ॥६॥ ब्रिंदावन जमुना तट सोहै ॥ सबहिन को मन गिरिधर मोहै ॥७॥ कौतिक देखि थके सुर मुनिगन ॥ मगन भई हुलसी गोपीजन ॥८॥ प्रेम सिंधु बरनो कहाँ ताई ॥ रसना बिधिना इक बनाई ॥९॥ यह लीला ब्रजजन मन भावै ॥ 'गोकुलचन्द' चरन रज पावै ॥१०॥



२ (११) राग मालव (११) खेलति होरी साँवरो डोटा नंद महारि को लाल हो ॥ बगलन में पिचकाई संग लीयें ब्रजबाल हो ॥१॥ सीस पगा सोहत संग भीनों और सोहै वनमाल हो ॥ गारी गावै रस उपजावै फैंटन अबीर गुलाल हो ॥२॥ चोवा चंदन ओर अरगजा करति अटपटे ख्याल हो ॥ ब्रिंदावन की कुंजन महीयाँ बाढ़्यो रंग रसाल हो ॥३॥ यह विधि होरी खेलि हरख सौं सँग सखा सब ग्वाल हो ॥ 'सूरदास' प्रभु यह छबि निरखति बारति मुक्तामाल हो ॥४॥



३ (११) राग मालव (११) हो हो हो होरी बोलें नंदकुंवर मदमातो डोलें ॥१॥ सखा वृंद संग लीयें आवें ॥ ब्रजनारिन मनमोद बढ़ावें ॥२॥ केसरभरी कनक पिचकाई ॥ छिरकत स्याम युवतिन मनभाई ॥३॥ सुरंग गुलाल अबीर उड़ावें ॥ मालव राग सरस स्वर गावें ॥४॥ विविध सुगंध अरगजा कीनो ॥ मनमोहन सब ग्वालन दीनों ॥५॥ ताल मृदंग पटह डफ बाजें ॥ श्रवण सुनत ध्वनि घनजिय लाजें ॥६॥ वृंदावन यमुनातट सोहै ॥ सबहिन को मन गिरिधर मोहै ॥७॥ कौतुक निरख थके सुर मुनिगण ॥ मगन भई हुलसी गोपीजन ॥८॥ प्रेमसिंधु वरणों कहाँ ताई ॥ रसना विधिने एक बनाई ॥९॥ यह लीला

ब्रज जन मन भावे ॥ गोकुलचन्द चरणरज पावे ॥१०॥

४  राग मालश्री  रसिक फागु खेलै नवल नागरि सों सरस बर
ऋतुराज की ऋतु आई ॥ पवन मंद अरविंद औरु कुंद बिकसे विषद चंद
पीय नंद सुत सुखदाई ॥१॥ मधुप टोल मृदु बोल सँग-सँग डोले पिकन
बोल निरमोल सुति चारु गाई ॥ रचित रास सों बिलास जमुना पुलिन
में सधन ब्रिंदा विपुन रही फूलि जाई ॥२॥ कनक अंग बरनी सुकिरनी
बिराजे गिरिधर नव जुवराज गजराज राई ॥ जुवती हंसगामी मिले 'छीत
स्वामी' क्वनित बैनु पद रैनु बड़भाग पाई ॥३॥

धमार के पद - राग सोरठ

१  राग सोरठ  मेरे बोलें बोल न बोलेंरी एंड्योई डोले ॥ पेंडो
तक ठाडो रहे घूँघट हँस खोले ॥१॥ काहूकी गहत बांह काहूसों कहत
नाह तेरो ॥ काहूसों नयन सेन काहू वदत वेन अनेरो ॥२॥ काहूके बगर
जाय फाग खेलि आवे ॥ काहू के अनुराग भरचो मुरली में गावे ॥३॥
मोपें नहीं रत्थो जात कासों कहों हेली ॥ ढीठ ईठ पीठ दर्ई प्रीति पेंड पेली
॥४॥ निठुर वचन सुनते आय सन्मुख हरि भाख्यो ॥ तेरोई रूप मेरे उरवसाय
राख्यो ॥५॥ निरख वधू विवश भई देह दशा भूली ॥ ब्रजपति के संग
सुरत मदन डोल झूली ॥६॥

२  राग सोरठ  हों किहिं मिस पनघट जाऊंरी मेरी गेलन छांडे
सांवरो ॥ हो लाज न डरपत रहों मोहि धरेन कोऊ नाउंरी ॥१॥ जित देखों
तित देखियेरी रसिया नंद कुमार ॥ इन बातन केसैं भरों मोहि पलकन
करत जुहार ॥२॥ लकुट लिये आंगे चलेरी पंथ संवारत जाय ॥ मोहि निहोरो
लायकें नेंक फिर चितवे मुसिक्याय ॥३॥ यमुना जल गागर भरोंरी जब
सिर धरों उठाय ॥ हों अचरा ढांकत रहों मेरो हिय रात कललचाय ॥४॥
गागर मारे कांकरीरी एडो छिवावे लात ॥ मारग में ठाडो रहे मोहि टोके
आवतजात ॥५॥ केहू मिस हा हा करेरी लंगर मोहि निहार ॥ ओढन के
मिस ओढनी पीतांबर मोपेंवार ॥६॥ मोत न लगलागे नहींरी वाको मन



ललचाय ॥ तब हंसमेरी छांह सों नेक छाहि चलत छुवाय ॥७॥ अब लग कछु सकुचत रत्नोरी प्रगट करत अनुराग ॥ अब कहो केसें छूटहूं जब सिर पर आयो फाग ॥८॥ घर घर ब्रज चाचरमचीरी विवश भये नरनारि ॥ मंत्र फाग वृत्ती दियो दोऊ उमग चले डरडारि ॥९॥ जब लगमन मिलयो नहीं री नच्यो चोंपको नांच ॥ सिरोमणि प्रभु दोऊ मिले ताते करत मनोरथ सांच ॥१०॥

३ (॥१॥) राग सोरठ (॥१॥) मेरे नंदनंदन पाछे परचो हेली क्यों बचूं ॥ सो सिखदे मेरी हि तू सयानी वाके रंगनरचूं ॥१॥ कबहुक कर में डफ गहरी उठे दोहरा गाय ॥ कबहुक देख नयन ललचावे सेनन हा हा खाय ॥२॥ मेरे लिये बगर मेंरी आनि करे पहचान ॥ बारवार के आवने सखी हों जु गई जियजान ॥३॥ नाम ओरको ले सखीरी टेरे मोहि सुनाय ॥ हों समझत जो वह कहे सखी क्यों हीं रहे बताय ॥४॥ मोहि देख धुक पुक करेरी गहरे लेत उसास ॥ हों जिय डरपों आपने सखी सास ननद को त्रास ॥५॥ दिंग न्हे यों कहिजातह सखी आवन देघों फाग ॥ तब कछूवे चलि हे नहीं नरनारिन अनुराग ॥६॥ ज्यों ज्यों होत जनाजनोरी त्योंत्यों वाढे प्रेम ॥ बारवार के तामने सखी ज्योंनिपटत हें हेम ॥७॥ नयनन नयन नहीं बनीरी बनतबनी कछु आन ॥ हों समझों जिय आपने उत जगन्नाथसुग्यान ॥८॥



४ (॥१॥) राग सोरठ (॥१॥) हों कैसें यमुना जल जाऊंरी हरी मोतन हेरे ॥ मेरे संग की जानदे तब मेरो ही मग घेरे ॥१॥ नीचो न्हे घूंघट तके मेरे सन्मुख दर पन लाय ॥ मुख प्रतिबिंब निरख कें छिन छिन लेत बलायरी ॥२॥ डगर बुहारे कांकरीरी डारे दूर उठाय ॥ मधुर वन मोंसो यों कहे चरणन जिन चुभजाय ॥३॥ जबही हों गागर भरोरी तबही पेट अन्हाय ॥ तूं जिन परसें सीतमें कही मोहीपें जु भराय ॥४॥ हँसकर कलश उचा बहीरी मिसकर पकरे बांह ॥ क्यों हूं हटक्यो नारहे मेरी छलकर पकरे छांह ॥५॥ यद्यपि सकल ब्रज सुंदरि री सब सों खेले फाग ॥ मन वच क्रम ब्रजईश के नित मोहीसों अनुराग ॥६॥



५ (॥१॥) राग सोरठ (॥१॥) मेरीं चित लीयी चितचोर, पनघट हों जु गई

री ॥ गुप्त-प्रीति प्रगट कीनीं मेरे सनमुख आयी दौर ॥१॥ परे अचानक
दृष्टि मेरे सुंदर नंदकिसोर ॥ बदन चंद निरखति रहों मेरे लोचन चारु
चकोर ॥२॥ हैंसि-हैंसि लालन कहति री अब तेरों जोबन जोर ॥ एहो
गैलनि बचि-बचि गई करि कर मोहनि दोर ॥३॥ चंचल अंचल गहि रहो
री बोलति ओर की ओर ॥ लै जु चले सघन-वन मोही बईयां मचकि
मरोर ॥४॥ घाइल करि मोहील करी इन चपल नैन की कोर ॥ लाज काज
गहि जु लिऔ रैन बसति बसे नहिं जानों जोर ॥५॥ रस बरखायौ री
अति बातें आनंद सिंधु झकोर ॥ रौम रौम में रम रह्यो री 'रसिक' प्रीतम
सिरमोर ॥६॥



६  राग सोरठ  ललनाँ लाल तुम सँग खेलौंगी ॥ लै गुलाल
मुख माँडों तिहारो पिचकाईन रँग पेलौंगी ॥१॥ तुम मेरे मुख सौंधों लाओ
अंजन दे दृग लैहौंगी ॥ क्यों सकुचति हो फाग के अवसर सुख लै सुख
तुम देहौंगी ॥२॥ बहुत दिनन की आसा पूरन भई फगुवा मन भायो लैहौंगी ॥
वल्लभ पिय सौं मिलि रस बिलसों अधर पान तै विरह बिथा सब
पेलौंगी ॥३॥



धमार के पद - राग गौड मल्हार

१  राग गौड मल्हार  अब मुख-मुख माडोंगी गहि पाये हो मोहन ॥
लिये गुलाल फिरत हों कबकी तकन बनी कछु गोहन ॥१॥ काजर देहुं
बनाय लालकें यों लागे गोसोहन ॥ अब अपनो मन भायो करहों कहा
नचावत भ्रोंहन ॥२॥ सुधकीजे पहली बातनकों लगे ठगे से जोहन ॥ उदय
राज प्रभु या अवसर हों नैकनकरों बिछोहन ॥३॥

२  राग गौड मल्हार  कान्हर खेलिये हो बाढ्यो श्रीगोकुल में
अनुराग ॥ जानों नहीं बहोरि कब एहें परम भावतो फाग ॥१॥ बाजत ताल
मृदंग झांझ डफ सहनाई ओर ढोल ॥ तुमहुं खेलो सखा संगले करो आपनी
छोल ॥२॥ उतते सबे सखी जुरआई प्रबल मदन के जोर ॥ खेल मच्यो
नंदजू की पौरी श्रीराधा नंदकिशोर ॥३॥ तब वृषभान नंदिनी आई लीनी

सखी बुलाय ॥ ऐसो मतो करो मेरी सजनी मोहन पकरो जाय ॥४॥ मुरली
लेहु स्याम के करतें मृगमद वदन लगाय ॥ हलधर की पिचकाई छीनो
काजर देहु बनाय ॥५॥ चोवा चंदन मृगमद केसर झोरिन भरो अबीर ॥
सखा बहुत युवतिन परधाये आगें दे बलबीर ॥६॥ लिये अरगजा छिरकत
डोलत ब्रज युवतिन के चीर ॥ हलधर की पिचकाई छूटें कोऊन धारे धीर
॥७॥ ब्रज वीथन में खेलत डोलें सखा बने संग लाल ॥ गोपी ग्वाल परम
कौतुहल गावत गीत रसाल ॥८॥ खेलत-खेलत आनंद बढ़यो रीझे
मदनगोपाल ॥ नंददास संग लागी डोलत छबि निरखत ब्रजबाल ॥९॥

३  राग गौड मल्हार  मोहन मो गोहन छांडीये मेरी सास ननद
सतराय ॥ जाय निडर निधरक होयकें ताहीसों खेलो जाय ॥१॥ जब निकसों
जल भरन कोरी लख मेरा ये वाट ॥ पलक ढील लागे नहीं तुम ठठक
राह के ठाट ॥२॥ तुम प्रवीन नंद लाडिले हम आधीन पर हाथ ॥ बंधे
नगर में बांधनू हरि नेक चलत तुम साथ ॥३॥ कोन कहाँ व्हे निकसहीं
कोन कहे हैंसबात ॥ यह अचरज देख्यो नहीं घरे दिनरेन विहात ॥४॥
यह अवसर है फागको मोहि उपज्यो चितचाव ॥ कहा करूं गुरुजन डरूं
मेरो पाथर चांप्यो पाव ॥५॥ कबहूतो मिल खेलवो तुमहि कुशल यह वास ॥
उदेराज प्रभु बलगई जियराजि न होऊ उदास ॥६॥

४  राग गौड मल्हार  एक ग्वालिनी आवें रंग भरी श्रीगोवर्धन
की गेल ॥ ऐसी बनी रहत अति रीझसों वह रिझवत मोहन छेल ॥१॥
शशि वदनी चंपकतनी ओर कजरारे दृगजोर ॥ मुखते स्याम ही स्याम
ही वह चितवत भ्रोंहमरोर ॥२॥ छूटी अलकावलि लटें चटकीली केसर
आड ॥ सुख भीनी मुख हैंसत में अरुलसत चिबुक की गाड ॥३॥
कजरोटीगजरा हरा ओर खयनवरा अति गोल ॥ तनक तरो निकान में
अरु झलकत चारु कपोल ॥४॥ उर उरोज के भारसों बाको तन कलंक
लचकाय ॥ रंग भर जोबन जग मगे वह चलत लंकलहराय ॥५॥ तन सुख
की सारीलसे अंगिया अंगअनूप ॥ घूमत सोलहें गाल सें बाकी लावन लाग्यो
रूप ॥६॥ जानबूझकें सांवरो वह यह मग बैठे आन ॥ हम जानी छानी

नहीं वह काहूकी पहचान ॥७॥ यह सुख सुख भीजेनको और निरख जिवावे
जीय ॥ यह वनयों विलसोहंसोबसो अनूप के हीय ॥८॥

५ (॥१॥) राग गौड मल्हार (॥२॥) एगरजत धाय धाय रसबूंदन झरसों पिचकाइन
छूटे सनन सनन ॥ डफ मृदंग बाजे अतिही सरससुर विविध भांत ताने
तनन तनन ॥१॥ अबीर गुलाल उडाय बहुत रंग तक आजें कमल अंजन
दोऊ नयन ॥ वल्लभ पिय संग खेलत डोलत ब्रजकी नारी दामिनिसी चमकत
पगनूपर घन झनन झनन ॥२॥

धमार के पद - राग गौरी

१ (॥१॥) राग गौरी (॥२॥) परिवा प्रथम कुंवर कों देखन चली ब्रजनारि ॥
अंग अंग छबि निरखत लीयो लाल मनुहारि ॥१॥ दूज दाम कुसुमन की
पहरे श्रीगोपीनाथ ॥ रचिपच गूँथ संवारी श्रीराधाजू अपने हाथ ॥२॥ तीज
तरुनी तनतरलित उरगज मोतिन हार ॥ कुचपर कचल रविलुलित प्रिय
संग करत विहार ॥३॥ चौथ चतुर दिशचंदन चरचित सावल अंग ॥ विविध
भांत रुचि पहरे नाना वसन मुरंग ॥४॥ पांचे प्रमदा प्रमुदित सब मिलगावें
गीत ॥ हावभाव कर रिझवत रसिक श्रीदामा मीत ॥५॥ छठकों छेल छबीलो
छिरकत छाँट अनूप ॥ शोभा वरनी न जाय जय जय गोकुल के भूप ॥६॥
सातें सकल सखा सब घर घर देतवगार ॥ सुनत कुंवर कोलाहल निकसी
घोख कुमार ॥७॥ आठें अति आतुर अबलन लीने पियघेर ॥ मुरली पीत
पट झटकत हंसत वदन तनहेर ॥८॥ नोमी नवल नागरी कुंकुम जल सों
घोर ॥ पिय पिचकाइन छिरकत तक तक नवल किशोर ॥९॥ दसमी दसोंदिस
देखियत अति प्रफुलित बनराज ॥ मदन वसंत मिल खेलें अलिपिक से
नासाज ॥१०॥ एकादसि एक ओर राधा संग सब नारी ॥ उतकी ओर
बल मोहन बालक यूथ मझारी ॥११॥ द्वादशी दुहुंदिस मच्यो खेल राय
दरबार ॥ भेरि दमामाधोंसा कोऊ काहू न संभार ॥१२॥ तेरस तरुणी गणपर
वरखत सुरंग अबीर ॥ ये इततें वे उततें भई परस्पर भीर ॥१३॥ चौदस
चहुं दिशातें बरखत परिमल मोद ॥ गणत न काहू जगमें ब्रजजन मनसि

प्रमोद ॥१४॥ पून्यो परिपूरण शशि आनंदे सबलोग ॥ घोष राय ब्रज छायो
करत सकल सुख भोग ॥१५॥ यह विध होरी खेलत वरखत सकल आनंद ॥
गोबिंद बल बलबल जाय जय गोकुल के चंद ॥१६॥

२ (१६) राग गौरी (१६) परिवा प्रथमाहिं होरीखेलन निकसे श्यामा श्याम ॥
फाल्गुनमास सुहावनो नृपतिभयो तहांकाम ॥१॥ द्विजदुहुंदिसिगावत अलि
पिक कोकिल कीर ॥ नवबसंत द्रुमफूले मलयजु मंदसमीर ॥२॥ तीज तरुनी
तन कंचुकी सोभित मोतिनहार ॥ सेंदुर मांग संवारी नवसत साज सिंगार
॥३॥ चौथचतुर चली गावत झूमक नंदजुके द्वार ॥ सुनि कामिनी कोलाहल
निकसे हलधर ग्वार ॥४॥ पांचेपंच सबद अति बाजत बाजे अपार ॥ इतकी
ओर ब्रज सुंदरी उत श्रीनंदकुमार ॥५॥ छटकों छेल छबिलो निकस्यो
खेलनफाग ॥ मोहन वेन वजावै गावे गौरी राग ॥६॥ साते चंदन वंदन
केसरि घसी बनाय ॥ कृष्णागर कस्तूरी केसु कलस भराय ॥७॥ आठें
कंचन पिचकारी भरि भरि लिने हाथ ॥ तकि तकि नवल किसोरी छिरकी
कुंवर ब्रजनाथ ॥८॥ नवमी नवल राधिका अरगजा दीयो डार ॥ हो हो
बोलत डौलत नांचत दै करतारि ॥९॥ दसमी दसों दिसतें अबलन पिय
लीनें घेरि ॥ नैनआंजि मुख मांडति हंसत वदन तनहेरि ॥१०॥ एकादशी
एक सखी डार्यो सुरंग गुलाल ॥ एकजु मुख चुंबन करे एक गहे बनमाल
॥११॥ द्वादशी फगुवा मांगति हंसि हंसि गारी देहि ॥ एकजु मुरली लै
रही एक कहे फिर लेहि ॥१२॥ तेरस तरुणी जनमिल सुगह गहें बलवीर ॥
कुमकुम मुख लपटायो छिरकत नवल अबीर ॥१३॥ चौदस चहुं दिसते
लिने गांठ वजोरी ॥ मदनमोहन नव दूल्हे दुलहनी राधागोरी ॥१४॥ पूरण
ससि पून्योनिस होरी हरखि लगाय ॥ परवा बसनजु साजे चले जमुना
जल न्हाय ॥१५॥ यह बिधि होरी खेलहीं ब्रजजन संग लगाय ॥ सूरदास
बलिजाय गिरि गोवरधनराय ॥१६॥

३ (१६) राग गौरी (१६) अरी चल नवलकिशोरी गोरी भोरी होरी खेलन
जाय ॥ अरी एसी नवयामिनी देखें भामिनी तोहि क्यों भवन सुहाय ॥१॥
जहां ब्रजवर नर नारिन के यूथ जुरेहें आय ॥ श्रीनंदनंदन पुनि आए रंगिले

रसिक मणिराय ॥२॥ आली तिनमें तुमहि देखी तब रहि गये नयना नाय ॥
 तब इत उत तक मोहन पिय मोतन तक अरगाय ॥३॥ तब नयनन हीमें
 कढ्यो कहां में कढ्यो ग्रीव दुराय ॥ अब रंगीले कुंवर तोहि पैयां सेनन दई
 हों पठाय ॥४॥ तू न कर गहर नागरित्रिय आन भलो बन्धों दाय ॥ यह
 सुन नवल नवेली सहचरी मुसकी नयन दुराय ॥५॥ इतनेइ परम निपुण
 सखी जिन प्यारी भुज भरलई उठाय ॥ गहि नवकंचुकी सोंधेंबोरी बीरी
 दई बनाय ॥६॥ पुनि पट पीत पटोरन पोंछकें आगें धरि समुहाय ॥ चली
 नवसत सज स्वामिनी कामिनी सखीके अंसभुज लाय ॥७॥ जानों कनक
 धातु परवत पर तडित लता चमकाय ॥ नवगुण नवल रूप नवयौवन नवल
 नेह हुलसाय ॥८॥ झूमक सारी प्यारी पहरें चलत ललित लरकाय ॥ जानो
 नवरूपजोति जगमगसी पवन लगे झुकराय ॥९॥ कमल फिरावत करवर
 बाला माला उर सिरुराय ॥ ललितादिक सखियन में सुंदर शोभित हे यह
 भाय ॥१०॥ जानों नव कुमुदिन के मंडल में इंदु पग न चल्थो जाय ॥
 कबहु बदन दुराय उधारत पुन हंस लेत दुराय ॥११॥ मंजुल मुकुर मरीचिन
 सी मानों छिन छिन छबि अधिकाय ॥ पुनि एक लट जो छबीली की छबिसों
 वेसर ही अरुझाय ॥१२॥ जानों प्रीतम मनमीन की बडसी भख मुक्ता
 लटकाय ॥ ओर एसें नवमत्त गयंदन मलकत बांह दुराय ॥१३॥ शोभित
 श्रवणन स्वेदसुदित के मानो पटचुचाय ॥ चंचल अंचल छोर बिराजत नैंक
 चलत जब धाय ॥१४॥ नीवी बंधन फंदवा घंटा किंकिणी घन घहराय ॥
 नूपुर ऊपर चूरासूरा जनुशंखल झनकाय ॥१५॥ सखियन केकर कुसुम
 छरिनतें अगड बने चहुंधाय ॥ मदन महावत को बल नाहीं अंकुश देत डराय
 ॥१६॥ सखियन में हि तू विशेष विसाखा जानो तनकी परछांय ॥ सो
 नंदनंदन नेरे जानकें सहज उठी कछु गाय ॥१७॥ सबहिन जान्यों श्रीराधा
 जू आई भये चौगुने चाय ॥ जेहुती नवलकिशोरी की साथिन ते दोरी समुहाय
 ॥१८॥ तिन संग मोहन धाये आये जानों रंक महानिधि पाय ॥ प्रथमही
 लाल जुहार कियो मृदु मुरली मांझ बजाय ॥१९॥ इतते कुटिल कटाक्षन
 पिय तन चितई मृदु मुसिकाय ॥ चाचर देन लगी व्रजवीथन रंगीलो रंग
 उपजाय ॥२०॥ गावन लागी ग्वालनि गारी सुंदर ललहीं लगाय ॥ राधाजू



गारिन सुनसुन हसहस हरितन हेर लजाय ॥२१॥ ललन अबीर भरत गोरी
ज्वालिनि प्राण पियाहि बचाय ॥ सोसुख पिय नयना पहचाने मो मनमें न
समाय ॥२२॥ ओर जो प्रेम विवश रस को सुख कहत कछो नहि जाय ॥
यह सुख कहिवे कों सरस्वती की कोटिक सुमतिह राय ॥२३॥ शेष महेश
सुरेश न जाने अज अज हु पछिताय ॥ यह सुख रमा तनक नहीं पायो
यद्यपि पलोदत पाय ॥२४॥ श्रीवृषभान सुता पद अंबुज जिनके सदा सहाय ॥
यह रस मगन रहत जेतिन पर नंददास बलजाय ॥२५॥



४ (ह्रस्व) राग गौरी (ह्रस्व) एचल जाए जहां हरि खेलत गोपिन संग ॥ आनक
बहुबाजे ताल मुरज मुख चंगा ॥ गावत सुन भावत मंद मधुर स्वरबानी ॥
जानों हरख परस्पर मानो मदन गति ठानी ॥ एचल जाय जहां क्रीडत नंदनंदन
झांझ प्रणव डफ भारी ॥ बीन मृदंग उपंग चंगबहु देत परस्पर गारी ॥१॥
करपिचक विकचमुख कटिपट भेष बनायो ॥ जानों गुदरदेनगुण बनबसंत
व्रज आयो ॥ हाटक मणि गण खचित विविध कर जेरी साजे ॥ रंजमुरज
सहनाई ढोल ढोलक छबि छाजे ॥ आवज अति आतुरबजे गावत व्रज
जनफाग ॥ तान तरंगन बाहुज बांध्यो छाय रह्यो अनुराग ॥२॥ ध्वनि सुनत
पियारी कुंकुम मंजन कीनो ॥ बहुरंग वसन तन यावक चरणनदीनों ॥
कबरीकर जुसवार निरख उपमा को हारी ॥ मानो हाट कलतारही खगपन्नग
नारी ॥ श्रवण तार उरहार छबि उर मुक्ता सजल सुढार ॥ जनुयुग गिरिविच
देखिये छवि धसी सुरसरी धार ॥३॥ रचितलक भालपर मृगदरेख संवारी ॥
जानों युगल जीभधर पन्नग पीवत सुधारी ॥ खंजन मीन आधीन देख दृग
सारंग लाजे ॥ वदन चंदभुवचांप स्वांति सुतनासाराजे उपमा को अवलोक
के छबि या समान नहि ओर ॥ मानों कीर उडुगण गहें चुगत नहीं सुनबोर
॥४॥ अति अरुण अधर छबि अरु दशन न द्युति पाई ॥ जनु विज्वल बीजकी
विट्ठमवार बनाई ॥ कंठ कपोतल जात करण अंगद जग मगयो ॥ मानों
जरद मृणाल शरद शशि बालक लजयो ॥ पोंहोंचन अति पोंहोंची सघन
सुंदर स्याम सुपास ॥ मानो कंजके कंठलागके भृंगरहे मधुआस ॥५॥ बनचली
सकलत्रिय पगनूपुर स्वर भारी ॥ जानों विविध केलिकल हंस करत
किलकारी ॥ साख जवाद सुगंध कुंकुमा केसर घोरी ॥ भार लजनभेचली

सकल त्रिय गावत होरी ॥ नखशिखते अवलोक छबि नागर रीझे गान ॥
 मानो संगीत शाला पढी घट बढ परतन तान ॥६॥ छबि सिंधुललन तन
 देखत लोचन भूले ॥ चितवत चित चोरत अंगअंग अनुकूले ॥ वरण वरण
 सिरपाग श्रवण कुंडल मणिमय अति ॥ मनहूं स्याम नग शिखर तरणि युग
 रमत तरल गति ॥ उरवन माल विशाल अति विविध सुमन बहुवेष ॥ मानो
 जलद में प्रगट देखियत शतमुख सारंगरेख ॥७॥ रचतिलकमलयका पियकर
 खोंरबनाई ॥ मानो युगल अहिन शशि घन परदई दिखाई ॥ घनतन देख
 लजात कंजदृग क्यों समपाबें ॥ मुख छबि स्याम सुजान देख अहिवपु हिल
 जावें ॥ नख सिखतें अवलोक के छबि कटिपट पीत सुदेश ॥ मानो जलद
 धुर्वा सखीरी दामिनि रही प्रवेश ॥८॥ छबि सिंधु मोहन तन लघु मति वरणी
 न जाई ॥ चितवत चित चोरत मन्मथ रझो लजाई ॥ त्रियन परस्पर हरख
 विविध कर डांगन राजें ॥ गोप उठे किलकार दुहूं दिशते बाजत बाजें ॥
 एकन करकुंकुमलियो एकन घोर गुलाल ॥ चली सकल व्रज सुंदरी पकरन
 मदन गोपाल ॥९॥ सेनन स्यामाजू हलधर दिये हैं बताय ॥ गहिनील वसन
 तनदोऊ बंद दिये छटकाय ॥ सब मिल पकरे स्याम मुरलि का लई छिनाई ॥
 तबहि तरुणी मुसिकाय साखभर भाजन लाई ॥ छांटत छिरकत हसत परस्पर
 प्रेम छके नंदनंद ॥ मानो अवनि पर मेघकों घेर रहे बहुचंद ॥१०॥ निरखत
 विथकित भये जहां तहां अमर विमान ॥ बरखत सुर कुसुमन ओर बजाये
 निसान ॥ रझो परस्पर रंग सकल त्रिय भवन न आई ॥ तबहिं तिनें व्रजराज
 विविध पटदई मिठाई ॥ बहुरि तरणि तनया सलिल मंजन कर बलबीर ॥
 पहर वसन आये घरें संग सकल आभीर ॥११॥ दुतिया मोहन तन राजत
 सुंदर पीत सुवास ॥ बैठे कनक सिंघासन बल बल राघोदास ॥१२॥

५ (॥१॥ राग गौरी (॥१॥) मारग छांड अबदेहु कमलनयन मन मोहना ॥ कटिपट
 पीरु सुहावना ओर उपरेना लाल ॥ सीसमोर की चंद्रिका चंचल नयन
 विशाल ॥१॥ कुंचित केश छबि बनी सुंदर चारुकपोल ॥ श्रुतिमंडल
 कंचनमणी झलकत कुंडललोल ॥२॥ मोहन भेष भलो बन्यों मृगमद तिलक
 सुभाल ॥ अलक मधुप समराजही ओर मुक्तावलि माल ॥३॥ कुंजमहलते
 होंचली अपने गहेकों जात ॥ वन में सोरन कीजिये सुन्दर सामल गात ॥४॥

उर अंचल कित गहत हो दूर भये कहो बात ॥ अपने जिय ही विचारिये
जो परे कुहू की रात ॥५॥ सांज परीदिन आंथयो अरुझाई किहिंकाम ॥
सेंत मेंत क्यों पाइये पाके मीठे आम ॥६॥ नंदराय के लाडिले बोलत मीठे
बोल ॥ रहिहो के जाय पुकारिहो ना कंचुकी बंद खोल ॥७॥ परमानंद
प्रभु यों रमी ज्यों दंपति रति हेत ॥ सुरत समागम रस रह्यो नदी यमुना
के रेत ॥८॥

६  राग गौरी  कमल नयन के कौतुक सुनों सहेली आय ॥ आज
हमारे आये नख सिख भेष बनाय ॥१॥ बैठे आय अचानक जहां सोवत
अधरात ॥ अंगूठा मोर जगाई चोंक परी सबगात ॥२॥ तमक उठीजो उनींदी
भावर भोरें जान ॥ चुपचुप कर निरवारत सुन सीतल भयेकान ॥३॥ उतरन
आवे रही सखी दांत अंगुरिया चांप ॥ तनमन सकुच संकानी गुरुजन
लाजनकांप ॥४॥ बीरी वरही देतमुख हसत सुरंजित गात ॥ प्रेम उमग
दोऊ जन फूल्ये आनंद उर न समात ॥५॥ कंचुकी कसन करष उर कुचन
खरदान ॥ आलिंगन परिरंभन करत अधर रसपान ॥६॥ लेत उठाय अंकभर
राखत कंठ लगाय ॥ मगन भई रस सागर कहत कही नहिंजाय ॥७॥
मोहनदास स्यामघन सुंदर प्रेमपसाय ॥ छिनछिन ग्वाल विचारत भवन काज
वह्यो जाय ॥८॥

७  राग गौरी  गोकुल सकल ग्वालिनी सब मिल खेलें फाग ॥
तिनमें श्रीराधा लाडिली जाको परम सुहाग ॥१॥ झुंडन मिल गावत चली
झूमक नंद के द्वार ॥ आज परव मिल खेलें हम तुम नंद कुमार ॥२॥ रसिक
कुंवर सुंदरवर राधा जीवन प्रान ॥ मोहन वदन दिखावहो दुरोतो नंदकी
आन ॥३॥ प्रगट प्रीति गोकुल भई अब कहा करो दुराव ॥ हमनदरसबिन
जीवें कोऊ करो चवाव ॥४॥ जसोदा के सुतचित चुभिरही यह तुहारि
मुसक्यान ॥ अबन अनत रुचि उपजे सहज परियहबान ॥५॥ दुरत लाल
भलें पाये राधा भर अंकबार ॥ कनक कुंडी केसर भरी लेदोरी ब्रजनार ॥६॥
भरो भरो सखी स्याम की पीत पिछोरी पाग ॥ देहगेह सुधि भूली नंदनंदन
अनुराग ॥७॥ चोवा साख कुंकुमा गोरा मदे जवाद ॥ हस हस हरि पर

डारत ओर नाना फुलवाद ॥८॥ छूटे केस कंचुकी बंदटूटी मोतिन माल ॥
करतल ताल बजावें गावें गीत रसाल ॥९॥ गगन विमान न छायो सुरनर
कौतुक भूल ॥ जय जय शब्द उचारें आनंद वरखें फूल ॥१०॥ लाल गोपाल
कृपाविन यह रस लहेन कोय ॥ हरि वृषभान किशोरी की कथा मगन मन
होय ॥११॥

८ (३३) राग गौरी (३३) हो हो हो हो होरी बोलें ॥ नंदकुंवर ब्रज वीथन
डोलें ॥१॥ नवल रंगीलो सखा संगलीनें ॥ राजत अंगअंग रंगभीनें ॥२॥
रंगीली भांत रंगीलो जहां ॥ चोवा चंदन कीचमची तहां ॥३॥ ताल मृदंग
मुरज डफ वाजे ॥ ढोल ढमक नवधन ज्योंगाजे ॥४॥ सुन ब्रजबधू आनंद
अतिवाढी ॥ निकस निकस सब खोरन ठाडी ॥५॥ अंजुली अबीर छूटत
छबि पावें ॥ पंकज मनो पराग उडावें ॥६॥ पिचकारिन रंग छूटत भारी ॥
उड्यो गुलाल रंगे अटा अटारी ॥७॥ जबलग लाल भरत पिचकारी ॥ तबलग
भामिनि भाजत भारी ॥८॥ जो कोऊ नवल बधू ॥ भरभागे ॥ मोहन ताके
गोहन लागे ॥९॥ तिनहिं धायकें भरत छबीलो ॥ जाहि भरे तहां रंग रंगीलो
॥१०॥ जाय परत ललना मंडल जब ॥ घेरलेत करतारीदे तब ॥११॥ अंग
भर भुज भर हियें भरलालें ॥ छांटत छबीली मदन गोपालें ॥१२॥ कहत
न बनें बढ्यो रंग भारी ॥ नंददास तहां बल बल हारी ॥१३॥

९ (३३) राग गौरी (३३) हो हो हो हो हो हो होरी ॥ सुंदर स्याम राधिका
गोरी ॥१॥ राजत परम मनोहर जोरी ॥ नंदनंदन वृषभान किशोरी ॥२॥
डफ ओर ताल मृदंग बजावत ॥ गोरी राग सरस सुरगावत ॥३॥ नवसत
साज सकल ब्रजनारी ॥ प्रमुदित देत भामती गारी ॥४॥ झूंडन जुर चहुंदिसतें
दौरी ॥ मदन गोपाल गहेभर कोरी ॥५॥ सोंधो बहुत सीसतें नायो ॥ रंगे
बसन कीयो मनभायो ॥६॥ नवल अबीर सखा संग लीने ॥ फिरत उडावत
फेंटन दीने ॥७॥ नयन आंज रोरी मुखमांडत ॥ प्रेम आलिंगन देदे छांडत
॥८॥ हरि मृदुभुजा कंठ ले लावत ॥ अंतर को अनुराग जनावत ॥९॥ मगन
भई तब सुधिन संभारत ॥ प्राणनाथ पर सर्वस्व वारत ॥१०॥ चतुर्भुज प्रभु
पिय सब सुख सागर ॥ सुरनर मोहे गिरिधर नागर ॥११॥

१० ॥ ॐ राग गौरी ॥ माईरी रंगीलो मोहनाकुमर श्रीगिरिधर खेले फाग ॥ १ ॥ जिहिंजिहिं मारग तिहिंतिहिं गलीहों निकसत तिहिंतिहिं बार ॥ जिहिंजिहिं मारग तिहिंतिहिं गली मोकों रोकत आय अगवार ॥ १ ॥ पहलें गेंद चलायकें पेठत धाम में धाय ॥ तापाछें हसयों कहे नेंकदे मेरी गेंदबताय ॥ २ ॥ मे गेंदुक करते दियो छिरकत कुंकुमनीर ॥ गहि भुजत बदन सांवरो मांड्यो वदन अबीर ॥ ३ ॥ संगसखा सब जोरकें आंगन चाचरमेल ॥ सब न सुनत मोसोंयों कछों नेक तू मेरे संग खेल ॥ ४ ॥ हों सकुची डरपी जिय मोहि राखी अंग अगोर ॥ वचन रचन कहि सांवरे मोसों लई सकत रतिजोर ॥ ५ ॥ श्रीगिरिवरधारीलाल को मोपें खेलन वरन्यों जाय ॥ तृण तोरें सहचरी सबेहो लघुगोपाल गुनगाय ॥ ६ ॥

११ ॥ ॐ राग गौरी ॥ खेलत नंदकिशोर ब्रजमें अतिरस बाढ्यो हो हो होरी ॥ गोरी राग अलापत गावत मधुर मुरली कलघोरी ॥ १ ॥ कटिपियरो पट फेंट बनी छबि सीसचंद्रका मोर ॥ मन्मथ मान हरन हैंस चितवन चपल नयन की कोर ॥ २ ॥ बालक वृंद स्याम संग शोभित उतसोहत ब्रजनारी ॥ विविध सिंगारसजे मिल झुंडन देत भामती गारी ॥ ३ ॥ देख समाज मदन मोहन को भई मन उल्लास ॥ तिनमें मुख्य राधिका नागरि सकल सुखन की रास ॥ ४ ॥ दुंदुभी झांझ मुरज डफ वाजे मृदंग उपंगन तार ॥ दुहुंदिस माच्यो खेल परस्पर घोषराय दरबार ॥ ५ ॥ चोवा साख अरगजा चंदन केसर सुरंग मिलाय ॥ तकतक तरुणी गोपालें छिरकत करन कनिक पिचकाय ॥ ६ ॥ उतमन मुदित लियें कर सोंधो सखनसहित बलबीर ॥ युवती कदंबन ऊपर वरषत सुरंग गुलाल अबीर ॥ ७ ॥ युवती युध पेल सन्मुख वहे मोहन पकरे जाय ॥ काजर नयन आंज प्रीतमके मुरली लई छिनाय ॥ ८ ॥ पिय प्यारी की जोट बनाई अंचलसों पटजोर ॥ सेनहिं सेन परस करसों कर हसत सबे मुखमोर ॥ ९ ॥ मगन भई तन की सुधविसरी हूदें बढ्यो अनुराग ॥ यह सुख तीन लोक में नाहीं गोपिन को बडभाग ॥ १० ॥ चीर हार अंगन भीजे की चमची ब्रजखोर ॥ मान हुं प्रेम समुद्र अधिक बल उमग चलयो मितछोर ॥ ११ ॥ चतुर्भुजदास विलास फागको कहत न वरन्यों जाय ॥ लीला

ललित देवगण मोहे गिरिगोवर्धनराय ॥१२॥

१२ (॥१॥ राग गौरी ॥१॥) मूरली अधरधरें नंदनंदन हो हो होरी बोलेजू ॥
 लिये सखा संग देत कूंक सब ब्रज खोरिन मे डोलेंजू ॥१॥ पहरे वसन
 अनेक वरणतन नीलपीत सितराते ॥ सुरंग गुलाल अवीर फेंटभर फिरत
 महारसमाते ॥२॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ ओर बांसुरी ध्वनि थोरी ॥
 गावत सरस धमार नयो रंग रसिक मंडली जोरी ॥३॥ श्रवण सुनत सब
 गोकुलनारी घर घरतें उठ दौरी ॥ सजेसमाज सबे मिल आई नंदराय की
 पौरी ॥४॥ पहरे दिव्य कटाव की चोली नौतन झूमक सारी ॥ मुनियन
 केसे झुंडन गावत परम भामती गारी ॥५॥ विविध सिंगार बने सबहिन
 अंग भूषण नानावेशा ॥ मुखहि तंबोल नयन काजर सिरसैं दूर मांग सुदेशा
 ॥६॥ कंठ सरी मखतूल पोति उरगज मोतिन हारा ॥ कर कंकण कटि
 किंकिणी की छबी ओर नूपुर झनकारा ॥७॥ अलकावली आड मृगमद की
 वरनिस के को भांती ॥ खुटिलाखुभी रुचिर नकवेसर दूर करत रविकांता
 ॥८॥ इनमें मुख्य राधिका नागरि सब हिन ऊपर सोहें ॥ कुटिल कटाक्ष
 फाग के अवसर प्रीतम को मनमोहें ॥९॥ कनक वरण वृषभान किशोरी
 नवधन नंदकिशोरा ॥ प्यारी चाव चौगुनों चितभयो चितवत पियकी ओरा
 ॥१०॥ बालक वृंद नक्षत्रन महिया छबि लागत गोविंदा ॥ ग्वालनि मानो
 चकोर की सेना हेरत पूरण चंदा ॥१२॥ छूटी तरुणी महामदमाती कुल
 अंकुश नहीं मानें ॥ सोंधो बहुत गुलाल लेकें नयनन तकतक तानें ॥१२॥
 उतबूका बंदन अंजुलीभर सन्मुख ग्वाल उडावत ॥ दुहुंदिश माच्यो खेल
 परस्पर जिततित भरत भरावत ॥१३॥ नरनारीन के चोंपबढी जिय
 कमलनमार मचाई ॥ रूपे सुभटरन धीर मानो कोऊ इतउत ओटन जाई
 ॥१४॥ युवती यूथ पेलि सन्मुख बहे जिततित सखा भजाये ॥ जाय गह्वो
 पटपीत स्यामको ॥ जीतके बाजे बजाये ॥१५॥ कोऊ करते मुरली ले भाजी
 कोऊ मणि मोतिन माला ॥ कोऊ फेंटा गहि कहत हमारे फगुवा देहु गोपाला
 ॥१६॥ चंद्रावलि चोवा चंदनले सीसस्याम के नाबत ॥ ललिता विसाखा
 नयन आंजमुख रोरी हरद लगावत ॥१७॥ कोऊ प्यारी को अंचल लेकें

पिय के पटसों जोरें ॥ कोऊ कहे करो जुहार लडैते कोऊ हँसत मुखमोरें ॥१८॥ मगन भई तनकी सुध भूली उर आनंदन समाई ॥ आलिंगन दे श्रीमुख चितवत मानो रंक निधिपाई ॥१९॥ वरन वरन भये बसन भीजरंग कीच धरणि पर बाढी ॥ टूटे हार छूटी अलकावलि फटी कंचुकी गाढी ॥२०॥ सन्मुख जीत चलीं ब्रजयुवती गई यमुना के कूलन ॥ लीला ललित निहार देवगण बरखन लागे फूलन ॥२१॥ इहिं बिध फाग संग मिल खेलें उत गोविंद इतगोरी ॥ चत्रभुजदास रहो ब्रज अविचल राधा गिरिधर जोरी ॥२२॥

१३ (१३) राग गौरी (१३) ललना खेलत फाग बन्यों ब्रज सखा लिये नंदनंदना वंसीधरें कहत हो होरी ॥ युवती जनमन फंदना ॥१॥ घरघरते सुंदरी चलीं देखन आनंद कंदना ॥ बाजे ताल मृदंग झांझ डफ गावत गीत सुछंदना ॥२॥ ठायंठांय अगर अवीर लिये कर ठायंठांय बूका वंदना ॥ हाथ न धरें कनक पिचकाई छिरकत चोवा चंदना ॥३॥ क्रीडा रसवश भये मगनमन मात नमन आनंदना ॥ दास चतुर्भुज प्रभु सब सुख निधि गिरिधर विरह निकंदना ॥४॥

१४ (१४) राग गौरी (१४) हो हो होरी वेणु मध्य गावे स्याम ॥ नृत्यत युवती समूह संगमिल मधुरतान विश्राम ॥१॥ फूली लता नवल गहेवर वन वरन वरन बहू भांत ॥ किलकत शुकपिक आनंदभरे मनोहर मधुपन पांत ॥२॥ बाजत चंग उपंग मुरली डफ झालर झांझ मृदंग ॥ मदन गोपाल लेत गति सहज लजवत कोटि अनंग ॥३॥ कुंकुम चंदन वंदन अरगजा सुंगंध ताई ॥ बीच बीच तक तक तानत हैं नयनन की पिचकाई ॥४॥ फाटत चीर रहत दुमदुम प्रति टूटत मोतिन हार ॥ क्रीडा रसवश भये मगनमन तनकी तजी संभार ॥५॥ दास चतुर्भुज प्रभु चहुंदिश जुरगावें चेतव राग ॥ सुख समूह श्रीगोवर्द्धन तट रच्यो रंगीलो फाग ॥६॥

१५ (१५) राग गौरी (१५) खेलत मदन मोहन पिय होरी ॥ लरिका संग सकल गोकुलके करत कुलाहल ब्रज की खोरी ॥१॥ भवन भवनते निकसि द्वार बहे अति प्रफुल्लित मन नवलकिशोरी ॥ सोंधो लियें कनक वेलाभर

अरगजा कुंकुम सोंघ सघोरी ॥२॥ एक गुवालि गुलाल लियें कर एकन
लई बहुत कर रोरी ॥ एक पलास कुसुम रंग बरखत एक लियें बीरा भर
झोरी ॥३॥ वाजत ताल मृदंग झांझ डफ विच विच मोहन मुरली ध्वनि
थोरी ॥ मधुर वचन हँस कहत परस्पर गोविंद प्रभु लीनों चितचोरी ॥४॥

१६ (॥१॥ राग गौरी ॥१॥) सबब्रज कुल के राय ॥ लाल मनमोहना निकसे
खेलन फाग ॥ लाल मनमोहना ॥धृ०॥ नवल कुंवर खेलनचले ॥ मनमोहना
मुदित सखा संग लाय ॥ लाल मनमोहना ॥ स्याम अंग भूषण सजे ॥
विसल वसन पहराय ॥१॥ निकसद्वार ठाडे भये ॥ मुरली मधुर बजाय ॥
श्रवण सुनत सब ब्रजवधू ॥ जहां तहांते चली धाय ॥२॥ विविध भांत
बाजेबजे ॥ ताल मृदंग उपंग ॥ रंज मुरज डफ दुंदुभी ॥ कर कंठताल
सुरंग ॥३॥ युवतियूथ मिल धाइयो ॥ भर पिचकाई हाथ ॥ चहुंदिसतें बे
छिरक हीं ॥ भरत कुंवर गोपीनाथ ॥४॥ बहुरि सखा सन्मुख भये ॥ आगे
दे बलबीर ॥ युवती गणपर बरखहीं कुंकुम सुरंग अबीर ॥५॥ बहोरिसमिट
सब सुंदरी ॥ मोहन लीने घेर ॥ एकजु मुरलीले भजी ॥ एक कहें देहु फेर
॥६॥ एक पीत पट गहिरही ॥ फगुवा देहु कुमार ॥ ऐसे हम नपती जहीं ॥
दे गहने मोती हार ॥७॥ ललिता ललित वचन कहे ॥ तुम सुनो गोकुल
के राय ॥ तो हम तुमकों जानदें ॥ प्यारी राधा कों सिरनाय ॥८॥ प्यारी
कर काजर लियो ॥ आंजे पियके नयन ॥ अंचलपट सुख दे हंसी मिलवत
करदे सेन ॥९॥ आलस अरुण अति रसमसे अंजन खरे विराज ॥ युगल
कमल कर मुकुलिता मानें बैठे युगल अलिछाज ॥१०॥ अति रस भरि ब्रज
सुंदरी कछू बन अंग संभार ॥ खसत बलय कटि किंकिणी पिय संग करत
विहार ॥११॥ कुचपरक चलर लटकहीं लागत परम सुदेश ॥ मानो भुजंगम
चुहुंदिसा अमीपीबन राकेश ॥१२॥ यह विध सब मिल खेलहीं गावत गोरी
राग ॥ नवल कुंवरपर अति बढ्यो प्रतिछिनु नब अनुराग ॥१३॥ युवती
यूथ मिल उलटियो अपने अपने टोल ॥ पियमुख देखे फूलही ॥ प्रमुदित
लोचन लोल ॥१४॥ यह विध होरी खेलहीं ब्रजजन संग लगाय ॥ घोष
नृपति सुत वदनकी गोविंद बलबल जाय ॥१५॥

१७ (१७) राग गौरी (१७) मनमोहना रस मत पियारे छांड सकल कुल लाज ॥ यश अपयश कोऊ कहो मोहि नाहि काहू सों काज ॥१॥ खिरक दुहावन हों गई मिले ब्रजराज किशोर ॥ गहि बैयां मोहि ले चले आई तहां ते भोर ॥२॥ कुंज महल क्रीडा करी कुसुमन सेज बिछाय ॥ सुरत शिथिल अति दंपति तेरेहेहें कंठ लपटाय ॥३॥ विविध कुसुम मालागुही सुंदर करकमल संवार ॥ प्यारी राधा कों दे घालियो पहरे घोष मझार ॥४॥ कुंज महल बनठन चले प्यारी राधा कों दे सेन ॥ चतुराई वरनी नापरे सकल रूप गुणएन ॥५॥ नंदराय के लाडिले धेनु चराबन जाय ॥ प्यारी राधा विन ज्योंना रहे छिन छिन कल्प विहाय ॥६॥ सब गोकुल के लाडिले जसुमति प्राण आधार ॥ राधा के तुम चाडिले जयजय नंदकुमार ॥७॥ मदन मोहन पियबस किये अपने गुनरूप सुहाग ॥ चिते परस्पर दंपती प्रतिछिन नव अनुराग ॥८॥ इत मनमोहन राजही सखा सकल लिये संग ॥ उतते आई ब्रज वधु भरत आपने रंग ॥९॥ मोहन पकरे भेदसों दई परस्पर सेन ॥ प्यारी कर काजर लियो आंजे पियके नयन ॥१०॥ यह बिध होरी खेलही ग्याति बंदु संगलाय ॥ गोविंद बलंबदन करे सुनो हो गोकुल के राय ॥११॥

१८ (१८) राग गौरी (१८) श्रीगोकुलराय कुमार ॥ कमल दल लोचना ॥ ठाडे हैं सिंघदुवार ॥ कमल दल लोचना ॥ नखसिख भेस बनाय ॥ सुंदरता अति सार ॥१॥ रसभरे नंदकिशोर ॥ निकसे खेलन फाग ॥ मधुर वेणु करधरे ॥ गावत गोरी राग ॥२॥ आये ब्रजके चोहटें ॥ लिये सखा सब संग ॥ नव भूषण नव वसन ॥ शोभित सामल अंग ॥३॥ उपमा कही न जाय ॥ सुंदर मुख आनंद ॥ बालक वृंद नक्षत्र ॥ प्रगटे पुरण चंद ॥४॥ बाजत ताल मृदंग ॥ आवज डफ मुख चंग ॥ मदन भेरि सुरबीन ॥ गिडगिडि झांझ उपंग ॥५॥ श्रवण सुनत चली दौर ॥ गृहगृहते ब्रजनारि ॥ तिनमें परम सुदेश ॥ राधा अति सुकुमारि ॥६॥ बने चीर आभरण ॥ सबतन विविध सिंगार ॥ कंकण कटि किंकिणी ॥ उरगज मोतिन हार ॥७॥ नकवेसर ताटक ॥ कंठसरी अनुभांति ॥ चोकी बनी जराय ॥ दूर करत रविकांति ॥८॥ सेंदुर तिलक तंबोल ॥ खुटिला बने विसेख ॥ शोभित केसर आड ॥

कुंकुम कज्जल रेख ॥९॥ प्रफुल्लित अति आनंद ॥ चितवत हरि मुख ओर ॥
 मानो विधु प्रीतम मिले ॥ सादर चारु कोर ॥१०॥ रूप नयन रसभरे ॥
 वारंवार निहार ॥ गावें झूमक चेत ॥ बीच सुहाई गार ॥११॥ चोवा चंदन
 अरगजा ॥ सोंधें सजे अनेक ॥ पिचकाई कर लिये ॥ धाई एकते एक
 ॥१२॥ अतिभर बांधे फेंट ॥ सुरंग अबीर गुलाल ॥ दुहुंदिश माच्यो खेल ॥
 इतगोपी उतगवाल ॥१३॥ नरनारी परी चोंक ॥ छिरकत तकतक जेह ॥
 भरत भई अति भीर ॥ मानों वरखत मेह ॥१४॥ वरण वरण भये वसन ॥
 अंगन रहे लपटाय ॥ क्रीडा रस वस मगन ॥ आनंद उर न समाय ॥१५॥
 ब्रज युवतिन मतो मत्थ्यो ॥ मुखन जनावतबेन ॥ पकर लेहु घनस्थाय ॥
 मिलवत इत उत सेन ॥१६॥ युवती यूथ नबपेल ॥ दीने सखा भजाय ॥
 कहत कहामतो करें ॥ अवतो कछू न सुहाय ॥१७॥ कहतन बाचें कछू ॥
 वचन गारओर गीत ॥ झुंडन जुर चहुं ओर ॥ जाय गह्वो पटपीत ॥१८॥
 नवल कुंवर जानिये ॥ अवजो मुरली लेहु ॥ राधे करहु जुहार ॥ के हमारो
 फगुवा देहु ॥१९॥ फगुवा देहु न देहु ॥ छांड हु ओर उपाय ॥ हमारो भायो
 करहु ॥ के छूटो सिरनाय ॥२०॥ प्यारी पियसो कहे ॥ अति मीठे मृदुबोल ॥
 काजर आंजे नयन ॥ रोरी हरद कपोल ॥२१॥ मुख मांडें छबि भई ॥ कोटि
 मदन सिरताज ॥ त्रिभुवन सौभग लियें ॥ मानों व्याहन आयो आज ॥२२॥
 क्रीडत अवचल रहो ॥ युगयुग यह ब्रजवास ॥ श्रीगिरिधर को यशगान ॥
 नितकरहु चतुर्भुजदास ॥२३॥

१९. (ह्रस्व) राग गौरी (ह्रस्व) खेलत हें हरि हो हो होरी ॥ ब्रज तरुणी रस
 सिंधु झकोरी ॥१॥ बाला वयस्य ओर नव तरुणी ॥ जीवन भरी चपल
 दृग हरणी ॥२॥ नवसत सज गृहगृहते निकसी ॥ मानो कमल कलीसी
 विकसी ॥३॥ पिकवचनीत न चंपक वरनी ॥ उपमा कों नहीं मनसिज घरनी
 ॥४॥ वरण वरण कंचुकी ओर सारी ॥ मानो काम रची फूलवारी ॥५॥
 द्वादस आभरण सज कंचन तन ॥ मुख शशि आभूषण तारागण ॥६॥ मानो
 मनो भवमनते कीनी ॥ ओर त्रिभुवन की शोभा लीनी ॥७॥ देखत दृष्टि
 छिनन ठहराई ॥ ज्यों जल झलमलात जल झांई ॥८॥ ताल मृदंग उपंग

बजावत ॥ डफ आवज स्वर एक मिलावत ॥९॥ मधु क्रतु कुसुमित
 वननोनेरी ॥ गावत फाग राग रति गोरी ॥१०॥ आई सकल नंदजूके द्वारें ॥
 अगणित सकल सुगंध संवारें ॥११॥ झूम झूम झूमक सब गावें ॥ नमत
 भेद दुहुंदिशतें आवें ॥१२॥ रस सागर उमड्यो न संमाई ॥ मानो लहर
 चहुंदिश धाई ॥१३॥ खोर खिरक गिरि जहां ही पावें ॥ धाय जाय ताही
 गहि लावें ॥१४॥ कर छांडत अपनो मन भायो ॥ उडत गुलाल सकल
 नभ छायो ॥१५॥ घरमें ते मनमोहन झांके ॥ दूर भये तब युवतिन ताके
 ॥१६॥ एक ही वेर सबें जुरधाई ॥ पौरितोररावर में आई ॥१७॥ मोहन
 गहत गहत छुटि भागे ॥ पीतांबर तजत न भये नागे ॥१८॥ दौरि अटा
 चढि दई हे दिखाई ॥ उतते स्याम घटा जानों आई ॥१९॥ सुंदर स्याम
 मणि गण तनराजें ॥ गिरागंभीर मेघ ज्यों गाजें ॥२०॥ टेरेटेर पीतांबर
 मांगें ॥ गोपी कहत आय लेहु आगें ॥२१॥ पीतांबर राधिका उढायो ॥
 हरिजू निरख परम सुख पायो ॥२२॥ पीतांबर तहां शोभा पाई ॥ घन तज
 दामिनि खेलन आई ॥२३॥ तब ही अरगजा स्याम मंगायो ॥ अपने करवर
 घोर बनायो ॥२४॥ ऊंचे चढघन जिउंवर खायो ॥ धारा धरजानों उनें आयो
 ॥२५॥ तब इन जसुमति ठाडी पाई ॥ सोंधे गागर सिरतें नाई ॥२६॥ उतते
 निरख रोहिणी आई ॥ वीच छांड बहे महिर बचाई ॥२७॥ आंगन भीर
 भई अतिभारी ॥ जसुमति देत दिवावत गारी ॥२८॥ गोपिन नंददुरे गहि
 काढे ॥ कंचन गिरिसे आगे ठाढे ॥२९॥ जानों युवती ऐरा बतलाई पूजत
 हस्त गोरी की नाई ॥३०॥ नंद जसोदा गोरा गोरी ॥ छिरकत चंदन बंदन
 रोरी ॥३१॥ पूजपूज वर मांगत मोहन ॥ बिन पाये छांडत नहिं गोहन ॥३२॥
 एक कहे मोहन हिं बतावो ॥ तो तुम हम पे छूटन पावो ॥३३॥ एक सिखावत
 एक बतावत ॥ तारी देदे एक नचावत ॥३४॥ एक गहे कर फगुवा मागे ॥
 एक नयन काजर दे भागे ॥३५॥ बसन आभूषण नंद मंगाये दये बसन जैसे
 जाहि भाये ॥३६॥ देअत सीस सकल ब्रजबाला ॥ युगयुग राज करो नंदलाला
 ॥३७॥ मदन मोहन पिय के गुण गावे सूरदास चरणन रज पावे ॥३८॥
 २० ॥ राग गौरी ॥ ग्वालिन जोबन गर्व गहेली ॥ श्रीराधा के संग

कदंब सहेली ॥१॥ केसर उबट कुंकुमा घोरी ॥ अंग सुगंध चढाय किशोरी
 ॥२॥ दक्षण चीर छिपेरी लहेंगा ॥ पहरे विविध पटमोल महेंगा ॥३॥ कबरी
 कुसुम मांग मोतिन भर ॥ केसर आडरची भृकुटी पर ॥४॥ काजर रेख
 नयन अनियारे ॥ खंजन मीन मधुप मृगहारे ॥५॥ श्रवणन कुंडल रवि
 शशिजोती ॥ नकवेंसर लटके गजमोती ॥६॥ दशन अनार अधर बिंबमानो ॥
 चिबुक मध्या मूँघो मदजानो ॥७॥ कंठ कपोत मुक्तावलि हारा ॥ जानो
 युगगिरी विच सुरसुरी धारा ॥८॥ कुचचकवा मानो शशि भ्रम भूले ॥ बैठे
 बिछुरे दोऊ अनुकूले ॥९॥ कर कंकण चूरो गजदंती ॥ नख मणि माणिक
 मेटत कांती ॥१०॥ नाभि मदन हिये हाटक वरणी ॥ कटि मृगराज नितंबनि
 तरुणी ॥११॥ कदली जंघचरण कमल नूपुर ॥ गमन मराल करत धरणी
 पर ॥१२॥ भूषण अंग सजे सत नौरी ॥ गावत फाग नंदजूकी पौरी ॥१३॥
 सुन सुंदर वर बाहिर आये ॥ हलधर ग्वाल गोपाल बुलाये ॥१४॥ खेल
 मच्यो ब्रज के बिच भारी ॥ एक पुरुष एक भई नारी ॥१५॥ चंगमृदंग
 बांसरी बाजे ॥ पकरत एक एक गहि भाजे ॥१६॥ कुंकुम केसर अरगजा
 घोरी ॥ हाथन पिचकारी गहे गोरी ॥१७॥ उडत गुलाल अरुण भयो अंबर ॥
 कुंकुमकी चमची धरणीपर ॥१८॥ तब राधा मन मतो उपायो ॥ हलधर अपनी
 भीर बुलायो ॥१९॥ कान लाग स्यामा समझायो ॥ संकरषण गहि स्यामहि
 लायो ॥२०॥ हरिजू के हाथ गहे चंद्रावलि ॥ कज्जल ले आई संजावलि
 ॥२१॥ ललिता लोचन आंजन लागी ॥ चंद्रावलि मुरली ले भागी ॥२२॥
 भामा लियो पटपीत छुडाई ॥ राधा राखत कृष्ण बडाई ॥२३॥ एक ले
 लावत हरद कपोलन एकले पोंछत मृदुल पटोलन ॥२४॥ एक कहे मोहन
 मुख मांडो ॥ एक कहे फगुवा ले छांडो ॥२५॥ एक आलिंगत एक
 अवलोकति ॥ चुंबनदेत परस्पर दंपति ॥२६॥ मगन भई आपुन न
 संभारत ॥ लालभुजा अपने उर धारत ॥२७॥ यद्यपि गुरुजन सब कोऊ
 देखें ॥ तिनकों तरुणी तृणभर लेखें ॥२८॥ कमलनमार मचीकर आडे ॥
 ग्वाल टिके पगतोउन छाडे ॥२९॥ स्यामा स्याम सु गह गहि लाये ॥ श्रीदामा
 तन श्रीहरि चाये ॥३०॥ सगरे सखा छुडावन आये ॥ उन दिये जीत के

ढोल बजाये ॥३१॥ बल कियो वीच ज्वाल समुझाई मोहन मिश्री मोल मंगाई ॥३२॥ फगुवा ले लालन छिटकाये ॥ हैंसत गोपाल सखा तहां आये ॥३३॥ तबही स्याम हलधर पकराये ॥ करत तरुणी अपने मनभाये ॥३४॥ नयन आंज कज्जल मुख लावें ॥ हरद कलश हलधर शिरनावें ॥३५॥ बहुत भरे बलराम सबनमहि ॥ धोरा गिरिमानो धातु चली बहि ॥३६॥ न्हान चले यमुना दुहुं टोलन ॥ केलि करत नरनारि कलोलन ॥३७॥ अतिरस बाढ्यो हो हो होरी ॥ सारद कहा वरनें मतिथोरी ॥३८॥ गिरिधर यश कृष्णजन गावे ॥ लीला सिंधु पार नहिं पावे ॥३९॥

२१ (११) राग गौरी (११) गौरी गौरी गुजरिया गौरी सी प्यारी तें मोहे नंदलाल ॥ खेलन में हो हो जु मंत्र पढ डारयो तेंजु गुलाल ॥१॥ तेरी सोंधे सनी अंगिया उरजन पर ओर कटि लहेंगा लाल ॥ उघरजात कबहुंक चलनमें जेहर ढिंग ऐडी लाल ॥२॥ तू सकल त्रियन में यों राजतहें ज्यों मुक्तन में लाल ॥ न्याय चतुर्भुज को प्रभु मोह्यो अधर सुधारस लाल ॥३॥

२२ (११) राग गौरी (११) छेल छबीलो ढोटा सभरयो वाकी चितवनि भ्रोंह मरोर ॥ खेलन में बहुछंद फंदकर लेजु गयो चितचोर ॥१॥ अरी वह बन बन आवे वेणु बजावें गावे चटक मटक की गार ॥ हो हो बोले गलियन डोले हैंसत सखा किलकार ॥२॥ हों ठाडी अपने द्वारे भोरें थोरोसो घूंघटमार ॥ आंखिन मांझ गुलाल मुठीभर गयो अचानक डार ॥३॥ वाके वडरे नयना मधुरे बेना कछो कछुक मुसिकाय ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन गये मेरे हियरे चटक लगाय ॥४॥

२३ (११) राग गौरी (११) खेलत फाग गोवर्धनधारी हो हो होरी बोलत ब्रजबालक संगे ॥ आई बन नवल नवल ब्रजसुंदरि सुभग संवार सुठ सेंदुर मंगे ॥१॥ बाजत ताल मृदंग अधोटी आवज डफ सुरबीन उपंगे ॥ अधर बिंब कुंजे वेणु मधुर ध्वनि मिलत सप्त स्वरतान तरंगे ॥२॥ उडत अबीर कुंकुमा वंदन विविध भांत रंग मंडित अंगे ॥ कुमनदास प्रभु त्रिभुवन मोहन नवल रूप छवि कोटि अनंगे ॥३॥

२४ ॥ राग गौरी ॥ गोकुल गाम सुहावनों सब मिल खेलें फाग ॥
मोहन मुरली बजावें गावें गोरी राग ॥१॥ नरनारी एकत्र वहे आए नंद
दरबार ॥ साजे झालर किन्नरी आवज डफ कठतार ॥२॥ चोवा चंदन अरगजा
ओर कस्तुरी मिलाय ॥ बालगोबिंद को छिरकत शोभा वरणी न जाय ॥३॥
वूका वंदन कुंकुमा ग्वालन लिये अनेक युवती यूथ पर डारहीं अपने अपने
टेक ॥४॥ सुर कीतुक जो थकित भये थक रहे सूरज चंद ॥ कृष्णदास
प्रभु विहरत गिरिधर आनंदकंद ॥५॥

२५ ॥ राग गौरी ॥ खेलत फाग कहत हो होरी ॥ इत कामिनी समाज
बिराजत उत गिरिधर हलधर की जोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ
बीच बीच मुरली ध्वनि थोरी ॥ श्रवण सुहाई गारी देतहें ऊंचेतान लेत
त्रिय गोरी ॥२॥ कोटि मदनते सुंदर स्यामा देखत मोहि जात मति भोरी ॥
मोहन नंदनंदन रस विथकित क्यों हू दृष्टि जात नहि भोरी ॥३॥ कुंकुम
रंग भरभर पिचकारी हरि तन छिरकत नवलकिशोरी ॥ जानों अनुराग उमड
सन्मुख वहे धावत वंसमेंडवर तोरी ॥४॥ कबहुक दसवीसक मिल आवत
लेत छुडाय मुरली झकझोरी ॥ जाय श्रीदामा लेले आवत देन कही बहु
भांत पटोरी ॥५॥ कनक कलश कुंकुम भरलीने ओर कस्तुरी बहुत
घसघोरी ॥ खेलत गोकुल बीच की चमची अधिक सुंगंध भई ब्रज खोरी
॥६॥ भरकर कमल अबीर उडावत गोविंद निकट जाय चोर चोरी मानहुं
प्रचंड वातवश पंकज घनगन शोभित चहुंओरी ॥७॥ ग्वाल बाल सब संग
मुदित मन जाय यमुना जल न्हान पहिलोरी ॥ नये वसन आभूषण पहरत
ओरन देत पाटंबर कोरी ॥८॥ द्वेज आनंद समेत करत द्विज तिलक फूल
फलरोचन रोरी ॥ सूरस्वामी विप्र भाटनकों देत कनक रतननकीबोरी ॥९॥

२६ ॥ राग गौरी ॥ खेलत फाग कुंवर गिरिधारी ॥ अग्रज अनुज
सुबाहु श्रीदामा ग्वाल बाल सब संग अनुसारी ॥१॥ इतनागरी निकस घर
घरतें आगे दे वृषभान दुलारी ॥ नवसत सज ब्रजराज द्वारमिल प्रफुल्लित
भीर भई अतिभारी ॥२॥ दुंदुभी ढोल पखावज आवज बाजत डफ मुरली

रुचिकारी ॥ हस्त कमल लियेकर उनमद भाजत गोप त्रियन सों हारी ॥३॥
 बांह उठाय पढत हो होरी लेले नाम देत प्रभुगारी ॥ इत राधिका निकस
 मंडलतें सन्मुख पिय डारत पिचकारी ॥४॥ एक गोपी गोपाल पकरकें अपने
 मेलले गई सारी ॥ आंजत आंख मनावत फगुवा हँसत हँसावत हरि चितहारी
 ॥५॥ सूरदास आनंद सिंधुमें मगन भये हैं सब नरनारी ॥ सुर बिमान कौतुक
 भूलेहें कोटि मनोज जाय बलिहारी ॥६॥

२७ (११) राग गौरी (११) हो हो होरी रंग बढावें नंद पौरि ब्रज सुंदरी
 आवें ॥१॥ केसर के मटुका भर आनी ॥ मृग मदमेलअगरशत सानी ॥२॥
 उडत गुलाल भई अंधियारी ॥ उमग पिया उरलागी प्यारी ॥३॥ ब्रजकी
 नारि सबें जुरआई ॥ फगुवा देहों कुवर कन्हआई ॥४॥ रामदास प्रभु की
 बलिहारी ॥ करो अखिल युगराज विहारी ॥५॥

२८ (११) राग गौरी (११) राधा मोहन खेलत होरी नंदनंदन वृषभान किशोरी
 सुख सागर जुरे वृंदावन वरण वरण वन संपति मोरी ॥१॥ एकन चोवा
 चंदन वंदन एकन लेकें केसर घोरी ॥ रत्न खचित पिचकाई छिरकत यों
 सुखपावे गोरी ॥२॥ छलबल कर पकरे नंदनंदन इनहीं छुडावे ताहि बंदोरी ॥
 आंख आंज मुख मांड मनोहर करन कछो सोह महि कियोरी ॥३॥ ऋतु
 वसंत विहरत नंदनंदन भीज्यो पीतांबर पीत पिछोरी ॥ हरिनारायण स्यामदास
 के प्रभुपें फगुवा लियो युगयुग जीवो राधावर जोरी ॥४॥

२९ (११) राग गौरी (११) होरी खेलन कों चलें ॥ रंग भीने हो ॥ सुंदर
 मदन गोपाल ॥ लाल रंग भीने हो ॥ आगेदे बलबीर ॥ करत कुलाहल
 ग्वाललाल ॥१॥ बाजे बहुविध बाजहीं ॥ जंत्र पखावज ताल रंज मुरज
 डफ दुंदुभी ॥ बिचबिच बेणु रसाल ॥२॥ श्रवण सुनत सब ब्रजवधू ॥ गृहगृहते
 उठिधाय ॥ मुख्य श्रीराधा लाडिली ॥ गावत गारि सुहाय ॥३॥ सन्मुख
 आवें हुलसकें ॥ केसरभर पिचकाई ॥ प्राणपिया कों छिरकही ॥ बदन मोर
 मुसिकाई ॥४॥ यूवतीयूथ परछिरकही ॥ सुरंग गुलाल अबीर ॥ चोंखपरें
 सब खेलहीं भरत परस्पर भीर ॥५॥ होहो होरी बोलहीं ॥ नाचे देकर

तारि ॥६॥ तब ललिता चंद्रावली ॥ गहिलीने घनस्याम नयन आंज
मुखमांडकें ॥ झटकत गहबन दाम ॥७॥ ले उठाय भर अंकमें ॥ प्रेम आलिंगन
देहि ॥ एक अधर रस घूंटही ॥ एकजु चुंबन देहि ॥८॥ एकजु पान खवावहीं
एकजु लेहि उगार ॥ भुजभर राखें पीयकों ॥ हाहा खाहु कुमार ॥९॥ हँसहँस
चिबुक उठावहीं दुलरी लीनी खोल ॥ कें बल छूटो आपने ॥ के ब्रजराजें
बोल ॥१०॥ यों गिरिधर संग खेलहीं ॥ बाढ्यो उर आनंद ॥ हेरें नयन
चकोर ज्यों ॥ पियमुख पूरणचंद ॥११॥ मनभायो फगुवा लियो ॥ अंबर
मोतिन माल ॥ वारें सर्वस्व वारनं ॥ बलबल दास गोपाल ॥१२॥

३० (॥१॥ राग गौरी (॥१॥) नवरंग गिरिधर खेलत होरी ॥ बालक वृंद हलधर
की जोरी ॥१॥ रवि तनया तट भई इकठोरी ॥ युवती यूथ मध्य राधा गोरी
॥२॥ छिरकत पिचकाई भरदोरी ॥ केसर सों भर नवलकिशोरी ॥३॥ कटि
बूका वंदनकी झोरी ॥ डारत मुठी लाज सब छोरी ॥४॥ अतर फुलेल अरगजा
घोरी ॥ कलश भरे बहु चोवा रोरी ॥५॥ मुगमदको गारोजु मच्योरी ॥
देखत बधू मनमोहन ओरी ॥६॥ ताल मुरज बीना धुनि थोरी ॥ पटह झांझ
डफ सरसबज्योरी ॥७॥ प्यारी हरि हिलगाई रोरी ॥ व्यापी सब तन प्रति
ठगोरी ॥८॥ नयनन करत परस्पर चोरी ॥ देत स्यामकों उरज अकोरी
॥९॥ अंकमाल भरभेट लयोरी ॥ ब्रजपति अधर पियूष पियोरी ॥१०॥ गावत
गार सरस स्वर भोरी ॥ चाहत सुख ज्यों चंद चकोरी ॥११॥ बोलत होहो
ब्रजकी खोरी ॥ डोलत कुल मर्यादा तोरी ॥१२॥ भरलाई हें कनक कमोरी ॥
मदनमोहन सिर ऊपर ढोरी ॥१३॥ सब हँस मधुर करत ठठोरी ॥ देहदशा
भूली भई बौरी ॥१४॥ बिरहत अंग अनंग बढ्योरी ॥ यह सुख कापें जात
कढ्योरी ॥१५॥ श्रीवृषभान कुंवरि बांध्योरी ॥ गोकुलचंद प्रेमकी डोरी ॥१६॥

३१ (॥१॥ राग गौरी (॥१॥) यह गुजरि जोबन मदमाती खेलत गिरिधर संग ॥
यामें गूढमंत्र मोहनको लोभ्यो ललित त्रिभंग ॥१॥ चंचल चपल कटाक्ष
कोर जब चलत चितवत भाय ॥ मुरली ध्वनि विसराय रहे हरि इकटक
दृष्टि लगाय ॥२॥ कमल नालले लटक लटक जब निथरे आवत बाल ॥



चित्र लिखे ज्यों रहत मनोहर ओहोट जात सब ग्वाल ॥३॥ कुंकुम रंगभरी
 पिचकारी सन्मुख छोटत आय ॥ जाके लगत बिचार रहत मन ठगके लडुवा
 खाय ॥४॥ मदन छबीले विफरे डोलें बोलत छूटे वेन ॥ घाइल व्हें जुगिरतरण
 रतिके ज्यों विन पाये मेन ॥५॥ सुरंग गुलाल उडाय अचानक डारत मुठी
 अबीर ॥ हाव भावकर मत्त छेलकों विकल होत मनधीर ॥६॥ पांच सखिनसों
 मिलललके मिलगावत मीठी गारि ॥ सुन चोंकत चितचतुरको पियडारत
 सर्वस्व वारि ॥७॥ यह रस मगन सबे ब्रजवासी घरघर खेलें फाग ॥ ब्रजपति
 प्राणपिया विलसत ऊर अंतरको अनुराग ॥८॥

३२ (१११) राग गौरी (११२) गौरी गौरी गुजरिया पाहुंनी नेंक चांचरकी
 खिलवार ॥ मोहन के संग खेलि राधिका कहीयत बडी रिझवार ॥१॥
 सुनत चमक चोकाइल निकसी छेलनकी लगवार ॥ करिणी ज्यों डग धरत
 हरत मन बन हरणी दृगवार ॥२॥ धुंधट दाबे दशन आपके जनवत अति
 लजवार ॥ छीन लंक लचकाय मुरकतन अति उरोजभर भार ॥३॥ मेनअटाकी
 मानोनिश्रेणी बेनी भरी फुलवार ॥ लपक चलन लावण्य उलटन छबि अतरोटा
 अरवार ॥४॥ वाम कपोल पाणि परसन मिस मुडहेर फेर संवारि ॥ बेसरके
 मोतीकी फेरनर सिकन मन फंदवारि ॥५॥ चतुरनके चित लेत चोंहोटिया
 चार चुरीदंतवार ॥ बांह पसार संकोच सकुचतन आप भरत अंकवार ॥६॥
 पुनि ठाडी अचराहि डारें सुंघवत उर खगवार ॥ ब्रजपति निरख दिशा विथकित
 भई डारयो मन्मथ वार ॥७॥

३३ (१११) राग गौरी (११२) निकसगामके ग्वेडे ॥ एकत्र भये ॥ सब ब्रजवासी
 लोग ग्वाल एकत्र भये ॥ मध्य बलराम गोपाल ॥ करन फाग को भोग
 ॥१॥ सीस न फेंटा ऐंठ बांध ॥ दुहुंदिस टोराडार ॥ नवल छैल बानिक
 बनबन ॥ मनमें मतोविचार ॥२॥ अगणित माट भराय रंगन ॥ सोंधो बहुत
 मंगाय ॥ सुरंग गुलाल अबीर संग ॥ लीने सकट भराय ॥३॥ नंद गामते
 जुरसबे ॥ लई वरसाने की गेल ॥ मन्मथ सेना सज मानो ॥ चले करनकों
 सेल ॥४॥ धरें अधर मुरली मोहन ॥ गावत गोरी राग ॥ वरसाने के निकट
 जाय ॥ प्रगटे प्रेम अनुराग ॥५॥ ग्वेडेंई बासर विते ॥ उदित भये राकेश ॥

मदन महोत्सव करनकों ॥ कीनों नगर प्रवेश ॥६॥ पोंहोंचे जाय समाजसों ॥
 वृषभान गोप की पोर ॥ सुनसुन श्रवणन ब्रजवधू ॥ आई देखन दोर ॥७॥
 बगर बगरतें जुरसबें ॥ टिके चोहोटें जाय ॥ सेना बेनी करतबे ॥ लीनों
 सुबल बुलाय ॥८॥ मोहनसों कही जायकें ॥ वदो वदनदे कोल ॥ जीतेसो
 कहा पावहीं ॥ वेगें बोलो बोल ॥९॥ सुन हस मोहन यों कह्यो ॥ हम हार
 अपनपों देहिं ॥ उत उडुगण में चंद्रमा ॥ हम जीतें तो लेहिं ॥१०॥ सुन
 ब्रज नारी मुदित तबे ॥ झंडा रोप्यो आय ॥ नायक सहित निसंक न्है ॥
 जीते सो ले जाय ॥११॥ तब बाजे बहुविध वजे ॥ डिम डिम ढोल मृदंग ॥
 वीणा जंत्र पिनाक ताल ॥ डफ महुवर मुखचंग ॥१२॥ ओरों अगणित
 बाजही ॥ वरण सके कवि कोन ॥ कोलाहल सुन ब्रजवधू रहीन कोऊ भोन
 ॥१३॥ रत्नजटित पिचकारी ले ॥ छिरकत गोपकुमार ॥ तमक तमक तरुणी
 तबे ॥ वंसनकीनी मार ॥१४॥ नवकुंकुम जल घोरकें ॥ युवती यूथमें जाय ॥
 जे यूथनमें नायका ॥ तिनके सिरदये नाय ॥१५॥ छूटत जोर जल जंत्रइते ॥
 लगे त्रियन उरजाय ॥ पंचबाण के बाणज्यों ॥ लगत उठत अकुलाय ॥१६॥
 तब युवती सब उमग कोपि ॥ देत गुलाल उडाय ॥ उतते उडत अबीर
 सघन ॥ गयो घुमड नभछाय ॥१७॥ रातकुहूकीयों लगे ॥ सघन घटाको
 लाग ॥ कमल वरण बादरनतें ॥ मानो वरखत अनुराग ॥१८॥ तब ललिता
 एक छलकियो ॥ कुसुम दामलेपानि ॥ मोहन कों पहराइकें ॥ हलधर पकरे
 आनि ॥१९॥ युवती वृंदमेंलें गई ॥ सबकी दृष्टिबचाय ॥ श्रीमुख मृगमद
 मांडकें ॥ चोवा अंग लगाय ॥२०॥ नयनन काजर आंजके ॥ मांगत फगुवा
 देहु ॥ जो तुम देनन पूजई ॥ मधुर बचन सुनलेहु ॥२१॥ मन भायो फगुवा
 दयो ॥ आये अपने खेत ॥ निरख सखा प्रमुदित भये ॥ सबे बलैया लेत
 ॥२२॥ चंद्रावलि ललिता तबे ॥ चली सबन देसयन ॥ रवक रंगीली
 राधिका ॥ गहे कमल दल नयन ॥२३॥ निरख सखी प्रमुदित भई ॥ सब
 आलिंगन देहिं ॥ सुफलम मनोरथ मानकें ॥ अधर सुधारस लेहिं ॥२४॥
 मृगमद साख जवादमेद ॥ एकत्र कर लेआय ॥ मोहन मुख लपटायकें ॥
 पुजवत मनके भाय ॥२५॥ हस चंद्रावलि यों कहे ॥ सुनो हमारी बात ॥
 अबजो हमारे वसपरे ॥ लेजु चलो एकांत ॥२६॥ तब ललिता भुजगहिलई ॥

गई कुंजके द्वार प्यारी पें पोहोंचायकें ॥ कीनों फिर सिंगार ॥२७॥ स्याम
 कंचुकी खुभिरही ॥ अरुकटि लहेंगा लाल ॥ तन सुख सारी अतिलसे ॥
 आंजे नयन विशाल ॥२८॥ आभूषण नख सिख सजे ॥ चले मत्त गजचाल ॥
 अपने वृंदमें जायमिली ॥ निरखि मोही बाल ॥२९॥ उतकी ओर अचरज
 भयो ॥ मोहनहूं मिले जाय ॥ दाऊकी छबि निरखकें ॥ ताडर रहे लुकाय
 ॥३०॥ आपस मांझ विचारमतो ॥ दीनों सुबल पठाय ॥ ललिता बुझी
 जायकें ॥ मोहन देहु बताय ॥३१॥ सुनत वचन बोली सवे ॥ सुनों सुबल
 सुबाहु ॥ हार अपनो हरिदयो ॥ हमहीं जीतले जाहु ॥३२॥ जुर आई सब
 ग्वालि तबें ॥ लगे करन मनुहार ॥ जीती हो जीती बधू ॥ हम सब मानीहार
 ॥३३॥ झंडाले सब ब्रज बधू ॥ फगुवा लियो निवेर ॥ ले बलाय तृण
 तोरहीं ॥ मोहन मुख तनहेर ॥३४॥ पट आभूषण पलटकें ॥ कीनों फिर
 सिंगार ॥ ले मुरली कटिपर धरें ॥ आये नंद कुमार ॥३५॥ स्याम समूह
 तरंगमें ॥ ब्रजपुर सकल झकोरि ॥ मांग विदा घरकोंचली ॥ श्रीवृषभान
 किशोरि ॥३६॥ तब सब गोपकुमार फिरे ॥ आये नंदजू की पौरि ॥ कनकथार
 मुक्ताभरे ॥ धर दीपावली जोरि ॥३७॥ आय उतारचो आरती ॥ मुदित
 यशोदा माय ॥ राईलोन उतारकें ॥ छतिया लये लगाय ॥३८॥ श्रीवल्लभ
 कृपा कटाक्षते ॥ यह अनुभव उरधार ॥ यह रस ब्रजजन मगन व्हे ॥ गाई
 सरस धमार ॥३९॥

३४  राग गौरी  मारग छांड अब देहु कमल नयन मनमोहना ॥
 कटिपट पीत सुहावनों ओर उपरेना लाल ॥ सीस मोरकी चंद्रिका चंचल
 नयन विशाल ॥१॥ कुंचित केश छबिबनी सुंदर चारु कपोल ॥ श्रुति मंडल
 कंचन मणी झलकत कुंडल लोल ॥२॥ मोहन भेष भलो बन्धों मृगमदितलक
 सुभाल ॥ अलक मधुप समराजही ओर मुक्ता बलिमाल ॥३॥ कुंज महल
 ते हों चली अपने गेह कों जात ॥ वनमें सोर न कीजिये सुंदर सामल
 गात ॥४॥ उरअंचल कित गहतहो दूरभये कहो बात ॥ अपने जियही विचारिये
 जोपरेकुहूकी रात ॥५॥ सांज परी दिनआंथयो अरुझाई किंहिं काम ॥
 संतमेंतक्यों पाइये पाके मीठे आम ॥६॥ नंदराय के लाडिले बोलत मीठे

बोल ॥ रहि होके जाय पुकारिहो नाकंचुकी बंद खोल ॥७॥ परमानंद प्रभु
यों रमी ज्यों दंपति रतिहेत ॥ सुरत समागम रस रह्यो नदी यमुना केरेत ॥८॥

३५ (॥१॥ राग गौरी (॥२॥) होरी अब हो हो हो हो होरी ॥ खेलत अति
रस रीत प्रगट भई इत हरि उतही राधिका गोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग
मुरज डफ विच मोहन मुरली ध्वनि थोरी ॥ गावत देदे गारि परस्पर ऊंचे
तान लेत त्रियगोरी ॥२॥ मृगमद साख जवाद कुंकुमा घनसार मलयमथ
घोरी ॥ भरत रंग राजत सुख सागर शीस उमग बेला भरढोरी ॥३॥ छूट
गई लोक लाज कुल सजनी गनतन गुरु गोपिन उतकोरी ॥ रही नमन
मर्याद अधिक सुख चोर भोर निकरत हैं चोरी ॥४॥ वरनीन जाय वचन
रचना रुचि यह छबि झकझोरा झकझोरी ॥ मदन द्वंद कल कुंज विराजत
सहचरी सकत गांठ गहिजोरी ॥५॥ उनपटपीत किये रंगराते इन कंचुकी
पीत रंगबोरी सूरदास सारदा सरल मतिसो यह नटन देख भई बौरी ॥६॥

३६ (॥१॥ राग गौरी (॥२॥) हरि संग खेलत सब फाग ॥ यह मिस प्रगट
करत गोपीजन अंतर को अनुराग ॥१॥ डफ और ताल बांसुरी महुवर बाजत
ताल मृदंग ॥ अति आनंद मनोहर बानी गावत उठत तरंग ॥२॥ पहरे सुरंग
भात चोली कस काजर दे दोऊ नयन ॥ बनबन निरख निकस टाडी भई
सुन माथो के वेन ॥३॥ ओर गोविंद ग्वाल संग एक ओर ब्रजनारी ॥ छांड
सकुच सब देत परस्पर अपनी भामती गारी ॥४॥ मिल दस पांच सखी
बलकृष्णहीं ले आवत चुचकाई ॥ भर अरगजा अबीर कनक घट देत सीसते
नाई ॥५॥ छिरकत साख जवाद कुंकुमा भुरकत वंदनधूर ॥ शोभित हे मानों
सांझ समें घन आए हैं जलपूर ॥६॥ दसहु दिशा भई परिपूरण सूर सुगंध
प्रमोद ॥ सुर विमान कौतूहल भूले देखत कृष्णविनोद ॥७॥

३७ (॥१॥ राग गौरी (॥२॥) मोहन जान न देहों ॥ लाल तेरी सुख की सोंज
सबलेहों ॥ मथ मथ सोंधो धरयो भवन में सो अंगन लपटेहूँ ॥ एनिज
संगी सखा तिहारे देखो अबे भजेहूँ ॥१॥ क्यों क्यों कर फागुना दिन आयो
करहूँ मनको भायो ॥ छांडो क्यों सुन छेल छबीले सूनी बाखर पायो ॥२॥

यह वागो अनरागोझीनों पाग रुचिर सुखदायक ॥ ताहीतें हों कहत रंगीले
 यह छिरकबे लायक ॥३॥ इतउत हेरत कहा लाडिले चलो गेहके महियां ॥
 सूधे सूधे कह्यो करोकिन नातर गहिहों वहियां ॥४॥ आज सबेरे हों उठबैठी
 कुचन कंचुकी दरकी ॥ ओर केसर घोरन में मेरी फरफर भुजद्वय फरकी
 ॥५॥ सोइ अब आन बनीं है प्यारे आगम अगम जनायो ॥ देहुन जान
 आजानी बहेहो यह मूरत निधि पायो ॥६॥ निपुण नागरी गुणन आगरी
 पीतांबर गहि लीनो ॥ भर अंकवारी कछुन बिचारी भरक द्वार तबदीनों
 ॥७॥ कछूक भेद श्रीदामा हू को नातर कहा बल इनको ॥ जित तित फिरत
 अकेलो ब्रजमें मिलनियां गोपिन को ॥८॥ भीतर भीतर करत भामतो सुनियत
 कछू किलकारी ॥ चित्र विचित्र झरोखा मोखा चलत निकर पिचकारी ॥९॥
 अबीर गुलाल घुमडमडहापर घुमड रही घुमडाई ॥ ऋतु वर्षा वर्षन को बदरी
 अरुण श्वेत बहे आई ॥१०॥ गोप वृंदमें हलधर ठाडे रोक रहीं निज गोरी ॥
 उपरतें कृष्णागर भरभर डारत कनक कमोरी ॥११॥ वरण वरण भये वसन
 रंगमगे तब दाऊ अकुलाये ॥ तक तब मन जो पाय उपायकें तोक अटा
 चढआये ॥१२॥ सुबल उतर धस गयो दोरके कमलनमार मचाई ॥ तिह
 अवसर सेना बेनी भई घरमें बहुत लुगाई ॥१३॥ तब अग्रज हस कहत
 भैयाहो कहा मतो अब कीजे ॥ दिये दरेर चलो यह खिरकी छूडाय स्याम
 कों लीजे ॥१४॥ भरभर पिचका फेंटन बंदन कूद परे सब ग्वाला ॥ युवति
 यूथ में युवति वैषधर राजत हे नंदलाला ॥१५॥ वसनगहे तबही करनबला
 चपला ज्यौ लपटाई ॥ पकर लये महाबली कहावत भेदत भेदत आंई ॥१६॥
 भेख रेख शोभा की सीमा कविपें वरणी न जाई ॥ मांड मांड सुख शिथल
 विथल कर भये एक सम भाई ॥१७॥ सब बैठकें वदन सुधारत एक चढ
 अटा निहारें ॥ सयनन में पुनटेरदेत हें अंचल हरि परवारें ॥१८॥ फगुवा
 देन कह्यो मन भायो मेवा बहुत मंगायो ॥ आगेई काज साज रही नीकें,
 आब लालन छिटकायो ॥१९॥ छीत स्वामी तिहिं अवसर को सुखः क्योंहुं
 कहत न आवे ॥ देखत बावा नंद उजागर गिरिधर वदन दुरावे ॥२०॥
 ३८ ॥ राग गौरी ॥ होरी खेलें गोरी गिरिधर संग हो हो लें रे ॥

ताल डफ बांसुरी उपंग मुख चंग बाजे गावति धमार बोलें रे ॥१॥ इत वृषभान की नंदिनी उत नंदलाल गोष वृंदसंग लिये डोलें रे ॥ लाज न बीच विचार बोलत मोद विनोद कोक बोली ठोली टकटोलें रे ॥२॥ कोजाने को काकी नारी को हे प्रीतम कोहे प्यारी रस बढ़यो अति भारी सो लेरे श्रुति सुखडार काट आरज कुल कोंडारि मिल माधो सो बजाई ढोलें रे ॥३॥

३९ (॥१॥ राग गौरी (॥१॥ राधा बनी रंग भरी रंग होरी खेलें अपने प्रीतम के संग ॥ एक पहलें ही रंगमगी ॥ पुनिभीने रंगरंग ॥१॥ रंग रंग की संग सहचरी ॥ बनी छबीली के साथ ॥ पहरे विविध बसन रंग रंग के ॥ रंग भरे भाजन हाथ ॥२॥ रंग रंग की कर पिचकाई शोभित एक समान मानो में न शिव पें सज्यो ॥ शोभित रूप कमान ॥३॥ काहूपें कुसुमन गूंथी छरी ॥ काहूपें नयेनये नोर काहूपें कुसुम गेंदुक चलें काहूपें न्यू तन मारे ॥४॥ काहू पे अरगजा रंग कोऊ ॥ काहूपें केसर कों रंग ॥ कोऊ गोरा मृगमद लियें ॥ होत भ्रमर जहाँ पंग ॥५॥ तिनमें मुकुट मणि लाडिली ॥ सोहत अति सुकुमार ॥ लटक चलत ज्यों पवनतें ॥ कोमल कचन डार ॥६॥ पिय कर पिचकाई देखकें ॥ त्रिय नयना छबिसों ढराय ॥ खंजन से मानो उडहि चलेगो ॥ ढरक मीन व्हे जाय ॥७॥ छिरकत पिय जब त्रियनकों ॥ जो मन उपजे आनंद ॥ मानो इंदु सुधाकर सींचत ॥ जो कुमुदिन को वृंद ॥८॥ भीजे बसन तनत न लपटानें ॥ वरणत वरणयो न जाय ॥ उपमा देनन देत नयन ॥ राखे हाहा खाय ॥९॥ रंग रंगीली राधिका ॥ रंग रंगीलो पीय ॥ यह रंगभीने नित्यबसो ॥ नंददास के हीय ॥१०॥

४० (॥१॥ राग गौरी (॥१॥ राधा रसिक कुंज विहारी ॥ खेलें फाग सब युवतीजन कहें हो हो होरी ॥१॥ भरत परस्पर काहूको काहून सुध एसें केसें मनहरत मोहन जोरी ॥ करसों करही जोर कर कटिसो कटिहां नारी नृत्यत कान काहू न सुध थोरी ॥२॥ हरिदासके स्वामीस्यामा कुंजविहारी फिरत न्यारी न्यारी ॥ सब सखियनकी दृष्टि बचावत तमकत तब थोरी ॥३॥

४१ (॥१॥ राग गौरी (॥१॥ हो हो हो हो होरी बोले ॥ गोरस कोरी मातो डोले ध्रु० ॥ ब्रज के लरकन संग लियें डोले ॥ घर घर केरीखिरका खोले ॥१॥

जो कोऊ डर पा जाय घर बैठे ॥ कर बरजोरि ताहीके पेटें ॥२॥ आय
अचानक अंखियां मीचे ॥ रूपसुधारस नयनन सींचे ॥३॥ गनत नाहि प्रमुदित
नरनारी ॥ वचत नाहिं बिनुदीयें गारी ॥४॥ कुंकुम की चमची अतिभारी ॥
उडि गुलाल अटेअटा अटटारी ॥५॥ अलका बलि शिथिल अतिराजत ॥
धावत मत्तगयंद लजावत ॥६॥ ब्रजमें डोलत भूल्यो भूल्यो ॥ भ्रमर उडे
मानो अंबुज फूल्यो ॥७॥ युवती जब मोहन गहि आने ॥ कुमुदिन मानो
भ्रमर लुभाने ॥८॥ तारी देय घेर जब लीनें ॥ क्यों छूटो बिन फगुवा दीनें
॥९॥ गुंजावलि मुक्तावलि टूटे ॥ पीतांबर गहनें दे छूटे ॥१०॥ सखी सखा
मिल खेलें होरी ॥ कहा वरनोंरी मोमति थोरी ॥११॥ निश वासर बाढ्यो
सुख सागर ॥ सूरदास प्रभु मोहन नागर ॥१२॥

४२ (११) राग गौरी (११) मानो ब्रजते करिणी चली ॥ मदमाती हो ॥ गिरिधर
गजपें जाय ग्वाल मदमाती हो ॥ कुल अंकुश मानें नहीं ॥ शृंखल वेद तुराय
॥१॥ अवगाहें यमुना नदी ॥ करत तरुणी जल केलि ॥ छल सों छिरकत
स्यामकों ॥ शृंड दंड भुज मेलि ॥२॥ नाग वेलि चरती फिरें ॥ मादिक
मध्य कपूर ॥ साख पटा श्रवणन वहे ॥ मंडित माग सिंदूर ॥३॥ कुचकुंभ
उर स्थल ऊपरें ॥ मुक्ताहाररुराय ॥ जनुजुगगिरि विच सुरसरी ॥ जुगल
प्रवाह बहाय ॥४॥ वृंदावन वीथन फिरें ॥ केस कला एजान अंचल पटवे
रखउडें ॥ घूघरू घंट समान ॥५॥ घूमत गल वैयांगहें ॥ लोक लाज त्यज
कान ॥ निकसत शंकन मानही ॥ प्राणएक पियजान ॥६॥ सन्मुख धावें
हुलसकें ॥ केलिकला हि निधान ॥ मानो महावत पेलिकें ॥ देतसुरत सुखदान
॥७॥ मानोकरीवकरेवनी ॥ घनदामिनि अनुहार ॥ कृष्णसहित क्रीडाकरें ॥
ब्रजपति ब्रजकीनार ॥८॥ होरी खेली न जाय मेरे नैनम में पिचकारी दई ॥

४३ (११) राग गौरी (११) मोय गारी दई, होरी खेली न जाय ॥१॥ क्योरे
लंगर लंगराई मोसों कीनी, केसर कीच कपोलनदीनी ले गुलाल ठाडो मृदु
मुसक्याय ॥२॥ ओचक कुचन कुमकुमा मारे, रंगसुरंग सीसतें ढारे यह
ऊधम सुनननदी रिस्याय ॥३॥ नेकन कान करत काऊकी, नजर दुरावत
बलदऊ की ॥ पन घटतें घरलों बतराय ॥४॥ फागुन के दिन दूनो अकडे,

सालिगराम कौन याहि पकड़े अंगलपट हंस हा हा खाय ॥५॥

४४ (११) राग गौरी (११) खेल फागु बन्यो ललना ब्रज सखा लिये नंद नंदना ॥ बंसी धरे कहेत हो होरी युवती जन मन फंदना ॥ घर घर तें सुन्दरि चली देखन बन आनंद कंदना ॥ बाजे ताल मृदंग झांझ डफ गावे गीत सुछंदना ॥ ठाँठाँ अगर अबीर लिये कर ठाँठाँ बूका बंदना ॥ हाथन धरें कनिक पिचकाई छिरकत चोवा चंदना ॥ क्रीड़ा रस सब भये मगन, मन मानत हृदय आनंदना ॥ दास चतुर्भुज प्रभु सुख निधि गिरिधर विहरनि कंदना ॥

४५ (११) राग गौरी (११) घर घर तें सुनि ग्वालि, स्याम मुख देखन आई ॥ निरखि स्याम ब्रज-नारि, हरषि सब निकट बुलाई ॥१॥ सुनत नारि मुसुकाई, बांस लीन्हे कर धाई ॥ ग्वालनि जेरी हाथ, गारि दै तियनि सुनाई ॥२॥ सीला नामक ग्वालि, अचानक गहे कन्हवाई ॥ सखिनि बुलावति टेरि, दौरि आवहु री माई ॥३॥ एक सुनत गई धाई, बीस तीसक तहें आई ॥ टुटि परीं चहुँ पास, घेरि लीन्ही बल भाई ॥४॥ इक पट लीन्ही छीनि, मुरलिया लई छिड़ाई ॥ लोचन काजर आँजि, भाँति-सौं गारी गाई ॥५॥ जबहिं स्याम अकुलात, गहति गाढ़ें उर लाई ॥ चंद्रावलि सौं कह्यौ, गूँथि कच, सौंह दिवाई ॥६॥ हा हा करियै लाल, कुंवरि के पाँई छुवाई ॥ यह सुख देखत नैन, सूर जन बलि-बलि जाई ॥७॥

४६ (११) राग गौरी (११) चकित भई हरि की चतुराई ॥ हमहिं छली इन कुंवर कन्हवाई ॥ कहा ठगौरी देखत लाई ॥ धिर वति हैं कहि, भली बनाई ॥ एक सखी हलधर-बपु काछी ॥ चली नील पर ओढे आछी ॥ स्याम मिलन ताकीं तहं आए ॥ अग्रज-कानि चले अतुराये ॥ मिले सांकरी ब्रज की खोरी ॥ ठुकी रहीं जहें-तहें दोऊ गौरी ॥ गह्यौ धाई, भुज दोऊ लपटानी ॥ दौरि परीं सब सखी सयानी ॥ निरखि-निरखि तरुनी मुसुकानीं ॥ एक निलज, इक रही लजानीं ॥ कहा रही करि सकुच दिवानी ॥ अब इनकी जनि राखौ कानी ॥ नारि गारि सब देहिं सुहानी ॥ नंद महरलों जाति बखानी ॥ उतरयौ, सूर, स्याम-मुख-पानी ॥ गइँ लिवाई जहें राधा रानी ॥

४७ (॥१॥) राग गौरी (॥१॥) चलौ सकल मिलि खेलिये ! नंदा के द्वार ॥ खेलत फागु गोपाल ॥ रितु बसंत बन गहगह्यौ ॥ प्रफुलित ताल तमाल ॥ नंदा० ॥ अति सुंदर ब्रज-भामिनी ॥ आई भई इक ठौर ॥ नव-जोवन वृषभानुजा ॥ सखि-गन नवल किसोर ॥ नंदा० ॥ ढोल-दमामा बाजहीं ॥ श्री-मंडल मुख चंग ॥ मुरज रुंज डफ दुंदुभी ॥ बीना बेनु उपंग ॥ नंदा० ॥ गौ-मुख भेरी बाजहीं ॥ झालर झाँझ मृदंग ॥ घोर निसान गगन-धुनी ॥ ब्रज-जनि लावहिं रंग ॥ नंद० ॥ चोबा चंदन अरगजा ॥ बहु विधि मलय सुगंध ॥ दै-दै तारी कंठ लावहीं ॥ आलिंगन भुज-बंध ॥ नंद० ॥ नौतन केसरि घसि घोरी ॥ कुमकुम रस-सुख-सार ॥ छुटी पिचकाई जित -तितै ॥ लागत ह्रदै-मंझार ॥ नंदा० ॥ तनसुख सारी लपटि रही ॥ सकति न अंग संभाल ॥ बूका बंदन उडि रह्यौ ॥ दुहुं दिसि अरुन गुलाल ॥ नंदा० ॥ नव सर माला गूंथि के ॥ जाई जूई बेलि ॥ पुलकि प्रेम पहिरावहीं ॥ आनंद की झकझेलि ॥ नंदा० ॥ नंदनंदन ब्रज-नाईका ॥ भूतल करहिं अनंद ॥ गारी परस्पर गावहीं ॥ नाचहिं आपु सुछंद ॥ नंदा० ॥ राग-भोग-रस पूरिता ॥ मुख-कर बीरा-पान ॥ जन 'परमानंद' बलि बली ॥ चरन-सरन भगवान ॥ नंदा० ॥

४८ (॥१॥) राग गौरी (॥१॥) जमुना तट नंद नंदन, बिहरत सब सखा संग, पाग रंग मच्यौ, सरस गौरी राग गावे ॥ सप्त सुरसौं तान मान, अद्भुत रूप ताल लिए, अधर धरे मधुरे मधुरे बैन हु बजावै ॥१॥ बाजत चंग मृदंग ताल, उडावत अबीर गुलाल, मृगमद बहु सुगंध सानि सबनि के अंग लावै ॥ उमग्यौ प्रेम सिंधु अपार, निरखि थकित सुर विमान गिरिधर पद पद्म रेनु, 'सुघरराय' पावै ॥२॥

४९ (॥१॥) राग गौरी (॥१॥) देखत श्री वृंदावन मोहन अति-अभिराम ॥ आयौ मधु-ऋतु सेबन तुम हि हरखि घनस्याम ॥१॥ आपुन बिबिधि संवारि तरु संपति ब्रजनाथ ॥ बीथिनि सकल बिलोकति प्रान-पिया के साथ ॥२॥ पहिलैं असित पलायनि पुनि किलकि अरुनात ॥ मानहु घूंमत बिषम सरानल कमल जरात ॥३॥ जित तित सत बगरन के कुसुम वृंद बिकसात ॥ मनहु दिस

पूरित तब ब्रज सो उमगी न मात ॥४॥ बिगलित कुसुम समूह आकासन
 अरुन रंग ॥ मानहुं प्रगटित बिहरति अनुराग उमंग ॥५॥ हरित दलनि मोर
 नूतनु मंजुरी पवन डुलात ॥ मानहुं घन में प्रगटित चपला दुरि दुरि जात
 ॥६॥ प्रगटि तरु लपटी रही नव पल्लव कोमल-बेलि ॥ आनति मनसि
 तिहारी श्री राधा अलिंगन केलि ॥७॥ माते फिरत मिलि मुख डारत मधु
 कृत लोल ॥ मानहुं जे कुंडी लै मदन पतंगज टोल ॥८॥ नव निकुंज सदन
 पै कोकिल पिय-सन-गान ॥ मानहुं काम संदेसनि मैटति मानिनि मान ॥९॥
 औरु कहाँ लगि बरनौ मन में रहति बिचारि ॥ तब सुख देति यहै वन
 के राधा बर नारि ॥१०॥ सुनि बिनति ब्रिंदाबन की अपने हैं अनुराग ॥
 चले मुदित यौं फागु हरि तिहिं चितयौ अनुरागु ॥११॥ नागरि सहित बीच
 हरि इत उत जुबति समाज ॥ मानहुं उडुगन मंडित जुबति सहित द्विजराज
 ॥१२॥ ताल मृदंग ढफ नंद ललनां गाबति समेत ॥ बिच बिच बर मुरली
 रब खग पसु बन सुख देत ॥१३॥ रबकत हंसत परसपर छिरकत कुंमकुंम
 नीर ॥ मानौ अंतर रसभने उमंगि चुचाने चीर ॥१४॥ सांवल कर भै भौमिनि
 मुख झपजि पट मीन ॥ मानहुं राहु उडुगन तें बिकल जल मही छीन ॥१५॥
 नागरि पिय मुख चंदन लै पति उदित मनोज ॥ मानहुं कनक कमल लै
 मरदत नील-सरोज ॥१६॥ बंदन जुबति उड़ायौ राजति मुख जुत हास ॥
 मनहुं नव आतप महि बिकसित कमल बिकास ॥१७॥ नांद अति कटि किंकिनी
 बाजत पद मंजीर ॥ धुनि सुनि पुनि पुनि बोलत हंस तरनिजा तीर ॥१८॥
 एसै सब बन बिहरत तन मन अति ही फूल ॥ आनंद अति रति बाढ़ी नाखी
 सुधि बुधि भूल ॥१९॥ देखौ खेलत श्री राधा रस-निधि नंद कुमार ॥
 'कृष्णदास' हित नित हि चित में रहौ बिहार ॥२०॥

५० (॥ राग गौरी ॥) प्रथम यथा मति श्री प्रणमु ब्रिंदाबन अति रम्य ॥
 श्री राधिके कृपा बिनु सब के मन अगम्य ॥१॥ बर जमुना चल सींचन
 दीन हि सरद बसंत ॥ बिबिध भांति कुसुमन सखी सौरभ अलि कुल मंत
 ॥२॥ अरुन नूत पल्लव पै कूजत कोकिल कीर ॥ निरत करत सखी अलि
 कुल अति आनंदित धीर ॥३॥ बहत पवन रुचिदाइक सीतल मंद सुगंध ॥

अरुन नील सित मुकुलित जहँ तहँ पुष्पन बंध ॥४॥ अति कमनिय बिराजत
 मंजुल नवल निकुंज ॥ सेवती सघनता जुत दिनमनि हे द्विज पुंज ॥५॥
 रस की रास तहँ खेले स्यामा स्याम किसोर ॥ उभै बाहु परिरंभन, उठे
 उनीदे भोर ॥६॥ नवल बसंत कामिनी तन, कंचुकी कुसुम सुरंग ॥ कनक
 कपिस पट सोहत सुभग साँवरे अंग ॥७॥ ताल रबाब मुरज ढफ बाजत
 मधुरे मृदंग ॥ सरस उक्त गति सूचत वर बांसुरी मुख चंग ॥८॥ दोऊ
 मिलि चांचरि गावति गौरी राग अलापि ॥ मनु सर मृग बल बेधति भ्रुकुटी
 धनुष दृग चापि ॥९॥ रसिकलाल मेलति पै कामिनि बंदन भूरि ॥ पिय
 पिचकाईन छिरकति अगर कुंमकुमा धूरि ॥१०॥ तारिन दोऊ कर पटकति
 लटकति इत उत जात ॥ हो हो होरी बोलति अति आनंद अकुलात ॥११॥
 कबहुँक चंदन तरु तर निरमित तरल हिंडोल ॥ चढ़ि दोऊ जन झुलति
 फूलति करति कलोल ॥१२॥ बर हिंडोर झकोरति कामिनि अधिक डरात ॥
 पुलकि पुलकि है पति अंग प्रीतम उर लपटाति ॥१३॥ हित चित बनी
 चित चोरत उर आनंद न समात ॥ निरखि नैननि सुख तृन तोरत बलि
 जात ॥१४॥ अति उदार सुंदर बर सुरति सरस कुमार ॥ 'हित हरिबंस'
 करहुँ दिन दोऊ मिलि अचल बिहार ॥१५॥

५१ ॥ राग गौरी ॥ बोली मदन गुपाल जू ॥ सुनि मानिनि ॥ जिन
 करि ऐसौ सयाँन ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ आयो सरस बसंत सुनि ॥ रब्बो
 न काहु को मान ॥ आरी सुनि मानिनि ॥१॥ उत्तरि गृह नीकें घर चलयौ ॥
 अरी सुनि मानिनि ॥ संदर दिन-मनि-पीय ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ छांडे
 कछु इक मान जन ॥ सुनि मानिनि ॥ दच्छन ताछिन तीय ॥ अरी सुनि
 मानिनि ॥२॥ मलय पवन की आजु हीं ॥ सुनि मानिनि ॥ है गई ताती
 बास ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ जनु दच्छिन दिस बिरहनी ॥ सुनि मानिनि ॥
 लीनीं उसास ॥ अरी सुनि मानिनि ॥३॥ जिहि इहि बेलिन माँन छाँडि ॥
 सुनि मानिनि ॥ उलही आनि कै पेट ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ नाइक द्रुम
 के कंठ सों ॥ सुनि मानिनि ॥ कैसें गई है लपेट ॥ अरी सुनि मानिनि

॥४॥ काम गई रजनी भई ॥ सुनि मानिनि ॥ गई रवि मंडल छाई ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ थिर चर ए सब रहसि कैं ॥ सुनि मानिनि ॥ मिली पियनि सौं जाई ॥ अरी सुनि मानिनि ॥५॥ वह सुनि कानन कांन दे ॥ सुनि मानिनि ॥ कोकिल की कुहुं कांनि ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ आनि मनौं रत राज कौ ॥ सुनि मानिनि ॥ बज्यौ सीस पै निसांनि ॥ अरी सुनि मानिनि ॥६॥ कूजे कल कोकिला ॥ सुनि मानिनि ॥ कोमल कंठ सुजान ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ अटनि चढ़ी मानों मधु बधू ॥ सुनि मानिनि ॥ करति परसपर बात ॥ अरी सुनि मानिनि ॥७॥ और बिहंगम रंग भरे ॥ सुनि मानिनि ॥ करत कुलाहल भारे ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ मनु मनमथ कुंजर छूटे ॥ सुनि मानिनि ॥ सौ परचौ बिधु-पुर सौर ॥ अरी सुनि मानिनि ॥८॥ डार डार मिलि मधुप पुंज ॥ सुनि मानिनि ॥ गुंजत सोरभ बाई ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ मनौं रति की गति जानि कै ॥ अरि सुनि मानिनि ॥ नूपुर बाजति पाँई ॥ अरि सुनि मानिनि ॥९॥ त्रिगुन पवन चंचल तुरंग ॥ सुनि मानिनि चढ़्यो तिहि राज विदेह ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ उड़ी जु पुहुप पराग तहां ॥ सुनि मानिनि ॥ उड़ी माँनों खुर खेह ॥ अरी सुनि मानिनि ॥१०॥ खग बंदी जन बदत बिरद ॥ सुनि मानिनि ॥ मदन जहां सिरमौर ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ तिन में कपटी कहत मानों ॥ सुनि मानिनि ॥ एकै तू नहि और ॥ अरी सुनि मानिनि ॥११॥ कुसुम सरासन कर धरें ॥ सुनि मानिनि ॥ खरे बिष भरे बाँन ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ कौ सहि है तीछन खरे ॥ सुनि मानिनि ॥ चढ़े चंद खरसान ॥ अरी सुनि मानिनि ॥१२॥ ब्रिंदावन मिलि रम्य भयौ ॥ सुनि मानिनि ॥ नव कुसुमाकर चारुं ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ ज्यों कुच मंडल जुबति के ॥ सुनि मानिनि ॥ मंडित मंजुल हारु ॥ अरी सुनि मानिनि ॥१३॥ तरुन मुकट मनि बाल तू और तो बिनु रह्यौ न जाई ॥ सुनि मानिनि ॥ लाल रसिक मनिराइ ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ कीजे सुफल बसंत में ॥ सुनि मानिनि ॥ 'नंददास' बलि जाई ॥ अरी सुनि मानिनि ॥१४॥

५२ ॥ राग गौरी ॥ सकल सखी मिलि आद्रहु नख सिख भेख बनाई ॥ इहि औसर देखन नंद के ग्रह मोहन राइ ॥१॥ नंद गांव नव मन्दिर सुंदर

सिखरि सुद्धार ॥ मंगल कलस बिराजत, उपर मुक्ता हार ॥२॥ सकल
साज की सौंज ही ले आइ सुकुमारी ॥ चोवा चंदन छिरकति मोहन बदन
निहारी ॥३॥ मृदु बोलनि मुसिकावनि हाथन कुंमकुम बारी ॥ जाल रंध्र
छाजन चढ़े गावति मीठी गारी ॥४॥ ताल, मृदंग, उपंग, चंग, मुरली बहु
मोल ॥ महुवरि झांझ झालरी बाजति दुंदुभि ढोल ॥५॥ झख करदम की
कीच मची खेलति अब नंदलाल ॥ 'आसकरन' प्रभु मोहन ललितादिक
गुपाल ॥६॥

५३ (ह्रस्व) राग गौरी (ह्रस्व) होरी खेलति डोलति सांवरो ढोटा नंद को लाल ॥
कैसें कै जाऊँ भरनि जमुना जल परचौ री रहति मेरे ख्याल ॥१॥ अरी
यह लंगर मोहि ढिंग आई हेरि हंसि तोरी मोतिनमाल ॥ हौं सकुचाई रही
मुख चितवति परसि भज्यौ दोऊ गाल ॥२॥ अरी बे सनमुख होई पिचकारी
छोड़ै डारे सुरंग गुलाल ॥ औचका आई भेटि मुख में निज मुख दीनों
उगाल ॥३॥ अरी बे तब तैं मोहि चटपटि लागी परी प्रेम कै जाल ॥ जो
तू हितू हमारी मिलाई 'रसिक' गुपाल ॥४॥

५४ (ह्रस्व) राग गौरी (ह्रस्व) होरी खेलनि को चले ॥ रंग भीने हो ॥ सुंदर
मदन गुपाल ॥ लाल रंग भीने हो ॥ आगें दै बलबीर ॥ करति कुलाहल
ग्वाल ॥ लाल॥१॥ बाजे बहु विधि बाज हीं ॥ जंत्र पखाबज ताल ॥
रुंज मुरज ढफ दुंदुभि ॥ बिच बिच बैनु रसाल ॥२॥ सबन सुनति सब
ब्रज बधू ॥ घर घर तैं उठि धाई ॥ मुख्य जु राधा लाड़िली ॥ गावति
गारि सुहाई ॥३॥ सनमुख आबैं हुलसि कै ॥ केसर भरि पिचकाई ॥
प्राण पिया कौ छिरकि हीं ॥ बद मोरि मुसिकाई ॥४॥ जुवती जूथ पै छरकि
हीं ॥ सुरंग गुलाल अबीर ॥ चौंक परें सब खेलि हीं ॥ भरति परसपर
भीर ॥५॥ हो हो होरी बोलि हीं ॥ नांचे दै कर तारि ॥ चहुं दिस तैं बे
छिरकि हीं ॥ करि जु अरगजा वारि ॥६॥ तब ललिता चंद्रावली ॥ गहि
लीनें घनस्याम ॥ नैन आँजि मुख मांडि कै ॥ झटकति गहि बन दाम ॥७॥
लै उठाइ भरि अंक में ॥ प्रेम आलिंगन देहि ॥ एक अधर रस घूंट ही ॥
एक जु चुंबन लेहि ॥८॥ एक जु पान खवाव हीं ॥ एक जु लेहि उगार ॥

भुज भरि राखैं पीय कौं ॥ हा हा खाहु कुमार ॥९॥ हंसि हंसि चिबुक
उठाव हीं ॥ दुलरी लीनी खोल ॥ कै बल छूटो आपुनी ॥ कै ब्रजराजें
बोल ॥१०॥ यों गिरिधर संग खेलि हीं ॥ बाढ्यौ उर आनंद ॥ हेरें नेन
चकोर ज्यों ॥ पिय मुख पूरन चंद ॥११॥ मन भायो फगुवा लियो ॥ अंबर
मोतिन माल ॥ बारैं सरबसु वारनैं ॥ बलि-बलि “दास” गुपाल ॥१२॥

५५ (११) राग गौरी (११) आओ मिल ब्रजकी नारी होरी धूम मचाओ ॥
चंदन बंदन कुमकुम ले मोहन मुख लगाओ तारी दे गारी गाओ ॥१॥ केसर-
केसर कनक पिचकारी भरि ले करन धाओ ॥ हरि किसोरी सन्मुख होय
धारसों धार मिलाओ ॥२॥

५६ (११) राग गौरी (११) प्रथम ही होरी खेल ही ब्रजलीला हो ॥ संतनके
मन भाय लाल ब्रजलीला हो ॥१॥ कामिनी काम प्रवेशही ब्रज० सब भामिनी
मिलि गाय लाल० ॥२॥ मरुली महुवर डफ बाजही ब्रज० चर्चरी सरस
धमार लाल० ॥३॥ इत राधाजू विराजही ब्रज० सब भामिनी सिरमोर लाल०
॥४॥ राधा गहत पिचकाइयाँ ब्रज० छिरकत साँवल गात लाल० ॥५॥
गोपीनाथ झोरी भरे ब्रज० चंदन कपूर बरास लाल० ॥६॥ कासमीर भर
नीरसों ब्रज० खेलत स्यामा स्याम लाल० ॥७॥ छरियन मार मचावही
ब्रज० सरके मदनगोपाल लाल० ॥८॥ ग्वालिन ग्वाल सबै हँसे ब्रज०
मोहन नेन विसाल लाल० ॥९॥ इत राधा उत साँवरो ब्रज० परिरंभनकी
आस लाल० ॥१०॥ नंदजसोदा देखही ब्रज० नैन करत सुखपान लाल०
॥११॥ वारि कुँवर पर नंदरानी ब्रज० देत विप्रन बहु दान लाल० ॥१२॥
सारद सुन भोरी भई ब्रज० कहा बरने रामदास लाल० ॥१३॥

५७ (११) राग गौरी (११) बोलत मदन गोपाल लाल सुन मानिनी ॥ जिनि
करो एतो मान आये सुन मानिनी ॥ आयो सरस वसन्त समय सुन माननी ॥
रह्यो काहुको मान आये सुन मानिनी ॥१॥ उतर धरनिमें घर चल्यो सुन०
सुंदर दिनमनि पिय आये सुन० छाड कछु इक मान जानि सुन० दछिन
बिच छिन तीय आये सुन० ॥२॥ मलयपवनकी आजुही सुन० व्है गई

ताती वाय सुन०। जानु दछिन दिस विरहिनी सुन०। लीनो विरह उसास सुन० ॥३॥ वह सुन कानन कान दे सुन०। कोकिलकी कुहूकानि सुन०। आनक मानो ऋतुराजको सुन०। सिर पर बाज्यो आन सुन० ॥४॥ जिहि डर वल्लिन मान छाँड सुन। उलही आनिके पेट सुन०। नायक दुमन कंतसों सुन०। कैसे गई है लपेट सुन० ॥५॥ साम गई रजनी भइ सुन०। गई रविमंडल छाई सुन०। थिरचर ये सब रहसिके सुन०। मिलि पियनिसों जाई सुन० ॥६॥ ठोर-ठोर मिलि मधुप पुंज सुन०। गुंजे सौर मचाई सुन०। मानो विहरत मधुप छबि बधु सुन०। नूपुर जु बाजत पाई सुन० ॥७॥ मिल कुंजहि किल कोकिला सुन०। कोमल कंठ सुजाति सुन०। अटन चढ़ि मानो मधु बधु सुन०। करत परस्पर बाति सुन० ॥८॥ मोर विहंगम रंगभरे सुन०। करत कुलाहल भोर सुन०। मानो मन्मथ कुँवर छूट्यो सुन०। पर्यो मधु नगरी सोर सुन० ॥९॥ त्रिगुन पवन चंचल तुरंग सुन०। चढ्यो तिहिं राज विदेह सुन०। उडी जु पोहोपवन राजत सुन०। बढी मानो खुर खेह सुन० ॥१०॥ खग बंदीजन बंदत बिरद सुन०। मदन जहाँ सिरमौर सुन०। तिनमें कपटी कहत मानों सु०। एके तू नहीं और सुन० ॥११॥ कुसुम सरासन कर धरे सुन०। विषमें विष भरे बान सुन०। को सहिहे तिछन खरे सुन०। चढे चंद खरसान सुन० ॥१२॥ वृन्दावन मिलि रस भयो सुन०। नव कुमुमाकर चारु सुन०। ज्यों कुचमंडल जुवतिके सुन०। मंडित मंजुल हारु सुन० ॥१३॥ तरुनी मुकुटमनि बाल तू सुन०। लाल रसिकमनि राय सुन०। कीजिये सुफल वसन्त मम सुन०। नंददास बलि जाय सुन० ॥१४॥

५८ ॥ राग गौरी ॥ ठगत जुवतीजन कान्ह ठग माईरी ॥ डारत सिर चितवन भुरकी महा ठग माई री ॥१॥ खेलत हौंसी फाँसी मेलि ठग०। ले मुरली मंतर सुनाई महा० ॥२॥ बीरी मोहि खवाई ठग०। मानिनी मानि सिंगारि महा० ॥३॥ चौँचर चेटक लाइ ठग०। निंदित नंद-सुवन कही महा० ॥४॥ सखा सर्व बुलाई ठग०। तित ही ठाडो जित जाई महा० ॥५॥ बगर बगर ब्रज डगर डगर ठग०। टगर टगर टेरे गाय महा० ॥६॥ चरन लकुटी लपटाय ठग०। हम इनको न पताय महा० ॥७॥ तबही और किसोर भोर

ठग०। होत न छिन प्यारो न्यारो महा० ॥८॥ दग तारा सुख देन ठग०।
गोविन्द प्रभु संग उठि धाये महा० ॥९॥

५९ (हठी राग गौरी) ठाढ़ो हो ब्रज-खोरी ढोटा कौन कौ ॥ लटिहि
त्रिभंगी इक पद (री) मनमथ-गौन कौ ॥ मोर मुकित कछनी कसे (री)
पीतांबर कटि-सोभ ॥ नेन चलावै फेरिकै (री) निरखि होत मन लोभ ॥
भौंह मरोरै मटकिकै (री) रोकत जमुना-घाट ॥ चितै मंद मुसुकाइकै (री)
जिय करि लेई उचाट ॥ हँसत दसन चमकाइकै (री) चकचौंधी-सी होति ॥
बग-पंकति नव जलद में (री) उर माला गज मोति ॥ पिचकारी रतननि-
जरित (री) तकि-तकि छिरकत अंग ॥ टेसू कुसुम निचोइकै (री) अरु
केसरिकौ रंग ॥ फेंट गुलाल भराइकै (री) डारत नैननि ताकि ॥ एतेपे
मन हरत है (री) कहा कहीं गति वाकि ॥ पुनि हो हो करि मिलत है (री)
नाना रंग बनाई ॥ नंद-सुवन के रूपपै (री) सूरदास बलि जाई ॥

राग - श्री हठी

१ (हठी राग - श्री हठी) ब्रज जुवतीं नागरि राधा पै, मिलि मोहन
ले आई ॥ लोचन आंजि, भाल बेंदी दै, पुनि-पुनि पाई पराई ॥ बेनी गूँथि,
मांग सिर पारी, बधू-बधू कहि गाई ॥ प्यारी हँसति देखि मोहन-मुख, जुवतीं
बने बनाई ॥ स्याम अंग कुसुंभी नइ सारी, अपनै कर पहिराई ॥ कोऊ
भुज गहति, कहति कछु कोऊ, कोऊ गहि चिबुक उठाई ॥ एक अधर गहि
सुभग अंगुरियनि, बोलत नहीं कन्हाई ॥ नीलांबर गहि खूंट चूनरी, हाँसि-
हँसि गाँठि जुराई ॥ जुवती हँसति देति कर तारी, भई स्याम ! मन भाई ॥
कनक-कलस अरगजा घोरि कै, हरिके सिर ढरकाई ॥ नंद सुनत, हँस
महरि पठाई, जसुमति धाई आई ॥ पट-मेवा दै स्याम छुड़ायो, सूरदास
बलि जाई ॥

२ (हठी राग - श्री हठी) आजु सखी तेरें आवेंगे, हरि खेलन कों
फाग री ॥ सगुन सँदेश सुन्यौ हौ तेरें आंगन बोले काग री ॥ मनमोहन
तेरे बस माई ॥ सुनि राधे बड़भाग री ॥ बाजत ताल, मृदंग, झांझ, डफ,

का सोवै, उठि जाग री ॥ चोवा चंदन लै कुमकुम अरु केसरि, पैयाँ लाग री ॥ सूरदास प्रभु तिहारे दरसन, आवत अचल सुहाग री ॥

३ (१५१) राग - श्री हठी (१५१) स्याम-संग खेलन चलि स्यामा सब सखियन कौं जोरि ॥ चंदन अगर कुमकुमा केसरि, बहु कंचन-घट घोरि ॥ उड़त गुलाल अबीर कुमकुमा, छबि छाई जनु साँझ ॥ नाहीं दृष्टि परत राधा-मुख, चंद निलंबर-मांझ ॥ खेलि फाग अनुराग बढ़ायौ घर, मची अरगजा-कीच ॥ ब्रज-बनिता कुमुदिनि-सी फूलीं, हरि-ससि राजत बीच ॥ अष्ट सिद्धि, नव निधि ब्रज बीथिनि, डोलत घर-घर बार ॥ सदा बसंत वृंदावन, लता-लता द्रुम डार । देखि-देखि सोभा-सुख-संपति, जिय में करति बिचार ॥ ब्रज बनिता हम क्यों न भई, यौ कहति सकल सुर-नार ॥ फाग खेलि अनुराग बढ़ायौ सबकें मन आनंद । चले जमुन अस्नान करन कौं, सखा, सखी, नंद-नंद ॥ दुष्टनि दुःख, संतनि-सुख-कारन, ब्रज-लीला अवतार ॥ जै जै ध्वनि सुमननि सुर बरषत, निरखत स्याम-बिहार ॥ जुगल-किशोर-चरन-रज मांगीं, गाऊँ सरस धमारि ॥ श्री राधा गिरिवर-धर-ऊपर सूरदास बलिहारी ॥

४ (१५१) राग - श्री हठी (१५१) हरि-संग खेलन फागु चलीं री ॥ चोवा, चंदन, अगरु, अरगजा, छिरकति नगर चलीं री ॥ राती पीरी अंगिया पहिरे, नव तन झूमक सारी ॥ मुख तमोर, नैननि भरि काजर, देहिं भावती गारी ॥ रितु बसंत आगम रतिनायक, जोबन-भार-भरी री ॥ देखत रूप मदन-मोहन कौ, नंद-दुवार खरीं री ॥ कहि न जाई गोकुल की महिमा, घर-घर बीथिनि-माहीं । सूरदास सो क्यों करि बरनै, जो सुख तिहु पुर नाहीं ॥

५ (१५१) राग - श्री हठी (१५१) खेलति फागु फिरति रस फूलै ॥ स्यामा स्याम प्रेम बस नाँचति गावति सरस हिंडोरे झूलै ॥१॥ ब्रिंदावन की जीबनि दोऊ नट नागर बंसीबट मूलै ॥ “व्यास स्वामिनि” की छबि निरखति नैन कुरंग फिरति रस भूलै ॥२॥

धमार पंथजी लाल के पद



१ (१५) राग - गौरी (१५) नागर नंद दा मैनु दे दे जाँदाँ गालियाँ । बोलीयाँ ठोलीयाँ कहि-कहि होलीयाँ गावदाँ दे दे तालियाँ । तकु दा फरदाँ सुघर सलौनियाँ सोहनी खेलनि बालियाँ ॥ लखि ललचाई लबंद लाबंदौ ॥ चोली दे पिचकारियाँ ॥२॥ सानू अतर अंडियाँ बडियाँ चाखियाँ रति तालियाँ ॥ दिल डसि लेडियाँ सितम करेदियाँ जालिम जुल्फें कालियाँ ॥३॥ मैने दी फौजे-बिच लावेदियाँ भौहें दे चल चालियाँ ॥ रसिक सखी सौं हँसा मुख चुख लखि अखियाँ हों दी सुखालियाँ ॥४॥



२ (१५) राग - काफी (१५) ए रंगीला रंग डारि के कित जादाँ ॥ धु० ॥ दुरि-आंदाँ तनक छिप-जादाँ तो चोर कहादाँ ॥ जब जानौं जसुमति के ढोटा सनमुख दरस दिखादाँ ॥१॥ गारी गादाँ घेरि मिलांदाँ लरिकन कौं सिखलांदाँ ॥ भलै भए तुम सुघर सयाने ब्रज में लोग हँसादाँ ॥२॥ पकरंगा तेरी पगिया रँग हो तब तो कौन छुड़ादाँ ॥ निरलज निपट लाल लंगरवा सो सो सोगंद खादाँ ॥३॥ चोवा चंदन औरु अरगजा रोरी रँग मिलांदाँ ॥ आजु सखी 'हरि दास' के ठाकुर इह बिधि धूम मचांदाँ ॥४॥

३ (१५) राग - बिहाग (१५) होरी दे ख्याल बिच यह क्याकीता ॥ मेनूल-गाय छरी फूलोंदी सिरदा घूँघट खोल बेलीता ॥१॥ पथां गुलाल आंखों बिचमेंडी देखनदासुख छीताबेछीता ॥ सखी देखेंदी लाजमरोंदी चुंबन गालोंदीता ॥२॥ ऐसी न कीजे निगडनंदे कहेलांदा ब्रज जनदा मीता ॥ रसिक प्रीतम नाल हा हा खांदी हों हारी तू जीता वे जीता ॥३॥



४ (१५) राग - बिहाग (१५) होरी खेलत कुमार कन्हाई ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा धरणी कीच मचाई ॥१॥ अबीर गुलाल उड़ाय ललितादिक शोभा वरणी न जाई ॥ अरस परस छिरके चु स्याम को केसरि भरी पिचकाई ॥२॥ नख सिख अंग परम रूप माधुरी भूषण वसन बनाई ॥ गिरिवरधर की यह छबी निरखत कुभनदास बलि जाई ॥३॥

धमार के पद राग - हमीर



१  राग हमीर  होरि खेलति हे नंदलाल ॥ इत सब सखा मंडली राजति उत समूह ब्रज बाल ॥१॥ बाजति सरस मृदंग ढोल ढफ बीना बैनुं उपंग ताल ॥ छिरकति कुँमकुमा और अरगजा उड़ति अबीर गुलाल ॥२॥ गावति गारि मगन भई गोपी मीठी परम रसाल ॥ फगुवा मिसि गिरिधर गहि आने लीनीं और बनमाल ॥३॥ रस बस भई सकल ब्रज बनिता अंग न कछु सँभाल ॥ 'गोविंद प्रभु पिय की बलिहारी अंबुज बदन रसाल ॥४॥



२  राग हमीर  खेलन आये हरि नंदगामतें रंग भीने बरसाने ॥ मृगमद मेद अरगजा चोवा सब नारी नरसाने ॥१॥ दृग ढिंग छांड भांड केसर मुख रिझत सुख सरसाने ॥ बिन कारज कारज कर राखे शोभित चख अरसाने ॥२॥ सोई अंजन विष ईशद लोचन करे मदन खरसाने ॥ 'कृष्णजीवन' लछीराम के प्रभु माई खेल लखजीये जलधर वाने ॥३॥



धमार के पद राग - कल्याण

१  राग कल्याण  नवल कुंवर ब्रजराय के लाल खेलत रस भरे होरी हो ॥ गौर स्याम तन राजहीं ओर बल मोहनकी जोरी हो ॥१॥ ऊँचे चढ जबटेरिया सुबल श्रीदामा भाई ॥ श्रवण सुनत सब धाईयो ओर बोलत कुंवर कन्हवाई ॥२॥ मंदिर ते सब सज चले जाय जुरे सिंघपोरी ॥ मोहन-मुरली बजाईयो सुनत ब्रज बधू दोरी ॥३॥ चहुंदिशते बाजे बजे रंज मुरजडफ ताल ॥ दुंदुभी डिमडिम झालरी विचविच वेणु रसाल ॥४॥ ब्रजजन सब एकत्र भये एक ओर ब्रजनारी ॥ गावत गीत सुहावने हसहस देतबगारी ॥५॥ अरगजा भरभर पिचकाई अंचल बीच दुराई ॥ बलरामकृष्ण कों छिरकहीं वदनमोर मुसिकाई ॥६॥ कोप सखा सन्मुख भये अरगजा कुंकुम घोरी ॥ घेरसकल ब्रज सुंदरी एक एक करबोरी ॥७॥ युवती यूथ मध्य राधिका उत ब्रजराज किशोरा ॥ युग शशि रूप किरण पीवें लोचन चारुचकोरा ॥८॥ सब सखियन मिलमतो मत्यो मोहनकों पकराई ॥ छल बल तो नहीं पाइये किहिं मिस पकरें जाई ॥९॥ ललिता आगे लेदोरी मोहन लीनेघेर ॥ पियप्यारी गठजोरियो हसत वदन तनहेर ॥१०॥ गाल बहत तुम मारते सुनों सखा

वलभाई ॥ जाय कहां ब्रजराजते मोहन लेहु छुड़ाई ॥११॥ यह विध होरी खेलहीं देत सकल आनंदा ॥ गोविंद बलबल बलजाई जयजय गोकुल चंदा ॥१२॥

२  राग कल्याण  श्रीगोवर्धनराय लाला ॥ प्यारे लाल तिहारे चंचल नयन विशाला ॥ तिहारे उरसोहे वनमाला ॥ यातें मोहि रही ब्रजबाला ॥ध्रु०॥ खेलत खेलत तहां गये जहां पनिहारिन की वाट ॥ गागर ढेरें सीसते कोऊ भरनन पावे घाट ॥१॥ नंदराय के लाडिले एसो खेल निवार ॥ मनमें आनंद भररह्यो मुखजोवत सकल ब्रजनार ॥२॥ अरगजा कुंकुम घोरकें प्यारी लीनों कर लपटाय ॥ अचकां अचकां आयकें भाजी गिरिधर गाल लगाय ॥३॥ यह विध होरी खेलही ब्रज वासिन संग लगाय ॥ गोवर्धन धर रूप पर जन गोविंद बलबल जाय ॥४॥

३  राग कल्याण  ब्रजराज लडेतो गाइये लाल मनमोहन जाको नाम ॥ खेलत फागु सुहावनों रंग भीज रह्यो सब गाम ॥१॥ ताल पखावज बाजहीं डफ सहनाई भेर ॥ श्रवण सुनत सब ब्रजबधू झुंडन आई घेर ॥२॥ उतही गोप सब राजहीं इत सब गोकुल नारि ॥ अति मीठी मन भावती देत परस्पर गारि ॥३॥ चोवा चंदन छिरकहीं उडत अबीर गुलाल ॥ मुदित परस्पर खेलहीं होरी बोलत ग्वाल ॥४॥ एक सखी मोहन गहिआने प्यारी पकरेहाथ ॥ गोपी भेष बनाय के रचबेनी गुंधीमाथ ॥५॥ बहु रमतो कर सुंदरी हलधर पकरे जाय ॥ नवकेसर मुख मांडकें आयेहें आंख अंजाय ॥६॥ पीतांबर मुख मूंदकें निरख हैंसे नंदलाल ॥ दाऊ जू आज भले बने कूकेंदेत गुवाल ॥७॥ सिमिट सकल ब्रजसुंदरी ब्रजपति पकरे धाय ॥ करत सबे मन भामतो नैननराखतकाय ॥८॥ तब नंदरानी बीच कियो मेवा दियो मंगाया ॥ पट आभूषण पहरायकें हृषी केश बलजाय ॥९॥

४  राग कल्याण  खेलत गिरिधर फाग अति अनुराग भरे होरी के ॥ ग्वालन संग गोकुल गलीयन में मोहन लगे गोरी के ॥१॥ पिचकाइन पलाश कुसुम जल बूका वंदन भरझोरी के ॥ बोरी रंग में अंगअंग भाव भरी ब्रज भागिनि भोरी के ॥२॥

५ ॥ राग कल्याण ॥ गिरिधर यमुना तट कुंजनमें खेलत फाग सुहावनों
 ग्वाल मंडली बल संगलीने आनंद प्रेम बढ़ावनों ॥१॥ परम रुचिर उज्ज्वल
 वसनन ले अंगअंग भेख बनावनों ॥ अगर सहित मृगमद गोरारसों अरगजा
 घोर लगावनों ॥२॥ अति सुरंग केसर के रससों हाटक घटभर लावनों ॥
 रत्न जटित पिचकाई भरले ब्रज वधु बनवर धावनों ॥३॥ नवसत साज
 सिंगार राधिका रूप अनूप दिखावनों ॥ ब्रज नारी सब जोर साथले सन्मुख
 गुलाल उडावनों ॥४॥ सौरभ अधिक अबीर सेतसों भरभर मुठी चलावनों ॥
 हो हो हो हो बोल सखिन संग लाल गुलाल उडावनों ॥ पटह झांझ झालर
 आवजडफ ताल मृदंग बजावनों ॥ राग कल्याण जमाय सप्तस्वर तान मान
 सों गावनों ॥६॥ मधुमंगल बोल्यो हलधरसों अब कहामतो उपावनों ब्रजबनि
 तनकी सयना आगें केसेक होय बचावन ॥७॥ तब बल दाऊ मतो रच्यो
 मन ललितानेक बुलावनों वदिये चतुरजो दाव विचारे चित्तकों यह सिखावनों
 ॥८॥ सुन मधु मंगल ललिता टेरी नैंक यहां लों आवनों ॥ मेजिय मांज
 उपाय बनायो करिये तुम मन भावनों ॥९॥ तब हरि हित ही बोली हसकें
 यह निश्चय ठहरावनों ॥ तुम सब दूर रहो ठाड़े व्हे हमही स्याम पकरावनों
 ॥१०॥ छल बल कर पकरेजु अचानक कीनों सकल खिलावनों ॥ सुबल
 श्रीदामा आदि सखा सब याहा कों जो मिलावनों ॥११॥ मनमोहन संध्रम
 सन्मुख व्हे बोलत बोल सुहावनों ॥ सखा यूथ में देखी ललिता ठाडी करत
 जनाजनों ॥१२॥ प्रीतम कोंपकरन दोरी राधा गह्वो स्याम सुख छावनों ॥
 नयनन नेन मिलत मुसिकानी रहतन नेहदुरावनों ॥१३॥ युवती सब मिल
 झुंडन गावत गारी ब्रंद मचावनों ॥ सुर ललना सब देख थकित भई कोन
 पुन्य ब्रज पावनों ॥१४॥ प्रमुदित मनसों अष्टयामजुर राधा पति हिलडावनों ॥
 यह रस तजजे और जो चाहे सोतो जन्म गमावनों ॥१५॥ कोकविवरणिसके
 या सुखकों देखत दुख विसरावनों ॥ शुकपिक मोर मधुप गण बोलत ऋतु
 वसंत हुलसावनों ॥१६॥ सुन बिनती सुत नंदरायके फगुवा बहुत मंगावनों ॥
 यह जोरी अब चल चिरजीयो ब्रजनित हो हु बधावनों ॥१७॥ राधा कृष्ण
 अमृत रस सागर क्यों घट होय समावनों ॥ गोकुल चंद चरण पंकजरज
 निशदिन तन लपटावनों ॥१८॥

६ (१५) राग कल्याण (१५) होरी खेलत मदन गोपाल संग लिये ब्रजबाल ॥ छिरकत आन परस्पर हरखत किलक देत करताल ॥१॥ बाजत डफ मृदंग ओर ताल विचविच वेणु रसाल ॥ प्यारी लई घन सारकी झोरी पियहि अबीर गुलाल ॥२॥ ललिता चंद्रावली मतोकर पकरे स्याम तमाल ॥ रामदास प्रभु फगुवा दीनों श्रीगिरिधर मणिलाल ॥३॥

७ (१५) राग कल्याण (१५) अरगजा गुलाल छिरकत वल्लभ लाल के संग ॥ अतर गुलाब ओर चोवा चंदन कुंकुमा भरत पिचकारी लाई ब्रजनारी सब विविधि भांत सों बहुरंग ॥१॥ वरणवरण अंबर तन पहरे आभूषण अति विचित्र छबि गावत सरस सुरतान मानसों पुलकित अंग ॥ वल्लभ पिय सन्मुख निरखत हैं सब ज्यों चकोर चंदा तन चितवत नयन निरखत उपज्यो प्रेम अनंग ॥२॥

८ (१५) राग कल्याण (१५) हरि संग हो हो हो होरी खेलत राधा गोरी ॥ तरुणी समूह तरणि तनया तट मंडित मोहन जोरी ॥१॥ नब ऋतुराज समाज सहित बहुरंग लता द्रुमफूले ॥ मोर मराल मधुप कोकिल कल कूजत आनंद मूले ॥२॥ बानिक विपिन विलोक युगलवर हर्षित हैं हिय मांही ॥ रच्यो खेलन व फाग रसिकवर कल्प तरुवर छांही ॥३॥ बाजत वेणु मृदंग चंगमुख चंग अना गतिलावें ॥ नायक निपुण कनक बरणी तरुणा तारी देदे गावें ॥४॥ एक सखी बन वेष स्यामको संग सखा सब सोहें ॥ चेत गीत बहुभांत बेनकल सुनत श्रवण मनमोहें ॥५॥ अति अब्धुत युगटोल परस्पर बोल वदत मनभाये ॥ कोटि अनंग अंग पावत सुन जेर सग्रंथन गाये ॥६॥ विविध सुंगंध अरगजा दुहुंदिश रंग बढ्यो अति भारी ॥ परम प्रवीण सुघर घातन मोहन वृषभान दुलारी ॥७॥ रुपे सुभट रणधीर उभयदल छल बल टरत न टारे ॥ छिरकत भरत बचावत विहसत रूप यौवन मदभारे ॥८॥ नयनन सयनन विवश किशोरी लाल गहे भर कोरी ॥ सहचरी गण भरभर पिचकाई हो हो हो कर दोरी ॥९॥ मृगमद साख जवाद कुंकुमा सुभग सीसतें नावे ॥ नायक नाम पलट पिय को प्रभु डांगन वसन बनावे ॥१०॥ मोहि रहे ब्रजराज

सांवरे अंग बनी रंगसारी ॥ राजत दीठ बचावत भाजत निजतन निखंत नारी ॥११॥ टेढी पाग पीतपट शोभित ग्रीव गौर भुजदीने ॥ कीरति कुंवर बनी राधापति त्रिय नंद सुत कीने ॥१२॥ ललितादिक सींचत सुख नयनन भूषण पलट बनावे ॥ रीझरीझ तृण तोर मुदित मुख मोर हंसें कछु गावें ॥१३॥ शारद सकुच निरख दंपति सुख वर्णन कों मति थोरी ॥ स्याम निकुंज विहारिण प्यारी प्रीतम नवल किशोरी ॥१४॥

९ (॥१॥ राग कल्याण (॥१॥ खेलत होरी लाल संग लियें ब्रजकुलके बाल ॥ ब्रजकी पोरी खोरी ब्रजराज की दोरी सबहिन कों छिरक कर फेंट गुलाल ॥१॥ ब्रजकी नारी गारी देदे गावत हैंसत गुवाल ॥ यह विध ब्रज रंग छायो सुंदर रसिक रसाल ॥२॥

१० (॥१॥ राग कल्याण (॥१॥ होरी खेलत कुंज विहारी ॥ संग लिये केसर कुंकुम भर पिय पर प्यारी डारी ॥१॥ चोवा चंदन अगर अरगजा चरचित ब्रज की नारी ॥ तक तक छिरकत मोहन कों किलक देत करतारी ॥२॥ मदन गोपाल गहे श्रीराधा हम हि देहु फगुवारी ॥ श्रीगिरिधर लाल दियो तहां सर्वस्व रामदास बलहारी ॥३॥

११ (॥१॥ राग कल्याण (॥१॥ खेलत मनमोहन होरी अति रस रंग भीने ॥ गाय गाय और रीझरीझ मीठी मीठी तानन लीने ॥१॥ काहूको हार तोर काहूकी भुज मरोर काहूकी कंचुकी के बंद छोर दीने ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु देखे कोटि मदन की छबि छीने ॥२॥

१२ (॥१॥ राग कल्याण (॥१॥ मोमन यह व्यापी पकर मोहन पेवैर लेहूं ॥ सब सखियनमें छिपजो चलों पाछेते दौरि जाय अंजनदेहूं ॥१॥ कर गहि पीठ गढाय कुचनसों कान पकरके गुलचा देहूं ॥ कृष्णजीवन लछीराम के प्रभुपें मनभायो हों फगुबा लेहूं ॥२॥

१३ (॥१॥ राग कल्याण (॥१॥ लिये सकल सोंज होरी की नवल किशोरी जू नयनन में ॥ सेत अबीर स्याम तागर सुत नेह फुलेल सन्यों नयनन में ॥१॥ कुटिल कटाक्ष छूटत पिचकाई प्रीति रंग भरभर नयनन में ॥ लाल गुलाल

अरुण अरुणाई मिलवत ललित सखी नयनन में ॥२॥ विहंसन फगुवा
देतलेतहें सहचरी हूं न लखे नयनन में ॥ रस भीजे रीझे पिय प्यारी जगन्नाथ
पूरण नयनन में ॥३॥

१४ (१४) राग कल्याण (१४) कर हो हो होलें रे खेलत पिय डारत पिचकारी ॥
बाढ्यो हे राग रंग परण गति सहत गावत नीकी तान देतारी ॥१॥ केसर
रंग भर भर जु चलावत आवत सोहे लाजत नारी ॥ एक भर छिरकत
नयनन में भीजत रंग तन तन रही रंग सारी ॥२॥



१५ (१५) राग कल्याण (१५) खेलोंगी पिय संग होरी खेलोंगी ॥ नव निकुंज
ठाडे मोहन के उर गूँथि कुसुम माल मेलोंगी ॥१॥ होरी की पून्यों पूरण
शशि प्रेम सिंधु रस झेलोंगी ॥ रस बश वहे निधरक ब्रजपति सों आरज
पंथपग पेलोंगी ॥२॥

१६ (१६) राग कल्याण (१६) माई होरी खेले कान्ह कुंजन में झुंडन में
या गोकुल के ग्वेडें ॥ ढीठलवार कह्यो नहिं मानत वह परचो हे सबन
के पेडें ॥१॥ कंचन की पिचकाई कर लिये डोलत अपनी ऐडें ॥ कृष्ण
जीवन लछीराम के प्रभु पिय तोरत लाज की मेडें ॥२॥

१७ (१७) राग कल्याण (१७) हो होरी के खिलार हो जु चतुर संभार हमारी
वार ॥ रंग सुरंग तुम हम पर डारत सन्मुख ले मुख ते घुंघटटार ॥१॥
डरत न टरत भरतही आवत नेक न छांडत मेरे घरको द्वार ॥ कृष्ण जीवन
लछीराम टरो किन नातर खैहो गार ॥२॥

१८ (१८) राग कल्याण (१८) खेलत फाग लाल रंग भीने ॥ तेसेई सकल
सुघर लरका बने बलदाऊ संग लीने ॥१॥ बाजे बजत विविध बहु भांतन
ताल मृदंग झांझ कठताल ॥ आबज रंज मुरज डफ वीना सुर मंडल मुख
वेणु रसाल ॥२॥ दुंदुभी मदन भेरि सहनाई पंच शब्द मिल घुरत निसान ॥
महुवर ढोल सहनाई घोरवसु नियत कान ॥३॥ इतनायक ब्रजराज लडेंतो
उत चंद्रावलि नारी ॥ कोकिल स्वर मिल गावत झुंडन रीझ देत चोंखन
सों गारी ॥४॥ सुंदर बनी कनक पिचकाई अरगजा के सर कुंकुमा घोरी ॥

मृगमद मलय कपूर आदि सोंधो जवाद छिरकत मुख मोरी ॥५॥ सुरंग गुलाल उडावत झोरी ग्वाल सखा समूह इकटोरी ॥ हो हो हो हो होरी बोलत देख देख लालन की ओरी ॥६॥ ब्रज सुंदरी मतो मत्यो आपस में क्यों हूं लालन लीजे घेरो ॥ जब दोरी सब मिल एकत्र वहे सेनन प्यारी के नयनन हेरी ॥७॥ पकरे जाय यसोदा नंदन झकझोरत मोतिन दयो हार ॥ मुरली झटक प्यारी कर पीवत मुखसों मुख मधु धार ॥८॥ रस वशभये रसिक दोऊजन सुध न रही कछु तिहिं अवसर तन ॥ अंग अंग प्रति अमित माधुरी वे जाने के ऊनहीं को मन ॥९॥ तब चंद्रावलि काजर ले के आंजे पियके नयन संभार ॥ शोभा निरख एक टक वहे तन मन धन कियो बलहार ॥१०॥ यह भांतन जू सकल ब्रजसुंदरि करत आपने मनको भायो ॥ प्रेम मुदित अखिल गुण पूरण रसिक राय तहां रसही पायो ॥११॥ फगुवा लियो दियो सर्वस्व तहां प्रफुल्लित मन तहां देहि असीस ॥ जसोदा नंदराय ब्रजभूषण लाल चिरजीवो कोटि बरीस ॥१२॥ सोंधे सब फब रख्यो मनोहर तैसो ही शोभित सावल अंग ॥ मानो मदगज घस रंग संभारचो करिणी यूथ लिये अपने संग ॥१३॥ यह विध खेलत सब मिल ब्रजमें आनंद सिंधु बढ्यो चहुंओर ॥ प्रेम मगन निरखत लालनकों नहीं जानत कीने निस भोर ॥१४॥ अतिही उत्साह भरी ब्रजरानी करत आपही बहु सनमान ॥ मागन देत अमोलिक भूषण पट अंबर कंचन मणिदान ॥१५॥ क्यों वरनें मन हीन छीन बल लीला जल निधि परम रसाल ॥ गिरिधर पिया वल्लभ श्रीविठ्ठल चरण कमल रज प्राण आधार ॥१६॥

१९.  राग कल्याण  सब ब्रज के सिरताज नंद सुत होरी खेलें ॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा मधु मंगल युवती दल पेलें ॥१॥ कमलन मारजु होत परस्पर सुख समूह अति झेलें ॥ मधुर सुगंध केतकी ले लें मानो कामकी सेलें ॥२॥ ताल निसान पटह बाजेंबाजें मधुर मृदंग धा धिलांग धेलें ॥ स्याम बजाय मधुर मुरली रव खगमृग मुनि मन ठेलें ॥३॥ अबीर गुलाल कुंकुमा चोवा छिरकत करें बहु खेलें ॥ महँक रख्यो सोंधो चहुंदिशतें चली सुगंध की रेलें ॥४॥ अकेले कर पकरे बलदाऊ धिरि आई सब छेलें ॥

अंग विचित्र बनाय सबनके नयनन काजर मेलें ॥५॥ छुडाय लये फगुवा
दे जसोमति मदन नृपति के झेंले ॥ खेलत रंग रख्यो अतिभारी विशद कीरति
फेलें ॥६॥ घोष नृपति सुत स्याम तमाल राधाजू माधवी वेलें ॥ खंजन
मीन लजावत रसभरे सुंदर नयन वडेलें ॥७॥ खेलत फाग घरकों चले सब
गावत गीत पहेलें ॥ पिय प्यारी दोऊ श्रमित भये कहे गोविंद माला ले
मेलें ॥८॥

२० (॥१॥) राग कल्याण (॥१॥) अरि माई हो होरी हो होरी ॥ एसी चंचल
चाल चोरी काम चली हे मानो रोरा रोरी ॥१॥ विथुरे वार सारंग ले संभारत
भीजत पीठ तरक गई चोरी ॥ वेनीके फुंदना बिराजत सबहीं चली मानो
दोरा दोरी ॥२॥ उडत गुलाल अबीर सुरंग स्यामा स्याम भीनी रंगजोरी ॥
कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभुसों होय रही झकझोरा झकझोरी ॥३॥

२१ (॥१॥) राग कल्याण (॥१॥) लाल तुम खेलो होरी भर मुठी डार गुलाल ॥
चोवा चंदन ओर अरगजा अबीर लिये भर झोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग
अधोटी वीन बजावत ध्वनि थोरी ॥ सूर स्याम रस वश कर लीने राधा
नवल किशोरी ॥२॥

२२ (॥१॥) राग कल्याण (॥१॥) खेलत नवल वल्लभ पियहोरी ॥ राजत हैं
सब सभा सहित अरु जुरि आई नवल किशोरी ॥१॥ रही ढर पाग लाल
भाल पर अरु अनुराग रंगसों चोरी ॥ रत्न जटित सिरपेच जगमगे रख्यो
रवि निरख डोर रथ तोरी ॥२॥ चूनी चोली चुपरि चतुराइन चतुर नायक
तन पहरे सोरी ॥ विविध भांत सों धोता ऊपर वरन सके एसो कबि कोरी
॥३॥ मृगमद साख जवाद अरगजा ओर कपूर केसर ले घोरी ॥ दामिनिंसी
कामिनि प्राण वल्लभकूं आई छिरकत हसत मुख मोरी ॥४॥ मृदंग तालडफ
वीन बजावत नाचत गावत हैं चहुओरी ॥ रख्यो अबीर छाया चहुंदिशते लसत
हैं कनक वरण तन गोरी ॥५॥ होत प्रसन्न निरख भक्तन तन मुदु मुसकाय
लेत चितचोरी ॥ भई रस मगन वदत नहीं काहू हैं अलबेली वेश न थोरी
॥६॥ श्रमित जान जब करत आरती तनमन प्राण न देत अकोरी ॥ मुरली
प्रभु वल्लभ सुख निरखत रति पति ळे गई मति बोरी ॥७॥

२३ (१५) राग नायकी (१५) तुम बिन खेल न रुचे लगार सुन्दर यार हो
तुम हो सुघर खिलवार ॥ नारी सब मिल गावत आवत पिचकारीन की
मार ॥१॥ द्वार द्वार फगुवा के कारण रोक रहन ब्रजनार ॥ अंतर्दामी
आनंददाता सुरप्रभु नंदकुमार ॥२॥

२४ (१५) राग कल्याण (१५) आवो मिलि ब्रज की नारी होरी धूम मचाओ ॥
चंदन वंदन कुमकुम लै मोहन मुख लगावो तारी दे गारी गाओ ॥१॥ केसर
कनक पिचकारी भरले करन धाओ ॥ 'हरिकिसोरि' सनमुख होय धारसो
धार मिलाओ ॥२॥

२५ (१५) राग कल्याण (१५) ऐसे ना होरी खेलिए हो कन्हैया यह नहिं
खेलन कौ ढंग ॥ मैरी आँखिन में गुलाल उड़ावति आप बचावति अंग
॥१॥ आई अचानक पकरति पहुँचौ कौन करै तेरो संग 'कृष्णजीवन लछीराम'
के प्रभु कैसें पतियै ए छिनु-छिनु औरि रंग ॥२॥

२६ (१५) राग कल्याण (१५) खेलति हरि ज्वाल-सँग फागु रँग भारी ॥
इक मारत इक तारत, इक भाजत इक गाजत, इक धाबत इक पावत,
इक आवत मारी ॥ इक हरषत, इक लरखत, इक परखत घातहिं कौं,
लोचन सु गुलाल डारि, सौंधें ढरकावै ॥ इक घूमत संग संग, इक न्यारै
हैं बिहरत, टरत दौव दीबेकौं, वै जो नहिं पावै ॥ इक गावत इक भावत,
इक नाचत इक रांचत, इक कर मिरदंग ताल, गति-गति उपजावै ॥ इक
बीना इक किन्नरि, इक मुरली इक उपंग, इक तुंबुर इक रबाब, भांति सौ
बजावै ॥ इक पटहा इक गोमुख, इक आउझ इक झल्लरि इक अमृतकुंडलिकों,
इक डफकर धारें ॥ सूरज-प्रभु बल-मोहन, संग सखा बहु गोहन, खेलत
वृषभानु-पौरि लिये जात टारै ॥

२७ (१५) राग कल्याण (१५) जमुना तैं हों बहुत रिझायौ ॥ अपनि सोंह
दिय नंद-दुहाई, ऐसौ सुख मैं कबहुँ न पायौ ॥ मिले मातु पितु-बंधु स्वजन
सब, सखनि-संग बन बिहरन आयौ ॥ आज अनंत भगवंत धरनि-धर,
सुबस कियौ प्रिय गान सुनायौ ॥ भयौ प्रसन्न प्रेम-हित तेरे, कलिमल हरे

जु इहिं जल न्हायौ ॥ अब जिय सकुच कछू मति राखहि, माँगि सूर अपनी
मन-भायौ ॥

२८ (११) राग कल्याण (११) नंद कुंवर रंग गहर-गरबीली ॥ निस दिन
पिय संग लागी डोलति छकी छबीली ॥१॥ ताहीं तैं मान करति सबहिन
तैं अंग अंग रूप-रसीली । 'सरस रंग' रस जानति सब बिधि तू ही सुघर-
नवेली ॥२॥

राग भूपाली

१ (११) राग भूपाली (११) होरी खेले री नंद कौ नंदन सुखदाई ॥ रंगमंगे
ग्वाल बाल सब नांचति कहा कहैं सुंदरताई ॥१॥ किन्नरी झाँझ ताल ढफबीना
मुरली महुवर बाजति माई ॥ चोवा चंदन अरगजा कुंमकुम मृगमद केसर
नीर मिलाई ॥२॥ गोपन करन कनक पिचकाई सुरंग गुलालन फैंट भराई ॥
हँसि हँसि बरखति जुबती जूथ पे बंसन लेति तरुनी तब धाई ॥३॥ प्रीतम
आनि गहे प्यारी तब कर तैं मुरली लई छिनाई ॥ फगुवा मँगाई दियो सबहिन
कों तब ही जाई मुरली भलैं पाई ॥४॥ देति असीस उलटि गोपी जन यह
ब्रजराज करो ब्रजराई ॥ चढ़ि बिमान इंद्रादिक आयै कुसुमन की बरखा
जु कराई ॥५॥ गोप बधू तन बारति सब ब्रज मंगल गाई ॥ तिहिं अवसर
तन मन धन प्रफुलित 'रघुबीर' बारनैं जाई ॥६॥

धमार के पद - राग ईमन

१ (११) राग ईमन (११) एरी चलौ सखी तहाँ जैयै ॥ नव निकुंज में खेलि
मच्यौ है रंग-रंग रंगनि रंगैयै ॥१॥ तजि अभिमान समुझि मन सखिरी,
स्याम मिलै सुख पैयै ॥ अरसपरस, आलिंगन लै लै चुंबन अधरन दैयै
॥२॥ करौ सिंगार सुभग तन गोरे मोतिन मांग भरैयै ॥ सारी सेत पहिरि
तनसुख की, ओलि गुलाल भरैयै ॥३॥ 'रसिक' प्रीतम प्यारे सों मिलि
अंतर भाव जनैयै ॥ इहि बिधि फागु सुहागु सखी री आनंद सिंधु बढैयै ॥४॥

२ (११) राग ईमन (११) छिपि जिनि जैयो हो बनवारी ॥ खेलनि आँई

हैं ब्रज नारी ॥ बहुत सुगंध, लाई अंग लावनि निकसी चतुर खिलारी ॥१॥
बा दिन तुम सौं बोली नाँही लै सुगंधि आँखिन में डारी ॥ म्हाँ मांडे बिनु
जानि न दैहों, 'सूर' प्रभु सौंह तिहारी ॥२॥

३ (॥१॥ राग ईमन (॥३॥) लाल रस मांते हो खेलति डोलंत फाग ॥ संग
लियै गोकुल के लरिका उड़वति बिबिधि पराग ॥१॥ कोऊ लियें पिचकाई
छिरकति कोऊ कुंमकुम जल लाग ॥ कोऊ अबीर गुलाल उड़ावति मैं न
रुकायौ माग ॥२॥ कोऊ मधुरे सुर बैनु बजावति कोऊ मचावति राग ॥
'रसिक' प्रीतम प्यारी संग बिहरति कंचन मिल्यौ है सुहाग ॥३॥

४ (॥१॥ राग ईमन (॥३॥) हम-तुम मिलि दोऊ खेलें होरी नव निकुंज में
जेये ॥ अबीर गुलाल कुमकुमा केसरि रंग परस्पर नैये ॥ और सरखी कोऊ
भेद न जानति ग्वालनि हूँ न जनैये ॥ 'परमानंद' स्वामी-संग खेलत मन-
भावत सुख पैये ॥

५ (॥१॥ राग ईमन (॥३॥) माई री होरी खेलनि जाईये जहँ खेलति नंद कुमार ॥
राग रंग अरु सुर संगार बाजति मृदंग धु धु कार ॥१॥ रंग भरे औ रंगन
सौ छिरकति पिचकारिन सौं देति है मार ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के
प्रभु कौं मुख मांड्यो हो अरु दैउ गारि ॥२॥

धमार के पद - राग रायसों

१ (॥१॥ राग रायसों (॥३॥) सकल कुंवर गोकुल के निकसे खेलन फाग ॥
हरि हलधर मध्य नायक अंतर अति अनुराग ॥१॥ ओलन बुका वंदन रोरी
हरद गुलाल ॥ बाजत मधुरे महुवर मुरली ओर डफ ताल ॥२॥ कनक
कलश केशर भरे कांवर किंकर कंध ॥ ओर कहाँ लग कहिये भाजन भरेहें
सुगंध ॥३॥ हँसत हँसावत गावत छिरकत फिरत अबीर ॥ भीज लगे तन
शोभित रंगरंग रंजित चीर ॥४॥ फूलन की कर गेंदुक करत परस्पर मार ॥
छूटत फेंट लटपटी बिखर परत घनसार ॥५॥ कोलाहल ग्वालन को सुन
गोपिका अपार ॥ टोलन टोलन निकसी कर सोल्हे शृंगार ॥ रूप माधुरी
जिनकी कविपे वरणी नजाय ॥ तिन्हे सची रती रंभा पगहू परत लजाय ॥७॥

अति सरस स्वर गावत कोऊ झील कोऊ घोर ॥ तिन्हे सुन्यौ नहीं भावत
 बीना नाद कठोर ॥८॥ ललित गली गोकुल की होत विविध विध केल ॥
 अगर सहित कुंकुम की चली धरणी पररेल ॥९॥ गयो गुलाल गगन चढ
 भये सुर सदन सुरंग ॥ मानो खुर खेह उड़ी है सेना सजी अनंग ॥१०॥
 वन्यों वनिता वदनन पर कृष्णागर को पंक ॥ परिपूरण चंदन ते मानो च्वे
 च्वे चलयो कलंक ॥११॥ छिरकत हरि ना ना रंग शोभित गोपिन गात ॥
 मानो उमग्यो अंतरते अंचल प्रेम चुचात ॥१२॥ बोले ग्वाल बराती हमारे
 हरि को व्याह ॥ दुलहनि गोपा किशोरी ॥ मोहन सबको नाह ॥१३॥ यह
 सुन गोपी कोपी हलधर पकरे जाय ॥ अंजनदे दृग छाँडे मृगमद मुख लपटाय
 ॥१४॥ बहोर सिमिट सब सुंदरी घेरे मदन गोपाल ॥ कनकदली मंडलमें
 शोभित तरुण तमाल ॥१५॥ तब वृषभान किशोरी हरि भर लीने अंक ॥
 कही न जात ता सुख की मानो निधि पाई रंक ॥१६॥ वरण सके को
 हरिके अगणित चरित्र विचित्र ॥ जिहीं तिहीं भांत गदाधर रसना करों
 पवित्र ॥१७॥

२ (॥१॥ राग रायसों (॥१॥) मिल जु डंडा रस खेलहीं नंदराय जू की पोर ॥
 आनंदसों मनभर रह्यौ नवल किशोरी किशोर ॥१॥ लटकत फिरत रगमगे
 इत गोपी उत ग्वाल ॥ मानो छुटी मदन की मत्तगजन की ढाल ॥२॥ गारीदेत
 सुहावनी इत सब गोपिका नार ॥ उत सब होलें बोलें बालक नंदकुमार
 ॥३॥ बाजे बहुविध बाजें ताल मृदंग उपंग ॥ झांझ झालर किन्नरी मुरली
 डफ मुखचंग ॥४॥ चोवा चंदन छिरकहीं अबीर गुलाल सुरंग ॥ खेलत
 खेल गह गह्यो लाडली लालन संग ॥५॥ मृगमद केसर घोर कें लीने कर
 लपटाय ॥ ओचका आवत दूरतें भाजत मुखहि लगाय ॥६॥ तब वृषभान
 दुलारी पकरे मदन गोपाल ॥ मानो कंचन वेली लपटी स्याम तमाल ॥७॥
 झूमरही चहुंदिशते नैंक न राखत लाज ॥ मानो भूतल उदयो नक्षत्र सहित
 उडुराज ॥८॥ काजरलोचन आंजकें कटिपट लेंहि उतार ॥ आलिंगन पियदेत
 हें ये सब व्रजकी नार ॥९॥ गिरिधर अधर सुधा कों कोऊ पीवत न अघाय ॥
 हा हा खाउतो छाँडें प्यारी कों सिरनाय ॥१०॥ झटकत गहि मोतिन लर
 बूझत चिबुक उठय ॥ मन मान्यों फगुवा लियो पीतांबर दियो आय ॥११॥

श्रीगोकुलगाम सुहावनों कीनी बहुविध केलि ॥ चिरजीयो दूल्हे दुलहनि मिल
मन्मथ दलपेलि ॥१२॥ सिमिट सकल ब्रजवासी सूरसुता चले न्हान ॥ विमल
वसन तन पहरे देत बिप्र न बहुदान ॥१३॥ कुसुम वृष्टि सुरपति करें लीला
देखें आय ॥ श्रीवल्लभ चरण प्रतापते कृष्णदास मुखगाय ॥१४॥

३ ॥ राग रायसों ॥ खेलन कों स्यामाजू चली गिरिधर पियपास ॥
नवसत साज सिंगारहीं चंदमुखी मृदुहास ॥१॥ सखी जुरी चहुंदिशतें लेखेलन
को साज ॥ ज्यों करिणी मदमाती दूँढत मद गजराज ॥२॥ बीनर बाव
किन्नरी वाजत मृदंग सुचंग ॥ ललितादिक मध्य स्यामा गावत सब मिल
संग ॥३॥ श्रवण सुनत गिरिधर पिय श्रीस्यामा को राग ॥ अंकभरे प्यारीकों
लूटत परम सुहाग ॥४॥ करसों करजोरे बैठे कुंज कुटीर ॥ ललित लता
गुच्छन में बोलत मधुकर कीर ॥५॥ केसर मृगमद रोरी सुरंग गुलाल अबीर ॥
पियप्यारी मिल खेलत छिरकत चंदननीर ॥६॥ बीरी खात खवावत हरखत
मुख हसदेत ॥ आलिंगन अति रससों कंठ भुजा भरलेत ॥७॥ कुंज महल
में क्रीडत दंपति अति सुखरास ॥ यह लीला नितगावे अतिवड भागीदास ॥८॥

४ ॥ राग रायसों ॥ निकसे खेलन होरी हलधर गिरिधरलाल ॥ सुबल
सुबाहू श्रीदामा संग सखा ब्रजबाल ॥१॥ बन ठन बन ठन निकसे चले
यमुना के तीर ॥ चोवा चंदन मृगमद फेंटन भरे अबीर ॥२॥ करन कनक
पिचकाई केसर भरी कमोर ॥ उडत गुलाल सुरंग रंग मानो उनयो घनघोर
॥३॥ गयो हे गुलाल ऊंचोचढ द्रुमभये सकल सुरंग ॥ वाजत भेरि दमामा
आवज ताल मृदंग ॥४॥ सुन ग्वालनि कोलाहल निकस चली ब्रजनारि ॥
झुंडन मिल आई सबदेत भामती गारि ॥५॥ करन पोहोपन बलासी करत
परस्पर मार ॥ अचरा ओट पिचकारन मारत धारसोंधार ॥६॥ सिमिट
सकल ब्रज सुंदरी कर गुलाल अंधियारी ॥ घेरले गई लाल कों ललिता
भर अंकवारी ॥७॥ नयनन अंजन आंजकें मृगमद मुख लपटाय ॥ हो हो
होरी बोलत हँस कर ताल बजाय ॥८॥ स्यामा के नील वसनसों जोरत
गांठ बनाय ॥ दोऊहें अति सुंदर यों कहि लेत बलाय ॥९॥ छीनत मुरली
कर तें एक लकुटिया छिनाय ॥ एक कहत तुम फगुवा देहु हमें ब्रजराय ॥१०॥

मेवा बहुत मंगई भूषण वसन अमोल ॥ देत असीस सकल गोपीजन अंचल ओल ॥११॥ चिरजीयो यह जोरी युग युग गोकुल गाम ॥ विलसो सदा यह सुख श्रीवृंदावन ठाम ॥१२॥ गोवर्धनधर विहरत यह बिधफाग विलास श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल पदरज गावत दास ॥१३॥

५ (१५) राग रायसों (१५) ऊँचों सों गोकुल गाम जहँ हरि खेलति होरी ॥ चली सखी देखनि जाई पीया अपने कों चोरी ॥१॥ बाजति ताल मृदंग और कित्तर की जोरी ॥ इत गोपीन कों झुंड उते हरि हलधर जोरी ॥२॥ बूका सुरैंग गुलाल उड़ावति भरि भरि झोरी ॥ गावति दै दै गारि परसपर भौमिनि भोरी ॥३॥ नबल छबिले लाल तनी चोली की तोरी ॥ राधा जू चली रिसाई ढीठ सों खेलै को होरी ॥४॥ खेलन में कैसी मान सुनौ वृषभानु किसोरी ॥ 'सूर' सखी उर लाई हँसति भुज गहि झकझोरी ॥५॥

६ (१५) राग रायसों (१५) होरी को सुख अद्भुत मोपे बरन्यो न जाई ॥ अति आनंद हुलसति मन प्रेम परसपर छाई ॥१॥ प्यारी राधा सँग जुरि जुरि सब ब्रजनारी आई ॥ ग्वाल बाल नंदलाल जु मन में सब सुख पाई ॥२॥ अबीर गुलाल अरगजा कुँमकुमा छिरकै रँग ॥ कुंज कुटिर में बैठे राधा गिरिधर सँग ॥३॥ ललिता श्रीमुख माँड़े अंजन नैन बनाई ॥ तारी दै सब नारी मुख सों होरी गाई ॥४॥ राधा प्यारी दुलहिनि दुल्हे नंदकुमार ॥ सीस सेहरौ सोहै छबि लागति जु अपार ॥५॥ गारी गावें हिलिमिलि बरसाने की नारी ॥ बाजे बहु बिधि बाजें सब मिलि दै कर तारी ॥६॥ कर सों कर तब जोरे फिरि भाँवर लेति ॥ अंचल ले दोऊन के गाँठि सबै मिलि देति ॥७॥ आरतो कर ललिता जु सुख सों मंगल गाई ॥ देति असीस सबै मिलि 'सूरदास' बलि जाई ॥८॥

धमार के पद - राग जेजेवंती

१ (१५) राग जेजेवंती (१५) माई आज तो मोहन संग रंगभरी खेलेंगी ॥ लोकलाज पायनसों पिछोड़ी पेलेंगी ॥१॥ निंदरोंगी आरज पंथ नैकु न डरोंगी ॥ निधरक अंकवार पिया कों भरोँगी ॥२॥ केसर के रंग रंगीलो

करोंगी ॥ बेसरि मोती काजें फगुवा कों अरोंगी ॥३॥ ललित त्रिभंगी रस
ढरन ढरोंगी ॥ रति पति रण ब्रजपति सों लरोंगी ॥४॥

२ (११६) राग जेजेवंती (११६) होरी खेलन आई आज हो हो हो हो होरी
सरसानी मधुवन की नारी ॥ अपने पतिन तज तज धाई ॥१॥ घेर लयो
गोकुल चहुंओर ते हरि पकरवे की लाह लगाई ॥ ग्वाल बाल सब भये
हैं दुचिते ललिता गहि हलधरजू कों लाई ॥२॥ आतुर वश जब भये लालजू
भूल गये सबही चतुराई ॥ ऐसी मार परीहे परस्पर नंदपौरि यमुनां ताई
॥३॥ फेंट पकर कोऊ फगुवा मांगत कोऊ बंदन रोरी लेधाई ॥ अंचल
की ढाल मुख ऊपर नयन थकी सेनन बान चलाई ॥४॥ नवसत साज चली
सजनी सब मनो छूटे गज गहे हैं लुगाई ॥ 'सूरदास' हलधर दोऊ रोके
लगहु गुहार गोपाल गुसाई ॥५॥

३ (११६) राग जेजेवंती (११६) फाग अनुराग भरे खेलतहें गिरधारी एक युवती
मध्य राधा सुकुमारी ॥ फेंटन अबीर भरे संग संग रंग करें लिये हाथ
रंग भरी कनक पिचकारी ॥१॥ वाजत मृदंग ताल भेरि दुंदुभी रसाल बेना
बीन डफ सहनाई ध्वनि सुखकारी ॥ उत्सव गोपीजन परम मुदित मन हैंस
हैंस रसभरी गावत मीठी गारी ॥२॥ आय जुरे दोऊ टोल आनंद हृदे कलोल
छिरकत गोपगण देख देख ब्रजनारी ॥ झोरी भरले गुलाल उडवत ब्रजबाल
मच रही गगन चहुं दिश अंधियारी ॥३॥ ताही समें प्यारी धाय पकरे मोहन
जाय गहि छल बल आंख आंजत अनियारी ॥ अंग अंग लपटाय लये लाल
उरलाय यह छबि निरखत दास जन बलहारी ॥४॥

४ (११६) राग जेजेवंती (११६) होरी खेलैरी नंदको नंदन सुखदाई ॥ रगमगे
ग्वाल बाल सब नाचत कहा कहें सुंदरताई ॥१॥ किन्नरी झांझ ताल डफ
बीना मुरली महुवर वाजत माई ॥ चोवा चंदन अरगजा कुंकुम मृगमद केसर
नीर मिलाई ॥२॥ गोपन करन कनक पिचकाई सुरंग गुलालन फेंट भराई ॥
हैंस हैंस वरखत युवती यूथ पर वंसन लेत तरुणी तब धाई ॥३॥ प्रीतम
आन गहे प्यारी तब करते मुरली लई छिनाई ॥ फगुवा मगाय दियो सबहिनकों
तबही जाय मुरली भलें पाई ॥४॥ देत असीस उलट गोपीजन यह ब्रजराज

करो ब्रजराई ॥ चढ विमान इंद्रादिक आये कुसुमन की वरखाजु कराई ॥५॥
गोपवधू तन वारत सब ब्रजजन संग लगाई ॥ तिहिं अवसर तन मन धन
प्रफुल्लित रघुवीर वारनैं जाई ॥६॥

५ (॥५॥) राग जेजेवंती (॥५॥) फाग अनुराग भरे खेलति है गिरिधारी इक
जुवति मधि राधा सुकुमारी ॥ फैंटन अबीर भरे संग सखा रंग भरै लिये
हाथन रँग भरी कनक पिचकारी ॥१॥ बाजति मृदंग ताल भेरि दुंदुभि रसाल
बीना बैनु ढफ सहनाई धुनि सुखकारी ॥ उत सब गोपी जन परम मुदित
मन हैंसि-हैंसि रस भरी गावति मीठी गारी ॥२॥ आई जुरे दोऊ टोल आनैंद
हिये कलोल छिरकति गोप गन देखि-देखि ब्रजनारी ॥ झोरी भरि लै गुलाल
उड़वती ब्रजबाल मचि रही गगन चहूँ दिस अँधियारी ॥३॥ ताही समैं प्यारी
धौंई पकरे मोहन जाई गहि छल-बल औँजि अँखियाँ अनियारी ॥ अंग-
अंग लपटाई लाल उर लाय लये, यह छबि निरखति 'दासजन' बलिहारी ॥४॥

धमार के पद - राग दरबारी कान्हरो

१ (॥१॥) राग दरबारी कान्हरो (॥१॥) हा हा ब्रज नागरि आखें जिन आंजो
॥ध्रु०॥ जो आंजो तो आप आंजिये ओर हाथ जिन देहो ॥ हांसि हानि
दुहुं विध जोखो समझ बूझ किन लेहो ॥१॥ सुन हें मेरे सखा संग के
हस हंस देहें तारी ॥ बडे खिलार कहावत हें हरि आंख कराई कारी ॥२॥
परम प्रवीण जान पिय जिय की मृदु मुसिकाय निहारी ॥ कृष्ण जीवन लछीराम
के प्रभुकों रीझ भरत अंकवारी ॥३॥

२ (॥२॥) राग कान्हरो (॥२॥) खेलत फाग राग रंग बाजे मृदंग धाधि लंग
ओर आन आन बाजे ॥ कंचन की पिचकाई सु केसर भरकें करन लाई
वरण वरण वसन साजें ॥१॥ सुन सुन ब्रज वनिता बाहिर निकस निकस
आय ठाडी भई लाल भरवेकों तिनसों वचन कहत लाजें ॥ काहूकों पटपीत
गहावत काहूकों निरख मन मनावत वृंदावन चंद विराजें ॥२॥

३ (॥३॥) राग कान्हरो (॥३॥) अरी होरी खेलन जैयें सांवरे सलोनेसों ॥ बडे
बडे माट भराय केसरसों पिचकाइन छिरकैयें ॥१॥ खेलत खेलत रंग रद्यो

अबीर गुलाल उडैयें ॥ नंददास प्रभु होरी खेलत आनंद सिंधु बढैये ॥२॥

४ (॥१॥ राग कान्हरो (॥३॥) हो हो होरी ब्रजमंडल मोहन खेलें स्यामा स्याम विराजत विविध भांत भुजमे लें ॥१॥ दुहुं दिश दुंदुभी बाजें मुरज डफ मुरली सरस सुहाई ॥ तार तार कठतार कर में छूटी अनंग दुहाई ॥२॥ कोऊ गावे कोऊ नृत्य करें कोऊ देय असीस सुधंग अंग दिखावे ॥ कोऊ चंचल गति उरपति परले नयनन अंग नचावे ॥३॥ आसपास युवतिन की माला वीच फिरत बनवारी ॥ मानो जलज कलिन में अलि मिल सुंगध हितकारी ॥४॥ सघन कुंज वृंदावन अंतर फाग विचित्र बनायो ॥ मानों अखिल लोक को सर्वस्व हरि यह वार जनायो ॥५॥ यह विध छबि सों क्रीडत कान्हर वरसाने की पौरी ॥ मुरारिदास प्रभु की सुंदरता गोप बधू भई बौरी ॥६॥



५ (॥१॥ राग कान्हरो (॥३॥) मैं जब जानूंगी सुधर खिलैया होरी खेलन मेरें आवोगे ॥ हमरी चुनरीया रंगनिभिजोई अपनी पाग बचाओगे ॥१॥ चोवा चंदन अगर अरगजा मृगमद सोंधो उडाओगे ॥ जाऊं लाल बलिहारी तिहारी अपुनो कीयो पाओगे ॥२॥



६ (॥१॥ राग कान्हरो (॥३॥) आज ब्रजबधु ब्रजनाथ वृंदावन में ताल बांसुरी बजावें हो ॥ सबही को मन हुलास राग कान्हरो गावें हो ॥१॥ चोवा चंदन ओर अरगजा अबीर गुलाल उडावें ॥ केसर कुंकुमा पिचकाई भर भर छिरकें ओर छिरकावें ॥२॥ सूर के प्रभु कों गण गंधर्व जीव जिते सुरनर मुनि सब देखन आवें हो ॥ हरख हरख कें तन मन धन वारत विमाननते पुष्प वृष्टि करावें हो ॥३॥

७ (॥१॥ राग कान्हरो (॥३॥) रंग भर खेलत हें हरि होरी ॥ रत्न जटीत पिचकाई कर लीये छिरकत नवल किशोरी ॥१॥ ललिता प्रीतम को मुख मांडत केसरसों रंग बोरी ॥ विचित्र विहारि विहारिन परस्पर आनंद सिंधु झकोरी ॥२॥

८ (॥१॥ राग कान्हरो (॥३॥) मोसों होरी खेलन आयो ॥ लटपटी पाग अटपटे पेचन नयनन वीच सुहायो ॥१॥ डगर डगर में वगर वगर में सबहि के

मन भायो ॥ आनंद घन प्रभु कर दृग मीडत हैंस हैंस कंठ लगायो ॥२॥

९  राग कान्हरो  होरी खेलत लाल ललना संग ॥ विविध बन बन आंई जुर व्रज युवती बहु रंग ॥१॥ प्रथम देख हरि तन विथकित भई मूरतिवंत अनंग ॥ नयन बाण लागत उर अंतर भई विकल सब अंग ॥२॥ तज कुल लोक लाज तन की सुध कर मर्यादा भंग ॥ उमग उमग विलसें प्रीतमसों बांध गुलाल उछंग ॥३॥ कर विचार मति चारु सबे मिल अपने अपने संग ॥ जुरी जाय हरि सुधा सिंधुसों बढी प्रवाह मानों गंग ॥४॥ कोऊ लेकर पकर पिय को कर नृत्य करे थेई थुंग ॥ कोऊ पिय निज भुजसों भुज भर भेटे उरज उतंग ॥५॥ कोऊ बजावत वेणु मधुर स्वर कोऊ सरस उपंग ॥ कोऊ कर कठताल बजावत कोऊ मृदुल मृदंग ॥६॥ कोऊ ठाडी पिय मुख निरखत गहि भुज लता लवंग ॥ कोऊ लेन उगार धरत मुख पीय कपोल पर अंग ॥७॥ कोऊक निकट जाय प्रीतम के मृदु बजाय मुख चंग ॥ कर कटाक्ष हैंस हैंस उत चितवत जीत्यो दृगन कुरंग ॥८॥ चंचल चपल कहालों वरणों मेटयो मान तरंग ॥ अंग नखसिख प्रकट देखियत सिर मुक्ताफल मंग ॥९॥ कबहुंक देख देख पिय को मुख नाचत सकल सुधंग ॥ बीच बीच वचन विविध मुख बोलत कूजत मानों बिहंग ॥१०॥ कबहुंक मुख सरसिज पर फेरत अति चंचल द्रग भृंग ॥ कबहुंक धाय अधर रस पीवत चित उपन्यो रति रंग ॥११॥ यह विधि पिय संग खेलत मेटयो डसी मेन भुजंग ॥ अति रसमद कछुहि नहिं जानत भई भाव पर पंग ॥१२॥ यह लीला सुमिरत रसिक मन हरि पद रति अति अनिषंग ॥ श्रीवल्लभ पद कमल विमल मति गावत उठत तरंग ॥१३॥

१०  राग कान्हरो  खेलत फाग नंद नंदन ओर वृषभान दुलारी इतही गोप गण उत युवतीजन लोक लाज तज देत परस्पर गारी ॥१॥ वाजत सुर मंडल पिनाक वीना स्वर भेरि सरस सहनाई रुचिकारी ॥ अमृत कुंडली मदन भेरि ओर राय गिड गीडी पटह निसान हमारी ॥२॥ सरस फुलेल मेल मिल अंबर एक एक तन रहि न संभारी ॥ सुंदर करन कनक पिचकाई भर भर छिरकत सन्मुख व्हे गिरिधारी ॥३॥ तब ले ले वंसन

कर धाई राधा संग सब गोकुल नारी ॥ चहुंदिशते सब घेर हरि पकरे
 गोप बालक देत किलकारी ॥४॥ अंचल पकर चंचल दृग पोंछत अंजन
 ले आंजत आंख ढरारी ॥ गांठ जोर तृण तोर कमल मुख ऊपर सब मिल
 देत अपन पोवारी ॥५॥ फगुवा को मिस कर आंकों भर क्रीडत कुंजन कुंज
 बिहारी ॥ तोलों ले भाजी मुरली ललिता करते पुन उलट गह्वो अचरारी
 ॥६॥ तब बोली राधा हम फगुवा लियो करत बीच मुकरत कहारी ॥ तोक
 मंगाय दियो फगुवा हस कहत सबनसों मुरली देहु हमारी ॥७॥ उडत गुलाल
 सुगंध घोख में परम रंग बाढ्यो अति भारी ॥ बरखत फूल देवगण हरखत
 प्रेम मगन वहे निरख जात बलहारी ॥८॥ देत असीस सकल गोपीजन चिर
 जीयो ब्रजराज सवारी ॥ जाके राज करत निशदिन आनंद घोख मे होहु
 सकल सुखकारी ॥९॥ यह विध खेल फाग अनुराग बढ्यो आये नंद की
 पोर जहंरी ॥ आये मन भाये सबके रघुवीर देख बल बल जात तहांरी ॥१०॥

धमार के पद - राग नायकी

१ (११) राग नायकी (११) ब्रज में खेलैरी धमार मोहन प्यारोरी नंदको ॥
 संग बनी रस ओपी गोपी कह्यो न परत कहु बाढ्यो या सुख सिंधु उडुचंदको
 ॥१॥ वाजत ताल मृदंग उपंग किन्नरी ऊपर बाढ्यो सुख आनंदको ॥ नंददास
 प्रभु प्यारे कौतुक देखत ओर शोभा गिरिधर मेन फंदको ॥२॥

२ (११) राग नायकी (११) नारी गारी दे गई वे माई हो होरी आई ॥
 मदन मोहन पिय बांसुरी बजाई श्रवण सुनत गृह तज जुरधाई ॥१॥ चंद्रावलि
 अंजन ले आई पकर मोहनजु की आंख अंजाई ॥ फगुवा बिन दीयें कैसें
 जेहो धोंधी के प्रभु कुंवर कन्हाई ॥२॥

३ (११) राग नायकी (११) होरी रंग भर गावें सोई खिलार डफ लिये बजावें ॥
 गाय गाय के रंग उपजावे जोई रीझे ताकों फेर सुनावे ॥१॥ सबे अरगजे
 मरग जे बागे नयन से न दे रस उपजावे ॥ कहियत नायक दक्षण-लक्षण
 आप गदाधर नाम कहावे ॥२॥

४ (११) राग नायकी (११) लाल गुलाल की मार रस भरे खेलत हरि होरी ॥

रत्न खचित पिचकाई सोधे भर छिरकत नवल किशोरी ॥१॥ ललिता मोहन को मुख मांड्यो केसर सोंपट बोरी ॥ विचित्र बिहारी बिहारिण परस्पर आनंद सिंधु झकोरी ॥२॥

५ (॥१॥ राग नायकी (॥१॥ आलीरी भरत मोहन जित तित मोकों गोहन लाग्यो डोले ॥ मांडत बदन अबीर मुठीले औचक आय अनबोले ॥१॥ हों दृष्टि बचाय चलत हटसों पट गहि घुघट खोले ॥ गिरिधर उर धर सब रस लीनों वस कीनी विन मोलें ॥२॥

६ (॥१॥ राग नायकी (॥१॥ खेले खेले मोहन कुंज गली ॥ रंग रंगीली वृषभान सुता संग राजत बहुत अली ॥१॥ ताल मृदंग बांसुरी वीना मधुरे मिल बजावत चली ॥ तेसोही स्वर गावत सब सुंदरी रंग रंग रली ॥२॥ कर गुलाल राधे जब छिरकत शोभित मानों कमल कली ॥ कुंज बिहारी जू अरगजा केसर छिरकी भांत भली ॥३॥ सर सरिता खग मृग सुन मोहें सबहिन अपनी गति बदली ॥ गुण रूपके पिय प्यारी को मुख निरखत हैं सगली ॥४॥



७ (॥१॥ राग नायकी (॥१॥ खेलेरी धमार मोहन प्यारी नंद को ॥ संग बनी रस ओपी गोपी कह्यो न परत कछु बाढ्योरी सुख सिंधु उडुचंद को ॥१॥ बाजत ताल मृदंग उपैंग किन्नरी ऊपर बाढ्यो सुख आनंद को ॥ नन्ददास प्रभु प्यारे कौतुक देखत और शोभा गिरिधर मैन फंद को ॥२॥

८ (॥१॥ राग नायकी (॥१॥ लाल गुलाल की धूम मची है रसभर खेलत है हरि होरी ॥ रतन जटित पिचकाई कर लिये छिरकत रसिक नवल किसोरी ॥१॥ ललिता प्रीतम को मुख मांड्यो केसर सों पट बोरी ॥ 'बिचित्र' बिहारी देखि रीझे परस्पर आनंद सिन्धु झकोरी ॥२॥



९ (॥१॥ राग नायकी (॥१॥ सुनी डफ दौरी आई बाल कहां जेहो लाल ॥ मुरली छिनाई लई स्यामजु बेंदी दीनी भाल ॥१॥ काहु कर अरगजा लीनो काहु कर अबीर गुलाल ॥ कोऊ अंगुरिन करि आंजत अंजन कोऊ पहरावत माल ॥२॥ भली भई हरि नीके पाये पूजवत मनके ख्याल ॥ 'नंददास'



प्रभु छांड़ि हठीले दूटेगी मोतिनमाल ॥३॥



१० (१०) राग नायकी (१०) होरी खेलियै हो जुबती बृंद में जाई ॥ अनुरागी पागी जु प्रेम सों नब जोबन अधिकाई ॥१॥ एकु-एकु तैं नवल निपुन बनी मनमथ मद अकुलाई ॥ ब्रज तरुनी हरनी दृग आई करिनो गति समुहाई ॥२॥ रहि न सकेँ रोकेँ टोकेँ हूँ निकसे अति अकुलाई ॥ नव नागरि नब नागर तासौं भूषण बसन बनाई ॥३॥ अंतरंग दस छैकु सखी पै कुँमकुम कलस भराई ॥ सुरंग गुलाल लये ओलिन में सौँधे मुठी बधाई ॥४॥ सनमुख श्री बृषभानु नंदिनी नख सिख लखि छबि छाई ॥ बारि पुहुप अंजुली प्यारी पै पुनि-पुनि लेति बलाई ॥५॥ ललिता बूझति कौन गाँम और अपनों नाम बताई ॥ अबलौं मिली न कबहूँ देखी चपल दृगंचल माई ॥६॥ सखी संग की अधिक सयानी बोली मृदु मुसिकाई ॥ नंद गाँम नंद रावर ही में बसें परम पद पाई ॥७॥ राधे जू कौं सोज फाग की पठई जसुमति माई ॥ पुलकित तन कीरति सुकुमारी तन-मन मोदन माई ॥८॥ अरी भट्ट सुनि सुंदर तेरो रूप अनूपम माई ॥ स्याम अंग में सहज लुनाई हरि की परति लखाई ॥९॥ तब स्यामा मथि मृगमद मलयज प्यारी उर लपटाई ॥ कठिन उरज पानि परसत हीं जायो अनंग तन आई ॥१०॥ केसर खोर संवार भाल दै बंदन बिंदु बनाई ॥ कोमल कर कर सुभग कपोलन सुरंग गुलाल लगाई ॥११॥ फिरि कर लई कुँमकुमा रंग सौं भरि कनक पिचकाई ॥ तकि-तकि सब ब्रज जुबती छिरकी बहुत अबीर उड़ाई ॥१२॥ ता धूंधरि में नव स्याम जू प्यारी उर लपटाई ॥ आलिंगन परिरंभन दीनों गुपत प्रीति प्रकटाई ॥१३॥ हियै हरखि अति बढ्यों दुहुँन के पूरी मन के भाई ॥ ब्रजनारी गारी गाबति हैं आनंद राई मलहाई ॥१४॥ पलट भेख निज नंद लाड़िले हो हो बोले आई ॥ आधिक बार अति चतुर ग्वार सब रही अति अचरज पाई ॥१५॥ अद्भुत हास मच्यो जुबतिन में रंग रख्यो सरसाई ॥ काल्हि हमारे बगर सबै तुम खेलौ दँडा रस आई ॥१६॥ यह बिधि खेलति फिरति सकल ब्रज फागुन के गुन गाई ॥ 'ब्रजपति' चरन कमल रज बंदित ब्रज जन सीस नबाई ॥१७॥

११  राग नायकी  होरी कान्हु पियारी रगमगे होरी खेले री ॥
उड़त गुलाल मानो अरुन उदित रवि कमल कनक की बेले री ॥१॥ जमुना
तट द्रुम कुसुम माधुरी करी सुगंध की रेले री ॥ 'ब्रजाधीश' प्रभु अलि
धुनि गावत गावत रतिपति छबि पेले री ॥२॥

धमार के पद - राग अडानो

१  राग अडानो  गावत धमार आई ब्रज की सुकुमार नार ॥
चित्र अंकित डफ संवार तृण टकोर अंगुरी द्वार बजवत रिझवार ग्वार ॥१॥
सुन निकसे सुघरराय अर्भ कलीने बुलाय शंख शृंग चंग उपंग महुवर बंसी
सहनार ॥ घुघरु घंटा घडियाल कंस ताल कठ ताल दुंदुभी मृदंग राग रंग
होत नंद द्वार ॥२॥ चोवा मृगमद गुलाल मुख मंडित किये गोपाल केसर
के सुत न पुंज कंचन कर सीसवार ॥ पिचकाई करन लाई धारा छूटत
सुहाई सहचरी समीप आय छिरक रही हार हार ॥३॥ अति विचित्र बाल
मित्र विरहृत मिल युवति युथ गावत हैं सुर संयुत होरी के गीत गार ॥
मुरारी दास प्रभु गोपाल फगुवा दीनो संभार दे असीस उलट चली रूप
माधुरी निहार ॥४॥

२  राग अडानो  आवें रावल की ग्वार नार गोकुलते खेल ॥
शिथिल अंग लज्जित मेन मोहन रंग रंगे नयन पीक लीक अरचि एन किये
रति केल ॥१॥ अंस न अवलंब पांति प्रफुल्लित लपटात जात हसन दशन
कांति जुही ज्यों न रही फेल । पुलकित इत रोम पांति सोंधे सब सग बगात
केसर के रंग सिंधु प्रेम लहरि झेल ॥२॥ सब वेश नव किशोरी मन्मथ की
मटक मोरी प्रीतम अनुराग फाग बाढी रंग रेल ॥ ब्रजपति रिझ बार पाय
अचयो रस मन अघाय भोन गोण काज राज हंस न गति पेल ॥३॥

३  राग अडानो  नंदलाल खेलें फाग सब मिल भर भर अबीर
गुलाल ॥ एक गोरी एक सांवरी सूरत करत नये नये ख्याल ॥१॥ प्यारी
कर कठताल बजावत बिच बिच मोहन मुरली रसाल ॥ रसिकराय रस वश
भये खेलत मोहि रही ब्रज बाल ॥२॥

४ (४४) राग अडानो (४४) गावें धमार तान तरंग वाजें उपंग चंग खेलत फाग रंगे ॥ केसर चोवा गुलाल ले आई ब्रज की बाल कंचन तन विविध वसन मोतिन भर मंगे ॥१॥ सोंधो ले मुख लगाय नयनन काजर सुहाय परसत सब अंग सुधा सिंधु मिली गंगे ॥ वल्लभ पिय रस विलास केलि कला सुख निवास तन मन धन नोछावर वारों कोटि अनंगे ॥२॥



५ (४४) राग अडानो (४४) खेलत हैं ब्रज में हरी होरी ॥ ग्वाल बाल ललना संग लीने देत कूक मिलब्रज की खोरी ॥१॥ अरगजा वाद कुंकुमा केसर चंदन वंदन रोरी ॥ सरस फुलेल अबीर अरगजा सुरंग गुलाल लियें भर झोरी ॥२॥ सुर मंडल मुख चंग पखावज विच मुरली मधुर ध्वनि थोरी ॥ श्रवण सुनत आई ब्रज सुंदरि संग लियें वृषभान किशोरी ॥३॥ गावत फाग राग केदारो नाचत रंग भरे दुहु ओरी ॥ तिहिं अवसर पकरे श्रीदामा आंजत नयन कहत हो होरी ॥४॥ रत्न जटित आभूषण अंबर और दर्ई हैंस पीत पिछोरी ॥ देत असीस चलीं सब गोपी नंद सुवन युग युग जीवोरी ॥५॥ कुसुमन वृष्टि करत इंद्रादिक आये खेल फेर सिंध पौरी ॥ गोकुल नाथ वारत तन मन धन बल बल बल बल की नोरी ॥६॥



६ (४४) राग अडानो (४४) ए नैना नैननि सौं खेलै होरी ॥ लाल लाड़िली गुलाल उड़ावति पलकन की करि झोरी ॥१॥ ऊघरत, मूंदत मुठि चलावति, कर-कर बैनन चोरी ॥ 'हरिबल्लभ' प्रभु खेलै होरी आनंद सिंधु झकोरी ॥२॥



७ (४४) राग अडानो (४४) खेलै-खेलै मोहन कुंज गली ॥ रंग-रंगीली बृषभानु सुता सँग राजति बहुत अली ॥१॥ ताल मृदंग बाँसुरी बीना मधुरे मिलि बजावति चली ॥ तैसोही सुर गावति सब सुंदरि रंग-रंग रली ॥२॥ कर गुलाल राधे जब छिरकति सोभित मानों कमल कली ॥ कुंज बिहारी जू अरगजा केसर छिरकी भाँति भली ॥३॥ सर सरिता खग मृग मुनि मोहें सबहिन अपनी गति बदली ॥ गुन रूप पिय प्यारी को मुख निरखति हैं सगली ॥४॥

८ (४४) राग अडानो (४४) नवरंग पिय नवरंग प्यारी सौं बनि-ठनि हिलमिलि

खेलें फाग ॥ नवरँग पीत-बसन नवरँग कटि किंकिनी नवरँग लालसिर
बनी है पाग ॥१॥ नवरँग सखा संग बजावत ताल मृदंग, नवरँग राधिका
ठाड़ी है बाम भाग ॥ 'नंददास' प्रभु छाँटति छिरकति रस भरे गावें अडानो
राग ॥२॥

९  राग अडानो  हों आज होरी खेलौंगी नंद-महर के लाल सों ॥
चोवा चंदन मृगमद केसर भरौंगी अबीर गुलाल सों ॥१॥ कंचन की पिचकाई
भरि छिरकावौंगी मदन गुपाल सों ॥ 'ब्रजपति' के संग खेलौंगी सब निस
विलसौंगी रसिक रसाल सों ॥२॥

१०  राग अडानो  हरि सँग चलो खेलिए होरी ॥ औसर बड़ी
लाज तजि गावति हो-हो होरी कहौ री ॥१॥ देखे जाई जहाँ हरि खेलति
लोक बेद काँनि ढहो री ॥ हास बिलास प्रफुलित कमल मुख इकटक निरखि
प्रमोद लहो री ॥२॥ ऐसे समैं बिना हरि संगम घर रहिबौ लगति विष
सौ री ॥ सब व्रत छाँड़ि अनन्य पुष्टि पथ एकु व्रत काहे न गहौ री ॥३॥
पिय की प्रीति जानि अपुने जिय आनि एकु रस ले निबहौ री ॥ जा विनु
चलै इक छिनु नाहीं ता कारन सब क्यों न सहौ री ॥४॥ वीतति है छिनु
छिनु जोबन सुख अति दुरलभ सखी समौ यह होरी ॥ कहा विलंब करत
हो पिय ढिग जैवे को ब्रज नारि अहो री ॥५॥ चलो दिखाऊ मोहनी मूरति
यह आनंद अनत कित होरी ॥ अंग अंग की अमित माधुरी पीवति यह
गुन धरन चहौ री ॥६॥ अब ही प्रगट भयौ है यह रस भागिन बहुरि नहिं
लहौ री ॥ सुंदर स्याम मिलो नीकै करि काहे को तन ताप दहौ री ॥७॥
अब लग यह ब्रज माँहि विलसीवों सपने हूं मैं हुतो न होरी ॥ जाई जूरौ
अपुने जीवन सों जीवन कौ फल आजु लहौ री ॥८॥ यह बिधि बचन सुनति
ब्रजनारी चली बाई खेलनि सुख होरी ॥ श्री बल्लभ पद रैनु 'रसिक' ध्यान
धरों यह दुरलभ होरी ॥९॥

११  राग अडानो  होरी खेलति रंग रह्यो हो ॥ चोवा चंदन अगर
कुंमकुमा बिथिनि जात बह्यो हो ॥१॥ आँखिन में जिनि डारौ मोहन कितनी
बेर कहयौ हो ॥ सखियन सबै सिखाई राधिका तब नंदलाल गहयौ हो ॥२॥

ये बातें अब सुधि करौ मोहन बेचन जात दख्यो हो ॥ अबीर गुलाल अरगजा डारयो, सब नंदलाल सख्यो हो ॥३॥ अरस-परस पिय के सँग बिहरति तन कौं ताप गयौ हो ॥ बौहीत कहा अब कहत 'गदाधर' लोचन लाख लख्यो हो ॥४॥

धमार के पद - राग केदारो

१ ॥ राग केदारो ॥ ब्रज में होरी खेलें नंद नंदन जग वंदन ॥ उतही गोप मध्य बल मोहन इत शोभित राधा तरुणी गन ॥१॥ तन सुख पाग लाल सिर राजत केसर रंग वागो पहरे तन ॥ सारी सरस लाल कसूभी रंग पहरे राधा तन प्रफुल्लित मन ॥२॥ सन्मुख दीठ जोर दोऊ जन प्रकट करत उरको सनेह धन ॥ अति अनुराग भरे खेलन कों आई जुर किलकत दुहुं टोलन ॥३॥ जब गोपाल बहुले देत सखीन बहुभांत अतोलन ॥ कनक कलश केसर के रंग भर पिचकाई तकत छिरकत सबन ॥४॥ तब राधा चंद्रावलि शोभित ललितादिक बोले तिहि छिन ॥ ले ले कर बंसन धाई मुख मांडत ले केसर सुंदर धन ॥५॥ ताल मृदंग भेरि महुवर डफ डोल आदि बाजें सब बाजन ॥ चंग उपंग बांसुरी विच विच बाजत पैरि सुनत ध्वनि न कोऊ कानन ॥६॥ चोवा मेद जवाब साख गोरा मृगमद एक करन ॥ अगर अरगजा अंबर घस घस अतर कुंकुमा सों लागे मलन ॥७॥ कर विचार ललितादिक मन में पकरे जाय रबक संकरषण ॥ ले अबीर कीनों गुलाल सम विविध भांत रति लागे करन ॥८॥ एक ओर हलधर ब्रज बालक एक ओर युवती सब यूथन ॥ बीच बीच ध्वनि राख दुहुं दिश गारी देत गोप गोपीजन ॥९॥ फगुवा के मिस ललितादिक ऐंचत मुरली ओर पीत वसन ॥ मोल मंगाय विविध भूषण पट देत सबन फगुवा नंद नंदन ॥१०॥ न्हान चले यमुना सुंदरवर कोटी काम मद लगे दलन ॥ चढ विमान न देखत बरखत कुसुम सुर भूले घरन ॥११॥ अंचल बार बार मुख निरखत सुंदर स्याम कमल दल लोचन ॥ तिहिं अबसर रघुवीर धीर पै बार-बार लागे जल पीवन ॥१२॥

२ ॥ राग केदारो ॥ खेलत मोहन राधा होरी ॥ इतही गोपिका जुर

जुर आई उत ग्वाल मंडली चांचर जोरी ॥१॥ पिय प्यारी पर प्यारी पिय पर अबीर गुलाल की झोरी ॥ कृष्णदास बल जाय इन पर स्यामा स्याम की बनी हे जोरी ॥२॥

३ (॥१॥) राग केदारो (॥३॥) रसकों रसीलो लाल एंडोई डोले ॥ ब्रज की बिधिनि बीच होरी खेलै ॥ केसर रंग अरगजा घोरै, पिचकाईन रंग रैले ॥१॥ सखी समाज झुंडन बीच रंग रङ्गों गुन प्रवीन रस काम को पेले ॥ 'सरस रंग' पिय रस भरी राधे सुघर तान सँग झेले ॥२॥

४ (॥१॥) राग केदारो (॥३॥) रुषि कै खेलति मोहन राधा होरी ॥ इत हि गोपिका बनि-बनि आई उत ग्वाल मंडली चांचर जोरी ॥१॥ पिय प्यारी पै प्यारी पिय पै डारति अबीर गुलाल की झोरी ॥ 'कृष्णदास' बलि जाई जुगल पै स्यामा स्याम की बनी हैं जोरी ॥२॥

५ (॥१॥) राग केदारो (॥३॥) रसिक गोवर्धन धरन खेलत होरी संग लिये बृज बालक हरि हलधर की जोरी ॥१॥ चले सूर सुता तीर बृंदावन माई ॥ बाजत मृदंग उपंग चंग बांसुरी सहनाई ॥ झांझि डफ ताल भेरि लागत सुहाए ॥ मानो अनंग द्वार बाजत बधाये ॥३॥ उड़त गुलाल रंग अबीरन झोरी ॥ तारी दे दे कहेत सब बोलो हो हो होरी ॥४॥ किलकारी दे दे नाचे ग्वाल रंग भरे ॥ कंचन पिचकाई रंग भरी कर धरे ॥५॥ बरसाने की ग्वालिनी सुनि सब आई ॥ गोरी अति भोरी सब बनी एकदाई ॥६॥ तिनमें दामिनी सो द्वे सोहे सकुमारी ॥ चंद्रावली अरू वृषभान दुलारी ॥७॥ टोलनि टोलनि घेरि चहुँदिसा आई ॥ पकरे सबन मिलि कुमर कन्हवाई ॥८॥ चंद्रावली गहेवलि सखा सब भाजे ॥ कुम कुम मुख मीडिबो लोचन आजे ॥९॥ कनिक कलस केसरि भरि सीस नाए ॥ तारी दे कहेत हम तुम भले पाए ॥१०॥ सोंधो मुख लपटाए मन भाए कीने ॥ फगुवा ले मन मान्यो पाछे जान दीने ॥११॥ मोहन की गूथी रचि फूलन सो बेनी, मुरली लई स्यामा मृग नैनी ॥१२॥ ललिता रुचि सों पेहेराई तनसुख सारी लालन को पीत पटू आप लीयो प्यारी ॥१३॥ पिय को प्यारी को गांठि जोरि

जु बनायो, निरखि निरखि सखीय सुख पायो ॥१४॥ यह सुख गुढ़ रस
कहेत न आवे, श्री बल्लभ श्री बिट्ठल पद बलि दास गावे ॥१५॥

६ (१६) राग केदारो (१६) होरी या बगर में माच रही री हों पनिया भरनि
कैसें जाँऊ री ॥ लाज लिये मेरे घूँघट पट की हों कैसेक निकसन पाँऊ
री ॥१॥ मिसिहि मिसि रँग भरति साँवरों तिन सों कहा कहाँऊ री ॥ नागरी
कान्ह छूबे जिनि मानों न्याव कहति सब गाँव री ॥२॥

धमार के पद - राग बिहाग

१ (१६) राग बिहाग (१६) रंगन रंग हो हो होरी खेलें लाडिलो ब्रजराज
को ॥ सांवरे गात कमल दल लोचन नायक प्रेम समाज को ॥१॥ प्रथमहीं
ऋतु वसंत बिलसे हुलसे होरी डांडो रोप्यो ॥ मानों फाग प्राण जीवन धन
आनंदित सब ब्रज ओप्यो ॥२॥ मृगमद मलय कपूर अगर केसर ब्रजपति
बहु घोर धरे ॥ सरस सुगंध संवार संग दीये रंगन कंचन कलश भरे ॥३॥
प्रेम भरी खिलवारन के हित सुख के साज सिंगार कियें ॥ भाग्य अपार
जसोदा मैया बार-बार जल वार पियें ॥४॥ भई हे रंगीली भीर द्वारन प्रीतम
दरशन कारनें ॥ अब बन ठन निकसे मंदिर तें कोटि मदन कीये वारनें
॥५॥ फेंट भराय लई जननीपें आज्ञा लई ब्रज ईशतें ॥ नंदराय तब रत्न
पेंच रचि बांध्यो गिरिधर शीशतें ॥६॥ तापर मोर चंद्रका सोहे ग्रीव ढरन
लहकात हैं ॥ मदन जीत को बानो मानों रूप ध्वजा फहरात हैं ॥७॥ तेसेई
सखा संग रंग भीने हरख परस्पर मन मोहे ॥ वरण वरण युवतिन के कमल
मानों अंबर दिन मणि संग सोहे ॥८॥ आनंद भर बाजे बाजत हैं नाचन
मधु मंगल रंग किये ॥ हरि की हसन दशनन की किरण नयनन की ढरन
मन मोहि लिये ॥९॥ कोऊ द्वारे कोई चढ अटा कोऊ खिरकिन वदन सुहाये ॥
गोकुल चंद्रमा देखन को मानो चंद्र विमानन चढ चढ आये ॥१०॥ अबीर
गुलाल उडाय चले देखत जेसें सब कोऊ हरखे ॥ छिरकत फिरत छेल
नवरंगी कहा कहिये रस नव घन बरखे ॥११॥ राधा दृष्टि परत नहीं मोहन
निरख नयन मन घूमें हों ॥ सन्मुख है पिय कल्पतरुवर महाभाग्य रस
फल झूमेहो ॥१२॥ प्रमदा गण मणि स्यामा रसिक शिरोमणि सों खेलन

आई ॥ दुहुंदिश शोभा उमग रंग मच्यो ॥ मान वेणु ध्वनि लाई ॥१३॥
 नयनन बेनन खेलत वधू गेंदुक नवलासिन मार मची ॥ कमल नयन कर
 ले पिचकाई मृग नयनन सेनन भ्रूंह नची ॥१४॥ छिरकी छेल छबीली भांतन
 मन हरणी जोवन बारी ॥ सब अंग छींट बनी पिय वसनन फुलीं छबि फुलवारीं
 ॥१५॥ पहोप पराग उडाय दाव रचि अछन अछन नेरे आई ॥ दौर दामिनीं
 घन घेरयो पिय बात बनीं सब मन भाई ॥१६॥ कोऊ मुख मांडत दे गल
 बइयाँ कोऊ पोंछत आछी छबि सों ॥ अलकन भ्रोहन मूल रंग रह्यो शोभा
 कहिय न जाय कवि सों ॥१७॥ कोऊ रचि रुचि पान खवावत पुलकित
 अधरन परस कियें ॥ कोऊ भुज गहि डहकाय फगुवा माँगत पिय नयनन
 चैन दिये ॥१८॥ राधा नागरि स्याम सुंदर पर प्रीत उमंग केसर ढोरी ॥
 महा मनोहर ताकों राजा अभिषेक किये कहें हो हो होरी ॥१९॥ सरस्वती
 सहित महामुनि मोहे यह शोभा दंपति हेरे ॥ कहि भगवान हित रामराय
 प्रभु हँस चितवन वसी मन मेरे ॥२०॥

२ (११) राग बिहाग (११) एक दिसवर ब्रज बाला एक दिस मोहन मदन
 गोपाला ॥ चांचर देत परस्पर छबिसों कही न परत तिहिं काला ॥१॥
 कुसुम धूर धूवर मध्य चांदनी चंद किरण रही छाये ॥ तेसोहि बन्यो गुलाल
 गगन कछु वरणत वरण्यो न जाय ॥२॥ सुर मंडल डफ वीना झीना बाजत
 रसके ऐना ॥ चांचर में चाचर सी चितवत छबीली त्रियन के नयना ॥३॥
 बन्योहे चटक कठताल तार ओर मृदुल मुरज टंकार ॥ तिन संग रंग रंगीली
 मुरली बिच अमृत की धार ॥४॥ बढ्योहे दुहुं दिश गुण बितान रस गान
 सुनत रस मूले ॥ मंद मंद आवन उलट न मानों प्रेम हिंडोरे झुले ॥५॥
 लटक लटक आवत छबि पावत भावत नार नबेली ॥ प्रेम पवन बश डोलत
 मानों रूप अनूपम वेली ॥६॥ चारु चलन में मणिमय नूपुर किंकिणी कलरव
 राजे मानों भेद गति पाछें आछ मधुर मधुर ध्वनि छाजे ॥७॥ चमक चमक
 दशनावलि ध्रुति फिर अधरन मांझ समाई ॥ दमक दमक दामिनि छबि पावत
 चंद्रन में दुरजाई ॥८॥ अनेक भांत राग रागिणी अनुराग भरे उपजावें ॥
 सुन विथके शिव नारद शारद तेहू पार न पावें ॥९॥ रस कदंब में बोरी

गोरी नित उठ खेलन आवे ॥ नंददास जाके भूरि भाग्यजे विमल विमल
यश गावें ॥१०॥

३ (११) राग बिहाग (११) लाग्यो रे लाग्यो मोसों होरी खेलन लाग्यो ॥
जोबन मत्त कहा तू डोलत अबीर डार कित भाग्यो ॥१॥ नई खिलार खेल
ताहीसों जाके प्रेमरस पाग्यो ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु पिय सदाही
रहत अनुराग्यो ॥२॥

४ (११) राग बिहाग (११) भली भई ब्रज होरी आई घर आये घनस्याम
री ॥ चोवा चंदन ओर अरगजा वे राधा के काम री ॥१॥ धन्य तेरे भाग
सुहाग लाडिली ओर न दूजी बाम ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभुसों ज्यो
सीता मिली राम ॥२॥

५ (११) राग बिहाग (११) वरसाने की ग्वालिनी ओर खेलत फाग वसंत
हो ॥ शंक न मानें काहूकी मात पिता सुत कंत हो ॥१॥ चंद्रभागा चंद्रावली
मध्य नायक राजत राधा ॥ सहज स्वरूप सुहावनो शोभा सिंधु अगाधा
॥२॥ सकल साज संग ले चली आई बट संकेत ॥ पठई सखी एक आपनी
नंद कुंवर के हेत ॥३॥ चली सब चतुर सिरोमणि ओर खेलनकों रस फाग ॥
रसिक कुंवरि वृषभान की तुमसों अति अनुराग ॥४॥ रामकृष्ण हंस यो
कह्यो सुनो हो सखा श्रीदाम ॥ हमपें आय सबे जुरीं ओर तिनमें अति
से भाम ॥५॥ वेग चलो सब ग्वाल ले दिखाओ अपुने हाथ ॥ जेसैं बहोरिन
आवहीं छांड आपनों साथ ॥६॥ अनंत अबीर गुलाल ले देहु निसान घुराई ॥
बहुत कलश सोंधे भरे कुंकुम भर पिचकाई ॥७॥ दलवावर ज्यों देख सन्मुख
आई धाई ॥ मेघ घटा ज्यों वरखहीं अद्भुत खेल मचाई ॥८॥ कमलन ले
ले नवलासी कुसुम गेंद कर मारी ॥ मुरि भाजे बल मोहना हो हो कहें
ब्रजनारी ॥९॥ चंद्रावलि बल जू गहे स्याम गहे श्री स्यामा ॥ सखा गए
सब भाज कें लियो छिनाय दमामा ॥१०॥ संकरषण सोंधे भरे स्याम भरे
सुकुमारी ॥ आनन सीस सवारिकें भेष बनायो नारी ॥११॥ रस वश भई
ब्रजसुंदरी लीला कहीय न जाई ॥ चतुर्भुज प्रभु इन वस किये गिरि गोवर्द्धन
राई ॥१२॥

६ ॥ १६ ॥ राग बिहाग ॥ १७ ॥ जब हरि हो हो होरी गावें ॥ तरुणी यूथ तरणि
तनया तट आरज पथ त्यज आवें ॥१॥ निरख नयन मनमोहन पियको
अपने नयन सिरावें ॥ विविध कुसुम की दाम स्थाम कों रबक जाय पहरावें
॥२॥ अति कमनीय सो कमल वरण की कटि काछनी कछावें ॥ मंजुल
मोर मुकुट मकराकृत मरुवट मुखहि बनावें ॥३॥ ताल मृदंग मुरज डफ
महुवर बीना जंत्र सजावें ॥ नव नागर नटे वष धरें मध्य ठाडे वेणु बजावें
॥४॥ कोऊ झील कोऊ मंद घोर स्वर तान न गाय रिझावें ॥ ललित त्रिभंगी
नवल रंगीलो अंग सुधंग नचावें ॥५॥ हाव भाव सों निपुण नागरी नाना
भांत हँसावें ॥ रीझ रीझ तृण तोर सोर कर युग कपोल परसावें ॥६॥
कोऊ एक सन्मुख बैठ लाल के अंचल अवनि बिछावे ॥ ताहि आपनो पीतांबर
मन मोहन विहस उढावें ॥७॥ कोऊ एक केसर कुसुम वारि घस घोर कलश
भर लावें ॥ रत्न जटित पिचकाई भर भर पियकों छिरक छिरकावें ॥८॥
चोवा मेद जवाद साख गोरा घनसार मिलावें आपुस मांझ मतो मिल कर
ले मोहन मुख लपटावें ॥९॥ एक पिया को वेष पलट सिर फेंटा ऐंठ बधावें ॥
वरुहा पिच्छ धर नूतन मंजुरी दक्षण दिश थिरकावें ॥१०॥ कनक कटि
पट फेंट बांध कें कटि तट वेणु धरावें ॥ सेली वेंत अंस धर ताकों मन्मथ
मंत्र पढ़ावें ॥११॥ कोऊ एक मेन महा मदमाती आलिंगन दे आवें ॥ निरलज
भई परिरंभण दे दे अधर सुधारस प्यावें ॥१२॥ तब ललिता ले मोहनजू
कों नारी को वेष बनावें ॥ नवसत द्वादश साज लाडिली नवल पियापें पठावें
॥१३॥ अति सुकुमारि सलोनी स्यामा रति गुण ग्राम दृढावें ॥ निरख हरख
पुलकित तन दंपति ॥ अतुलित प्रेम बढावें ॥१४॥ अद्भुत एक विचित्र माधुरी
सो पिय कों समझावें ॥ हँसन लसन चितवन मिलवन में सहज उरझ सुरझावें
॥१५॥ एक सखी ले बूका वंदन भर भर मुठी चलावें ॥ सुरंग गुलाल
उडाय अधिक सो लोचन लाज नसावें ॥१६॥ नवल कुसुम की ले नवलासी
कमलन मार मचावें ॥ प्रेम छकी डोले मन खोलै हो हो हो कर धावें ॥१७॥
मगन भई आनंद सिंधु में तन मन सुधि विसरावें ॥ ब्रजजन मीन भये रस
सागर अपनी तृषा बुझावें ॥१८॥



७ ॥ राग बिहाग ॥ स्यामाजू होरी खेलन आई ॥ ललिता चंद्रभगा
 चंद्रावलि सखी अनेक सुहाई ॥१॥ जब यह बात सुनी जसोदा जु अरघ
 पामड़ें दीनें ॥ लाल भामती जोरी लख मन मांझ बधाई कीनें ॥२॥ फूली
 फूली फिरत सखी सब पकरन मदन गोपालें ॥ फिर फिर कहत रोहिणी
 अब जिन भरो नंद के लालें ॥३॥ यह सुन ललिता ओर चंद्रावलि बलदाऊ
 गहि लीनें ॥ मृगमद आड संवार मांड मुख भौपे बिंदा दीनें ॥४॥ भीजी
 नाना विधि के रंगन बोलत हो हो होरी ॥ अब गहि लेहु चलो मोहन कों
 यों दुर कहत किशोरी ॥५॥ चली दौर चहुंदिश तें सुंदर चढ गई अटा
 अटारी ॥ बैठे हुते जहां मन मोहन घेर लिये चित्र सारी ॥६॥ पकरयो
 प्यारो प्यारी छलकर भेख सखी को कीनो ॥ आंख आज केसर मुख मांड्यो
 मृगमद बेंदा दीनों ॥७॥ एक सखी कुसुमन सों कबरी नाना विधि जु संवारी ॥
 सिंदूर मांग भरी ता ऊपर मोतिन की लर न्यारी ॥८॥ नीलांबर पहरायो
 रीझ पहराई मणिमाला ॥ स्यामा याको नाम धर्यो है यों कहत मुदित ब्रजबाला
 ॥९॥ सब सहचरी मिल लाई ताकों नंदरानी के पास ॥ यह सुंदर हमलाई
 हें जु घनस्याम मिलन की आस ॥१०॥ देख रूप ललचाय जसोदा करत
 बहुत मनुहारी ॥ बार बार नोंछावर कर कें पीवत है जलवारी ॥११॥ जब
 यह भाव लख्यो सब ही मिल सखी भेख है कीनों ॥ नाना विध पटवार
 ओर मन मान्यो फगुवा दीनों ॥१२॥ भये दूहून के भाये मनके पिय प्यारी
 रस भीने ॥ जे जे हुती कामनां मन में जैसी विधि सुख दीनें ॥१३॥ छाय
 रह्यो अनुराग परस्पर कहा वरनें कवि कोंन ॥ देव विमानन फूलन वरखत
 शोभित है नंद भोन ॥१४॥ चतुर सखा श्रीदामा तब एक भेष सखी को
 लायों ॥ सखी यूथ में आय मिल्यो यह भेद न काहू पायो ॥१५॥ मिली
 दौर चंद्रावलि तासों भटू भटू कहि टेरी ॥ आलिंगन दे ढिंग बैठारी मुदित
 बदन तन हेरी ॥१६॥ जान गई यह भेख कपट को सकुच रही मनही में ॥
 विहंस मिली प्यारी प्रीतम सों ज्यों दामिनि घनही में ॥१७॥ स्यामा स्याम
 दोऊ सुख विलसत प्रेम बुद्धि अरुझाने ॥ 'सूरदास' ब्रजवासिन के वश
 ओर कछू नहिं जाने ॥१८॥



८ (११) राग बिहाग (११) हो हो हो कही खेलत होरी अब तो रंग मच्यो हे ॥ कहा कहिये सब सिमिट गई मनमोहन रंग रच्यो हे ॥१॥ खेलत ही खेलसो कीनों अब कहा कछू बच्यो हे ॥ रस गारी नारी दे गावैं अब तो उधर नच्यौ हे ॥२॥ चंद्र बदन मांडत गुलालसों दाऊ ने आन खच्यो हे ॥ पिचकारी प्यारी की छूटत रंग भर लाल लच्यो हे ॥३॥ रस निधान ब्रजराज लाड़िलो शोभा सिंधु सच्यो हे ॥ 'कुंभनदास' प्रभु की छबि निरखत मनमथ मन हि कच्यो हे ॥५॥



९ (११) राग बिहाग (११) खेलत रंगीले राधे रूप उजियारी ॥ पिय हिये वसत हो प्राण हूं तें प्यारी ॥१॥ वदन शरद शशि कोटि प्रकाश ॥ नागर नयना चकोर चाहत हैं प्यास ॥२॥ आभूषण तारा गण नीलांबर रेनी ॥ बेनी अलि श्रेणी किधों त्रिवलि त्रिवेनी ॥३॥ मृगमद आड़ किधों मेन की ध्वजा कों ॥ भृकुटि धनुष वर मानों युग जाकों ॥४॥ नासिका सुमन तिल स्वांति सुत सोहें ॥ घन तन चतुर चातक चित मोहें ॥५॥ नगन जटित बीरे जगमगताई ॥ कनक मुकुरसे कपोलन में झांई ॥६॥ अरुण अधर लसे दर्शन सुपांती ॥ मानों माणिक मध्य हीरा की कांती ॥७॥ बोलन मधुर पिक बोलन लजावे ॥ मुट् मुसिकान द्युति दामिनी न पावे ॥८॥ सुंदर चिबुक तामें स्याम बिंदु ऐसो ॥ मोहन को मन मानों चुभ रह्यो जैसो ॥९॥ गरें पोत गुंज की उपमा जिय मांही ॥ दीपक सरन मानों सोहे परछाहीं ॥१०॥ सुभग कंचुकी पर वर मोती हारा ॥ जानों युग शिव धरें सुरसरी धारा ॥११॥ वलय मंडित भुज उपमा न आवे ॥ जिनसें सांवरो सर्वस्व दे बधावे ॥१२॥ तनु रुह रेखा नाभि एसी अनुहारी ॥ कुंदन कुंडी सें जानों सुधा की पनारी ॥१३॥ कटि निरखत मृगराज घट लागें ॥ रंभान के खंभा कहा जंघन के आगें ॥१४॥ चरणन नूपुर नख यावक निकाई ॥ त्रिभुवन छबि जहां छबि आन पाई ॥१५॥ वरनो कहांलों प्यारी मेरी मति थोरी ॥ स्याम ललिता स्यामा खेलत होरी ॥१६॥



१० (११) राग बिहाग (११) रसिक दोऊ खेलन लागे होरी ॥ उत तै निकसे नंदनंदन इत वरसानें की गोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मुरली

मधुर ध्वनि थोरी ॥ गोपी ग्वाल सबें जुर आये भवन रह्यो नही कोरी ॥२॥
 भवन भवन तें भामिनि निकसी छिरकत चंदन रोरी ॥ बाजत बीन रबाव
 किन्नरी मन्मथ मान लज्यो री ॥३॥ भरत भामते मदन गोपाले हो हो हो
 कर दोरी ॥ स्यामा स्याम कीया छबि ऊपर सब डारत तृण तोरी ॥४॥
 तारी दे ललितादिक भाखत भली बनी यह जोरी ॥ केसर और मँगाय
 विविध संग दियो सीस तें ढोरी ॥५॥ खेल मच्यो ब्रज वीथिन महीयां कुंज-
 कुंज वर खोरी ॥ 'मुरारीदास प्रभु फगुवा दीयो लोचन लगी ठगोरी ॥६॥

११  राग बिहाग  यमुना जल सजनी हों केसें जाऊं ॥ सांवरे
 अंग लरिकवा के डर परतन बाहिर पाऊं ॥१॥ फागुन मास अभागी जाको
 नाह ओर ही गाऊं ॥ पिय प्यारी हे पियके पाछें को धरवावे नाऊं ॥२॥
 जब होकर गहि आरसी देखों आपही आप सिहाऊं ॥ ऐसें ऐसें ही अरुण
 अधर रस सखी तापर बीरा खाऊं ॥३॥ कबहुं उपजत चोंप चोंपई कुच
 कच चाहि के चाऊं ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु कोन मते ठहराऊं ॥४॥

१२  राग बिहाग  होरी आई रे कन्हाई ॥ जो कछु मन में ही
 सोई भई विधि यह बात बनाई ॥१॥ तब सकुचन हों खेल न सकती अब
 खेलों तोसों धाय ॥ सखी सहेली तोसों सब खेलेंगी कहा करेगी माय
 ॥२॥ गुरुजन यत्न करो बहु तेरो कोटिक करो उपाय ॥ अव तोरे तो सों
 मन लाग्यो तो बिन रत्यो न जाय ॥३॥ केसर ओर जवाद कुंकुमा छिरकू
 तोहि बनाय ॥ हों हुं भरेंगी तुही भरेगो नयनसो नयन मिलाय ॥४॥ लोक
 वेद तृण ज्यों तोरी देऊं कुल कान बहाय ॥ निरमल सुत प्रभु नंदनंदन को
 राखोगी कंठ लगाय ॥५॥

१३  राग बिहाग  आज गहवर बन होरी मानी ॥ ब्रजरानी ब्रजराज
 कुंवर जन सुरंग गुलाल उडानी ॥१॥ मानो उदित अनुराग सिंधु कुमुदमुखी
 हित आनी ॥ 'ब्रजाधीश' प्रभु प्रमुदित बधुनि कोटि काम छबि मानी ॥२॥

१४  राग बिहाग  झुकि गुलाल किनि डारी अलक पर ॥ जिनि डारी सो
 आवौ मेरे सनमुख नातर देहोंगी गारी ॥१॥ काहे कौ रिस करति हो मैया डारी ॥
 वृषमानु दुलारी ॥ 'रसिक' प्रीतम की जननी जसुदा दोऊ कर लेति है झारी ॥२॥

१५ **॥** राग बिहाग **॥** नबल बधू रँग भीनी नबल पीतम संग खेलै ॥
 झूम-झूम रस ताननि गावैं रिझवति छैल छबीलै ॥१॥ रँगिलौ लाल पिचकाईन
 रँग भरि उरजन ऊपर मेलै ॥ मुख मूढ़ें नैननि मन खोले भावति है मन फूलै
 ॥२॥ पटकति धरती चरन लर-लटकति, लटकति हार हमेलै ॥ प्रफुलित नबल
 बेल-सी लहकत, झेली बल अलबेलै ॥३॥ अंचल मधि चंचल चख मानों
 मैने सैन कौं पेलै ॥ वल्लभ रसिक घुमड़ नब घन लालन अंक सँकलै ॥४॥

१६ **॥** राग बिहाग **॥** नवरंग भीनो ग्वाल नव राधा गोरी ब्रिंदावन
 सोभागिनी खेले दोऊ होरी ॥१॥ मृदंग उपंग भरि दुंदुभी बिराजे मनमथ
 राज पाय मानो बाजे बाजे ॥२॥ घुमड़िये लाल सोहे लोचन सुहाये मानो
 राते घन खेले मीन छबी धाये ॥३॥ ललना के संग पिय सोभा ऐसी लागे
 सुभग जराय मानो हीरा जगमगे ॥४॥ रंग भरि दुहु और छूटे पिचकारी,
 तन ते उछरी मानो होत छबि भारी ॥५॥ मुखते चुवत रंग कछु जात न
 कछो जलज ते मानो मकरंद बह्यो ॥६॥ झलके अलके बीच रंग बूंद गण
 मानो अलि पांति बनी मुख मधुपन ॥७॥ टूटी उर माल बाल शोभा अपार
 हिये ते उमगि चली मानो रसधार ॥८॥ छलि आनि पिय रस गोरी मानो
 विधि कंज मिले विरह विसारी ॥९॥ सखी गहे कर दृग बोरे राधा गोरी
 आँजे पिय के नैन सब बोले हो हो होरी ॥१०॥ लीनो फागु अनुराग भरे
 प्यारे ऐसे रंग बढ़ि बहे रसहि पनारे ॥१॥ इहि विधि खेले होरी वैकुंठ
 धाम, दामोदर हित हिये बसो स्यामा स्याम ॥१२॥

१७ **॥** राग बिहाग **॥** होरी खेले ब्रज बरसानैं की तंबोलनी ॥ पान
 भरै मुख चमकति चौका वाकी मधुर-रसीली बोलनी ॥१॥ अँग रसीली
 सुगंध बसीली भौहैं चलति कपोलनी ॥ कोकिला कैसें कंठनि गावति रिझवति
 पिय कों छोलनी ॥२॥ रति रस ध्यावै, केलि बढ़ावै, ब्रज जुबतिन मन
 मोहनी ॥ 'न्यास स्वामिनी' रिझि परसपर नंद नंदन रस झोलनी ॥३॥

१८ **॥** राग बिहाग **॥** होरी खेलत रंगभीने पिय प्यारी ॥ उतते जुरि
 झुंडन आई स्यामा मोहन बृषभान दुलारी ॥१॥ बाजे साजे कर नवरंगी
 जंत्र मंत्र डफ वारी ॥ उघटित धुनि संगीत सुघरता गृह-गृह ताता ताता

थेई तारी ॥२॥ जमुना तीर सघन कुंजन में करि कुसुम बरखारी ॥ 'नंददास'
प्रभु कोतक सागर रसिक लाल गिरिधारी ॥३॥

१९ (११६) राग बिहाग (११६) होरी खेलत कुमर कन्हवाई ॥ चोवा चंदन अगर
कुमकुमा धरणी कीच मचाई ॥१॥ अबीर गुलाल उड़ाय ललितादिक शोभा
वरणी न जाई ॥ अरस परस छिरके जु स्याम को केसरि भरी पिचकाई
॥२॥ नख सिख अंग परम रूप माधुरी भूषण वसन बनाई ॥ गिरवरधर
की यह छबी निरखत कुभन दास बलि जाई ॥३॥

२० (११६) राग बिहाग (११६) कान्ह कुंवर खेलें होरी जमुना तट ॥ सघन
कुंज वन बिधिनि चोवा चंदन और अरगजा अबीर लीये भरि झोरी ॥१॥
बाजति ताल मृदंग बाँसुरी सुर की उठति झकोरी ॥ 'धोंधी' के प्रभु तुम
बहु नाइक खेलि मचायो गोरी ॥२॥



२१ (११६) राग बिहाग (११६) खेलति गुपाल लाल फागु रस भरे ॥ सखा
सब संग बलदाऊ दल करे ॥१॥ मंजुल कमल बंधु सुता तीर पै री ॥
निरखति सुर मुनि गए मन हेरी ॥२॥ उज्जल बसनन के बागे जु मैगाए ॥
प्रफुलित मन सब ग्वाल पैहिराए ॥३॥ अरगजा मृगमद चोबा अंग लगाए ॥
पाछें बलभैया आपु लीनि मन भाए ॥४॥ केसरि के नीर भरि हेम घट जु
लीनें ॥ चले स्याम संग जुरि प्रेम भीनें ॥५॥ ब्रज जन मन खेंचि आप
बस कीनें ॥ देखति गयो हैं काम सरबसु छीनें ॥६॥ रतन जटित पिचकाई
रँग भीनी ॥ हाटक जटित सब सखान कौं दीनीं ॥७॥ छिरकति प्रमुदित
धार अति झीनीं ॥ कौन कबि छबि बरनै जु मान हीनीं ॥८॥ उड़ति अबीर
बस आँधी भई खरी ॥ दिन मनि किरनि की गई दुति हरी ॥९॥ चकई
बिछुरी जाति बिरह की भरीं ॥ सुधि सब भूलि चितै परबस परी ॥१०॥
सोहत सुभग कटि गुलाल की झोरी ॥ बनी अति नीकी हरि हलधर की
जोरी ॥११॥ हंसि करि सबन के लेति चित चोरी ॥ सखान सहित बोले
हो हो हो होरी ॥१२॥ बाजति पटह झांझि बीना मुख चंग ॥ आवज मुरली
दफ ताल सौं मृदंग ॥१३॥ सुनि घन गयो लजि भयो मद भंग ॥ प्रेम-
सिंधु उमग्यों न मात अंग अंग ॥१४॥ खेलनि कौं आई बृषभानु की कुमारी ॥

सनमुख जोरी सखी रूप उजियारी ॥१५॥ पैहिरे सुभग तनसुख सारी ॥
 नख सिख सो हैं मनो बिधि साँचे भरि ढारी ॥१६॥ एकु तें अधिक एक
 रूप मदमाँति ॥ हँसि हँसि स्याम जु सौं करें मृदु बाती ॥१७॥ तनक सुवास
 फूलि मन जाती ॥ खेलति न जानि सब बीती दिन राति ॥१८॥ लीनें गहि
 औचका नवल गिरिधारी ॥ काजर सां औंजी नीकीं अँखियाँ अनियारी
 ॥१९॥ चहुँ ओर ब्रज बधू बजावति तारी ॥ छाँड़ि सबै कुल लाज औरु
 गावति हँ गारी ॥२०॥ आई कै कुँवरी फँट गहि रहि ठाढ़ी ॥ फगुवा मँगाई
 देऊ बोलो गुन आढ़ी ॥२१॥ चितवति नैननि सौं प्रीति चित बाढ़ी ॥ भरी
 है सुहाग को कोक कला रस पाढ़ी ॥२२॥ रीझै ब्रजनाथ जहाँ दैन कौं
 मँगाई ॥ पट आभरन मेबा बहुत मिठाई ॥२३॥ नारी सब सिमिटि झुंडन
 ढिंग आई ॥ गोकुल कौं चंद हँसि दियो सुखदाई ॥२४॥ राधिका कुँवरि
 कान्ह मिले भरि बाँहि ॥ जोरी अबिचल नित रहौ ब्रज माँही ॥२५॥ वह
 हँसति चली ग्रह आनंद बढ़ाई बरनि न जाई यह सुख परछाँई ॥२६॥



२२ (१५) राग बिहाग (१५) खेलति गुपाल माइ रंग भरे होरी ॥ कनक
 बरन सँग लीए सत गोरी ॥१॥ भूषन बसन साजि सबै मन फूले ॥ निरखति
 हरि छबि अपन पो भूले ॥२॥ अति सुकुमारि राधा तिन मधि सोहै ॥ बार
 बार अबलोकि मोहन मन मोहै ॥३॥ केसरि रंग कलसनि भरि भरि लीनें ॥
 बिबिधि सुगंध सजि अनगन कीनें ॥४॥ बनि ठनि चले जहँ नव निकुंज
 पिया री ॥ त्रिविधि पवन जहँ बहति सुखारी ॥५॥ जहाँ बिहरति खग जुगल
 सुहाए ॥ कोकिला कलरव प्रमोद सुर गाए ॥६॥ तहाँ घुमड्यौ गुलाल अंबर
 छाये ॥ माँनों आप रूप धरि अनुरागु बढ़ाये ॥७॥ छिरकति सुरँग केसरी
 रँग रंगे ॥ मुदित परसपर मिलि अंग संगे ॥८॥ मुरज किन्नरी बीन ढफ
 सहनाई ॥ बिच बिच बैनु धुनि अधिक सुहाई ॥९॥ इहि बिधि खेलति
 बाढ़्यौ जु रँग भारी ॥ सब ब्रज जन मोहै गिरिधारी ॥१०॥



२३ (१५) राग बिहाग (१५) खेलन दे मोहे होरी हो रसीया ॥ जानि न देहों गहि
 राखोंगी काए कों बैयाँ मरोरी हो रसीया ॥१॥ बिंदाबन बिच खेलि मच्यौ है सँग
 राधिका गोरी हो रसीया ॥ सखी सहेली सब मिलि खेलें हम कहा कीनीं चोरी
 हो रसीया ॥२॥ फगुवा लीयै बिनु जानि न देहों तुम मत जानौं भोरी हो रसीया ॥

‘ऋषिकेस’ प्रभु मिलि मगन भये डारति है तू न तोरी हो रसीया ॥३॥

२४  राग बिहाग  मदन मोहन कुँवर बृषभानु-नंदिनी सौं भुवन
कुंज मधि खेलति होरी ॥ गोप बालक संग एकु दाँई बने, उत सकल ब्रज
बधू इकु जोरी ॥१॥ बाजत बीना मृदंग झाँझ ढफ किन्नरि चेत झुमकि
गान करति गोरी ॥ उड़ति बंदन नब अबीर बहु कुँमकुमा अरु बिबिधि
रंगनि गुलाल झोरी ॥२॥ तब सखियन मतों करि धाँई गिरिधर गहें नील
पट पीत सों गाँठि जोरी ॥ एकु सखी स्याम कें सीस बैनी गुही, एकु दृग
आँजति मुख माँड़ति रोरी ॥३॥ तब हि ललिता दोरी झटकि मुरली लई,
सब हि नंदलाल सौं करैं ठठोरी ॥ इक नब कुँमकुमा नबल गागरि भरि
आँनि कैं दोऊन के सीस ढोरी ॥४॥ तब सखी आपुनो माँगि फगुवा लयौ
दई मुरली अरु गाँठि छोरी ॥ ‘दास गुपाल’ बलि जाई यह छबि निरखति
रहौं हरि चरन दृढ़ बुधि मोरी ॥५॥

वसंत धमार मान के पद - राग वसंत

१  राग वसंत  खेलि खेलि हो लडेंती राधे हरि के संग वसंत ॥
मदन गोपाल मनोहर मूरति मिल्यो हे भांवतो कंत ॥१॥ कोन पुन्य तप
को फल भामिनि चरन कमल अनुराग ॥ कमल नेन कमला को बल्लभ
तोक् मिल्यो सुहाग ॥२॥ यह कालिंदी यह वृंदावन यह तरुवर की पांति ॥
परमानंद स्वामी संग क्रीडत घोसन जानी राति ॥३॥

२  राग वसंत  खेलि खेलि हो लडेंती श्रीराधे तोही कों फव्यो
हे वसंत ॥ सुनि भामिनि दामिनिसी हो तुम पायो स्याम घन कंत ॥१॥
जमुना के तट श्रीवृंदावन परम अनूपम ठाऊं ॥ कुंजन कुंजन केलि करो
मेलि सुवस बसौं बलि जाऊं ॥२॥ मदन गुपाललाल रसिया कों रस तेंई
ले जान्यौ ॥ अपनो मन ओर वा मोहन को एकमेक करि सान्यो ॥३॥
उडत गुलाल धूंधरि मधि राजत राधा अंग लपटानी ॥ कहि ‘भगवान’
हित रामराय प्रभु यह छबि हृदय समानी ॥४॥

३  राग वसंत  चलि बन निरखि राज समाज ऋतु कौं, सकल

तरु मोरे ॥ यह वसंतहि जानि रति कै कंत दल जोरे ॥१॥ विरहनी मति विकल करिवे मृगगन दौरे ॥ कोकिला कल कंठरव मिलि, काम सर छोरे ॥२॥ तरनि तनया तीर मलयज पवन झकझोरे ॥ गहरु तजि ब्रज भामिनि मिलि नैद किसोरे ॥३॥

४ (११) राग वसंत (११) चलि बन बहति मंद सुगंध सीतल, मलय समीरे ॥ तुव पंथ बेठि निहारति सखी हरि, सूरजा तीरे ॥१॥ चहुं दिस फूले लता द्रुम हरखित सरीरे ॥ तुव बरन तन स्याम सुंदर धरति पट पीरे ॥२॥ विविधि सुर अलि पुंज गुंजति मत्त पिक कीरे ॥ तुव मिलन हित नंद नंदन हैं अति अर्धरे ॥३॥ 'दासकुंभन' प्रभु करति बन बहु जतन सीरे ॥ तुव विरह व्याकुल गोवरधन उद्धरन धीरे ॥४॥

५ (११) राग वसंत (११) रतिपति दे दुःख करि रतिपति सौं ॥ तूं तौ मेरी प्यारी और प्यारे हू की प्यारी उठि चलि गज गति सौं ॥१॥ दुती कै बचन सुनि कै, मुसक्यानि, भूषन बसन सोंधो लियौ बहु भांतिसौं ॥ 'कल्यान' के प्रभु गिरिधर नागर धाई लई उर अतिसौं ॥२॥

६ (११) राग वसंत (११) राधे देखि बनकैं चैन ॥ भृंग कोकिल सव्द सुनि सुनि प्रकट प्रमुदित मैन ॥१॥ जहाँ बहति मंद सुगंध सीतल भौमिनी सुख सैन ॥ कौन पुन्य अगाध कौं फल तूं जो बिलसति ऐन ॥२॥ लाल गिरिधर मिल्यौ चाहति, मोहन मधुर बैन ॥ 'दास परमानंद' प्रभु हरि चारु पंकज नैन ॥३॥

७ (११) राग वसंत (११) फिरि पछिताइगी हो राधा ॥ कित तू कित हरि कित यह औसर करत प्रेमरस बाधा ॥१॥ बहोरि गुपाल भेख कब धरि हैं कब इन कूंजन बसि है ॥ यह जडता तेरे जिय उपजी चतुर नारि सुनि हैंसि है ॥२॥ रसिक गुपाल सुनति सुख उपजै आगम निगम पुकारैं ॥ 'परमानंद' स्वामी पै आवति कौ यह नीति बिचारे ॥३॥

८ (११) राग वसंत (११) ऋतु वसंत प्रफुलित बन बकुल मालती कुंद, जाति नवकरन कारन केतुकी कुरबक गुलाल ॥ चलि राधे चटमट करि तजि हठ सठ जिय कौं, हों पठई लेन तोहि आतुर है अति नैदलाल ॥१॥ तेसोई

तरनि तनया तीर तेसोई बहति सुख समीर तेसोई चहूँ दिस तैं उडति हैं
सोंधों गुलाल ॥ यह औसर कंठ लाई रिझये 'रघुवीर' राई तो तू एसी
लागति है कनकलता कै ढिग तरु तमाल ॥२॥

९ (११) राग वसंत (११) कहा आई री तरकि अब ही जू खेलत ही प्रीतम
सँग एक हाथ अबीर दूजै फैंटा कर ॥ जब उन भुजन जोरि मुसिकाय वदन
मोरयों ते जान्यों औरन तन चितए एसो यह होय जिन परइ इन नैनन
में यही डर ॥१॥ जब ही तू उठि चली तबही लालन उझकि रहै औरन
सो बूझन लागै बेझू झुकि गई कौन बात परि ॥ उठि चलि हिलिमिलि
तूव रँग राख और सब लागति चुनी समान तूव मधि नाइक सँग सोहति
लाल गुपाल गिरिधरि ॥२॥

१० (११) राग वसंत (११) मान तजौ भजौ कंत ऋतु वसंत आयौ ॥ वन
सोभा निरखि निरखि पथिकन सुख पायौ ॥१॥ फूल बनराई जाई मधुकर
लपटायौ ॥ अँब मोर ठोर ठोर ब्रिंदाबन छायौ ॥२॥ अति सुगंध बहति वायु बस
पराग उडायौ ॥ उनमद झंकार करति विरही जन डरायौ ॥३॥ तिहारे हित
कारन में यह सब सुनायौ ॥ 'रसिक' प्रीतम जाई मिलौ जुवतीन मनभायौ ॥४॥

११ (११) राग वसंत (११) एसो पत्र लिखि पठयौ नृप वसंत ॥ तुम तजो
मान मानिनी तुरंत ॥ ध्रु० ॥ कागद नव दल अँब पाँति ॥ द्वात कमल मसि
भँवर गाति ॥ लेखन काम कै बान चाँप ॥ लिखि अनैग ससि दई छाप ॥
मलयानिल पठयौ करि बिचार ॥ बाँचे सुक, पिक, तुम सुनों नारि ॥ 'सूरदास'
यों बढति बानि ॥ तू हरि भजि गोपी तजि सयान ॥२॥

१२ (११) राग वसंत (११) चलि राधे तोहि स्याम बुलावैं ॥ वह सुनि देखि
बेन मधुरे सुर तेरो नाम ले लै गावैं ॥१॥ देखौ ब्रिंदाबन की सोभा ठौर
ठौर द्रुम फूले ॥ कोकिल नाद सुनति मन आनंद मिथुन बिहँगम झूले ॥२॥
उनमद जोबन मदन कुलाहल यह औसर है नीकौ ॥ 'परमानंद' प्रभु प्रथम
समागम मिल्यौ भाँवतो जीकौ ॥३॥

१३ (११) राग वसंत (११) देखि वसंत समैं ब्रज सुंदरी तजि अभिमान चली

ब्रिंदावन ॥ सुंदरताकी रासि किसोरी नवसत साजि सिंगार सुभग तन ॥१॥
गई तिहि ठौर देखि ऊँचै द्रुम लता प्रकासित गुँजत अलि गन ॥ 'कुंभनदास'
लाल गिरिधरि कौ मिली है कुँवरि राधा हुलसत मन ॥२॥

१४ (॥१॥) राग वसंत (॥१॥) बेगि चलो बन कुँवरि सयानी ॥ समय वसंत,
बिपिन मधि हय गज मदन सुभट नृप फोज पलानी ॥१॥ चहुँ दिस चाँदनी
चमू चय कुसुम धूरि धूंधरी उडानी ॥ सोरह कला छिपांकर की छबि सोहति
छत्र सीस कर तानी ॥२॥ बोले हंस चपल बंदी जन मनौं प्रसंसित पिक
बर बानी ॥ धीर समीर रटत बन अलिगन मनौं काम कर मुरली सुठानी
॥३॥ कुसम सरासन बनि हि बिराजति मनौं मानगढ़ आन आन भानी ॥
'सूरदास' प्रभु की वेई गति करौ सहाइ राधिका रानी ॥४॥

१५ (॥१॥) राग वसंत (॥१॥) मानिनी मान छुडावन कारन मदन सहाई वसंत
लै आयों ॥ चतुरंगनि सेना सजि सुलभ पराग अटपटों छायाँ ॥१॥ नील
कमल दल सहस्र मानौं गज कदली कुसुम रथ बेगि बनायौ ॥ चंपक जुही
गुलाल और कुंज बहु रंग तुरी सेन सजि धायों ॥२॥ कुँद, कनेर, मालती
जाती पाईकदली आगें जू सुहायों ॥ नागकेत धुजा, अरुन चंबर इव सेत
छत्र मोरि कुसुम धरायों ॥३॥ अँकुस किंसुक सीखंड केतुकी कुरबक निसान
बजायों ॥ त्रिगुन समीर सुजान छूट धर जस बंदी अलि कुल मिलि
गायों ॥४॥ कटक सँवारि कामिनी अँग अँग मोहन सों सर चाप चढायों ॥
'कृष्णदास' गिरिधरि सौं मिलि रति करि रतिपति हार मनायौ ॥५॥

१६ (॥१॥) राग वसंत (॥१॥) आई ऋतु चहुँदिश फुलै द्रुम कानन कोकिला
समूह मिलि गावत वसंत ही ॥ मधुप गुंजारत मिलति सप्त सुर भयो है
हुलास तनमन सब जंतही ॥१॥ मुदित रसिक जन उमगि भरे हैं नहि पावत
मनमथ सुख अंत ही ॥ 'कुंभनदास' स्वामिनी बेगि चलि यह समे मिलि
गिरिधर नव कंतही ॥२॥

१७ (॥१॥) राग वसंत (॥१॥) चलि निधरक बन देखि सखीरी द्विज प्रमुदित
पिक बानी ॥ जमुना तीर सघन कुंजन बनि ठाढौ छेल गुमानी ॥१॥ फूले
बहुरंग कुसुम परागिन त्रिविधि पवन सुख सांणी ॥ 'ब्रजाधीश' प्रभु सब

सुख सागर दृगन शोभा रंग आनी ॥२॥

वसंत धमार मान के पद - राग कान्हरो

१ **॥१॥** राग कान्हरो **॥१॥** ए प्यारी मान न कीजै पिय सौं बावरी मेरे कहै चलि गज गामिनि ॥ बार-बार मुख निहार नवल नवेली नारी तू सुकुमारि आली बस कीए स्याम सुनि भामिनि ॥१॥ ज्यों-ज्यों रुक होत त्यों-त्यों पीतम अधीर होत सुन्दर प्यारी तेरे बस भए ओर सकल ब्रज जुबति खेलति होरी हरि सँग सुनि री स्वामिनि ॥ फागुन में मान कैसो यै तो अनोखी रीति प्रीति क्यों न करि प्यारी अतर सुगंध अरगजा केसर घनसार 'ब्रजाधीस' प्रभु रचि राखी है बेगि चलि जात हे जामिनि ॥२॥

२ **॥१॥** राग कान्हरो **॥१॥** मानत नाहि नवल नवेलि नार तो पै अधिक प्यार स्याम छबीले ने बोली तोय ॥ कब की मनावत आली उतरु न देति कैसेहु मन न आवत छेल छबीले की होरी को सुख तातें लैन पठाई मोय ॥१॥ सुनति बतीयौं प्रीतम की प्रेम मग्न क्यों न होत धन तेरी छतीयौं नींद भरी रहो सोय ॥ इतनों सुनति प्यारी कर लीए पिचकारी 'रसिक' पीतम सँग मदन बिथा खोय ॥२॥

३ **॥१॥** राग कान्हरो **॥१॥** मान न कीजिए पीय सौं नागरी नवेली नार यह होरी के दिनन को ॥ अबीर गुलाल केसर चोवा चंदन घनसार मृगमद मलय कपूर सुवासन धरे हे बिबिधि रंग तो बीनु लागति सब फीको ॥१॥ अधर बिंब ललित प्रवाल करि सिंगार मृगनैनी दसनन हूती तेरी नब जोबन अंग-अंग जगमग जोति रसिक प्रीतम कों ॥ चले क्यों न गिरिधरनलाल सो हिलिमिलि आली और अनेक सब सुनि री नागरी भोजन पाछे का अचवन घृत को ॥२॥

४ **॥१॥** राग कान्हरो **॥१॥** रंग महल रंग फाग रंगन मिल्यो सुहाग रंगीली होरी की राति तोसूं रंग रहेगो आज ॥ रंगीले से गिरिधरन पिय रंग गुलाल अबीर लये तेरो ही मग जोबत मान गढ़ छाँडि प्यारी करि हो रंग अचल राज ॥१॥ दूती के बचन सुनि बृषभानु नंदिनी सकल सिंगार सजि चली

भूषण बसन साज ॥ 'नंददास' प्रभु प्यारी हैंसि भेटत अँकवारी जाल रंघ
निरखि-निरखि सुफल पूरन काज ॥२॥

राग अडानो

१ (११) राग अडानो (११) मान न कीजै पिय सों भामिनि फागुन में पीतम
तौ तोय बोलन ॥ अबीर, गुलाल, कुंमकुमा, केसर मृगमद, घनसार रचि
धरे बिबिधि अमोलन ॥१॥ मान करि बेठी तोई लाज हू न आवति, होरी
के दिनन है घुंघट क्यों न खोलत ॥ 'नंददास' प्रभु प्यारी, रूप गुन उजियारी
बाको मन तेरे आली सँग लाग्यो डोलत ॥२॥

राग बिहाग

१ (११) राग बिहाग (११) लाल करत मनुहार री प्यारी मान मनायो तेरो ॥
मदन मोहन पिय नव निकुंज में नाम रटत हैं तेरो ॥१॥ नवल नागर गुन
के आगर देख ऋतुराज आयो नेरो ॥ रसिक प्रीतम सों हिलमिल भामिनी
ज्यों रीझे चित्त तेरो ॥२॥

२ (११) राग बिहाग (११) प्यारी तेरो मानगढ कौन उतारे ॥ दिन प्रति
नौतन होत सखीरी कौन काज बिचारे ॥१॥ तेरे मन कछु ओर सखीरी
मेरे मन जो उचारे ॥ काहूँ मिसले रंगन भरीरी गिरधर लाल समारे ॥२॥
यह समयो है दिवस चार को को यह न्याव विचारे ॥ हित हरि वंश पुलिन
यमुना तट लालन दृगन निहारे ॥

३ (११) राग बिहाग (११) होरी खेलेई बनेगी रूसें कैसें बनेगी ॥ ऐसेही रंग
रहेगो रंगीली तू बहुरंग सनेगी ॥१॥ ऐसें कैसें फगुआ पैयत तामे गुन ओगुन
ना गिनेगी ॥ रसिक प्रीतम के संग होरी खेलत खेलिमें भोंह तनेगी ॥२॥

४ (११) राग बिहाग (११) या ऋतु को सुख मान सखीरी तोय मान मनावन
मोहि पठाई ॥ तू हठ मांड रही कबहू ते तोहि वीर नाहि बिसारी ॥१॥
तो बिन होरी को रंग न व्हे है बिधिना कर तोए मान महारी ॥ प्रान प्रीया
की प्रान पियारी मान मेरो कछो बलिहारी ॥२॥

५ (१५) राग बिहाग (१५) सो यह दिन कैसें निबहेगो मान तेरो आयो फाल्गुन मास कछो तू मान ॥ तज हठ कपट हठीली नागरि सुनि सांची जिय जान ॥१॥ आवेरी लाल मनावन तोकों भाग आपुने ऊर आनि ॥ ऊठ चलि हिल मिल हरिदास के स्वामी सों अब मोहें जिन तान ॥२॥

६ (१५) राग बिहाग (१५) लाडिली मानन कीजे होरी के दिन में कौन तिहारी बान ॥ चार दिवस को खेल मच्यो है बेठी है भोहे तान ॥१॥ मान मनाय बलैया लेहूं कहो जोरि जुग पान ॥ गुन निधान पीय पास उठि चलो केलि खेलि की जान ॥२॥

७ (१५) राग बिहाग (१५) पियसंग खेलति अधिक श्रम भयोरी आवरीने कुकरो बयार ॥ अपुनों अंचल ले सकुमार प्यारी निरखि बदन श्रमकनकी बलिहार ॥१॥ बिधुरी अलक श्रवन नासिका मांग के मोती अस्त व्यस्त भये ताय बांधु संवार ॥ सूरदास प्रभु प्यारी के मिले को सुख जाय देखों ताय डारों बार ॥२॥

८ (१५) राग बिहाग (१५) प्यारी मान धरे मन भावे ॥ वृंदावन खेलत नंदनंदन तो बिन सचु नही पावे ॥१॥ अबीर गुलाल अरगजा लेकें ध्यान तेरें मुख लावे ॥ चोंक परें चितवे फिर इत ऊत ले मुरली फेर गावे ॥२॥ कर सिंगार सहज थोरी ही बेगि चलो पिय सचु पावे ॥ श्रीविठ्ठल गिरधरनलाल कों और न कोऊ चित आवे ॥३॥

९ (१५) राग बिहाग (१५) नित उठ मान मनावे हो प्यारी ॥ कौन टेब परी ब्रज सुंदरी पीय कों पांय पडावे हो ॥१॥ नही बूझत समजत मनसजनी सहज बात उठ आवे हो ॥ तू जो कहत हों निपट सयानी सयानप कौन कहावे ॥२॥ यह दिन फाग सुहाग राग के सब काहू मनभावे हो ॥ श्रीविठ्ठल गिरधरनलाल सों काहे न रंग बढ़ावे हो ॥३॥

१० (१५) राग बिहाग (१५) यह दिन होरी को सो तू जिन मान करे ॥ मेरो कछो तू मान हठीली काहेंकू गर्व करे ॥१॥ उठ चल हिल मिल गिरधर पीयसों तो सब काज सरे ॥ तेरे ही बस हैं ब्रजपति अब तेरोई ध्यान धरे ॥२॥

११ (१५) राग बिहाग (१५) होरी के खेल में गुमान केसो ॥ मान मान

की ठोर जो तुम खेल खिलाय चाहत हो रंग राग रहे तोसो ॥१॥ इतते आई कुंवरि राधिका उततें आये कान्ह ॥ सूरदास प्रभु रस बस कर लीये राख्यो सबन को मान ॥२॥

१२ (११) राग बिहाग (११) होरी के दिनन में पीया मोसौं बोलत नाही अब कछु जतन बताई भटू री ॥ तपत मेरो मन कबहु न छिरक्यो गुलाल सुरंग चूनरी मेरी पीत पटु रीं ॥१॥ अब कैसें जीवन होई मेरी सजनी जब निकसति स्याम मो तन निहारति वा गोरी सौं भयो है लटूरी ॥ मानति नाही मोसौं सोंह खाई 'रसिक' पीतम पीय नागर नटु री ॥२॥

वसंत धमार पौढवे के पद - राग वसंत



१ (११) राग वसंत (११) खेलति खेलति पौढी स्यामा नवललाल गिरिधर पिय सँग ॥ चोवा चंदन अगर कुंमकुमा झारति फिरति सकल अँग अँग ॥१॥ बाजति ताल मृदंग अघौंटी बीना मुरली तान तरँग ॥ 'कुंभनदास' प्रभु यह बिधि क्रीडति जमुना पुलिन लजावति अनँग ॥२॥



२ (११) राग वसंत (११) खेलि फागु मुसिकात चले दौऊ पौढे सुखद सेज मिलि दंपति ॥ हैंसि हैंसि बात करति सुनि सजनी निरखति कृपन मिली मनौ संपति ॥१॥ करति सिंगार परसपर हुलसति सोभा देखि मदन तन कांपति ॥ 'व्रजपति' पिय प्यारी मिलि बिलसति सखी ललितादिक चरनन चाँपति ॥२॥



३ (११) राग वसंत (११) खेलि वसंत जाम चारयौ निसि हैंसति चले पौढन पिय प्यारी ॥ नवल कुंज नव धाम मनोहर नवल बाल नव केलि बिहारी ॥१॥ नवल सहचरी गान करति नव नवल ताल बीना करधारी ॥ पौढे नवल सेज नव 'व्रजपति' चाँपति चरन नव, भानु कुमारी ॥२॥

४ (११) राग वसंत (११) प्यारी पिय खेलति बर वसंत ॥ उपजति दुहुँ दिस सुख अनंत ॥१॥ अद्भुत सोभा गौर स्याम ॥ लाल पिया उर ललित दाम ॥ उमँगि उमँगि अँग भरति वाम ॥ सहचरी सँग कला काम ॥१॥ सेज सुहाई अमल खेत ॥ चलति कटाच्छ पिचुकि भरि हेत ॥ सनमुख भरि छबि छोट लेति ॥ रोम रोम आनंद देति ॥२॥ नख प्रहार छबि कनि



गुलाल ॥ राजति बिच उर टुटी माल ॥ जावक रँग रँग्यौ लाल भाल ॥
पीक पलक रँगी ललित माल ॥३॥ बाजैं ढफ भूषन सुभाई ॥ बाढ्यौ सुख
कछु कह्यौ न जाई ॥ सुरति रँग अँग छाई ॥ 'दामोदर' हित सुरस गाई ॥४॥



५  राग वसंत  वसंत बनाई चली ब्रज सुंदरि रसिक राए गिरिधर
पिय पास ॥ अँग अँग बेलि फूलि मृग नैनी कुच उतंग मनौं कमल विकास
॥१॥ कोक कला बिध कुँज सदन में गिरिवरधर सँग किये बिलास ॥ कुसम
पर्यंक अँक भरि पौढे निरखति बलि 'परमानंद' दास ॥२॥

६  राग वसंत  ऋतु वसंत बिलसति राजत रगमगे रँग ॥ पौढे
दंपति अंग अंग सोभा कही न जाई दामिनी सी सोभा तन राधा घनस्थाम
संग ॥१॥ अरस परस लुम झुम नैना अति घूम घूम मंद मंद आलस वलित
लजावति कोटि अनंग ॥ हरियारो हरख अति सुजस गाय 'नंददास' जाल
रंध्र निरखि निरखि मानु गोपीजन अति उमँग ॥२॥



७  राग वसंत  खेलि फाग अनुराग भरे दोऊ हँसति चले पोढन
पीय प्यारी ॥ नवल कुंज नव धाम मनोहर नवल बाल नव केलि बिहारी
॥१॥ नवल सहचरी गान करति नव नवल ताल बीना कर धारी ॥ पौढे
नवल सेज नव ब्रजपति चांपत चरन नव भानु कुमारी ॥२॥

राग काफी



१  राग काफी  होरी खेलति ब्रज कुंजन महियाँ ॥ नंद नंदन
सौं अति रति बाढ़ी लाड़िली बिहरति कदंब की छैयाँ ॥१॥ पौढन के समै
के औसर और न कोऊ रछ्यो तिहिं सैयाँ ॥ 'सरस रंग' संतत यह जोरी
पीतम प्यारी बिना कोऊ नहियाँ ॥२॥



२  राग काफी  ब्रज में होरी रँग सुहायो ॥ बंसी बट जमुना
तट कुंजन पीतम प्यारी भायो ॥१॥ पौढन के समै के औसर ललिता रँग
जमायो ॥ 'सरस रँग' संतत यह जोरी भाग बड़े तैं पायो ॥२॥



राग बिहाग



१  राग बिहाग  खेलत वसंत संगले भामिनी पोढे हैं पीय प्यारी ॥



श्रीराधे वृषभानु नंदिनी नवल लाल गोवर्धन धारी ॥१॥ सखी साज सब लै खेलन को धिरि आई तिहिं ठौरे ॥ सुंदर सरस जवाद अरगजा केसर चोवा घौरें ॥२॥ ले गुलाल कर मुखहि लगावत दोऊ परस्पर सोहें ॥ कहा कहूं छबि की शोभा उपमा कों कवि कोहें ॥३॥ नैन नींद भर अति आलस युत सुख बिलसत श्रीघनश्याम ॥ प्रभु रघुनाथ आनंद सो पूरे मन के काम ॥४॥



२  राग बिहाग  रंगमहल पोढे पीय प्यारी ॥ नैन गुलाल लग्यो प्रीतम के ले अंचल पोंछत जतनन कर श्रीवृषभान दुलारी ॥१॥ रीझ रीझ मिलवत भौंहन अंग कछु सकुच जिय लाज बिचारी ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धन धर हिय लगाय लई सकुमारी ॥२॥

३  राग बिहाग  निकुंज में पोढे रसिक पिय प्यारी रंग रंग भीनी सारी ॥ खेलि फाग रस अति ही उमंग लियो हे लाला मनुहारी ॥१॥ शिथिलित बसन जूमात आलस भरे पोढे पर्यंक सुखकारी ॥ नंददास दंपति छबि ऊपर तन मन धन बलिहारी ॥२॥



४  राग बिहाग  पोढी प्यारी पिय के संग सबै बसन भरे रंग ॥ खेलि फाग अनुराग बढ्यो दोऊ आलस बस सब अंग ॥१॥ हँसति परस्पर अतिरस बिहरति आंखें भरति उमंग ॥ परमानंद दंपति छबि ऊपर वारों कोटि अनंग ॥२॥



५  राग बिहाग  लालन पोढीयें जु बाल रुचि-रुचि सेज बनाई ॥ सोधे सों सुवास छिरकि कुंमकुम अबीर अति सुखदाई ॥१॥ बीरा धरि पहुप माल भोग राग अति रसाल रसही रस केलि करौ ब्रजजन सुखदाई ॥ ब्रिदावन चंद चारु चांदनी किशोरी कुंवरि रहसि हंस कंठ लगाई ॥२॥



६  राग बिहाग  खेले बसंत पिया संग पोढी आलस युत रंग भीनी ॥ नवल लाडिली प्रान प्रीया दोऊ नवल अंस भुज दीनी ॥१॥ नौतन सेज रची सखीयन मिलि अति सुगंध सरसीनी ॥ नवल बीजना कर लीयें माधुरी निरखत नेह नर्वीनीं ॥२॥



७  राग बिहाग  नींद भरे नैना दुर दुर जात ॥ सब दिन बीत्यो

होरी के ओसर अंग अंग अरसात ॥१॥ रंग रंग मगो गुलाल सगमगो
लाग्यो अरगजा सामल गात ॥ ले अंचल पोंछत प्यारी राधा पीयतन देख
देख मुसिब्यात ॥२॥ बहुत गई निस जान पीतम संग पोढ रही लपटाय ॥
सूरदास प्रभु फाग खेल की अरस परस बातें बतराय ॥३॥



८  राग बिहाग  चलेहो भांवते रस ऐन ॥ खेल फाग अनुराग
भरे दोऊ मत्त द्विरद गति गैन ॥१॥ सोभित बसन गुलाल सगवगे अति
आलस युत नेन ॥ रसिक बिहारी बिहारिन कीनों नव निकुंज मधि सैन ॥२॥

९  राग बिहाग  खेलि फाग निकुंजन दोऊ पोढे हैं पिय प्यारी ॥ रंग
भीने रस भीने दोऊ करत बिलास महारी ॥१॥ कुच कलसन पर बांह धरावत
चुंबन अति सुखकारी ॥ रसिक मुकट मणि रसमय दंपति कृष्णदास
बलिहारी ॥२॥



१०  राग बिहाग  निसके उनीदे नेना दुरिदुरि जात ॥ सब दिन
बीत्यो होरीके ओसर अंगअंग अलसात ॥१॥ रंग रगमगे गुलाल सगमगे
लग्यो अरगजा सांवल गात ले अंचर पोंछत पिय प्यारी पिय तन निरख
मुसकात ॥२॥ बोहोत गई निस जान लाल संग पोढ़ी पिय अंग अंग
लपटात ॥ कृष्णदास प्रभु फाग खेलकी अरसपरस बातें बतरात ॥३॥

११  राग बिहाग  पोढ़े पीय-प्यारी रंग भरे ॥ अरसपरस दोऊ रीझि
रिझावति लै आरसी जो करे ॥१॥ तेरी री बसन सौंधे सौं भरि जु रहे रीखरी ॥
तु जो मिलती सखी री वै अधरामृत मोहन प्रसन करे री ॥२॥

वसंत धमार आश्रय के पद

१  राग वसंत  श्रीवल्लभ प्रभुकरुना सागर जगत उजागर गाइए ॥
श्रीवल्लभ के चरन कमलकी बलि बलि जाइए ॥१॥ वल्लभी सृष्टि समाज संग
मिलीजीवनकोंफल पाइए ॥ श्रीवल्लभगुन गाइए याहितें 'रसिक' कहाइए ॥२॥

आशिष के पद

१  राग वसंत  खेलि फागु अनुरागु मुदित जुबती जन देति असीस ॥
रसिकन की रस रासि श्रीवल्लभ जीयौ कौटि बरीष ॥१॥ फिर आई खेलन

कें कारन अबला जुरि दस बीस ॥ 'हरिदास' के स्वामी स्यामा खेलौ वसंत जय जय गोकुल के इस ॥२॥

२ (१६) राग सारंग (१६) खेल फाग घर आयो लाडिलो जसुमति करत बधाई ॥ विविध उपहार लिये सब ब्रजजन संग लगाई ॥१॥ कनक थार भर मुक्ताफल ले आरती उतराई ॥ नंदनंदन की या छबि ऊपर सूरदास बलजाई ॥२॥

डोल के पद - राग नट

१ (१६) राग नट (१६) खेल फाग फूल बैठे झुलत डोल डहडहे नागर नयन कमल ॥ बहुत दिननके भये हैं श्रमित सुख सखी संग लीने राधाकृष्ण रस रास जवल ॥१॥ गावत राग रागिणी सों मिल कंठ सरस कोकिलाहूतें अमल ॥ कल्याण के प्रभु गिरिधर रीझ झोटा देत हीये हरख गोरे गात छूटे छबि सों धवल ॥२॥



२ (१६) राग हमीर (१६) डोल झुलत हैं गिरिधरन झुलावत बाला ॥ निरख निरख फूलत ललितादिक श्रीराधावर नंदलाला ॥१॥ चोवा चंदन छिरकत भामिनि उडत अबीर गुलाला ॥ कमल नयन कों पान खवावत पहरावत उरमाला ॥२॥ वाजत ताल मृदंग अधोटी कूजत वेणु रसाला ॥ नंददास युवती मिल गावत रिझवत श्रीगोपाला ॥३॥



३ (१६) राग हमीर (१६) डोल चंदन को झुलत हलधर वीर ॥ श्रीवृंदावन में कालिंदी के तीर ॥१॥ गोपी रही अरगजा छिरकत उडत गुलाल अबीर ॥ सुरनर मुनिजन कौतुक भूले व्योम विमानन भीर ॥२॥ वाम भाग राधिका विराजत पहरे कसुंभी चीर ॥ परमानंद स्वामी संग झूलत बाढ्यो रंग शरीर ॥५॥



डोल - राग कल्याण



१ (१६) राग कल्याण (१६) डोल झूलत हैं ललना ॥ निरख निरख फूलत ललितादिक संग सहचरी बलना ॥१॥ सप्त स्वरन मिल गावत सब मिल झील को किल कलना ॥ हरीदास के स्वामी स्यामा कुंजविहारी रीझ भये मगना ॥२॥ डोल झुतहें गिरिधरन नवल नंदलाला ॥ ब्रजपुर बनिता निरख

वारतहें कंचन की मणिमाला ॥३॥ सकल श्रृंगार अनूप विराजत कूजत
वेणु रसाला ॥ माधोदास निरख गोपीजन प्रमुदित श्रीगोपाल ॥४॥

२  राग कल्याण  डोल झुलतहें प्यारो लाल बिहारी बिहारिन
ए राग रम रह्यो ॥ काहू के हाथ अधोटी काहू के बीन काहू के मृदंग को
झप ले ताल काहू के अरगजा छिरकत रंगरह्यो ॥१॥ डांडी डांडी खेल
मच्यो जो परस्पर नहीं जानियत पग क्यों रह्यो ॥ हरीदास के स्वामी स्यामा
कुं बिहारी ऊनको खेल किन्हूं न लह्यो ॥२॥

३  राग कल्याण  डोल झुलत हैं हंसि मुसक्यात परस्पर ॥ सुरंग
गुलाल लई जु मुठी भर कटि तट में राखी छिपाय करि चाहत भयो द्रगंचर
॥१॥ देखो कहत अनेक कुसम पर कैसें दोरत हैं री अलिवर मानों चंपे
पंचसर केसर ॥ जब जीयकी जानी मुख ऊपर तबे दई तारी सुंदर कर
बिथके सब नारी नर ॥२॥ यह विधि फूलत हैं री गिरिवरधर परस पान
कपोल मनोहर रीझे देत कबहूं उरसों उर ॥ मदन मोहन पीय परम रसिक
वर कहा कहूं यह सुख को सागर बलिहारी बानिक पर ॥३॥

४  राग कल्याण  झूलत डोल नवल किशोर नवल किशोरी ॥
वृंदा विपिन सुभग यमुना तट मुकुलित नूत माधवी मोरी ॥१॥ कदली खंभ
ढिंग ठाडी तरुणी गण गावत दुहूं ओरी ॥ पूरत अधर धरें मनमोहन मधुर
मुरली ध्वनि थोरी ॥२॥ हाथन गहे कनक पिचकाई केसर सरस अगर
घस घोरी ॥ पृथक पृथक छिरकत जु परस्पर सुंदर स्वाम राधिका गोरी
॥३॥ सुरंग गुलाल अबीर उडावत धन ज्यों जुर चढ गगन गयोरी ॥ जुगल
किशोर नवल बानिक पर ब्रजजन बल डारत तृणतोरी ॥४॥

५  राग कल्याण  झूलत नंद-नंदन डोल ॥ कनक खंभ, जराई
पटुली, लगे रत्न अमोल ॥ सुभग सर्ल सुदेश डाँड़ी, रची बिधना गोल ॥
मनौ सुर-पति सुरसभातैं, पटै दियउ हिंडोल ॥ जबहि झंपत, तबहि कंपति,
बिहँसि लगति उरोल ॥ त्रिदस-पति सजि चढ़ि बिमाननि, निरख दे-दे
ओल ॥ थके, मुख कछु कहि न आवै सकल मखकृत झोल ॥ सखी नव-
सत साज कीन्हें, बदति मधुरे बोल ॥ थक्यौ रति-पति देखि यह छबि,

भयौ बहु भ्रम भोल ॥ सूर यह सुख गोप-गोपी, पियत अमृत कलोल ॥

६ ॥ राग कल्याण ॥ डोल झूलत नंदनंदन छिरकत चोबा-चंदन ॥ ललिता-बिसाखा झुलवति ठाढी कर गहि डोल जु कंचन ॥ बृंदावन प्रफुलित द्रुम-बेली कोकिल कुंजन हंसन ॥ नौतन चूत प्रवाल रहे लसि एक लिये ठाढे हैं अंजन ॥ अबीर-गुलाल उडावत दुहूँ दिसि लियें भराई भरि-भरि झोरनि ॥ 'परमानंददास' कौ ठाकुर गोपिनि के चित-चोरनि ॥

७ ॥ राग केदारो ॥ झूलत डोल नवलकिशोरी ॥ वृंदाविपिन सुभग यमुनातट मुकुलित नूत माधवी दोरी ॥१॥ कदली खंभ ढिंग ठाडी गुण गावत दुहूँओरी ॥ पूरत अधर धरे मनमोहन मधुर मुरली ध्वनि थोरी ॥२॥ हाथन गहे कनक पिचकाई केसर सरस अगर घसघोरी ॥ पृथक-पृथक छिरकत जु परस्पर सुंदर श्याम राधिका गोरी ॥३॥ सुरंग गुलाल अबीर उडावत घन ज्यों जुर चढ गगन गयोरी ॥ जुगलकिशोर नवल बानिकपर ब्रजजन बल डारत तृणतोरी ॥४॥

(यह पद ४ थे भोग आरती के बाद गावें)

डोल - आशिष के पद राग- देवगंधार

१ ॥ राग देवगंधार ॥ झूलत डोल दोऊ अनुरागे ॥ केसर और गुलाल सों मीजे चोवा लपटे वागे ॥१॥ ललितादिक मिल झुलवत गावत एक एकते आगें ॥ बाजत ताल पखावज आवज मुरली संग सुहागें ॥२॥ देत असीस चली ब्रज सुंदरि फिर खेलेंगे फागें ॥ कृष्णदास प्रभु की छबि निरखत रोम रोम रस पागें ॥३॥

२ ॥ राग देवगंधार ॥ सखी मिलि झुलवत अपुने रंग ॥ झूलवत डोल लाडिलो गिरिधर राधे ले अरधंग ॥१॥ अंब मोर फल लता माधुरी रचि फूलन करि संग ॥ नाँचत गावत करत मनोरथ भाव दिखावत अंग ॥२॥ प्रथम खेल स्यामा प्यारी कों केसर चोवा बंद ॥ अबीर गुलाल उडावति हे बिलि रीझय गोकुल चंद ॥३॥ दूज्यो खेल रच्यो चंद्रावलि अद्भुत बन्यो स्वरूप ॥ दोऊनके मनमोद बढावत लागत परम अनूप ॥४॥ तीज्यो खेल

रच्यो ललितादिक को करि सके बखान ॥ और अकोर कहां लों दीजे नोछावरि
करि प्रान ॥५॥ चोथो खेल मदनमोहन को बरखत रंग अपार ॥ पिचकाई
चहूँ दिस तें छूटत अबीर गुलाल धमार ॥६॥ यह रस रीति कहा कोऊ जाने
श्रुति हूँ गावति नेति ॥ 'द्वारकेश' प्रभु झूलि पधारे निज मंदिर संकेत ॥७॥

राग धनाश्री

१ (११) राग धनाश्री (११) राधाकुंवर रसिकसखी अनुरागे पागे रससों
सब नंदद्वार पै आये ॥ बार आरती विविध भांत सों जसुमति करत बधाये
॥१॥ न्हान चले यमुना किलकित सब शोभा बरनी न जाई ॥ देखत ही
अमरेस थकित भये पहुंचन वृष्टि कराई ॥२॥ खेलि फाग अनुराग सिंधु
बढ्यो ब्रजजन संग लगाई ॥ सुंदर बदन कमल ऊपर रघुवीर वारनं जाई ॥३॥

राग वसंत



१ (११) राग वसंत (११) खेल फाग अनुराग मुदित जुबती जन देत असीस ॥
रसिकन की रस रासि श्रीवल्लभ जीयो कोटि बरीष ॥१॥ घिर आई खेलन
कें कारन अबला जुरि दस बीस ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा खेलो वसंत
जय जय गोकुल के ईश ॥२॥



२ (११) राग वसंत (११) खेलि फाग घर आयो लाडिलो जसोमति करत
बधाई ॥ विविध भांति उपहार लीयें सब ब्रजजन मंगलगाई ॥१॥ कनक
थार भरि मुक्ताफल लै आरती उतराई ॥ नंदनंदन की या छबि ऊपर सूरदास
बलिजाई ॥२॥



श्री गुसाईं भादो वसंत

१ (११) राग वसंत (११) खेलत वसंत वर विट्टलेश ॥ आनंद कंद गोकुल
सुदेस ॥१॥ श्रीगिरिधर गोविंद संग ॥ श्रीबालकृष्ण लज्जित अनंग ॥२॥
श्रीगोकुलनाथ अनाथ नाथ ॥ रघुनाथ नवल जदुनाथ साथ ॥३॥ श्रीघनश्याम
अभिराम धाम ॥ श्रीकल्याण राय परिपूरन काम ॥४॥ मुरलीधर आदि समस्त
बाल ॥ सेवक विचित्र सेवा रसाल ॥५॥ जहां उडत गुलाल अबीर रंग ॥

तहां वाजत ताल मृदंग चंग ॥६॥ जहां गिरिवरधारीजू खेलन आये ॥ तहां लघु गुपाल बलिहारी जाये ॥७॥

२  राग सारंग  डोल भलो सिंगार्यो फुलनि ॥ वृन्दावन वंसीवट छैयां श्री जमुना के कुलनि ॥१॥ नंदनंदन वृषभान नंदिनी बैठे दोऊ जन झुलनि ॥ छिरकत केसर चोवा चंदन छाड्यो गुलाल अतुलनि ॥२॥ माँगति फगुवा सब ब्रज युवति कह्यो हमें जिन भूलति ॥ वसन मैगाय दिये 'ब्रजपति' तब ओरे रतन अतुलनि ॥३॥



३  राग सारंग  नंद नंदन कुंवरि राधिका नागरि डोल झूलति बने रंग भीने ॥ कीं मन रहे झुमन फल फूल चहुँ और तें ॥ गोपिका जूथ मिलि मधुर लीने ॥१॥ खेलि गहरो दोऊ और तें छै रह्यो रंग घुमडनि भई प्रबल भारी ॥ देव मुनि देखि किन्नर थकित छै रहे सुर वधू बिकसि रही काम चारी ॥२॥ ब्रज कुंवर लाडिलो नित्य लीला ललित हे रही सरस रस रंगकारी ॥ 'रसिक' जन मनन करे देखि दृग अपनै परान इक बल करो वारि डारी ॥३॥



४  राग सारंग  माई ! फूलेही फुलत, श्री राधा कृष्ण झूलत, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले फूलनि जोरत, फूले निमिष न मोरत, संतनि हित फूल डोल ॥ फूल फटित खंभ रचित, कंचन ही फूल खचित, सरस रसहि फूल डोल ॥ पटुली नव रतन पचित, हीर लाल मोति जटित, संतनि हित फूल डोल ॥ मरूवा मयारी दरोल, झूमका प्रवाल ओल, सरस रसहि फूल डोल ॥ डाँडि हेम चारू गोल, चुनिनि फूल लगे लोल, संतनि हित फूल डोल ॥ फूले बूँदावन, अनुकूल, सघन लता फूले फूले, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले श्री जमुन कूल बिबिध रंग फुले फूल, संतनि हित फूल डोल ॥ फूले चंपक, चमेलि, फूल लबंग लता बेलि, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूली नेवारि एलि, मोगर सेवति, सुबेलि, संतनि हित फूल डोल ॥ तहाँ मौरि अंब फूले, निबुआ फर सदा भूले, सरस रसहि फूल डोल ॥ तहाँ कमल, केवर फूले केतकि कनैर फूले, संतनि हित फूल डोल ॥ फूली मधु मालति रेलि, फूलि मधुप करत केलि, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले फले आनंद बेलि फूलि पिबत सुरस पेलि, संतनि हित फूल डोल ॥ फूलनिके

सौंधे वार, मनौ मधुप छबि अपार, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूलनि के
 हियपै हार, सुरसरि मनु धरे धार, संतनि हित फूल डोल ॥ माथ मुकुट
 रचित फूल, फूलनिके, सीसफूल, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूलनि बेंदी
 लिलार, फूलनि नख-सिख सिंगार, संतनि हित फूल डोल ॥ फूलि धेनु
 ग्वाल-बाल, झूले नैदजू के लाल, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूलि तरुनि
 बृद्धवाल, फूलि करति बिबिध ख्याल, संतनि हित फूल डोल ॥ फूलि रोहिनि
 जसुद रानि, फूलि देखि राजधानि, सरस रसहि फूल डोल ॥ नैद हलधर
 सुख मानि गोकुल, सब फूले प्रानि, संतनि हित फूल डोल ॥ फूलै बजै
 मृदंग, महुवरि, डफ, ताल, चंग, सरस, रसहि फूल डोल ॥ फूलि बजै बंसुरि
 संग, अमृत कुंडली, उपंग, संतनि हित फूल डोल ॥ फूलि बजै किनरि,
 तार, सुरमंडल, इनतकार सरस रसहि फूल डोल ॥ फूल बजै गिरिगिरार,
 भेरी घहरै अपार, संतनि हित फूल डोल ॥ फूलि बजै मुर्रैज, रुज, झाँझ
 झालरीनि पुंज सरस रखहि फूल डोल ॥ फूले बजै दुंदुभि गुंज, कूजत कोकिल
 निकुंज, संतन हित फूल डोल ॥ ब्रज ललना डोल फूलै गोपि झुलवत कान्ह
 झुलै, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले मुदित मनोहर तूले रसिकिनी रसिक
 फूले संतन हित फूल डोल ॥ फूले हरषि परसपर गावैं, मीठी बोली बुलावै,
 सरस रसहि फूल डोल ॥ फूली मुदित मनोहर भावैं, लाड़ लालनहिं लड़ावै,
 संतन हित फूल डोल ॥ फूली चंदन बंदन रोरी, केसरि मृगमद घोरी, सरस
 रसहि फूल डोल ॥ फूली छिरकति नव किसोरि, अबिर भरि गुलाल झोरि
 संतन हित फूल डोल ॥ फूली नाचति जोबन बिभोरि, जुथनि लै जूथ जोरि
 सरस रसहि फूल डोल ॥ फूली करत कुलाहल खोरी, पुर नर-नारी किसोरी
 संतन हित फूल डोल ॥ फूले फगुवा दे रस राख्यो, पट भूषन नहिं काँख्यो,
 सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले हरि हैसि अमृत भाख्यो, सबहीको मन
 राख्यो संतन हित फूल डोल ॥ फूले नारदादि करत, गान, रिषि मुनि सिव
 धरत ध्यान, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले बीना हरि जस बखान, फेरि
 उग्रसेन आन, संतन हित फूल डोल ॥ फूले कहि हरि, मुनि ॥ कहो जाई,
 तुरत मोहि लै बुलाई, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले रजधानी, असुर आई,
 जमुना मैं द्यौ बहाई, संतन हित फूल डोल ॥ फूले अग्रसेन छत्र धाई, मथुरा



आनंद बढ़ाई, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले पितु माता मिलीं धाई दुःख नसि, सुख देऊं जाई, संतन हित फूल डोल ॥ फूले मुनि सुनि यह हरषाई, भूमी ब्रज रतन छाई सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले सूरपति, सुर सची आई नभ सुमन चढ़ि बरषाई, संतन हित फूल डोल ॥ फूले हरषत होरी खिलाई, मुनि गे बैकुंठ सिधाई सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले हरषति हरि सुजस गाई, पूछत सुर, कहि न जाई, संतन हित फूल डोल ॥ पढ़े, पढ़ाईके सुनावे, ते बैकुंठ पद पावै, सरस रसहि फूल डोल ॥ सूरदास कैसे करि गावे, लीला सिंधु पार न पावै, संतन हित फूल डोल ।



शेहरा के पद

१  राग बसंत  दुलहे श्री ब्रजराज दुलारो दुलहिन भानु किसोरी ॥ सीस सेहरो सोभित नीकों भली बनी यह जोरी ॥१॥ राजति रंग भरे दोउ रस रस में आई जुरी ब्रजनारी ॥ गावति मंगल गीत बधाए हैंसि-हैंसि देति परसपर तारी ॥२॥ बूका वंदन चोवा चंदन गुलाल अबीर उड़ावे ॥ मृगमद केसर लै-लै छिरकति सबहीन के मन भावे ॥३॥ आरति वार करति न्योछावर ब्रजनारी सुख पायो ॥ जुगल रूप मन माँही बसो 'रघुनाथ दास' मन भायो ॥४॥

२  राग सारंग  डोल झुलावत लाल बिहारी नाम लेलें बोलें लालन प्यारी हैं दुलहा दुलहेनि दुलारी सुंदर वरस कुमारी ॥ नखसिख सुंदर सिंगारी केसु कुसुम सुहस्त सम्हारी स्याम कंचुकी सुरंग सारी चाल चले छबि न्यारी ॥१॥ बारंवार बदन निहारी अलक तिलक झलमलारी रीझ रीझ लाल रे बहिलारी पुलकित भरत अंकवारी ॥ कोककला निपुन नारी कंठ सरस सुरहि भारी सुयश गावत लाल बिहारी बिहारिन की बलिहारी ॥२॥

डोल के पद - राग देवगंधार

१  राग देवगंधार  मनमोहन अद्भुत डोल बनी ॥ तुम झूलों हों हरख झुलाऊँ वृंदावन चंद धनी ॥१॥ परम विचित्र रच्यो विश्वकर्मा हीरालाल मनी ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल छबि कापें जात गनी ॥२॥



२  राग देवगंधार  झूलत फूल भई अति भारी ॥ निर्मित वर



हिंडोल विटप तरु वृंदा विपिन विहारी ॥१॥ सखी सकल अति मुदित भई
हैं पहरे विविध रंग सारी ॥ भृकुटी भृंग लावण्य अंग अंग प्रति कोटि मदन
छबि टारी ॥२॥ वरणन करिये कहा प्रेम को रुचिदायक तहां गारी ॥ व्यास
स्वामिनी की छबि निरखत प्राण संपदावारी ॥३॥



३ (१५) राग देवगंधार (१५) मोहन झूलत बढ्यो आनंद ॥ एक और वृषभान
नंदिनी एक और ब्रज चंद ॥१॥ ललिता विशाखा झुलवत ठाडी कर गहि
कंचन डोल ॥ निरख निरख प्रीतम अरु प्यारी विहस कहत मृदु बोल ॥२॥
उड़त गुलाल कुंकुमा बंदन परसत चारु कपोल ॥ छिरकत तरुणी मदन
गोपाले आनंद हृदें कलोल ॥३॥ कहाकहों रस बढ्यो परस्पर त्रिभुवन वरन्यों
न जाय ॥ कुंभनदास लालगिरिधर की बानिक अधिक सुहाय ॥४॥



४ (१५) राग देवगंधार (१५) झूलत डोल नंद किशोर ॥ वाम भाग वृषभान
नंदिनी पहिरे पीत पटोर ॥१॥ वाजत ताल पखावज आवज झालर मुरली
घोर ॥ उड़त गुलाल अबीर अरगजा कुंमकुमजल चहुँ ओर ॥२॥ वृंदाबन फूली
वन बेली कुंजित कोकिला मोर ॥ झूलत स्याम झुलावत गोपी आनंद बढ्यो
न थोर ॥३॥ अति अनुराग भरी सब सुंदरि कर अंचर की छोर ॥ कमल नयन
मुख शरद चंद्रमा युवती जन नयन चकोर ॥४॥ सुर विमान सब कौतुक भूले
वरखे कुसुमन जोर ॥ 'सूरदास' प्रभु आनंद सागर गिरिवरधर सिरमोर ॥५॥

५ (१५) राग देवगंधार (१५) आज माई झूलत हैं नंदलाल ॥ संग राजत वृषभान
नंदिनी जोरी परम रसाल ॥१॥ श्रीगोवर्द्धन की सुभग शिखर पर रच्यो जो
डोल विशाल ॥ कदली करण केतकी कुंजो बुकल मालती जाल ॥२॥ नूतन
न्यूत प्रवाल रहे लस माधुरीसों अरुझाय ॥ कमल प्रसून पराग पुंज भर बहत
समीर सुहाय ॥३॥ मधुप कीर कल कोकिल कुंजत रस मकरंद लुभाय ॥ सुन
सुन श्रवण पुलक पिय प्यारी रहत कंठ लपटाय ॥४॥ निरझर झरत सुगंध
सुबासित रंग रंग जल लोल ॥ उभय कूल कलहंस मंडली कूजत करत कलोल
॥५॥ युवतिजन समूह मिल गावत प्रमुदित लोचन लोल ॥ बाजत ताल मृदंग
होत रंग विहसत चारु कपोल ॥६॥ चोवा चंदन छिरकत भामिनि अवलोकत
रस भाय ॥ श्रीविठ्ठलनाथ आरती उतारत दास निरख बलजाय ॥७॥

६  राग देवगंधार  मदन गोपाल झूलत डोल ॥ वाम भाग राधिका बिराजत पहरें नील निचोल ॥१॥ गौरी राग अलापत गावत कहत भामते बोल ॥ नंद नंदन को भलो मनावत जासों प्रीति अतोल ॥२॥ नीको वेष बन्यों मन मोहन आज लई हममोल ॥ बलहारी मनमोहन मुरति जगत देहुं सब ओल ॥३॥ अब्दुत रंग परस्पर बाढ्यो आनंद हृदय कलोल ॥ परमानंद दास तिहिं अवसर उडत होलिका झोल ॥४॥

७  राग देवगंधार  झूलत दोऊ नवल किशोर ॥ रजनी जनित रंग रस सूचित अंग अंग उठ भोर ॥१॥ अति अनुराग भरे मिल गावत सुर मंडल कल घोर ॥ बीच बीच प्रीतम चित चोरत प्रिया नयन की कोर ॥२॥ अबला अति सुकुमार डरपत वरहिं डोल झकोर ॥ पुलक-पुलक प्रीतम उर लागत दे नव उरज अकोर ॥३॥ अरुझी विमल माल कंकण सों कुंडल सों कचडोर ॥ वे पथ युत क्यों बने विवेचित आनंद बढ्यो न थोर ॥४॥ निरख निरख फूलत ललितादिक बिब मुख चंद्रचकोर ॥ दे असीस हरिवंश प्रशंसित कर अंचल की छोर ॥५॥

८  राग देवगंधार  वृंदावन नीको बन्यो डोल ॥ झूलत कृष्ण तरणि तनया तट जहां मधुपन के टोल ॥१॥ आस पास ब्रज बालक मंडली मधुप करत झकझोर ॥ फूली सरस सुगंध माधवी झूम रही चहुं ओर ॥२॥ ओर पुष्प कहां लों वरनों अगणित झूमक झोर ॥ तामें कोकिला शब्द सुहाये नाचत मधुरे मोर ॥३॥ चोवा चंदन ओर अरगजा केसर भरी हैं कुंमकुम घोर ॥ पिचकाई भरभर जु चलावत तक नव ऊरज कठोर ॥४॥ वाजे सरस सुहाये बाजत ताल मृदंग उपंग ॥ बाजत वीन बांसुरी महूबर ओर डफ ढोल मृदंग ॥५॥ हंस गावत करताल बजावत कहत होरिका होल ॥ डारत भरत अबीर सबे मिल भरत झोलका झोल ॥६॥ सुख की सीमा वरनी न जाई भली बनी हैं जोर ॥ रस में मगन भये सब राजत कहा कहुं मति थोर ॥७॥ कहि मोहन जन प्रभु की लीला नवल किशोर किशोरी ॥ शोभा मोपें बरणी न जाय प्रमुदित चंद चकोरी ॥८॥

९  राग देवगंधार  झूलत हंससुता के कूल ॥ सघन निकुंज पुंज

मधुपन के अद्भुत फूले फूल ॥१॥ ललित लता लपटी ललितादिक बरषत
आनंद मूल ॥ घन दामिनि ज्यों राजत मोहन निरख गई मति भूल ॥२॥
रमा आदि सुरनारि सहचरी नाहिं कोऊ समतूल ॥ विष्णुदास गिरिधरन
छबीलो सर्वस्व तहां अनुकूल ॥३॥

१० ॥ ॐ राग देवगंधार ॥ ॐ डोल माई झूलत हैं ब्रजनाथ ॥ संग शोभित
वृषभान नंदिनी ललिता विशाखा साथ ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ
रंज मुरज बहु भांत ॥ अति अनुराग भरे मिल गावत अति आनंद किलकात
॥२॥ चोवा चंदन बूका वंदन उडत गुलाल अबीर ॥ परमानंद दास बलहारी
राजत हैं बलबीर ॥३॥

११ ॥ ॐ राग देवगंधार ॥ ॐ झूलत डोल नंदकुमार ॥ चहुओर झुलावत
ब्रज सुंदरी गावत सरस धमार ॥१॥ वाम भाग वृषभान नंदिनी साजे सकल
सिंगार ॥ आसकरण प्रभु मोहन झूलत ब्रज के प्राण आधार ॥२॥

१२ ॥ ॐ राग देवगंधार ॥ ॐ गोकुल नाथ विराजत डोल ॥ संग लिये
वृषभान नंदिनी पहरे नील निचोल ॥१॥ कंचन खचित लाल मणि मोती
हीरा जटित अमोल ॥ झुलवत यूथ मिली ब्रज सुंदरी हरखत करत कलोल
॥२॥ खेलत हैंसत परस्पर गावत हो हो बोलत बोल ॥२॥ सूरदास स्वामी
पिय प्यारी झूलत झूलवत झोल ॥३॥

१३ ॥ ॐ राग देवगंधार ॥ ॐ झूलत सुंदर जुगलकिशोर ॥ नंद नंदन वृषभान
नंदिनी पीवत सुधारस नयन चकोर ॥१॥ भृकुटी भृंग धनुष सी शोभित
तिलक सायक जोर ॥ मंद मंद मुसिकात स्यामघन करत कटाक्ष इन ओर
॥२॥ अंजन दीप्ति रंजन लागे राजत दशन तंबोर ॥ मृगमद आड बने कर
कंकण हार सिंगारन डोर ॥३॥ गयो सिरतें पटोल मनोहर उघरे कुच कलश
कठोर ॥ सूरसु निरखत भये प्रेमवश तब पिय करत निहोर ॥४॥

१४ ॥ ॐ राग देवगंधार ॥ ॐ डोल माई झूलत नंदकुमार ॥ वाम भाग
वृषभान नंदिनी जोरी अति सुकुमार ॥१॥ श्री यमुना तट सघन कुंज तर
वृंदावनहि मझार ॥ माधुरी कुंद लता अति प्रफुल्लित उरझि परस्पर

डार ॥२॥ बहुत समीर मंद अति शीतल अलिपिक करत पुकार ॥ झोटादेत
हरख ललितादिक इकटक रहत निहार ॥३॥ कुरबक बकुल पडोप नव लासी
होत परस्पर मार ॥ उडत अबीर गुलाल कुंमकुमा देत भामती गार ॥४॥
बाजत ताल मृदंग झांझ डफ रीझ देत उरहार ॥ ललिताजू अपने कर बीरी
पिय मुख देत संवार ॥५॥ हरख असीस देत गोपीजन जोरी रहो अटार ॥
श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठल पदरज दास निरख बलहार ॥६॥

१५ ॥ राग देवगंधार ॥ झुलत डोल नंदकुमार ॥ चहुँ ओर झुलावत
व्रजसुंदरी गावत सरस धमार ॥१॥ वामभाग वृषभान नंदिनी साजे सकल
सिंगार ॥ छिरकत चोवा चंदन बंदन कुंमकुमा करन करन पिचकार ॥२॥
उत गुलाल अबीर दुहूँ दिश बाढ्यो रंग अपार ॥ आसकरण प्रभु मोहन झुलत
व्रज के प्राण आधार ॥३॥

१६ ॥ राग देवगंधार ॥ डोल पर देत परसपर तारी ॥ बेसरी सौं
अलके अरुझांनी तुम देखो नवल बिहारी ॥१॥ उरसों उर नहिं टारत मोहन
नेकु करत नहिं न्यारी ॥ 'परमानंद' दास तहाँ ठाढ़ें तुम जीते हम हारी ॥२॥

१७ ॥ राग देवगंधार ॥ डोल झूलत हैं हंसि मुसक्यात परस्पर ॥
सुरंग गुलाल लई जू मुठी भर कटि तट में राखी छिपाय करि चाहत भयो
द्रगंचर ॥१॥ देखो कहत अनेक कुसुम पर कैसे दोरत हैं री अलिबर मानों
चपे पञ्चसर केसर ॥ जब जीयकी जानी मुख उपर तबै दई तारी सुंदर
कर बिथके सब नारी नर ॥२॥ यह विधि फूलत हैं री गिरिवरधर परस
पान कपोल मनोहर रीझे देत कबहूँ उरसों उर ॥ मदन मोहन पीय परम
रसिक वर कहा कहूँ यह सुख को सागर बलिहारी बानिक पर ॥३॥

१८ ॥ राग देवगंधार ॥ डोल झुलावत सब बृज सुंदरी झूलत मदन
गोपाल ॥ गावत फाग धमार हरख भर हलधर और सब ग्वाल ॥१॥ फूल
कमल केतकी कुंजो गुंजन मधुप रसाल ॥ चंदन बंदन चोवा छिरकत उड़त
अबीर गुलाल ॥२॥ बाजत बीन विषाण बांसुरी डफ मृदंग और ताल ॥
नंददास प्रभु के संग विलसत पुण्य पुंज ब्रजवाल ॥३॥

१९ ॥ राग देवगंधार ॥ सखी मिलि झुलवति अपुने रझ ॥ झुलवत डोल

लाडिलो गिरिधर राधे लै अरधंग ॥१॥ अंब मोर फल लता माधुरी रचि फूलन करि संग ॥ नौचत गावति करत मनोरथ भाव दिखावत अंग ॥२॥ प्रथम खेल स्यामा प्यारी कौं केसर चोवा बंद ॥ अबीर गुलाल उडावति हे बलि रिझय गोकुल चंद ॥३॥ दूजो खेल रच्यों चन्द्राबली अद्भुत बन्यों स्वरूप ॥ दोऊन के मन प्रीति बढ़ावत लागति परम अनूप ॥४॥ तीजो खेल रच्यो ललितादिक को करि सके बखान ॥ और अकोर काहा लों दीजे नोछावरि करि प्रान ॥५॥ चोथो खेल मदनमोहन कौं बरखत रङ्ग अपार ॥ छूटति पिचकाई चहुँ दिस तें अबीर गुलाल धुमार ॥६॥ यह रस रीति काहा कोऊ जाने श्रुति हूं गावति नेति 'द्वारिकेस' प्रभु झुलि पधारे निज मन्दिर संकेत ॥७॥

२० (१५१) राग देवगंधार (१५२) हसि मुसकात परस्पर डोल झूलत हैं ॥ सुरङ्ग गुलाल लई मुठि भरि कटि तट में राखि छिपाई धरि चाहत भयों दृगंचर ॥१॥ देखों कहत अनेक कुसुम पर कैसे दोरत हैं हो अलिवर मानों चले पंचसर के सर ॥ तब जियकी जानी मुख ऊपर तब ही दर्ई तारी सुंदर कर बिथके सब नारी ॥२॥ इहि विधि झूलत हैं री गिरिधर परसत पानि कपोल मनोहर रीझि देत कबहू उरसों उर ॥ 'मदनमोहन' पिय परम रसिकवर कहा कहीं यह सुख को सागर बलिहारी बानिक पर ॥३॥



राग पंचम



१ (१५१) राग पंचम (१५२) आज बने मोहन झूलत डोल ॥ बाम अंग लगि सोहति भामिनि सौभग सींव अतोल ॥ दुहूँ ओर प्रमुदित मन पुलकित ब्रज-बनिता मिलि टोल ॥ तेल-गुलाल मिलाई करनि सों मंडित करत कपोल ॥ रतन-जटित पिचकारिनि छिरकत केसरि-रंग अमोल ॥ पंचम राग अलापति-गावति मधुरे-मधुरे बोल ॥ सुरंग गुलाल अबीर उड़ावत चहुँ-दिसि भरि-भरि डोल ॥ बाढ़ी भक्ति दास 'परमानंद' जग में बाजत डोल ॥

डोल - राग वसंत



१ (१५१) राग वसंत (१५२) डोल विचित्र बन्यो नंदनंदन गुहि गुहि लाई फूल ॥ ब्रजनारी सिमिट सब आई अपने अपने दूल ॥१॥ ललिता कहे सुनों मनमोहन

प्रीतम प्यारी की बात ॥ संग सहित वृषभान नंदिनी दोऊ मिल झूलो साथ ॥२॥ कोऊ एक झांझ मृदंग बजावत कोऊ अलापत राग ॥ कोऊ मुक्तामाल खगवारो वारत मानत भाग ॥३॥ छबीली छटन सुर नर मुनि मोहे गंधर्व मोहे गान ॥ मगन भई ब्रजनारी गावें मगन भये अति मान ॥४॥ इतनी कहें यथामति मेरी प्रभु मुकुंद विलास ॥ राधा नंद सुवन दोऊ पर बल-बल जाये दास ॥५॥

२  राग वसंत  डोल झुलावत सब ब्रज सुंदरि झूलत मदन गोपाल ॥ गावत फाग धमार हरख भर हलधर ओर सब ग्वाल ॥१॥ फूल कमल केतकी कुंजो गुंजत मधुप रसाल ॥ चंदन बंदन चोवा छिरकत उडत अबीर गुलाल ॥२॥ वाजत वेणु विषाण बांसुरी डफ मृदंग ओर ताल ॥ नंददास प्रभु के संग विलसत पुण्य पुंज ब्रजबाल ॥३॥



३  राग वसंत  आज ललना लाल फाग खेलत बने मिल झूलत सखी नवरंग डोल ॥ झोटका देत ब्रजनारि आनंद भरी छिरकत कुंकुमादि सौरभ अमोल ॥१॥ दिव्य आभरण चीर चारु अमोल छबि अंग राग राजत चित्र कुसुम कलोल ॥ सुरत तांडव लास्य भुव नृत्यत मदन गण उपहसत लोचन विलोल ॥२॥ वेणु वीणा मृदंग झांझ डफ किन्नरी तान बंधान नव नागरी डोल ॥ ततथेई थुंगनी नचत शब्दावली होरी हो होरी हो होरी हो बोल ॥३॥ रसिक वर गिरिधरन रसिकनी राधिका रसमस्ये चुंबत रसमय कपोल ॥ बाल कृष्णदास वैभव निरख मधुमास चल मलय पवन रस सिंधु झकझोल ॥४॥



डोल - राग हिंडोल

१  राग हिंडोल  झूलत युग कमनीय किशोर सखी चहुंओर झुलावत डोल ॥ ऊंची ध्वनि सुन चकृत होत मन सब मिल गावत राग हिंडोल ॥१॥ एक वेष एकवयस एकसम नव तरुणी हरणी दृग लोल ॥ भांत भांत कंचुकी कसें तन वरण वरण पहरें बलिचोल ॥२॥ वन उपवन द्रुम-वेली प्रफुल्लित अंबमोर पिकनि कर कलोल ॥ तैसेहीं स्वर गावत ब्रज वनिता झूमक देत लेत मनमोल ॥३॥ सकल सुगंध संवार अरगजा आई अपने अपने टोल ॥ एकतक पिचकाइन छिरकत एक भरत भर कनक कचोल ॥४॥ कबहुं स्याम पीय उतर डोलतें कौतुक हेत देंत झकझोल ॥ तब प्रिया

उर भरि स्वास कंप तन विरम-विरम बोलत मृदु बोल ॥५॥ गिरत तरोना गह्वो स्याम कर श्रवणदेन मिस छुवत कपोल ॥ तब प्रिय ईषद मुसक मंद हैंस वक्रचिते कर भुंह सलोल ॥६॥ भेरि झांझ दुंदुभी पखावज ओर डफ आवज बाजत डोल ॥ आए सकल सखा समूह जुर हो हो होरी बोलत बोल ॥७॥ रत्न जटित आभूषण दीने ओर दीने मुक्ताहार अमोल ॥ सूरदास मदन मोहन प्यारे फगुवा दे राख्यो मन ओल ॥८॥



डोल - राग जेतश्री



१  राग जेतश्री  शोभा सकल सिरोमणी दंपति झुलें डोल ॥ मोहन-राय झूलहीं ॥ कनक खंभ मरकत मणी हीरा खचित अमोल ॥१॥ चोकी पन्ना पांच पिरोजा रची रत्नन की पांत ॥ मुक्तामाल सुहावनी कहा वरनों बहु भांत ॥२॥ झुले दुलहनि राधिका दुल्हे नंदकुमार ॥ रतिरस केलि बिराजही बाढ्यो रंग अपार ॥३॥ ताल पखावज आवज झांझ झनक सहनाय ॥ वीणा वेणु रबाब किन्नरी मध्य मुरली की भाय ॥४॥ सखा मंडली शोभित गावत फाग धमार ॥ इत शोभित ब्रजसुंदरी गावत मीठी गार ॥५॥ झकझोरें पिचका चलें कहा वरनों यह बान ॥ चोवा चंदन छिरकहीं गोपी गोप सुजान ॥६॥ जख कर्दभ उर मंडिता उडत गुलाल अबीर ॥ करत विनोद कौतुहला राजत अति से भीर ॥७॥ खेलत वल्लव वल्लवी प्रतिछिन नव अनुराग ॥ कमल खंड केसर मधुपगण गुंजत पीत पराग ॥८॥ शिथिल वसन कटि मेखला रही अलक लर छूट ॥ एक एक मिल धावहीं गई मोतिन लर दूट ॥९॥ चिरंजीयो सुंदर वर प्यारो सकल घोष सिरताज ॥ नंद जसोदा को सुकृत फल प्रकट भयो हे आज ॥१०॥ सुर कुसुमन वरखा करें लीला देखें आय ॥ आसकरण प्रभु मोहन को यश रह्यो सकल जग छाय ॥११॥

२  राग धन्याश्री  झूलति डोल गोपाल संग नव नागरी चल नव नागरी ॥ इंदु-बदनी मृग नैनी सबे गुन आगरी ॥ चलि नवनागरी ॥१॥ रत्न खचित द्वे खंभ के ही राजही ॥ चोकी हेम जराय के बहु विधि साज ही ॥२॥ कदली मोर अंब पाँति द्वे परम सुहाव ही ॥ विविध कुसुम रंग बोरी के अति मन भाव ही ॥३॥ चहूँ दिस गोपी ग्वाल सखा संग सोह

ही ॥ निरख वदन तन हेर सबे मन मोह ही ॥४॥ ताल मृदंग उपंग बैनु
बहू बाज ही ॥ ढफ दुंदुभी कठ ताल मधुर सुर गाज ही ॥५॥ केसर कुंमकुम
घोर मृगमद सान के ॥ प्यारी को छिरकति पिचकारी जान के ॥६॥ सुरंग
गुलाल अबीर उड़ावत भामिनी ॥ बरन-बरन भये बसन कियो दिन जामिनी
॥७॥ दुहुँ दिस बाढ्यों खेल पोरि बृजराय के ॥ प्यारी दियो अरगजा ढोर
स्याम सिर धाय के ॥८॥ फगुवा देऊ कुमार के हम ही मंगाय के ॥ मेवा
बसन आभूषन बहुत मिलाय के ॥९॥ यह विधि खेलत रंग रह्यो परे ॥
जसोमति अति अभिलाष सों आरती करे ॥१०॥ जुग-जुग अविचल जोरी
के नित बिहार ही ॥ 'श्री विट्ठल' पद रज हरि जिन सिर धार ही ॥११॥

डोल - राग काफ़ी

१  राग काफ़ी  झूलत रस रंग भरे हो दोऊ राजत स्यामा स्याम
॥१॥ परिवा प्रथम सुहाग दिन महूरत बांध्यो डोल बनाय ॥ कंचन मणि
मुक्ताफल मानों रवि शशि उडुगण पाय ॥१॥ करि मंजन भोजन कर बीरा
बैठे सोंधो लगाय ॥ नील पीत पट की छबि मानों दामिनि घन जो लगाय
॥२॥ उरझी स्याम तमाल सों मानों कंचन वेली अनूप ॥ भूषण भूषित
गात मनोहर कहा वरने कवि रूप ॥३॥ नूपुर क्वणित चरण कर कंकण
कटि किंकिणी कलबाज ॥ मानों मराल बाल वर बोलत अति अद्भुत छबि
राज ॥४॥ संहचरी मुदित झुलावत फूलत गावत गोप धमार ॥ राग जम्यो
बहु बाजे बाजत मानों उमग्यो निधिवार ॥५॥ चोवा चंदन और अरगजा
कुंमकुम अगर सुवास ॥ मानों मलया गिरि हूँते छूटी विविध पवन
सुखरास ॥६॥ कहाँलों कहों अनुपम शोभा रही विविध छबि छाये ॥ निरख
काम रस धाम आपनो मानों रह्यो मुरझाय ॥७॥ देत असीस सकल गोपीजन
रही सब सीस नवाय ॥ श्रीराधा गिरिधारी ऊपर स्यामदास बलजाय ॥८॥

२  राग काफ़ी  बन्यो डोल मनोहर झूलत नंद को लाला ॥ संग
बनी रसरंग सनी प्यारी सुंदर नयन बिशाला ॥१॥ प्रेम भरी ललितादि
खरी फूली गावत गीत रसाला ॥ बाजत बेणु पखावज झांझ रंज मुरज ढफ
ताला ॥२॥ केसर नीर कपूर की धूरि उड़ावें अबीर गुलाला ॥ देखत हैं

जे कृष्ण स्नेह सों होत है नयन निहाला ॥३॥

३ (॥३॥) राग काफी (॥३॥) बन्यो ललित डोल चितचोर झूलत सांवरो ॥
रंग भरे बने अंग निरखि द्रग होत मदन मन बावरो ॥१॥ शोभित प्रिया
संग मन मोहन अंग शृंगार सुहाये ॥ गावत हित सहचरी झुलावत बहोत
सबन मन माये ॥२॥ बाजत ताल मृदंग रंग भरे छिरकत रंग रंगभीनी ॥
जन जे कृष्ण वसो ऊर अंतर जोरी परम प्रबीनी ॥३॥

डोल - राग सारंग

(चार भोगकी भावना चौथे भोग में)

१ (॥३॥) 'राग सारंग' (॥३॥) झूलत डोल राधिका संग ॥ गोवरधन पर्वतके
ऊपर खेलत अति रसरंग ॥१॥ प्रथम खेल राधे मन हुलस्यो केसर लपटत
अंग ॥ दुजो खेल रच्यो चंद्रावलि अबीर गुलाल सुरंग ॥२॥ तीजो खेल
कीयों ललितादिक अग्नि कुमारी संग ॥ चोथा खेल कियों चन्द्रावलि पिय
मोहे 'रसिक' अनंग ॥३॥

२ (॥३॥) राग सारंग (॥३॥) झूलत नंद किशोर किशोरी ॥ उत व्रजभूषण
कुंवर रसिक वर इत वृषभान नंदिनी गोरी ॥१॥ पीतांबर नीलांबर फरकत
उपमा घन दामिनी छवि थोरी ॥ देख-देख फूलत व्रजवनिता झूलवत लेकर
डोरी ॥२॥ मुदित भये जु परस्पर गावत किलक किलक देउ उरज अकोरी ॥
परमानंद प्रभु वह सुख बिलसत इंद्र वधु सिर धुनत झकोरी ॥३॥

३ (॥३॥) राग सारंग (॥३॥) डोल झूलत श्यामा श्याम सहेली ॥ राजत नवल निकुंज
वृंदावन विहरत गर्व गहेली ॥१॥ कबहुंकि प्रीतम रबक झुलावत कबहुंकि नवल
प्रिय हेली ॥ हरीदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी कहि कहि बोलत हेली ॥२॥

४ (॥३॥) राग सारंग (॥३॥) हरि को डोल देख वृजबासी फूले ॥ गोपी झुलावें
गोविंद झूलें ॥१॥ नंद चंद गोकुल में सोहे ॥ मुरली मनोहर मन्मथ मोहें
॥२॥ कमल नयन कों लाड लड्यावें ॥ प्रमुदित प्रीत मनोहर गावें ॥३॥
रसिक शिरोमणि आनंद सागर ॥ रामदास प्रभु मोहन नागर ॥४॥

५ (॥३॥) राग सारंग (॥३॥) डोल झूलत हैं पिय प्यारी ॥ नंद नंदन वृषभान

दुलारी ॥१॥ कमल नयन पर केसर डारी ॥ अबीर गुलाल करी अंधियारी ॥२॥ झूले स्याम झूलावत नारी ॥ हैंस हैंस देत परस्पर गारी ॥३॥ गावत गीत दे दे कर तारी ॥ बाजत वेणु परम रुचिकारी ॥४॥ भीज लगी तन तन सुखसारी ॥ खेल मच्यो वृंदावन भारी ॥५॥ रसिक सिरामणि कुंज बिहारी ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिवरधारी ॥६॥

६ (झूले) राग सारंग (झूले) झूलत झूडोल हरख हरख गावत ॥ निरख निरख छबि परस्पर नवल दोऊ सचु पावत ॥१॥ रसिकराय बिहारी प्यारी सरस मृदुल मधुर तान रीझ रिझावत ॥ माधो प्रभु गिरिधरण नागर नागरी प्राण पिया मिल भावत ॥२॥

७ (झूले) राग सारंग (झूले) डोल झूलत है प्यारोलाल बिहारी बिहारिनी पहोप वृष्टिहोति ॥ सुरपुर गंधर्वपुर तिनकी नारि देखत वारत हैं लरमोति ॥१॥ घेरा करत परस्पर सब मिल नहीं देखी युवती ऐसी जोति ॥ हरीदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी सादा चुरी खुभी पोति ॥२॥

८ (झूले) राग नट (झूले) देखि देखि दृगन दंपति को सुख माई कैसें आज झुलति डोल ॥ गौर स्याम यह सहज सुभग वपु पहें पीत पट नील निचोल ॥१॥ वरण वरन भूषन नग जटित जगमगात तामें अधिक अमोल ॥ 'कल्याण' के प्रभु गिरिधर राधा प्यारी कों झुलावत परसत पाणिरी कंठ कपोल ॥२॥



९ (झूले) राग सारंग (झूले) गहवर रस सघन निकुंज छायातर रोप्यो डोल तहां नागरी नागर दोऊ प्रेमसुं झूले ॥ भूषण अंग बने हीरामणि कटि तट मानों घनदामिनी छबि राजत नलि पीत दूकूले ॥१॥ बीरी खात खवावत प्रमुदित मन गावत सारंग राग गानसों मनही मन फूले ॥ केसर चोवा अगर गुलाल उडे और केलि कपूरन धूले ॥२॥ मृदंग ताल डफ बीना मधुर स्वर चहु और गावत उपमा कहे दोऊ को समतूले ॥ यह सुख देख कोन धीरज धरे कहे गोविंद सुरनर मुनि मन की गति भूले ॥३॥



१० (झूले) राग सारंग (झूले) नंद नंदन कुंवरि राधिका नागरि डोल झूलति बने रंग भीनें ॥ कों मन रहे झुमन फल फूल चहु और तैं ॥ गोपिका जूथ मिलि मधुर लीनें ॥१॥ खेलि गहरो दोऊ ओर तैं वैसे रह्यो रंग घुमडनि भई प्रबल



भारी ॥ देव मुनि देखि किन्नर थकित व्हे रहे सुर बधू बिकसि रही काम चारी ॥२॥ ब्रज कुँवर लाडिलो नित्य लीला ललित हे रही सरस रस रंगकारी ॥
 'रसिक' जन मनन करै देखि दृग अपनै परान इक बल करों वारि डारी ॥३॥
 ११ (११) राग सारंग (११) देखत डोल सबे आनन्द ॥ नीलकमल ढिंग
 राजत चंद ॥१॥ लेइ गुलाल परस्पर डारे ॥ सिर नारी सुख सिंधु निहारे ॥२॥
 कुसुमन की बरखा बरखावे ॥ ब्रजबनिता मनमोद बढ़ावे ॥३॥ गोपी
 प्रीत झुलावे झूले ॥ पिचकारी तकि डारत फूले ॥४॥ गोपवधू सब करी
 रगमगी अखियाँ लागत भली रतीजगी ॥५॥ देई असीस आरती वारत ॥
 द्वारकेस प्रभु अलक संवारत ॥६॥



होरी-रसीया



१ (११) राग होरी काफी (११) वन आयौ छैला होरी कौ ॥ मल्ल काछु सिंगार
 बन्यो है याके फेंटा सीस मरोरी को ॥१॥ सोधे सन्यो उपरेना सोहत याके माथें
 बेंदा रोरी को ॥ परसोतम प्रभु कुँवर लाडिलो यह रिझवार किशोरी को ॥२॥
 २ (११) राग होरी काफी (११) काना धरे रे मुकट खेले होरी ॥ इत स्याम
 लई पिचकारी रंग भर उत श्यामा केसर घोरी ॥१॥ हाथन लाल गुलाल
 फेंट भर मारत हैं भर भर झोरी ॥ चंद सखी भजि बालकृष्ण छबि तेरे
 बदन कमल पर चित चोरी ॥२॥
 ३ (११) राग होरी काफी (११) होरी आइर मोहन पर रंग डारो ॥ नैनन
 अंजन दे मन रंडन याके कान पकर गुलचा मारो ॥१॥ केसर में बोर करो
 रंग गारो सहे न रहे यह तन कारो ॥ बंसी लेहू छिनाय स्याम की फिर पांछे
 नोछावर वारो ॥२॥
 ४ (११) राग होरी काफी (११) दरसन दे निकसि अटामेते ॥ उमा, रमा,
 ईंद्राणी, भवानी, जाके निकसी है नख चंद्र छटामेते ॥१॥ राधेजू निकस
 अटा भई ठाडी मानो निकस्यो है चंद घटामेते ॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छबि
 निरखत मानो माखन निकस्यो मठा मेते ॥२॥



५  राग होरी काफी  आज बिरज में होरी है रसिया ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ और नगारे की जोरी रे रसीया ॥१॥ उडत गुलाल लाल भये वादर केसर रंग झकझोरी रे रसीया ॥ चंद सखी भज बाल कृष्ण छबि चिरजीयो यह जोरी रे रसीया ॥२॥



६  राग होरी काफी  होरी के रसीया ओर ख्याल ॥ फगुवा दे मोहन मतवारे फगुवा दे ॥ ब्रजकी नारी गावे गारी ॥ दो बापन के बिच डोले ॥१॥ नंदजु गोरे जसोदा गोरी ॥ तुम कहांते भये कारे ॥२॥ पुरुषोत्तम प्रभु जुवतिन हेते ॥ गोप भेख लियो अवतारे ॥३॥

७  राग होरी काफी  दरशन दे मोर मुकुट वारे ॥ अरु कटि राजत सुभग काछनी फरकत पीरे पटवारे ॥१॥ वृंदावन में धेनु चरावे, बाजत बंसीवट चारे ॥ पुरुषोत्तम प्रभु के गुण गावे शेष सहस्र मुख रसना हारे ॥३॥

८  राग होरी काफी  ठाडी रहे ग्वालन मदमाती ठाडी रह ॥ यह अवसर होरीको हेरी ॥ हम तुम खेले संग साती ॥१॥ भूल गयो घर गेल हमारी ॥ ले लगाई अपुनी छाती ॥२॥ पुरुषोत्तम प्रभु हंसत हंसावत ॥ ब्रज वनिता सब गुण गाती ॥३॥

९  राग होरी काफी  डफ बाजे नंद बाबा घरके ॥ चलोनि सखी मिल देखन जइए ॥ छेल चिकनीयां नागरके ॥१॥ अरु बाजतहे ढोल दमामा ॥ सुनियत घाव नगारनके ॥२॥ नाचत गावत करत कुलाहल ॥ संग सखा हे बराबरके ॥३॥ पुरुषोत्तम प्रभुके संग खेलत ॥ झख मारत धरबारन के ॥४॥

१०  राग होरी काफी  ब्रजकी तोय लाज मुकुटवारे ॥ चंद्र सूरज तेरो ध्यान धरतहे ॥ ध्यान धरे नवलख तारे ॥१॥ इन्द्र ने कोप कियो ब्रज ऊपर ॥ तब गिरिवर कर पर धारे ॥२॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत ॥ गाय गोपि के रखवारे ॥३॥

११  राग होरी काफी  मृगनेनी को यार नवल रसिया ॥ बड़ि

बडि अखियां नेन में सुरमा ॥ तेरी टेडी चितवन मेरे मन बसिया ॥१॥
 अतलसको याकें लहेंगा सोहे ॥ प्यारी झुमक सारी मेरे मन बसिया ॥
 छोटी अंगुरीन मुंदरी सोहे ॥ याके बीच आरसी मन बसीया ॥२॥ याके
 बांह बडो बाजूबन्ध सोहे ॥ याके हीयेरे हार दीपत छतिया ॥ रंग महलमें
 सेज बिछाई ॥ याकें लाल पलंग पचरंग तकिया ॥ पुरुषोत्तम प्रभु देख
 विवस भये ॥ सबे छांड ब्रजमें बसिया ॥३॥

१२ (॥१॥ राग होरी काफी (॥१॥ गहरे कर यार अमल पानी ॥ चल बरसाने
 करे मिजमानी ॥ तेरी भांग मिरचकी में जानी ॥१॥ तोही करेंगे होरीको
 रसिया ॥ हम होयेगी तेरी अगवानी ॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत ॥
 तेरे मनकी हमने जानी ॥२॥

१३ (॥१॥ राग होरी काफी (॥१॥ होरी खेलूंगी स्याम संग जाय मेरे भागनतें
 फागुन आयो ॥ ये भीजवी मेरी सुरंग चुनरियां ॥ में भिजवुं याकी पाग
 ॥१॥ चोवा चंदन अतर अरगजा ॥ रंगकी परत फुंवार ॥२॥ लाज निगोडी
 रहों चाहे जावो ॥ मेरो हियरो भयों अनुराग ॥३॥ आनंदघन खेलों सुघर
 बालमसों ॥ मेरो रहियोहे भाग सुहाग ॥४॥

१४ (॥१॥ राग होरी काफी (॥१॥ ठाडो रह दे फगुवा ब्रजवासी ठाडो रह ॥
 रंग डार कित भाज्योरे लंगरवा लोक करे मेरी हांसी ठाडो रह ॥१॥ बालपनो
 खेलनमें खोयो गोकुल में मारी मासी ठाडो रह ॥२॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी
 छबि निरखत जन्म-जन्म तिहारी दासी ठाडो रह ॥३॥

१५ (॥१॥ राग होरी काफी (॥१॥ कान्हा धयेंरि मुकुट खेले होरी कान्हा
 धयेंरि ॥ इततें आये कुंवर कन्हई उततें आई राधा गोरी कान्हा धयेंरि
 ॥१॥ कहां तेरो हार कहां नकवेसर कहां मोतियन की लर तोरी कान्हा
 धयेंरि ॥२॥ गोकुल हार मथुरां नकवेसर वृंदावन में लर तोरी कान्हा धयेंरि
 ॥३॥ चोवा चोवा चंदन अगर अरगजा अबीर उडावो भर भर झोरी कान्हा
 धयेंरि ॥४॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत फगुवा लीयो भर भर झोरी
 कान्हा धयेंरि ॥५॥